राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा. पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क 96

भक्त-कवयित्री मीरांबाई-रचित

मीरां बृहत्पदावली

(प्रथम भाग)

सम्पादक
स्व. श्री हरिनारायणजी पुरोहित
बी. ए., विद्याभूषण

संशोधित मूल्य रु 140-00
प्रभारी अधिकारी

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1989

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा. पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क 96

भक्त-कवयित्री मीरांबाई-रचित

मीरां बृहत्पदावली

(प्रथम भाग)

सम्पादक
स्व. श्री हरिनारायणजी पुरोहित
बी. ए., विद्याभूषण

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1989

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

डॉ. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क 96

भक्त-कवयित्री मीरांबाई-रचित

मीरां बृहत्पदावली

प्रथम भाग

सम्पादक

स्व. श्री हरिनारायणजी पुरोहित

बी. ए., विद्याभूषण

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1989

द्वितीयावृत्ति 500

मूल्य रु. ~~51.00~~ 140/-

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी-राजस्थानी आदिभाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान-सम्पादक

डॉ. पद्मधर पाठक

ग्रन्थांक ६६

(द्वितीय संस्करण)

[प्रथमावृत्ति, प्रतियां १०००, सन् १९६८]

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

मुद्रक

प्रिण्टिग हाउस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर

विक्रमाब्द २०४६ * ई. सन् १९८९

मूल्य रु. ५१.००

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रधान-संपादकीय

काव्य के निर्माण में मूलभूत अनेक प्रयोजनों में से एक है—सद्य: परनिर्वृति—अर्थात् काव्य चाहें बना लें या उसका पाठ करें—कवि या पाठक के मन में स्वयं एक अन्त: प्रेरणा जाग उठती है—अनेक से एक होने की या यों कहिये जड़ से चैतन्य में लीन होने की। काव्य के अन्य सभी कारणों से यह हेतु अधिक श्रेयस्कर है, भले ही प्रेयस्कर कम हो। जब इस हेतु से कवि काव्य सर्जना में प्रवृत्त होता है और वह भी जन-जन की भाषा को साधन बनाकर तो उसका काव्य अनन्तजीवी हो उठता है—समाज को अनन्त काल तक राह दिखाता वह अमर हो जाता है।

यही कारण है—सन्तों की वाणी अमर हो जाती है। आप कबीर को लें या दादू को या सहजो बाई अथवा मीरां को। कोई मानें या न मानें—न केवल वाणी इनके अभीप्सित अर्थ का अनुकरण करती है, अपितु शब्द में नादब्रह्म साकार हो उठता है—मन-प्राण-शरीर एक हो जाते हैं और आत्मा कहिये चिरन्तन सत्य—को अपने उद्‌गार निकालने का—अभिव्यक्त करने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

मीरां के पदों को पढ़ते समय इसी बात का अनुभव होता है। चाहे उसका शृंगार हो या विरह, भक्ति हो या मुक्ति, वह कृष्णमय हो गयी है—सारा संसार उसे कृष्णमय दिखाई देता है—उसके श्वास में और उच्छ्वास में, रोम-रोम में, हर काम-काज में कृष्ण-ही-कृष्ण है। इसे दीवानापन कह दीजिये या बावलापन—वह दीवानी है कृष्णप्रेम की—बावली है, सारे संसार के नियन्ता परमप्रभु को वह मानती है कि वह उसका है—उसे देखना चाहती है—पाना चाहती है और उसके न मिलने पर रूठ जाती है। मीरां के पदों की भाषा का अध्ययन करते समय उसकी इस भावना को ध्यान में रखना होगा।

प्रभु के लिये उन्मत्त हुए मन की यह अभिव्यक्ति है—इसीलिये उसके पदों की भाषा को कोई मेवाड़ी कह दें या यह कह दें कि इसमें व्रज के पद अधिक हैं या पंजाबी आदि कई भाषाओं के शब्द आते हैं अथवा मीरां के पद गुजराती में भी मिलते हैं—तो इन शंकाओं का समाधान केवल भाषाशास्त्र के नियम-उपनियमों से नहीं होगा—उसे समझने के लिये हमें मीरां के मानसिक धरातल का स्पर्श पाना होगा—भले ही हम मीरां नहीं बन सकेंगे—उसका दास्य भाव स्वीकारना होगा—तभी हम उसके अन्तस्तल के भाव का स्पर्श कर सकेंगे।

स्व. पुरोहितजी की प्रस्तुत मीरां पदावली का महत्व यही है—वह उनके

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लिए अनन्य देवी है—वे उपासक हैं। उनके लिये यह पदों की आवली न होकर प्रत्येक पद-काव्य है और इस प्रत्येक पद-काव्य का उद्देश्य और भाव साधक को साध्य से जोड़ना है।

और इस दृष्टि से यदि किसी पद में मीरां का नाम नहीं भी है—किन्तु भाव वे ही हैं—तो उसे मीरां का भक्ति-विलास मानने में आपत्ति ही क्या है? बहुत सम्भव है कि एक मीरां के बाद कई सतियां मीरां हुई हों—गुजरात में तो भक्तिभाव में तल्लीन हुई किसी भी स्त्री को मीरां कहने का रिवाज़ है—सही मायने में मीरां को केवल व्यक्तिवाचक मानकर सारा ऊहापोह करना—कम से कम उसकी भाषा और भक्ति के संदर्भ में—अधिक उचित नहीं लगता है।

डॉ. प्रभात अथवा डॉ. कल्याणसिंह शेखावत ने मीरां के ऐतिह्य की-उसकी भाषा की—भ्रमण की—पर्याप्त खोजबीन की—उनके निष्कर्ष उनके अपने हैं। मीरां की कई पदावलियां प्रकाशित हुई हैं परन्तु मीरां का सांसारिक सम्बन्धों से न तब कोई लेना देना था और न अब। इसलिये भारत के जन-जन को अपनी भक्ति-तरंगिणी से आप्लावित करने वाली मीरां का इतिहास जानना उतना महत्वपूर्ण नहीं, जितना कि उसके उद्दाम हृदय के दीवानेपन को, इसलिये डॉ. प्रभात ने ठीक ही कहा है—'कला की शाश्वत उपलब्धियाँ मीरां में नहीं है—वह आत्मा का समर्पण है।'

उस समर्पित आत्मा की यह अभिव्यक्ति जिसे लौकिक संसार में 'मीरां पदावलि' कहा जाता है—पुनर्मुद्रित रूप में विद्वज्जगत् को सौंपते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। पूर्व-संस्करण की तरह यह भी—भक्तों और विद्वानों दोनों के लिये--उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस ग्रन्थ के पुनर्मुद्रण कार्य में प्रिंटिंग हाउस, जोधपुर ने तथा प्रूफ संशोधन में श्री गिरिधरवल्लभ दाधीच ने जो तत्परता और शीघ्रता दिखाई है उसके साधुवाद के लिये शब्द-दर-शब्द प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

वि. संवत् २०४६ भाद्रपद शुक्ल गणेश चतुर्थी — पद्मधर पाठक

४ सितम्बर, १९८९ — निदेशक

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रकाशकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन करते हुए कुछ करुण व दारुण स्मृतियाँ मानस पर छा रही हैं। 'मीराँ बृहत्पदावली' राजस्थान के एक महामनीषी स्वर्गीय पंडित श्री हरिनारायणजी पुरोहित की अतिमहत्वाकांक्षी प्रयत्न का एक नन्हा-सा फल है। स्वर्गीय पुरोहितजी का विचार था कि वे भक्त-कवयित्री मीरांबाई के सभी अप्रकाशित पदों को संगृहीत करके प्रातः-स्मरणीया लेखिका के सुविस्तृत जीवन-चरित्र के साथ प्रकाशित करें। इस निमित्त उन्होंने हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्रों से ही नहीं अपितु गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल आदि अहिन्दी भाषाभाषी क्षेत्रों से भी मीराँबाई के पदों को एकत्र किया। मीराँ के व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन-चरित्र के विषय में भी उन्होंने अनेक लोगों से पत्र-व्यवहार किया और मीराँ के जीवन से संबंधित अनेक स्थानों पर स्वयं जाकर अथवा अपने आदमियों को भेज कर सामग्री चयन करने का प्रयत्न किया। उन्होंने प्राप्त हुए पदों में से बहुत से ऐसे पदों को छोड़ दिया जिन्हें वे मीराँ द्वारा लिखित नहीं मानते थे। प्रस्तुत संग्रह में उन्होंने मीराँ के प्रामाणिक पदों को ही स्थान दिया है। भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण बहुरा के कथनानुसार पुरोहितजी ने पदों की प्रामाणिकता के लिए कोई कसौटी भी निर्धारित की थी जो उनके सुपुत्र श्री रामगोपालजी पुरोहित ने स्वर्गीय पिता द्वारा संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों तथा मीराँ संबंधित सभी सामग्री के साथ हमारे प्रतिष्ठान को भेट कर दी थी। खेद है कि अब वह कसौटी हमें उपलब्ध नहीं है, परन्तु उसके आधार पर पुरोहितजी ने जो पद-संग्रह तैयार किया था वह ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जा रहा है। इस संग्रह में कुल मिलाकर ६६२ पद हैं जिनमें से प्रत्येक पद के पूर्व पद की क्रम संख्या, राग एवं ताल का नाम तथा वर्ण्य विषय का संकेत कर दिया गया है और आवश्यक पाद-टिप्पणियाँ भी जोड़ दी गई हैं। यह सब उसी स्वर्गीय आत्मा का कार्य है अतः उन्हीं के सम्पादकत्व में यह संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है।

ग्रन्थ की भूमिका के रूप में स्वर्गीय सम्पादक द्वारा ही लिखित कुछ सामग्री दी जा रही है। उसके पढने से पता चलता है कि उन्हें मीराँ के प्रति

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कितनी ममता थी और उनके उदात्त व्यक्तित्व के प्रति कितनी श्रद्धा। उन्हें अनुस्वार युक्त मीराँ नाम ही प्रिय था और वे अनुस्वारहीन नाम को किसी प्रकार भी सहन नहीं कर सकते थे। यद्यपि वे मीराँ के प्रति अपनी श्रद्धांजलि विराट रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे, परन्तु अपने जीवन के अन्तिम चरण में उन्हें यह आभास हो चला था कि वे अपने प्रयत्न को इच्छानुसार मूर्त्त रूप देने के लिए अधिक दिन जीवित नहीं रह सकेंगे। इसी भावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने एक छोटी-सी प्रस्तावना लिखी थी जिसको भूमिका के रूप में प्रकाशित किया गया है। इसके साथ ही उनका वह लेख भी है जिसमें उन्होंने मीराँ के जीवन-चरित संबंधी मुख्य-मुख्य बातों की ओर संकेत किया है।

अन्त में स्वर्गीय पं. श्री हरिनारायणजी पुरोहित की महान् आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए और उनके योग्य सुपुत्र श्री रामगोपाल पुरोहित (जिनके सौजन्य से इस प्रतिष्ठान कों इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए यह ग्रन्थ पाठकों के हाथों में समर्पित किया जा रहा है। यद्यपि यह ग्रन्थ सन् १९५८-५९ में ही प्रेस को दे दिया गया था और सन् १९६२ में इसका मुद्रण भी हो गया था, परन्तु किन्हीं कारणों से इसका प्रकाशन अभी तक रुका रहा। अच्छा तो यह होता कि इस ग्रन्थ की भूमिका में, प्रधान सम्पादक की ओर से इस अवधि में की गई सभी शोध सामग्री को समाविष्ट कर लिया जाता, परन्तु इस विचार को छोड़ना पड़ा—प्रथम तो इस प्रतिष्ठान में संगृहीत गुटकों में से ऐसे अन्य बहुत से मीराँ-रचित पद मिल गये हैं जिनका प्रकाशन आगामी सत्र में होने जा रहा है; दुसरे मीराँ कृत 'नरसीजी रो मायरो' की भी ऐसी अनेक प्रतियां मिली हैं जो मीराँ के साहित्यिक जीवन पर कुछ नया प्रकाश डाल सकती हैं। ऐसी अवस्था में इस सभी सामग्री को प्रकाशित करके मीराँ की समस्त कृतियों के आधार पर उनके सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन ही अधिक उपादेय हो सकता है, इस दृष्टि से इस कार्य को आगे के लिए ही स्थगित कर दिया गया है। स्वर्गीय श्री पुरोहित जी द्वारा सम्पादित सामग्री को मीराँ बृहत्पदावली भाग १ के नाम से प्रस्तुत ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके भाग २ में उन सभी पदों को संगृहीत करने का प्रयत्न किया जायगा जो अभी तक किसी भी संग्रह में प्रकाशित नहीं हुए हैं। इसी के साथ समस्त मीराँ-साहित्य में प्रयुक्त प्रायः सभी उपयोगी शब्दों की अनुक्रमणी प्रस्तुत की जायगी जो अनुसन्धान कर्त्ताओं के लिये अत्यन्त उपयोगी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

होगी। आशा है विद्वान् पाठक हमारे इस विचार से सहमत होंगे।

इस ग्रन्थ के मुद्रण से लेकर प्रकाशन तक प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण बहुरा, पं. लक्ष्मीनारायण गोस्वामी तथा श्री हरिप्रसाद पारीक ने जो अथक परिश्रम किया है उसके लिए वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। यहां हम श्री ब्रजेशकुमारसिंह को भी भूल नहीं सकते जिसने प्रस्तुत ग्रन्थ के लिये सुविस्तृत शब्दानुक्रमणी तैयार की। यद्यपि उसका प्रकाशन अगले भाग के साथ करने का ही निर्णय लिया गया है, परन्तु उसके कठिन परिश्रम के लिये हार्दिक धन्यवाद देना आवश्यक है।

फाल्गुन शुक्ला द्वितीया सं २०२४ —फतहसिंह
जोधपुर

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भूमिका

भक्तशिरोमणि श्रीमती मीरांबाई का जीवनचरित्र, हमारे विशेष संग्रह के अनुसार बहुत विस्तार और समारोह के साथ, जिसमें कदाचित् ही कोई उपलब्ध विषय का वृत्तान्त नहीं छूटने पाता, और यावन्मात्र विचारणीय एवं संगृहीतव्य पदार्थ आजाते और लिखे जाते, और जिसका आकार एवं कलेवर सम्भवतः ५०० वा ६०० पृष्ठों से भी अधिक हो जाता। परन्तु अब इतना न तो समय ही रह गया है और न मेरे इस शरीर की इतनी शक्ति ही रह गई है कि मैं उस बृहत् कार्य को कर सकूं। मेरी अवस्था ८० वर्ष की हो जाने से अब तो उतना काम नहीं कर सकता। इस ही कारण से मुख्य-मुख्य विषयों को लिख देना चाहता हूं। इन संक्षेप के विषयों में भी मेरे विशेष संग्रह के अनुसार (प्रायः इस संक्षेप में भी) बहुत सी बातें देखने और विचारने योग्य आ सकेंगी। कुछ ऐसी बातें मेरे अनुसंधान के अनुसार नई मिलेंगी जिनका संग्रह मैंने परिश्रम और खोज के साथ ही किया है। मैं मेड़ते भी संवत् 19 ··· में गया था। वहां से उस समय जो भी प्राप्त हो सका, पदार्थ लिया। वहां के वृद्धपुरुषों व पूजारी वर्ग से तथा अधिकतर भक्तवर ज्ञानी श्री जोषी पूषारामजी के पत्रों से सामग्री मिली, जिसका सावधानी से मैं इस संग्रह में प्रयोग करूंगा। अतिरिक्त, बड़ी रूपाहेली के कृतविद्य इतिहासप्रेमी स्व. श्री ठाकुर साहब चतुरसिंहजी के बहुमूल्य पत्रों से, तथा "जयमलवंशप्रकाश" के लेखक विद्वद्वर श्री ठाकुर साहब बदनोराधीश गोपालसिंहजी की कृपा और पत्रादि से तथा अन्य अनेक सामग्री-प्रदायक महाशयों से, जिनके नामादि देकर उनका कृतज्ञ होकर इस संक्षिप्त संग्रह को लिखने का प्रयास करूंगा। मुझे इस बात को जानने से बड़ा आनंद हुआ है—उक्त दोनों सरदारों (ठाकुर साहिबों) और उनके वंशजों के श्री मीरांबाई के मेड़तियाकुल में होने का सौभाग्य। उनसे बढ़कर पते की बातें अधिक कौन जान सकते हैं। तथा स्वयं प्रसिद्ध मेड़ता नगर से और वहां के अवशिष्ट जानकारों से मुझे इस संग्रह में जो-जो भी बातें मिली हैं वे ऐसी हैं कि इससे पूर्व वे अनेक पुरुषों को ज्ञात नहीं थीं। इस सब ज्ञान की प्राप्ति के लिए मैं उन सब का आभारी होता हूं।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुझे श्रीमीरांबाईजी के अन्दर भक्ति तो मेरे बचपन से, मेरे पूज्या श्री दादीजी महामति से और परमयोगिनी मेरी पूज्यवरा श्री मोतीबाईजी से ही कुछ मिली थी। फिर शनैः शनैः ज्ञान बढ़ता गया। मैं जब जनानी ठयोढ़ी का सुपरिंटेंडेन्ट रहा था तब से इस संबंध में अधिक रुचि होती गई और अब तक तो वृद्धि ही मिलती गई। बाबू अनाथदास, कलकत्ते वाले शांतिनिकेतन से मेरे पास आये थे तब से उनके परामर्श से भी जानकारी बढ़ी। अब तक मेरे पास मीरांजी संबंधी बहुत सी लिखित और मुद्रित पुस्तकों की सामग्री का संग्रह हो गया। इन सब से पदार्थों की देखभाल की गई। जिसके लिए मैं सब का कृतज्ञ हूं।

श्रीमती मीरांजी संबंधी मुख्य २ बातें

१. मीराँजी से पूर्व रत्नसिंहजी उनके पिता के एक पुत्र हुआ था, उसका नाम गोपालजी था। वह कुछ समय पीछे मर गया। माता को शोकातुर देख माता के पीहर की एक 'आया' ने उनसे मीराँ साहिब (अजमेरी) की मिन्नत के लिए कहा। उनकी माता ने वैसा ही किया तो कुछ समय में मीरांजी का जन्म हुआ, वि. सं. १५५५ में। भक्त-जन नदी से प्रगट होना कहते हैं। अन्यमत से जन्म वि. सं. १५६१ सावण सुदि १ को हुआ।[1] (राव के मतानुसार पुत्र वा नदी से प्राकट्य पुरुषोत्तमदास 'मीराँ नाटक' से)।

२. मीराँ के पूर्वजन्म की कथाएँ 'प्रपन्नामृत' में कथित हैं। वे बादशाह के यहाँ जन्मी थी। महात्मा रामानुजजी उनके लिए प्रार्थी हुए थे। (उस ग्रन्थ में देखें)।

३. 'मीराँ' नाम संभवतः 'मीराँ साहिब' (अजमेरी) के कारण ही रखा गया था। निश्चित रूप से यही व्युत्पत्ति होती है। मीराँ नाम पर हमने एक विस्तृत लेख भी लिखा है।

४. मीराँजी की माता का स्वर्गवास (अनेक मतों से) मीराँजी के ४ थे वा ३ वा दूसरे वर्ष में ही हो गया था। उस समय दूदाजी की राणी वा वीरमजी

---

1. मीराँजी का जन्म गाँव 'बाजोली' में हुआ था। वहाँ से 'कुड़की' गाँव में आ गये थे। कुड़की में ही माता का देहान्त हुआ था। जन्म-स्थान फिर 'कुड़की' ही लिखा जाता है। (लेखक)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

की कुमार-वधु (कुड़की) गाँव जाकर 'निषेध' का दस्तूर हो जाने पर बालिका मीराँजी को मेड़ते ले ग्राये थे ।

५. मेड़ते में तो वैष्णवता का गहरा प्रचार और सत्संग था । बाल्यावस्था ही से मीराँजी को वैसे सत्संग में पाला गया । बुद्धिमती तो मीराँजी थे ही, अपने विद्यागुरु (गदाधरजी) दूदाजी, वीरमजी आदि की संगति के साथ तथा महलों में अपनी बड़ियाओं के साथ पुराणादि सुना करतीं । मीराँजी के पूर्वजन्म के प्रारब्धानुसार बहुत शीघ्र ही उपस्थिति हो गई । भक्तिभाव रात-दिन बढ़ता गया । वस्तुत: मीराँजी पूर्वजन्म की एक गोपिका तो थीं ही । इस भक्ति के सत्संग ने उनमें निरन्तर अधिकता करदी । वे तो थोड़ी-सी अवस्था में ही अनन्यता के प्रेम में मग्न रहने लग गईं । प्रतिभा उनकी तीव्र थी । जो कुछ सुन-पढ़ लेती कंठाग्र ही हो जाता । गायन मधुर, प्रियकर और स्वरताल सहित होता था । संगीत में प्रवीण हो गई थीं ।

६. मीराँबाई की माता का नाम 'वीरकुँवरि' था । नाना का नाम 'सुलतान सिंहजी' था । ये जाति-गोत के झाला राजपूत 'गोगूंदा' गांव में व्याहे थे ।

७. बचपन ही से साधुसेवा बड़ी ही प्रिय थी । साधुसेवा में मस्त होकर खान-पान तक की सुधि नहीं रहती थी । साधुजन भक्ति के भजन गाते तब सुनते-सुनते बेबश होकर सुनतीं और मस्त हो जाती थीं । स्वयं भी पद बनाती थीं, क्योंकि गांधर्व विद्या में कुशल हो चली थीं ।

८. मुंशी देवीप्रसादजी (स्वर्गवासी) ने 'महिला मृदुवाणी' ग्रन्थ में मीराँजी का जन्म गाँव 'चौकड़ी' लिखा है । परन्तु इनकी जन्मभूमि का स्थान 'कुड़की' ही सर्वसम्मति से माना जाता है और सुप्रसिद्ध है । मेड़ते के राजपूतों का एक भाट 'धोलेराव' गांव के से पता चला है कि दूदाजी ने अपने चौथे बेटे रत्नसिंहजी को जागीर में चार गाँव–१. कुड़की २. बाजोली ३. नेण्याँ और ४. मांझी दिए थे । मुंशीजी ने केवल दो गाँव (कुड़की और बाजोली) लिखकर इत्यादि शब्द १२ गाँव रतनसिंहजी की जागीर में लिखे हैं ।[1] कुड़की गाँव जोधपुर की पूर्व सीमा पर मेड़ते से कोई १८ मील पर है । गाँव कुछ तो पहाड़ पर है और कुछ तलैटी पर है । छोटा-सा

1. अब हमें १२ गांवों की फहरिस्त मिल गई, ९ ये हैं—नींबड़ी, पालड़ी, आकोदिया, हफधर, नूंद, पीमणिया, मोटस, डूमांणीं, सुन्दरी (तीन ऊपर दिए-कुड़की, बाजोली और नेंण्यां ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

किला पहाड़ पर है। उसी में जागीरदार रहते थे। परन्तु अब कुड़की गाँव में रतनसिंहजी का वंशज कोई भी नहीं रहता है। वहाँ पर चांदावत खांप के राजपूत रहते हैं। (जोशी श्री पूषारामजी से यह वृत्त प्राप्त)। सं० १५१० में राव जोधाजी ने महाराणा के सबसे बड़े थाँणे 'चौकड़ी' को विजय किया था। (ओझाजी का जोधपुर का इतिहास पहली जिल्द)।

९. राव दूदाजी का जन्म जोधपुर में वि० सं० १४९७ में हुआ। वि० सं० १५१८ में मेड़ता विजय किया। यह पौराणिक राजा मान्धाता का स्थापित राज्य-स्थान था। दूदाजी का परलोकवास ७५ वर्ष की आयु में वि. सं० १५७२ में हुआ था। इनके बड़े पुत्र वीरमदेवजी का जन्म वि० सं० १५३४ में हुआ था। दूदाजी के दो राणियां व पाँच पुत्र थे। १. वीरमदेव, २. रायसल, ३. पंचायण, ४. रत्नसिंह, ५. रायमल। रत्नसिंहजी (मीराँजी के पिता) बयाने में बाबर बादशाह के साथ महाराणा संग्रामसिंहजी का जो प्रसिद्ध युद्ध हुआ था उसमें (रत्नसिंहजी) वि० सं० १५८४ में मिती चैत्र सुदि १४ को मुसलमानों से बड़ी वीरता के साथ युद्ध करते हुए काम आये थे और उसी में रायमलजी भी।[1]

१०. दूदाजी ने मेड़ते में श्री चारभुजानाथजी का मन्दिर वि० सं० १५३२ में बनाया था। यही चतुर्भुजनाथ सब मेड़तियों के इष्टदेव (माँथे के ठाकुर) हैं। 'जै चारभुजानाथ की' कह कर आपस में अथवा अन्य पुरुषों के साथ बोलते हैं। सिर पर रेशमी पट्टा बांधते हैं। मेड़ते में दूदाजी ने, फिर वीरमजी ने अच्छे-अच्छे अनेक महल-महलात बनवाये थे। परन्तु महाराजा मालदेवजी (जोधपुराधीश) ने वैरभाव से सब को प्रायः नष्ट कर दिया। केवल श्री चतुर्भुजजी का मन्दिर मीराँबाई के प्रताप से, वा श्रीजी के प्रभाव से छोड़ दिया गया। जयमलजी, वीरमदेवजी आदि ने २२ बेर मालदेवजी से युद्ध किया था।

११. जयमलजी, महामहिम वीर वीरमदेवजी के बड़े बेटे थे। जन्म सं० १५६४ में हुआ। गद्दी सं० १६०० में (वीरमदेवजी के मरने पर) प्राप्त हुई। २२ युद्ध मालदेवजी से करने के पश्चात् जयमलजी प्रायः विजयी रहे। फिर

1. दूदाजी के पांच पुत्र थे—पांचवें 'रायमलजी' थे। ये भी बयाने के युद्ध में काम आ गये थे। प्रधान सेनापति होकर राव गांगाजी के भेजे गए थे। (लेखक)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बादशाह की फौज के साथ विरोध होने पर, मेड़ता सदा के लिए छूट गया। तब महाराणा उदयसिंहजी ने बहुत आदर से एक हजार गाँवों का पट्टा करके चित्तौड़ के प्रधान दुर्गाध्यक्ष बनाकर, वे स्वयं तो पहाड़ों में चले गये। जयमलजी अकबर बाहशाद के साथ छः महिनों तक घोर युद्ध करते ही रहे। अन्त में पांव में अकबर के हाथ की गोली लगने के पीछे सब रणवास का 'जौहर' करके, कल्ला के कंधे पर चढ़कर पत्ता अपने बहनोई के साथ वि० सं० १६२४ में वीरगति को प्राप्त हुए। अकबर ने इनकी अतुलित वीरता का अनुभव करके इनका स्मारक दिल्ली के दरवाजे पर (फिर शाहजहां आगरे ले गया) हाथियों पर सवार प्रतिमाओं के साथ बनवाया था।

१२. मीराँजी का विवाह वीरमदेवजी ने बि० सं० १५७३ में (मीराँजी की १८ वर्ष की आयु में) बड़े समारोह के साथ कर दिया (अन्य मत से १५७४ में)। दहेज भी बहुत भारी दिया गया। तीन लाख की जागीर मीराँजी को चित्तौड़ में मिली थी। घर के घर परिवार सहित डायज वालों के मीराँजी के साथ गये थे। पण्डितों, ब्राह्मणों, गुरुओं आदि से लगाकर नाई, धोबी, धानके, भंगियों तक (स्त्री पुरुष सब) साथ ही गये थे। सैकड़ों घोड़े, ऊँट, रथ, सुखपाल, पालकी आदि दिये गये थे। मेड़ता से भी गांव दिये गये थे। विद्यागुरु गदाधरजी को मीराँजी ने चित्तौड़ में बड़ी जागीर निकाल दी थी, उनके वंश में अब तक भुगत रही है। कोई २०० आदमी विद्या-गुरु के वंश में अब भी होंगे। सुना गया है कि स्वयं राणाजी संग्रामसिंहजी भी विवाह में पधारे थे। राणाजी का बड़ा भारी सम्मान और सत्कार किया गया था। मीराँजी उस समय की, वा राजपूताने के अन्दर, अत्यन्त रूपवती बाई थी। पूर्व-संबंध के प्रभाव से ही नहीं, इन मीराँबाईजी के अनुपम रूप-लावण्यादि गुणों के कारण ही राणाजी ने मीराँजी जैसी स्त्री रत्न को अपने घर अपने बड़े युवराज के साथ संबंध करना सर्वोत्तम समझा। इधर वीरमदेवजी को भी विवाह की ताकीद थी। उन्होंने कुड़की से भाई रत्नसिंहजी को बुलवा कर चित्तौड़ भेजा कि वहाँ जाकर सगाई पक्की कर आवे। विवाह की मिति का तो पक्का निश्चय नहीं, परंतु ऐसा सुना गया है कि कार्त्तिक शुक्ला में किसी दिन यह विवाह हुआ था।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३. विद्यागुरु गदाधरजी गूजर गौड़ ब्राह्मण काँटिया तिवाड़ी गोत वा खाँप के थे। इनको एक हजार बीघा पीवल भूमि, पांच हजार रु. वार्षिक आय की कस्वापुर और माँडल में मिली थी। दान-पत्र भी मिले थे। ये सब इनके वंशजों के पास हैं। इनके वंशजों को गजाधरे नाम से बोलते हैं। गजाधरों के अब भी ४० ठिकानों की ब्रित-वृत्ति है और बदनोर रूपाहेली आदिक मेड़तिये सरदारों के यहाँ इनका विशेष मान है। (ठा. चतुरसिंहजी रूपाहेली के से प्राप्त जगदीशसिंह गहलोत द्वारा)।

१४. श्री मीराँजी के चार मूर्तियों का पता (गिरधरलालजी कीका से) लगा है। वह इस प्रकार है :—

(१) जो पहली मूर्ति साधु महात्मा से बचपन में प्राप्त हुई वह तो सदा साथ रहा करती थी। कहते हैं कि श्री द्वारकाजी में मीराँजी भगवान् की मूर्ति में ही लीन हो गई और किन्हीं के मत से प्यारी अपनी सखी को मिल गई।

(२) दूसरी मूर्ति, सं. १६२४ में जो चित्तौड़ दुर्ग में राणा कुम्भाजी के कुम्भ-श्याम-मंदिर के पास के, मीराँजी के बनवाये हुए (राणा रत्नसिंह के समय में) मंदिर में विराजती थी, उसको चित्तौड़ विजय होने पर आंमेर के महाराज भगवंतदासजी और उनके महापराक्रमी राजपुत्र मानसिंहजी ने अकबर से प्रार्थना करके उसे (सब सामग्री सहित) आंबेर भिजवा दिया और कुछ समय के अनंतर प्रसिद्ध मंदिर श्री जगत्शिरोमणिजी का बनवाकर उसमें प्रतिष्ठा करवाई। उनकी मूर्ति के साथ प्रियाजी की मूर्ति माजी सीसोदणजी आदि ने बनवाकर बड़े समारोह से विवाह किया। तब से जामाता (जँवाई) भाव ही अब तक चला आता है। आंमेर के पुराणे महलों में बड़ा ही सुन्दर हिंडोला संगमरमर आदि का बना हुआ है जिस पर स्व. महाराज माधोसिहजी ने उत्तम छाया का भवन बनवा दिया है। देवा पूजारी चित्तौड़ से परिवार सहित आया था। उसके वंशज अब भी पूजारी हैं और उनके पास प्राचीन इतिहास ह० लि० वर्त्तमान है जिसे हमने भी खूब देखा है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

*(४) चौथी मूर्ति—नूरपुर पंजाब का राजा बासू जब चित्तौड़ पर चढ़कर बादशाह की आज्ञा से आया था, उस समय मीराँजी की महा-महिमा से मुग्ध होकर राणाजी से लड़ाई न करके मीराँबाई के इष्टदेव गिरधरलालजी की मूर्ति की याचना की। राणाजी ने वह मूर्ति राजा बासू को दे दी। उसने उसे नूरपुर में भेज दी, वहाँ बड़ी भक्ति के साथ पूजनादि होती रही। इस प्रकार 4 मूर्तियों का तो पता लगा है। सवाई जयपुर में भी सिलावटों के मुहल्ले में एक खण्डित मूर्ति रखी है, जो उक्त मूर्तियों से मिलती-जुलती है और गलताजी के नीचे के मन्दिर में भी उनके समान-सी ही मूर्ति बताई जाती है।

मीराँबाई का कोई पैतृक संबंध आंबेर के राजाओं के साथ हमें पं० प्रह्लादजी गायनाचार्य रासवालों ने बताया था, जिसकी खोज नहीं की गई है।

१५. वि० सं० १६८६ के निर्मित श्री पं० शोभालालजी शास्त्रि-वर के, "वीर भूमि" (अपर नाम 'चित्रकूट गुणमालिका') में ये श्लोक मीराँजी के बनवाए हुए मंदिर के लिए बड़े प्रमाण हैं:---

(१) श्रीनन्दनन्दन-पदाम्बुरुहस्य भृङ्गी,
मीराँ हरेर्निलय मञ्चमिमं चकार।
यस्याग्रतो लसति मण्डपिकान्तरस्थं,
तस्या गुरोश्चरणपङ्कजयुग्मचिह्नम् ॥ १ ॥

श्री नन्द-नंदन के चरणारविन्दों की मधुकरी (भँवरी) श्री मीराँबाई ने यह ऊँचा विष्णु मंदिर बनवाया था जिसके सम्मुख ही छत्री के भीतर गुरु-चरणों के चिह्न शोभायमान हैं। ये चरणचिह्न उनके विद्यागुरु गदा-धरजी के हैं। अन्य मत से मीराँजी के मंदिर के प्रधान पुजारी देवाजी के हैं। पत्थर-लेख नहीं होने से यथार्थ ज्ञात नहीं होता है।

* पुरोहितजी के स्वयं के हाथों से लिखित भूमिका में तीसरी मूर्ति का विवरण अप्राप्त है लेकिन अन्य टिप्पणियों में पुरोहितजी ने लिखा है कि 'उदयपुर के जगदीश मंदिर में महाराणा जगतसिंहजी प्रथम ने जो मूर्ति पधराई थी वह मीरां की ही थी। उनके कथनानुसार यह सूचना जन-श्रुति पर आधारित है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

(२) श्री कुम्भकर्ण-नरनाथ-विनिर्मितेऽस्मिन्-
नायाहि पापकदने सदने मुरारेः ।
भक्त्यानतं सकृदपीह यदुत्तमाङ्गं,
नित्योन्नतं भवति तज्जगतां त्रयेऽपि ।। ४० ।।

महाराणा कुम्भाजी के बनाये हुए, पाप को नाश करने वाले, इस मन्दिर में आइये । यहां जो एक बार भी भक्ति-भाव से झुक जाता है वह तीनों लोकों में सदा ऊँचा ही रहता है ।

यह मीराँजी का मन्दिर महाराणा श्री कुम्भाजी के मंदिर के समीप ही बना हुआ है । इसके समीपता ही ने और न जानने वालों के गलत बता देने ही से कर्नल जेम्स टॉड साहिब ने भी यह बड़ी भयानक भूल कर दी कि मीराँबाईजी को कुम्भाजी की स्त्री लिख दी । और फिर परदेशी एवं देशी कुछ विद्वानों ने भी (भेड़ी-धसान न्यायानुसार) वैसा ही लिख मारा। यह तो स्व. मुन्शी देवीप्रसादजी ने खोज करके, म० म० क० रा० श्री श्यामलदासजी से निश्चय करके और जोधपुर के इतिहास कार्यालय के दफ़तरों इत्यादि से तथा म० म० डॉ० श्री ओझा गौरीशंकरजी से विशेषतया पदार्थ प्राप्त कर सत्य आख्यायिकाएं बताई हैं । फिर तो स्पष्ट ही पूर्ण सही खोज हो गई ।

इस ही मीराँ के मंदिर में मीराँजी अनन्य भक्ति से श्री कृष्णचंद्र भगवान् गिरधरलालजी के आगे पूर्ण-प्रेमा भक्ति से नृत्य और गान, संगीत-वैभव-विभूति से किया करती थी, जिनके घात के लिए मूर्खों ने विष आदि के भी प्रयोग किये परन्तु मीराँजी का बाल भी बाँका नहीं हुआ जैसा कि श्लोक में है :—

(३) अत्रैव माधवपदाम्बु-सुधा-प्रमत्ता,
मीराँ ननर्त गलितस्वपराभिमाना ।
घोरं हलाहलमिहैव तदीय हस्ते
श्रीनन्दसूनुचरणामृततां प्रपेदे ।।३४।।

भगवच्चरणारविंद के सुधा का पान करके मस्त हुई मीराँ ने इसी स्थान पर अपने पराये का अभिमान त्याग कर नृत्य किया था और यहीं पर घोर हलाहल विष भी उसके हाथ में पहुंच कर श्री नन्दनन्दन का चरणामृत बन गया था ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६. श्री पं. पुरुषोत्तमदासजी बी. ए. (पूर्व में मेड़ते के नायब हाकिम) रचित मीराँबाई के नाटक में जो कुछ विशेष बातें हैं सो संक्षेप में देते हैं :—

[क] कर्नल टॉड साहब ने जो गलती की (राणा कुंभा की राणी मीराँजी को लोख दी) उसका खंडन ऐतिहासिक प्रमाणों से किया है।

[ख] सं. १५१८ में दूदाजी ने मेड़ता विजय कर उसे बसाया।

[ग] मीराँजी दो ही वर्ष के थे तब माता का स्वर्गवास हो गया था।

[घ] मीराँजी के हाथ से चारभुजानाथ दूध पीते थे।

[ङ] मीराँजी की उत्पत्ति भक्तजन नदी में से मिलना मानते हैं।

[च] सं. १५७३ में मीराँजी का विवाह राणा साँगाजी के ज्येष्ठ पुत्र भोजराजजी के साथ हुआ तब से वे चित्तौड़ में रहने लगी और श्री गिरधरलालजी की मूर्ति वह साथ ले गई जिसकी भक्तिपूर्वक अर्चना करती रहती थी।

[छ] विवाह के पहिले जो भजन मीराँ ने बनाये उनमें छाप दी है— "मीराँ कहै चतुर्भुज नाथा" अथवा "मीराँ कहे श्री हरि अविनाशी" इत्यादि। और विवाह के पिछे जो पद बनाये उनमें यह छाप दी है—"मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर।" "मीराँ के प्रभु गिरधर नागर" इत्यादि। गिरधर की मूर्ति साथ ले जाने का यह पुष्ट प्रमाण भी है।

[ज] विवाह के १० दस वर्ष उपरांत ही मीराँजी के पति का स्वर्गवास होगया था। इसके ६ महीने पीछे ही वीर राणा सांगाजी भी इस संसार को त्याग गये थे।

[झ] सं. १५९५ में जोधपुर के राव मालदेवजी ने मेड़ता को हस्तगत कर लिया और तब मीराँबाई, वीरमदेवजी बड़े बाप को और कई आदमियों को साथ लेकर तीर्थ-यात्रा को चली गई। द्वारका पहुंच गई और वहां सं. १६०३ में द्वारकानाथजी की ज्योति में लय हो गई। (कोई लोग कहते हैं कि मृत्यु से मरी)।

[ञ] भक्त-शिरोमणि प्रसिद्ध वीर जयमलजी मीराँजी के चचेरे भाई थे।

ता. २०-४-४४ ई.
जयपुर सिटी

पु. श्री हरिनारायण शर्मा,
बी. ए., विद्याभूषण

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

।। श्रीः ।।

मीरां बृहत्पदावली

※

पद–१ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(आकांक्षा)

अँखियां कृष्ण मिलन की प्यासी (टेर)
आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हाँसी ।। १
आम की डार कोयलिया बोलै, बोलत सबद उदासी ।। २
मेरे तो मन (अब) ऐसी आवै, करवत लेहूँ कासी ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी ।। ४

○

पद–२ : राग कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(लीला वर्णन)

अच्छा लेहु व्रजवासी कन्हैया, अच्छा लेहु रे (टेर)
बरसाने से चली गुजरिया, आगे मिले महाराज रे ।
कोरी-कोरी मटुकी में दही जमाया, चाख लेहु महाराज रे ।। १
दधि मोरो खायो मटुकिया फोरी, इँडुरिया कहाँ डारी लाल रे ।
हार सिंगार सभी मेरो तोरचो, दुलरी कहाँ डारी लाल रे ।। २
जाय पुकारूँगी कंस के आगे, न्याय करो महाराज रे ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहार रे ।। ३

○

१–(या.सं.–संरा.क से)
नोट–इसका पाठान्तर–"श्याम मिलन की" और "करवत लों जाय कासी"। "बृ.रा.र." में सूरपद है–"अँखियाँ हरि दरसण की प्यासी" (टेर)। परन्तु अंतरे भिन्न हैं। फिर भी यह पद सूर-पद की ही छाया से बना होगा–सं०
२–३ (क); (बृ.रा.र.पृ.६०)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३ : राग–झिंझोटी : ताल–कहरवा

(भक्त महिमा)

अच्छे मीठे चाख चाख, बोर लाई भीलणी (टेर)
ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती ।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी ।। १
झूटे फल लीन्हे राम, प्रेम की प्रतीत जाण ।
ऊँच नींच जाने नहिं, रस की रसीलणी ।। २
ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिन में विमान चढ़ी ।
हरिजी सूं बाँध्यो हेत, बैकुंठ में झूलणी ।। ३
ऐसी प्रीत करै कोई, दासि मीराँ तरै जोई ।
पतित-पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ।। ४

○

पद–४ : राग–काफी : ताल–कहरवा, दीपचंदी

(उत्कण्ठा)

अजी म्हारी पीर न जाने, बैरन हे थारो वीर (टेर)
चुन चुन कलियन सेज बणाई, सेजड़ियाँ सुख माँणें ।। १
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, म्हाँसूं जो रूड़ो रँग माँणें ।। २

○

पद–५ : राग-कालिंगड़ा वा कान्हड़ा : ताल–धीमा तिताला

(भगवत् लीला)

अजी ये ललाजू आज गोकुल बासी (टेर)
गोकुल वासी प्राण हमारे, हाँ ललाजी ।
श्यामसुन्दर अविनासी ।। १

३–२ (म); २ (भ)
४–३ (क); (या०–प्रति सं० ३६६/४८)
४–पा० 'छाँणें' ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इत गोकुल उत मथुरा नगरी, हाँ ललाजी ।
बीचे नदी यमुनासी ।। २
यमुना के तीरे धेनु चरावें, हाँ ललाजी ।
हाथ लिये नौलासी ।। ३
बृन्दावन की कुंजगलिन में, हाँ ललाजी ।
सँग दुलहिन राधासी ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हाँ ललाजी ।
तुम ठाकुर मैं दासी ।। ५

○

पद–६ : राग–विहाग : ताल–कहरवा

(मनस्ताप)

अपणाँ करम ही का खोट, दोष काँई दीजेरी आली (टेर)
मैं तासूँ बूझूँ कोई न बतावै, सब ही बटाऊ लोग ।
सुणजो री मोरी संग की सहेली, बाट चलत लगी चोट ।। १
अपणां दरद कूँ सब कोई जाणें, पर दुख कूँ नहिं कोइ ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, बची चरण की ओट ।। २

○

पद–७ : राग–सोरठ वा झँझोटी वा माँढ

(आत्मकथा)

अपणा गिरधर कै कारणै, (वा) मीराँ वैरागण हो गई[1] (रे) (टेर)
जबतै सिर पर जटा रखाई[2], नैणां नींद गई (रे) ।। १
दंड कमंडल और गूदड़ी, सिर पर धार लई (रे) ।। २
छापा तिलक बनाये छबि सों, माला हात रही[3] (रे) ।। ३

५–२ (म); (आ.सा.भा. १ पृ. ११३)
६–२ (म); (क.ब. १३)
७–२ (म); (मी.ली.दी.ना. पत्र २६) (मी.ली.स.मा. २२)
1 पा.–'भई रे' । 2 पा.–'बधाई' । 3 पा.–'लिई' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोउ कुल छांड भई वैरागण, हरि सों टेर दई (रे) ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, गोविन्द सरण भई (रे) ।। ५

○

पद–८ : राग–जंगलो पीलू : ताल–तितालो

(प्रेम की दृढ़ता)

अब कोऊ कछु कहो दिल लागारै (टेर)
जाकी प्रीत लगी लालन से, कंचन मिला सुहागा रैं ।
हंसा की प्रकृत हंसा जाणे, का जाणैं नर क़ागा रै ।। १
तन भी लागा मन भी लागा, ज्यों बामण गल धागा रै ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भाग हमारा जागा रै ।। २

○

पद–९ : राग–ईमन : ताल–इकताल

(प्रेमप्रहार)

अब कोउ कैसे कहो दिल लागा (टेर)
मेरी प्रीत लगी मोहन से, सोने मिलत सुहागा ।। १
कोउ येक निंदो कोउ येक विंदो, नाम सुधारस पागा ।। २
जन मीराँ गिरधर वर पायो, भाग हमारा जागा ।। ३

○

पद–१० : राग–झँझोटी : ताल–दादरा

(प्रेम-दृढ़ता)

अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई (टेर)
माता छोड़ी पिता छोड़े, छोड़े सगा भाई ।
साधु संग बैठ-बैठ, लोकलाज खोई ।। १–अब०

८–१ (उ); (प्रभुनाव का गुटका सं. २९)
९–१ (उ); (सूर्यनारायणजी दाधीच से प्राप्त)
१०–(उ)
नोट–यह पद 'मेरे तो गिरधर गोपाल' पद में स्थाई के थोड़े परिवर्तन से किसी दादूपंथी द्वारा विकृत हुआ है।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संत देख दौड आई, जगत देख रोई ।
प्रेम आँसु डार-डार, अमर बेल बोई ।। २–अब०
मारग में तारग मिले, संत राम दोई ।
संत सदा शीश राखूं, राम हृदय होई ।। ३–अब०
अंत में से तंत काढ़ी, पीछे रही सोई ।
राणे भेज्या विष का प्याला, पीवत मस्त होई ।। ४–अब०
अब तो बात फैल गई, जाणे सब कोई ।
दास मीरां लाल गिरधर, होनी हो सो होई ।। ५–अब०

○

पद–११ : राग–पीलू : ताल–कहरवा

(प्रेम-प्रवाह)

अब नहिं जाने दूं गिरधारी,
(मोहे) प्रीत लगी अति भारी (टेर)
बाँको मुकट काछनी सुन्दर, ऊपर जरद किनारी।
गल मुतियन की माल बिराजे, कुण्डल की छबि न्यारी ।। १
बाँकी भों कजरारे नैनां, अलकैं छुट रही कारी ।
मंद-मंद मुरली धुन बाजत, मोही ब्रज की नारी ।। २
क्षुद्र घंटिका कटि कर सोहै, भुज पर बाजू धारी ।
कड़ा मरहटी सुघर नेवरी, नूपुर की झुँणकारी ।। ३
दुरजन लोग हँसो क्योंने मोसों, दे दे कर कर तारी ।
मीरां प्रभु की भई दिवानी, प्रेम मगन मतवारी ।। ४

○

पद–१२ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(विनय)

अब तो निभायाँ बनेगी, बाँह गहे की लाज (टेर)

११–१ (उ); (पु.ना.बा.)
१२–१ (उ); (वं.पु.ष्ट.४२)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

समरथ सरण तुम्हारी साँइयाँ, सरब सुधारण काज ।। १
भवसागर संसार अपर बल, जामें तुम्ही जहाज ।। २
निरधाराँ आधार जगतगुर, तुम बिन होय अकाज ।। ३
जुग-जुग भीर हरी भक्तन की, दीनो मोक्ष समाज ।। ४
मीरां सरण गही चरनन की, पैज रखो महाराज ।। ५

○

पद–१३ : राग–झँझोटी : ताल–तिताला

(गुरु-रहस्य)

अब (तो) हरि नाम लो लागी ।
सब जग को यह माखन चोरचो, नाम धरचो वैरागी (टेर)
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी ।
मूँड मुडाइ डोरी कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ।। १
मात जसोमति माखन कारण, बाँधे जाके पाँव ।
स्याम किसोर भयो नव गोरा, चैतन्य जाको नाँव ।। २
पीताम्बर को भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै ।
गौर कृष्ण की दासी मीरां, रसना कृष्ण बसै ।। ३

○

पद–१४ : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेम-निश्चय)

अब नहिं मानांला म्हे थारी, म्हाँने बर मिलिया गिरधारी[1] (टेर)
मन कपूर की एकहि गति है, कहा कहुँ बार हजारी ।
कंकर कंचन एक गिणत है, गुंज मिरच इकसारी ।। १

१३–२ (म)
नोट–इस पद में चैतन्य महाप्रभु का स्पष्ट उल्लेख और स्मरण है ।
१४–१ (उ०); (दीना. मं.मी.प. १६)
1–पा.–'अति भारी' ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अनँत धणी के सरणे आई, हाथ सुमरिणी धारी ।
जोग लियो जब बाद[1] तजीरी, गुर पाया निज भारी ।। २
साध संगत मेरो मन राजी, भई कुटंब सूं न्यारी ।
कोड़ बेर समझावो मोकूं, चालूं (जूं) बुद्धि हमारी ।। ३
म्हे रांणां के परत न रहस्यां, केई बेर कह-कह हारी ।
सौ बातन की एक बात है, अब तो समझ गँवारी ।। ४
रतन जडित की टोपी सिर पर, हार कंठ को भारी ।
चरण घूघरा धमस पडत हैं, (म्हे) करी स्याम सूं यारी[2] ।। ५
लाज सरम तो सभी गुमाई, यो तन शरणां धारी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारी ।। ६

○

पद–१५ : राग–काफी : ताल–जैत

(प्रेम-दृढ़ता)

अब नां रहूंगी श्याम अटकी, म्हारो मन लाग्यो गिरधर से (टेर)
म्हांने गुर मिलिया अविनासी, दई ग्यान की गुटकी ।
लगी चोट निज नांव धणी की, म्हारै हिवड़ै खटकी ।। १
माणक मोती परत न पहरूं, मैं तो कबकी नट गी ।
गहणों म्हारे माला दोवडो, और चंनण की कुटकी ।। २
राणा कुलकी लाज गमाई, साधां के संग भटकी ।
नित प्रत जाऊं गुर दरसण, नाचूं दै दै चुटकी ।। ३
परमगुरू के सरणै जाऊं, करूं प्रणाम सिर लटकी ।
जेठ बहू की काण न मानूं, पड़ो घूंघट पर पटकी ।। ४
करम लिखायो साध संगत में, हर-सागर[1] में लटकी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भो-सागर से छटकी ।। ५

१४–1–पा.–'जब क्या दिलगीरी' ।
2–पा.–'मैं भई श्याम की प्यारी' ।
१५–१ (उ०); (जमा० ७)–(दीना.मं.प. १७)
1 पा.–'मारग' ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१६ : राग–कामोद, छाया : ताल–कहरवा
(मीरां लीला सम्वाद)

अब मीरां मान लीज्यो म्हारी,
हांजी थांनै सइयां बरजै सारी (टेर)
राजा बरजै राणी बरजै, बरजै सब परिवारी ।
कुँवर पाटवी सो भी बरजै, और सहेल्यां सारी ।। १
सीसफूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली सोभा न्यारी ।
गले गूजरी कर में कंकण, नेवर पहिरे भारी ।। २
साधुन के संग बैठ बैठ के, लाज गमाई सारी ।
नित[1] प्रति उठि नींच घर जावो, कुलकूँ लगावो गारी ।। ३
बड़ा घरांकी छोरी कहावो, नाँचो दे दे तारी ।
बर पायो हिंदवाणो सूरज, अब दिल में कहा धारी ।। ४
तारयो पीहर सासरो तारयो, माय मोसाली तारी ।
मीरां ने सतगुरुजी मिलिया, चरण कमल बलिहारी ।। ५

○

पद–१७ : राग–काफी वा मांढ़ : ताल–जैत
(आत्मनिवेदन)

अब मैं शरण तिहारी जी मोहि राखो कृपानिधान (टेर)
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान ।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी विमान ।। १
और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत सुजान ।
कुबजा नीच भीलनी तारी, जाणैं सकल जहान ।। २
कहँ लग कहूँ गिनत नहिं आवै, थकि रहे वेद पुरान ।
मीरां कहै मैं शरण रावरी, सुनियो दोनों कान ।। ३

१६–३ (क.)
1 पा०–'नित प्रति जाय नीच घर बैठो' ।
१७–१ (उ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१८ : राग–सोरठ, विहाग : ताल–दीपचंदी

(प्रेम में त्याग)

अरी एरी ऊदाँ लागी का नाम न लेय (टेर)
जल से प्रीत करी मछली ने, बिछुरत प्राण तजे ।। १
मृगाँ की प्रीति लगी नादाँ से, सनमुख सेल सहे ।। २
दीपक से प्रीत लगी पतंग की, वार फेर जिय दे ।। ३
मीरां की प्रीति लगी है संतों से, गुरु चरणाँ चित दे ।। ४

○

पद–१९ : राग–जंगलो : ताल–कहरवा

(भगवत-स्मरण)

अरे रे मैं तो ठाडी जपूं राम माला रे (टेर)
मैं जपती नांव मेरे सायब का, आंण मिलो नँदलाला रे ।
हाथ सुमरणी कांख कूबड़ी, ओढ़ रही मृगछाला रे ।। १
मोर मुकट पीतांबर सोहै, ओढे लाल दुसाला रे ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भगतन के प्रतिपाला रे ।। २

○

पद–२० : राग–आसा, मांढ : ताल–कहरवा

(राणा संवाद–प्रेम–निश्चय)

अरे रांणां पहली क्यों ना बरजी ।
लागी गिरधरिया सूं प्रीत (टेर)
मारो चाहे छाँडो राणा, नाहिं रहूँ मैं बरजी ।
सुगनां साहिब सुमरतां रे, मैं थारे कोठे खटकी ।। १

१८–२ (म.); (पुजा नाथू पु.से.)
१९–२ (म.); (प्रभुनारायणजी का गुटका सं. २९)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणाजी भेज्यो विषरो प्यालो, कर चरणामृत गटकी ।
दीनबंधु सांवरियो हैरे, जाणत है घट-२ की ।। २
म्हारा हिरदा मांय बसी है, लटकन मोरमुकट की ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मैं हूँ नागरनट की ।। ३

○

पद–२१ : राग–सोरठ, शंकरा : ताल–तिताला
(उलहना)

अहो काँई जाणें गुवालियो बेदरदी पीड़ पराई (टेर)
(जो) जनमत ही कुल त्यागन कीनों, बन बन धेनु चराई ।। १
चोर चोर दधि माखन खायो, अबला नार सताई ।। २
सोला सैंस गोपी तज दीनी, कुबजा संग लगाई ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुंण करै थारी (रे) बड़ाई ।। ४

○

पद–२२ : राग–काफी : ताल–दीपचन्दी
(प्रेम)

आई देखन मनमोहन को, मोरे मन में छबि छाय रही (टेर)
मुख पर का आँचल दूर किया,
तब ज्योति में ज्योति समाय रही ।। १ आई०
सोच करे अब होत कहा है,
प्रेम के दुन्द में आय रही ।। २ आई०
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
बूंद में बूंद समाय रही ।। ३ आई०

○

२०–२ (म.); मी.प.जमा.राम. ६
२१–१ (उ.); (दीना. मं.मी.प.९)
२२–२ (म.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२३ : राग–काफी, घूमर : ताल–कहरवा
(प्रेम-लीला)

आज अनारी ले गयो सारी, बैठि कदम की डारी हे माय ।
म्हारे गैल परचो गिरधारी हे माय, आज अनारी ले गयो सारी (टेर)
मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृष्णमुरारी हे माय ।। १
ले गयो सारी म्हारी अनारी, जल में खड़ी उघारी हे माय ।। २
सखी सयानी मोरी हँसत हैं, हँसि हँसि देवें तारी हे माय ।। ३
सास बुरी अरु ननद हठीली, लरि लरि दे मोहिं गारी हे माय ।। ४

○

पद–२४ : राग–भैरवी : ताल–तिताला
(अपरोक्ष-प्रेमानन्द)

आज सखि मोरे अनन्द भयो है, घर में मोहन लाधो री (टेर)
बन जोई बृन्दावन जोई, जोई बिरज सब बाधो री ।। १
सतवे मलीए अजब झरोखे, वाही तें हरिजी लाधो री ।। २
म्हारा तो घर में मही घनेरो, हरि चोर चोर दधि खाधो री ।। ३
अपने द्वार में कबकी ठाढी, बाँह पकर हरि साधो री ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधर मिलियो, बिरह बाज ने बांधो री ।। ५

○

पद–२५ : राग–टोडी, जोनपुरी : ताल–कहरवा
(प्रेम-लीला)

आजु मैं देख्यो गिरधारी ।
सुन्दर बदन मदन की शोभा, चितवन अनियारी (टेर)
बजावत बंसी कुंजन में ।
गावत ताल तरंग रंग ध्वनि, नचत ग्वालगन में ।। १

२३–२ (म.)
२४–२ (म.); (सं रागकल्पद्रुम पृ. ४२)
२५–२ (म.); (भक्तनारी पृ. ४७)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

माधुरी मूरति वह प्यारी ।
बसी रहै निसिदिन हिरदै बिच, टरे नहीं टारी ।। २
वाहि पर तन मन हैं वारी ।
वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी ।। ३
तुलसी बन कुंजन संचारी ।
गिरधरलाल नवल नटनागर, मीरां बलिहारी ।। ४

○

पद–२६ : राग–काफी : ताल–कहरवा
(मिलन-लालसा)

आज्यो आज्यो गोविन्दा म्हारै म्हैल,
निहारां थारी बाटड़ली खड़ी जी, म्हारै आज्यो (टेर)
तनका त्यागूं कापड़ा जी, ऊगंते परभात ।
खड़ी जोवती राह में जी, सतगुरु पोंछे आय ।
पियालो लियाँ हाजिर खड़ी, जी ।। १
साधु हमारी आतमा जी, हम साधुन की देह ।
रोम रोम में रम रही जी, ज्यूं बादल में मेह ।
सुरत हरि नाम सें लगी, जी ।। २
मीरां हरि की लाडिली जी, तुम मीरां के स्याम ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, दरसण द्यो म्हारे राम ।
सुरत निज नाम से लगी, जी ।। ३

○

पद–२७ : राग–मारू व जोगिया : ताल–जैत
(इष्ट-प्राप्ति)

आँण मिल्यो अनुरागी, जोगियो, आँण मिल्यो अनुरागी ।
साँसो सोच अंग नहिं अब तो, तिस्ना दुबध्या त्यागी ।। १

२६–१ (उ)
२७–१ (उ.); (दीना सं.मीं.पृ.३५)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, स्याम वरण बड़भागी[1] ।। २
जनम जनम को साहिब मेरो, वाही सों लौ लागी ।। ३
अपणाँ पिया संग हिल मिल खेलूँ, अधर-सुधारस-पागी ।। ४
मीरां गिरधर के मन मानी, अब मैं भई सुभागी ।। ५

○

पद–२८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(विरह)

अपनी गरज हो मेटी, साँवरे हम देखी तुमरी प्रीत (टेर)
आपन जाय द्वारका छाये, ऐसे वेहद भये हो नचिंत ।
ठोर ठोर अलेव फिरत हो, फूल भँवर की सी रीत ।। १
बिन दरसन कल न परत है, सपने कै सी प्रीत ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, प्रभु चरणन परचित ।। २

○

पद–२९ : राग–मारू, सारंग वा माँझ : ताल–तिताल
(इष्ट प्राप्ति)

आये आये जी महाराज आये, निज भक्तन के काज बनाए । (टेर)
तज वैकुण्ठ तज्यो गरुड़ासन, पवन बेग उठ धाये ।। १
जब ही दृष्टि परे नंदनन्दन, प्रेम भक्ति रस प्याये ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरण-कमल चित लाये ।। ३

○

1 पा. 'अनुरागी' ।
२८–१ (उ.)
२९–२ (म.); (बृ.रा.र.पृ. १७२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३० : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी
(विरह)

आली री मेरे नयनन बान पड़ी । (टेर)
चित्त चढ़ी मेरै माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।। १
कब की ठाडी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ।। २
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ, जीवन मूल जड़ी ।। ३
मीरां गिरधर हात बिकानी, लोग कहै बिगड़ी ।। ४

○

पद–३१ : राग–खमाच : ताल–कहरवा
(चरित्र, वृन्दावन-महिमा)

आली मोहि लागत बृन्दावन नीको । (टेर)
घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दर्शन गोविंदजी को ।। १
निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध दही को ।। २
रत्न-सिंहासन आप बिराजे, मुकुट धरचो तुलसी को ।। ३
कुंजन कुंजन फिरत राधिके, शब्द सुनत मुरली को ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको ।। ५

○

पद–३२ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा
(प्रेम-प्रवाह)

आली साँवरा की दृष्टि मानो प्रेम की कटारी है । (टेर)
लागत बेहाल भई, तन की सुधि बुधि गई ।
तन मन व्याप्यो प्रेम, मानो मतवारी है ।। १

३०–१ (उ.)
नोट—यह पद किसी भी भक्त कवि के पद से टक्कर ले सकता है ।
भाव-भाषा-शैली सभी दृष्टि से यह अत्युत्तम है । सं० ।
३१–१ (उ.); (बृ.रा.र.पृ. ५१९)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सखियां मिलि दुइचारी, बावरी सी भई न्यारी ।
हौं तो वाको नीके जानों, कुंज को विहारी है ।। २
चंद को चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहै ।
जल बिना मीन जैसे, तैसे प्रीत प्यारी है ।। ३
बिनती करों हे श्याम, लागों मैं तुम्हारे पाम ।
मीरां प्रभु ऐसे जानो, दासी यह तुम्हारी है ।। ४

○

पद–३३ : राग–आसा-मांड : ताल–दीपचंदी

(छवि-वर्णन)

आवत मोरी गलियन में गिरधारी ।
मैं तो छुप गई लाज की मारी । (टेर)
कुसुमल पाग केसरियाँ जामा, ऊपर फूल हजारी ।
मुकुट ऊपरे छत्र बिराजे, कुंडल की छबि न्यारी ।। १
केसरी चीर दरियाई को लहँगो, ऊपर अँगियाँ भारी ।
आवत देखे कृष्ण मुरारी, छुप गई राधा प्यारी ।। २
मोर मुकुट मनोहर सोहे, नथनी की छबि न्यारी ।
गल मोतिन की माल बिराजे, चरणकमल बलिहारी ।। ३
ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सुणज्यो कृष्ण मुरारी ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरणकमल बलिहारी ।। ४

○

पद-३४ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(मिलनोत्कण्ठा)

आवो आवो जी रँगभीना म्हारै म्हैल,
प्यालो तो लियां हाजर खड़ी । (टेर)
सतजुग में सूती रही, त्रेता लई जगाय ।

३२–२ (म.)
३ (क.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द्वापर में समझी नहीं, कलजुग पोंहच्यो आय ।। १
सतगुरु शब्द उचारिया जी, बिनती करों सुनाय ।
मीरां नैं गिरधर मिल्या जी, निरभै मंगल गाय ।। २

○

पद–३५ : राग–तिलंग : ताल–धीमा

(विनय)

आवो जी गिरधारीजी थांसूं में बोले । (टेर)
थे तो म्हारा जनम जनम रा संगी,
थांरे लारां लारां संग में डोले ।। १
आद अंत तन मन धन मेरे,
आनंद करां कलोले ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
आन मिलो अनमोले ।। ३

○

पद-३६ : राग–तिलंग : ताल-धीमा

(विरह)

आवो मनमोहनाजी, जोऊँ थारी बाट (टेर)
खान पान मोहि नेक न भावे, नैण न लगे कपाट ।। १
तुम आयां बिन सुख नहिं मेरे, दिल में बहोत उचाट ।। २
मीरां कहे मैं भई रावरी, छांडो नाहि निराट ।। ३

○

३८–१ (उ.)
३५–१ (उ.)
३६–१ (उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद-३७ : राग–खमाच : ताल-धीमा
(विरह)

ग्रावो मनमोहनाजी मीठा थाँरा बोल । (टेर)
वालपने की प्रीत रमइयाजी, कदे नहिं ग्रायो थारो तोल ।। १
दरसन बिन मोहिं जक न परत है, चित मेरो डाँवाडोल ।। २
मीरां कहे मैं भई रावरी, कहो तो बजाऊं ढोल ।। ३

O

पद-३८ : राग–देश : ताल-दीपचंदी
(उपदेश)

ग्रावो सहेल्याँ रली कराँ हे, पर घर गवरण निवारि । (टेर)
भूँठा मारिणक मोतियाँ री, भूँठी जगमग जोति ।
भूँठा सब ग्राभूषणां री, सांची पियाजी री पोति ।। १
भूँठा पाट पटंबरां री, भूँठा दिखरणी चीर ।
साँची पियाजी री गूदड़ी, जामें निरमळ रहे शरीर ।। २
छप्पन भोग बुहाई देहे, इन भोगिन में दाग ।
लूँण ग्रलूँणो ही भलो हे, ग्रपणे पियाजी को साग ।। ३
देखि विराणे निवाँण कूँ हे, क्यूँ उपजावै खीज ।
कालर ग्रपणो ही भलो हे, जामें निपजै चीज ।। ४
छैल विराणो लाख को हे, ग्रपणे काज न होइं ।
ताके संग सिधारताँ हे, भलां न कहसी कोइ ।। ५
वर हीणो ग्रपणो भलो हे, कोढी कुष्टी होइ ।
जाके संग सिधारताँ हे, भलां कहे सब कोइ ।। ६
ग्रविनासी सो बालमा हे, जिनसूँ साँची प्रीति ।
मीरां कूँ पिरभू मिल्या हे, ये ही भगति की रीति ।। ७

O

३७–१ (उ.); (मीरांपदावली वि. कु., पृ. ८)
३८–१ (उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद-३९ : राग–काफी : ताल-दीपचंदी

(विरह)

इक अरज सुनो पिय मोरी, मैं किण संग खेलूं होरी । (टेर)
तुम तो जाय विदेसाँ छाये, हम से रहे चित चोरी ।
तन आभूषण छोड़े सवही, तज दिये पाटपटोरी ।
मिलन की लग रही डोरी[1] ।। १
आप मिल्यां बिन कल न पड़त है, त्यागे तिलक तमोरी ।
मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, सुणज्यो अरजी मोरी ।
दरस विन बिरहन दोरी ।। २

○

पद ४० : राग–बरवा–ऊझाज : ताल–तिताला

(उलहना)

इतनूं कांईं छै मिजाज, म्हारै मिंदर आ[व]तां ।
थांने इतनूं कांईं छै मिजाज । (टेर)
तन मन धन सब अरपन कीनूं, छाड़ी छै कुल की लाज ।। १
दो कुल त्याग भई वैरागण, आप मिलण की लाग [के काज] ।। २
मीरां के प्रभु कब र मिलोगे, कुबज्या आई कांईं याद ।। ३

○

पद-४१ : राग–सारंग : तर्ज–घूमर : ताल–कहरवा

(लीला-वर्णन)

इन काना की वंसी म्हांने, लागे प्यारी माय । (टेर)
आज बिरज पर इन्दर कोप्यो, बरसे मूसलधारा ।
बाँवां नख पर गिरवर धारचो, डूबत बिरज उबारा ।
गऊ बछड़ा भीजे री माय ।। १

३९–१ (उ.); १–पा० 'तोरी' ।
४०–२ (म.); (प्रभुनारायणजी के गुटके से पृ. ४३)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांव पयादे सब चल आये, सुन मुरली का बाजा ।।
मृत्युलोक में टटियां छाई, जहाँ देवन का बासा ।
ब्रह्मा बिष्णु खड़े री माय ।। २
कूद पड़े कालीदह माँही, नाग ज्यो नाथ्यो काली ।
जमुनां के नीराँ तीराँ धेनु चरावे, ओढ़े कम्मल काली ।
तट जमुना कढे री माय ।। ३
मोरमुकुट पीताम्बर सोहे, गले बैजन्ती माला ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, ठाकुर बंसीवाला ।।
यांकी सूरत पर बलिहारी माय ।। ४

○

पद-४२ : राग–मांढ : ताल–दीपचंदी

(लीला)

इन सरवरिया री पाल, मीरां बाई साँपड़े ।
साँपड़ किया अस्नान, सूरज सामी जप करे । (टेर)
(प्रश्न) होय बिरंगी नार, डगराँ बिच हे क्यूं खड़ी ।
काँई थारो पीहर दूर, काँई घराँ सासू लड़ी ।। १
(उत्तर) नहिं म्हारो पीहर दूर, नहीं घराँ सासू लड़ी ।
चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी ।। २
गुरु म्हारा दीनदयाल, वे हीराँ का पारखी ।
दियो म्हांने ज्ञान बताय, संगत करस्याँ साध री ।। ३
इन सरवरिया रा हंस, सुरंग ज्यांरी पाँखड़ी ।
राम मिलन कद होय, फड़के म्हारी आँखड़ी ।। ४
राम गये बनबास, साथहि सब रँग ले गये ।
ले गये (म्हारी) काया को सिंगार, तुलसी की माला दे गये ।। ५
खोई कुल की लाज, मुकंद थारे कारने ।
बेगहि लीज्यो सम्हाल, मीरां पड़ी जो बारने ।। ६

४१–२ (म.); (पुजा. नाथू. पु. से)
४२–२ (म.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद-४३ : राग–मांड वा सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

इसौ पिव जान न दीजै हो ।
स्याम सलोना लोइणां, मुख देख्यां जीजै हो । (टेर)
आवो सखी सहेलड़यो, बातां सुख लीजै हो ।
आरति अपणी कारणै, वाकै पाइ पड़ीजै हो ।। १
आतम ध्यान लगाइ कैं, वाकै चरणां चित दीजै हो ।
चन्दन केरा नाग ज्यूँ, लपटाइ रहीजै हो ।। २
कर जोड़ै बिनती करूँ, मेरी अरज सुणीजै हो ।
मीरां व्याकुल विरहनी, अपनी कर लीजै हो ।। ३

○

पद-४४ : राग–देश मल्हार : ताल–कहरवा

(विरह)

उड़जा रे काग बन का, मेरा स्याम गया वोहो दिन का रे । (टेर)
तेरै उड़यां सूँ राम मिलैगा, धोखा भागै मन का रे ।। १
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, हरि हैं गाढ़े दिल का रे ।। २
आप तो जाय द्वारिका छाये, हम बासी मधुबन का रे ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चरणकँवल हरिजन का रे ।। ४

○

पद–४५ : राग–ईमन–सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रतीक्षा)

उड़ि जावो री म्हारी सोनचिड़ी (टेर)
काहे सूं मँढ़ाऊँ थारी आंख पाँखडी, काहे सूं मँढ़ाऊँ थारी चोंचजड़ी ।। १
रूपा सूं मँढ़ाऊँ थारी आँख पाँखड़ी, सोना सूं मँढ़ाऊं थारी चोंचजड़ी ।। २

४३–१ (उ.); (क. ब. २८)
४४–२ (म.); (रामस० गु० पृ० ३२३)
४५–२ (म.); (पुजा. नाथू पु. से)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कह म्हारी चिड़िया सुगन री बातां, कद आवेला म्हारा स्याम धणी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, बाट जोऊँ थारी कदकी खड़ी ।। ४

○

पद–४६ : राग–खमाच : ताल–कहरवा
(चरित्र, वृन्दावन-महिमा)

उधो म्हांनै लागै बृन्दाबन नीको रे । (टेर)
वृन्दावन में धेनु बहुत हैं, भोजन दूध दही को रे ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहै, सिर केसर को टीको रे ।। २
घर घर में तुलछी को बिड़लो, दरसण माधवजी को रे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरी बिना सब फीको रे ।। ४

○

पद–४७ : राग–जोनपुरी : ताल–कहरवा
(उद्धव संवाद, प्रेम-प्रवाह)

ऊधो भली निभाई रे, त्यागे गोपी गोकुल म्हांनैं क्यूं तरसाई रे । (टेर)
चन्दन घिस लाई वासैं प्रीतड़ी लगाई, वानैं लाज ना आई ।
देखो जी ऊधोजी आखिर चेरी की जाई रे ।। १
बहोत दिन बीत्या म्हारी सुध ना लई, नैणां से नींद गई ।
चांदणी-सी रात म्हारै बैरण भई रे ।। २
रास तो कीयो म्हांसैं प्रीतड़ली जोड़ी, अब तुम काहेकूं तोड़ी ।
तिरबंकी प्यारी म्हांसैं हुई छै नेड़ी रे ।। ३
मीरांजी तो बिना कल ना पड़ैं, पल छिन नाहीं सरे ।
छतियाँ तपै नैणां नीर झरैं रे ।। ४

○

४६–१ (उ); (राम स० गु०)
४७–२ (म.); (राम स० गु०)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४८ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी

(उद्धव-गोपी संवाद)

ऊधोजी हमारे राम संगाती, उस लोभी ने भेजी है पाती । (टेर)
आप तो जाय वहां पर छाये, हमको भेजी जोग की पाती ।
झुर झुर नैन भये ओलाती, नदियाँ-सी बही जात दिनराती ।। १
आम की डार कोयलिया बोलै, हमरो मरन लोग की हांसी ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, मैं तो जनम जनम की दासी ।। २

○

पद–४९ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(उद्धव-संवाद—प्रेम प्रवाह)

ऊधो म्हारे मन की मन में रही । (टेर)
एक समैं मोहन घर आये, मैं दधि मथत रही ।
या दुनियां को झूंठो धंधो, मैं हरि कूं बिसर गई ।। १
वा कपटी की कहा कहूं, ऊधो बचन प्रतीत नहीं ।
नैंन हमारे ऐसे झूरें, उलटी गंग बही ।। २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच में जमुना बही ।
आप मोहनजी पार उतर गया, हमसैं कछू ना कही ।। ३
व्रजवनिता कौ संग छांडिकै, कुबज्या संग लई ।
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, चरणां लिपट रही ।। ४

○

पद–५० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(लीला)

ए री बरजो जसोदा कान, मेरे घर नित्य आता है ।
जिधर को मैं मुड़ जाती हूँ, बगद मेरे सामा ही आता है । (टेर)

४८–२ (म.)
४९–२ (म.); (राम स० गु.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मैं जल जमुना भरन जात हूँ, मेरे सामा ही आता हैं।
कंकरी दे मोरी बहियाँ मरोरी, बाराजोरी मचाता है ।। १
मैं दधि वेचन जात बृन्दाबन, चला पीछे से आता हैं।
दधि की मटकी फोड़, माखन मेरा लूट खाता है ।। २
रास विलास करत गोकुल में, बंसियाँ सुनाता है।
मीरां को गिरधर मिलिया, चरणों में लगाता है ।। ३

○

पद–५१ : राग–मालकोश मुलतानी : ताल–तिताला
(लीला)

एरी तेरी कौन जाति पनिहारी। (टेर)
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच मिले गिरधारी ।।— १
सुन्दर बदन नयन मृग मानो, विधना आप सँवारी ।।—२
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीते हम हारी ।।—३

○

पद–५२ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(लीला-वर्णन)

ए री मा बंसीवारो कान।
चंद्र बदन मृगलोचन राधे, पायो स्याम सुजान (टेर)
गोकुल से आई गूजरी, मथुरा से आयो कान।
अधबिच झगड़ो छेड़ दियो, उन माँग्यो मही को दान ।। १
कबके तुम दानी भये जी, कब हम दीनो दान।
बाबा नन्द की गऊ चरा कर, भये अनोखे कान ।। २
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावे, सब ही में सुरज्ञान।
बंसी बजा मेरो मन हर लीन्हो, मार बिरह का बान ।। ३

५०–३ (क)
५१–१ (उ.)
५२–२ (म.); (फु. प.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोरमुकुट पीतांबर सोहे, कुण्डल झिलकै कान ।
साँवरी सूरत पर तिलक बिराजे, वाही से लाग्यो मेरो ध्यान ।। ४
सुरनर मुनिजन ध्यान धरत हैं, गावत वेद पुरान ।
मीरां नें प्रभु दरसण दीज्यो, वृज तज अन्त न जान ।। ५

○

पद–५३ : राग–सोरठ (मल्हार) : ताल–कहरवा
(विरह तथा प्रेम)

एरी मैं खड़ी निहारूँ बाट,
चितवन चोट कलेजे बह गई, सुन्दर स्याम सु घाट । (टेर)
मथुरा में कुबज्या कर राखी, म्हाजन की सी हाट ।
केसर चन्दन लेपन कीन्हो, मोहन तिलक लिलाट ।। १
हमरा पिलँग जड़ाऊ छोडया, बणिया (रेसम) पीली पाट ।
क्याँ पर राजी भयो साँवरो, चेरी के नहिं खाट ।। २
अजहुँ न आयो कँवर नंद को, क्याँरी लागी चाट ।
छाँड गयो मझधार साँवरो, बिना अकल को जाट ।। ३
आप बिना गोपिन सब व्रज की, ब्याकुल भई निराट ।
मीरां के प्रभु दरसण दीज्यो, करज्यो आनँद ठाट ।। ४

○

पद–५४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी
(प्रेम और विरह-व्यथा)

ए री[1] मैं तो प्रेम[2] दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय । (टेर)
सूली ऊपर सेज हमारी[3], किस बिध सोना[4] होय ।। १
गगन मंडल पै सेज पिया की, किस बिध मिलना होय ।। २

५३–१ (उ.); (फु. प.)
५४–१ (उ.); (शब्दावली-३) तथा (स. मा. मी. ली. १७)
पाठान्तर—1. हेरी; हेली; भई । 2. राम; कृष्ण; श्याम । 3. पिया की । 4. मिलना ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

घायल की गत घायल जानैं, कै जिन लागी होय[5] ।। ३
जौहरि[6] की गत जौहरि जानैं, कै जिन जौहर होय ।। ४
दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्या नहिं कोय ।। ५
मीरां की तब पीड़ मिटैगी,[7] बैद साँवलिया होय[8] ।। ६

○

पद–५५ : राग–पीलू बरवा : ताल–धीमा तिताला
(विनय-प्रेमगहनता)

एक विरियाँ मुख बोलो रे, धुतारा जोगी । (टेर)
कानन कुण्डल गल बिच सेली, अब तेरी मुख खोलो रे ।। १
रास रच्यो बंसीवट जमुना, ता दिन कीनो कोलो रे ।। २
पूरब जनम की मैं हूं गोपिका, अधबिच पड़ गयो झोलो रे ।। ३
जगत बदीती तुम करो मोहन, अब क्यों बजाऊं ढोलो रे ।। ४
तेरे कारन सब जग त्याग्यो, अब मोहे कर सों लो रे ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चेरी भई बिन मोलो रे[1] ।। ६

○

पद : ५६ : राग–सोरठ
(विरह)

ऐसी ऐसी चांदनी में पिया घर नांई । (टेर)

---

5. और न जाणें कोइ; लाई (लागी की जगह) दूजा न जांणै कोय । 6. जोहर । 7. मीरां को दुख तब ही मिटैगो (मिटही, मिटसी); मीरां कै प्रभु गिरधरनागर; मीरां को दुख तबही बीतै । ८. बैद सांमलिया होय; बैद सांवरियो होय; बैद रमीया होय । 'होय' के स्थान में 'होइ' भी है ।

नोट—एक दो प्रतियों में यह अंतरा अधिक भी है—"सुख संपत में सब कोई साथी, विपत पड़यां नहिं कोय" । (रामस्नेही गुटका तथा अन्य प्रति में) । कई प्रतियों में—"सूली ऊपर सेज पिया की, किस बिध मिलना होय" यही अंतरा है, "गगन मंडल पै··· ············" यह अंतरा नहीं है ।—सं०

५५–१ (उ०); (सां. रागकल्पद्रुम–रागसागर का)
1–पाठान्तर–बोल । खोल । कोल । झोल । ढोल । सौंल । मोल ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चार पहर दिन सोवत बीत्यो, तड़पत रैन विहाई ।। १
मैं सूती पिया अपने म्हैल में, सालूड़ा में आई सरदाई ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरख निरख गुण गाई ।। ३

○

पद–५७ : राग–बहार : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी । (टेर)
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, तलफ़ तलफ़ जिय जासी ।। १
तेरे खातर[1] जोगण हूंगी, करवत लूंगी कासी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल की दासी ।। ३

○

पद–५८ : राग–मांढ वा सोरठ : ताल–तिताला

(विरह)

ऐसै जन जानन दीजै हो ।
आवो मिलो सहेलड्यां, बाथां सुख लीजै हो । (टेर)
नैंन सलोने सांइयाँ, देख्यां सूँ जीजै हो ।
तन मन जोबन वार के, निछरावळ कीजै हो ।। १
अपणी आरत कारणैं, वाके, पांइ परीजै हो ।
चंदन केरा रूख ज्यौं, चरणां लीपटीजै हो ।। २
हाथ जोड़ि विनती करूँ, मेरी अरज सुणीजै हो ।
मीरां ब्याकुल विरहनी, वाकूँ दरसण दीजै हो ।। ३

○

५६–२ (म.); (फु.प.)
५७–१ (उ०)
1–पाठान्तर–कारण ।
५८–१ (उ०); (क.ब.१७)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५६ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(विरह)

ऐसे पियै जान न दीजे हो ।
चलो री सखी ! मिलि राखिये, नैनन रस पीजे हो । (टेर)
स्याम सलोनो साँवरो, मुख देखत जीजे हो ।। १
जोइ जोइ भेष सों हरि मिले, सोइ सोइ कीजे हो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बड़भागन रीजे हो ।। ३

○

पद–६० : राग–देश : ताल–तिताला

(विनय)

ओ जी[1] महाराज, छोड़ मत जाजो,
मैं अबला बल नांही गुसांईं, तुमही मेरे सिरताज (टेर)
मैं गुनहीन गुन नांही गुसाईं, तुम समरथ महाराज ।। १
रावलि होइकै किनरै जाऊं, तुम हो हिवड़ा रो साज ।। २
मीरां के प्रभु और न कोई, राखै अब को[2] लाज ।। ३

○

पद–६१ : राग–काफी : ताल कहरवा

(मंगल)

ओढ़ूं लज्या चीर, धीरजि कौ घाघरौ ।
समता कांकण हाथ, सुरति की मूंदड़ौ । (टेर)
अँगियाँ है विसवास, चूड़ो चित ऊजलौ ।
दुलड़ी दिल दरियाव, साँच को दोवड़ो ।। १

६०–१ (उ०); (बंगा. पु. पृ. ११)
1 पाठान्तर–हो जी ।
2 पाठान्तर–के । अथवा राखो तो ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दांताँ इम्रत-मेख, दया को बोलबौ ।
ऊबटणों गुरज्ञांन, ध्यांनकौ धोइबौ ।। २
नकवेसर हरिनांव, काजलि म्हारै धरम कौ ।
बिंदलो जग उजियार, तिलक ततसार कौ ।। ३
ग्यांन अंगूठी कान, जुगति का झूठणां ।
जेलड सील संतोष, नरत का घूघरा ।। ४
पटली ब्रह्म-ग्न्यांन, हरी बर राखड़ी ।
पहरि सुवागण नारि, झरोखै आ खड़ी ।। ५
पतिबरता की सेज, साहिबजी पधारिया ।
मीरां हरि की सरण, परम पद पाइया ।। ६

○

पद–६२ : राग–सोहनी वा विहागड़ो : ताल–तिताला
(प्रेम-प्रवाह)

ओळूं थारी आवै हो महाराजा अबिनासी
हे म्हांनैं कब दरस दिखासी । (टेर)
बिरह बियोगन बन बन डोलूं, करवत ल्यूंगी कासी ।। १
निस दिन ऊभी पंथ निहारूं, कब मोहि धीर बंधासी ।। २
कृपा करौ म्हारै भवन पधारौ, नहिं यो जिवड़ो जासी ।। ३
मैं मंदभागण काहे को सरजी, पिया मोसूं रहत उदासी ।। ४
तुम हो हमारे अंतरजामी, मैं (थारा) चरणां री दासी ।। ५
मीरां तो कुछ जाणत नांहीं, पकड़ी टेक निभासी ।। ६

○

पद–६३ : राग–सोरठ, भैरवी : ताल–तिताला
(विरह)

ओळूंड़ी लगाइ गयो हे व्रज को वासी, कब मिलि जासी हे । (टेर)

६१–२ (म०); (राम. स. गु.)
६२–१ (उ०); (राम. स. गु.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चंपले री डाल कोयलिया बोलै हे, बोलत बचन उदासी हे ।। १
गोकुल ढूंढ बृंदाबन ढूंढ्यौ, ढूंढी मथुरा कासी हे ।। २
रैणि दिवस मछली ज्यूं तलफां, तलफ तलफ जिवड़ो जासी हे ।। ३
जै कोई प्रभुजी नैं आंण मिलावै, छूटत प्राण बचासी हे ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिजी मिल्यां दुख जासी हे ।। ५

○

पद–६४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(उलहना)

कछु दोष नहीं कुबज्या ने, बीरी अपना श्याम खोटा । (टेर)
आप न आवे पतियाँ न भेजे, कागज का काँई टोटा ।। १
नौलख धेनु नन्दघर दूधे, माखन का नाँई टोटा ।। २
आपहि जाय द्वारिका छाये, ले समदर की ओटा ।। ३
कुबज्या दासी कंसराय की, वे नंदजी के ढोटा ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुबज्या बड़ी हरि छोटा ।। ५

○

पद–६५ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा
(उपदेश)

कछु लेना न देना मगन रहना । (टेर)
नांहिं किसी की कांनां सुणनी, नांहिं किसी कूं [अपनी] कहना ।। १
गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिये सूं मिलता रहना ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, साँवरिया [के] चरणां चित देना ।। ३

○

६३–१ (उ०); (राम. स. गु.)
६४–२ (म०); (भजनमंजरी पृ. १५८)
६५–२ (म०)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—६६ : राग—काफी : ताल—कहरवा

(विरह)

कठण लगन की पीर रे, हरि लागी सोई जाने । (टेर)
प्रीत करी कछु रीत न जाणी, छोड़ चले अधबीच ।। १ क.
दुख की बेला कोई काम न आवे, सुख के सब हैं मीत ।। २ क.
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आखर जात अहीर ।। ३ क.

○

पद—६७ : राग-यमन : ताल—कहरवा

(प्रेम)

कनैयो मेरा प्राण श्रीबृन्दाबनबासी । (टेर)
साँवली सूरत पर मन वारी, कोय करे जग हांसी ।। १ कनैयो.
राधा वर के निकट बसत है, कोन जात मेरो कासी ।। २ कनैयो.
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी ।। ३ कनैयो.

○

पद—६८ : राग—भैरवी : ताल—कहरवा

(लीला-वर्णन)

कनैय्यो तेरो जमुना में कूद परयो रे । (टेर)
कालिंदी को कालो पानी रे, पेठत कछु ना डरयो रे ।। १
नंद जसोदा गोप गोपी सब, निरखत नीर झरयो रे ।। २
पैठ[1] पंयारी[2] काली नाग नाथ्यो रे, फण पर नृत्य करयो रे ।। ३
व्रज के काज गोवर्धन धारयो रे, इन्द्र को मान हरयो रे ।। ४
मथुरा में प्रभु जन्म लियो है, सुनके कंस डरयो रे ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुर को काज सरयो रे ।। ६

६६—१ (उ०)
६७—२ (म०)
६८ (का. गु. ५।१९५)
१. पैठ = घुसना । २. पानी में ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६९ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी

(विरह)

कबहूं मिलैगो मोहि आई, रे तू जोगिया । (टेर)
तेरे कारण जोग लियो है, घरि घरि अलख जगाई ।। १
दिवस न भूख रैंन नहिं निद्रा, तुम बिन कछु न सुहाई ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, मिलि करि तपत बुझाई ।। ३

○

पद–७० : राग–जंगला, सारंग : ताल–तिताला

(प्रेम, उत्कंठा)

कभी गली हमारी आव रे, मोरे जिया की तपत बुझाव रे ।
नँदजू के प्यारे लाला ।।
तेरे साँवरे बदन पर कई कोटि काम वारे । (टेर)
तेरियाँ जुलफाँ दिल दियाँ कुलफाँ जी दोऊ नैन है सतारे ।
तेरी खूबी के दरश पै लाल नयन तरसते हमारे ।। १
पिया पिया करै पपीहरा रे निशि दिन सो याद तेरी ।
मेरे साँवरे सलोने मोहन आशा दरशन केरी ।। २
घायल फिरूं दरश की पीर जाने नहिं कोई ।
मोहे लागी चोट प्रेम की जिन लागी जानै सोई ।। ३
जैसे जल के सोख हुए मीन क्या जीवै बिचारे ।
कृपा कीजो दरशन दीजो मीराँ माधो नन्ददुलारे ।। ४

○

पद–७१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह, विनय)

कभी म्हारी गली आव रे, जिया की तपत बुझाव रे,
म्हारे मोहना प्यारे । (टेर)

६९–१ (उ०); (वा.) मी. म. पृ. ५५ पद ११९)
७०–(वृ. रा. र. पृ. १२०)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तेरे सांवले बदन पर, कई कोटि काम वारे ।
तेरे खूबी के दरस पै, नैन तरसते म्हारे ।। १
घायल फिरूँ तड़फती, पीड़ जाने नहिं कोई ।
जिन[1] लागी पीड़ प्रेम की, जिन लाई जाने सोई ।। २
जैसे जल के सोखे मीन, क्या जीवें बिचारे ।
कृपा कीजे दरस दीजे, मीरां नन्द के दुलारे ।। ३

○

पद–७२ : राग–झँझोटी, गारा : ताल–तिताला

(लीला)

कमलदल लोचना, तैंने कैसे नाथ्यो भुजंग । (टेर)
पैसि पताल कालीनाग नाथ्यो, फण फण निरत करंत ।। १
समरथ नाग महाबलि जोधा, जमना को नीर अथंग ।। २
कूद पड़्यो न डर्यो जल मांहीं, और काहू नहिं संग ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, श्रीबृन्दाबनचंद ।। ४

○

पद–७३ : राग–सोहनी : ताल–तिताला

(कर्म-गति)

कर्म की गत न्यारी, संतो ! कर्म की गत न्यारी । (टेर)
बड़े बड़े नैन दिये निरखण को, बन बन फिरत उघारी रे ।। १
उज्ज्वल वरन दीनी बगलन कूं, कोयल कर दीनी कारी रे ।। २
और नदियन जल निर्मल कीनो, समुदर दीनी खारी रे ।। ३
मूरख को उत्तम राज दियत हो, पंडित फिरत भिखारी रे ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, राणोजी तो कौन बिचारी रे ।। ५

७१–३ (क०);
1. पाठान्तर-जोगी पीर प्रेम की जाने बिरला जाने सोई ।
७२–२ (म०)
७३–(का. ४।१७२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–७४ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चेतावनी)

करनां फकीरी क्या दिलगीरी, सदा मगन मन रहना रे। (टेर)
कोई दिन बाड़ी तो कोई दिन बँगला, कोई दिन जंगल रहना रे ।।१
कोई दिन हाथी कोई दिन घोड़ा, कोई दिन पांवों से चलना रे ।।२
कोई दिन गादी कोई दिन तकिया, कोई दिन भोय में पड़ना रे ।।३
कोई दिन खाना तो कोई दिन पीनां, कोई दिन भूखे ही मरना रे ।।४
कोई दिन पहनाँ तो कोई दिन ओढ़ा, कोई दिन चिथरा पथरना रे ।।५
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, ऐसा कूंता करना रे ।। ६

○

पद–७५ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी

(विरह-विनय)

करम-गत टारे नाहिं टरे । (टेर)
सतवादी हरिचँद-से राजा, नीच घर नीर भरे ।। १
पाँच पाण्डु अरु कुन्ती द्रोपदी, हाड हिमालय गरे ।। २
जज्ञ किया बलि लेण इन्द्रासण, सो पाताल धरे ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बिष से अमृत करे ।। ४

○

पद–७६ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(वैराग्य)

करियो प्रभुजी की बात सब दिन, करो प्रभुजी की बात रे । (टेर)
हस्ती घोड़ा महल खजाना, दे दोलत पर लात रे ।। १
मा बाप और बहिन भाई, कोई नहीं आवै साथ रे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन करो दिन रात रे ।। ३

७४–२ (म.); (बं. पु. पृ. ४४)
७५–१ (उ.)
७६–२ (म.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–७७ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(दर्शनाकांक्षा)

करुणा सुनि श्याम मेरी, हूँ तो होइ रही तेरी चेरी । (टेर)
दरसन कारन भई बावरी, बिरह बिथा तन घेरी ।
तेरे कारन जोगन हूँगी, देऊँ नगर बिच फेरी,
कुंज सब हेरी हेरी ।। १
अंग बिभूत गले मृगछाला, यो तन भसम करूँ री ।
अजहूँ न मिले राम अविनासी, बन बन बीच फिरूँ री,
रोऊँ नित टेरी टेरी ।। २
जन मीरां कूँ गिरधर मिलिया, दुख मेटन सुख दे री ।
रूम रूम साता भई उर में, मिटि गई फेरा फेरी,
रहूँ चरणन नित नेरी ।। ३

○

पद–७८ : राग–खम्माच : ताल–धीमा पीलू

(वंशी-ध्वनि)

कलेजे म्हारे बाँसुरी री धुन लागी । (टेर)
हूँ अपने गृह काज करत रही, श्रवण सुनत उठ भागी ।। १
खान पान की सुधि न सखी री, कल न पड़ै निसि जागी ।। २
रैन दिनाँ गिरधरनलाल के, मीरां रहै रंग पागी ।। ३

○

पद–७९ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी

(वंशी के प्रति)

कवन गुमान भरी, बंसी ! तू कवन गुमान भरी । (टेर)
अपने तन पर छेद परेचे, बाला तू बिछरी ।। १

७७–१ (उ.); (क. ब. ३)
७८–१ (उ.); (या.-सं. रा. मं. से)
७९–१ (उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जात भात तोरी मैं जानूं, तू बन की लकरी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, राधा से क्यूं झगरी ।। ३

○

पद–८० : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला
(इष्ट-प्राप्ति)

कहज्यो म्हारा रमइया नै, आज्यो म्हारै देस । (टेर)
थारे कारण बन बन डोलूँ, कर जोगण को भेस ।। १
बिन साबू बिन पांणियाँ रे, ऊजळ कर गयौ केस ।। २
थारे कारण सब रंग त्यागूँ, जटा बधाऊँ [सिर] केस ।। ३
सुणत अवाज हरष भयौ जिवड़ौ, कर आयो नटवर-भेस ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, मिटगो मन को कलेस[1] ।। ५

○

पद–८१ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा
(उलहना)

कहाँ बसियो कान्हा रातरली,
अरे तेरे मुख विच आवै मोहे वासरली । (टेर)
कहा तुमारो नाम जु कहिये, कहा तुमारी जातरली ।। १
भगत बिरद मेरो नाम जु कहिये, जादौ हमारी जातरली ।। २
मोहे कहै अलमस्त दिवानी, कहा लगाओ चातरली ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आन मिलो परभातरली ।। ४

○

८०–(उ.)
1–पाठान्तर-'तज गयो नगर नरेस' ।
८१–२ (म.); (या.-प्रति सं. ३८६ । पद ४८ का)
नोट–इससे मिलता पद है-"मोहन रातड़ली कहाँ बसिया (गिरधर रातड़ली)
थांका भँवरपटां में आवै बासड़ली ।
कै सतभामाजी रे महल पधारया, कै कुबज्या संग साथड़ली ।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—८२ : राग भैरवी : ताल—कहरवा
(लीला)

कहाँ कहाँ जाऊँ तोरे साथ कन्हैया, बंसी के रे बजैया कन्हैया । (टेर)
बृन्दाबन की कुंजगलिन में, गह लीनों मेरो हाथ कन्हैया ।। १
दधि मेरो खायो मटकिया फोरी, लीनी भुज भर साथ कन्हैया ।। २
लपट झपट मोरी गागर पटकी, साँवरे सलोने लोने गात कन्हैया ।। ३
कबहूँ न दान लियो मनमोहन, सदा गोकल आत जात कन्हैया ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम के नाथ कन्हैया ।। ५

○

पद—८३ : राग—आसावरी : ताल—तिताला
(व्रजवास)

कहीं देखे री घनश्यामा । (टेर)
मोर मुकुट पीतांबर सोहै, कुण्डल झलकै कानाँ ।
साँवरी सुरत पर तिलक बिराजै, तिससों लगे मोरे प्राना ।। १
वरसाने सों चली गुजरिया, नन्दगाम को जाना ।
आगे केशो धेनु चरावै, लगे प्रेम के बाना ।। २
सागर सूख कमल मुरझाना, हंसा कियो पयाना ।
भौंरा रह गये प्रीत के धोके, फेर मिलन को जाना ।। ३
बृन्दाबन की कुञ्जगलिन में, नूपुर रुनझुन लाना ।
मीरांबाई को दरशन दीजो, व्रज तज अनत न जाना ।। ४

○

पद-८४ : राग—काफी : ताल—कहरवा
(प्रेम रहस्य)

कहो तो गुण गाऊं रे भजै राम राम सुवा ।
कहो तो गुण गाऊं रे । (टेर)

८२—२ (म.); (या.-सं. ग. क. से)
८३—१ (उ.); (बृ. रा. र. पृ. १५२)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सार की सळीया को सूवा पींजरो बणाऊं रे ।
पींजरा में आव सूवा हाथ सूं गिलाऊं रे ।। १
घीव कर घीवर सूवा सूवा लापसी रँधाऊं रे ।
आंब ही को रस सूवा घोळ घोळ पाऊं रे ।। २
कंचन कोटि महल मन्दिर मालिया झुकाऊं रे ।
मालिया में आव सूवा मोतीड़ा बधाऊं रे ।। ३
बैठक करो तो सूवा चांदणी रिळाऊं रे ।
प्रेम ही प्रताप सूवा झांझरी बजाऊं रे ।। ४
जांइ जांबू केतकी सूवा बाग भी लगाऊं रे ।
बाग ही में आव सूवा फूलड़ा सुंघाऊं रे ।। ५
केसर भरियो बाटको सूवा अंग चरचाऊं रे ।
मीरां दासी सूवा की रामराती चरणां चित्त लगाऊं रे ।। ६

○

पद–८५ : राग–काफी : ताल–कहरवा
(प्रेम)

कहो ने जोशी (म्हांरा) राम मिलण कब होसी । (टेर)
जो जोशी मोहे प्रभू मिलै तो, हीरा जडाऊं तोरी पोथी ।। १
जो जोशी मोहे प्रभु ना मिले तो, झूंठी पड़ो तोरी पोथी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, राम मिले सुख होसी ।। ३

○

पद–८६ : राग–सोरठ, देश वा माँढ़ : ताल–कहरवा
(आत्मकथा)

कांई थारो लागै छै गोपाल । (टेर)
गढ़ से तो मीरांबाई ऊतरचा जी, हाथ मगद को थाल ।
औरां के तो अनगन लछमी, आप फिरो कंगाल ।। १

८४–२ (म.); (राम स. गु.)
८५–१ (उ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊँचा राणाजी रा गोखड़ा जी, नीची मीरांबाई री साळ ।
रमतां तो पायो मीरां कांकरो, कोई सेवा सालिगराम ।। २
जहर पियाला राणाजी भेजिया जी, द्यो मीरां ने जाय ।
कर चरणामृत मीरां पी गई, कोई आप जानो रघुनाथ ।। ३
साँप टिपारा राणाजी भेज्या, कोई द्यो मीरां ने जाय ।
कर खँगवालो मीरांबाई पहरियो, कोई हो गयो नोसर हार ।। ४
काढ़ कटारो राणाजी बैठिया, ल्यो मीरां ने मार ।
इत मारां उत दोष लगे, कोई छत्रीधरम घट जाय ।। ५
सांड्या सांडिया पलाणज्यो, म्हे चालां सो सो कोस ।
राणाजी का देस में कोई, जल पीबा को दोस । ६
सांड्यो फिर कर देखियो जी, दीखै मीरांबाई रो देस ।
मीरां गिरधर के रंग राची, रंच न रह्यो कलेस[1] ।। ७

○

पद–८७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला

(संदेस)

कागद कोण लई जाय रे, मथुरा मां लखो अे
प्रीत थोड़ी थोड़ी थाय रे[1] । (टेर)
प्रीत तमोने[2] मलवाने तलखे[2], ने जशोमती अन्न न खाय रे ।। १
वृन्दावन नी कुंजगलियन में, रोतां रजनी जाय रे ।। २
मीरांबाई के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित चाहे रे ।। ३

○

पद–८८ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(उलहना)

कानो भयो (रे) दूर को दुवारका-बासी । (टेर)

८६–२ (म); (का. ह. न. १)
1 पाठांतर–'मुख से बजावे मीरां बाँसरी नाचि रह्या मथुरेस' ।
८७–१ होना । २ आप । ३ तड़फना । (काव्यदो० भा. ७ पृ. ७१९)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निरमल जल जमुना को छाँड्यो, जन्मभूमि मथुरासी ।
गुवाल बाल बिलखत छोड्या, गउये छोड़ दई प्यासी ।। १
ये ठाकुर हैं तीन लोक के, कुबज्या कंस की दासी ।
स्याम तुमारे कारण राधा, सूक गई तिणकासी ।। २
सोलह सहस्र गोपिका त्यागी, रंग महल सेझासी ।
कुबज्या के संग बिलम रह्यो है, मात छोडी जसोदासी ।। ३
झूठी थाळी को पांणी पीयो, राणी करी कुबज्यासी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुण सुण आवे हाँसी ।। ४

○

पद–८९ : राग–तिलंग : ताल–धीमा तिताला
(विरह)

कान्हां तोरी रे जोवत रह गई बाट । (टेर)
जोवत जोवत इक पग ठाढ़ी, कालिन्दी के घाट ।। १
कपटी प्रीति करी मनमोहन, या कपटी की बात ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दे गयो व्रज को चाट ।। ३

○

पद–९० : राग–माँड, भीमपलासी : ताल–तिताला
(इष्टमहिमा)

कारी कामरवारे से जोडी, प्रीति मैं । (टेर)
अब मोहवत कौन कामकी, गिरधर बिनाहु नगोड़ी ।। १
लोग कहै कारी कामरीवारो, म्हारे तो लाख किरोड़ी ।। २
लोक लाज कुल की मरजादा, तिणका ज्यूं सब तोड़ी ।। ३
कोऊ जन निन्दो कोऊ जन बन्दो, कोऊ मन मानै सो कहो री ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मेरो चित लियो उन चोरी ।। ५

८८–२ (म.); (पुजा नाथु. पु. से)
८९–१ (उ.); (पुजा. नाथु. पु. से)
९०–२ (म.); (दीना. मं. मी. प. ४)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–९१ : राग–बिहाग : ताल–तिताला
(उलहना)

कारे कारे सब से बुरे ओधव प्यारे । (टेर)
कारे को विश्वास न कीजे, अति से भूल परे ।। १
काली जात कुजात कहीजे, ताके संग उजरे ।। २
शाम रूप किये भँवरो, फूल की बास भरे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कारे संग विगरे ।। ४

○

पद–९२ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी
(आत्मवेदना)

काहूकी मैं बरजी नाहिं रहूँ । (टेर)
जो कोइ मोकूं एक कहै, मैं एक की लाख कहूँ ।। १
सास की जाई मोरी ननद हटीली, यह दुख किनसे कहूँ ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जग उपहास सहूँ ।। ३

○

पद–९३ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी
(चेतावनी)

काहे को देह धरी, भजन बिन काहे को देह धरी । (टेर)
गर्भवास की त्रास दिखाई, वाकी पीठ लुरी ।। १
कोल बचन करि बाहर आयो, अब तुम भूल परी ।। २
नोबत नगरा बाजे बधाई, कुटुम सब देख डरी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जननी भार मरी ।। ४

○

९१–१ (उ.)
९२–२ (म.); (फु. पद)
९३–१ (उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–९४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

किण संग खेलूं होली, पिया तज गये हैं अकेली । (टेर)
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली ।
भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गैली ।।
मोहे दूरी क्यूं मेली ।। १
अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हम से करी क्यूं पहेली ।
बहु दिन बीते अजहुं नहिं आये, लग रही तालाबेली ।।
कोण बिलमाये री हेली ।। २
श्याम बिना जिवड़ो मुरझावै, जैसे जल बिन वेली ।
मीरां कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, जनम जनम की चेली ।।
दरस बिन खड़ी दुहेली ।। ३

○

पद–९५ : राग–अडाना : ताल–धीमा तिताला

(चेतावनी)

कितहू गये नेह लगाइ । (टेर)
प्रीति लगाइ मेरो मन हर लीनो, रस भरि टेर सुनाई ।। १
हमसे बैर प्रीति कुवजा से, हमें न कहूँ सुहाइ ।। २
मेरे (तो) मन में ऐसी आवै, मरूँगी जहर बिष खाइ ।। ३
हम कूँ छांड़ गये बिसवासी, बिरह की नाव चढ़ाइ ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, रहे मधुपुरी छाइ ।। ५

○

पद–९६ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(चेतावनी)

कित गयो पंछी बोलतो । (टेर)

९४–१ उ.); (मीरां की प्रेमबाणी पृ. १०१)
९५–१ (उ.); (क. ब. १५)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कची रे मटी दा महल चुणाया, गोखां ही गोखां डोलतो ।। १
गुरु गोबिन्द को कह्यो न मान्यों, ऐंडो ही ऐंडो डोलतो ।। २
ऐंठी रे टेढ़ी पाग झुकातो, छाया निरखतो चालतो ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, हरि चरणां चित ल्यावतो ।। ४

○

पद–९७ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी
(विरद)

किरपा भई सतगुर अपने की, वेर वेर हरि नांव लियो री । (टेर)
हिरणाकुस प्रल्हाद सतायो, जार अगन विच डाल दियो री ।
राज छाँड दियो नाँव न छाँड्यो, खंभ फाड़ प्रभु दरस दियो री ।। १
माता को उपदेश भयो जब, राज छाँड धूजी बन में गयो री ।
मारग में मिल गयो नारद मुनि, तब से धूजी अटल भयो री ।। २
सागर ऊपर सिला तिराई, दुष्ट रावण कूँ मार लियो री ।
सीता सहित अवधपुर आये, भगत बिभीषण राज दियो री ।। ३
सब भगतन की सहाय करी प्रभु, मेरी वेर कहाँ सोय गयो री ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बंसी बजा के मन मोहि लियो री ।। ४

○

पद–९८ (अ) : राग–भीमपलासी : ताल–तिताला
(मिलनोत्कण्ठा)

किसने[1] देखा कन्हैया प्यारा वे मुरली वाला । (टेर)
जमुना के तीराँ तीराँ गउवाँ चरावै, कांधे कमरिया काला ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहै, कुंडल झलकत आला ।।[2] २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारा ।। ३

९६–२ (म.); (क. ब. ६)
९७–२ (म.)
९८(अ)– 1 पा.–'काने' । 2 पा.–'हीरा' ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–९८ (ब) : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह)

कुबज्या ने जादू डारा री, जिन मोहे श्याम हमारा । (टेर)
झरमर झरमर मेहा बरसे, झुक आये बादल कारा ।। १
निरमल जल जमुना को छाँड्यो, जाय पिया जल खारा ।। २
शीतल छाँय कदम की छोड़ी, धूप सहा अति भारा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, वोही प्राण[1] पियारा ।। ४

○

पद–९९ : राग–तैलंग : ताल–दादरा

(बाल-लीला)

कुंजबन में गोपाल, राधे ! कुंजबन में । (टेर)
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, निरषत श्याम तमाल ।। १
ग्वाल बाल रचि चारु मंडल, बाजत बंसी रसाल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणन मन चिरकाल ।। ३

○

पद–१०० : राग–गौरी : ताल–धमार

(लीला आनन्द । होरी)

कुंजबिहारी राधा गोरी, नव निकुंज में खेलैं होरी । (टेर)
भरि भरि अरगजा लई कमोरी, छिरकत झकझोरी झकझोरी ।। १
अवीर गुलाल उडावत रोरी, डफ दुंधुभी बाजत थोरी थोरी ।। २
पहुप पराग लिये भरि झोरी, पिय पर डारति हँसि मुख मोरी ।। ३
आँखि आँजि सिर गूथत मारी, झूमक गावत अंचल जोरी ।। ४
मीरां प्रभु रससिंधु झकोरी, नवल हि गिरधर नवल किशोरी ।। ५

---

९८ (ब)–२ (म.); (भजनमंजरी, पृ. १६०)
1 पा०–'बिना भाल सुर मारा' ।
९९–(का. । उ. १।३०९)
१००–१ (उ.); या०—प्रति सं. ६९८।४५ पृ. ७५ से)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१०१ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा
(विरह)

कुण बाँचै पाती, बिना प्रभु कुण बाँचै पाती । (टेर)
कागद ले ऊधोजी आये, कहाँ रहे साथी ।
आवत जावत पाँव घिसा रे, (बाला) अँखियाँ भइ राती ।। १
कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती ।
नैन नीरज में अंब बहै रे, (बाला) गंगा बहि जाती ।। २
पाना ज्यूं पीली पड़ी रे, (बाला) अन्न नहिं खाती ।
हरि बिन जिवड़ो यूं जलै रे, (बाला) ज्यू दीपक संग बाती ।। ३
साँचा कुल चकोर चन्दा, झोलै बहि जाती ।
व्रजनारी की बीनती रे, (बाला) राम मिले मिल जाती ।। ४
मनैं भरोसो राम को रे, (बाला) डूबत तारचो हाथी ।
दासी मीरां लाल गिरधर, सांकडा रो वोही साथी ।। ५

○

पद–१०२ : राग–पीलू वरवा : ताल–दादरा
(विनय)

कृष्ण मेरे नजर के आगे ठाडे रहो रे । (टेर)
मैं जो बुरी श्याम और भली है, भली कि बुरी मोरे दिल रहो रे ।। १
प्रीत को पैंडो बहुत कठिन है, चार कही दस और कहो रे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, प्रीत करो तो मेरा बोल सहो रे ।। ३

○

पद–१०३ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(प्रेम विनय)

कृष्ण करो जजमान, प्रभु तुम । (टेर)

१०१–(सा०)
नोट–४ अंतरेके पूर्वार्धं में शब्द कम हैं ।
१०२–(म.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ज्यांकी कीरत वेद बखानत, साखी देत पुरान ।। १
मोरमुकुट पीतांबर शोभित, कुण्डल झलकत कान ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दे दरसन को दान ।। ३

○

पद–१०४ : राग–जोनपुरी टोडी : ताल–धीमा
(प्रेम)

कैसी जादू डारी, (अब) तूने, कैसी जादू डारी । (टेर)
मोर मुकुट पीतांबर सोभे, कुण्डल की छबि न्यारी ।। १
वृन्दावन की कुञ्जगलिन में, लूटी ग्वालन सारी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ३

○

पद–१०५ : मल्हार : ताल–कहरवा
(विरह)

कैसी रितु आई मेरो हियो लरजै हे मा । (टेर)
निस अँधियारी कारी विजुरी चमकै, सेज चढतां जिया डरपे हे मा ।। १
नान्ही बूंदन मेहा बरसै, ऊपर सुरपति गरजै हे मा ।। २
सूनी सेज स्याम बिन लागत, कूक उठी पिया करिके हे मा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मोय बिधाता क्यूं सरजी हे मा ।। ४

○

पद–१०६ : राग–सारंग : ताल–धमाल
(प्रेम-लीला)

कैसें आवौं हो लाल तेरी व्रज नगरी, गोकुल नगरी । (टेर)

१०३–२ (म.)
१०४–१ (उ.)
१०५–२ (म.); (फु प.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच बहे यमुना गहरी ।
पाँव धरयाँ मेरी पायल भीजैं, कूदि परौं बहि जाऊं सगरी ।। १
मैं दधि वेचन जात बृन्दाबन, मारग में मोहन झगरी ।
बरज यशोदा अपने लालकौं, छीन लई मेरी गगरी ।। २
रहु रहु ग्वालिनि झूंठ न बोलो, कान्ह अकेलो तुम सगरी ।
मेरो कन्हैयो पाँच बरस को, तुम ग्वालिन अलमस्त तगरी ।। ३
जाय पुकारौं कंस राजा के, न्याय नहीं गोकुल नगरी ।
बृन्दाबन की कुंजगलिन में, बांह पकर राधे झगरी ।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, साधु संग करि हम सुधरी ।। ४

○

पद–१०७ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(विरह)

कैसे जीऊं री माई, हरि बिन कैसे जीऊँ री । (टेर)
उदक दादुर मीनवत है, जल से उपजाई ।
एक पल जल (जो) मीन बिसरे, तलफत मर जाई ।। १
पिय बिना पीली भई, (बाला) ज्यों काठ घुन खाई ।
ओषध मूल न संचरै, (बाला) बैद फिर जाई ।। २
बन बन होय उदास फिरूँ (रे), बिथा तन छाई ।
दास मीरां लाल गिरधर, मिलि हैं सुखदाई ।। ३

○

पद–१०८ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम-प्रवाह)

कोई कछु कहै, मन लागा । (टेर)
ऐसी प्रीत लगी मनमोहन, ज्यूँ सोने में सुहागा ।। १

१०६–२ (म.); (भ. र. मा. २–७)
१०७–१ (उ.)
१०८–१ (उ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जनम जनम का सोया मनुवाँ, सतगुरु शब्द सुरग जागा ।। २
मात पिता सुत कुटँब कबीला, टूट गया ज्यूं तागा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भाग हमारा जागा ।। ४

○

पद–१०९ : राग–आसावरी : ताल–कहरव।
(विरह-व्यथा)

कोई कहियौ रे प्रभु[1] आवन की, आवन की मन भावन की । (टेर)
आप न आवै लिख[2] नहिं भेजै, बाँरग पड़ी ललचावन की ।। १
ए दोई नैरग कह्यो नहिं मानैं, नादियाँ बहै जैसे सावन की ।। २
कहा[3] करूं कछु नहिं बस मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की ।। ३
मीरां कहै प्रभु कब रै मिलोगे, चेरी भई हूं तेरे दावन की[4] ।। ४

○

पद–११० : राग–भैरवी व सोरठ : ताल–कहरवा
(विरह-व्यथा)

कोई कहियो रे बिनती जाईकें, म्हारा प्राग पीया नाथ नैं । (टेर)
जा दिनके बिछुरे मनमोहन, कल न परे दिन रात नैं ।। १
देस बिदेस संदेस न पूगे, बिरहिन तलफै साथ नैं ।। २
प्यारा महरम दिल की जाणैं, और न जाणैं कोई बात नैं ।। ३
मीरां दरसन कारण झूरै, ज्यूं बालक झूरै मात नैं ।। ४

○

१०९–१ (उ.)
1. पा०–'मोहन' ।
2. पा०–'पतियां न भेजै ।
3. पा०–'कहा करूँ कित जाऊं मोरी सजनी' ।
4. पा० 'विनि दामन की' ।
११०–२ (म.); (रा. स. गु. पृ. १४९)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१११ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम-विनय)

कोई तो बोलो महीडां मेरो लूटे । (टेर)
छोड कनैया ईंडोणी हमारी, माट मही की काना मेरी फूटे ।। १
छोड कनैया बहियाँ हमारी, लड़ बाजू की काना मेरी टूटे ।। २
छोड़ दे कनैया चीर हमारो, कोर जरी की काना मेरी छूटे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, लागी लगन काना नहिं छूटे ।। ४

○

पद–११२

(प्रेम-रहस्य)

कोई दिन याद करोगे, रमता राम अतीत । (टेर)
आसण माँड अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ।। १
मैं तो जाणूं जोगी संग चलेगा, छांड गयो अधबीच ।। २
आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत ।। ३
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, चरणन लागो चीत ।। ४

○

पद–११३

(प्रेम-तन्मयता)

कोई स्याम मनोहर ल्यो री, सिर धरै मटकिया डोलै । (टेर)
दधि को नाँव बिसर गई ग्वालनि, हरि ल्यो हरि ल्यो बोलै ।। १
कृष्ण रूप छाकी है ग्वालनि, चालै होलै होलै ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चेली भई बिन मोलै ।। ३

○

१११–२ (म.)
११२–१ (उ.)
११३–३ (उ.) : (रा.स.गु से)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–११४ : राग–हमीर : ताल–तिताला

(प्रेम)

क्या करू मैं बन में गई, घर होती तो श्याम को मनाई लेती । (टेर)
गोरी गोरी बहियाँ हरि हरि चुडियाँ, झाला देके बुला लेती ।। १
अपने श्याम सँग चोपड़ रमती, पासा डालके झिला लेती ।। २
बडी बडी अखियाँ झीणा झीणा सुरमा, ज्योत सी ज्योत मिला लेती ।। ३
बाई मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल लपटा लेती ।। ४

○

पद–११५ : राग–मांड व सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रेम-उलाहना)

क्यूं कर म्हे दिन काटाँ ।
थे म्हाँसूं अंतर राखौ, राखौ कपटी आँटाँ । (टेर)
कुबज्या दासी कंसराइ की, फिरती कपड़ा फाटाँ ।
वाकूं तो पटराणी कीन्हीं, पहरै रेसम पाटाँ ।। १
बाजूबंद मूंदड़ी अँगुली,नखसिख गहणाँ साटाँ ।
पहर कूबड़ी न्हावण चाली, जल जमुना कै घाटाँ ।। २
धाँन न भावै नींद न आवै, चिंता लगी निराटाँ ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, देख देख हियो फाटाँ ।। ३

○

पद–११६ : राग–सोरठ : ताल–तिताला ठांह

(चरित्र और दृढ़ता)

खेलत पायो मीरां काँकरो,
सेवा सालिगराम, भक्ति करां जी हरिनांम की । (टेर)
रमस्यां साधां री लार संताँ री लार, भक्ति करां जी दीनानाथ की ।। १

११४–१ (उ.)
११५–१ (उ.) : (राम.स.गु.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोसीजी मनावै मीरां थे मानो, पतड़ा री परण राख,
भक्ति छोड़ो जी हरिनाम की ।। २
थे घर जावो जोसी आपणे, पत राखैलो दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ।। ३
पिताजी मनावै मीरां थे मानो, पगड़ी री पत राख,
भक्ति छोड़ो हरिनाम की ।। ४
बैठो राण्यां रे मांय महलां रे मांय, भक्ति छोड़ो जी सालिगराम की ।। ५
थे घर जावो बाबल आपने, पत राखैलो दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ।। ६
वीराजो मनावै मीरां थे मानो, भैया री पत राख,
भक्ति छोड़ो हरिनाम की ।। ७
बैठो राण्यां रे मांय महलाँ रे मांय, भक्ति छोडो रघुनाथ की ।। ८
माताजी मनावै मीरां थे मानो, दूधड़ला री पत राख,
भक्ति छोड़ोजी हरिनाम की ।। ९
थे घर जावो माता आपणे, पत राखैला दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ।। १०
राणाजी मनावै मीरां थे मानो, बैठो राण्यां रे माय, महलां रे मांय,
भक्ति छोड़ो रघुनाथ की ।। ११
एक कुल लाजै मीरां आपणो, दूजो बंस राठोड़,
तीजा लाजैजी मीरां मेड़तो, चोथो गढ़ चित्तोड़,
भक्ति छोड़ोजी हरिनाम की ।। १२
एक कुल त्यारां राणां आपणो, दूजो बंस राठोड़,
तीजो त्यारांजी राणां मेड़तो, चोथो गढ़ चित्तोड़,
भक्ति करांजी भगवान की ।। १३
यो मन लाग्यो वैराग से, रमस्यां साधां री लार, संता री लार
भक्ति न छूटै हरिनाम की ।। १४

○

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–११७ : राग–काफी : ताल–जैत

(ज्ञान, प्रेम और रहस्य)

गली तो चारों बंद हुई, मैं हरि से मिलूं कैसे जाय । (टेर)
ऊँची नीची राह रपटणी, पाँव नहीं ठहराय ।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार बार डिग जाय ।। १
ऊँचा नींचा महल पिया का, हमसे चढ़्या न जाय ।
पिया दूर पंथ म्हारा झीणाँ, सुरत झकोला खाय ।। २
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड पैंड बटमार ।
हे विधना कैसी रच दीन्हीं, दूर बस्यो घरवार ।। ३
जुगन जुगन से बिछड़ी मीरां, घर लीन्हां मैं पाय ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सतगुर दिया बताय ।। ४

○

पद–११८ : राग–टोडी व झिंझोटी : ताल–दादरा

(प्रेम)

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई । (टेर)
हँस हँस मुख मोर मोर, गागर छिटकाई ।
घूंघट पट खोल खोल, साँवरो कन्हाई ।। १
यशुमति तैं भली वात, लाल को सिखाई ।
अगर बगर झगर करत, रार तो मचाई ।। २
हौं तो बीर यमुना तीर, नीर भरन धाई ।
गिरिधर के चरणन पर, मीरां बलि जाई ।। ३

○

पद–११९ : राग–मांड व देस : ताल–दीपचंदी

(ऊदां सम्वाद-प्रेमोत्सुकता)

गिरधर आवणां हे, ऊदांबाई सेजड़ली सँवार । (टेर)

११७–१ (उ.)
११८–१ (उ.) : (बृ.रा.र.पृ. ३३)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आवण री बिरियाँ भई जी, अब महलां ढोल्यो ढार ।। १
अतर सुगंध मिलायके जी, घी भर दिवला वार ।। २
जाई जूही केतकी जी, चंपाकली सुधार ।। ३
पलकां सूं करां पाँवडा जी, अँचलां सूं मग झार ।। ४
गिरधर म्हारो परम सनेही, मीरां उनकी नार[1] ।। ५

○

पद–१२० : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(करुण-विनय)

गिरधर दुनियाँ दे छै बोल । (टेर)
गिरधर मेरो मैं गिरधर की, कहो तो बजाऊं ढोल[1] ।। १
आप जो जाय द्वारिका छाये, हमको पड गये झोल[2] ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, पिछले जनम के कोल ।। ३

○

पद–१२१ : तर्ज–घूमर : ताज–कहरवा
(प्रेम-दृढ़ता)

गिरधर म्हारा साँचा पति छै, मैं गिरधर की दासी हे माय । (टेर)
राणोजी म्हासूं रूस रह्यो छै, कूड़ा बचन निकासै हे माय ।। १
राणो कहै सो एक न माँना म्हे, साध दुवारे नित आसी हे माय ।। २
मीरां के प्रभु सेज चढ़ें जब, ठाडी करै खवासी हे माय ।। ३

११९–१ (उ.) : (स.मा.मी.ली. १०) (मी.ली.प. दूधू १३)
1. पाठान्तर = दोहा–पुष्पन सों झोली भरी, रुचि रुचि सेज सँवारि ।
चारूं दिस फिरती फिरै, ऊदां चमेली नार ।।
(यह दोहा मा. हरिना. ह.लि.पु. के पद के अन्त में है ।)
१२०–१ (उ.) : (पु.नाथू.पु. से) (मीरांबाई भजन नं. ११)
1. पाठान्तर–'दुनियाँ क्यों दे बोल' । 'ये करमन के भोग' ।
2. पाठान्तर–'हमको लिख दिया जोग' ।
१२१–२ (म)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१२२ : राग–देस व सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

गिरधर म्हारे मन भाया, मोरी माय, राणूंजी म्हारे दाय न आवे। (टेर)
राणाजी म्हांसे रूस रह्या छै, कूड़ा बचन सुणाया ।। १
गुरु कृपा से संत पधारया, संतां स्याम मिलाया ।। २
मीरां की प्रभु आस पुराई, गिरधर सेजाँ आया ।। ३

○

पद–१२३ : राग–कालिगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम का उलाहना—पूर्वजन्म-संकेत)

गिरधर रूसणूंजी कोंण गुन्हां[1] । (टेर)
कछु इक ओगुण काढो म्हांमैं, म्हे भी कानां सुणां ।। १
मैं तो दासी थारी जनम जनम की, थे साहिब सुगणां ।। २
कांई बातसूं करयो रूसणूं, क्यों दुख पावो छो मनां ।। ३
किरपा करि मोहि दरसण दीज्यो, बीते दिवस घणां ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, थारो ही नांव भणां ।। ५

○

पद–१२४ : राग–परज : ताल–कहरवा

(दर्शनानंद)

गोकुल के बासी भले ही आये, गोकुल के बासी । (टेर)
गोकुल की नारी देखत, आनन्द सुखरासी ।
एक गावत एक नाचत, एक करत हांसी ।। १
पीताम्बर के फेंटा बांधे, अरगजा सुबासी ।
गिरिधर से सु नवल ठाकुर, मीरां सी दासी ।। २

१२२–२ (म): (दीना.मं.मी.पृ. ८)
१२३–१ (उ.): राम.स.गु.)
1 पाठान्तर—'गुणां' ।
१२४–२ (म.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१२५ : राग–आसा मांड : ताल–दादरा

गोपाल राधे कृष्ण गोविंद गोविंद । (टेर)
बाजत झांझरी और मृदंग, और बाजे करताल ।। १
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, गल बैजंती माल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भकतन के प्रतिपाल ।। ३

○

पद–१२६ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(प्रेम)

गोपाल रंग राची, मैं श्याम रंग राची । (टेर)
कहा भयो जल विष के खाये, तीनहु तें मैं बाची ।। १
तात मात अरु लोक कुटुंब सब, तिन कीनी उपहासी ।। २
नंद नंदन गोपीबल्लभ प्रभु, तिनके आगे नाँची ।। ३
और सकल बंधन छाडे मैं, भक्त काछ एक काछी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जानैं झूँठी साँची ।। ५

○

पद–१२७ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(विनय-प्रेम)

गोरस लीजे नंदलाल, रस मांगो रस लीजे । (टेर)
मैं तो हूं व्रषभान नंदिनी, तुम हो नंदजी के लाल ।। १
मोर मुकुट मुकताफळ कुंडळ, उर बैजंती माल ।। २
मैं दधि बेचन जाती वृन्दाबन, रोकत है बिन काज ।। ३
बाई मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बांह गहे की लाज ।। ४

१२६–१ (उ.); (या.–सं.रा.क.से)
नोट–हमारे संग्रह में इस पद के पाठान्तर के पद ये हैं—
१ राणांजी मैं सांवरे रंग राची ।
२ सखीरी मैं गिरधर के रंग राची ।
१२७– (का. उ. २/३४७)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१२८ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा

(प्रेमोत्सुकता)

गोविन्द कब रे[1] मिले पिय मेरा । (टेर)
चरण कँवल को हँसि कर देखूँ, राखूँ नैनन नेरा ।। १
निरखण रो मोहे चाव घणेरो, कब मुख देखूं तेरा ।। २
पिया मिलण कूँ हुई हूँ उदासी, मिलवू मिंत सवेरा ।। ३
व्याकुल तातें भई तनु देही,[2] सिर पर जम का घेरा[3] ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तापत तन बहुतेरा ।। ५

○

पद–१२९ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–कहरवा

(विष-प्रयोग)

गोविन्द का गुण गास्यां । (टेर)
राणोजी रूसैला तो गांम राखैला, हरि रूठयां कुमलास्यां ।। १
राम नाम की जहाज चलास्यां, भवसागर तिर जास्यां ।। २
चरणामृत को नेम हमारो, नित उठि दरसण पास्यां ।। ३
बिषरा प्याला राणोजी भेज्या, इमरत करि गटकास्यां ।। ४
यो संसार बिनास जानिकै, ताको संग छिटकास्यां ।। ५
लोक लाज कुल काणिहु तजिकै, निरभै निसाँण घुरास्यां ।। ६
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, चरणकमल बलि जास्यां ।। ७

○

१२८–१ (उ.); (दीना. मं.मी.प. ३२) (मी.ली.प.दूधू १८) (स.मा.भी.ली. १३)
1 पाठान्तर–'कबहूं' ।
2 पाठान्तर–'व्याकुल प्राण वल नहिं धीरज' ।
3 पाठान्तर–व्याकुल भई मैं बन बन डोलूँ ऊपर जम का घेरा ।

१२९–१ (उ.); क.ब. २०)
(देखो–राणाजी म्हे तो गिरधररा गुण गास्यां)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१३० : राग–झिंझोटी : ताल–दादरा

(प्रेम-दृढ़ता)

गोविन्द सूं प्रीत करी, तब ही क्यों न हटकी । (टेर)
अब तो बात फैल गई, जैसे बीज बटकी ।
बीच को बिचार छांडि, पारि प्रीति अटकी ।। १
अबै चूकै ठौर नाहि, जैसे कला नट की ।
साँवरे को सीस धरे, सुरत प्रेम भटकी ।। २
घर घर में घणी होत, बाणी घट घट की ।
हरिजी सों प्रीति राखि, लोक लाज पटकी ।। ३
बाणी घुलि-गांठ परी, रसना गुण रटकी ।
अब छुटायैं छूटे नहीं, भोत बार झटकी ।। ४
मदमांते हसती सम, फिरत प्रेम लटकी ।
मीरां के प्रभु गिरधर बिन, कौन जाने घट की ।। ५

○

पद–१३१ : राग–परज : ताल–इकताला

(तन्मयता)

गोहने[1] गुपाल फिरूं, ऐसी आवत मन में ।
अवलोकत वारिज बदन, विवस भई तन में । (टेर)
मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत बसन धारूँ ।
आछी गोप भेष मुकट, गोधन सँग चारूँ ।। १
हम भई गुल कामलता, वृन्दावन रैनां ।
पसु पंछी मरकट मुनी, श्रवन सुनत बैनां ।। २
गुरुजन कठिन कानि, कासों री कहिये ।
मीरां प्रभु गिरधर मिली, ऐसें ही रहिये ।। ३

१३०–१ (उ.); (क.ब. २५) (राम.स.गु.पृ. २२३)
१३१–३ (क.)
1 पाठान्तर–'जोहनें' ।

T. CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१३२ : राग–मांड : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

घड़ी एक नहिं आवडे, तुम दरशण विन मोय ।
तुम हो मेरे प्राण जी, कासूं जीवन होय ।। १
धान न भावै नींद न आवै, विरह सतावै मोय ।
घायल-सी घूमत फिरूँ, मेरा दरद न जाणे कोय ।। २
दिवस तो खाय गमाइयो रै, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरतां रै, नैण गमाया रोय ।। ३
जो मैं ऐसा जानती रै, प्रीत किये दुख होय ।
नगर ढिंढोरा फेरती रै, प्रीत करो मत कोय ।। ४
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, ऊभी मारग जोय ।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय ।। ५

○

पद–१३३ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

घर आँगन न सुहावे, पिया बिन मोहि न भावै । (टेर)
दीपक जोय कहा करूँ सजनी, हरि परदेस रहावे ।
सूनी सेज जहर ज्यूं लागे, सिसक सिसक जिय जावे
नयन निद्रा नहिं आवे ।। १
कबकी ऊभी मैं मग जोऊं, निस दिन विरह सतावे ।
कहा कहूं कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे
हरी कब दरस दिखावे ।। २
ऐसो है कोई परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे ।
वा बिरियाँ कब होगी मुझको, हरि हँस कंठ लगावे
मीरां मिलि होरी गावै ।। ३

१३२–१ (उ.)
१३३–१ (उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१३४ : राग–अडाणा : ताल–तिताला

(लीला)

चंचल चवैया री आली, यशोदा को लाल देखो (टेर)
हों दधि वेचत जात रही ब्रज, नाहक रार मचाई ।
मेरी चेरी मेरे चेरे की चेरी, ऐसे नाँच नँचाई ।। १
हमरे संग की दूर निकस गई, मोहन बइयाँ मरोरी ।
सास ननदिया रिसावैगी मोसों, मुख मल दीनी रोरी ।। २
मैं तो हूँ बरसाने की ग्वालिन, तुम हलधर के वीर ।
मीरां के प्रभु फगुवा लीन्हों, मोहन श्यामशरीर ।। ३

○

पद–१३५ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा

(विरह)

चरण[1] रज महिमा मैं जानी (टेर)
येही चरण से गंगा प्रगटी,
　　भागीरथ कुल तारी ।। १
येही चरण से विप्र सुदामा,
　　हरि कंचन धाम दीन्ही ।। २
येही चरण से अहल्या उधारी,
　　गौतम की पटरानी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर,
येही चरणकमल लिपटानी ।। ४

○

पद–१३६ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(प्रेमोत्सुकता)

चलाँ वाही देस प्रीतम पावाँ, चलाँ वाही देस (टेर)

१३४–२ (म.); (या०–सं०रा०क०से)
१३५–३ (क,)
　1 पा.–"चरणन की हे जी" ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहो तो कसूँबी सारी रँगावां, कहो तो भगवाँ भेस ।। १
कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुनियो विरद के नरेस ।। ३

○

पद–१३७

(प्रेम-रहस्य)

चलो अगम के देश काल देखत डरे ।
(जहाँ) भरा प्रेम का हौज हंस केलाँ करे (टेर)
ओढन लज्जा चीर धीरज को घाघरो ।
छिमता काँकरण हात सुमत को मूँदरो ।। १
काँचों है विस्वास चूड़ो चित ऊजलो ।
दिल दुलड़ी दरियाव साँच को दोवड़ो ।। २
दाँतां अमृत मेख दया को बोलणों ।
उबटन गुरु को ज्ञान ध्यान को धोवणों ।। ३
कान अखोटा ज्ञान जुगत को झूटणों ।
वेसर हरि को नाम काजल है धरम को ।। ४
जेहरि सील सँतोष निरत को घूँघरो ।
बिंदली गज और हार तिलक गुरु ज्ञान को ।। ५
सज सोलह सिंगार पहिरि सोने राखड़ी ।
साँवलिया सूँ प्रीत औरों से आखड़ी ।। ६
पतिबरता की सेज प्रभूजी पधारिया ।
गावे मीरां बाई दासी कर राखिया ।। ७

○

१३६–२ (म.)
१३७–१ (उ.) (आ. भ. पृ. ६२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१३८ : राग–भैरवी सिन्ध : ताल–तिताला

(प्रेमोत्सुकता)

चालो मन गंगा जमुना तीर (टेर)
गंगा जमना निरमल पाँणी, सीतल होत सरीर ।। १
बंसी बजावत गावत कान्हो, संग लिया बलबीर ।। २
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल झलकत हीर ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कँवल पै सीर ।। ४

○

पद–१३९ : राग–बहार : ताल–तिताला, कहरवा

(निश्चय)

चितनंदन[1] आगे नाचूंगी (टेर)
नाच नाच पिय तुमहिं रिझाऊं, प्रेमीजन को जाचूँगी ।। १
प्रेम प्रीति का बाँध घूँघरा, सुरत की कछनी काछूँगी ।। २
लोक लाज कुल की मरजादा, यामें एक न राखूँगी ।। ३
पिय के पलँगां जा पोढूंगी, मीरां हरि रँग राचूँगी ।। ४.

○

पद–१४० : राग–मल्हार : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

चितनंदन विलमायि, बदरा ने घेरि माई (टेर)
इत घन गरजै उत घन गरजै, चमकत बिज्जु सवाई ।। १
उमड घुमड चहुँ दिश से आया, पवन चलै पुरवाई ।। २
विरहनि तेरी प्राण झुरत है, दाधी बेलि सिंचाई ।। ३
मीरां[1] को प्रभु दर्शन दीजे, प्राण रखो सरणाई ।। ४

१३८–२ (म.)
१३९–१ (उ.)
　1 पाठान्तर–'रघुनंदन' । 'नँदनंदन' ।
१०४–२ (म.), (वं.पु.पृ. २१)
　1 पाठान्तर–'प्राण रहत मोकूं' । ऐसा पाठ बंगाली पुस्तक में है ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१४१

(भगवतलीला प्रेम)

चीर दीज्यो बिहारी, मुरारी काना (टेर)
ले कर चीर कदम चढ़ बैठो, हम जल माँहि उघारी ।। १
तेरो चीर हम जब ही देंगे, हो जाओ जल से न्यारी ।। २
जब हम जल से न्यारी होयँगी, जावैगी लाज तुम्हारी ।। ३
या तुम प्रभुजी कैसी बिचारी, तुम हो पुरुष हम नारी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ५

○

पद–१४२ : राग–सोरठ देश : ताल–कहरवा

(भगवतीलीला प्रेम)

छांडो[1] लँगर मोरी बहियाँ गहो ना (टेर)
मैं तो नारि पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ।। १
जो तुम मेरी बहियाँ गहत हो, नयन[2] जोर मेरे प्राण हरो ना ।। २
वृन्दावन की कुञ्जगलिन में, रीत छोड़ अनरीत करो ना ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित[3] टारे टरो ना ।। ४

○

पद–१४३ : राग–भैरवी सिंध : ताल–तिताला

(विनय)

छैल गैल मत रोकै तू हमारी रे (टेर)
चाल कुचाल चलो जिन चंचल, ऐसी अनीति तैंने करनी विचारी रे ।। १
सखी संग की देखत ठाडी, चरचा करेंगे सब पुर नरनारी रे ।। २

१४१–२ (म.)
नोट–ऐसा ही पद चन्द्रसखी का है।
१४२–२ (म.), (वृ.रा.र. पृ. ३१)
1 पाठान्तर–'छोडो डगर'। 2 पाठान्तर–'मिलाय'।
3 पाठान्तर–'टरयो टरो ना'।
१४३–२ (म.), (गोपीराम ब्रजवासी से प्राप्त)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मैं सुकुमार खड़ी काँपत हों, सिर पर दधि की मटुकिया भारी रे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम्हरे चरणकमल बलिहारी रे ।। ४

○

पद—१४४ : राग—झामोद वा छाया : ताल—कहरवा
(प्रेम-विनय)

छोड मत जाज्यो जी महाराज (टेर)
मैं ग्रबला बल नाँय गुसाँई, तुम मेरे सिरताज ।। १
मैं गुणहीन गुण नाँय गुसाँई, तुम समरथ महाराज ।। २
थाँरी होयके किणरे जाऊँ, तुम हिवड़ा रो साज ।। ३
मीराँ के प्रभु ग्रौर न कोई, राखो ग्रबके लाज ।। ४

○

पद—१४५ : राग—बहार : ताल—तिताला
(लीला-वर्णन)

छोड़ो चुनरिया, छोड़ो चीर, मनमोहन, मन मोह लिया रे (टेर)
नंदजी के लाल, संग चलै गोपाल, धेनु चरत चपाल,
बीन बाजै रसाल, चीर छोड़ो ।। १
कान्हा माँगत है दाँन, गोपी भई..........., सुनों उनका बयान,
घबरा गया उनका प्रान, चीर छोड़ो ।। २
मीरां के गिरधारी मुरारी, राखो लाज प्रभुजी हमारी,
मैं हूँ दासी सदा तुमारी, तुम हो भले ब्रिहारी, चीर छोड़ो ।। ३

○

१४५—(का । उ. २ । ३४०)
नोट—इस पद के अंतरों में लेखन दोष थे सो सुधारे हैं । (सं०)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१४६

(भगवतदर्शन-वर्णन)

जब तैं मोहि नंदनँदन दृष्टि पर्यो माई ।
तबतैं परलोक लोक, कछु नाँ सुहाई[1] (टेर)
मोरन की चंद्रकला[2], सीस मुकुट सोहै ।
केसर को तिलक भाल, तीन लोक मोहै ।। १
कुंडल की अलक झलक, कपोलन पर छाई ।
मानो मीन सरवर तजि, मकर मिलन आई ।। २
भृकुटि कुटिल चपल नयन[3], चितवन से टौना ।
खंजन अरु मधुप मीन, मोहै मृग छौना ।। ३
अधर बिम्ब अरुणनयन[4], मधुर मन्द हाँसी ।
दसन दमक दाडिम द्युति[5], दमकै चपला सी ।। ४
कंबुकंठ भुज विसाल, ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर को भेष मानु, सकल गुण विसेखा ।। ५
छुद्रघंट[6] किंकिनी अनूप धुन सुहाई ।
गिरधर के अंग अंग, मीराँ बलि जाई ।। ६

○

१४६–१ (उ.); (ट.) (बृ. रा. र. पृ. ११९) । (दीना मं. मी. म. १) ।
(जमा. राम. ३) । (स. मा. मी. ली. ९) । (मी. प. २०) ।
नोट–इसी से मिलता-जुलता सूरदासजी का पद भी है ।
1 पाठान्तर-'कहा कहूँ सुंदरता बरणी नहिं जाई' ।
2 पाठान्तर-'चंद्रिकासु' । 3 पाठान्तर-'अति बिसाल' ।
4 पाठान्तर-'नासिकासु अति अनूप' ।
5 पाठान्तर-'दसन बरण दामिनिद्युति' । 6 पाठान्तर-'छुद्रघंटिका अनूप नूपुर धुनि सोहै । गिरिधर के चरणकमल मीरां मन मोहै' ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१४७ : राग–कामोद वा बडहंस : ताल–दीपचन्दी

(उपदेश)

जग में जीवणा थोड़ा, राम कुण कह रे जंजार[1] (टेर)
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दिया करतार ।। १
कांई रे खाइयो कांई रे खरचियो, कांई रे कियो उपकार ।। २
दियो रे लियो तेरे संग चलेगो, और नहीं चलै (थारी) लार ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भज उतरो भव पार ।। ४

○

पद–१४८ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(लीला-वर्णन)

जमुना में मैं कैसे जाऊँ मोरे सैयाँ, बीच खड़ा देखो लाल कन्हैया (टेर)
बृंदावन से मथुरा नगरी, पानी भरन कैसे जाऊँ मोरे सैयाँ ।। १
हाथ में मेरे चूड़ा भरा है, कंगन लहेरा देत मोरे सैयाँ ।। २
दधि मेरा खाया मटकी फोडी, अब कैसे बुरी बात बोलूं मोरे सैयाँ ।। ३
सिर पर घड़ा घड़े पर झारी, पतली कमर लचकै मोरे सैयाँ ।। ४

○

पद–१४९ : राग–पटदीप : ताल–तिताला

(लीला-वर्णन)

जल भरन कैसे जाऊँ री जसोदा, जल भरन कैसे जाऊँ (टेर)
बाटेर घाटे पानी माँगे, मारग में कैसे धाऊँ ।। १
परली कोर गंगा, वोली कोर जमना, बीच सरस्वती में न्हाऊँ ।। २
बृंदावन में रास रच्यो है, नृत्य करत मन भाऊँ ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हेत हरीगुण गाऊँ ।। ४

१४७–२ (म.); (स्फुटपद) (रा. स. गुटका पृ. १३७)
1 पाठान्तर-'राम किन कहै रे गंवार' ।
१४८–(का., उ. २-३३४)
१४९–(का., उ. २-३३३)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१५० : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(गोपी-संशय)

जल कैसे भरूं जमना तट री[1] । (टेर)
खडी भरूं तो कृष्ण दिखत है, बैठ भरूं तो भीजे चूनड़ी ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, छुम छुम बाजत मुरली ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल की मैं चेरी ।। ३

○

पद–१५१ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(उपालंभ)

जसोदा मैया नित सतावे कनैया ।
वाकी हरकत क्या कहूं मैया ।। (टेर)
बैल लावे भीतर बांधे, छोर देवत सब गैयां ।। १
सोते बालक आन जगावे, अैसो ढीठ तेरो कनैया ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि लागूं तोरे पैयाँ ।। ३

○

पद–१५२ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा
(उलहना)

जसोदा मैया तेरो लडको नीको । (टेर)
बछवा छुडाय मोरी गउवाँ चुखाय दीनी ओर उतारयो महीको ।। १
दूध दही की कमारी फोरी (मथनिया फोरी) माँट फोरवो गह छींको ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि बिन सब जग फीको ।।

○

१५०–(का. ५।१९८)
1 पाठान्तर–'किनारा'
१५१–(का. ५।१९६)
१५२ ३ (क.), (या०–सं. रा. क. से)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१५३ : राग–सोरठ वा धनाश्री : ताल–कहरवा

(राणा संवाद-प्रेमदृढ़ता)

जहर दियो सो जाँणी, राणाजी म्हाँने, (जहर दियो सो जाँणी) । (टेर)
हरष शोक म्हारे मन नांही, नहीं लाभ नहिं हानी ।। १
कंचन लेर अगन में राख्यो, निकस्यो बाराबानी ।। २
अबतो प्रभु तुमही पत राखो, छाणों दूधरु पाँणी ।। ३
राणाजी यो बचन उचार्यो, सुणज्यो म्हारी बाँणी ।। ४
साधाँ रो सँग परो निवारो, थाँनें कराँ पटराँणी ।। ५
कोट भूप वाराँ संतन पर, जिनके हाथ बिकाँणी ।। ६
हथलेवो मैं थाँसू जोड्यो, गिरधररी पटराँणी ।। ७
पीहर म्हारो देश मेड़तो, छाँडी कुलकी काँणी ।। ८
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटाँणी ।। ९

○

पद–१५४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(राणा संवाद-प्रेमदृढ़ता)

जहर दियौ म्हे जानी राणाजी थे तो । (टेर)
अपने कुल को परदो कर लौ मैं अबला बौरानी ।। १
मेरो (तेरो) न्याव प्रभु के आगे, छाणें दूध'र पाणी ।। २
जैसे कंचन कसत कसौटी, होत है बाराबानो ।। ३
कोटि नृपति वारूं संतन पर, जिनके हाथ बिकानी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटानी ।। ५

○

१५३–२ (म.), (दीना. मं. मी. प. २३)
नोट–४-५ अंतरे विचारणीय हैं, पटराणी शब्द के कारण । और सब उत्तम है ।
१५४–१ (उ.), (मा. ह. ह. पु. २)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१५५ : राग–सोरठ वा बागेश्वरी, कानड़ा : ताल–तिताला

(राणा संवाद)

जहर दियो म्हे जाणी, राणाजी म्हाँनैं । (टेर)
हरष सोग मेरे मन नाहीं, नहीं लाभ नहीं हानी ।। १
कंचन लेर अग्नि में राख्यो, निकस्यो बाराबाँनी ।। २
अबतो प्रभु तुमही पति राखो, छाणों दूध'र पाँणी ।। ३
राणों वचन उचारिया जी, सुणजो म्हारी वाँणी ।। ४
साधाँरो सँग परो निवारो, थाँने कराँ पटराँणी ।। ५
कोटभूप वारों साधाँ पर, संतां हाथ बिकाँनी ।। ६
हथलेवो म्हे थाँसूं जोड्यो, गिरधररी पटराँणी ।। ७
पीहर म्हारो मेड़तो जी, छांडी कुलकी काँणी ।। ८
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल लिपटानी ।। ९

○

पद–१५६ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(उलहना-प्रेमोपालंभ)

जाओ हरि निरमोह डारे, जाणी थाँरी प्रीत । (टेर)
लगन लगी जब और प्रीत छी, अब[1] क्यों भये नचीत ।। १
अमृत पाय विष क्यूँ दीजे, कौण गाँव की रीत ।। २
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, आप गरज के मीत ।। ३

○

पद–१५७

जाके मथुरा कहानाने गागरियां फोरी ।
गागरियां फोरी दुलरि मोरी तोरी ।। (टेर)

१५५–२ (म.), (मा. हरिना. जीकी पु ह.) (मी. ली. प. दूधू ९)
देखो–'राणाँजी जहर दियो म्हे जाणी' ।
१५६–२ (म.)
1 पा.–'अब कुछ अँवलीं रीत' ।
१५७–(का. ५।२०७)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऐसी रीत तुझे कौन सिखावै, किसन करत बाराजोरी ।। १
सास हटेली, ननद चुगेली, दिवर देवत मुझे गारी ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल चित्त हारी ।। ३

○

पद–१५८ : राग–ललित : ताल–दादरा
(प्रार्थना)

जागिए गिरधारीलाल, भक्तन हितकारी । (टेर)
दासी हाजर खवास, कंचन ले झारी ।। १
सउच करो दंतधावन, स्नान की तयारी ।। २
वस्त्र और पुष्पमाल, तुलसी अति प्यारी ।। ३
रत्नजटित आभूषण, मुकुट लटक वारी ।। ४
धूप दीप नैवेद्य, आरती सँवारी ।। ५
मीरां प्रभु विधि विधान, चरणन चित धारी ।। ६

○

पद–१५९ : राग–माड : ताल–रूपक
(प्रेम-रहस्य)

जागो म्हारा जगपतिराइ, हँसि बोलो क्यूँ नहीं ।
हरि थे छो जी हिरदा मांहि, पट खोलो क्यूँ नहीं । (टेर)
तन मन सुरति सँजोइ, सीस चरणाँ धरूँ ।
जहाँ जहाँ देखूँ म्हारो राम, जहां सेवा करूँ ।। १
सदकै करूँजी सरीर, जुगै जुग वारणौं ।
छोड़ी छोड़ी कुल की लाज, साहिब तेरे कारणौं ।। २
थोड़ी थोड़ी लिखूं सिलाम, बहोत करि जाणज्यौ ।
बंदी हूं खानाज़ाद, महरि करि मानज्यौ ।। ३

१५८–२ (म.), (स. मा. मो. ली. ३)
१५९–२ (म.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हां हो म्हारा नाथ सुनाथ, विलम नहि कीजियै ।
मीरां चरणां की दासी, दरस अब दीजियै ।। ४

○

पद–१६० : राग–प्रभाती : ताल–कहरवा तिताला

(स्तुति)

जागो बंसीवारे प्रभुजी, जागो मोरे प्यारे । (टेर)
रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किंवारे ।। १
गोपी दधी मथत सुनियत है, कँगना के झनकारे ।। २
उठो लालजी भोर भयो है, सुर नर ठाड़े द्वारे ।। ३
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय शब्द उचारे ।। ४
माखन रोटी हाथ में लीन्हीं, गौग्रन के रखवारे ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सरण आये को तारे ।। ६

○

पद–१६१ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(उलहना)

जावा दे री जावा दे, जोगी किसका मीत । (टेर)
सदा उदासी मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत ।। १
बोलत वचन मधुर से मीठे, जोरत नाहीं प्रीत ।। २
हूं जाणूं या पार निभैगी, छोड़ चला अधबीच ।। ३
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, प्रेमपियारा मीत ।। ४

○

१६०–२ (म.)
१६१–२ (म.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१६२ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(विनय और उपालम्भ)

जावा दे गुमानी कृष्ण म्हारे घरे काम छै । (टेर)
थे हो लंगर नन्द महर के व्रज बरसाने म्हारो गाम छै ।। १
जाणो नाही तो पूछ लीज्यो श्री राधा म्हारो नाम छै ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर नाम थांको बदनाम छै ।। ३

○

पद–१६३ : राग–कालँगड़ा : ताल–तिताला

(प्रेम-उलहना)

जावो (ला) कठेरे, रामा रैवो अठे, साँवलिया (रामा) । (टेर)
गोकुल बसबो फीकोई लागै, मथुरा में काँई (थारे) लाडू बटै[1] ।। १
नित काँई जावो नित काँई आवो, नितका जायाँ से मान घटै ।। २
गोकुल में काँई धेनु चरावो, मथुरा में काँई (थारे) राज लटै ।। ३
राधाई रुकमण और सतभामा, कुब्जा काँई (थारे) संग पटै[2] ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम सुमरां सूं म्हांको संकट कटै[3] ।।५

○

पद–१६४ : रागनी–पीलू : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

जो तुम तोड़ो पिया मैं नहिं तोड़ूं,
तेरी प्रीत तोड़ि प्रभु कौन सँग जोड़ूं । (टेर)
तुम भये तरुवर मैं भई पँखियाँ,
तुम भये सरवर मैं तेरी मछियाँ ।। १

१६३–२ (म.)
1 महावरा है । अर्थ लाभ होना ।
2 पाठान्तर–'कुबज्या दासी थारे आई पटै' ।
3 पाठान्तर–'थारे दरस म्हारो पांप कटै'

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तुम भये गिरवर मैं भई मोरा,
तुम भये चंदा भई मैं चकोरा ।। २
तुम भये मोती, (तो) मैं भई धागा,
तुम भये सोना, भई मैं सुहागा ।। ३
बाई मीरां के प्रभु व्रज के वासी,
तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी ।। ४

○

पद–१६५ : राग–वागीश्वरी : ताल–तिताला
(विरह विनय)

जोगिया छाड़ रह्या परदेस । (टेर)
जब का बिछड़्या फेर न मिलिया, बहोरि न दियो संदेस ।। १
या तन ऊपर भसम रमाऊँ, खार करूँ सिर केस ।। २
भगवाँ भेष धरूं तुम कारण, ढूँढूँ चारूं देस ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जीवनि जनम अनेस ।। ४

○

पद–१६६ : राग–वेश सोरठ : ताल–कहरवा धीमा
(विरह-कातरता)

जोगियाजी निसदिन जोऊं बाट ।
पांव न चाले पंथ दुहेलो, आज औघट घाट । (टेर)
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाइ ।
मैं भोली भोलापण कीन्हो, राख्यौ नहीं बिलमाइ ।। १
जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीत्या, अजहूं आयो नांहि ।
विरह बुझावण अन्तर आवो, तपत लगी तनं मांहि ।। २

१६४–२ (म.), (वं. पु. पृ. ३६)
१६५–२ (म.), (का. दो. ४४)
१६६–२ (म.), (मंजुपदावली ४५)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कै तो जोगी जग में नाँहीं, कैंर बिसारी मोइ ।
काँई करूँ कित जाऊँरी सजनी, नैण गुमाया रोइ ।। ३
आरति तेरी अंतरि मेरे, आवो अपणी जाण ।
मीरां व्याकुल विरहिणीरे, तुम बिन तलफन प्राण ।। ४

○

पद–१६७ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(उत्कंठा)

जोगियाजी आवो ने या देस ।
नैणज देखूँ नाथ मेरो, ध्याइ करूँ आदेस । (टेर)
आया साँवण मास सजनी, भरे जल थल ताल ।
रावल[1] कुण बिलमाइ राख्यो, विरहनि है बेहाल ।। १
बिछड़ियाँ कोई भौ भयो (रे जोगी) ऐ दिन अहला जाइ ।
एक बेरी देहु फेरी, नगरहिं हमारे आइ ।। २
वा मूरत मेरे मन बसे (रे जोगी) छिन भी रह्यौ न जाइ ।
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, दरसन द्यौ हरि आइ ।। ३

○

पद–१६८ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

जोगिया तू कब रे मिलैगो आई । (टेर)
तेरे हि कारण जोग लियो है, घर घर अलख जगाई ।। १
दिवस न भूख, रैण नहिं निद्रा, तुझ बिन कुछ न सुहाई ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल कर तपत बुझाई[1] ।। ३

१६७–२ (म.), (मंजुपदावली ४९)
1 पाठान्तर–'साँई' ।

१६८–१ (शब्दावली) ।
1 पा०-दीर्घ ई के स्थान में ह्रस्व इ का भी पाठ है ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१६६ : राग–सोरठ : ताल–रूपक कहरवा

(विरह)

जोगिया दरस दीज्यौ राज ।
कर जोड़्यां करुणा करूं म्हारी बांह गह्यां की लाज । (टेर)
लोकलाज बिसारि डारी, छांड्यौ जग उपदेस ।
बिरह अगनि में प्राण दाझै, सुणि लीज्यौ आदेस ।। १
पाँच मुद्रा भाव कंथा, नखसिख साजे साज ।
जोगणि होइ जग ढूंढिस्यूं, म्हारी घरि घरि फेरी आज ।। २
दरददिवांनी तन जानि अपनी, मिलिया राम दयाल ।
मीरां कै मन आनंद उपज्यौ, रोम रोम खुसियाल ।। ३

○

पद–१७० : राग–मांड : ताल–दादरा

(विरह)

जोगिया ने कहियो रे आदेस ।
आऊंगी मैं, नाँहि रहूंगी, कर जोगन को भेस[1] । (टेर)
चीर को फाड़ूं कंथा पहिरूं, लेऊंगी उपदेस ।
गिणते गिणते घिस गई रे, मेरी उंगलियां की रेख ।। १
मुद्रा माला भेष लूं रे, खप्पड़ लेऊं हाथ ।
जोगिन होय जग ढूंढसूं रे, रावलिया के साथ[2] ।। २
[3]प्राण हमारा वहाँ वसत है, यहाँ तो खाली खोड़ ।
मात पिता परिवार सूं रे, रही जु तिनका तोड़[3] ।। ३

१६९–२ (म); (राम स० गु. पृ. १७३) ।
१७०–२ (म); (शब्दावली) । (मी. ली. प. दूधू. १७) ।
1 पा०-'कर जटाधारी भेस' । 2 पा०-यहां पर एक अंतरा यह है—
'दंड कमंडल गूंदड़ी रे बाला, कियो नवेलो नेह ।
प्रीतम अौजूं न आइया, म्हारे हिवड़ै बडो संदेह ।।'
3 3 पा०-यहां यह अंतरा और भी है—
'गुरु कां सबद कान में पहरूं, अंग विभूत रमाऊं ।
जा कारण मैं जग तजो रे, बाला वाही पास मैं जाऊं ।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांच पचीसों बस किये, मेरा पला न पकड़ै कोय ।
मीराँ व्याकुल विरहणी रे, कोई आन मिलावे मोय ।। ४

○

पद–१७१ : राग–पहाड़ी : ताल–दादरा
(विरह)

जोगिया नैं कहज्यो जी आदेस ।
जोगियो चतुरसुजांण सजनी ध्यावै संकर सेस । (टेर)
माला मुद्रा मेखला रे वाला, खपरा लागी हाथ ।
जोगण होइ जुग ढूंढसूं, म्हारा रावलिया री साथ ।। १
करि किरपा प्रतिपाल मो परि, राखै नैं अपनैं देस ।
आऊंगी मैं नां रहूंगी, म्हारा पीव बिना परदेस ।। २
सांवण आवण कह गयो रे वाला, करि गयो कोल अनेक ।
गिणतां गिणतां घसि गई सजनी, आँगलियाँ री रेख ।। ३
प्राण हमारा वहां बसै जी वाला, यहां है खाली खोड़ि ।।
मात पिता परिवार सूं जी, हूँ रही तिणका ज्यूं तोड़ि ।। ४
पीव कारण पीली पड़ी रे, जोबन गया बाली बेस ।
दासि मीरां राम भजि कैं, तन मन कीन्हाँ पेस ।। ५

○

पद–१७२ : राग–खमाच : ताल–तिताला
(वेदना)

जोगिया प्रीतड़ी है, दुखड़ा रो मूल । (टेर)
हिल मिल बात बनावत मीठी, पीछे जावत भूल ।। १
तोड़त देर करत नहिं सजनी, जैसे चमेली के फूल ।। २
मीरां के प्रभु तुम्हरे दरस बिन, लगे हिवड़े में शूल ।। ३

१७१–(राम स० गु. पृ. १९०) ।
१७२–१ (उ) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१७३ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(प्रेम विरह)

जोगियारी सूरत मन में बसी । (टेर)
नितप्रति ध्यान धरत हूँ दिल में, निसदिन होत खुसी ।। १
कंहा करूँ कित जाउँ मोरी सजनी, मानों सरप डसी ।। २
मीरां कहे प्रभु कब रे मिलोगे, प्रीत रसीली बसी ।। ३

○

पद–१७४ : राग–बिहाग : ताल–तिताला

(विरह)

जोगिया सों प्रीत कियाँ दुख होय । (टेर)
प्रीत कियाँ सुख नहिं मोरी सजनी, जोगी मींत न कोई ।
रात दिवस कल नाहिं परत है, तुम मिलियां बिन मोई ।। १
ऐसी सूरत या जग माहीं, फेरि न देखी सोंई ।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, मिलियाँ आनँद होई ।। २

○

पद–१७५ : राग– कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(अनुराग)

जोगियो आँणि मिल्यो अनुरागी । (टेर)
ससा* सोक अंग नहिं त्रिसना, दुवध्या सब ही त्यागी ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहैं, स्यामबरण बडभागी ।। २
जनम जनम को साहिब म्हारो, वाही सों लो लागी ।। ३
अपणा पिव सों हिल मिल खेलां, हरि दरसण अनुरागी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, अब भई मैं सुभागी ।। ५

१७३–१ (उ) ।
१७४–२ (म); (राम स० गुटका) ।
१७५–१ (उ); (मी. ली. पा. दूघू २३) ।
* पा०-'संसय' । १ पा०-'मित्र' । २ पा०-'अधरसुधारस पागी' ।
३ पा०-'मीराँ तो गिरधर मन मानी' । ४ पा०–'अब तो भई है सुहागी' ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१७६ : राग–भैरव : ताल–तिताला ।
(विरह, विनय)

जोगी आ जा आ जा, जोगी पाँइ परूँ मैं हौ चेरी तेरी । (टेर)
प्रेम-भक्ति को पैंडो न्यारो, हमकूँ गैल बता जा ।। १
अगर चंदन की चिता बनाऊँ, अपने हाथ जला जा ।। २
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अङ्ग लगा जा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ज्योति में ज्योति मिला जा ।। ४

○

पद–१७७ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(विरह)

जोगी म्हाँने दरस दियाँ सुख होइ ।
नातरि दुखी जग मांहि जीवड़ो, निसिदिन झूरै तोइ । (टेर)
दरस दिवानी भई बावरी, डोली सब ही देस ।
मीरां दासी भई है पंडुरी, पलट्या काला केस ।। १

○

पद–१७८ : राग खमाच तिलँग : ताल–धीमा तिताला
(संयोग)

जोसीड़ा ने लाख बधाई रे, अब[1] घर आये स्याम । (टेर)
आजि[2] आनंद उमँगि भयो है, जीव लहै सुख धाम ।। १
पांच सखी मिलि पीव परसि कैं, आनंद ठामूं ठाम[3] ।। २
बिसरि गई दुख निरखि पिया कूं, सुफल मनोरथ काम ।। ३
मीरां के सुखसागर स्वामी,[4] भवन गवन कियो राम ।। ४

१७६–१ (उ); (पुजा. नाथू पू. से), (शब्दावली पृ. १९) ।
१ पा०–शब्दावली में आगे लिखा पाठ एक अन्तरे में विशेष है—
'उलटो ही तू आ जा' ।
१७७–२ (म); (राम स. गु.) ।
१७८–२ (म); (राम स. गु. पृ. १४१) ।
1 पा०-'आज' । 2 पा०-'अति' । 3 पा०-'पंच सखी मिलि परसि पियाकू आनँद आठूं जाम' । 4 पा०-'मीरां के प्रभु सुख के सागर' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१७९

(विरह)

ज्यां संग मेरा न्याहा लगाया, वांको मैं धूँडने जाऊंगी । (टेर)
जोगन बन के बन बन धूँडूँ, आंग बभूत रमाऊंगी ।। १
गोकुल धूँडूँ मथुरा धूँडूँ धूँड फिरूं कुछ बसियां रे ।। २
मीरां दासी सरण जो आई, श्याम मिले तहाँ जाऊँ रे ।। ३

○

पद–१८० : राग : प्रभाती ताल–कहरवा

(प्रेम-रहस्य)

ज्याँरा चित चरणां से लागा, वे ही सवेरे जागा । (टेर)
पहले भूप भरतरी जागा, शहर उजीणी त्यागा ।
सुँण सुँण बचन साहब सतगुरु का, गोपीचंद उठ भागा ।। १
साहबसैन बलख रा राजा, बांण बिरह रा लागा ।
आठूँ पहर कबीरा जागा, मरण जीवण भय भागा ।। २
राणाँ रूस्याँ भय मोरे नाहीं, चित साहब से लागा ।
मीरांबाई तो शरणे आया, लोक लाज भय त्यागा ।। ३

○

पद–१८१

(भक्ति)

ज्यूँ अमली से अमल अधारा ।
यूँ रमैया प्राण हमारा । (टेर)
कोई निन्दै बन्दै दुख पावै ।
मौकूँ तो रमैयो भावै ।। १

१७९–सा०–(का./उ. २/२७७) ।
१८०–२ (म); (नंवनिधि कुँवरबाईजी से प्राप्त) ।
१८१–३ (क); (बं. पु. पृ. ४१) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१८२ : राग–झँझोटी : ताल–तिताला

(प्रेमोत्कंठा)

ज्यूँ जाणूँ ज्यूँ लीज्यो सजन सुध, ज्यूँ जाणूँ ज्यूँ लीज्यो । (टेर)
हूँ तो दासी जनम जनम की, कृपा रावरी कीज्यो[1] ।। १
ऊठत बैठत जागत सोवत, कबहुँक याद करीज्यो । २
आवत ज़ावत जीमत सोवत, सुपने दरस मोये दीज्यो ।। ३
मैं पतिबरता नार प्रभूजी, काहू तैं न पतीजो ।। ४
साँचो प्रेम प्रीत को नाँतो, ताही तैं तुम रीझो ।। ५
रात दिवस मोये ध्यान तिहारो, आय दरस मोये दीज्यो ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चित चरणाँ में लीज्यो ।। ७

○

पद–१८३ : राग–विहाग सोरठ वा कानड़ा शंकरा : ताल–रूपक वा चौताल

(भक्ति)

ज्यो चित ल्याय हरि जप करै, ज्यो मन लाय हरि जप करै ।
अमर होय मरे न कबहूँ, काल जासै डरै । (टेर)
भक्ति तो प्रह्लाद की सी, साँच नर में धरै ।
भक्ति के बस स्यामसुंदर, सिंह को बपु धरै ।। १
कोटि बैरी तृण बराबर, कहा वाको करै ।
ओट जिनकी नन्दनन्दन, कौन तासे अरै ।। २
भक्ति को परताप ऐसो, कुटिल गनिका तरै ।
दास मीरां लाल गिरधर, शरण हरि की परै ।। ३

१८२–१ (उ); (दीना. मं. मी. प. ३९) ।
(देखो शब्दावली का पद 'म्हारी सुध ज्यूं जानें')
1 पा०–एक अंतरा अधिक ऐसा मिलता है–'तुम बिन मेरे और न कोऊ, कृपा रावरी कीजै' । बासर भूख न रैन न निद्रा, यह तन पल पल छीजै । मीरां के प्रभु गिरधर नागर अब, मिल बिछुडन नहिं कीजै' । (राम स. गु. १०/८ पृ. २५-२६) ।
१८३–१ (उ); (मी. प. जमा. राम. १) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१८४ : राग–दुर्गा, बिभास : ताल–कहरवा
(संयोग)

झकोलो लाग्यो जी रंग गिरधर को आन । (टेर)
गिरधर गिरधर काईं करो, कोई गिरधर स्याम सुजाण ।। १
मीरां तो चंदा भई कोई, गिरधर ऊग्यो भान ।। २
ऊदाँ थे तो बावली कोई, नहचैं कर ल्यौ ध्यान ।। ३
आपाँ दोन्यूं मिल भजाँ कोई, ज्यों गोप्यां बिच कान ।। ४
मीरां नै गिरधर मिल्या जी, भगताँ रो राख्यो मान ५

○

पद–१८५ : राग–काफी : ताल–जैत
(झूला और फाग-लीला)

झूलत राधा संग गिरधर झूलत राधा संग । (टेर)
अबीर गुलाल की धूम मचाई, डारत पिचकारी रंग ।। १
लाल भयो बृंदाबन जमुना, केसर चुवत अनंग ।। २
नाचत ताल आधारे सुर सुंदरी, डारी डारी बाजे ताल मृदंग ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की बहुत उमंग ।। ४

○

पद–१८६ : राग–पीलू : ताल–कहरवा
(राणा संवाद—प्रार्थना—प्रत्यक्षानुभव)

डब्बा में सालगराम बोलत क्यों नहिंयाँ । (टेर)
हम बोलत तुम बोलत नाहीं, काहे को मौन धरैयाँ ।। १
यह भवसागर अगम भरी है, काढ लेहु गहि बैयाँ ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम ही मोरे सैयाँ ।। ३

१८४–१ (उ.); (स्फुट पत्र) ।
१८५ (का. /उ.१ ३१०) ।
१८६–२ (म); (स. मा. मी. ली. १९) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१८७
(विरह)

डार गयो री मनमोहन पासी । (टेर)
बिरह दुखारी मैं तो बन बन दौड़ी, प्राण तजूंगी लूंगी करवत कासी ।। १
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणन की दासी ।। २

○

पद–१८८ : राग–देश : ताल–धीमा तिताला
(विरह)

डारि गयो मनमोहन फाँसी । (टेर)
आँबा की डाल कोइलि इक बोलै,
मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी ।। १
विरह की मारी मैं बन बन डोलूँ,
प्राण तजूँ करवत ल्यूँ कासी । २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी,
तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी ।। ३

○

पद–१८९ : राग–सोरठ वा तिलंग : ताल–धीमा तिताला
(विनय)

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर । (टेर)
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर ।। १
मेरे आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर ।। २
तुम से हमकूं तो तुम ही हो, हम सी लाख करोर ।। ३
ऊभी ठाढ़ी अरज करत हूं, अरज करत भयो भोर ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, दूंगी प्राण अकोर ।। ५

१८७–२ (म); (का./उ. ३/३६९) ।
१८८–२ (म); ।
१८९–१ (उ. ट.); (राम स. गु. ५६) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१६० : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विरह-उत्सुकता)

तुम्हारे कारण सब सुख छोड़्या, अब मोहि क्यों तरसाओ । (टेर)
विरह-व्यथा लागी उर अन्दर, सो तुम आय बुझाओ ।। १
अब छोड़्यां नहिं बनै प्रभूजी, हँस कर तुरत बुलाओ ।। २
मीरां दासी जनम जनम की, अंग सूं अंग लगाओ ।। ३

○

पद–१६१ : राग–देश : ताल–कहरवा

(विनय)

तुम आज्योजी रामा, आवत आस्याँ स्यामा । (टेर)
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ, सरै मनोरथ कामा ।। १
तुम विच हम बिच अंतर नाहीं, जैसें सूरज घामा । २
मीरां मनकों और न मानै, चाहे सुन्दर स्यामा ।। ३

○

पद–१६२ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा

(विरह)

तुम आवो हो कृपानिधान नाथ वेग ही[1] । (टेर)
मेरे मिंदर आये प्रभू निकसे कही ।
महल हूं न आये मैं दीदार देख ही[2] ।। १
मेरे मिंदर आये प्रभू निकसी क्यूं गये ।
दीन के दयालजी कठोर क्यूं भये ।। २
दीपक मेरै हाथ लियाँ बाट जोवती ।
रांमहू न आये सारी रैंणि रोवती ।। ३

१९०–१ (उ); (वं. पु. पृ. २०) ।
१९१–१ (उ ट.); (वं. पु.) ।
१९२–२ (म.); (राम स. गु. पृ. १६७) ।
1 पा०–'वेगदी' । 2 'देखदी' ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीया के दरस बिनां फिरूं डोलती[3]।
मीरां तो तुम्हारी दासी रांम बोलती ।। ४

○

पद–१९३ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(सेवा, राजभोग)

तुम जीमो गिरधरलालजी । (टेर)
मीरां दासी अरज करै छै, ज़ीमूं परम दयालजी ।
छप्पन भोग छतीसों बिंजन, पावो जन-प्रतिपाल जी ।। १
राजभोग अरोगो गिरधर, सन्मुख राख्यो थाल जी ।
मीरां दासी चरण उपासी, कीजे बेग निहाल जी ।

○

पद–१९४ : राग–सारंग वा टोडी : ताल–कहरवा
(सेवा, भोग)

तुम जीमो गिरधरलाल जू । (टेर)
मीरां दासी अरज़ करै छै, मोकूं करो निहालजू ।। १
या बिरियाँ है बालभोग की, लीज्यो चित में धार जू ।। २
केसर अतर पुष्प के हरवा, इण विध करो सिंगार जू ।। ३
छप्पनभोग छतीसों बिंजन, लाई भर भर थाल जू ।। ४
पान गिलोरी सुगँध मिला कर, कीनी है सब त्यार जू ।। ५
मीरां दासी किई परिक्रमा, मोकूँ करो निहाल जू ।। ६

○

१९२–3 'झूरती'।
१९३–(उ.ट); (स. मा. मी. ली.) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१९५ : राग–जौनपुरी टोडी : ताल–दीपचंदी आसावरी

(विरह)

तुम देख्यां बिनि कल न परत है,
भली ए बुरी कोई लाख कहो जी (टेर)
नेह को पैंडो बोहोत कठण है,
च्यारि कही दस और कहो जी ।। १
मीरां प्रभु हरि अविनासी,
प्रीत करो तौ बोल सहो जी ।। २

○

पद–१९६ : राग–सिन्ध भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

तुम विन मेरी कौन खबर ले, गोबरधन गिरिधारी । (टेर)
मोरमुकट पीताम्बर सोहै, कुण्डल की छबि न्यारी ।। १
भरी सभा में द्रोपदि ठाढ़ी, राखो लाज हमारी ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ३

○

पद–१९७ : राग–कालँगड़ा : ताल–धमाल

(विनय)

तुम बिन स्याम सुने (गो) कौ (न) मेरी । (टेर)
ठाढ़ी खेवटणी अरज करत है, मलवा ने नाव पछिम को फेरी ।। १
नदिया गहरी नाव पुराणी, अअपर बोच भँवर ने घेरी ।। २
बोदी है प्रभु पार लगावो, डूब जाय तो कहा रहै तेरी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुल को त्याग शरण लई तेरी ।। ४

१९५–२ (म.ट.); (राम स. गु. पृ. १३३) ।
१९६–२ (म); (बृ. भ. र. पृ. १७) ।
१९७–२ (म); (मी. प. जमा. राम. ४) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–१९८ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताल
(विनय)

तुम ह्याँ ही रहो राम रसिया,
थारी साँवरी सुरति (में) मन बसिया । (टेर)
क्यांनें तो रामजी घोड़ा सिणगारो, क्यांनें पाघर कसिया ।। १
चुण चुण कलियाँ सेज सँवारूँ, ऊपर गादी तकिया[1] ।। २
बोहोत दिना की पंथ निहारूँ, तुम आयाँ रंग रचिया ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, चरणकमल मन बसिया ।। ४

○

पद–१९९ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(विनय)

तुम सुनों दयाल म्हारी अरजी । (टेर)
भोसागर में बही जात हूँ, काढो तो थारी मरजी[1] ।। १
यो संसार सगो नहिं कोई, साँचा सगा रघुबरजी ।। २
मात पिता और कुटुँब कबीलो, सब मतलब का गरजी ।। ३
मीरां के प्रभु अरजी सुन ल्यो, चरण लगाओ गिरधरजी ।। ४

○

पद–२०० : राग–प्रभाती : ताल–कहरवा
(लीला–वर्णन)

तुमसों तो मन लाग रह्यो तुम जागो मोहन प्यारे । (टेर)
भोर भई चिडियाँ चहचई, कागा बोले कारे ।
कामनियों ने चीर सँभाले, घर घर खुले किंवारे ।। १

१९८–(म); राम स. गु. पृ० २२१) ।
१ नोट—एक अंतरा 'भजनमंजरी' में यह है—
'सिरै गाय का दूध मँगाया चावल गेसां भर पसिया' ।
१९९–२ (म.ट.); (वं. पु. पृ. २९) ।
1 पा०–'चरण लगाऊं थारी मरजी' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सारी गउएँ निकस गईं यमुना, लेकर संग लवारे।
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाड़े, दाँईदार तिहारे ।। २
घर घर ग्वालन दही बिलोवें, कर कंगन झनकारे।
बस्तर भूषण तन पर धारो, पगियाँ पेच सँवारे ।। ३
या व्रज के प्रभु भूषण तुम हो, तुम ही प्राण हमारे।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आमीं शरण तिहारे ।। ४

○

पद–२०१ : राग–प्रभाती : ताल–तिताला, कहरवा

(निहोरा)

तुमसों मनवा लागि रह्यो, तुम जागो मोहन प्यारे। (टेर)
रजनी बीती भोर भई है, घर घर खुले दुवारे।
घर घर गोपी दही बिलोवे, करै कञ्चन झुनकारे ।। १
गउ बछरा सब बन कूं ध्याये, लारे लाग लवारे।
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाढ़े, दाँईदार तुमारे ।। २
गंगा जागी जमुना जागी, जागे नदी और नाले।
धरती को राजा वासग जागे, तुम जागो मोहन प्यारे ।। ३
बन में तो चिडियाँ चूंचाई, कव्वा बोल्या कारे।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सब संतन रिछपाले ।। ४

○

पद–२०२ : राग–काफी : ताल कहरवा

(राणा संवाद)

तुलसाँ की माला हिवड़ै लागा जी (मेवाडा राणा)।
राम तणा गुण गास्याँ। (टेर)

२००–२ (म. म.)।
२०१–३ (क.); (पुजा. ना. थू. पु. से)।
२०२ (सा०) (स्फुट पद)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लिख पत्तर राणू मीरां नै भेज्यो,
संग साधाँ से पिसतास्यो जी ।। १
लिखरे पत्तर मीरां राणाजी ने भेज्यो,
साधूड़ाँ रे सँग सुख पास्यां जी ।। २
विष रा पियाला राणाजी भेज्या,
पिवताँ पिवताँ म्हाँनै आवै हाँसी जी ।। ३
मीरां कू प्रभु गिरधरनागर,
हरि चरणाँ में चित लास्याँ जी ।। ४

○

पद–२०३ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(कथोपकथन-चरित)

(तू तो) सांवलडी गोरी नार, मारग बिच क्यों खड़ी । (टेर)
(मीरां) काँई थारी दूखै छै आँख, कै घर सास लड़ी ।। १
(मीरां) काँई थारो पीयो परदेस, सँदेसै यों खड़ी ।। २
(तू तो) चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे तो मेरी क्या रे पड़ी ।। ३
(तू तो) उड़ रे हरिया बन का सूवटा, उड़ रे द्वारिका में जाय,
साँवरिया ने कहियो ओळमा ।। ४
(मीरां) क्याँ पर लिखोला सलाम, क्यां पर तो करड़ा ओळमा ।। ५
सूआ, चूँचाँ पै लिखूं ली सलाम, पंखां पै करड़ा ओळमा ।। ६
मीरां, ग्यारस ने करो जी निरार, बारस ने खोलो पारनो ।। ७
मीरां, तेरस ने चालै दीनानाथ, चौदस ने हरि आ मिलै ।। ८
राणा, थे छो म्हारा झूँठा भरतार, साँचा छै श्रीहरि साँवरा ।। ९

○

---

२०३ (सा०) (का. ह. नं. १)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२०४ : राग–आसा माड : ताल–कहरवा

(विरह चरित)

तू मत बरजे माइडी, साधाँ दरसण जाती ।
राम नाम हिरदे बसे, माहिले मन माती । (टेर)
माइ कहे सुन धीहडी, काहे गुण फूली ।
लोक सोवे सुख नींदड़ी, तूं क्यूं रैणज भूली ॥ १
गेली दुनियाँ बावली, ज्याँकूं राम न भावे ।
ज्याँरे हिरदे हरि बसे, त्याँकूं नींद न आवे ॥ २
चोमासा की बावड़ी, ज्याँको नीर न पीजे ।
हरि नाळे अमृत झरे, ज्याँकी आस करीजे ॥ ३
रूप सुरंगा रामजी, मुख निरखत जीजे ।
मीरां व्याकुल बिरहणी, हरि अपणी कर लीजे ॥ ४

○

पद–२०५ : राग–माढ वा सोरठ : ताल–दादरा

(रहस्य प्रेम)

तेरा कोई नहि रोकणहार, मगन होय मीरां चली । (टेर)
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूर करी ।
मान अपमान दोऊ धर पटकें, निकली हूँ ज्ञान गली ॥ १
ऊँची अटरिया लाल किंवड़िया, निरगुण सेज बिछी ।
पचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली ॥ २
बाजूबंद कड़ूला सोहे, माँग सिंदूर भरी ।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हां, सोभा अधिक भली ॥ ३
सेज सुखमणा मीरां सोवै, धन सुभ आज घरी ।
तुम जावो राणा घर अपने, मेरी तेरी नाहिं सरी ॥ ४

○

२०४–१ (उ. ट.); (शब्दावली-मंजु.) ।
२०५–२ (म. ट.) (शब्दावली–मंजु.) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२०६ : राग–झँझोटी : ताल–त्रिवट

(राणा सम्बन्धी दुविधा)

तेरा मेरा जियड़ा यक कैसे होय, राम । (टेर)
हमने कहा सुरझावन राणाँ, तुम जातें उरझाय, राम ।
हमने कहा निरमोहित रहना, तुम तो जात मोहाय, राम ।। १
तेल जले तो जलती है बाती, दिवरा झलमल सोय, राम ।
जल गया तेल रु बुझ गई बाती, लच्चर लच्चर होय, राम ।। २
हमने कहा आँखिन का देखा, तुम कानों सुनि सोय, राम ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, होनहार सो होय, राम ।। ३

○

पद–२०७ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(छवि-वर्णन)

तेरे साँवरे मुख पर वारी वारी बलिहारी । (टेर)
मोरमुकुट पीतांबर शोभे, कुण्डल की छवि न्यारी ।। १
वृन्दावन में धेनु चरावे, मुरली बजावत प्यारी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ३

○

पद–२०८ : राग–अडाणा : ताल–तिताला

(उपालंभ)

तेरो कान्ह कालो माई, मेरी राधा गोरी । (टेर)
ऐसी राधे रूप बनी, कंचन-सी देह ठनी,
ऐसे काले कान्ह पर, कोटी राधे वारी ।। १
गोकुल उजाड़ दीनी, मथुरा बसाय लीनी,
कुबजा कूँ राज दीनों, राधे कूँ बिसारी ।। २

२०६–२ (म.) (आ. सा. १ भाग पृ. १३७) ।
२०७–२ (म.) ।
२०८– (का. उ. १।३१३) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिनती सुनो ब्रजराय, लागूँगी तुम्हारे पाय,
मीरां प्रभू सूँ कहियो जाय, सेवक तुम्हारी ।। ३

○

पद–२०९ : राग–कालँगडा : ताल–कहरवा

(रहस्य)

तेरो मरम नाहिं पायो, रे जोगी (टेर)
आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो ।। १
गल विच सेली हाथ हाज़िरियो, अंग बिभूति रमायो ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, भाग लिख्यो सोही पायो ।। ३

○

पद–२१० : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

तैं दरद नहिं जान्यूं, सुनि रै बैद अनारी । (टेर)
तू जा बैद घर आपणैं रे, तुझे खबर मोरी नांहीं ।
मोरे दरद को तू मरम न जांणैं, करक कलेजा रै मांहीं ।। १
प्रांण जांण का सोच नहीं मोहि, नाथ दरस द्यौ आरी ।
तुम दरसण विनि जीव यूं तरसै, ज्यूँ जल बिनि पनवारी ।। २
कहा कहूं कछु कहत न आवै, सुणिज्यौ आप मुरारी ।
मीरां के प्रभु कब 'र मिलोगे, जनम जनम की मैं थारी ।। ३

○

पद–२११

(प्रेम-लीला)

तैं मेरी गैंद चुराई, गुवालन । (टेर)

२०९–२ (म.) (मंजु. ६५) ।
२१०–२ (म.) (राम स. गु. पृ. ३४९) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अबही आन परी तेरे अंगना, अगियाँ बीच छुपाई ।। १
ग्वाल वाल सब मिल कर आये, झगरत झोंका आई[1] ।। २
सांचे कनैया झूंठ मत बोलो, जाँण पड़ी चतुराँई[2] ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलि जाई ।। ४

○

पद–२१२ : राग–माढ : ताल–दादरा
(प्रेम-लीला)

तोती मैना राधा कृष्ना बोल । राधे कृष्ना बोल । (टेर)
एक हि तोती ढूंडत आई, लटक दिवानी मोल ।। १
दाना खावै तोती पानी पीवै, पिंजरे में करत कलोल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि के चरण चित डोल ।। ३

○

पद–२१३ : राग–कामोद : ताल–दीपचंदी
(विरह)

तोसों लाग्यो नेहरा, (तू) नागर नन्दकुमार ।
मुरली तेरी मन हर्यौ, बिसर्यौ घर ब्यौहार । (टेर)
जब तें स्रवननि धुनि परी, घर अँगना न सुहाइ ।
पारधि ज्यूं चूके नहीं, मृग बेधि दई आइ ।। १
पानी पीर न जानई, मीन तलफि मरि जाइ ।
रसिक मधुप के मरम कों, नहिं समुझत कमल सुभाइ ।। २

२११–(सा.) (का. ।३०२।३५९) ।
1 पा. ग्वाल बाल सब ढूढ़न लागे, एक गई दो पाई' ।
2 पा. 'छूट पड़ी चतराई' ।
यह पद 'भजन रत्नावली' मोटी के पृष्ठ १६१ पर है । थोड़ा अंतरों में भेद है—सं. ।
२१२–३ (क.)
२१३–२ (म.); (राम स. गुटका से) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दीपक को जु दया नहीं, उड़ि उड़ि मरत पतंग ।
मीरां प्रभु गिरधर मिले, (जैसे) पाणी मिल गयो रंग ।। ३

○

पद–२१४ : राग–अलैया : ताल–कहरवा
(विरह विनय)

तोसों लाग्यो नेह रे प्यारे नंदकुमार ।
मुरली तेरी मन हरचो, बिसरचो घर ब्यौहार । (टेर)
जब तें श्रवननि धुनि परी, घर अँगणा न सुहाय ।
पारधि ज्यूं चूकै नहीं, मृगी बेधि दइ आय ।। १
पानी पीड़ न जानई ज्यूं मीन तड़फ मरि जाय ।
रसिक मधुप के मरम को नहिं समझत कमल सुभाय ।। २
दीपक को तो दया नहिं उड़ि उड़ि मरत पतंग ।
मीरां प्रभु गिरधर मिले जैसे पाणी मिलि गयो रंग ।। ३

○

पद–२१५ : राग–सारंग : ताल–तिताला
(विनय)

तोरी साँवरी सूरत नंदलालाजी । (टेर)
जमुनां रे तीर तीर धेनु चरावत, काली कामलीवालाजी ।। १
मोर मुकुट पीताँबर सोहे, कुंडल झलकत लालाजी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भकतन के प्रतिपालाजी ।। ३

○

२१४–१ (उ.); (भजन सं. भा. ३ । पृ. ७९ । पद ७७ । ५वां सं.) ।
२१५– (कां. उ. १।३०३) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—२१६ : राग—सोरठ : ताल-इकताला

(उलाहना)

थाँकै दासी ही मनमानी, म्हांसैं अनबोलणा म्हाराज । (टेर)
हमकूँ कहै सिंगार उतारो, दृग अँजन सबही धो डारो ।
माँथे तिलक लगाओ, पहरो चोलणाँ म्हाराज ।। १
कुब्ज्या कँवर कंस की दासी, ज्याँ देख्याँ मोये आवत हाँसी ।
ज्यो पटराणी कीनी हँस बोलणाँ म्हाराज ।। २
कुबज्या के सँग भोग बणायो, हमको लिख कर जोग पठायो ।
मीरां भई दिवानी बन बन डोलणाँ म्हाराज ।। ३

○

पद—२१७ : राग—बिलावल : ताल—कहरवा

(चरित्र—ऊदां व मीरां संवाद)

(ऊदाँ) थाँने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानों बात हमारी । (टेर)
राणे रोस कियो थाँ ऊपर, साधाँ में मत जारी ।
कुलकै दाग लगै छै भाभी, निन्दा हो रहि भारी ।। १
साधाँ रे संग बन वन भटको, लाज गुमाई सारी ।
बड़ाँ घराँ थे जनम लियो छै, नाँचो दे दे तारी ।। २
बर पायो हिंदवाणो सूरज, थे कई मन में धारी ।
मीराँ गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी ।। ३
(मीरां) मेरी बात नहीं जग छानी, ऊदाँबाई समझो सुघर सयानी ।
साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी ।। ४
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूँ बानी ।
राणा नैं समझावो जावो, मैं तो बात न मानी ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर सन्तां हाथ बिकानी ।।
(ऊदाँ) भाभी बोलो वचन बिचारी
साधां की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी ।

२१६—(उ.ट.) (स्फुट) ।
२१७—१ (उ.ट.); (शब्दावली) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छापा तिलक गलहार उतारो, पहरो हार हजारी ।। ६
रतन जड़ित पहरो आभूषण, भोगो भोग अपारी ।
मीरांजी थे चलो महल में, थांनैं सोगन म्हारी ।। ७
(मीरां) भावभगत भूषण सजे, सील संतोष सिंगार ।
ओढ़ी चूनर प्रेम की, गिरधरजी भरतार ।। ८
ऊदांबाई मन समझ, जावो अपने धाम ।
राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूं काम ।। ९

○

पद–२१८ : राग–माढ़ : ताल–कहरवा
(उत्सुकता)

थाँनै काँई काँई कह समझाऊँ म्हारा बाल्हा गिरधारी । (टेर)
पूरब जनम की प्रीति हमारी, अब नहीं जात निवारी ।। १
सुंदर बदन जोवते सजनी, प्रीति भई है भारी ।। २
म्हारै घराँ पधारो गिरिधर, मंगल गावै नारी ।। ३
मोती चोक पुराऊँ बाल्हा, तन मन तो पर वारी ।। ४
म्हारो सगपन तोसूँ साँवलिया, जग से नहीं बिचारी ।। ५
चरण शरण है दासी तोरी, पलक न कीजे न्यारी ।। ६
मीरां कहै गोपिन कों बाला, हमसूं भये ब्रह्मचारी ।। ७

○

पद–२१९ : राग–टोडी जोनपुरी : ताल–धीमा तिताला
(उत्सुकता)

थाँरी छूँ रमईआ मोसूँ नेह निभावौ[1] । (टेर)
थाँरे कारण सब सुख छोड़्या, (अब) क्यूँ हमकूँ तरसावौ ।। १
बिरह विथा लागी उर अंदर, सो तुम आय बुझावौ ।। २

२१८–१ (उ.); (बं. पु. पृ. २३) ।
२१९–१ (उ. ट.); राम स. गु. पृ. ३००) ।
1 पा०–'थारा छाँ' । 'म्हांसूं' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अब छोड़्यां नाहीं बणैं प्रभूजी, हँस कर तुरत बुलावौ ।। ३
मीरां दासी जनम जनम की, अंग सूं अंग लगावौ ।। ४

○

पद–२२० : राग–सिंध भैरवी : ताल–धीमा तिताला
(छवि-वर्णन)

थारी छवि प्यारी लागै राज, राधावर महाराज । (टेर)
रतनजटित सिरपेच कलंगी, केसरियाँ सब साज ।। १
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, रसिकाँ रा सिरताज ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, म्हाँने मिलग्या ब्रजराज ।। ३

○

पद–२२१ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(प्रेम)

थारी बोली लागे म्हांने मीठी हो म्हारा साँवरिया । (टेर)
थे तो साँवरिया म्हारा सिरका जी सेवरा,
मैं थारे हाथ की अँगूठी ।। १
कुंजगली में म्हाँनें मोहन मिलिया,
किस विध फिरूं अपूठी ।। २
सास बुरी म्हारी ननद हठीली,
जलबल होयजाय अँगीठी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर,
भेजी मरम की चीठी ।। ४

○

२२०–१ (उ.); (या०–सं. रा. क. से) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२२२ : राग–देस : ताल–कहरवा

(उलाहना)

थारे कुबजा ही मन मानी म्हाँसू ँ अनबोलना हो राज । (टेर)
हमसे कहै सुहाग उतारो, दृग अञ्जन सब ही धो डारो ।
माँथे तिलक चढावो; पहरो चोलना हो राज ।। १
हमरी कही विषै सम लागै, घर घर जाय भँवर रस पागै ।
उनही के सँग रहना, हँसना बोलना हो राज ।। २
बृन्दावन में धेनु चरावैं, बंसी में कछु अचरज गावैं ।
बाँकी तान सुनावें, छतियाँ छोलना हो राज ।। ३
हमरी प्रीत तुम्ही सँग लागी, लोकलाज सब कुल की त्यागी ।
मीरां के प्रभु गिरधर, बन बन डोलना हो राज ।। ४

○

पद–२२३ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम)

थारै रंग रीझी रसिक गोपाल[1] । (टेर)
निसवासर मैं रटू ँ निरंतर, दरसण द्यो नंदलाल ।। १
सो पतिव्रत टरै जिन टारयो, मति बिसरो नंदलाल[2] ।। २
कोउ कहै नंदो कोउ कहै बंदो, चलां भावती चाल ।। ३
सो मध भक्ति करौ जिन साधो, म्हारो मणि उरमाल ।। ४
प्रेम भरी मीराँ जिन गरवै[3], हिरदै गिरधरलाल ।। ५

○

पद–२२४ : राग–प्रभाती : ताल–धीमा तिताला

(प्रेमोत्सुकता)

थे तो पलक उघाडो दीनानाथ, मैं हाजिर (नाजिर) कद की खडी । (टेर)

२२२–१ (उ. ट.); (स. मा. मी. ली. २४)
२२३–१ (उ ट.); (मी. ली. प. दूधू । ११) (मा. ह. ना. जी की पु०)
1 पा०–'थारे गुण' । 2 पा०–'हिरदै गिरधरलाल' 3 पा०–'गरजै' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साज़निया दुसमन होय बैठ्या, सब नैं लगूँ कड़ी[1] ।
तुम बिन साजन कोई नहीं है, डिगी नाव मेरी समँद अड़ी ।। १
दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदरा, सूकूँ खड़ी खड़ी ।
बान बिरह का लग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी ।। २
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी ।
कहा बोझ मीरां में कहिये, सौ पर एक घडी[2] ।। ३

○

पद–२२५ : राग–कालँगड़ा : ताल–धीमा तिताला
(विनय)

थे म्हारे घर आज्यो जी, प्रीतम प्यारा । (टेर)
मो निगुणी में गुण नहिं एको, थेही बकसणहारा ।। १
तन मन धन न्यौछावर करस्याँ, जतन कराँ म्हे थारा ।। २
मीरां को प्रभु कबरे मिलोगे, तुम बिन प्राण दुख्यारा ।। ३

○

पद–२२६ : राग–माढ : ताल–कहरवा
(पराभक्ति रहस्य)

थोड़ी थोड़ी पावो गिरधारीजी भोली[1] म्हांने आवै । (टेर)
नंदन बन सूं बूँटी आई, जोग ध्यान दरसावै ।
या बूँटी दुरलभ देवन कों, सेस सहसमुख गावै ।। १
शिव विरंचि जाको ध्यान धरत हैं, वेद पुराण सुनावै ।
मीरां तो गिरधर रंग राची, भक्ति पदारथ पावै ।। २

२२४–१ (उ. ट.)
1 पा०–'थे' के स्थान में 'तुम' । 'साजथें' 'साजनिया' के स्थान में ।
2 पा०–यहां एक अन्तरा विशेष है —'गुरु रैदास मिले मोहि पूरे, धुर से कलम भिड़ी । सतगुरु सेन दिई तब आ के, जोत में जोत रली ।' (सं०)
२२५–१ (उ. ट.); (स. मा. मी. ली. ११), (दीना. मं. मी. प. १९) ।
२२६–१ (उ. ट); (स. मा. मी. ली. १४) ।
1 पा०–'आवै-चढ़ै' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२२७ : राग–माढ़ : ताल–रूपक
(चरित)

द्वारिका को बास हो मोहि द्वारिका को बास । (टेर)
संख चक्र हुं गदा पद्म हूं, ते मिटै जम त्रास ।। १
सकल तीरथ गोमती में करत निवास ।। २
शंख झालरि झाँझ बाजे, सदा सुख की रास ।। ३
तज्यो देसौ वेस पति गृह, तज्यो सम्पति राजि ।। ४
दासि मीरां सरन आई, तुम्हैं अब सब लाजि ।। ५

○

पद–२२८ : राग–खमाच विहाग : ताल–धीमा तिताला
(विरह)

दरस विन दूखन लागे नैन । (टेर)
जबसे तुम बिछुड़े मोरे प्रभुजी[1], कबहु न पायो चैन ।। १
शब्द सुनत मेरी छतियाँ कंपै, मीठे लागे (तुम) बैन ।। २
एक टकटकी पंथ निहारूँ, भई छ मासी रैन ।। ३
विरह विथा कासूं कहुँ सजनी, वह गई करवत ऐन ।। ४
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन ।। ५

○

पद–२२९ : राग–खमाच विहाग : ताल–धीमा तिताला
(विरह)

दरस बिन दूखन लागे नैन । (टेर)
पिया मिलन की है मन मांही, कल न पड़त दिन रैन ।। १
कबहु मिलैंगे प्रीतम प्यारे, अधर धरे मृदु बैन ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बिन देखे नहिं चैन ।। ३

२२७–२ (म.); मीरांबा. जी च. (१८ द) पृ. २४) ।
२२८–१ (उ. ट.); (बं पु. पृ. १५) ।
1 पाठा० 'सांई' ।
२२९–१ (उ.); (मा. ह. की पु. ह.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पदं–२३० : राग–सिन्ध : ताल–कहरवा
(लीला)

दसियो मोहन किस दानी । (टेर)
आवँदा जावँदा नजर न आवै, अजब तमाशा इस दानी ।। १
दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी, लोभी यह गोरस दानी ।। २
मात यशोदा दही बिलोवै, गोरस ले ले नसदानी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, लूं लूं दे विच रसदानी ।। ४

○

पद–२३१ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला
(सँदेशा)

दासी म्हारा म्हारूड़ा[1] मारुजी से कहना ।
मोय नींद न आवे नैना ।। (टेर)
जे मेरा गोबिंद दूर बसत है, मोय सँदेशो देना ।। १
जे मेरा गोबिंद गाली देवे, सनक सनक सुन लेना ।। २
जे मेरा गोबिंद बैन बजावै, प्रेम मगन होय कहना ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरन कमल चित देना ।। ४

○

२३०–२ (म.); (बृ. रा. र. पृ. ५१८)।
२३१–२ (म.); भ. मं. पृ. १५८)।
1 'म्हारूड़ा' के स्थान में स्यात 'मुजरा' होगा, लिपि-दोष से अथवा अन्य किसी दोष से अपभ्रंश हुआ ज्ञात होता है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२३२ : राग–माढ़ : ताल–रूपक

(चरित्र)

दीज्यो म्हानैं द्वारिका को वास, रूडा रणछोडजी हो। (टेर)
सुथान वासो नाम हरि को, झालरिये[1] झुणकार।
सकल तीरथ गोमती रे वाला, साँवरियो सिरदार ॥ १
पपैया नैं मेघ प्यारो, मांछली मध नीर।
म्हांनैं[2] तो गिरधर हि प्यारो, छांड्यो जगत सूँ सीर ॥ २
तजियो पीहर सासरो, तजियो सह उपहास।
राणाजी रो वास तजियो, राखो रावल वास[3] ॥ ३
मथुरा[4] में हरि जनमिया जी, कियो द्वारिका वास।
सहँस गोप्यांरो वालमो, गावै मीरां दास ॥ ४

○

पद–२३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(मान)

दूरो रह रे कँवर नंदना रे, परो रह रे कँवर नंदना रे। (टेर)
कारी कामरी वारा तुमैं कानजी ओ।
थे तो रीज्या रीज्या सालूड़ा री कोर (जी) पे ओ ॥ १
गज मोत्याँ वारी राणी राधिकाजी रे।
श्री राधा गोरी जी ज्याँको नाम छै रे ॥ २
वाला हात जोड़ी ने कराँ बीनती रे।
म्हारो अवला को खयोड़ो जादू मानजो रे ॥ ३
मीरां मेड़तणी रा म्हैलां उमाड्या रे।
वै तो रीज्या रीज्या साधूड़ां रा साथ में रे ॥ ४

२३२–३ (क.)।
1 पा०–'जिनरो मोज न पार'।
2 पा०–'म्हांनै तो म्हारो साहिब प्यारो, छांडयो जगत को आस'।
3 पा०–'पास'।
4 पा०–'गोकुल के प्रभु मथुरा आये, भये द्वारका वास'।
२३३–३ (क.)।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२३४ : राग–रेखता : ताल–कहरवा

(बिरह)

देख्या कोई नंद के लाला, बता द्यौ बंसरी वाला । (टेर)
मेरो मन ले गयो हेली, लगी तन में तालावेली । १
लगी कोई कान में दूती, तजी मोहि सेज में सूती ।
बिरह का बाण भर मारया, कलेजा छेद कर डारया ।। २
देख्यां बिन जीव अति तरसै, नैनों में नीर अति बरसै ।
जहां ऊ कान्ह कारो री, मुझे ले जाय डारो री ।। ३
तज्या सब षांन पानी री, नहीं मेरी पीड़ जानी री ।
मोहन मोहन पुकारूं री, सोवन सिर केस सँवारूं री ।। ४
ढूंढया बन बाग सारा री, मिल्या नहीं प्राणप्यारा री ।
हेली हरिजन मिलावौ री, मीरां के प्राण बचावौ री ।। ५

○

पद–२३५ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(चरित)

देखत राम हँसे सुदामाँ कूं देखत राम हँसे । (टेर)
फाटी तो फुलडियां पांव उभाणे, चलतें चरण घसे ।। १
बालपणे का मित सुदामा, अब क्यों दूर बसे ।। २
कहा भावज ने भेट पठाई, ताँदुल तीन पसे ।।
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरां मोती लाल कसे ।। ४
कित गई प्रभु मोरो गउ अरु बछिया, द्वारों बिच हस्ती फसे ।। ५
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, सरणें तोरे बसे ।। ६

○

२३४–३ (क); (राम स. गु. पृ. २९२) ।
२३५–३ (क.) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२३६ : राग–मलार : ताल–कहरवा
(प्रेमानन्द)

देखी बरषा की सरसाई, मोरे पियाजी की मन में आई । (टेर)
नन्ही नन्ही बूँदन बरसन लाग्यो, दामिन दमकै झर लाई ।। १
स्याम घटा उमडी चहुं दिस से, बोलत मोर सुहाई ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आनँद मंगल गाई ।। ३

○

पद–२३७ : राग–बिहाग, सोरठ : ताल–धीमा तिताला
(विरह)

देखो सइयाँ हरि मन काठो कीयो । (टेर)
आवन कह गयो अजहुँ न आयो, करि-करि बचन गयो ।। १
खांन पांन सुध बुध सब बिसरचा, कैसे करि न जियो ।। २
बचन तुम्हारे तुम हि बिसारो, मन मेरो हरि लियो ।। ३
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, तुम बिन फटत हियो ।। ४

○

पद–२३८ : राग–देस : ताल–कहरवा
(प्रेम)

देरी अब माई म्हांको गिरधरलाल । (टेर)
प्यारे चरन की आन करत हूँ, और न लूँ मनि माल ।। १
नातो सगो परिवारो सारो, मने लगे ज्यों काल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनलाल की, छबि लखि भई निहाल ।। ३

○

२३६–१ (म.) ।
२३७–१ (उ.); (वं. पु. पृ. ५) ।
२३८ (ट); (स. मा. मी. ली. २) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२३९ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(भक्ति दृढ़ता)

धत्ताँ लग्यो हे माय, राम रंग धत्ताँ लग्यो । (टेर)
किण विध कहूँ कहण नहिं आवै, रह्यो[1] घुमाय घुमाय ।। १
गुरु प्रताप साधाँ री संगत, हरिजन मिलिया आय ।। २
किरपा[2] करो तो प्रभु ऐसी कीज्यो, दूजी नाँहि सुहाय ।। ३
राणाँजी विष रो प्यालो भेज्यो, म्हे सिर लियो चढ़ाय ।। ४
चरणामृत को नाम ज लीन्हो, पी गी प्रेम अघाय[3] ।। ५
पीवत ही अति चढ़ी खुमारी, रह गई कहत लुभाय ।। ६
जिन मीरां मतवारी कीन्ही, पूरब जनम के भाय ।। ७

○

पद–२४० : राग–आसावरी : ताल–कहरवा

(ज्ञान-प्राप्ति)

धन आज की घरी, सतसंग में परी । (टेर)
श्रीमद्भागोत श्रवण सुनी, रसना रटत हरी ।।
मन डूबत लीलासागर में, देही प्रीती धरी ।। २
गुरु संतन की सोहनि सूरति, उर बिचि आइ अरी ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, सरणै राखि हरी ।। ४

○

२३९–(उ. ट); (दीना. मं. मी. प. २४) (मी. ली. प. दूधू १०)
(देखो—'योतो रंग धत्ताँ लाग्यो हे माय')
1 पा.—'चढ्यो' ।
2 पा.—'कृपा करी मोही अपणाई, सब दुख दियो मिटाय
3 पा.—'बढ़ाय' ।
4 पा.—'अब थिर रह्यो न जाय' ।
२४०–१ (उ.ट.); (क.ब. ११) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२४१ : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(प्रेम जोगी संवाद)

धूतारा जोगी एका सूँ हँसि बोल । (टेर)
जगत विदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ।। १
अंग बिभूति गले मृगछाला, तू जन गुढियाँ खोल ।। २
बदन सरोज सदन की सोभा, ऊभी जोऊँ कपोल ।। ३
सेली नाद विभूति न वटवा, अजूं मुनी मुख खोल ।। ४
चढ़ती वैस नैंण अणियारे, तूँ घरि घरि मत डोल ।। ५
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, चेरि भई बिन मोल ।। ६

O

पद–२४२ : राग–झंझोटी : ताल–तिताला

(प्रेम)

नंद को बिहारी म्हारे हिवड़े वस्यो छै । (टेर)
कटि पर लाल काछनी काछे, हीरा मोती वालो मुकुट धरचो छे ।। १
गहि रह्यो डाल कदम की ठाडो, मोहन मो तन हेरि हरचो छे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निरखि दृगन में नीर भरचो छे ।। ३

O

पद–२४३ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरद विनय)

नंदजी के लाला ठाडी ब्रजबाला दरसन दीजिये । (टेर)
ब्रजबाला बिनती करे, सुनियो स्याम पुकार ।
बिन दरसन फीको लगै, सबही हार सिंगार ।। १
सुन्दर स्याम मनोहर मूरत, शोभा अधिक अपार ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, गल पुष्पन को हार ।। २

२४१–२ (म.) ।
२४२–१.(उ); (या०—प्रति सं. ३८६।४८)
२४३–१ (उ.); (पुजा. नाथू. पु. से) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शिव सनकादिक गन्धर्व गावै, कर रहे वेद पुकार ।
शेष सहसमुख रटत रात दिन, कोइयन पावे पार ।। ३
नाम अनन्त नहिं आवै, हो सब के करतार ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुमरे ही आधार ।। ४

○

पद–२४४ : राग–खमाच : ताल–तिताला
(बधाई और आनन्द)

नंदजी रे आज वधावनो छै । (टेर)
गहमह हुई रंग रावल मैं, निरखि नैना पावनो छै ।। १
भाभीजी म्हे थाँसूँ पूछाँ, आजि रो द्योस सुहावनो छै ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर जनमिया, हुवो मनोरथ भावनो छै ।। ३

○

पद–२४५ : राग–मल्हार : ताल–तिताला
(विरह)

नंद नंदन विलमाई, बदरा ने घेरी माई । (टेर)
इत घन गरजे उत घन गरजे, चमकत बिज्जु सवाई ।। १
उमड घुमड चहुँ दिस से आये, पवन चले पुरवाई ।। २
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल शब्द सुनाई ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चितलाई ।। ४

○

पद–२४६ : राग–आसावरी, भैरवी : ताल–तिताला
(अनन्य भक्ति)

नंद नंदन सूं मन मान्यौ मेरो, कहा करैगौ कोय री । (टेर)
अब तो चरणकमल रुचि बाढ़ी, जो भावै सोई होय री ।। १

२४४–२ (म.); (ब्रजनि. ग्रन्था. पृ. २३३) ।
२४५–१ (उ.) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पिता रसाय माय घर मारै, हँसै बटाऊ लोग री ।
अब तो जिय ऐसी बनि आई, विधना रची सोइ होय री ।। २
अरी जै मेरौ यह लोक जात है, वह परलोक जिन जाव री ।। ३
पिय अपने कूं तऊ न छांडूं, मिलूं निसान बजाय री ।। ४
बहुरि कहां यह तन धर पैहौं, बालम भये मुरार री ।
मीरां के प्रभु गिरधर के ऊपर, सरवस डारूं वार री ।। ५

○

पद–२४७ : राग–मांझ वा देश : ताल–तिताला

(भक्ति-दृढ़ता)

न भावै थारो देसड़लो (जी) रूड़ो रूड़ो[1] । (टेर)
हरि की भगति करै नहिं कोई, लोग[2] बसे सब कूड़ो ।। १
माँग और पाटी उतार धरूंगी, ना[3] पहिरूं कर चूड़ो[4] ।। २
मीरां हठीली कहे संतन सों, बर[5] पायो छै मैं पूरो ।। ३

○

पद–२४८ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(स्तुति)

नमो नमो तुलसी महारानी, नमो नमो हरि की पटरानी । (टेर)
जाके दरस परस अघ नासे, महिमा वेद पुराण बखानी ।। १
साखा पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति चरण कमल लपटानी ।। २
धन तुलसी पूरव तप कीन्हां, सालिगराम भई मनमानी ।। ३
छप्पन भोग धरे हरि आगे, बिन तुलसी प्रभु एक न मानी ।। ४

२४७–१ (उ.); (अ. सा. भा. १ पृ. १३५) ।
1 पा०—'लगे छै मन रूड़ो' ।
2 पा०—'राणाजी के देश भगति नहिं भावै' ।
3 पा०—'पाटी न पारूँ माँग नाँ सँवारूँ' ।
4 पा०—'नाँ बाँधूं सिर जूड़ो' ।
5 पा०—'मीराँ के प्रभु गिरधरनागर' ।
२४८–२ (म.); (मीराँबाई के भजन नं० १४) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धूप दीप नैवैद्य आरती, पुष्पन की बरषा बरषानी ।। ५
प्रेम प्रीति करि हरि बस कीन्हें, साँवरी सूरत हृदै समानी ।। ६
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, खोजत फिरें महा मुनि ज्ञानी ।। ७
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भक्ति दान दीजे महारानी ।। ८

○

पद–२४६ : राग–सोरठ : ताल–रूपक
(चेतावनी)

नहिं ऐसो जन्म बारम्बार ।
क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे, मानुषा अवतार । (टेर)
बढ़त पल पल घटत छिन छिन, चलत न लागे बार ।
बिरछ के ज्यों पात टूटें, लगे नहिं पुनि डार ।। १
भवसागर अति जोर कहिये, विषम ओखी धार ।
सुरत का नर बाँध बेड़ा, बेग उतरो पार ।। २
साधु सन्ता ते गहन्ता, चलत करत पुकार ।
दासी मीरां लाल गिरधर, जीवना दिन चार ।। ३

○

पव–२५० : राग–बागेश्वरी : ताल–तिताला
(लीला)

नहिं तेरी बरजोरी राधे, नहिं तेरी बरजोरी । (टेर)
जमुना के नीराँ तीराँ धेनु चरावै, छीनि लिई बंसी तोरी ।। १
सब गोपन हस खेलन बैठे, तुम रहत करि चोरी ।। २
हम नहिं चलें तुमारे घरन को, तुम हो बहुत लबारी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारी ।। ४

○

२४९–३ (म.)
२५०–(का.।उ. २।३३९) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२५१ राग–खमाच वा सोरठ वा काफी वा माड : ताल–कहरवा
(अनन्य भक्ति रहस्य)

नहीं जाऊँ सासरै माई, म्हाँने मिलिया छै सिरजणहार । (टेर)
सासू हरि सुमरना रै सुसरो परम संतोष,
जेठ जुगांरो राजवी रै पीव रह्यौ निरदोष ।। १
देवर कै दोइ डीकरी रै दोन्यौं ही राजकुमारि,
एकैं सब जग मोहियौ रै एक रही ब्रह्मचारि ।। २
लख चौरासी चूड़लो रै बाला पहर्यो पियाज़ीरै काज,
बाँह पकड़ि हरि लैचल्या मोहि दीनों छै अविचल राज ।। ३
साधाँ मैं म्हारो सासरो रै पीया को बैकुंठाँ में बास,
फेरि न कल मैं आवस्याँजी यूँ गावै छै मीरां दास ।। ४

○

पद–२५२ : राग–विलावल : ताल–कहरवा
(महिमा)

नागरनंदा रे मुकुट पर वारी जाऊं, नागरनंदा । (टेर)
बनस्पती में तुलसी बड़ी है, नदियन में श्रीगंगा ।। १
सब देवन में शिवजी बड़े हैं, तारन में बड़ा चंदा ।। २
सब भक्त में भरथरी बड़े हैं, शरण राखो गोविन्दा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित फंदा ।। ४

○

पद–२५३ : राग–काफी : ताल–कहरवा
(बिरह)

नातो हरिनाम को मोसूँ तनक न तोड्यो जाइ । (टेर)

२५१–१ (उ.ट.); (क. ब. ८) ।
२५२– (का० ३।१३२) ।
नोट–ऐसा पद 'चन्द्रसखी' का वृ० रा० र० में 'मुकुट पर वारी जाऊं, नागरनंदा' इस टेर से है, पृ. २०४ । अंतरों में थोड़ा अंतर है । सं०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीया कांज पीरी पडी री, लोग कहैं पँडु रोग ।
छानै लाँघन मैं किया री, सजनी राम मिलन के जोग ।। १
खिण आँगण खिण डागलै रे, (बाला) खिण खिण ऊभी होइ ।
घाइल ज्यूं घूमत फिरूँ री, म्हारो मरम न जाँणैं कोइ ।। २
बाबल बैद बुलाइया, म्हारी पकड दिखाई बाँहिं ।
मूरख बैद न जानई, म्हारे करक कलेजा माँहिं ।। ३
जा जा बैद घर आपणें रे, म्हारो तू नाम न लेहि ।
मैं तो दाधी बिरहकी रे, तू काँई देखै देहि ।। ४
रे रे पापी पपीहरा रे, पिया को नाम न लेहि ।
कोइक बिरहनि साम्हलै रे, तो पीव कारण जीव देहि ।। ५
काढ़ि करेजो मैं धरूँ रे, उड़ि कागा (कौवा) ले जाइ ।
ज्यांँ देसाँ म्हारो पी बसै रे, वै देखैं तू खाइ ।। ६
पीव मिल्याँ जीऊँ खरी रे, नाँतर तजिहूँ देह ।
दासी मीराँ राम राती, हरि बिन किसो सनेह ।। ७

○

पद–२५४ : राग–सोरठ हुजाज
(विनय)

नाथ तुम जानत हो सब घट की, मीरां भक्ति करै सटपट की । (टेर)
राम मंदिर में मीरांजी नाँचै, ताल बजावै और चिटकी ।। १
बिषरा पियाला राणाँजी भेज्या,………………।। २
कर चरणामत पीगई मीरां, कर अमरत की गुटकी ।। ३

○

पद–२५५ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(विनय)

निजर भर न्हालो, नाथजी, हूं तो थारै चरणांरी दासी । (टेर)

२५३–१ (उ.); (क. ब. १०) ।
२५४–३ (क.); (मी. प. जमा राम.) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मैं अबला तुम सबला स्वामी, नहीं मिलण कौ टालौ रे।
फूँक फूँक पग धरूँ धरणि पर, मती लगाज्यौ कोई कालौ रे ।। १
आप तो जाइ द्वारिका छाये, हमसूँ दे गया टालौ रे।
बालपणे की बाल सनेही, प्रीतिबचन प्रतिपालौ रे ।। २
च्यारि महीनाँ आयौ सीयालो, च्यार महीना ऊन्हालौ रे।
कृपा कर म्हाँनैं दरसण दीज्यौ, अब ऋतु आयौ बरसालौ रे ।। ३
सब जग म्हारी निन्दा करत है, कीन्हूँ मूँढौ कालौ रे।
सरण तुम्हारी लई साँवरा, तुम भी दियो छै म्हाँसूं टालौ रे ।। ४
म्हारा घर में भयो अँधारौ, आँण करौ उजियालौ रे।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, विरह अगनि मति जालौ रे ।। ५

○

पद–२५६ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(रूप-वर्णन)

निपट बंकट छवि नैना अटके। (टेर)
देखत रूप मदनमोहन को, पियत पियूष न मटके ।। १
वारिज भवाँ अलक टेढी मानो, अति सुगंध रस अटके ।। २
टेढी कटि टेढी कर मुरली, टेढी पाग लर लटके ।। ३
मीरां प्रभु के रूप लुभानी, गिरिधरनागर नटके ।। ४

○

पद–२५७ : राग–नट : ताल–तिताला

(अटल विश्वास)

निपट बिकट ठौर अटकै री, नैना मेरे (टेर)
सुख संपति के सब कोई साथी, बिपति परे सब सटके ।। १

२५५–१ (उ.); (राम. स० गु. से)।
२५६–१ (उ); (बृ. रा. र. पृ. ५६०)।
२५७–(ब्रजनिधि ग्रन्थावली पृ. २२९)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तजि खगराज छुड़ायौ हाथी, टेर सुने नाहीं कहुँ अटके ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, को तजि मूरख अननहि भटके ।। ३

○

पद–२५८ : राग–बिहाग : ताल–तिताला
(विरह)

निरमोहीड़ो नेह न जोड़ै[1] छै (टेर)
यो मन मस्त कह्यो नहीं मानै, अमृत में विष घोरै छै ।। १
आप तो जाइ द्वारिका में छाए, हमकूं बिरहा झोरै छै ।। २
कुबज्या दासी कंसराइ की, आप सरब सुख लोरै छै ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, लागी प्रीति क्यूँ तोड़ै[2] छै ।। ४

○

पद–२५९ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा
(उपदेश)

नित न्हाने से हरी मिलै तो, जल जंतु होई । (टेर)
फल मूल खाके हरी मिलै तो, बाँदर-बाँदरा होई ।। १
तिरन भखन से हरी मिलै तो, बहुत मृगी अजा ।
स्नेह छोड़के हरी मिलै तो, वहुत हैं खोजा ।। २
दूध पीके हरी मिलै तो, बहुत वत्स बाला ।
मीरां कहै बिन प्रेम के, नहीं मिलै नँदलाला ।। ३

○

पद–२६० : राग–भैरवी : ताल–तिताला
(प्रेम-दृढ़ता)

निन्दा म्हारी भलाई करोनै सोनैं काट न लागै । (टेर)

२५८–पा०–1 जोरै । 2 तोरै ।
२५९–३ (क); (बृं. पु. पृ. ४३) ।

T. CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोग लियो जग जातौ देख्यौ, हरि भजवाकै काजै ।
जो कोई करणीं में चूक पड़ै तो, सतगुरु म्हारा लाजै ।। १
धन रे लोका थांरी करणां, कीड़ीरौ कुंजर बणायौ ।
अणदीठी अण सांमले रे, बद बद बाद उठायौ ।। २
कुल कूं छाँडि कड़ूबो[1] छाँड्यौ, छांडी ममता माई ।
और दुनियां कौ दावौ छोड्यौ, छोडी लोभ बड़ाई ।। ३
पर गल दोई में पलो बिछायौ, मन भावै ज्यूं कहीयौ ।
यो जस मीरां बाई गावैं, ज्यूँ कहियौ ज्यौं सहियौ ।। ४

○

पद–२६१ : राग–बागेश्वरी : ताल–तिताला

(विरह)

नींद नहिं आवैं जी सारी रात । (टेर)
करवट लेकर सेज टटोलू (रूँ) पिया नहीं मोरे साथ ।। १
सगली रैन मोये तड़फत बीती, सोच सोच जिया जात ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आन भयो परभात ।। ३

○

पद–२६२ : राग–खमाच : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

नीदड़ली नहिं आवे सारी रात, किस विध होइ परभात । (टेर)
चमक उठी सुपने सुख भूली, चन्द्रकला न सुहात ।। १
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कब रे मिले दीनानाथ ।। २

२६०–१ (उ.); (राम स. गु पृ.) ।
1 कड़ूबो = कबीलो ।
२६१–१ (उ.); (फु. प.) ।
२६२–१ (उ.) ।
1 पा०–पाल ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भई हूं दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हाँरी बात ।। ३
मीरां कहे बीती सोइ जाणे, मरण जीवण उन हात ।। ४

○

पद–२६३ : राग–जैजैवन्ती : ताल-धमार
(विनय)

नेहा समद बिच नाव लगी है, बाल[1] न लगत बही जात अँकेली । (टेर)
लाज को लंगर छूट गयो है, बही जात बिन दाम की चेरी ।
मलहन कर से छाँड दई है, आस बड़ी गोपाल ज्यो तेरी ।। १
अब के पार लगावो नांतर, लोग हँसेंगे बजा के हतेरी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मेरी सुध लीज्यो प्रभु आन सवेरी ।। २

○

पद–२६४ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला
(विरह)

नैणां मोरे बाण पड़ी, साँई मोहि दरस दिखाई । (टेर)
चित चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।। १
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ, जीवण मूर जड़ी ।। २
कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूं, अपणे भवन खड़ी ।। ३
मीरां प्रभु के हात विकानी, लोग कहे बिगड़ी ।। ४

○

पद–२६५ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला
(प्रेम)

नणांरी हो पड़ गई याही वांण । (टेर)
वेर[1] वेर निरखूँ मुख सोभा, छूट गई कुल[2] कांण ।। १

२६४–१ (उ.) ।
२६५–१ (उ.); (दीना. मं. मी. प. ९) (मी. ली. प. दूधू ४) ।
1 पा०–'नैंक निहारें' । 2 पा०–'कुलकी' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कोई भलां कहो कोई बुरां कहो, मैं सिर लीनी तांण ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, पूरवली पिछांण[3] ।। ३

○

पद–२६६ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(रहस्य)

नैनन बनज बसाऊं री, जो मैं साहिब पाऊँ री । (टेर)
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरती पलक न नाँऊँ री ।। १
त्रिकुटी महल में बना है झरोका, तहां से झाँकी लगाऊँ री ।। २
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ री ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बार बार बलि जाऊँ री ।। ४

○

पद–२६७ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(दर्शन-लालसा)

नैनाँ अटके रूपसों, पल पल नहिं लागे ।
निसवासर यों ही रहै, सोये नहिं जागे ।। (टेर)
असन बसन भूषण तजे, पिय के अनुरागे ।
मदन मूरत हिरदै बसी, अलबेलोसी पागे ।। १
मीरां प्रभु गिरधर मिले, भल संत समाजे ।
छटी छार तिन पर परो, जे या प्रणतें भाजे[1] ।। २

○

पद–२६८ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरह)

नैनां लोभी रे बहुरि सके नहिं आय । (टेर)

२६५–3 पाठान्तर— 'पहिचांण' ।
२६६–१ (उ.) ।
२६७–(या०–प्रति सं. ६९८।४५ पृ. ७५ से) ।
पा०–1 'छटी छार तिनकी परों जे या प्राण ते भाजे' ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहे ललचाय ।। १
मैं ठाढ़ी गृह आपने रे, मोहन निकसे आय ।
सारंग ओट तजे कुल अंकुस, बदन दिये मुसकाय ।। २
लोक कुटंबी बरज बरज ही, बतियाँ कहत बनाय ।
चंचल चपल अटक नहिं मानत, पर हत गये बिकाय ।। ३
भली कहो कोइ बुरी कहो मैं, सब लई सीस चढ़ाय ।
मीरां कहे प्रभु गिरधर के बिन, पल भर रह्यो न जाय ।। ४

○

पद–२६९ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी
(विरह-विनय)

नैया मोरी हरि तुम ही खेवैया, तुम्हरी कृपा ते पार लगैया । (टेर)
गहरी नदिया नाव पुराणी, पार करो बलभद्र के भैया ।। १
अजामेल गज गणिका तारी, अहल्या द्रोपदी लाज रखैया ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, वार बार तुमरे बलि गइया ।। ३

○

पद–२७० : राग–बिहाग : ताल–धीमा तिताला
(विरह-विनय)

प्रभुजी थे कहाँ गया नेहड़ो लगाय । (टेर)
छोड़ गया विश्वास सँगाती, प्रेमकी बाती बराय ।। १
विरह समदमें छोड गया छो, नेहकि नाव चलाय ।। २
मीरां के प्रभु कबरे मिलोगे, तुम बिना रहा न जाय ।। ३

○

२६८–१ (उ.) ।
६६९–२ (म.) ।
२७०–१ (उ.); (बं. पु. पृ. ६) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२७१ : राग–भूपाली : ताल–तिताला
(उपालम्भ)

प्रभू तुम कैसे दीनदयाल, कैसे दीनदयाल। (टेर)
मथुरा नगरीमें राज करत है, बैठे नंदके लाल ।। १
भकतनके दुख जानत नांहीं, षेलैं गोपी गवाल ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, भकतनके प्रतिपाल ।। ३

○

पद–२७२ : राग–सोरठ : ताल–रूपक
(विरह)

प्रभु बिन ना सरै माई।
मेरा प्राण निकस्या जात री, प्रभु बिन ना सरै माई। (टेर)
मीन दादुर बसत जलमें, जल से उपजाई।
तनक जल से बाहर कीना, तुरत (ही) मर जाई ।। १
काठ लकरी वन परी, काठ घुन खाई।
ले अगन प्रभु डार आये, भसम हो जाई ।। २
वन वन ढूंढ़त मैं फिरी, आली सुधि नहिं पाई।
एक बेर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई ।। ३
पात ज्यों पीरी परी अरु, विपत तन छाई।
दास मीरां लाल गिरधर, मिल्यां सुख छाई ।। ४

○

पद–२७३
(विरह-विनय)

प्रीत मत तोड़ो गिरधरलाल। (टेर)
तुम ही साहूकार तुम ही वौहोरा, ब्याज मूल मत जोड़ो ।। १

२७१–२ (म.)।
२७२–२ (म.)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सांँवरियाकै कारणै मैंने बाग लगायो, काची कलियांँ मत तोड़ो ।। २
सांँवरियाकै कारणै मैं सेज बिछाई, सूनी सेज मत छोड़ो ।। ३
मीरांके प्रभु हरि अबिनासी, इमरतमें बिष मत घोरो ।। ४

○

पद–२७४ : राग–भोपाली : ताल–कहरवा
(प्रेम)

प्रेमनी प्रेमनी प्रेमनी रे, मने लागी कटारी प्रेमनी रे । (टेर)
जल जमुना ना भरवा गया ताँ, हती गागर माथे हेमनी रे ।। १
काँचे ते ताँतणे हरिजी ये बाँधी, जेम खेचे तेम तेमनी रे ।। २
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, साँवली सुरत शुभ एमनी रे ।। ३

○

पद–२७५ : राग–मीरां की मल्हार : ताल–चोताला
(शृंगार-वर्णन)

प्यारीके चिहुर[1] विथुरे मानो मानो धाराधर[2] की श्याम घटा उनई,
ता मध्य पहुप छटि परे तैसें बड़ी बड़ी बूंदें । (टेर)
लाल सारि पहिरै हरी कोर मधायनिसी[3] घूँघट करि चली,
पीठ पाछेतैं तरकै कंचुकी तनीकी फूँदैं ।। १
महँदीसों आरक्त नख बीरी[4] बहोरी ऐंसी पावस वनिता मिली,
मीरां लाल गिरधरको लें कामप्रीति काम हार गूँदैं ।। २

○

२७३–३ (क.); (राम स. पृ.) ।
२७४–१ (उ.); (काव्यदोहन गु.) ।
२७५–१(उ.) । (यां०–ह. लि. पदमुक्तावलि से)
1 'चिकुर-वाल' । 2 'मेघ' । 3 'मधयामिनीसी' । 4 'वीरवहूटी' ।
नोट—इस पद के पाठ में कई शब्द स्पष्ट नहीं । इसी से अर्थ और भाव समझने में कठिनता है—स०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२७६ : राग–कल्याण : ताल–कहरवा

(प्रेम)

प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम, बाँसुरी बजावत गावत कल्यान । (टेर)
कबकी मैं ठाडी भैयाँ सुधबुध भूल गैयाँ, छोने जैसे जादू डारा भूले मोसे काम ।। १
जब धुन कान पैया देह की न सुध रहिया, तन मन हर लीनो बिरहो वाले कान ।। २
मीरांबाई प्रेम पाया गिरिधरलाल ध्याया, देहसों विदेह भैया लागो पग ध्यान ।। ३

○

पद–२७७ : राग–बिहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

प्यारी हट मांड्यो छै जी मांझल रात । (टेर)
कबकी ठाढ़ी अरज करत हूं, होइ जासी परभात ।। १
तलफत तलफत वौहो दिन बीते, कबहुँ न बूझी वात ।। २
जब के गये म्हारी सुधि नहीं लीनी, तुम बिन फीको (म्हारो) गात ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, कर मींडत पछितात ।। ४

○

पद–२७८ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

प्यारे दर्शन दीजो आय, तुम बिन रह्यो न जाय । (टेर)
जल बिन कमल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी ।
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन, विरह कलेजा खाय ।। १

२७६–२ (म.) ।
२७७–२ (म.) ।
२७८–१ (उ.); (बं. पु पृ. १९) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दिवस न भूख नींद नहिं रैनां, मुख से कथन न आवै बैनां।
कहा करूं कुछ कहत न आवै, मिल कर तपत बुझाय ।। २
क्यों तरसाओ अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी।
मीरां दासी जनम जनम की, परी तुमारे पांय ।। ३

○

पद–२७९ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(प्रेम)

पगे घूघरू बाँध मीरां नाची रे। (टेर)
मैं सपने तो नारायणकी, हो गई आपही दासी रे ।। १
विषका प्याला राणाजीने भेज्या, पीवत मीरां हाँसी रे ।। २
लोक कहे मीरां भई बावरी, बाप कहे कुलनासी रे ।। ३
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणांकी दासी रे ।। ४

○

पद–२८० : राग–जोनपुरी, टोडी : ताल–तिताला

(मान)

पतियाँनें कूण पतीजे, आणि[1] खबरि हरि लीजे। (टेर)
झूंठी पतियाँ लिख लिख भेजे, क्या लीजे क्या दीजे ।। १
ऐसा है कोई बांच सुणावें, मैं बांचूं तो[2] भीजे ।। ३
मीरांके प्रभु हरि अबिनासी, चरण कँवल चित दीजे ।। ३

○

२७९–२ (म.)।
२८०–१ (उ); (राम स. गु. पृ. ३२४)।
1 पा०–'म्हारो अंसुवां सूं अँचलो भीजे'।
2 पा०–'मैं बांचूं तन छीजे'।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२८१ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

पतियाँ मैं कैसे लिखूँ लिख्यौये[1] न जाइ । (टेर)
बात कहूँ मोहि बात न आवै, नैन रह्या (छै) झर लाइ ।। १
कलम भरत मेरो कर कंपत है, हिरदो रह्यो घवराइ ।। २
किस विध चरणकमल मैं गहस्यूँ, सबही अग थरराइ ।। ३
मीरांके प्रभु हरि अविनासी, चरण रहूं लपटाइ ।। ४

○

पद–२८२ : राग–देश मल्हार : ताल–झूमरा

(विरह)

पपीया रे पीवकी बानी न बोलि ।
सुनि पावेगी बिरहनि रालैली पाँखाँ मरोड़ि । (टेर)
चोंच कटाऊँ पपीया रे, ऊपर कालो रे लोंण ।
पीव हमारे मैं पीवकी रे, तू पीव कहै सो कौण ।। १
थारा सबद सुहावणां रे, जै पीव मिलावै आज ।
चोंच मँढाऊँ थारी सोहनी, तू म्हारै सिरताज[1] ।। २
पीतमकूँ पतियाँ लिखूँ, कागा तू ले जाइ ।
पीतमकूँ तू यों जाइ कहियौ, थारी विरहनि अन्न[2] न खाइ ।। ३
तुम मति जानो पीतमा हो, तुम बिछड़्यां मोहि चैंन ।
मोहि चैंन जब होइगो, भरि भरि देखूँ नैंन ।। ४
मीरां दासी वारणै हो, पिव पिव करत विहाइ ।
बेगि मिलौ प्रभु अन्तरजामी, तुम बिन रह्यो न जाइ ।। ५

○

२८१–१ (उ.); (क. ब. १४) (बं. पु. पृ. ८) ।
1 पा०–'लिखिहि न जाइ' ।
२८२–१ (उ. ट.); (क. ब. ७) ।
1 पा०–'राज' । 2 पा०–'धान' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२८३ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

परम सनेही रामकी निति ओलूँ रे आवै । (टेर)
राम हमारे हम है रामके, हरि बिन कछु न सुहावै ।। १
आँवण कह गये अजहूं न आये, जिवड़ो अति अकुलावै ।। २
तुम दरसणकी आस रमइया, कब हरि दरस दिखावै ।। ३
चरण कमल की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुख पावै ।
मीरांकूँ प्रभु दरसण दीज्यो, आनँद वरण्यूँ न जावै ।। ४

○

पद–२८४ : राग–वागीश्वरी : ताल–तिताला

(विरह)

पलक न लागै मेरी स्याम बिन । (टेर)
हरि बिन मथुरा ऐसी लागै, शशि बिन रैन अँधेरी ।। १
पात पात बृन्दाबन ढूंढ्यो, कुंज कुंज ब्रजके री ।। २
ऊँचे खेड़ै मथुरा नगरी, तलै बहै जमुना गहरी ।। ३
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणन की चेरी ।। ४

○

पद–२८५ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

पाछो रथ फेरो द्वारका-हारा (टेर)
सूरज तलफै चंदा तलफै, तलफै नौलख तारा ।। १
गऊ भी तलफै बच्छा भी तलफै, तलफै गुवाल बिचारा ।। २
जोगी भी तलफै जंगम तलफै, तलफै तपसी सारा ।। ३

२८३–१ (उ ट.) ।
२८४–२ (म.); (फु. १८) ।
२८५–२ (म.); (राम. स. गु.) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गंगा भी तलफै जमुना भी तलफै, तलफै समदर खारा ।। ४
मीरांके प्रभु हरि अबिनासी, तुम जीते हम हारा ।। ५

○

पद–२८६ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी

(प्रेम-रहस्य)

पानीमें मीन प्यासी, मोहे सुन सुन आवत हाँसी । (टेर)
आत्मज्ञान बिन नर भटकत है, कहां मथुरा कहां कहां कासी ।। १
भवसागर सब हार भरा है, ढूंढत फिरत उदासी ।। २
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, सहज मिले अविनासी ।। ३

○

पद–२८७ : राग–आसा, माड : ताल–कहरवा

(चरित-प्रेम)

पायो जी मैं तो राम रतन धन पायो । (टेर)
वस्तु अमोलक ही मेरे सतगुर, किरपा कर अपनायो ।। १
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो ।। २
खरचै नहि कोई चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो ।। ३
सतकी नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तर आयो ।। ४
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, हरष हरष जस गायो ।। ५

○

पद–२८८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(लीला)

पायो म्हारो ईडूंणीको चोर, सुणज्यो ब्रजके बासी लोग । (टेर)

२८६–२(म) ।
२८७–१ (उ.ट.) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तू मत जाणे ईंडी घास फूसकी, ईंडी (म्हारी) सारी मथुरा को मोल ।। १
ए छै बड़े बड़े हीरा मोती जड़ियाजी, बिच (बिच) लाल लाख किरोड़ ।। २
मीरांके प्रभु गिरधरनागरजी, ईंडी लाये नागर नंद किशोर ।। ३

○

पद–२८६ : राग–सोरठ, देश : ताल–कहरवा

(विनय)

पिया अब घर आज्यो मोरे, तुम मोरे हूं तोरे । (टेर)
मैं जन तेरा पंथ निहारूँ मारग चितवत तोरे ।। १
अवध वदीती अजहुं न आये, दुतियनसूं नेह जोरे ।। २
मीरां कहे प्रभु कब रे मिलोगे, दर्शन बिन दिन दोरे ।। ३

○

पद–२६० : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

पिया इतनी विनती सुन सुन मोरी, कोई कहियो रे जाय । (टेर)
औरनसूं रस बतियां करत हो, हमसे रहे चित चोरी ।। १
तुम बिन मेरे और न कोई, मैं सरणागत तोरी ।। २
आवन कह गये अजहुं न आये, दिवस रहे अब थोरी ।। ३
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, अरज करै कर जोरी ।। ४

○

पद–२६१ : राग–शंकरा : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

पियाकी खुमार मैं तो बावरी भई ये माय । (टेर)
[1]अमल न खायो आयो मोकूं, यो इचरज देखो भार ।। १

२८८–२ (म.); (पुजा. नाथू. पु. से) ।
२८९–१ (उ.); (बं. पु. पृ. १२) ।
२९०–१ (उ.); (बं. पु. पृ. ९) ।
२९१–१ (दीना. मं. मी. प., ३४) 1 पा.–'अपार' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

या तन की मैं बीणा बजाऊँ, रग रग बांधूं तार ।। २
समझ बूझ मिल जाय दुलारो, जद रीझै रिझवार ।। ३

○

पद–२९२ : राग–भैरव : ताल–कहरवा
(विरद)

पिया तेरे नाम लुभाणी हो ।
नाम लेत तिरता सुण्यां, जैसे पाहण पाणी हो । (टेर)
सुकरत कोई ना कियो, बहु करम कुमाणी हो ।
गणिका कीर पढ़ावतां, बैकुण्ठ बसाणी हो[1] ।। १
अरध नाम कुंजर लियो, वाकी अवध घटाणी हो ।
गरुड छांडि हरि धाइयां, पशु जूण मिटाणी हो ।। २
अजामेल से ऊधरे, जम त्रास नसाणी हो ।
पुत्र हेतु पदवी दई, जग सारे जाणी हो ।। ३
नाम महातम गुरु दियो, परतीत पिछाणी हो ।
मीरां दासी रावली, अपणी कर जाणी हो ।। ४

○

पद–२९३ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला
(विरह विनय)

पिया तैं कहां गयौ नेहरा लगाय । (टेर)
छांडि गयौ अब कहां विसासी, प्रेमीकी बाती बराय ।। १
विरह समुद्र[1] में छांडि गयौ पिव, नेहकी नाव चलाय ।। २
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, तुम बिनु रह्यो न जाय ।। ३

○

२९२–१ (उ.); 1 पा०–'सोही वेद बखाणी हो' ।
२९३–१ (उ.); 1 'समद'-लय के लिये उपयुक्त ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२६४ : राग–मालकोस : ताल–तिताला
(विरह)

पिया विन रह्यो न जाइ । (टेर)
तन मन मेरो पिया पर वारूं, बार बार बलि जाइ ।। १
निस दिन जोऊँ बाट पियाकी, कब र (रे) मिलोगे आइ ।। २
मीरांके प्रभु आस तुमारी, लीज्यौ कंठ लगाइ ।। ३

○

पद–२६५ : राग–आसावरी : ताल–धीमा तिताला
(चरित-विरह)

पिया विन सूनूं सारो[1] देस, जतन करो हे आली हे । (टेर)
है कोई ऐसा पिया मिलावै, तन मन धन करूं भेट ।। १
तेरे कारण बन बन डोलूं, कर जोगिन को भेष ।। २
अवधि विदीती अजहुं न आये, पीरे पड़ गये केस ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ध्यावैं शेष महेस[2] ।। २

○

पद–२६६ : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा
(विनय)

पिया म्हारै नैनां आगै रहज्यो जी । (टेर)
नैनां आगै रहजो म्हाने, भूल मत जाज्यो जी ।। १
भोसागर में बही जात हूं, वेग म्हारी सुध लीज्यो जी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो जी ।। ३

○

२६४–२ (म.) ।
२६५ 1 पा.–'म्हारो देस' ।
2. पा०–'मीरां के प्रभु हरि अबिनासी तजि दियो नगर नरेस ।
२६६–२ (मं.); (बं. पु. पृ. २७)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–२९७ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(बारहमासिया विरह)

पिया मोहि दरसण दीजै हो।
बेर बेर मैं टेरत टेरत हूं, अहे कृपा (किरपा) कीजै हो। (टेर)
जेठ महीने जल बिना, पंछी दुख होई हो।
मोर असाढ़ा कुरलहे, घन चात्रक सोई हो।। १
सावण में झड़ लागियौ, सखि तीजाँ खेलै हो।
भादरवै नदियाँ बहै, दूरी जिन मेलै हो।। २
सीप स्वाति ही झेलती, आसोजां सोई हो।
देव काती में पूजहे, मेरे तुम होई हो।। ३
मंगसर ठंढ बहोत पड़ै, मोहि बेगि सम्हालो हो।
पोस महीं पाला घणां, अबही तुम न्हालो हो।। ४
माह महीं बसंत पंचमी, फागां सब गावै हो।
फागुण फागां खेल हैं, वणराइ जरावै हो।। ५
चैत चित्त में ऊपजी, दरसण तुम दीजै हो।
वैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो।। ६
काग उडावत दिन गया, बूझूँ पिंडत जोसी हो।
मीरां बिरहणि व्याकुली, दरसण कब होसी हो।। ७

○

पद–२९८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(विरह)

पिये मोहि आरत तेरी हो।
आरत तेरे नामकी, मोहि साँझ सवेरी हो। (टेर)
या तनके दिवला करूँ, मनसा करूँ बाती हो।
तेल जलाऊँ प्रेमका, बालूँ दिनराती हो।। १

२९७–२ (म.)
२९८–१ (उ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पटिया पारूँ ज्ञानकी, मन माँग सँवारूँ हो ।
पिया[1] तेरे कारणै धन जोवन वारूँ हो ।। २
सेजड़िया बहुरंगिया, बहु फूल बिछाया हो ।
रैन[2] गई तारा गिनत, प्रभु अजहुं न आया हो ।। ३
आया सावन भादवा, वरसा ऋतु आई हो ।
मेहा घटा[3] घन घेरि, नैनन झर लाई हो ।। ४
मात-पिता तुमको दियो, तुमही भल गैलो हो ।
तुम तजि और भरतारको, मन मैं नहिं आनों हो ।। ५
तुमहो[4] पूरे साँइयाँ, पूरा सुख दीजे हो ।
मीरां व्याकुल बिरहनी, अपनी कर लीजे हो ।। ६

○

पद–२९९ : राग–मांड वा मारू : ताल–दादरा

(चेतावनी)

पिरथिवी मायाजाल मैं पड़ी ।
तूं तो समझि सुहागण सुरता नारि पलक मेरी रामसूं लगी । (टेर)
लगती लहँगो पहरि सुहागण, बीतौ जाइ विव्हार ।
धन जोबन दिन च्यार का, जात न लागै बार ।। १
रामनाम को चुड़लो पहरौं, सुमरण काजल सार ।
माला ल्यौ हरिनांव की, उतरि चलौ पैली पार ।। २
ऐसा बर कौं काई बराँजी, जनमत ही मर जाय ।
बर बरस्यां म्हारो साँवरोजी, अमर चूड़ा होइ जाय ।। ३
जनमैं मरैं करैं घर केता, बिष राता नरनारि ।
मीरां राती रामसूँ जी, साँवरियो भरतार ।। ४

○

२९८–(उ.); 1. पा०–'तो पर मेरा सांइयां' । 2. पा०–'रैन गई मग जोवतां' । 3. पा०–'बीज झलाझल हो रही' । 4. पा०–'तुम पुरातम पूरवा' ।
२९९–३ (क.); (राम स. गु. पृ. २५७) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३०० : राग–काफी : ताल–दीपचन्दी

(रहस्यवाद)

फागुन के दिन चार रे, होरी खेल मना रे। (टेर)
बिन करताल पखावज बाजै, अनहद की झनकार रे ।। १
बिन सुर राग छतीसूं गावे, रोम रोम रंग सार रे ।। २
शील सन्तोष की केसर घोली, प्रेम-प्रीत पिचकार रे ।। ३
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपार रे ।। ४
घटके सब पट खोल दिये हैं, लोकलाज सब डार रे ।। ५
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहार रे ।। ७

○

पद–३०१ राग–खमाच : ताल–कहरवा

(विनय)

व्रज में आवोलाजी व्रजवासी, रामाँ थां बिन भौमि उदासी। (टेर)
बृन्दावन थारी सूखण लागी, कुञ्ज कुञ्ज कुमलासी।
घन नख मुख मूर नही हैं, सखियाँ धर्म निभासी ।। १
जन्मभौमि मथुरा की छोड़ी, अब हुये द्वारिका बासी।
सीतल जल जमुना को छोड्यो, अब खारो कैयाँ भासी ।। २
बलदाऊ के भैया किरपा कीज्यो, जन्म जन्म की (मैं) दासी।
किरपा कीज्यो सुध मोरी लीज्यो, नाहि करो लोग में हाँसी ।। ३
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल की छबि खासी।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काटो जन्म की फाँसी ।। ४

○

३००–१ (उ); (बं. पु. पृ. ३३)।
३०१–२ (म.); (पुजा. नाथू पु. से)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद ३०२ : राग–प्रभाती : ताल–कहरवा

(प्रेम-प्रवाह)

बंसी बजावै नित जमुना तट आवै । (टेर)
हों जमुना जल भरन जात ही, चित दे चित्त चुरावै ।। १
भोर गई वहँ बोरें सजनी, बावरी-सी जाँनो मोहि बोरावै ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ठग पैं कौन ठगावै ।। ३

○

पद–३०३ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरह विनय)

बंसी वारा आयो म्हारे देस, थारी साँवली सूरत बाली बेस । (टेर)
आऊँ आऊँ कर गया साँवरा, कर गया कोल अनेक ।। १
गिणताँ गिणताँ घिस गई उँगली, घिस गई उँगलीं की रेख ।। २
मैं बैरागण आद की, थारे म्हारे कद को सँदेस ।। ३
विन पाणी विन सावण साँवरा, हुई गई धुई सफेद ।। ४
जोगण हुई जंगल सब हेरूँ, तेरा नाम न पाया भेद ।। ५
तेरी सुरत कै कारणै, धर लिया भगवाँ भेस ।। ६
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, घूँघर वाला केस ।। ७
मीरां के प्रभु गिरधर मिलि गये, दूना बढ़ा सनेस ।। ८

○

पद–३०४ : राग–झँझोटी : ताल–श्रद्धा

(विनय)

बंसी वारा हो कान्हा मोरी रे गगरी उतार ।
गगरी उतार मोरो तिलक संभार । (टेर)
जमुना के नीरे तीरे बरसैलो मेह, छोटे से कन्हैयाजी से लाग्यो म्हारो नेह ।। १

३०२–१ (उ.); ('रागपद-संग्रह' से)
३०३–१ (उ.) ।

T.	CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बृन्दावन में गउएं चरावै, तोड़ लियो मोरे गरवा को हार ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मैं तो तेरे गई बलिहार ।। ३

○

पद–३०५ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(प्रेम)

वंसीवारे की चितवन सालति है । (टेर)
मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल, ता पर कलंगी हालति है ।। १
मैं तो छकी तुमरी छबि ऊपर, जो न छकै तेहि नाल[लान] ति है ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल चित लागति है ।। ३

○

पद–३०६ : राग–कान्हड़ो : ताल–तिताला

(विरह)

बड़ी बड़ी अँखियन वारो साँवरो, मो तन हेरो हँसके री । (टेर)
मैं जमुनाजल भरन जात ही, सिर पै गागर लसके री[1] ।
सुन्दर स्याम सलोनी मूरत, मो हियरे गई बसके री ।। १
जंतर मंतर लिख के लावै, औषद लावै घसके री ।
जो कोई लावै स्याम वैद को, तो उठ बोलूं हँस के री ।। २
भृकुटी कमान बान वाके लोचन, मारत है तक कस के री ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कैसे रहूं घर बस के री ।। ३

○

पद–३०७ : राग–कामोद : ताल–कहरवा

(चरित)

बड़े घर ताली लागी रे, म्हारा मन री उणारथ भागी रे (टेर)

३०४–२ (म.); (या०—सं० रा० क० से) ।
३०५–२ (म.) ।
३०६–१ (उ.); (स. मा. मी. ली.) ।
1 लसके = लचके ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छीलरिये म्हारो चित नहीं रे, डाबरिये कुण जाव ।
गंगा जमुनाँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूँ दरियाव ।। १
हाल्याँ मोल्याँ सूँ काम नहीं रे, सीख नहीं सिरदार ।
कामदाराँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाब करूं दरबार ।। २
काच कथीर सूं काम नही रे, लोहा चढ़े सिर भार ।
सोना रूपा सूँ काम नहीं रे, म्हारे हीरां रो बोपार ।। ३
भाग हमारो जागियो रे, भयो समद सूं सीर ।
अमृत प्याला छांडि कै, कुण पीवे कड़वो नीर ।। ४
पीपा कूँ प्रभु परच्यौ दीन्हौ, दिया रे खजीना भरपूर ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, धणी मिल्या छै हजूर ।। ५

○

पद–३०८ : राग–श्यामकल्याण : ताल–कहरवा
(उत्कंठा)

वता दे सखि साँवरिया को डेरो किती दूर । (टेर)
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच बहे यमुना-पूर ।। १
मथुराजी की मस्त गुवालिन, मुख पर बरसे नूर ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, साँवरे से मिलना जरूर ।। ३

○

पद–३०९ : राग–मल्हार : ताल–तिताला
(प्रेम)

वदला रे तू जल भरि ले आयो । (टेर)
छोटी-छोटी बूँदन वरसन लागी, कोयल सबद सुनायो ।। १
गाजै वाजै पवन मधुरिया, अबर वदरा छायो ।। २

३०७–२ (म.) ।
३०८–३ (क.); (प्रकीर्णक पद) ।
३०९–१ (उ.) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सेज सँवारी पिय घर आये, हिल मिल मंगल गायो ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, भाग भलो जिन पायो ।। ४

○

पद–३१० : राग–कनड़ी, तिलक, कामोद : ताल–दीपचंदी
(चेतावनी)

बन्दे बन्दगी मत भूल । (टेर)
चार दिनां की कर ले खूबी, ज्यूं दाड़िम दा फूल ।। १
आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, रहना वे हजूर ।। ३

○

पद–३११ : राग–हमीर : ताल–तिताला
(प्रेम)

बन जाऊँ चरण की दासी रे, दासी मैं भई उदासी रे । (टेर)
और देव कोई न जाणूं, हरि बिन गई उदासी ।। १
न न्हाऊँ गंगा न न्हाऊँ जमना, न न्हाऊँ प्रयाग कासी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की प्यासी ।। ३

○

पद–३१२ : राग–मांड : ताल–कहरवा
(रूप-वर्णन)

बनाजी थाँरी अँखियाँ कामणगारी, हो बनाजी । (टेर)
मोही छे जी थारी लटक चाल पर बरसाने की नारी ।। १
जंतर मंतर जादू टोना, कर कर बहुत ही हारी ।। २
मीरां ने बकसियो गिरधारी, सांवरी सूरत प्यारी ।। ३

३१०–२ (म.) ।
३११– (म.) ।
३१२–१ (उ.) । (या०—सं० रा० के० से)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—३१३ : राग—विहाग : ताल—तिताला
(दृढ़ता)

बरजी नांही रहूंगी, म्हारो स्यामसुंदर भरतार । (टेर)
इक वर बरजी दोय बर वरजी, बरजी सो सो बार ।। १
सासू बरजी नणदी बरजी, राणोंजी दावादार ।। २
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, पूरणब्रह्म ऊदार ।। ३

○

पद—३१४ : राग—विहाग : ताल—दीपचन्दी
(दृढ़ता)

बरजी मैं काहू की नांहि रहूँ । (टेर)
सुनो री सखी तुम चेतन होइ के, मन की बात कहूँ ।। १
साध संगति करि हरि सुख लेऊँ, जगसूँ (मैं) दूरी रहूं ।। २
तन धन मेरो सब ही जावो, भल मेरो सीस लहूं ।। ३
मन मेरो लागो सुमरिन सेती, सबको (मैं) बोल सहूँ ।। ४
मीरां कहे प्रभु गिरिधरनागर, सतगुरु सरन रहूँ ।। ५

○

पद—३१५ : राग—बहार : ताल—तिताला
(प्रेमानन्द)

बरसे बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की । (टेर)
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की ।। १
उमड़ घुमड़ चहुं दिश से आया, दामिन दमकै झर लावन की ।। २
नन्हीं नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सोहावन की ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आनंद मगल गावन की ।। ४

३१३—२ (म.); (राम स० गु० पृ० १४३)
३१४—१ (उ.) ।
३१५—१ (उ.); (बं. पु. पृ. ३१)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३१६ : राग–जोनपुरी : ताल–कहरवा
(विनय रूप-वर्णन)

बसो मेरे नैनन में नँदलाल । (टेर)
मोहनि मूरत साँवरि सूरति, नैना बने विशाल ।। १
अधर सुधारस मुरली राजित, उर वैजन्ती माल ।। २
क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर शब्द रसाल ।। ३
मीरां के प्रभु संतन सुखदाई, भक्तवछल गोपाल ।। ४

○

पद–३१७ : राग–कल्याण : ताल–कहरवा
(प्रेम-लीला)

बाँके साँवरिया ने घेरी मोहि आन के । (टेर)
हों जो गई जमुनाजल भरने, मारग रोक्यो मेरो आन के ।। १
बृन्दाबन की कुंजगली में, मुरली बजावै आन तान के ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, प्रीति पुरातन जान के ।। ३

○

पद–३१८ : राग–भैरवी : ताल–तिताला
(विनय)

बांहड़ली जो गहो रामजी म्हारी बांहड़ली जो गहो । (टेर)
भवसागर की तीक्षण धारा, थेई हो न नीभो (निभो) ।। १
[1]मेह्र तो छां ओगण का भरिया, थेई हो न सहो[1] ।। २
मीरां के प्रभु गिधरनागर, बिड़द की लाज गहो ।। ३

३१६–१ (उ.)
३१७–१ (उ.); (बृ. रा. र. पृ. ३९५)
३१८–१ (उ.); (सूर्यनारायणजी दाधीच से प्राप्त)
1–1 पा०–'म्हांमें ओगण घणा छै सांवरिया, थे ही सहो तो सहो'।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३१९
(प्रेमलीला)

बांसुरी सुनूंगी मैं तो बांसरी सुनूंगी ।
वा बंली वाले को जाने न दूंगी । (टेर)
वह वंसी वाला मुझे एक कहेगा, एक की लाख सुनाऊँगी ।। १
बृन्दाबन की कुंजगलिन में, भ्रमर व्है फूल चुनूंगी ।। २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच में जाय अडाऊँगी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल वलि जाऊँगी ।। ४

○

पद–३२० : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला
(वैराग्य)

बाई[1] म्हारै नैना[2] रावल भेष । (टेर)
वै स्यामी[3] वहो जटाधारी, अबही अंजन रेख ।। १
स्वेत वरण[4] रँग कंथा पहर्‌या[5] भिक्षा माँगा[6] देस ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, करहूं[7] अलख अलेख ।। ३

○

पद–३२१ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(प्रेम-लीला)

बाजन दे गिरधरलाल मुरली बाजन दे । (टेर)
सप्त सुरन मुरली बजी, कहुँ कालिन्दी के तीर ।

३१९–२ (म.); (का०।२।३३९)
३२०–२ (म.)
1. पा.–'बाई थारा नैन रावल भेष ।' 2. पा.–'नैण' । 3. पा.–'बरनी श्याम' । 'बिना श्याम सखी मैं जटाधारी' 4. पा.–'बिराजत' । 5. पा.–'अरुण' । 6. पा–'मांगत' । 'मांगू'' । 7. पा.–'करत' । 'करूँगी' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्रवन[1] सुनत सुध नां रही, मेरी कित गागर कित चीर ।। १
बैठ कदम के चौंतरा, सब ग्वालन लिये बुलाय ।
गैल[2] रोक ठाडो भयो, मेरो गोरस लियो छिनाय ।। २
पासा डारे प्रेम के, मेरो सब धन ले गयो लूट ।
मीरां के प्रभु साँवरे, तुम अब कित जावोगे[3] छूट ।। ३

○

पद–३२२ :
(उत्कंठा)

बाजे छे रे बाजे छे, पैला बन मांही मीठी वेणु बाजे छे ।
हाँ रे दुर्जन को डर लागे छे । (टेर)
सासू सूती म्हारी सुख निद्रा में, जाऊँ तो नणदल जागे छे ।। १
ससुरोजी म्हारो परम सोहागो, देवरियो दिल में दाझे छे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जनम मरण भय भागे छे ।। ३

○

पद–३२३ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा
(प्रेमोपालंभ)

पाटड़ली निहारूँ जी मैं[1] हारी ठाडी ठाडी । (टेर)
आप न आवै पतियाँ न भेजै, छतियाँ करी अति[2] गाढ़ी ।। १
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, जमुना बह रही[3] आडी ।। २
आप जाय मथुरा में बैठे, पीतड़ली[4] बोह बाढ़ी ।। ३

३२१–२ (म.); (स. मा. मी. ली. २६)
1. पा –'सोर' ।
2. पा.–'खेलत रोकत ग्वालिनी मुरली शब्द सुनाई' ।
3. पा.–'जैहो' ।
३२२–(का /उ /२/३५०)
३२३–१ (उ.); (दीना. मं. मी. प. २९)
1. पा–'हूँ हर घड़ी' । 2. पा.–'ह्रि' 3. पा.–'बहैछै' ।
4. पा.–'प्रीत हिये अति बाढी' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हमको लिख लिख जोग पठावैं[5], आप[6] दूल्हे कुबजा लाडी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कहा[7] कहूं जमना आडी ।। ५

○

पद–३२४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(प्रेम)

बात क्या कहूं नागरनट की, नागरनट की नागर नट की । (टेर)
मैं दधि बेचन जात वृन्दाबन, छीन लिई मोरी दधि की मटकी ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, अति सोभा उस कौस्तुभ मनि की ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, प्रीत लगी उस मुरलीधर की ।। ३

○

पद–३२५ : राग–देश मल्हार : ताल–कहरवा
(चेतावनी विरह)

बादल देख डरी हो, स्याम मैं बादल देख डरी । (टेर)
काली पीली घटा उमंगी, बरस्यो एक घरी ।। १
जित जाऊं तित पानि हि पानी, हुई सब भोम हरी ।। २
जाका पिव परदेस बसत है, भीजैं बार खरी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कीज्यो प्रीत खरी ।। ४

○

पद–३२६ : राग–मांड : ताल–कहरवा
(विरद)

बाना-रो बिडद दुहेलो रे । (टेर)
बानो पहर कहा गरबायो, मुक्ति ने हामी खेलो (रे) ।। १

३२३–5. पा.–'पठावत' 6. पा.–'कुबजा कीनी लाडी' । 7. पा.–'प्रीत में असी अडि कांई मांडी' ।
३२४–२ (म) ।
३२५–२ (म.) ।

T , CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वाना-रो प्राण प्रहलाद उवारयो, वैर पिता से झेल्यो (रे) ।। २
आगा धर पीछा मत ताको, दफतर नांहि चढैलो (रे) ।। ३
मीरांजी ने भक्ति कमाई, जहर पियालो झेल्यो (रे) ।। ४

○

पद–३२७ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(निर्गुण प्रेम)

वाल्हा[1] मैं वैरागिण हूँगी हो ।
जीं जीं भेस म्हारो साहिब रीझै, सोई सोई भेस धरूँगी हो । (टेर)
सील संतोष धरूं घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी हो ।
जाको नाम निरंजण कहिये, ताको ध्यान धरूँगी हो ।। १
गुरू ज्ञान रँगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पैरूँगी हो ।
प्रेम प्रीत सूँ हरिगुण गाऊँ, चरणन लिपट रहूँगी हो ।। २
या तन की मैं करूँ कींगरो[2], रसना नाम रटूँगी हो ।
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, साधाँ संग रहूँगी हो ।। ३

○

पद–३२८ : राग–माड : ताल–कहरवा
(प्रेम)

बावरी कहै रे साधो बावरी कहै (मीरां बाई ने दिवानी दुनियां
बावरी कहै) । (टेर)
बन के तमोलन कतरूँ पान, पान के खवैया मेरे श्याम सुजान ।। १
बन मालिन गूँथूँ बनमाल, उर पहरावै मीरां गिरधरलाल ।। २

दोहा

मीरां हर की लाडली, नित प्रति रहे हजूर ।
साधाँ रे सनमुख बसै, दगाबाज से दूर ।। ३

३२६–३ (क.); (फु. प.) ।
३२७–१ पा.–'लाला' ।
३२८–३ (क.) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३२९ : राग–भैरवी वा काफी : ताल-कहरवा
(प्रेमानन्द)

बिक्या जी हरि प्यारीजी रे हाथ बिक्या । (टेर)
कृपा करो जी म्हे सोही सिरधाराँ, सोभा देखि छक्या ।। १
जा दिन ते मेरी लगन लगी है, और न द्वार थक्या ।। २
अनरागी मनमस्त है राणाजी, गरुड के अगड़ जुप्या ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणाँ चित्त टक्या ।। ४

○

पद–३३० : राग–तिलक कामोद : ताल–रूपक
(विरहाधिक्य)

बिरहनी बावरी-सी भई । (टेर)
ऊँची चढ़ चढ़ अपने भवन में, टेरत हाय दई ।। १
ले अँचरा मुख अँसुवन पूंछत, उधरे गात सही ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बिछुरत कछु नां कही ।। ३

○

पद–३३१ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी
(पुकार)

वेग पधारो सांवरा कठिन बनी है,
आप विना म्हारो कुण धनी है ? (टेर)
दुखिया कूं देख देर मत कीजो, देर की बिरियाँ और घनी है ।। १
दिन नहीं चैन, रैन नहिं निद्रा, दुशमन के हिये हरष घनी है ।। २
गहरी गहरी नदिया, नाव पुरानी, पार करो घनश्याम धनी है ।। ३
जमड़ाँ की फौजाँ प्रभु आन पड़ी हैं, बेग हटावो मोटा आप धनी हैं ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बिच आन खड़ी है ।। ५

३२९–१ (उ. ट.) (निज संग्रह से)
३३०–१ (उ.); (भक्त प्रहलादजी का पांना २)
३३१–२ (म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३३२ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(विरह)

बैद को सारो नाँहि रे माई, बैद को नहिं सारो । (टेर)
कहत ललिता बैद बुलाऊँ, आवै नंद को प्यारो ।
वो आयां दुख नाहिं रहेगो, मोहिं पतियारो ।। १
बैद आय कर हात जो पकड़्यौ, रोग है भारो ।
परम पुरुष की लहर व्यापी, डस गयो कारो ।। २
मोर-चंदो हात ले हरि, देत है झारो ।
दासी मीरां लाल गिरधर, विष कियो न्यारो ।। ३

○

पद–३३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

बैद बण आयजो स्वामी म्हारा, व्याकुल भयो है सरीर । (टेर)
मोर मुकुट कट काछनी रे, वाला केसर खोर चढ़ायजो ।
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे, भुज भर अंग लिपटायजो ।। १
ओषद है हरिनाम की रे, म्हारे जोही अंग लगायजो ।
ज्यां श्रीचरणां से म्हारो दुख जासी, चरण खोळ जल पायजो ।। २
दरद दिवानी मीरां बैद सांवलियो, सूती नै आण जगायजो ।
मीरां तो दासी थारी जनम जनम की, चरणकमल चित लायजो ।। ३

○

३३२–२ (म.)
३३३–२ (म.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३३४ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा
(विरह)

बोल मां बोल मां बोल मां रे,
राधा कृष्ण विना बीजुं बोल मां(रे) । (टेर)
साकर शेलड़ीनो[1] स्वाद तजीने, कड़वो लीवडो घोल मां रे ।। १
चांदा सूरजनुं तेज तजीने, आंगिया संगा थे प्रीत जोड़ मां रे ।। २
हीरा माणेक मूंगो तजीने, कथीर संगाते मलि तोल मां रे ।। ३
मीरां कहे प्रभु गिरिधरनागर, शरीर आप्युं सम लोल मां रे ।। ४

⊙

पद–३३५ : राग–गौड़ सारंग : ताल–कहरवा या धीमा
(विनय)

बोल सूवा राम राम बोलँ तो बलि जाऊँ रे । (टेर)
सार सोना की सल्या मंगाऊं, सूवा पींजरो बणाऊँ रे ।
पींजरा री डोरी सूवा, हाथ सूं हलाऊँ रे ।। १
कंचन कोटि महल सूवा, माळिया बणाऊँ रे ।
माळिया में आय सूवा, मोतियाँ बंधाऊँ रे ।। २
चंपला री डार सूवा, पींजरो बँधाऊँ रे ।
घृत घेवर सोलमा, लापसी परसाऊँ रे ।। ३
आमला रो रस सूवा, घोलि घोलि पाऊँ रे ।
बैठक के तो कारणे सूवा, चानणी बिछाऊँ रे ।। ४
प्रेम के प्रताप सूवा (पाँव में पहरान सूवा) झाँझण बणाऊँ रे ।
केसर भरियो वाटको तेरे अंग सैं लगाऊँ रे ।। ५
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, सरणे आयाँ सुख पाऊँ रे ।। ६

३३४–२ (म.)
1 पा.–'शेरडीनों' ।
३३५–२ (म.) (क.ग्र. ५)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३३६ : राग–मल्हार : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम)

बोलै झीणां मोर, राधे तारा डूंगरिया पर । (टेर)
ए मोर ही बोलै पपैया ही बोलै, कोयल करै घन शोर ।। १
आभा माँ भली बिजली चमकै, बादल हुवा घनघोर ।। २
झरमर झरमर मेहूलो बरसै, भीजै मारा सालूड़ा नी कोर ।। ३
बाई मीरां के प्रभु गिरधरना गुण, प्रभु(जु) मारा चितड़ा नो चोर ।। ४

○

पद–३३७ : राग–एमन : ताल–तिताला

(विरह)

भई हों बावरी सुनके बांसुरी । (टेर)
श्रवण सुनत मोरी सुध बुध बिसरी, लगी रहत तामें मन की गांसु री ।। १
नेम धरम कोन कीनो मुरलिया, कौन तिहारे पासु री ।। २
मीरां के प्रभु वश कर लीने, सप्त सुरन ताननि फांसु री ।। ३

○

पद–३३८ : राग आसावरी : ताल–कहरवा

(लीला)

भज केशव गोविंद गोपाला, हरि राधे पहिने वनमाला । (टेर)
मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल भूले नंदलाला ।। १
गोपी के कन्हैया बलभद्रजी के भैया, वत्सल प्रभु रछपाला ।। २
पूतना को जननी गति अधम-उधार नंदलाला ।। ३
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला ।। ४
यमुना के तीर धेनु चरावै, मुरली बजावै नंदलाला ।। ५
बृन्दावन हरि रास रच्यो है, मीरां जी को करो प्रतिपाला ।। ६

३३६–१ (उ.); (या.—का. दो. से)
३३७–२ (म.)
३३८–३ (क.) (भ. मी. बा. हि. पु. मथुरा)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३३६ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चितावनी)

भज मन चरन कँवल अबिनासी । (टेर)
जेताइ दीसे धरनि गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी ।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी ।। १
इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जासी ।
यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड्यां उठि जासी ।। २
कहा भयो है भगवा पहर्‌यां, घर तज भये सन्यासी ।
जोगी होय जुगति नहिं जानी, उलटि जनम फिर आसी ।। ३
अरज करौं अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काटो जम की फांसी ।। ४

○

पद–३४० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेमानन्द)

भजि मन श्री राधे गोपाल । (टेर)
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माल ।। १
वृन्दावन की कुंजगलिन में, बिन देखे बेहाल ।। २
मीरां (के) प्रभु गिरधरनागर, छबि देखि भई हूं निहाल ।। ३

○

पद–३४१ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(प्रेम)

भर मारी रे बाना मेरे सतगुरु बिरह लगाय के । (टेर)
पाँवन पंगा कानन बहिरा, सूझत नाँही नैना ।। १
खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूं, मरम न कोई जाना ।। २

३३९–१ (उ.)
३४०–(या०—नागरीदासजी की ह. लि. पदसार सं. से)
३४१–२ (म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सतगुरु ओषध ऐसी दीन्ही, रूम रूम भई चैना ।। ३
सतगुरु जस्या बैद न कोई, पूछो वेद पुराना ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, अमंरलोक में रहना ।। ५

○

पद–३४२ : राग–काफी : ताल–कहरवा
(विनय)

भरमायो म्हारो मारूडो, भरम रह्यो । (टेर)
अरज करूँ मथुरा मत जावो, मानो जी म्हारो कह्यो ।। १
हावभाव से बस कर लीना, बाँध्यौ छै जी नेहड़ो नयो ।। २
जुलम किया सोकँण कुबज्या ने, व्रजनँद मोह लियो ।। ३
चतुर नार के नैनभाल से, बाँध्यौ छै जी राज रो हियो ।। ४
सोलह सहस गोपिका तज कर, कुबज्या री लार भयो ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुड़न क्यों कियो ।। ६

○

पद–३४३ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(विनय)

भवनपति तुम घरि आज्यौ हो । (टेर)
बिथा लगी तन माहिने, म्हारी तपत बुझाज्यो हो ।। १
रोवत रोवत डोलताँ, सब रैण बिहावै हो ।। २
भूख गई निदरा गई, पापी जीव न जावै हो ।। ३
दुखिया कूं सुखिया करो, मोहि दरसण दीजै हो ।। ४
मीरां ब्याकुल बिरहणी, अब बिलम न कीजै हो ।। ५

○

३४२–१ (उ.) (पुजा. नाथू. पु. से)
३४३–१ (उ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३४४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(संभाषण)

भाभी बोलो वचन बिचारी । (टेर)
साधाँ की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी ।
छापा तिलक गल माल उतारो, पहिरो हार हजारी ।। १
रतन जटित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी ।
मीरांजी थे चलो महल में, थानै सोगन म्हारी ।। २
(मीरां वचन) भाव भगत भूषण सजे, शील सन्तोष सिंगार ।
ओढ़ी चूनड़ प्रेम की, गिरधरजी भरतार ।। ३
ऊदाँ बाई मन समझ, जावो अपणे धाम ।
राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूं काम ।। ४

○

पद–३४५ : राग–सोरठ : ताल–दादरा

(प्रकीर्णक)

(ऊदाँ) भाभी मीरां कुल ने लगाई गाल,
ईडरगढ़ का आया जी ओलंबा । (टेर)
(मीरां) बाई ऊदाँ थाँरे म्हांरे नातो नांहि,
बासो बस्यां का आया जी ओलंबा ।। १
(ऊदाँ) भाभी मीरां साधां का संग निवार,
सारो सहर थारी निंदा करे ।
(मीरां) बाई ऊदाँ करे तो पड्या झक मारो,
मन लाग्यो रमता रामसूँ ।। २
(ऊदाँ) भाभी मीरां पहरो नी मोत्यां को हार,
गहणो पहरो रतन जडाव को ।
(मीरां) बाई ऊदाँ छोड्यो मैं मोत्यां को हार,
गहणे तो पहर्यो सील संतोष को ।। ३

३४४–३ (क.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

(ऊदाँ) भाभी मीरां ओराँ के आवे जी आछी रूडी जान,
थारे आवे छै हरिजन पावणा ।
(मीरां) बाई ऊदाँ चढ़ चोवारां झाँक,
साधाँ की मँडली लागे सुहावणी ।। ४
(ऊदाँ) भाभी मीरां लाजे लाजे गढ चीतौड़,
राणोजी लाजे गढ़ रा राजवी ।
(मीरां) बाई ऊदाँ तारचो तारचो गढ़ चीतौड़,
राणाजी तारचा गढ़ रा राजवी ।। ५
(ऊदाँ) भाभी मीरां लाजे लाजे थारा माय न बाप,
पीहर लाजे जी थांरो मेड़तो ।
(मीरां) बाई ऊदाँ तारचा मैं तो माय न बाप,
पीहर तारचो जी मेड़तो ।। ६
(ऊदाँ] भाभी मीरां राणाजी कियो छै थां पर कोप,
रतन कचोलो विष घोलियो ।
(मीरां) बाई ऊदाँ घोल्यो तो घोलणदो,
कर चरणामृत वाही मैं पीवस्यां ।। ७
(ऊदाँ) भाभी मीरां देखतड़ां ही मर जाय,
यो विष कहिये बासक नाग को ।
(मीरां) बाई ऊदाँ नहिं म्हांरे माय न बाप,
आमर डाली धरती झेलिया ।। ८
(ऊदाँ) भाभी मीरां राणाजी ऊभा छै थांरे द्वार,
पोथी मांगे छै थारा ज्ञान की ।
(मीरां) बाई ऊदाँ पोथी म्हारी खाँडा की धार,
ज्ञान निभावण राणो है नहीं ।। ९
(ऊदाँ) भाभी मीरां राणाजी रो वचन न लोप,
उन रूठचां भीडी कोउ नहीं ।
(मीरां) बाई ऊदाँ रमापति आवे म्हारी भीड़,
अरज करूं छूं तासूं बीनती ।। १०

○

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३४६ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(प्रकीर्णक)

भाभी मीरां हो साधां को संग निवारि, थाहरी लोक निन्दा करै । (टेर)
बाई ऊदाँ हो लोकाँ ने लोकाँ रो भाव, म्हे म्हांको राम लडावस्यां ।
भाभी मीरां हो लाजै सैंस मेवाड़, लाजै कुंभाजी रो बैसणो ।। १
भाभी मीरां हो लाजै नोकोटी मारवाड़, लाजै दूदाजी रो मेड़तो ।
भाभी मीरां हो लाजै माई मोसाल, लाजै हो पीहर थारो सासरो ।। २
भाभी मीरां हो थांपरि राणों कोपिया, बाटकडे बिष घोलने ।
बाई ऊदाँ हो थे दीज्यो माहरै हाथ, म्हे अमरत करि आरोगस्यां ।। ३
बाई ऊदाँ हो साथरि सेज बिछाइ, नैणां में बिष संचरचौ ।
बाई ऊदाँ हो मंदर हुओ छै उजास, सही साधाँ रो तारण आवई ।। ४
बाई ऊदाँ हो दूधां पखालूं हरि रा पाँव, रतनजड़ित गोबिन्दजीं नै बैसणो ।
बाई ऊदां हो मोत्यां थाल भराइ, करस्यां गोविन्दजी री आरती ।। ५
राणाजी रा वाघेला थे ल्यो ने मीरांजी री खवरि, मुईक जीवै मीरां मेड़ती
राणा सोसोद्या बाजै छै ताल मृदंग, बाजै छै गोविन्दजी रा घूघरा ।
राणा सोसोद्या झालर रो झणकार, नारद संग मीरां निरत करै ।। ६
भाभी मीरां हो खोलो ने धरमदुवार, ऊभो राणोजी बीनती करै ।
बाई ऊदाँ हो राणा नै रावले मेल्हि, कुल रो तो नातो म्हारै कोई नहीं ।। ७
भाभी मीरां हो खोलो ने धरमदुवार, पंथीडो दिखावो तांहरा देवरो ।
बाई ऊदाँ हो पंथड़ो खांडा री धार, पंथड़ो निवाहन हारो कोई नहीं ।। ८
साँचा साहिबजी यह दुख सह्यो न जाइ, हीवड़ो तो सूभर भरचो ।
साँचा साहिबजी बहुतैं बिड़द री लाज, कर जोरै मीरां बीनती करै ।। ९

○

पद–३४७ : राग–काफी : ताल–कहरवा

भावना को भूखो सांवरो म्हारो भावना को भूखो । (टेर)
शबरी के बोर सुदामा के तन्दुल, भर भर मूठया ठूंको ।। १

३४६–(क. ब. २३)
३४७–(आनन्दस्वरूपजी से प्राप्त)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दुर्योधन का मेवा त्यागा, साग विदुर घर लूखो ।। २
करमा के घर खीच आरोग्यो, लूखो गण्यो नहीं सूखो ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको ।। ४

○

पद–३४८ : राग–सोरठ मल्हार : ताल–रूपक
(विरद)

भीजे म्हारो दांवनचीर, सांवणियो लूम रह्यो रे । (टेर)
आप तो जाय विदेसां छाये, जिवड़ो धरत न धीर ।। १
लिख लिख पतियाँ सँदेसा भेजूं, कब घर आवे म्हारो पीव ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दरसन दो ने बलबीर ।। ३

○

पद–३४९ : राग–पीलू बरवा : ताल–तिताला

भीजे मेरी नवरंग चूनरी, कान्हा लागूं तोरे पाय । (टेर)
गोरस ले कर चाली मथुरा, सिर पर घड़ा झोला खाय ।। १
त्रिभंगी चालन गोवर्धन धर लियो, छिन भर मुरली बजाय ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित लागो मन भाय ।। ३

○

पद–३५० : राग–देश : ताल–कहरवा
(विरह)

भीड़ छाँडि बीर बैद मेरै पीर न्यारी है । (टेर)
करक कलेजै भारी वोषद न लागै कारी,
तुम घर जावो बैद मेरै पीर भारी है ।। १

३४८–१ (उ.)
३४९–(का. । उ. २ । ३३६)
३५०–१ (उ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिरहिन बिरह बाढ्यौ तातैं दुख भयो गाढ़ो,
बिरह के बान ले ले बिरहिनी मारी है ।। २
चितही पिया की प्यारी नैंकहू न होवै न्यारी,
मीरां तो आजारबंध बैंद गिरधारी है ।। ३

○

पद–३५१ : राग–छाया, कामोद : ताल–कहरवा

(विरह विनय)

भूल मत ज़ाना मेरी ओर निभाना जी काना । (टेर)
हमरी तुमरीं लगन लगी है, नित प्रति आना जाना ।
मन भावै सो कहै जगत सब, नेक नहीं सरमांना ।। १
घट-घट बासी अन्तरयामी, प्रेम का पन्थ पिछांना ।
जो तू मेरो नाम न जाने, मेरो नाम दिवांना ।। २
सूरज सांमी पोर हमारी, चन्दन-चौक निसांना है ।
हमरे अँगना में तुलसी का बिरवा, जाके हरे हरे पांना ।। ३
जो कान्हा मेरो गाम न जाने, मेरो गाम बरसांना ।
कै तो ठाकुर दर्शन दीज्यो, नातर लीज्यो प्राना ।। ४
जब से सुनी भनक मुरली की, तब से जिव घबरांना ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, लगे प्रीत के बांना ।। ५

○

पद–३५२ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

भूली मोतिन नो हार, सखी तट जमना किनारे । (टेर)
एक एक मोती मारूं लाख टका नूं, परोव्यूं सुवरण केरे तार ।। १
सासु अमारी अति वढकारी,[1] वाल्हा नणदल बिषड़ा नूं भार ।। २
परण्यो अमारो परम सोहागी, वाल्हा मारचा छैं मोह ना बांण ।। ३
वाई मीरां कें प्रभु गिरधरना गुण, चरण कमल चित ध्यान ।। ४

३५१–१ (उ.) (पुजा. नाथू. पु. से)
३५२–1 'लड़ोकड़ी' (या०—का. दो से)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३५३ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

भोलानाथ दिगंबर ये दुख मेरो हरो रे। (टेर)
शीतल चंदन बेल पतरवा, मस्तक गंगा धरो रे १
अर्धांगी गौरी पुत्र गजानन, चन्द्र की रेख धरो रे।। २
शिव शंकर के तीन नेत्र हैं, अद्भुत रूप धरो रे।। ३
आसन मार सिंहासन बैठे, शान्त समाधी धरो रे।। ४
मीराँ के प्रभु का जस गावत, शिवजी के पैयाँ परो रे।। ५

○

पद–३५४ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी-धमार

(मान-लीला)

मत कर माधोजी की बात, ए जी तुम सुण ऊधो महाराज। (टेर)
ज्यो कोई बात करे माधो की, हिये (में) करोत बहजात।। १
एक समै हरी रास रचायो, छै महिनां की रात।। २
एक समै कालिन्दी तट पर, ग्वाल बाल सब लार।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरनकमल बलिहार।। ४

○

पद–३५५ : राग–जँगला : ताल–कहरवा

(मान)

मत आव रै नंद का म्हांकी गली। (टेर)
म्हाँकी गली की बाँकी गुवालिन, मतना लोग हँसावै रे।। १
सास बुरी मेरी नणद हटीली, पाड़ोसण लख जावै रे।। २
कोउ गलियों में लुकतो छिपतो, म्हांके कानी आवै रे।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, झूँठी ही जी ललचावै।। ४

३५३–१ (उ.)।
३५४–(म.); (२५) (पुजा. नाथू पु. से)।
३५५–(क.) (फु. प.)।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३५६ : राग–काफी : ताल–दीपचंद

(फाग)

मत डारो पिचकारी मैं सगरी भीज गई सारी । (टेर)
जिन डारो सो सनमुख रहियो, नहिं तो मैं देऊँगी गारी ।। १
भर पिचकारी मोरे मुख पर मारी, भीज गई तन सारी ।। २
लाल गुलाल उडावन लागे, मैं तो मन में विचारी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरनकमल बलिहारी ।। ४

○

पद–३५७ : राग–मल्हार : ताल–तिताला

(विरद)

मतवारो बादल आयो रे, हरि को सँदेशो नहिं लायो रे । (टेर)
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल शब्द सुनायो रे ।। १
कारी अँधियारी बिजरी चमकै, बिरहन अति डर पायो रे ।। २
गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लायो रे ।। ३
फूकै (काली) नाग बिरह की जारी, मीरां मन हरि भायो रे ।। ४

○

पद–३५८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मदरो सो बोल मोरा, मोरा स्याम बिना जीव दोरा । (टेर)
दादुर मोर पपैया बोले, कोयल कर रही शोरा ।। १
झरमर झरमर मेहा बरसे, गाजत है घनघोरा ।। २
मीरां के प्रभु राधा बोले, स्याम मिल्या जीव सोरा ।। ३

○

३५६–इस पद का द्वितीय अन्तरा अनेक होलियों में मिलता है ।
३५७–(उ.) (वं. पु. पृ. १३)
३५८–(उ.) (भजनमंजरी पृ. ९६१)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३५९ : राग–बहार : ताल–तिताला

(रूपलीला)

मन अटकी मेरे दिल अटकी हो मुकुट की लटक मेरे मन अटकी । (टेर)
माथे मुकुट कोर चंदन की सेला है पीरे पट की ।। १
शंख चक्र गदा पद्म विराजे गुन्जमाल मेरे हिये अटकी ।। २
अन्तर्धान भये गोपियन में सुध न रही जमुना तट की ।। ३
पातपात वृन्दावन ढूंढे कुन्ज कुन्ज राधे लटकी ।। ४
जमुना के नीर तीर धेनु चरावै सुरत रही बंसीबट की ।। ५
फूलन के जामा कदम की छैयां गोपियन की मटुकी पटकी ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर जानत हो सब घट की ।। ७

○

पद–३६० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

मनखा जनम पदारथ पायो, ऐसी बहुरि न आती । (टेर)
अबके मोसर ज्ञान विचारो, राम राम मुख गाती ।
सतगुरु मिलिया सूंज पिछाणी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती ।। १
सगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरी प्यासी जाती ।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोबिंद का गुण गाती ।। २
साहब पाया आदि अनादी, ना तर भव में जाती ।
मीरां कहे इक आस आपकी, औरां सूं सकुचाती ।। ३

○

पद–३६१ : राग–भैरवी चाल ख्याल : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

मन तू कह्यो हमारो मान, मैं देती हूं तोहे ज्ञान । (टेर)

३५९–(उ.)
३६०–(उ)
३६१–(निज संग्रह से)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लाखां बातां तोहे समझाऊँ, तेरे नहीं कणे की कांण ।
हामल भर कर पाछो बगदै, तू है बेईमान ।। १
सैल दिखाऊँ माल खवाऊँ और चबाऊँ बीड़ा पान ।
मेरो कह्यो एक तू कर ले, हरि(जी) सूं कर पहचान ।। २
हरि मंदिर में हरि गुण गा लै, मीठी सुणा दे (तीखी) तान ।
स्वास चढ़ाय समाधि लगा ले, कर ले प्रभु को ध्यान ।। ३
भजन कियां सूं तेज बधैलो, जैसे (ऊग्यो) सूरज भान ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, अब तू थारी जान ।। ४

○

पद–३६२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

मन माने जब तार प्रभुजी मन जब माने तार । (टेर)
नदियां गहरी नाव पुरानी कैसे उतरूँ पार ।। १
पोथी पुरातन सब कुछ देखी अंत न लागे पार ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर नाम निरन्तर सार ।। ३

○

पद–३६३ : राग–परज : ताल–रूपक

(प्रभु-महिमा)

मन मेरे परसि हरि के चरन । (टेर)
सुभग सीतल कमल कोमल, त्रिविधि ज्वाला-हरन ।। १
अधम-तारन तरन-तारन, सब के पोषन भरन ।। २
सो चरन प्रहलाद परसे, दुःख दारिद हरन ।। ३

३६२–(३)
३६३–(या.–ना. दा. जी के पदसार-संग्रह ह. लि. से)
यह पाठ प्रचलित पाठ से बहुत भिन्न है इसलिये लिखा गया ।–-सं. ।
यह पद ता. ११-१२-४७ को स्वामी आनन्दस्वरूपजी ने जयपुर में बताया । उन्होंने यह पद ब्राह्मणों की सरेरी ग्राम में एक वृद्ध पुरुष से मेवाड़ में सुना ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोई चरन ध्रुव अटल कीने, इन्द्र पदवी धरन ।। ४
जिन चरन बलि बाँध पठये विप्र रूपज धरन ।। ५
जिन चरन ब्रह्मांड वेध्यो, नख सुर सुरीय झरन ।। ६
जिन चरन बन गऊ चारी, गोपलीला करन ।। ७
सोई चरन काली के मस्तक, कूबरी आभरन ।। ८
दासि मीरां लाल गिरधर, राखो अपनी सरन ।। ९

○

पद–३६४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मन मोह्यो रे बंसी वाला । (टेक)
कांधे कमरिया हाथ लकुटिया, मारि गयो नैनों भाला ।। १
यक बन ढूंढि सकल बन ढूंढे, कहूँ नहीं पायो नंदलाला ।। २
मोर मुकुट पीताम्बर राजै, कानन कुंडल छबि बिसाला ।। ३
मीरां प्रभु गिरधरजू की प्यारी, आनि मिल्यो प्यारो गोपाला ।। ४

○

पद–३६५ : राग–दुरगा : ताल–तिताला

(विनय, रूप-वर्णन)

मनमोहन गिरिवरधारी । (टेर)
मोरमुकुट पीतांबरधारी, मुरली बजावै कुंजबिहारी ।। १
हाथ लियो गोवरधन पर्वत, लीला नाटकी वाके गत है न्यारी ।। २
ग्वाल बाल सब देखन आये, संग लीनी राधा प्यारी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आज आई जी हमारी बारी[1] ।। ४

○

३६४–(म.) (रासपद-संग्रह से पृ. १३)
३६५–(का./उ. १/३१२)
1 पा.–'अजी आई जी हमारी फेरी' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—३६६ : राग—कालंगड़ा : ताल—कहरवा
(लीला)

मनमोहन दिल का प्यारा । (टेर)
माता जसोदा पालना हलावे, हलावे हाथ में लेकर दोरा ।। १
कब से आंगन में खड़ी है राधा, देखे किसन का चहरा ।। २
मोर मुकट पीतांबर सोहे, गले मोतिन का गजरा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारा ।। ४

○

पद—३६७ : राग—जोनपुरी : ताल—रूपक
(विरद चेतावनी)

मन रे परस हरि के चरण । (टेर)
सुभग शीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ।
जे चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ।। १
जिन चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी शरण ।
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेटचो, नख शिखौ श्री भरण ।। २
जिन चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम धरण ।
जिन चरण काली हि नाथ्यो, गोप लीला करण ।। ३
जिन चरण धारचो गोवर्धन, गरब मघवा हरण ।
दासि मीरां लाल गिरधर, अगम तारण तरण ।। ४

○

पद—३६८ : राग—मारू : ताल—कहरवा
(विरह-वेदना)

मन हमारा बाँध्यो माई, कँवल नैन अपने गुन । (टेक)
तीखण तीर बेध शरीर दूरि गयो माई ।
लाग्यो तब जान्यों नहीं, अब न सह्यो जाई री माई ।। १

३६६—(क)
३६८—(उ.) (ग्रन्थसाहिब गाईवन्दे की बीड़)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तंत मंत औषद करउ, तऊ पीर न जाई ।
है कोऊ उपकार करे ? कठिन दर्द री माई ।। २
निकटि हो तुम दूर नहीं, वेगि मिलो आई ।
मीरां गिरधर स्वामी दयाल, तन की तपति बुझाई री माई ।
(कँवल नैन आपने गुन बांध्यो माई ।) ।। ३

○

पद–३६६ : राग–पीलू : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

मनुआ बाबा रे सुमर ले सीताराम । (टेक)
बड़े बड़े भूपति सुलतान, उनके डेरे भये मैदान ।। १
लंका के रावण काल ने खाया, तू क्या है कंगाल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरलाला, भज गोपाल त्यज जंजाल ।। ३

○

पद–३७०

(निर्गुण प्रेम)

मन्दरिये पधारो श्याम ! मन भगती में ।
सोने की थाली में भोजन परोसो,
धीरे धीरे जीमो श्याम ! मन भगती में ।
सोने की झारी में गंगाजल पानी,
धीरे धीरे पीवो श्याम ! मन भगती में ।
चुन चुन कलीयां सेज बिछाई,
धीरे धीरे पोढ़ो श्याम ! मन भगती में ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर,
शरण में लीज्यो श्याम ! मन भगती में ।

○

३६९–(क)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—३७१ : राग—भैरवी : ताल—रूपक

(विरह)

माई तेरो मोहन ने मन हरचो । (टेर)
काह करूँ कित जाऊँ सजनी, प्रान पुरुष सूं बरचो ।। १
हूँ जल भरने जात थी सजनी, कलस माथे धरचो ।। २
सांवरी-सी किसोर मूरत मुरली ने कछु टोनो करचो ।। ३
लोक लाज सब बिसार डारी, तब ही कारज सरचो ।। ४
दासी मीरां लाल गिरधर, छान ये वर वरचो ।। ५

○

पद—३७२ : राग—खमाच : ताल—धीमा

(प्रेम)

माई मोरे नयन बसे रघुवीर । (टेर)
कर सर चाप कुसुम सर लोचन ठाड़े भये मन धीर ।। १
ललित लवंग लता नागर लीला (जब) पेखो तब अंग पीर ।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर बरसत कांचन नीर ।। ३

○

पद—३७३ : राग—सोरठ : ताल तिताला

(विरह)

माई म्हांने मोहन मित्र मिलाय । (टेर)
रसियो है उर अंतर बसियो या बिनु कछुन सुहाय ।। १
पातलियो सांवरियो लोभी राखूं कंठ लगाय ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर तन की तपत बुझाय ।। ३

○

३७१—(म)
३७२—(उ)
३७३—(उ) (दीना. मं मी. प. ६)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३७४ : राग–काफी : ताल–जत

(प्रेम)

माई म्हारै निरधन रो धन राम । (टेक)
खाय न खूटे चोर न लूटै, विपति पड्या आवै काम ।। १
दिन दिन प्रीत सवाई दूणी, सुमरण आठों याम[1] ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल विसराम ।। ३

○

पद–३७५ : राग–काफी : ताल–तिताला

(प्रेमचरित)

माई म्हारै साधाँ रो इकत्यार है । (टेक)
साधु ही पीहर साधु ही सासरो, सांवरियो भरतार है ।। १
जात पाँत कुल कुटम कबीलो, साधू ही परवार है ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, रमस्यां साधाँरी लार है ।। ३

○

पद–३७६ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

माई म्हांने मिलिया छै मित्र गोपाल, नहीं जावां सासरे । (टेर)
सास हमारी सुषमा नारी ससुरो परम संतोष ।
जेठ जुगत कर जाणियो रे बाला पीव रह्यो निरदोष ।। १
देवर के रै दोय डीकरी रे सो वै अखन कंवारि ।
दासि मीरां लाल गिरधर आवागमन निवारि ।। २

○

३७४–(उ.); 1 पा.–सुमरण सूं म्हारै काम ।
३७६–(उ.) (दीना. मं. मी. प. ३)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३७७ : राग–माड : ताल–दीपचंदी

(चरित)

माई म्हांने सुपना में परणी गुपाल । (टेक)
राती पीरी चूनर पहरी मँहदी पान रसाल ।। १
कांई करां और सँग भाँवर म्हांने जग जंजाल ।। २
मीरां प्रभु गिरधरनलाल सूं करी सगाई हाल ।। ३

○

पद–३७८ : राग–तीलंग : ताल–कहरवा

(चरित)

माई म्हांने सुपना में परणी गोपाल । (टेक)
गैली ये मीरां भई बावरी सुपनूं छै आल जंजाल ।। १
जो तूं ने सुपना में गिरधर मिलिया तो कछुक सैनाण बताय ।। २
हलदी तो पीठी म्हारे अंग लिपटाई मँहदी सूं राच्या म्हारा हाथ ।। ३
छपन कोड़ जादू जान पधारचा दूल्हो श्रीनन्दकँवार ।। ४
सेवरियो सिरपेच कलंगी सोरठड़ी तरवार ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर पूरबले भरतार ।। ६

○

पद–३७९ : राग–देस : ताल–कहरवा

(चरित)

माई म्हांने सुपने में परण गया जगदीस । (टेक)
सोती को सुपणा आविया जी सुपणा बिस्वा बीस ।। १
गैली दीखै मीरां बावली सुपणां आलजंजाल ।
माई म्हाँने सुपणों में परण गया गोपाल ।। २

३७८–(म.) (सर. मा. मी. ली. से १)
(दीना. मं. मी. प. ५)
३७९–(वि. कु. पृ. ६७)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अंग अंग हलदी में करी जी सुधे भीज्यो गात ।
माई म्हाँने सुपणे में परण गया दीनानाथ ।। ३
छप्पन कोट जहां जान पधारे दूल्हो श्रीभगवान ।
सुपणे में तोरण बांधियो जी सुपणे में आई जान ।। ४
मीरां को गिरधर मिल्या जी पूरब जनम के भाग ।
सुपणे में म्हांने परण गया जी हो गया अचल सुहाग ।। ५

○

पद–३८० : राग–सोरठ : ताल कहरवा

(विरह)

माई म्हांने रमइयो है दे गयो भेष । (टेक)
हम जाणें हरि परम सनेही पूरब जनम को लेष ।। १
अंग बिभूत गले मृगछाला घर घर जपत अलेष ।। २
मीरां के प्रभु हरि अविनासी रामजी मिलन की टेक ।। ३

○

पद–३८१ : राग–बिहाग सोरठ : ताल–रूपक

(विरह)

माई मेरी हरि न बूझी बात ।
या पिंड मांही प्राण पापी निकसि क्यों नहिं जात ।। (टेक)
मुख न बोलै पट न खोले सांझ तैं परभात ।
बोलनै जुग बीतन लागौ काहे की कुसलात ।। १
आवन आवन कह गये हरि आवन ही की बात ।
रैनि अंधेरी बीज चमकै तारा गिनत विहात ।। २
कै कटारी कंठ सारू कै मरू विष खात ।
दासि मीरां लाल गिरधर (मन) लालची ललचात ।। ३

३८०–(उ.) (राम स. गु. पृ. २९८)
३८१–(उ.) (क.ब. २६)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३८२ : राग–पूरबी : ताल–इकताला

(विरह)

माई मेरे नैनन बान परी री । (टेक)
जा दिन नैना स्याम न देखों बिसरत नाहीं घरी री ।। १
चित बस गई सांवरी सूरत उर तें नांहि टरी री ।। २
मीरां हरि के हाथ बिकानी सरवस दे निबरी ।। ३

○

पद–३८३ : राग–जोनपुरी : ताल–इकताला

(प्रेम)

माई मैं तो गिरधर के रँग राची । (टेक)
मेरे बीच पड़ो मत कोई, बात चहूँ दिस माँची ।। १
जो मन सार मेरे मन उपज्यो, ज्यों कंचन मणि साँची ।। २
और सबही हो-हो सिर ऊपर, मैं परगट होय नाँची ।। ३
मुलक निसान बजावां कृष्ण के, जो कोइ कहो सोई साँची । ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मो मति नाहीं काची ।। ५

○

पद–३८४ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(प्रेम)

ठुमरी

माई मैं तो गोविन्द सों अटकी । (टेक)
चकित भये हैं दृग दोउ मेरे लखि शोभा नट की ।। १
शोभा अंग अंग प्रति भूषण वनमाला तट की ।
मोर मुकुट कटि किंकिनि राजै दुति दामिनि पट की ।। २
रमित भई हौं सांवरे के संग लोग कहै भटकी ।
छुटी लाज कुलकानि लोग डर रह्यो न घर हट की ।। ३

३८२–(उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिना गोपाल लाल बिन सजनी को जानै घट की ।
मीरां प्रभु के संग फिरेगी, कुञ्ज कुञ्ज लटकी ।। ४

○

पद–३८५ : राग–काफी वा पहाड़ी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम-प्रवाह)

माई मैं तो लियो है साँवरियो मोल[1] । (टेक)
कोई कहै सोंघो कोई कहै महँगो, (मैं तो) लियो है हीरा सूं तोल ।। १
कोई कहै हळको कोई कहै भारी, (मैं तो) लियो री ताखड़ियाँ[2] तोल ।। २
कोई कहै छाने कोई कहै चोड़े[3], (मैं तो) लियो री बाजतां ढोल ।। ३
कोई कहे घटतो कोई कहे बढ़तो, (मैं तो) लियो है बराबर तोल ।। ४
कोई कहे काळो कोई कहे गोरो, (मैं तो) देख्यो है घूँघट पट खोल ।। ५
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, (म्हारे) पूरब जनम रो कोल[4] ।। ६

○

पद–३८६

(प्रेमानन्द)

माई मैं तो सपना में परनी गोपाल । (टेक)
हाथी भी लायो घोड़ा भी लायो और लायो सुखपाल ।। १

○

३८५–(उ.) (मीरांबाई का जीवन चरित्र मु. देवी. पृ. ३४)
(मीरां प. जमा. राय. २)
1 पा.–गोविन्दो । रमैयो । 2–तराजू । 3–छुरके ।
4–(रा. स. गु. में) 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी, पूरब जनम के कोल' । (यह अंतरा रा. स. गु. में अधिक है) 'या कूं तो सब लोग जाणत हैं, लियो अमोलक मोल' ।
३८६–(मीरां. जी. च. मु. देवी. पृ. ३४)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३८७ : राग–माँड : ताल–दीपचंदी

(प्रेमानन्द)

माई री मैं तो लीनो गोविंदो मोल । (टेर)
कोई कहै छाने कोई कहै छुपकै, लियो री बजंता ढोल ।। १
कोई कहै महँगो कोई कहै सोंघो, लियो री तराजू तोल ।। २
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो री अमोलिक मोल ।। ३
याही कूं सब लोग जाणत हैं लियो री आँखी खोल ।। ४
मीरां कूं प्रभु दरसण दीज्यो पूरब जनम का कोल ।। ५

○

पद–३८८ : राग–दुरगा : ताल–तिताला (कहरवा)

(चरित्र)

माई री मैं सवलिया जान्यो नाथ । (टेक)
लेन परिचो अकबर आयो तानसैन ले साथ ।। १
राग तान इतिहास श्रवन करि नाय नाय महि माँथ ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर कीन्ह्यों मोहि सनाथ ।। ३

○

३८७–(मीरां मंदाकिनी/पद १८)
इसका पाठ बैल्वेडीयर प्रेस की 'शब्दावली' में यों है—
"माई मैं तो लियो रमैयो मोल । (टेर)
कोई कहै छानी कोई कहै चोरी, लियो है बजंता ढोल । १
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो है मैं आँखी खोल । २
कोई कहै हलको कोई कहै भारी, लियो है तराजू तोल । ३
तन का गहना मैं सब कुछ दीन्हा, दियो है बाजूबंद खोल । ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, पुरब जनम का है कौल । ५
३८८–(क.) (मीरांबा. जी. का. प्र. पृ. १४)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३८९ : राग–सोरठ, देस : ताल–कहरवा
(चरित)

माई हूँ सपना में परणी गोपाल । (टेक)
मति करो म्हारी ब्याव-सगाई क्यूं बांधो जंजाल ।। १
झूंठा मात पिता सुत बंधू बंध्यो अबध्या ख्याल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर सांचो पति नंदलाल ।। ३

○

पद–३९० : राग–बीलावल : ताल–झुमरा
(प्रेम)

माई हूँ स्याम कै रँग राची । (टेक)
मेरे बीज परो मत कोऊ, बात चहूँ दिशि मांची ।। १
जगत रैनि रहै उर ऊपर, ज्यूं कञ्चन मणि खाँची ।। २
होय रही सब जग में जाहर, फेरि प्रगट होइ नाँची ।। ३
मिली निसान बजाय कृष्ण सूं ज्यो कछु कहो सो साँची ।। ४
जन मीरां गिरधर की प्यारी, मोहोबत है नहिं काची ।। ५

○

पद–३९१ : राग–सोरठ, : ताल–कहरवा
(विरद, विनय)

माधोजी आयाँ ही सरैगो राणी रुकमणि का भरतार । (टेर)
लिखि पतिया द्विज हाथ पठावो द्वारका नै गमन करैगो ।। १
बड़े बड़े भूप महाबल जोधा कुणसैं कोंण घटैगो ।। २
यो सिसपाल चंदेरी को राजा कूड़ी साखि भरैगो ।। ३
मीरां कहै यूं रुकमणि कहत है थांको ही बिड़द लजैगो ।। ४

३८९–(मी. ली. प. दूधू ५)
३९०–(उ.) (मी. ली. दूधू १)
३९१–(क.) (राम स. गु. पृ. ३२२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३९२ : राग–विहाग : ताल–तिताला
(रहस्यवाद)

माधो बिना बसती उजार, मेरे भाँवे । (टेक)
एक समै मोतियन के धोके, हंसा चुगत जुवार ।। १
सरवर छाँड तलैया बैठे, पंख लपट रही गार ।। २
सरवर सूक तरवर कुम्हलाये, हंसा चले उड़ार ।। ३
मीरां के प्रभु कब ज्यो मिलोगे, लाँबी भुजा पसार ।। ४

○

पद–३९३ : राग–माँड : ताल–कहरवा
(चरित)

मान ल्यो जी म्हारी, अब मीरां म्हारी, थानै सखियाँ बरजै सारी । (टेक)
राजा बरजै, राणी बरजै, बरज बरज सब हारी ।। १
सीसफूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली मोत्यां वारी ।। २
हाथ गूजरी कर में कंकण, नेवर पद झुँणकारी ।।३
साधाँ के सँग बैठ बैठ कर, लाज गुमा दइ सारी ।। ४
नित प्रति जाय साध सँग बैठो, कुल के लावो गारी ।। ५
बड़ा घरां का छोटा कहवो, नाँचो दै दै तारी ।। ६
वर पायो हिंदवाणू सूरज, अब मन काँई धारी ।। ७
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ८

○

पद–३९४ : राग–प्रभाती : ताल–दादरा
(रूप-वर्णन)

मानू मीन सरवर जप तप कर मिलन आई । (टेक)
भृकुटी कुटिल बिसाल चितवन में टोना ।
खंजन और म[....]पान मोये मृगछोना ।। १

३९२–(म.) (फु. प.)
३९३–(म.) (दीना. मं. मी. प. १५)
३९४–(प्रभुना. गुटका से)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नासिका अधर अनूप मंद मंद हासी ।
दसनन दामिनी चिमकत चपला-सी ।। २
कंबु कंठ भुज बिसाल ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर का भेष मानों सकल गुण विशेषा ।। ३
छुद्रघंटिका अधर अनूप किंकिनी धुन सवाई ।
उस गिरधर के अंग अंग मीरां बलि जाई ।। ४

○

पद–३९५ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा
(मीरांबाई ऊदाँबाई सम्वाद)

ऊदाँ–माया थे तो क्यूं तजी भाभी, मीरां क्यूं रे लियो बैराग,
कांईं थारै मन बसी । (टेक)
मीरां–याही म्हारै मन वसी बाई ऊदाँ, यूं र लियौ बैरांग,
माया म्हे यूँर तजी ।। १
ऊदाँ –ऊँचा नीचा बैसणां ये भाभी, उत्तम तिहारी जात ।
राणां सो वर पाइयो हे भाभी, नोकूंटां में थारो राज ।। २
मीरां–ऐसा तो मोती ओस का ये, बाई जैसो यो संसार ।
लगै झकोलो पौन को ये, बाई छिन मैं सब ढल जाइ ।। ३
ऊदाँ –खीर खाँड को भोजन जीमूं, भाभी ओढ़ो दिखणी चीर ।
राणाँ सो बर पाइयो ये, भाभी सब महलाँ में थारो सीर ।। ४
मीरां–खीर खाँड को भोजन त्याग्यो ये, बाई त्याग्यो दिखणी चीर ।
राणाँ सो बर त्यागियो ये, बाई (सब) संतन में म्हारो सीर ।। ५
ऊदाँ –बास्या कूस्या टूकड़ा ये, भाभी और मिलेगी खाटी छाय ।
भैं सोवो भूखाँ मरो ये, भाभी नहीं मिलैगो हरि आय ।। ६
मीरां–बास्या तो खास्यां टूकड़ा ये, बाई पीस्यां खाटी छाय ।
भैं सोवां भूखाँ मराँ ये, बाई जब रे मिलेगो हरि आय ।। ७
माया म्हे तो यूँ तजी. ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटाय ।। ८

३९५–(क.) (दीना. मं. मी. प. ३३)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३६६ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा
(होरी लीला)

मारत मेरे नैन में पिचकारी, मैं तो ईं साँवराजी सूं हारी । (टेक)
नैन बचा कर डारो साँवरा, ओर बदन सब सारी ।
भर पिचकारी गोरा मुख पर मारी, भीज गई सब सारी ।। १
रतन कटोरा में केशर घोरी, हाथ लियें पिचकारी ।
अबके तो रङ्ग डार दियो है, अबके डारो दूंगी गारी ।। २
घर मेरा दूर गागर सिर भारी, मैं नाजुक पनिहारी ।
पनघट घाट छाँड दे कनैया, बोझ्याँ मरे थारी प्यारी ।। ३
बृन्दाबन की कुञ्जगलिन में, भीड़ भई अति भारी ।
मैं तो साँवरा ने पाई अकेली, चूरमूर कर डारी ।। ४
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुंडल की छबि न्यारी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीते हम हारी ।। ५

○

पद–३६७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला
(वात्सल्य)

माँगत माखन रोटी, गोपाल प्यारे । (टेर)
मेरे गोपालजी कूं रोटी बनाय देऊं, एक छोटी दूजी मोटी ।। १
मेरे गोपालजी का ब्याह करूंगी, बिरषभान की बेटी ।। २
मेरे गोपालजी के झबला सिलाऊंगी, मोतिन की लड़ छूटी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल में तो जोती ।। ४

○

३९६–(भ.सं.) । (२३) (पुजा: नाथू. पु. से)
३९७–(का./उ. १/३०६)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–३९८ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(विनय)

म्हांने चाकर राखो जी, साँवरिया म्हांने चाकर राखो जी । (टेक)
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ, नित उठि दरसन पास्यूँ ।
वृन्दावन की कुंजगलिन में, तेरी लीला गास्यूँ ॥ १
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनूँ बाताँ सरसी ॥ २
हरे हरे सब बलहि [महल] बनाऊँ, बिच बिच राखूँ बारी ।
साँवरिया के दर्शन पाऊँ, पहिर कुसुंमी सारी ॥ ३
जोगी आया जोग करन कूं, तप करने सन्यासी ।
हरी भजन कूं साधू आये, वृन्दावन के वासी ॥ ४
मीरां के प्रभु गहिर गँभीरा, हिर्दे रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दर्शन दीन्हे, प्रेम नदी के तीरा ॥ ५

○

पद–३९९ : राग–मांड : ताल–दादरा

(विरह)

म्हांनै भी ले चालो ऊधो ! साँवरा रै देस । (टेक)
लिख लिख पतियाँ भेजती रे वाला, भलो जणायो अपनेस ॥ १
सज्या सिणगार उतारस्यूँ, करस्यूँ भगवाँ भेस ॥ २
थारै कारण बन बन डोलूँ, कर जोगण रो भेस ॥ ३
थारे कारण सब ही छोड्यो, छोड्यो मेड़त्यो देस ॥ ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तन मन हर की भेट ॥ ५

○

३९८–(उ.) (बं.पु. पृ. २९) (भ.र.मी. पृ. २०८)
३९९–(म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४०० : राग–हमीर : ताल–तिताला
(इष्ट-प्राप्ति)

म्हारा ओलगिया घर आया जी । (टेक)
तन की ताप मिटी सुख पाया, हिल-मिल मंगल गाया जी ।। १
घन की धुनि सुनि मोर मगन भया, यूँ मेरे आणंद आया जी ।। २
मगन भई मिलि प्रभु अपणा सूं, भौ का दरद मिटाया जी ।। ३
चंद कूँ देखि कमोदणि फूलै, हरखि भया मेरी कायाजी ।। ४
रंग रग सीतल भई मेरी सजनी, हरि मेरे महल सिधाया जी ।। ५
सब भगतन का कारज कीन्हा, सोई प्रभु मैं पाया जी ।। ६
मीरां बिरहिण सीतल होई, दुख दुन्द दूरि न्हसाया जी ।। ७

○

पद–४०१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(विनय)

'म्हारा गिरधर'[1] रसिया छैल, मैं तो चालूं थारी गैल । (टेक)
पुरी द्वारिका वास करूंली, और समद की ल्हैर ।
सब राण्यां सैं रहूं निराली, जुदा चुणाद्यो म्हैल ।। १
राणों म्हांसूं करी अनीती[2], भोत मचाया फैल ।
मैं तो थांकी संग चलूंली, भोत करूंली ठैल ।। २
राज पाट राणां का छोड्या, और कंचन का म्हैल ।
हाती घोड़ा माल खजाना, और दुनियां की सैल ।। ३
मैं गिरिधर की भक्ती करस्यूं, कटै जनम का मैल ।
आनँद धर मीरां गिरिधर को, कच कंचन का म्हैल[3] ।। ४

४००–(म.)
४०१–(म) (फु.प)
1. पा –गोविंद । 2. पा –कुटिलता ।
3. पा.–"आनँदघन मैं चली सासरे चढ़ कञ्चन की भैल ।"

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४०२ राग–सारंग रसिया : ताल–कहरवा
(प्रार्थना)

म्हारा जनम मरण का साथी, थाँने नहिं बिसरूं दिनराती । (टेक)
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती ।। १
यो संसार सकल जन झूँठो, झूँठा कुल रा नाती ।
दोऊ कर जोड़याँ अरज करत हूं, सुन लीजो मेरी बाती ।। २
पल पल तेरा पंथ निहारूं, निरख निरख सुख पाती ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणाँ चित राती ।। ३

○

पद–४०३ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(चरित)

म्हारा नटनागर गोपाललाल बिन, कारज कौन सुधारे । (टेक)
घूम रह्यो दुरयोधन राजा, जैसे गज मतवारो ।
सिंह होय कर हस्ती मारे, बड़ो भरोसो थारो ।। १
मीरां ने राणाँजी बरजे, मतना जन्म विडारे ।
थे संगत साध की सीख्या, मत आवो म्हैल हमारे ।। २
म्हे संगत साधां की सीख्या, थारे कछुयन सारे ।
तन में रीस भई राणाँ के, ऊठ खडग ले मारे ।। ३
प्याला में विष घोल राणाँजी, मन में कपट विचारे ।
अमृत कर के मीरां पी गई, जहर साँवरो झारे ।। ४
जब जब भीड़ परी भक्तन पर, आपहि कृष्ण पधारे ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि भक्तां ने त्यारे ।। ५

○

४०३–(क) (भजनमंजरी, पृ. ३८)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४०४ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(विनय)

म्हारा सतगुर बेगा आज्योजी, म्हारे सुख री सीर वुवाज्यो जी । (टेक)
तुम बीछड़ियाँ दुख पाऊं जी, मेरा मन माँही मुरझाऊं जी ।। १
मैं कोइल कुरलाऊं जी, कछु बाहरि कहि न जणाऊं जी ।। २
मोहि बाघण विरह सतावे जी, कोई कहियां पार न पावै जी ।। ३
ज्यूं जल त्यागा मीना जी, तुम दरसण बिन खीना जी ।। ४
ज्यूं चकवी रैण न भावै जी, वा ऊगो भाण सुहावै जी ।। ५
ऊ दिन कबै करोला जी, म्हारे आँगण पांव धरोला जी ।। ६
अरज करै मीरां दासी जी, गुरुपद-रज की प्यासी जी ।। ७

○

पद–४०५ : राग–मांड : ताल–दादरा

(प्रार्थना)

म्हारा हरिजी, चाकरी री चाह म्हारे मन राखोला सरण हजूरी । (टेक)
बैल बंधावो भावें घोड़ा बँधावो, चाहै करावो मजूरी ।। १
खाबा पीबा की म्हांकी चिन्ता मत कीज्यौ, कंगनी दीज्यो भाँवें कूरी ।। २
ओढनकूं कारी कामरिया दीज्यो, और चटाई खजूरी ।। ३
जो थे देशी सो म्हे लेशी, योई मत म्हारे पूरी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निज चरणन की धूरी ।। ५

○

पद–४०६ : राग–पीलू पाछमर : ताल कहरवा

(चरित)

म्हारी बात जगत सूं छानी, साधाँ सूं नहिं छानी री । (टेक)

४०४–(म)
४०५–(म.) (प्रहलाद भक्तजी का पाना १)
४०६–(म.) (दीना. मं. मी. प. २०)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साधू मात पिता कुल मेरे, साधू निरमल ग्यानी री ।। १
राणाँ नें समझाओ बाई (ऊदाँ), मैं तो एक न मानी री ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, संतन हाथ विकानी री ।। ३

○

पद–४०७ : राग–आसा मांड : ताल–कहरवा, धीमा
(विनय)

म्हारी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी । (टेक)
पल पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हाँने दीजो जी ।। १
मैं तो हूं बहु औगणहारी, औगण चित्त मत दीजो जी ।। २
मैं तो दासी थारे चरण-जनाँ की, मिल बिछुरन मत कीजो जी ।। ३
मीरां तो सतगुरु के सरणे, हरिचरणाँ चित दीजो जी ।। ४

○

पद–४०८ : राग–मांड
(प्रेम-उत्सुकता)

म्हारी सेजड़ल्यां रँग माणूँजी, म्हारी कुञ्जन का प्यारा पलाड़ूजी । (टेक)
आम्हाँ साम्हाँ महल झुकाऊँ, बिच बिच राखूँ बारी ।
बारी में झाँकत म्हांरे निजर पड़्या गिरधारी ।। १
आम्हाँ साम्हाँ बाग लगाऊं, बिच बिच राखूं गुल-क्यारी ।
आवेलो नंदजी को लाला, टाँके फूल हजारी ।। २
ओछा पायां ढोलणी, रेसम डोर बणावूं ।
तुम बिना नंदजी का लाला, जरा नींद नहिं आवे ।। ३
हरी जरी का लहँगा सोवै, फूलझड़ी की सारी ।
अनवट ऊपर बिछिया सोवै, नथ सोवे भलकाँ-री ।। ४
मथुरा वृन्दावन बिच नाँव लगाऊं, सब सखियन को भेलो ।
मीरां के प्रभु तुम सुख पोढ़ो, यो निजराँ रो मेलो ।। ५*

४०७–(उ.)
४०८–(मं.) (क.) (२७) (पुजा. नाथू. पु. से)
*वर्णन-शैली से भ्रम होता है ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४०९ : राग–आसा मांड : ताल–झूमरा

(विनय)

(थे) म्हारे घर आज्यो जी प्रीतम प्यारा । (टेक)
औगुण है मोमैं गुण नहिं एक हुं, थे ही बकसणहारा ।। १
तन मन धन निवछावर करस्यां, जतन करां म्हे थारा ।। २
मीरां को प्रभु कब'र मिलोगे, तुम बिन नैन दुख्यारा ।। ३

○

पद–४१० : राग–मलार : ताल–कहरवा

(निहोरा)

म्हारे घर आवो जी राम रसिया, थारी साँवरी सुरत मन बसिया । (टेक)
घुड़ला जीन करावो (मन) मोहन, बखतर खासा कसिया ।। १
चुन चुन कलियाँ सेज बिछाई, ऊपर रखिया तकिया ।। २
सिरे गाय को दूध मंगायो, चाँवल गेरचा (भर) पसिया ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरन-कमल मन बसिया ।। ४

○

पद–४११ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(भक्ति)

म्हारे आज रँगीली रात, मनड़ा रा म्हरम आइया । (टेक)
या छवि निरखण सुगन मनावण, अतर सुगंध लगावणां ।। १
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मन-अंछया वर पावणां ।। २

○

४०९–(म) (मा. हरिना. पु. ह.) (मी. ली. प. दूधू १६)
४१०–उ.(७) (पुजा. नाथू. पु. से)
४११–(क.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—४१२ : राग—कामोद छाया : ताल—झूमरा

(विनय)

म्हारैं घर आजो प्रीतम प्यारा, तुम बिन सब जग लागै खारा । (टेक)
तन मन धन सब भेंट करूँ, अर भजन करूँ मैं थारा ।। १
तुम गुणवंत बड़े गुणसागर, मैं हूँ औगनहारा ।। २
मैं निगुणी गुण एको नाहीं, तुझ में जी गुण सारा ।। ३
मीरां कहै प्रभु कबहिं मिलोगे, बिन दर्शन दुखियारा ।। ४

○

पद—४१३ : राग—भैरव : ताल—कहरवा

(विनय)

म्हारै घर रमतो ही आई रे, तू जोगिया । (टेक)
कानाँ बिच कुंडल गले बिच सेली, अंग भभूत रमाई रे ।। १
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, गृह अँगणों न सुहाई रे ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, दरसण द्यौ मोकूं आई रे ।। ३

○

पद—४१४ : राग—सोरठ, तिलक-कामोद : ताल—दीपचंदी

(विनय)

म्हारै घर होता जाज्यो राज । (टेक)
अब के जिन टाला दे जावो, सिर पर राखूं बिराज ।। १
म्हे तो जनम जनम की दासी, थे म्हांका सिरतांज ।। २
पावणड़ा म्हांके भला ही पधारो, सब ही सुधारण काज ।। ३
म्हे तो बुरी थांके भली छै घणेरी, तुम हो एक रसराज ।। ४
थांने हम सबहिन की चिंता, तुम हो गरीबनिवाज ।। ५
सब के मुकट-सिरोमनि सिर पर, मानूं पुज्य की पाज ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बांह गहे की लाज ।। ७

४१२—(म.) (बं. पु. पृ १०)
४१३—(म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४१५ : राग–काफी, मांड : ताल–झूमरा

(विरद-विनय)

म्हारै नैणां आगे रहीजो जी, स्याम गोबिन्द । (टेक)
दास कबीर वालद जो लाया, नामदेव की छान छवंद ।। १
दास धना को खेत निपजायो, गज की टेर सुनंद ।। २
भीलनी का बेर सुदामा का तंदुल, भर मूठड़ी बुकंद ।। ३
करमाँ बाई को खीच अरोग्यो, होई परसण पावंद ।। ४
सहस गोप बिन स्याम बिराजे, ज्यों तारां बिच चंद ।। ५
सब संतों का काज सुधारा, मीरां सूं दूर रहंद ।। ६

○

पद–४१६ : राग–देश, मांड : ताल–कहरवा

(चरित)

म्हारै सिर पर सालिगराम, राणाँजी म्हारो कांई करसी । (टेक)
मीरां सूं राणां ने कही रे, सुण मीरां मोरी बात ।
साधों की संगत छोड़ दे रे, सखियां सब सकुचात ।। १
मीरां ने सुन यों कही रे, सुन राणाजी बात ।
साध तो भाई बाप हमारे, सखियां क्यों अकुलात ।। २
विष का प्याला भेजिया रे, दीजो मीरां हाथ ।
अमृत कर के पी गई रे, भली करें दीनानाथ ।। ३
मीरां प्याला पी लिया रे, बोली दोउ कर जोर ।
तैंतो मारण की करी रे, मेरो राखणहारो ओर ।। ४
आधे जोहड़ कीच है रे, आधे जोहड़ हीज ।
आधे मीरां एकली रे, आधे राणाँ की फौज ।। ५
काम क्रोध को फेंक के रे, सील लिये हथियार ।
जीती मीरां एकली रे, हारी राणाँ की धार ।। ६
काचगिरी का चौंतरा रे, बैठे साध पचास ।
जिनमें मीरां ऐसी दमके, लख तारों में प्रकास ।। ७

४१६–(क.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

टांडा मीरां लादिया रे, बेगी दीना जाण ।
कुलकी तारण अस्तरी रे, चली है पुष्कर न्हाण ।। ८

○

पद–४१७ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

म्हारे हिरदै लिख्यो हरि नांव, अब मैं ना बिसरूं । (टेक)
मीरां गढ़ सूं ऊतरी जी, छापा तिलक बणाय ।
पगां बजावत घूंघरा जी, हाथ बजावतं ताल ।। १
माला कंठी दोलड़ी जी, सीलबरत सिंणगार ।
जो कोई हिरदै बसै जी, जो कोई आवणहार ।। २
राणूँ मन मैं कोपियो जी, मारो याके सेल ।
मारचां तो पिराछित लगै जी, पीहर दो याकों मेल ।। ३
रथड़ा बहल जुपाइया जी, ऊँटां कसिया भार ।
डावो छोड़ो मेड़तो जी, पेलां पोषर जाय ।। ४
राणां साँड्या मोकल्या जी, पाछा ल्यावो मोड़ ।
कुल की माँडण इस्तरी जी, मुरड़ चली राठोड़ ।। ५
मीरां बचन उचारियों जी, गिरधर म्हारो मोड़ ।
थे पाछा जावो साँडिया जी, काँने मोड़ो जोड़ ।। ६

○

पद–४१८ : राग–हमीर, बहार : ताल–तिताला

(दृढ़ता, प्रेम)

म्हारो मनड़ो राजी राजी जी । (टेक)
कांई करैला म्हारो दुरजन पुरजन, कांई करैला भूँठा पाजी जी ।। १
कांई करैला म्हारो राजा-राणी, कांई करैला मुल्ला काजी जी ।। २

४१७–(दाना. मं. मी. प. १४)
४१८–(उ) (रामस. गु. पृ. १४६)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राम प्रीतम सूं हिलिमिलि खेलूं, परतन छांडूं बाजी जी ।। ३
मीरां के प्रभु प्रीति पूरबली, तुम मत जाणों आजी जी ।। ४

○

पद–४१६ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(विनय)

म्हारो मनड़ो लाग्यो हरि सूं, मैं अरज करूं अंतर सूं । (टेक)
माधो री मूरति पलक न विसरूं, सो ले हिरदै धरसूं ।। १
आवन कह गये अजहुं न आये, बिन दरसण मैं तरसूं ।। २
म्हारो जनम सुफल हो जा दिन, हरि के चरणां परसूं ।। ३
मीरां के प्रभु दरसण दीज्यो, तन मन अरपण करसूं ।। ४

○

पद–४२० : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(प्रेम)

म्हारो मन मोह्यो छै जी स्यांम सुजांण । (टेक)
माधुरी मूरत सुंदरी सूरत, जाणें कोटिक भाँन ।। १
पाग कसूमल केसरयां जामूं, सोहै कुंडल काँन ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, तुम बिन तलफत प्रांण ।। ३

○

पद–४२१ : राग–परज : ताल–तिताला

(विरह)

म्हारो मन मोहि लीनों माई हे जसोधा के नन्दन । (टेक)
तनक बांसुरिया श्रवननि में धुनि परी अधिक दुख दंदन ।। १

४१९–(उ.) (रामस. गु. पृ. १५४)
४२०–(राम स. गु.)
४२१–(उ.) (रास-पद-संग्रह से)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कछु न रही सुधि बुधि मति सजनी, परी हों प्रेमरस फंदन ।। २
आठ जाम मोहि कल न परत है, ज्यों भुजंग बिन चंदन ।। ३
भूली लाज काज सुनि सजनी, परयो अधिक रस फंदन ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, करि राखो भुजबंधन ।। ५

○

पद ४२२ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(चरित)

म्हांने बोल्यां मति मारो जी राणाँ, यो लै थारो देस ।* (टेक)
मीरां म्हलां सें ऊतरी, कोई सात सहेल्याँ माँय ।
खेलत पायो काँकरो, कोई सेवा सालगराम (गिरधरराय) ।। १
साधजी आया पावणां, कोई मीरां कै दरबार ।
जाजम दीनो बेसणो, कोई ढोल्यो दीनो ढाल (र) ।। २
जैर पियालो राणाँजी भेज्यो, द्यो मीरां नै प्याय (हाथ) ।
कर चिरणामृत पी गई मीरां, थे जाणों दीनांनाथ ।। ३
सांप पिटारो राणाजी भेज्यो, दीज्यो मीरां नै जा'र ।
कर खँगवालो पहरियो, कोई हो गयो नोसर हार ।। ४
राणांजी कागद भेजियो, कोई द्यो मीरां नै जाय ।
साधां की संगत छोड़ द्यो, मीरां बैठो राण्यां रै मांय ।। ५
काढ कटारो राणाजी भेज्यो, दूजी भेजी तरवार ।
एक मीरां की दो करां कोई, दो की हो गई च्यार ।। ६
राणों मीरां सें यों कहे जी, कस्यो थारो भगवान ।
राज पाट सब छोड़स्याँ कोई, म्हे भी भजां भगवान ।। ७
कच्चो रँग उड़ जाय छै जी, पक्को रँग नहिं जाय ।
मीरां कै रंग गोपाल को जी, अब छूटण को नांय ।। ८

○

४२२–(क.) (का. ह. नं. १)
*म्हांनै तानां मत मारो हो राणां, यो ले थारो देस ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४२३ : राग–मांड : ताल–दीपचंदी

(चरित)

म्हांनै गुरु गोबिन्द री आगा, गोरल नाँ पूजां । (टेक)
(सास) ओर ज पूजै गोरजा जी, थे क्यूँ पूजो न गोर ।
मन-बंछित फल पावस्यो जी, थे क्यूँ पूजो ओर ।। १
(मीरां) नहिं हम पूजां गोरज्यां जी, नहिं पूजां अन देव ।
परम सनेही गोविन्दो थे, काँई जाणो म्हारो भेव ।। २
(सास) बाल सनेही गोविन्दो, साध संताँ को काम ।
थे बेटी राठोड़ की, थाँने राज दियो भगवान ।। ३
(मीरां) राज करै ज्याँना करणै दीज्यौ, मैं भगताँ री दास ।
सेवा साधू-जनन की म्हारे, राम मिलण की आस ।। ४
(सास) लाजै पीहर सासरो, माई तणो मोसाल ।
सब ही लाजै मेड़तिया जी, थाँसूँ बुरा कहे ससार ।। ५
(मीरां) चोरी कराँ न मारगी, नहिं मैं करूं अकाज ।
पुन्न कै मारग चालतां, झक मारो संसार ।। ६
नहिं मैं पीहर सासरे, नहिं पियाजी री साथ ।
मीरां ने गोविन्द मिल्या जी, गुरु मिलिया रैदास ।। ७

○

पद–४२४ : राग–भैरवी : ताल–धीमां

(उलहना, विनय)

म्हांसूं मुखड़ै क्यूं नहिं बोलो (राम) ।।
म्हांसूं काँई गुना लियो छै अबोलो । (टेक)
पहली प्रीति करी हरि हमसूं, प्रेम प्रीति कौ झोलो ।। १
प्रेम प्रीति की गांठ्यां घुलि गई, याने कुँण बिध खोलो ।। २
कुबज्या दासी कंसराय की, ऊँकी सरभर तोलो ।। ३
मीराँ के प्रभु कव'र मिलोगे, हिवड़ा री गांठ्यां खोलो ।। ४

४२३–(क.)
४२४–(२ म.) (रामस. गु. पृ. १४७)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४२५ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा, तिताला

(प्रेम)

मिथुला, कर पूजन की त्यारी । (टेक)
धूप दीप नैवेद्य आरती सब ही सौंज ले आ री ।। १
बहु विध सूं पकवान बना कर, करो भोग की त्यारी ।। २
जीमैंलो म्हारो पिया गिरधर, साधाँ ने बेग बुला री ।। ३
(मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणाँ पर बलिहारी) ।। ४

○

पद–४२६ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(लीला)

मिथुला, सुन यह बात हमारी । (टेक)
राजभोग को समैं हुई है बेग थाल सज ला री ।। १
छप्पन भोग छतीसों विंजन सीतल जल की झारी ।। २
धूप दीप नैवेद्य आरती कीजे बेग तयारी ।। ३
धरिये भोग विलंब न करिये मेरी मान पियारी ।। ४
जीमें म्हारो प्यारो गिरधर साधां ने बेग बुला री ।। ५

○

पद–४२७ : राग–गौड़ सारंग वा छाया : ताल–कहरवा

(विरद विनंय)

मिलता जाज्यो हो गुर ज्ञानी*, थाँरी सूरत देखि लुभानी । (टेक)
मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मैं हूं बिरह दिवानी ।। १
रात दिवस कल नाहिं परत है, जैसे मीन बिन पानी ।। २
दरस बिना मोहि कछु न सुहावे, तलफ़ तलफ़ मुरझानी ।। ३
मीरां तो चरणन की चेरी, सुन लीजो सुखदानी ।। ४

४२६–(स. मा. मी. ली. ५)
४२७–(उ.)
*पाठांतर–मिलता जाज्यो हो जी गुमानी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४२८ : राग–ईमन : ताल–कहरवा वा तिताला
(विनय)

मीरां को प्रभु सांची दासी बनाउ ।
झूठे धंधाँ रे मेरा फंदा छुड़ाउ । (टेक)
लूटेहि लेत विवेक का डेरा,
बुद्धिबल यदपि करूं बहुतेरा ।।
हाय राम नहिं कछु बस मेरा,
मरत हूं विवस प्रभु धाउ सवेरा ।। १
धरम उपदेश नितप्रति सुनती हूं,
मन कुचाल से भी डरती हूं ।।
सदा साधु सेवा करती हूं,
सुमरन ध्यान में चित करती हूं ।।
भक्तिमार्ग दासी को दिखाउ,
मीरां को प्रभु साँची दासी बनाउ ।। २

○

पद–४२९ : राग–खम्माच : ताल–कहरवा
(मीरांजी को ब्याहुलो)

मीरां तो जनमी मेड़ता सजनी म्हारी हे ।
आन लियो औतार पिय म्हारो गिरधारी ।। (टेक)
और सहेली पूजे गौरजा सजनी म्हारी हे ।
थे भी पूजो बाई गौरी पिय म्हारो गिरधारी ।। १
और तो पूजे गौरजा हे सजनी म्हारी हे ।
सो म्हांको सालिगराम पिय म्हारो गिरधारी ।। २
पिरोहित उरे बुलायके हे सजनी म्हारी हे ।
मीरां की लगन लिखाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ३

४२८–(म.) (बं. पु. पृ. २६)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पिरोहित बैसो बिच जाय कै हे सजनी म्हारी हे ।
पौंच्यो छै गढ चित्तौर हे पिय म्हारो गिरधारी ।। ४
गहली भई मीरां बावली सजनी म्हारी हे ।
अकल[न] कुमारी बाई बसै पिय म्हारो गिरधारी ।। ५
कागद मीरां मोकल्यो हे सजनी म्हारी हे ।
थारी खुसी परै तो राणा आव पिय म्हारो गिरधारी ।। ६
हाथी सिंघारे राणा सातसै सजनी म्हारी हे ।
घुड़ला वार न पार पिय म्हारो गिरधारी ।। ७
नेजे तो आवै चमकता सजनी म्हारी हे ।
उड़ती आवै छै खेह पिय म्हारो गिरधारी ।। ८
कांकड़ आयो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
कांकड़ां करहा झुकाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ९
आन पौहुंच्यो राणा मेड़तै सजनी म्हारी हे ।
वाजो बहोत बजाय पिय म्हारो गिरधारी ।। १०
बाग तो आयौ राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
तँबुवा दिये हैं तनाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ११
तोरण आयो राणां राजई सजनी म्हारी हे ।
कांमनि कलस सँवारि पिय म्हारो गिरधारी ।। १२
फेरां तो आयौ राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
एक मीरां की मीरां दोय पिय म्हारो गिरधारी ।। १३
हथलेवां में आयो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
हथलेवां में सालगराम पिय म्हारो गिरधारी ।। १४
परण पधारचो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
पहुंच्यो गढ़ चित्तौर पिय म्हारो गिरधारी ।। १५
महेलां पधारचो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
एक मीरां की मीरां चारि पिय म्हारो गिरधारी ।। १६
सद्दां उरै बुलाय कै सजनी म्हारी हे ।
मीरां कूं समझाय पिय म्हारौ गिरधारी ।। १७
समझायें समझै नहीं सजनी म्हारी हे ।
बजर-सिला विष बांट पिय म्हारौ गिरधारी ।। १८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बज्र-सिला बिष बांटियौ सजनी म्हारी हे ।
पट फैंटा बिष छानि पिय म्हारौ गिरधारी ।। १९
पट फैंटा बिच छानियौ सजनी म्हारी हे ।
देवो मीरांजी कूं जाय पिय म्हारौ गिरधारी ।। २०
चरणोदक आरोगियौ सजनी म्हारी हे ।
दूनौ बढ़यौ है सनेह पिय म्हारौ गिरधारी ।। २१
पगां जु बांधे घूघरा सजनी म्हारी हे ।
गावै छै गुन गोविन्द पिय म्हारौ गिरधारी ।। २२
पटका खोल पगां परयो सजनी म्हारी हे ।
अपनौ गुरु जु बताय पिय म्हारौ गिरधारी ।। २३
म्हांको गुरु रैदास है सजनी म्हारी हे ।
जिन सेयो है सालगराम पिय म्हारौ गिरधारी ।। २४
गावै से मीरां दासनी सजनी म्हारी हे ।
पढ़ै सुनै फल होय पिय म्हारो गिरधारी ।। २५

○

पद–४३० : राग–भैरवी : ताल–तिताला धीमा

(चरित)

मीरां मगन भई हरि के गुण गाय । (टेक)
साँप पिटारा राणा भेज्या, मीरां हात दियो जाय ।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ।। १
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय ।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो गई अमर अँचाय ।। २
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरां सुलाय ।
साँझ भई मीरां सोवण लागी, मानों फूल बिछाय ।। ३
मीरां के प्रभु सदा सहाई, राखे विघन हटाय ।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय ।। ४

४२९–(क.); (मा. ह. पु. ह. ३)।
४३०–(उ.); (मीराँबाई के भजन नं. २३)।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४३१ : राग– कालिगड़ा : ताल–कहरवा

(चरित)

मीरां मन मानी सुरत सैल असमानी । (टेक)
जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी ।। १
ज्यों हिये पीर तीर सम लागत, कसक कसक कसकानी ।। २
रात दिवस मोहि नींद न आवत, भावे अन्न न पानी ।। ३
ऐसी पीर विरह तन भींतर, जागत रैन विहानी ।। ४
ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी ।। ५
तासों पीर कहूँ तन केरी, फिर नहिं भरमो खानी ।। ६
खोजत फिरूं भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ।। ७
रैदास सन्त मिले मोहि सतगुरु, दीन्हीं सुरत सहदानी ।। ८
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ।। ९
मीरां खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी ।। १०

○

पद–४३२ : राग–धनाश्री : ताल–कहरवा

(चरित)

मीरां रंग लाग्यो हो नांम हरी, और रंग अटकि परि । (टेक)
गिरधर गास्यां[1] सती न होस्यां, मन मोह्यो घण[2] नामी ।
जेठ बहू को नहिं[3] राणाजी, थे सेवक म्हे स्वामी ।। १
चोरी करां नहिं जीव सतावां, कांईं करैगो म्हांको कोई ।
गज सूं उतरि गधे नहिं चढ़स्यां, या तो बात न होई ।। २
चूड़ो तिलक दोवड़ो माला, सील वरत सिणगारां ।
और वस्त रत नहीं मुहि भावै (हो राणाजी !) यह गुरग्यान हमारा ।। ३

४३१–(उ.)
४३२ (म.); (क. व. २४) ।
1 पा०—भजस्यां सही ये न होस्यां । 2 पा०—गिरधारी ।
3 पा०—नांतो नहीं छै राणा ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भावै कोई निन्दो भावै कोई बिन्दो, म्हे तो गुण गोविन्दजी रा गास्यां ।
जीं मारग वै संत गया छै, जीं मारग म्हे जास्यां ।। ४
राज करंता नरक पड़ंता, भोगी जोरै लीया ।
जोग करंता मुकति पहुंता, जोगी जुग जुग जीया ।। ५
गिरधर धनी धनी मेरे गिरधर, मात पिता सुत भाई ।
थे थांकै म्हे म्हांकै हो राणाजी, यूं कहै मीरां बाई ।। ६

○

पद–४३३ : राग–झंझोटी-वागेश्वरी : ताल–तिताला

(विनय)

मीरां हरि में लीन भई । (टेक)
सब कूं छांड भज्यो साहिब कूं गुरु की सरण गई ।। १
राणाजी रो राज त्याग्यो संत मुख आइ गई ।। २
राम कृष्ण द्वारका नगरी परकर मांहि रही ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर चरणां लीन भई ।। ४

○

पद–४३४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

मुक्ति को ग(ह)णों पहरस्यां काँई पहरचो हे हरि गुरु परताप । (टेक)
म्हारै भाव भगति का कं(क)ण वण्यां, सांवलड़ो हे म्हारै हतफूल ।। १
म्हारै सील को बाजूबंद थिरक रह्यो, सांवलड़ो हे बाजूबँद री लूम ।। २
म्हारै च्यारूँ जुग चुड़लो वण्यूं, सांवलड़ो हे चुड़ला री चूंप ।। ३
म्हारै जप तप अँगियां भली बणी, सांवलड़ो हे अँगियां री लूम[1] ।। ४
म्हारै तन को तिमण्यों बण्यों, सांवलड़ो हे हिवड़ा रो हार ।। ५
म्हारै नवधा नथ सुहावणी, सांवलड़ो हे मोत्यां बिचली लाल ।। ६

---

४३३ (उ.); (दोना. मं. मी. प. ४०) ।
४३४–(म.) ।
　1 पा०—तनक ततमूल ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

म्हारै फूलझूमका फब रह्या, सांवलड़ो हे झूमर री लूम ।। ७
म्हारै करणी रो काजल घुळ रह्यो, सांवलड़ो हे (म्हारै) तिलक लिलाट ।। ८
म्हारै रामनाम की चूनड़ी, सांवलड़ो हे स्यालूड़ा री कोर ।। ९
म्हे तो नखसिख गहणों पहरियो, म्हे तो जास्यां सांवलड़ा री सेज ।। १०
बाई मीरां रँग में भली रँगी, सांवलड़ो हे (म्हारा) सिर को मोड़ ।। ११

○

पद–४३५ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मुरली ए मोह्या मोहन थारी मुरली ए मन मोह्या । (टेक)
थारे कारण शामलिया व्हाला, त्रण भुवन मैंने जोयां रे । मोहन०
थारा सरखा प्रभु कोई नह दीठा, त्रण भुवन मनड़े मन मोह्या रे । मोहन०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित प्रोयां रे । मोहन०

○

पद–४३६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(चरित)

मेड़तिया रा कागद आया, बाई मीरां ने जा खीज्यो जी । (टेक)
बोहत भांति से लिख्या ओलँभा, कुल कै दाग मत दीज्यो जी ।। १
साधां को सँग परो निवारो, वेद साख सुण लीज्यो जी ।। २
मीरां प्रभु को संग छांड्यो, पति आज्ञा में रीज्यो जी ।। ३

○

पद–४३७ : राग–पीलू, बरवा : ताल–कहरवा

(प्रार्थना)

मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार, प्रभुजी अरज करूँ छूँ (टेक)
या भव में मैं बहु दु:ख पायो, संसा सोग गिमार ।। १

४३५–(म.) ।
४३६–(म.); (दीना. मं. मी. प. २६) ।
४३७–(उ.) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अष्ट करम की तलब लगी हैं, दूर करो दुख पार ।। २
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी धार ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आवागवन निवार ।। ४

○

पद–४३८ : राग–सवैया की पीलू बरवा : ताल–कहरवा
(विरहाधिक्य)

मेरा मन कों वैरागी कर गयो रे । (टेक)
हाथ लकुटिया कांधे कमलिया, जमुना पार उतर गयो रे ।। १
बारा बरस से सेवा कीन्हीं, रमती बिरयाँ रम गयो रे ।। २
सुण सुण हे मेरी पाड़ पड़ोसन, जलती में पूलो दे गयो रे ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, धूकती धूनी धर गयो रे ।। ४

○

पद–४३९ : राग–सिन्दूरा : ताल–धमार
(लीला)

मेरी चूनर भिजोवै मैं रे भिजोऊंगी पाग । (टेर)
नंद महरजी को कुँवर कन्हैया, जान न देऊंगी (मैं) आज ।। १
फेंट पकर के फगुवा ल्योंगी, मुख मींडोंगी व्रजराज ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सदा रहो सिरताज ।। ३

○

पद–४४० : राग–सिंध काफी : ताल–तिताला
(ऊदां सम्वाद, चरित)

मेरी बात नहीं जग छानी, ऊदाँ बाई समझो सुघर सयानी । (टेक)
साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ग्यानी ।
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूं बानी ।। १

४३८—(उ) (१) (पु. नाथूनारायणजी की पु. से)
४३९–(उ.) (या० सं. रा. क. से)
४४०–(म.) (स. मा. मी. ली. ७)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणा ने समझावो जावो, म्हे तो बात न मानी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, संतां हाथ बिकानी ।। २

○

पद–४४१

मेरी लाज तुम रखवैया, नंदजी का कुँवर कन्हैया । (टेर)
पैठ पतालाँ कालीनाग नाथ्यो, फण फण नृत्य करैया ।। १
जमुना के नीर तीर धेनु चरावै, मुख से मुरली बजैया ।। २
मोर मुकुट पीतांबर सोहैं, कानाँ कुंडल झलकैया ।। ३
बृन्दाबन की कुञ्ज गलिन में, नाचत है ता थैया[1] ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल परसैया[2] ।। ५

○

पद–४४२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(भक्ति)

मेरे तो एक राम सिया जजमान । (टेक)
कौन बने जन जन का भिक्षुक, घर घर करत बखान ।। मे. ।। १
राम लखन अरु भरत शत्रुहन, अगवाणी हनुमान ।। मे. ।। २
मीरां के प्रभु राम सियावर, तुम ही कृपानिधान ।। मे. ।। ३

○

पद–४४३ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा
(वैराग्य)

मेरे तो* गिरधर गोपाल दूसरा न कोई । (टेक)

४४१–(म.)–(क. । उ. २ । उ ६३)
1 पा. 'दो मैया' । 2 पा. 'परेया'
४४२–(क.) (भ. मीरांबाई हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जाके शिर मोर मुकुट मेरे पति वोई[1] ।
शंख चक्र गदा पद्म कंठ माला सोई[2] ।। १
आई[3] मैं भक्त जान जगत देख मोई ।
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम वेल बोई ।। २
भाई छोड़े बंधु छोड़े छोड़े सगा सोई ।
संतन सँग[4] बैठ बैठ लोक लाज खोई ।। ३
प्रेम की मथनिया कर जुगत सों बिलोई ।
दधि मथ घृत काढ़ लियो छाछ रही छोई ।। ४
अब तो बात फैल गई जानत सब कोई ।
मीरां हरि लगन लगी होनी हो सो होई ।। ५

○

पद–४४४ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा

(वैराग्य)

मेरे तो येक राम नाम दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो[1], सकल लोक जोई ।। (टेक)
भाई छोड़या बंधु छोड़या छोड़या सगा सोई ।
साध्र संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ।। १
भक्त देख राजी हुई जगत देख रोई ।
प्रेम नीर सींच सींच विष-वेल धो[बो]ई ।। २
दधि मथ घृत काढ़ लियो, डार दई छोई ।
राणा विष को प्यालो भेज्यो, पीय मगन होई ।। ३

४४३–(उ.) (सरसमाधुरी मीरां ली. से. ४) गाया–रामचन्द, जैपुर
1–पा. = सोई । 2–पा. = जोई । 3–पा. = मैं तो पार भक्ति जान ।
4–पा. = ढिंग । (मी. जी. का. म. पृ. १८-१९) का ही उपर्युक्त पाठान्तर है और एक अंश भी भिन्न प्रतीत होता है "लोकत्रास छोड़ दियो कहा करे कोई" । पा. = माथे पै ।

४४४–१ पा. = माधो
नोट—यह पद बदनोर के संग्रह में (४६ पदों में) था । सो कुछ पाठभेद होने से लिखा गया । वस्तुत: "मेरे तो गिरधर गुपाल दूसरा न कोई"·····इस पद का पाठ ठीक है और उसही के यह भी आश्रित है वा उसकी छाया ही है ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अब तो बात फैल पड़ी, जानै सब कोई ।
मीरां राम लगन लगी, होनी होय सो होई ।। ४

○

पद–४४५ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह-प्रेम)

मेरे परम सनेही राम की, नित ओलूड़ी आवै । (टेक)
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कुछ न सुहावै ।। १
आवण कह गये अजहूँ न आये, जिवड़ो अति उकलावै ।। २
तुम दरसण की आस रमइया, निस दिन चितवत जावै ।। ३
चरण कँवल की लगन लगी अति, बिन दरसण दुख पावै ।। ४
मीरां कूं प्रभु दरसण दीन्हा, आनँद वरण्यो न जावै ।। ५

○

पद–४४६ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(दर्शनानंद)

मेरे परम सनेही राम की, नित ओलूंड़ी आवै । (टेक)
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछु न सुहावै ।। १
आवन कह्यो अजहूं नहि आये, जिवड़ो अति अकुलावै ।। २
तुम दरसण की आस सांवरिया, निस दिन चितवत जावै ।। ३
चरणकमल की लगन लगी अति, बिन दरसण दुख पावै ।। ४
मीरां कूं प्रभु दरसण दीन्हों, आनँद वरण्यों न जावै ।। ५

○

पद–४४७ : राग–परज : ताल–कहरवा

(विरह-प्रार्थना, विरद)

मेरे प्यारे गिरधारीजी, दासी क्यों बिसार डारी । (टेर)

४४५–(उ.)
४४६–(उ०)
४४७–(म) (या०—प्रति सं. ७८६ । ४८ पद ५२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द्रोपदी की लाज राखी, दुख सों उबारी ।
नरसिंह रूप धारंयो, प्रहलाद पैज पारी ।। १
भीलनी के बेर खाये, (कछु) जाति नां बिचारी ।
कुबज्या सों नेह कीनो, गोतम नारि तारी ।। २
व्याकुल भई तुम बिना, तरसूं रैन सारी ।
मीरां कूं दरस दीजे टुक, सांवरे बिहारी ।। ३

○

पद–४४८ : राग–झंझोटी : ताल–तिताला

(विरह)

मेरे प्रीतम प्यारे राम ने लिख भेजूं री पाती । (टेक)
श्याम सनेसो कबहु न दीनो, जान बूझ गुझ बाती ।। १
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूं, रोय रोय अँखियां राती ।। २
तुम देख्यां बिन कल न परत है, हियो फटत मोरी छाती ।। ३
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरब जनम के साथी ।। ४

○

पद–४४६ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम, भक्ति)

मेरे मन राम नामा बसी । (टेक)
तेरे कारण स्यामसुन्दर, सकल लोगां हँसी ।। १
कोई कहे मीरां भई बौरी, कोई कहे कुल नसी ।। २
कोई कहे मीरां दीप आग री, नाम पिया सूं रसी ।। ३
खांडे धार भक्ती की न्यारी, काटिहै जम की फँसी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सब्द सरोवर धसी ।। ५

○

४४८–(उ.) (वं. पु. पृ. ७)
४४९–(उ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४५० : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(चरित)

मेरे राणाजी मैं गोविन्द गुण गाना । (टेक)
राजा रूठे नगरी राखे अपनी, हर रूठे कहां जाना ।। १
राणा भेज्या जहर प्याला, मैं अमृत कर पी जाना ।। २
डिबिया में काला नाग जो भेज्या, मैं सालिग्राम कर जाना ।। ३
मीरां बाई प्रेम दिवानी, मैं सांवरिया बर पाना ।। ४

○

पद–४५१ : राग–बडहंस सारंग : ताल–तिताला

(लीला)

मेरो मन बसिगो गिरधरलाल सों । (टेक)
मोरमुकुट पीताम्बरो गल बैजन्ती माल ।
गउवन के संग डोलत हो जसुमति को लाल ।। १
कालिन्दी के तीर हो कान्हा गउवाँ चराय ।
सीतल कदम की छहियाँ हो मुरली बजाय ।। २
जसुमति के दुवरवां ग्वालिनि सब जाय ।
बरजो आपन दुलरुवाँ हमसों अरुझाय ।। ३
वृन्दाबन क्रीड़ा करै गोपिन के साथ ।
सुर नर मुनि सब मोहे, हो ठाकुर ज़दुनाथ ।। ४
इन्द्र कोप घन बरखो मूसल जलधार ।
बूडत बृज को राखेऊ मोरे प्राण अधार ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधर हो सुनिये चित लगाय ।
तुम्हरे दरस की भूखी हो मोहि कछु न सोहाय ।। ६

○

४५०–(क.) (का. ह. नं. १)
४५१–(क.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४५२ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी

(चरित)

मेरो मन मैं हरि सूं जोरयो, हरि सूं जोर सकल सूं तोरयो । (टेर)
मेरी प्रीत निरंतर हरि सूं, ज्यूं खेलत बाजीगर गोरयो ।
जब मैं चली साध के दरसण, तब राणो मारण कूं दौरयो ।। १
जहर देन की घात बिचारी, निरमल जल में ले विष घोरयो ।
जब चरणोदक सुण्यो सरवणा, राम भरोसे मुख में ढोरयो ।। २
नाचन लगी जब घूंघट कैसो, लोकलाज तिणका ज्यूं तोरयो ।
नेकी बदी हूं सिर पर धारी, मन हस्ती अंकुस दै मोरयो ।। ३
प्रगट निसान बजाय चली मैं, राणा राव सकल जग जोरयो ।
मीरां सबल धणी के सरणे, कहा भयो भूपति मुख मोरयो ।। ४

○

पद–४५३ : राग–खमावती आसावरी : ताल–दीपचंदी

(चेतावनी)

मेरो मन राम हि राम रटै रे । (टेक)
राम नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ।। १
जनम जनम के खत जु पुराने, नाम हि लेत फटै रे ।। २
कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटै रे ।। ४

○

पद–४५४ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी

(निश्चय)

मेरो मन लाग्यो सखी संवलिया सों, काहु की बरजी नाहिं रहोंगी । (टेक)
जो कोउ मोको एक कहेगो, एक की लाख कहोंगी ।। १

४५२–(उ.)
४५३–(उ.)
४५४–(उ.) (मी. जी. का. प्र. पृ. १८)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सासु बुरी है ननद हठीली, यह दुख काहे बहोंगी ।। २
मीरां प्रभु गिरधर के कारण, जग उपहास सहोंगी ।। ३

○

पद–४५५ : राग–ईमन : ताल–कहरवा

(विनय)

मेरो मन हर लीनो राजा रणछोड़ ।
राजा रणछोड़, प्यारा रंगीला रणछोड़ ।। (टेर)
[1]केशव माधव श्री पुरुषोतम, कुबेर कल्याण की जोड़ ।। १
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे[2], माधुरी मुरली किशोर ।
मोरमुकुट शिर छत्र बिराजे, कुण्डल की छवि ओर ।। २
[3]चार पास रत्नागर गाजे, गोमतीजी है शिरमोर ।
धजा पताका बहुत्यां फरके, झालर करत झकझोर ।। ३
सब भक्तन के भाग्य हि प्रकटे, नाम धरचो रणछोड़ ।
जे कोई तेरो नाम सुणावे, पावे युगल-किशोर ।। ४
मीरां (बाई) के प्रभु गिरधरनागर[4], कर ग्रहो नंदकिशोर ।। ५

○

पद–४५६ : राग–पीलू : ताल–तिताला

(चरित)

मेरो मन लाग्यो हरिजी सूं, अब न रहूंगी अटकी । (टेक)
गुरु मिलिया रैदासजी, दीन्हीं ज्ञान की गुटकी ।
चोट लगी निज नाम हरी की, म्हारे हिवड़े खटकी ।। १

४५५–(म.) (का. उत । ४ । ४०६ ।)
1 पा०–"विक्रम माधव श्री पुरुषोत्तम, कुंवर कल्याणी जोड़ ।
राधा रुक्मणी श्री सत्यभाभा, जंबुकबरणी रे जोड़ ।
2 पा०–"मुख मुरली घनघोर" ।
3 पा०–"आसपास रत्नाकर सागर, गोमती करे कलोल" ।
4 पा०–"हरि मारा दिलडाना चोर" ।
४५६–(उ)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

माणक मोती परत न पहिरूँ, मैं कब की ही नटकी ।
गेणो तो म्हारे माला दोवड़ी, और चंदन की कुटकी ।। २
राजकुल की लाज गमाई, साधां के संग मैं भटकी ।
नित उठ हरिजी के मंदर जास्याँ, नाचां दे दे चुटकी ।। ३
भाग खुल्यो म्हारो साध संगत सूँ, साँवरिया की बटकी ।
जेठ बहू की काण न मानूँ, घूँघट पड़ गइ पटकी ।। ४
परम गुराँ के सरण में रहस्याँ, परणांम करां लुटकी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जनम मरण सूँ छुटकी ।। ५

○

पद–४५७ : राग–सोरठ मलार : ताल–तीलवाड़ा

(तुष्टि)

मेहा बरसवो कर रे, आज तो रमिया मेरे घर रे । (टेक)
नान्हीं नान्हीं बून्द मेघ घन बरसे, सुख सरवर भर रे ।। १
बहुत दिनां पै प्रीतम पायो, बिछुरन को मोहिं डर रे ।। २
मीराँ कहे अति नेह जुड़ायो, मिलीयो पूर्वलो वर रे ।। ३

○

पद–४५८ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(लीला)

मैया मोरे भाग जागे साधू आये पावना । (टेर)
चुवा चंदन घिस लियो अंग को लगावना ।। १
मथुरा मां कंस मारा लंकापति रावणा ।। २
राजा वलि द्वारे ठहरी रूप लिया भावना ।। ३
गोकुल में जाके ठहरी द्वारका वसावना ।। ४
मीरां बाई हरि की दासी पद को लगावना ।। ५

○

४५७–(उ.) (वं पु. पृ. ३२)
४५८–(ग)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४५६ : राग बहार : ताल–तिताला
(प्रेम-दृढ़ता)

मैं अपने सैय्यां सँग सांची । (टेक)
अब काहे की लाज सजनी, प्रगट ह्वै ह्वै नाची ।। १
दिवस भूख न चैन कबहिन, नींद निसु नासी ।
वेध वार को पार ह्वै गो, ज्ञान गुह गांसी ।। २
कुल कुटुम्ब सब आनि बैठे, जैसे मधु मासी ।
दास मीरां लाल गिरधर, मिटी जग-हांसी ।। ३

○

पद–४६० : राग–आसावरी वा आसा : ताल–कहरवा
(विरद-प्रेम-भक्ति)

मैं अमली हरिनांव की मुझि बाइड आवै ।
पीया पियाला प्रेम का कुछि और न भावै । (टेक)
या तन की कूंडी करूं मन पोसत भेऊं ।
ग्यांन गलणीयां हाथि ले इम्रतरस पीऊं ।। १
पीया जोगी भरथरी गुर गोरष पायो ।
धन माता मैंणावती सुत पैं राज छुड़ायो ।। २
और अमल किस काम का, चढ़ि उतर जावै ।
अमल करो इक नांम का अमरापुर जावै ।। ३
अमल किया मावा भया सुष रैन बिहावै ।
अमलनु कल हरि पुरवै जस मीरां गावै ।। ४

○

४५९-(उ)
४६०–(क.) (रामस. गु. पृ. ४७६)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४६१ : राग–वसंत : ताल–तीन ठाह

(प्रेम-रहस्य)

मैं गिरधर रँग राती, ग्वैया । (टेक)
पचरँग चोला रँगा दे सखी, मैं झुरमुट खेलन जाती ।
ओहि झुरमुट मेरा सांईं मिलेगा, खोल तनी गल गाती ।। १
चंदा जायगा सूरज जायगा, जायगी धरन अकासी ।
पवन पानी दोनूं ही जायगा, अटल रहे अविनासी ।। २
सुरत निरत का दिउड़ा सँजोले, मनसा की करले बाती ।
प्रेम हटा का तेल मँगा ले, जग रह्या दिन तैं राती ।। ३
जिनके पिया परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजैं पाती ।
मेरे पिया मेरे मांहि बसत हैं, कहूं न आती जाती ।। ४
पिहरे बसूं न बसूं सास घर, सद्गुरु शब्द सुनासी ।
नाँ घर तेरा नाँ घर मेरा, कह गई मीरां दासी ।। ५

○

पद–४६२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मैं जांण्यो नाहीं प्रभु को मिलण कैसे होइ री । (टेक)
आये मेरे सजना फिरि गये अंगना, मैं अभागण रही सोइ री ।। १
फारूंगी चीर करूं गल-कंथा, रहूंगी वैरागण होइ री ।। २
चुरिया फोरूं, मांग बखेरूं, कजरा मैं डारूं धोइ री ।। ३
निस बासर मोहि विरह सतावै, कल न परत पल मोइ री ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, मिलि बिछुरो मति कोइ री ।। ५

○

४६१–(म.) (बृ रा र. पृ. १२२)
४६२–(उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—४६३ : राग—आसावरी : ताल—तिताला

(प्रेम)

मैं तेरै रंग राती गुसांइयां, मैं तेरे रंग राती । (टेक)
औरां के पिया परदेस बसत हैं, लिष लिष भेजै पाती ।
मेरा पिया मेरै निकट बसत है, मैं कह न सकूं सरमाती ।। १
सुवा सुवा चोला पहर सषी मैं, झरमट षेलन जाती ।
षेलत षेलत मिले सांवरे, षोल मिली हिय गाती ।। २
मदवा पी पी सब मदमाती, मैं बिन पीयाँ मदमाती ।
प्रेम भटी का मैं रस चाष्या, (मैं) छकी रहूं दिन राती ।। ३
वह दूल्हौ मोहि व्याहन आवै, आप कृष्ण व्रजबासी ।
मीरां कै गिरधर मन मान्यों, मैं स्यामसुन्दर की दासी ।। ४

○

पद—४६४ : राग—भैरवी : ताल—तिताला

(विनय)

मैं तो तेरी सरण परी रे रामाँ, ज्यूँ जाणे ज्यूँ तार । (टेर)
अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयो, मन नाहीं मानी हार ।। १
या जग में कोई नहीं अपणां, सुनियौ श्रवण कुमार ।। २
मीरां दासी राम भरोसे, जम का फंद निवार ।। ३

○

पद—४६५ : राग—भैरवी :-ताल—दीपचंदी

(विनय)

मैं तो थारे दामन लगी जी गोपाल । (टेक)
किरपा कीजो दरशण दीजो, सुध लीजो तत्काल ।। १

४६३—(म) राम स. गु.)
४६४—(उ.)
४६५—(उ.) (वृ. रा. र. पृ. ५४७)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गल वैजंतीमाल विराजै, दर्शण कर भई हूं निहाल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भक्तन के रछपाल ।। ३

○

पद–४६६ : राग–काफी : ताल–कहरवा
(विरह विनय)

मैं तो थारे बिड़द भरोसे अविनासी, मैं तो थारे. । (टेक)
या जग माहीं स्वामी तुम पत राखो, मत नै कराज्यो जग हाँसी ।। १
तंत्र न जानूं स्वामी मंत्र न जानूं, वेद पढ़ी नहिं कासी ।। २
अब तो सांवरिया मोहे दरसण दीज्यो, मत नैं कराज्यो म्हारी हाँसी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण-कंवल की मीरां दासी ।। ४

○

पद–४६७ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा
(प्रेम)

मैं तो राजी भई मेरे मन में, मोहि पिया मिले इक छिन में । (टेक)
पिया मिल्या मोहि किरपा कीन्ही, दीदार दिखाया हरि ने ।। १
सतगुरु सबद लखाया अंसरी[1], ध्यान लगाया धुन में ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मगन भई मेरे मन में ।। ३

○

पद–४६८ : राग–बहार : ताल–तिताला
विहारी भाषा
(विरह)

मैं तो लागि रही नँदलाल से ।। (टेक)

४६६–(उ.)
४६७–(म.)
1 पा० = अंतरी ।
४६८–(क.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हमरे बांटहिं दूज न यार, लाल लाल पगिया झिन झिन बार ।। १
सांकर खटुलना दुइ जन बीच, मन कइले बरषा तन कइले कीच ।। २
कहां गइलें बछरू कहां गईलीं गाय, कहां गइलें धेनु चरावन राय ।। ३
कहां गइलीं गोपी कहां गइलें बाल, कहां गइले मुरली बजावनहार ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरलाल, तुम्हरे दरस बिनु भइल बेहाल ।। ५

○

पद–४६६ : राग–देश : ताल–तिताला
(प्रेम-कामना)

मैं तो म्हारा रमिया नें देखबो करूँ री । (टेर)
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण, तेरो ही ध्यान धरूँ री ।। १
जहां जहां पांव धरूं धरणी पर, तहां तहां निरत करूँ री ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणां लिपट परूँ री ।। ३

○

पद–४७० : राग–मालकोश : ताल–तिताला
(प्रेम)

मैं तो सांवरे रँग राची । (टेक)
सजि सिंगार बांध पग घुंघरूँ, लोकलाज तजि नांची ।। १
गई कुमति लई साधु-संगति, भगत रूप भई सांची ।। २
गाय गाय हरि के गुन निस दिन, काल व्याल सों बांची ।। ३
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब कांची ।। ४
मीरां श्री गिरधरनलाल सूं, भगति रसीली जांची ।। ५

○

४६९–(उ.) (बं. पु पृ २५)
४७०–(उ.) (मीरां प. वि. कु. मुं. पृ. ७७)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४७१ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(प्रेम-दृढ़ता)

मैं तौ सुमरचा छे मदनगोपाल, राणांजी म्हारो कांई करसी । (टेक)
मीरां बैठ्या महल में जी, छापा तिलक लगाय ।
आया राणांजी महल में जी, कोप करचो छै मन मांय ।। १
मीरां महलां सें ऊतरचा जी, ऊंटां भार कसाय ।
डांवो छोड्यो मेड़तो, कोई सूदा द्वारका जाय ।। २
राणांजी सांड्यों भेजियो जी, पाछा लावो मोड़ ।
घर की नार इस्तरी चाली (छै) मुड़ राठोड़ ।। ३
लाजै पीहर सासरो जी, लाजै माय'र बाप ।
लाजै दूदाजी रो मेड़तो जी, कोई चोथी गढ़ चीतोड़ ।। ४
त्यारूं पीहर सासरो जी, त्यारूं माय'र बाप ।
त्यारूं दूदाजी रो मेड़तो, कोई चोथी गढ़ चीतोड़ ।। ५
(राणांजी) विष का प्याला भेजिया जी, द्यो मीरां के हाथ ।
कर चरणामृत पी गया जी, आप जानो दीनानाथ ।। ६
पेयां नाग छोड़िया जी, छोड़ो मीरां के महल ।
हिवड़े हार हिंडोलिया, कोई तुम जानो रघुनाथ ।। ७

○

पद–४७२ : राग–ब्रहार : ताल–तिताला
(प्रेम)

मैं तो हरि गुण गावत नांचूंगी । (टेक)
अपने महल में बैठ कर प्रभुजी, गीता भागवत बांचूंगी ।। १
ज्ञान-ध्यान की गठरी बाँधकर, हिरदे मन में राचूंगी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सदा प्रेम रस चाखूंगी । ३

○

४७१–(का. ह. नं. १)
४७२–(उ.) (ब्रह्मानन्द भजनलहरी पृ. ५–६)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४७३ : राग–नट : ताल–पश्तो

(भक्ति-महिमा)

मैं तो हरि चरणन की दासी, अब मैं काहे को जाऊं कासी । (टेक)
घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट घट हैं अबिनासी ।
घट ही में पुसकर औ लोधेश्वर, लछिमन कंवर बिलासी ।। १
जगंनाथ गंगासागर हैं साखी गुपाल ब्रजवासी ।
सेतुबंध रामेश्वर ईश्वर, मूल वटी सुरजा सी ।। २
अवधपुरी मधुपुरी द्वारिका, चित्रकूट यमुना सी ।
गोवरधन गोकुल बृन्दावन, बीच मंडल चौरासी ।। ३
हरिद्वार कुरुखेत जनकपुर, गोदावरी हुलासी ।
तीरथ बड़े प्रयाग गयाजी, कासी तरुवर वासी ।। ४
बिंध्याचल रु ग्रिनार रंग हैं, सुघर कपिल दुखनासी ।
बदरीनाथ केदार गंगोतरि, बैजनाथ कैलासी ।। ५
पंचवटी पंपापुर रुक्मिणि, देव कपिल युवरासी ।
नैमषार शृंगी रिष मिसरिष, कासी पाप-बिनासी ।। ६
मटुकनाथ अरु मानसरोवर, मानलता अरु हाँसी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सहज कटै यम फाँसी ।। ७

○

पद–४७४ : राग–परज : ताल–धीमा

(प्रेम)

मैं थारे गुण रीझी हो रसिक गोपाल । (टेर)
निस बासर मोय आस तिहारी, दरसन द्यो नंदलाल ।
सो मद भगत करो जनि सादो, मत बिसरो नंदलाल ।। १
काहू के चंदो काहू के मंदो, काहू के उर में माल ।
प्रेम भरी मीरां जिन गरजै, हिरदै गिरधरलाल ।। २

४७३–(म.) (प्रा. सा. भा. १ पृ. १३४–३५)
४७४–(प्रभुनारायणजी के गु. से सं. १९)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

(येक) घड़ी घड़ी पल मोये जुग सम बीतत, हो गई हाल बेहाल ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, छुट गई जग जंजाल ।। ३

○

पद–४७५

(बाल-लीला)

मैं नाहीं दधि खायो जसोदा मैया । (टेर)
प्रात समय गौवन के पीछे, मधुबन मोहि पठायो ।। १
सारे दिन (मैं) बंसीवन भटक्यो, सांझ पड़े घर आयो ।। २
ले ले अपनी लकुटि कटुलिया, बहुत हि नाच नचायो ।। ३
मैं ढोटो पावन को छोटो, ये विन कैसे पायो ।। ४
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाड़े, माखन मुख लपटायो ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जसुमत कंठ लगायो ।। ६

○

पद–४७६ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

मैंने सारा जंगल ढूंढा रे जोगीड़ा न पाया । (टेर)
कानूं बिच कुन्डल (जोगी) गले बीच सेली ।
घर घर अलख जगाया रे ।। जोगीडा०
अगर चंदन की (जोगी) धूणी धवाई ।
अंग (बीच) भभूत लगाया रे ।। जोगीड़ा०
(बाई) मीरां के प्रभु गिरधरनागर ।
शब्द का ध्यान लगाया रे ।। जोगीड़ा०

○

४७५–(चि.) (का.। उ. ४।३६६)
नोट — इस वर्णन का पद सूरदासजी का है । संभवतः उस ही की छाया लेकर यह रचा गया हो, अथवा कुछ हेरफेर से मीरां नाम धर दिया हो । सं० ।।
४७६–(उ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४७७ : राग–बीलावल : ताल–तिताला

(विरह)

मैं बिरहिन बैठी जागूं, जगत सब सोवै री आली । (टेक)
बिरहिन बैठी रंग महल में, मोतियन की लड़ पोवै ।। १
इक बिरहिन हम ऐसी देखी, अँसुवन की माला पोवै ।। २
तारा गिन गिन रैन बिहानी, सुख की घड़ी कब आवै ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल के बिछुड़ न जावै ।। ४

○

पद–४७८ : राग–पीलू बरवा : ताल–दीपचंदी

(प्रेम-दृढ़ता)

मैं मेरो हरि सैं जोड़यो, हरि सैं जोड़ सकल सैं तोड़यो । (टेक)
हरि भक्तन की संगत कीनी, राणूं लै मारण कूँ दौड़यो ।
मेरो मन गिरधर सूँ लाग्यो, ज्यूँ बाजीगर नाचत दौड़यो ।। १
बिष हि दैन को मतो उपायो, माही लै तुलसी जल छोड़यो ।
जब मैं श्रवण सुण्यो चरणामृत, राख भरोसो मुख में डारयो ।। २
नाच नची जब घूँघट कैसो, लोकलाज तुणका ज्यूँ तोड़यो ।
मीरां सरण सबल गिरधर की, कहा भयो किण ने मुख मोड़यो ।। ३

○

पद–४७९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम)

मैं हरि बिन क्यों जीऊँ री माय । (टेक)
पिय कारन बौरी भई, जस काठहि घुन खाय ।
औषध मूल न संचरे, मोहि लागो बोराय ।। १

४७७–(उ.)
४७८–(म.) (दीना. मं. मी. प. २१)
४७९–(म)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कमठ दादुर बसत जल महँ, जल हि तें उपजाय ।
मीन जल के बीछुरे तन, तलफि के मर जाय ।। २
पिय ढूंढ़न बन बन गई, कहुं मुरली धुन पाय ।
मीरां के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ।। ३

○

पद–४८० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा, तिताला
(विनय)

मोरी गलियन में आवो जी घनश्याम । (टेक)
पिछवाड़े आय हेला दीजो, ललिता सखी है मेरो नाम ।। १
हा हा करत हूं पैयां परत हूं, मत करो मान गुमान ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तव चरनन में ध्यान ।। ३

○

पद–४८१ : राग–काफी वा घुमर : ताल–कहरवा
(चरित)

मोरी ज्यान मोहोब्बत लगाई रे, गिरधर पीतम प्यारे सों । (टेक)
मीरां गढ सूं ऊतरी जी, छापा तिलक लगाय (बनाय) ।
पगां बजावै घूघरा जी, हात बजावै ताल ।
दोन्यां की जोड़ी मिल गई रे ।। १
सेज रमां और सुख करां जी, करस्यां रँग मतवाल ।
मीरां नै गिरधर मिल्या जी, आवागमन निवार ।
रूप में रल गई रे ।। २

○

४८०–(मीरांबाई के भजन नं० २६)
४८१–(क)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४८२ : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(विरद विनय)

मोरे प्यारे गिरीवरधारीजी दासी क्यों विसार डारी ।
द्रोपदी की लाज राखी सब दुख से निवारी ।।
प्रह्लाद पैज पारी, नृसिंह देह धारी ।
भिलणी के झूंटे बेर खाये, कछु जात ना विचारी ।।
कुवजा सों नेह लाया और गोतम की नारि तारी ।
प्यासी फिरौं दरस विन तलफौं मोहे काहे विसारी ।।
मीरां को दरसन दीजे गिरिधर अपनी ओर निहारी ।।

○

पद–४८३ : राग–बागीश्वरी : ताल–झपताल, चोताला

(विरहाधिक्य)

मो-सी दुखिया कूं लोग सुखिया कहत हैं । (टेक)
ऐसो री अड़ीलो कंथ दीयो है विधाता मोकूं ।
सेज हू न आवै प्यारौ न्यारौ ही रहत है ।। १
तारा तौ अंगारा भया सेज भई भाषसी ।
पीया को पिलंग मांनूं आगि जू रहत है ।। २
जरि बरि षाष मैं तो भीतर बेहाल भई ।
विरह की करवत मेरा हीया में वहत है ।। ३
द्यौस तो यूं ही गयौ रैंनि हू विहानी है ।
मीरां तो बेहाल भई दरस कूं चहत है ।। ४

○

४८२–(म.)
४८३–(क.) (राम स. गु. पृ. २२५)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४८४ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(विरह)

मोहन आवन की कोई कीजो रे, आवन की मनभावन की । कोई०
आप न आये पतियां न भेजे, ये बात ललचावन की । कोई०
बिन दरसन व्याकुल भई सजनी, जैसी बिजलियां सावन की । कोई०
कहा करूं कित जाऊं मोरी सजनी, पांख हुये तो उड जावन की । कोई०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, इरछा लागी हरि पायन[1] की ।। कोई०

○

पद–४८५ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–तिताला
(विरह-वेदना)

मोहन मुसक्याने सखी, लागे सोही जाणे । (टेक)
मैं जल जमुना जात बृन्दाबन, वो पीछे से आणे ।
काँकरी दे मोरी गगरी गिराई, जोरी से बैंयां मरोरी,
सखी कोई रीत न जाणे ।। १
मैं दधि बेचन जात बृन्दाबन, वो सामे से आणे ।
दधि की मटकी सिर से गिराई, लूट लूट दधि खाणे,
सखी कोई मरम न जाणे ।। २
घायल की गति घायल जाणे, जे कोई निकसे आणे ।
मीरां को कह्यो बुरो न मानो, आखिर जात अहीर,
सखी ये प्रीत न जाणे ।। ३

○

४८४–(उ.)
पा.–१ बतलावन की
१४–(देखो–कोई कहियो रे)
४८५–(क.) (पु. स्व. ना.)

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४८६ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(भक्ति-दर्शन)

मोहन लागत प्यारा राजाजी, मोहन लागत प्यारा । (टेर)
जिन की कला से हालत चालत, धरण अकास अधारा ।
जिनको कल में सब जग भूल्यो ये ही पुरुष है न्यारा ।। १
तुम भी झूँठे, हम भी झूंठे, झूंठे सव संसारा ।
नारि पुरुष के सम्बन्ध झूँठे तो फूटचा हिया तुम्हारा ।। २
तुम ही कहो अरधंगा हमारी, हम हूँ लगाया कारा ।
कोटि ब्रह्मांड में व्यापि रह्यो है, सो निज वर है हमारा ।। ३
सालू पीतांबर मोतिन की माला, लेई अगन में जारा ।
छाप तिलक तुलसी की माला, साधु संग निसतारा ।। ४
हरि के भजन बिन जो दिन खोये, धिक मनषा जनम जमारा ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर शरण को विरद संभारा ।। ५

○

पद–४८७ : राग–हमीर : ताल–तिताला

(भक्ति)

मोहे लागी लगन गुरु-चरनन की । (टेक)
चरन बिना कछुवे नहिं भावै, जग-माया सब सपनन की ।। १
भवसागर सब सूखि गयौ है, फिकर नहीं मोहि तरनन की ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आस वही गुरु-सरनन की ।। ३

○

पद–४८८ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(प्रेम-लीला)

यदुवर लागत है मोहिं प्यारो । (टेक)

४८६–(का./उ. १/३१९)
४८७–(उ.)
४८८–(म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल में पग धारो ।
जन्मत ही पूतना गति दीनी, अधम उधारन हारो ।। १
यमुना के तीरे धेनु चरावे, ओढे कामल कारो ।
सुन्दर बदन कमल दल लोचन, पीताम्बर पटवारो ।। २
मोरमुकट मकराकृत कुण्डल, कर में मुरली धारो ।
शंख चक्र गदा पद्म विराजै, संतन को रखवारो ।। ३
जल डूबत व्रज राखि लियौ है कर पर गिरिवर धारो ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जीवन प्राण हमारो ।। ४

○

पद–४८९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(चेतावनी)

यहि विधि भक्ति कैसे होय ।
मन की मैल हिय तें न छूटी, दियो तिलक सिर धोय ।। (टेक)
काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहि चंडाल ।
क्रोध कसाई रहत घट में, कैसे मिले गोपाल ।। १
बिलार विषया लालची रे, ताहि भोजन देत ।
दीन हीन व्है छुधा-रत से, राम नाम न लेत ।। २
आप ही आप पुजाय केरे, फूले अँग न समात ।
अभिमान टीला किये वहु, कहु जल कहाँ ठहरात ।। ३
जो हिये अन्तर की जानै, तासों कपट न बनै ।
हिरदे हरि को नाम न आवै, मुख तें मनिया गनै ।। ४
हरो हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग ।
दास मीरां लाल गिरधर, सहज़ कर बैराग ।। ५

○

४८९–(२ म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४६० : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(लीला)

या व्रज में कछु देख्यो री टोना । (टेक)
ले मटुकी शिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्द के छौना ।। १
दधि को नाम बिसर गई ग्वालनि, ले लेहु री कोउ श्याम सलौना ।। २
वृन्दाबन की कुंज गलिन में, आँख लगाय किया कित गौना ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुन्दर श्याम सुघर रस लौना ।। ४

○

पद–४६१ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

या मोहन के मैं रूप लुभानी । (टेक)
हाट बाट मोहि रोकत टोकत, या रसिया की मैं सारी न जानी ।। १
सुन्दर बदन कमलदल लोचन, बाँकी चितवन'रु मंद मुसकानी ।। २
यमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, वंसी में गावै आली मीठी-मीठी बानी ।। ३
तन मन धन गिरधर पै वारूं, चरण कमल मीरां लपटानी ।। ४

○

पद–४६२ : राग–कल्याण : ताल–दादरा, तिताला

(प्रेम-विरह-वर्णन)

यों आवति मन मैं री मोहि न गोपाल फिरों री ।
निरखत ही बारिज बदन अति विबस भई हों री । (टेर)
कर मुरली लुकटी लै (अरु) पीत वसन धारो ।
काछ खुभी गोपबेष गोधन बन चारो ।। १

४९०–(२ म.) (बृ. रा. र. पृ. १२४)
४९१–(उ.) (बृ. रा. र. पृ. ५४७)
४९२–(उ.) (या०—प्रति सं. ७०५/४२ का पद २३८)
नोट—इस पद के अंतरे 'ताल दादरा' में बैठते हैं परन्तु स्थाई उक्त ताल में नहीं बैठती । इससे अनुमान होता है कि दो भिन्न-भिन्न पदों का भूल या अज्ञान से मिश्रण हुआ है ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हमहुं भई गुल्मलता बृन्दाबन रैनो ।
खग मृग पसु मर्कट मिलि श्रवन सुनत बैनो ।। २
गुरजन गृह लाज कठिन कासों दुख कहिये ।
मीरां के प्रभु गिरधर बिन कैसे ब्रज जीये ।। ३

○

पद–४९३ : राग–सारंग घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेमदृढ़ता)

यो तो रँग धत्ताँ हि लाग्यो हे माय । (टेक)
पिया पियाला अमरत[1] रस का, चढ़ गई घूम घुमाय ।
यो तो अमल म्हारो कबहु न उतरै, कोट करो न उपाय ।। १
साँप पिटारा में राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गल डार ।
हँस हँस मीरां कंठ लगायो, यो तो म्हारे नोसर हार ।। २
विष को प्यालो राणाजी मेल्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय ।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविन्द रा गाय ।। ३
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सुहाय ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काचो रंग उड़ जाय ।। ४

○

पद–४९४ : राग–झंझोटी वा गंधारी टोडी : ताल–तिताला

(प्रेमप्रवाह)

रघुनन्दन आगे नाचूंगी ।[1] (टेक)

४९३–(म.) 1 पा.–राम हि रस ।
[1]"यो तो रँग म्हारा स्यामसुन्दर को जनम जनम नहिं जाय" (ऐसा भी पाठ है) (देखो "धत्तां लाग्यो हे माय-राम रंग···· ····" ।)

४९४–(उ.)
1 पाठान्तर–(१) मैं गिरधर आगे नांचूंगी ।
(२) चितनंदन आगै नांचूंगी ।
(३) नंदनंदन आगे नांचूंगी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नाँच नाँच रघुनाथ रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ।। १
प्रेम प्रीत का बाँध घूघरा, सुरत की कछनी काछूँगी ।। २
लोक लाज कुल की मरजादा, या मैं एक न राखूँगी ।। ३
पिया के पलँगा जा पौढ़ूंगी, मीराँ हरि रँग राचूँगी ।। ४

○

पद–४९५ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

रटता क्यों नहिं रे हरिनाम, तेरे कौडी लगे नहीं दाम । (टेर)
नर देह सुमिरन कूं दीन्ही, बिन सुमिरे बेकाम ।। १
बालपणो हँस खेल गुमायो, तरुण भयो बस काम ।। २
पाँव दिया तोहे तीरथ करने, हाथ दिये कर दान ।। ३
नयन दिये तोहे दरसन करने, श्रवण दिये सुन ज्ञान ।। ४
दाँत दिये तेरे मुख की शोभा, जीभ दिई भज राम ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, है जीवन बेकाम ।। ६

○

पद–४९६ : राग–तिलंग : ताल–दीपचंदी

(ज्ञानोपदेश)

रमइया बिनि यो जिवड़ौ दुख पावै, कहौ कुण धीर बँधावै । (टेक)
यौ संसार कुबधि को भांडो, सांध सगति नहीं भावै ।। १
राम नाम की निन्दा ठाँणै, करम अकरम हि कुमावै ।। २
राम नाम बिन मुकति न पावै, फिर चौरासी जावै ।। ३
साध संगत में कबहुँ न जावै, मूरख जनम गँमावै ।। ४
जन मीरां सतगुर के सरणैं, जीव परमपद पावै ।। ५

○

४९५–(उ.)
४९६–(म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–४९७ : राग–विहाग : ताल–कहरवा
(विरह)

रमइया बिन रह्यो ही न जाई । (टेक)
खान पान मोहि फीको सो लागै, नैणाँ रहे मुरझाई ।। १
बार बार मैं अरज करत हूँ, रैण गई दिन जाई ।। २
मीराँ कहै हरि तुम मिलियाँ बिन, तरस तरस तन जाई ।। ३

○

पद–४९८ : राग–बरवा वा सोरठ : ताल–तिताला ठाह
(चरित और दृढ़ता)

रमस्यां सादूड़ां री लार, यो तो मन लाग्यौ वैराग में । (टेक)
रमती जोयो मीरां कांकरो, सेवा सालगराम ।
धूप दीप्र ले मैं पूजती, यो बर म्हारो सरदार ।। १
सादूड़ा तो आया मीरां बाग में, कानाँ सुणी छै अवाज ।
आयोड़ा सादाँ नै दीज्यौ बैसणो, पंखा पवन डुलाय ।। २
लिख रे पत्र राणे भेजियो, दीजो मेड़तणी रे हात ।
सादूड़ाँ रो सँग राणी छोड़ द्यो, करो नी उदियापुर रो राज ।। ३
लिख रे पत्र मीरां भेजियो, दीज्यो मेवाड़चां रे हात ।
सादूड़ाँ रो सँग राणा ना छुटै, काँई कराँला थारो राज ।। ४
सिंघ पकड़ राणो जुड़ दियो, मीरां सेवा करबा जाय ।
खोल किंवाड़ी मीरां देखियो, हो गया निरसँघ औतार ।। ५
विड़द छाँडूं तो लाजै मेड़तो, लाजै राणूं सिरदार (साथ) ।
मीरां तो दासी थारी जनम की, थे जाणूं दीनानाथ ।। ६

○

४९७–पा. = जाय, मुरझाय, दिन जाय, तन जाय ।
४९८–(सं.) (३ क.)

T CC-0. RORI. Digitized by Srj Muthulakshmi Research Academy

पद–४९९ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

रमैया बिन नींद न ग्रावै, (बिरह सतावै), प्रेम की ग्राँच ढुलावै । (टेक)
बिन पिया जोत मँदिर अँधियारो, दीपक दाय न ग्रावै ।
पिया बिना मेरी सेज ग्रलूनी, जागत रैन बिहावै,
पिया कबरै घर ग्रावै ।। १
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल शब्द सुनावै ।
घुमड घटा ऊलर होइ ग्राई, दामिन दमक डरावै,
नैन मोरे झर लावै ।। २
कहा करौं कित जाऊँ मोरी सजनी, बेदन कोन मिटावै ।
विरह नागिन मोरी काया डसी है, लहर-लहर जिय जावै,
जडी घसि लावै हि लावै ।। ३
को है सखी सहेली सजनी, पिया कूं ग्रानि मिलावै ।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, मनमोहन मोहि भावै,
कबै हँस कर बतलावै ।। ४

○

पद–५०० : राग–ग्रासावरी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम, विरह)

रमैया मैं तो थारे रँग राती । (टेक)
ग्रउराँ[1] के पिय परदेस बसत हैं, लिख-लिख भेजें पाती ।
मेरे पिया मेरे हिये बसत हैं, गुंज करूँ दिन राती ।। १
चूवा[2] चोला पहिर सखी री, मैं झुरमुट रमवा जाती ।
झुरमुट में मोहि मोहन मिलिया, खेल मिलूँ गलबाँही[3] ।। २
ग्रउर[4] सखी मद पी पी माती, मैं विन पियाँ मदमाती ।
प्रेम-भटी को मैं मद पीयो, छकी फिरूं दिन राती ।। ३

४९९–(ट.) (१ उ.) (बं. पु. पृ. १४)
५००–(म) (बं. पु. पृ. ३५)
पाठान्तर (१. उ), 1 ग्रौराँ । 2 चूडा । 3 गलछाही । 4 ग्रौर ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुरत निरत का दिवला सँजोया, मनसा पूरन बाती ।
अगम-घानि का तेल सिंचाया, वल[1] रही दिन राती ।। ४
दासी मीराँ के प्रभु गिरधर, हरि चरणाँ की दासी[2] ।। ५

○

पद–५०१ : राग–भैरवी : ताल–तिताला
(विरह)

रस भरिया महाराज, मोकूं आय सुनाई बांसुरी । (टेक)
सुन बांसुरी भई बावरी, निकसन लाग्यो सांस री ।। १
रकत रती भर नां रह्यो री, नांहि मांसा भर मांस री ।। २
तन तिनका सो व्है गयो, रही निगोरी सांस री ।। ३
मैं जमुनाजल भरन जात ही, मांसा ननद की त्रास री ।। ४
मीरां कूं प्रभु गिरधर मिल गये, पूजी मन की आस री ।। ५

○

पद–५०२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(प्रेम)

रसिक गुपाल मैं थारे गुण रीझो हो (रसिक गुपाल) । (टेक)
निस बासर म्हारै आस तिहारी, दरसण द्यो नंदलाल ।। १
सो मद भगत करो जिन साधो, मत बिसरो नंदलाल ।। २
काहू के चंदो काहू को मंदो, काहू के उर माल ।। ३
प्रेम-भरी मीरां घन गरजे, हिरदै गिरधरलाल ।। ४

○

पाठान्तर–1 बली । 2 राती ।
५०१–(१ उ.) (म. मा. मी. ली. २५)
५०२–(उ.) (दीना. मं. मी. प. १८)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५०३ : राग–सिन्दूरा : ताल–धमार
(लीला)

रँग भरी रँग भरी रँग सूं भरी री।
होली आई प्यारी रँग सूं भरी री। (टेक)
उड़त गुलाल लाल भये बादल,
पिचकारिन की लगी झरी री ।। १
चोवा चन्दन और अरगजा,
केसर गागर भरी धरी री।
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर,
चेरी होय पायन् में परी री ।। ३

○

पद–५०४ : राग–मारू : ताल–एकताला
(जीवदशा, उपदेश)

राणाँजी कर्मां रो सँगाती, कुल में कोई नहीं। (टेक)
एक तो माता रै दोय दोय डीकरा, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत
वाँकी न्यारी न्यारी करमां रेष। राणाँ० ।। १
एक तो राजाजी री गद्दी बैठिया, दूजो हल'र बैल भरतो पेट।
राणाँ० ।। २
एक तो माता रै दोय दोय डीकरी, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
ज्याँकी न्यारी न्यारी करमाँ रेष। राणाँ० ।। ३
एक तो मोतियन मांग भरावती, दूजी घर-घर की पनिहार।
राणाँ० ।। ४
एक तो गऊ रे दो-दो बाछड़ा, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
वाँकी न्यारी न्यारी करमाँ रेष। राणाँ० ।। ५
एक तो महादेवजी रै मंदिर नादियो, दूजो बणजारा रे हाथ।
राणाँ० ।। ६

५०३–(उ.)
५०४–(सं०, ३ क.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

एक तो कुम्हार रे दोय दोय मटकियाँ, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
ज्याँकी न्यारी न्यारी करमां रेष । राणाँ० ।। ७
एक तो महादेवजी रे मंदिर जल चढै, दूजी चमाराँ रे हाथ,
राणाँजी करमाँ रो सँगाती, जग में कोई नहीं ।। ८

○

पद–५०५ : राग–वागेश्वरी, कानड़ा : ताल–तिताला
(राणा-संवाद)

राणाँजी तें जहर दियो मैं जाणी (टेक)
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबांणी ।। १
लोकलाज कुलकाण जगत् की, दी बहाय ज्यूं पांणी ।। २
अपने घर का[1] परदा कर लो, मैं अबला बौरांणी ।। ३
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकांणी ।। ४
सब संतन पर तन मन वारों, चरणकमल लपटांणी[2] ।। ५
मीरां के प्रभु राख लई है, दासी अपनी जाणी ।। ६

○

पद–५०६ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(आत्मेतिहास)

राणांजी थारो देसड़लो रँग रूड़ो । (टेक)
थांरे[1] मुलक में भक्ति नहीं छै, लोग बसे सब कूड़ो ।। १
पाट[2] पटंबर सब ही मैं त्यागा, सिर बांध्यो छै जूड़ो ।। २

५०५–(भक्त-चरितावली पृ. १४८)
1 पा०—कुल का ।
2 पा०—"स्वपच भक्त वारौं तन मन तैं हौं हरि हाथ बिकानी ।
मीरां के प्रभु गिरधर भजिवे को, संत-चरण लपटानी ।।"
देखो—"राणांजी जहर दियो म्हे जाणो ।।
५०६–(१ उ.)
1 पा०—रामनाम की भक्ति न भावै ।
2 पा०—गहणो तो गांठो मीरां सब ही त्याग्यो, त्याग्यो छै वैया रो चूड़ो ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

माणिक[3] मोती सब ही मैं त्यागा, तज दियो कर को चूड़ो ।। ३
मेवा मिसरी[4] मैं सब ही त्यागा, त्याग्या छै सक्कर बूरो ।। ४
तन की मैं आस कबहु नहिं कीनी, ज्यूं रण मांही सूरो ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बर पायो मैं पूरो ।। ६

○

पद–५०७ : राग–ईमन, बिलावल : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास)

राणाँजी थे क्याने राखो मोसूं बैर । (टेक)
राणाँजी[1] म्हाँने ऐसा लगत है, ज्यूं ब्रिरछन में कैर ।। १
मारू[2] धर मेवाड़, मेरतो, त्याग दियो थांको सैर ।। २
थारे रूस्याँ राणाँ कुछ नहिं बिगड़ै, अब हरि कीनी म्हैर ।। ३
मीरां के[3] प्रभु गिरधरनागर, हट कर पी गई ज्हैर ।। ४

○

पद–५०८ : राग–आसा मांड : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास, पूर्वजन्म)

राणाँजी म्हारी प्रीत पुरबली मैं क्या करूं ? (टेक)
राम नाम बिन घड़ी न सुहावे, राम मिले म्हारा हियरा ठराय ।
भोजनिया नहिं भावे म्हाँने, नींदड़ली नहिं आय ।। १
विष का प्याला भेजिया जी, जावो मीरां पास ।
कर चरणामृत पी गई, म्हारे रामजी को विश्वास ।। २

५०६–3 पा०—पाल दुसाला मीरां सब सोई, त्याग्या, सिर पर बांध्यो छै जूड़ो ।
4 पा० – मेवा मिठाई मीरां सब ही त्यागे, त्याग्यो छै साग और बूरो ।
५०७–(म.)
1 पा० –"आप राणाजी म्हाँने इसड़ा लागो, जैसा जंगल कैर ।"
2 पा० –"मारे घर मेवाड़, मेड़त्यो, सारा छोड्या सहर ।"
3 पा०—कहै ।
4 पा० –रामभरोसै पियो जहर ।
५०८–(३ क.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विष का प्याला पी गई जी, भजन करे राठोर ।
थाँरी मारी ना मरूँ, म्हारो राखणहारो और ।। ३
छापा तिलक बनाविया जी, मन में निश्चय धार ।
रामजी काज सँवारिया जी, म्हाँने भावें गरदन मार ।। ४
पेयाँ बासक भेजिया जी, ये है चन्दनहार ।
नाग गले में पहरिया जी, म्हारे महलाँ भयो उजार ।। ५
राठोडाँ की धीयड़ी जी, सीसोद्यां के साथ ।
ले जाती बैकुंठ को जी, म्हारी नेक न मानी बात ।। ६
मीरां दासी राम की जी, राम गरीबनिवाज ।
जन मीराँ की राखजो जी, बाँह गहे की लाज ।। ७

○

पद–५०९ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(आत्मेतिहास)

राणाँजी म्हारे गिरधर प्रीतम प्यारो,
हो राणाँजी म्हारे गिरधर प्रीतम प्यारो । (टेक)
व्यापक होय रह्यो घट-घट में, है सब ही से न्यारो ।
अन्तर घट की सब ही जाणे, सब ही को सरजणहारो ।। १
आप तो भेज्या बिषरा प्याला, दे मीरां ने मारो ।
कर चरणामृत पी गई जी, गिरधर संकट टारो ।। २
जन्म-जन्म रो पति परमेश्वर, राणोंजी कोन बिचारो !
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, साँचो बँसरीबारो ।। ३

○

पद–५१० : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास)

राणाँजी म्हारो काँईं करसी, मैं तो सेया छै श्री भगवान । (टेक)

५०९–(१ उ) (मी. प. जमा. राम. ८)
५१०–(३ क) (मीराँबाई के भजन नं. १६)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पगां बजावै मीरां घूघरा, हाथां बजावै झाँझ ।
साँवरियो म्हाँने दरसण देसी, परभाताँ और साँझ ।। १
नाग-पिटारी राणाँजी भेजी, हो गयो सालगराम ।
विष रो प्यालो राणाँजी भेज्यो, चरणामृत कियो पान ।। २
साधाँ री संगत मीरांजी छोड़ो, साधां रो संत सुभाव ।
साधाँ री संगत राणाँजी नै छोड़ाँ, गहरो लाग्यो छै घाव ।। ३

O

पद–५११ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(आत्मेतिहास)

राणाँजी म्हे तो गिरधर रा गुण गास्याँ । (टेक)
गुरु-प्रताप साधां री संगत, सहजैं ही तिर जास्याँ ।। १
कथा कीरतन सुण निसबासर, महाप्रसाद ले पास्याँ ।। २
म्हारे तो पण चरणामृत को, नित उठि मन्दिर जास्याँ ।। ३
लोक वेद की काण न मानाँ, राम तणाँ गुण गास्याँ ।। ४
नाँव अमोलिक अमृत पीकै, सिर के साटे लास्यां ।। ५
तुम हठ माँड्यो म्हारे ऊपर, बिष रो प्यालो पास्याँ ।। ६
जन मीरां गिरधर के ऊपर, पीवत मन नाँ डुलास्याँ ।।[1] ७

O

५११–(१ उ.) (दीना. मं. मी. प. १२) (मी. ली. प. दूधू ८)
1 पा०—"राणाँजी मैं तो गोविंद रा गुण गास्याँ ।" (टेक)
चरणामृत का नेम हमारे, नित उठ दरसण जास्याँ ।। १
हरि मन्दिर में निरत करास्याँ, घूँघरिया घमकास्याँ ।। २
राम नाम का जहाज चलास्याँ, भवसागर तर जास्याँ ।। ३
यह संसार बाड़ का काँटा, ज्याँ संगत नहिं जास्याँ ।। ४
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, निरख परख गुण गास्याँ ।। ५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५१२ : राग–सोरठ, कानड़ा : ताल–झुमरा
(राणां-संवाद)

राणाँजी (म्हाँने) जहर दियो म्हे जाणी । (टेक)
अपना[1] कुल का पड़दा कर ल्यो, म्हे[2] अबला बहौराँणी ।। १
जब लग कंचन कसिये तांही, होत न बाराबाँनी ।। २
प्रभुजी मेरो न्याव कियो है, छाँण्यों दूध'र पाँणी ।। ३
कोटिक भूप वारौं संतन परि, जिनके हाथ बिकाँनी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, संत चरण लपटाँणी ।। ५

○

पद–५१३ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी
(भक्ति-दृढ़ता)

राणाँजी[1] म्हाँनैं याही बदनामी मीठी । (टेक)

५१२–(१ उ.) (क. ब. २७)
1 पा०—हम ।
2 पा०—"अपने घर का परदा कर लो मैं अबला बौराँनी ।"
3 सिवाय पा०—"राणाँजी परधान पठायो सुनजो जी थे राँणी ।
जो साधन को संग निवारो करूँ तुमें पटराँणी ।।"
4 सिवाय पा०—"हथलेवो राणाँ सँग जुड़ियो, गिरधर घर पटराणी ।
कोड़ भूप साधाँ पैं वारूं जिनकी सरण रहाँणी ।।"
5 पा०—मीरां को पति एक रमैयो, चरण कमल लपटाँनी ।
(मुन्शी देवीप्रसादजी की पुस्तक से पा. १ से ५ तक)

५१३–(१ उ.) (क. ब. २१)
नोट—पाठ भिन्न-भिन्न होने के कारण पूरा पद लिखा गया ।
१ पा०—"याही बदनाँमी मीठी हो,
राणाँजी (थारी) याही बदनामी मीठी । (टेक)
रावली ड्योढ्याँ मैं सतगुरु मिलीया, किस विधि फिरूं जी अपूठी ।। १
सतसंगति मैं ज्ञांन सुणैं छी, दुरजन लोगाँ मोहि दीठी ।। २
यो मन मेरो हरिमैं बसीयो, जैसें रंग मजीठी ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, दुरजन जलो ज्यूँ अँगीठी ।। ४
(रामस. गु. पृ. ३१८)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साँकड़ली सेर्याँ मैं म्हाँनें साधूजन मिलिया, क्यूं कर फिरूं अपूठी ।। १
रामजी सूं मैं तो बात करै छी, दुरजन लोगाँ दीठी ।। २
बुराँजी कहो नें कोई भलाँजी कहो नें, नें मानो किसी की बसीठी ।। ३
जन 'मीरां' कहै निन्दक प्राणी, जल बलि होइ (न) अँगीठी ।। ४

○

पद–५१४ : राग–आसावरी वा सोरठ : ताल–दीपचंदी

(राणाँ-सम्वाद)

राणाँजी मैं साँवरे रँग राची । (टेक)
साज सिंगार बाँध पग घुंघरू, लोक लाज तज नाची ।। १
गई कुमति लई साधन संगति, भक्त रूप भई सांची ।। २
गाय गाय हरि के गुन निसदिन, काल व्याल सूं बाची ।। ३
उन बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काची ।। ४
मीरां श्रीगिरधरनलाल सूं, भक्ति रसीलो जांची ।। ५

○

पद–५१५ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(आत्मेतिहास)

राणाँजी हूं अब न रहूंगी तोरी हटकी ।
साध-संग मोहि प्यारा लागै, लाज गई घूंघट की । (टेक)
पीहर मेड़ता छोड़ अपना, सुरत निरत दोउ चटकी ।
सतगुरु मुकर दिखाया घटका, नाचूंगी दे दे चुटकी ।। १
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूड़ी कर की पटकी ।
मेरा सुहाग अब मोकूं दरसा, और न जाने घट की ।। २
महल किला राणाँ मोहिं न चहिये, सारी रेसम पट की ।
हुई दिवानी मीरां डोलै, केस लटा सब छिटकी ।। ३

५१४–(उ.)
५१५–(१ उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५१६ : राग–बिहाग वा सोरठ : ताल–तिताला बिलंबित

(राणाँ-सम्वाद)

राणाँजी हूं गिरधर रै घर जाऊँ । (टेक)
गिरधर म्हारो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ ।। १
रैन पड़ै तबही उठ जाऊँ, भोर भये उठ आऊँ ।। २
रैन दिनाँ वाके सँग खेलूं, रीझै त्योंहि रिझाऊँ ।। ३
ज्यो पहरावे सोई पहरूँ, ज्यो दे सोई खाऊँ ।। ४
मेरे उनके प्रीत पुराणी, वाँ बिन पल न रहाऊँ ।। ५
जहाँ बैठावै तहां ही बैठूं, बेचै तो बिक जाऊँ ।। ६
जन[1] मीरां गिरधर रै ऊपर, बार बार बलि जाऊँ ।। ७

○

पद–५१७ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(पूर्वजन्म-चरित)

राणाँजी हूं तो गिरधर कै मन भाई । (टेक)
जैमल कै घरि जनम लियो है, राणाँ नैं परणाई ।
साँचा सनेही म्हारै रामसंतजन, जासूं प्रीति लगाई ।। १
पुरवै जनम की होती गोपक्या, चूक पड़ी मुझि मांहीं ।
जगत लाज उपजी घट भींतर, तब हरि नैं छिटकाई ।। २
जै पकड़ोगा हाथ हमारो, खबरदार मन माँहीं ।
साँचा मनसूं सराप ज द्यूंली, बलि'र भसम होई जाई ।। ३
जनम-जनम की मैं दासी राम की, थारी नाँहि लुगाई ।
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, संत चरण बलि जाई ।। ४

○

५१६–(उ.) (मी: ली. प. दूधू २८)
1 पा०–मीरां के प्रभु गिरधरनागर ।
५१७–(३ क.) (राम. स. गु. पृ. १७६)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५१८ : राग–धनाश्री वा खमाच : ताल–कहरवा
(प्रकीर्णक, निज निश्चय)

राणाँजी हो जाति रो कारण म्हारे को नहीं,
लागो म्हारो हरि भगताँ सूँ हेत । (टेक)
बिदुर कुलां घरि जनमिया, ज्यांकै पावणां हुआ गोपाल ।
वंदि छुड़ाई वसुदेव की, कंस कियो खोकाल ।। १
पाँचूँ पाण्डू छटी द्रोपदी, ज्याँकी न्यारी न्यारी जात ।
सहस अठयासी मुनि आविया, ज्याँकी पण राखी रघुनाथ ।। २
वन में हुती स्योरी भीलणी, ज्याँका आरोग्या ठाकुर बोर ।
ऊँच नींच हरि नां गिणैं, ऐसी म्हारा हरिभगतां री कोर ।। ३
येक वेल दोय तूँबड़ा, ज्याँहूँ की न्यारी न्यारी जात ।
येक तूँबो जंतर चढै, दूजो हरि भगतां कै हाथ ।। ४
संख समदाँ नीपजै, ज्याँहूँ की न्यारी न्यारी जात ।
एक संख सेवा चढ़ै, दूजो भोयड़लां के हाथ ।। ५
एक माटी दोय कलस हैं, ज्याँहूँ की न्यारी न्यारी जात ।
एक कलस सेवा चढ़ै, दूजो कलालाँ रै हाथ ।। ६
कनक कटोरे विष घोलियो, दीयो मीरां के हाथ ।
हरिचरणोदक करि पी लियो, हरिजी भयो सुनाथ ।। ७
सत्र मिली मतो उपाड्यौ, मीरां नै विष द्यौह ।
कह्यौ सुण्यौं मानैं नहीं, नीच लग्यौ हठ यौह ।। ८
नगर बसै बामण बाणियाँ, भीतर शुद्र पंवार ।
मुँह मोड़ै मुलक्याँ हँसै, समझै नहीं गँवार ।। ९
गढ़ चित्तोड़ै नां रहाँ, नहीं रहण जोग ।
वसस्याँ रूड़ी द्वारिका, जहाँ हरि भगताँ को भोग ।। १०
परख लेत परचो भयो, मन उपज्यो विसवास ।
सिर पर सिरजनहार है, पूगी (म्हाँ) मन की आस ।। ११
कुंभ स्याम कै देवरै, मिली है राणों राण ।
मीरां नैं गिरधर मिल्या, कोई पूरवली'र पहिचाँण ।। १२

५१८–(३ क.) (क. ब. २२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५१९ : राग–भैरों वा सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(भक्ति-दृढ़ता-रहस्य)

राणाँजी (हो) मैं साधुन रँगराती । (टेक)
काहू को पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजत पाती ।
मेरो पिया मेरे माँहि बसत है, कहि न सकूँ सरमाती ।। १
सूहो कसूंभी ओढ़ डुपट्टो, झुरमट खेलन जाती ।
झुरमुट खेल मिले यदुनंदन, खोल मिली मिल[1] छाती ।। २
और सखी मद पीवन आईं[2], मैं मद की मदमाती ।
मैं मद पीयो पंचबटी को, छको रहूँ दिन राती ।। ३
सुन्न सिखर के द्वारे[3] आकै, मोहि मिले अविनासी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जनम-जनम की दासी[4] ।। ४

○

पद–५२० : राग–देश मांड : ताल–कहरवा

(प्रेम)

राणूँ म्हारो कांईं करैलो राज, म्हे तो छाँडी कुल की लाज । (टेक)
पगाँ तो बाँध्या घूघरा जी, हाथ बजावाँ ताल ।। १
भोसागर म्हारो माहिरो जी[1], हरि चरणां सूँ प्यार[2] ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जास्याँ दुवारकानाथ[3] ।। ३

○

५१९–(१ उ.) (आ. सा. भा. १ पृ. १३६)
1 पा०—'दुई' । 'भर' ।
2 पा०—'पी पी आईं' । 'रही प्यासी' ।
3 पा०—'पौरे' ।
4 पा० —'मीरां के प्रभु·········गावत मीराँ दासी' ।
५२०–(म.) (दीना मँ. मी..प. ३७)
1-2 पा०—तुम हरो जी । सुसराल । पीहर छै जी ।
3-पा०—मीराँ कहै जास्याँ द्वारका जी बैकुंठां रा वास ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५२१ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(आत्म-इतिहास)

राँणें म्हाँनें ऐसी कही महाराज । (टेक)
भगतण होय मीरां जगत लजायो कीन्हीं सारो राज ।
जावो नैं मीरां म्हाँनें मुख न दिखावो म्हाँनै आवै थारी लाज ।। १
लाजै मीरां पीहर सासरो और लाजै म्हारो साज ।
गोपीचंदण तुलसी की माला भीख माँगण रो साज ।। २
धन मीरां धनि मेड़तौ धनि राठोड़ी राज ।
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी चलि आयो ब्रजराज ।। ३

○

पद–५२२ : राग–घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेम)

राणोंजी मेवाड़ो म्हारै दाय न आवै,
गिरधर म्हारै मन भाया, भोलि माय । (टेक)
राणोंजी म्हाँसूं रूस रह्यो छै कूड़ा वचन सुनाया, भोलि माय ।। १
गुरु कृपा सूं संत पधारया संताँ स्याम मिलाया, भोलि माय ।। २
बाँधि घूघरा नृत्य कराँ म्हे हरिगुण गाय रिझावाँ, भोलि माय ।। ३
मीराँ के प्रभु आस पुराई गिरधर सेजाँ आया, भोलि माय ।। ४

○

५२१–(३ क.) (राम स. गु. पृ. १७४)
५२२–(२ म.) (मा. हरिना. एम. ए की पु.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५२३ : राग–काफी : ताल–दादरा

(आत्मेतिहास)

राणोंजी[1] मेवाड़ो म्हारो काईं करसी,
म्हे तो गोबिंदरा गुण गास्याँ, हे माय । (टेक)
राणोंजो रूससी गाँव राखसी, हरी रूस्याँ कुमलास्याँ,[2] हे माय ।। १
म्हारो तो प्रण चरणामृत रो, नित उठ मन्दिर जास्याँ, हे माय ।। २
मदिरया में माधुरी मूरति, निरख निरख गुण गास्याँ, हे माय ।। ३
हाथाँ से करताल बजावाँ घूघरिया धमकास्याँ, हे माय ।। ४
राणोंजो भेज्या विष रा प्याला, कर चरणामृत पीस्याँ, हे माय ।। ५
राणोंजी भेज्या साँप टिपारा (पिटारा), तुलसी की माला कर पैराँ, हे माय ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणाँ चित ल्यास्याँ, हे माय ।। ७

पद–५२४ : राग–सिन्ध भैरवी : ताल–तिताला

(चरित)

राणोंजी हट मांड्यो म्हाँसू, गिरधर प्रीतम प्यारी जी । (टेक)
वो तो मद माया रो आँधो, थे मत होज्यो न्यारा जी ।। १
साँची प्रीत लगी है तुमसूँ, झक मारो संसारा जी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, थाँनै भक्त पियारा जी ।। ३

५२३–(१ उ.) (मी. प. जमा. राम. ५)
नोट –पाठ भिन्न भिन्न होने से पूरा पद ही लिख दिया गया है ।
1 पा०—मर जास्याँ ।
2 पा०—"रसियो राम रिझास्याँ हे मा,
राणोंजी मेवाड़ो म्हारो काउ करसी । (टेक)
राणाँ रूससी गाँव राखसी, हरि रूस्याँ कुमलास्याँ, हे मा ।। १
गोपीचंदन गंगा री माटी, घसि घसि अंग लगास्याँ, हे मा ।। २
श्री तिलक तुलसी की माला, नित उठ मंदिर जास्याँ, हे मा ।। ३
बाँध घूघरा नित कराँ म्हे, करसूँ तार बजास्याँ, हे मा ।। ४
राणों भेज्यो विष रो प्यालो, चरणामृत कर पीस्याँ, हे मा ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणां लास्याँ, हे मा ।। ६
५२४–(उ)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५२५ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(चरित)

राणों म्हारो काँई करिहै मीरां छोड़ दई कुल लाज ।
बिष को प्यालो राणाँ ने भेज्यो मीरां मारन काज ।। (टेक)
हँस के मीरां पीय गई है प्रभु प्रसाद पर राग ।
डब्बो एक राणाँजी भेज्यो उसमें कारा नाग ।। १
डब्बो खोल मीरां जब देख्यो व्है गयो सालिगराम ।
जै जै धुनि सब सन्त सभा भई कृपा करी घनश्याम ।। २
सजि सिंगार पग बाँधि घूंघरू दोउ कर देती ताल ।
ठाकुर आगे नृत्य करत ही गावत श्रीगोपाल ।। ३
साधु हमारे हम साधुन के साधु हमारे जीव ।
साधुन मीरां मिलि जो रही है जिमि माखन में घीव ।। ४

○

पद–५२६ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

राजा रूठै नगरी राखैं, हरि रूठ्या कहँ जाणा । (टेक)
राणाँ भेजा जहर पियाला, इमरत कर पी जाणाँ ।। १
डिबिया में भेजा जु भुजंगम, सालिगराम करि जाणाँ ।। २
मीरां तो अब प्रेम दिवानी, साँवलिया बर पाणा ।। ३

○

पद–५२७ : राग–सोरठ : ताल–झूमरा

(रूप-वर्णन)

राधा तेरी बोली माँहीं, मुडक घणी । (टेक)

५२५–(३ क.) (मीराँ बा. जी. का. प्र. पृ. १५)
५२६–(म.) (मीरांपदावली वि. मुं. पृ. ७६)
५२७–(उ. सं) (१०) पुजा. नाथू. पु. से)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तीखा तीखा नैन भुँवारा बाँका, मानों कबाण तणी ।। १
आप ही बाँकै नैन ही बाँके, कोन चटसाल भणीं ।। २
कोटी भान प्रकास भया है, चिमकत शैली भणीं ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निरखत श्याम धणीं ।। ४[1]

○

पद–५२८ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी

(लीला)

राधा तेरी मँहदी रो माणक रंग । (टेक)
कनक कटोरे मँहदी घोली, तामें अद्भुत रङ्ग ।। १
राधा प्यारी मँहदी माँडी, सब सषियन के संग ।। २
मीरां[1] के प्रभु मँहदी निरषै, श्रीबृन्दाबनचंद ।। ३[1]

○

पद–५२९ : राग–श्याम कल्याण : ताल–तिताला

(लीला)

राधा प्यारी दे डारो जी वंसी हमारी ।
या वंसी में मेरा प्रान वसत है,
वो वंसी ले गई मेरी ।। राधा०
ना सोने की वंसी ना रूपे की ।
हरे हरे बाँस की पेरी ।। राधा०
घड़ी एक मुख में घड़ी एक कर में ।
घड़ी एक अधर धरी ।। राधा०
मीरां के प्रभू गिरधरनागर,
चरण कमल पर वारी ।। राधा०

1–यह पद विशेषतया भाषा की दृष्टि से ठेठ जयपुरी किसी कवि का ज्ञात होता है। स्यात् 'ब्रजनिधि' या अमृतराम अथवा अन्य ।
५२८–(ज. सं.) (११) (पुजा. नाथू. पु. से)
1–यह भी किसी 'ब्रजनिधि' के समसामयिक कवि का ज्ञात होता है ।
५२९–(क.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५३०

(वृन्दावन-प्रेम)

राधे जी को लागे बृन्दावन नीको । (टेक)
बृन्दाबन में तुलसी का बिड़ला, जाके पान चरी को ।। १
बृन्दाबन में धेनु बहुत हैं, भोजन दूध दही को ।। २
बृन्दाबन में रास रच्यो है, दरसण कृदमाजी को ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बिना रंग सब फीको ।। ४

○

पद–५३१ : राग–कल्याण : ताल–कहरवा

(लीला)

राधे दे दो बाँसरी, हमारी मुरली ।
पात पात सब वृन्दावन ढूंढयो ।
कुञ्ज गलिन में सब हेरी ।। राधे०
बँसरी बिन मोहे कल न परत है ।
पैया लागत तोरी ।। राधे०
काहे से गाऊँ काहे से बजाऊँ ।
काहे से लाऊँ गवाँ घेरी ।। राधे०
मीरां के प्रभु गिरधर नागर ।
चरण की मैं तो चित्त चेरी ।। राधे०

○

पद–५३२ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(चरित)

राम तणें रँग राची, राणाँ मैं तो साँवलिया रँग राची रे । (टेक)
ताल पखावज मिरदँग बाजा, साधों आगे नाँची रे ।। १

५३०–(म.) (क. । उ० २ । ३६२)
५३१–(क.)
५३२–(२ म)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कोई कहे मीरां भई बावरी, कोई कहे मदमाती रे ।। २
विष का प्याला राणाँ भेज्या, अमृत कर आरोगी रे ।। ३
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम की दासी रे ।। ४

○

पद–५३३ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चरित)

राम नाम उर धार्‌यो मेड़तणी ने, राम नाम उर धार्‌यो । (टेक)
कह्यो न मानूं राणाँजी को, देसपती पच हार्‌यो ।। १
कोप कियो राणाँजी जब ही, साँप गला में डार्‌यो ।। २
मीरां ने हँस पहर लियो है, हो गयो नोसर-हारो ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, अबके मोय उबारो ।। ४

○

पद–५३४ : राग–सारंग, घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेम)

राम-नाम म्हारे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊँ ए माय । (टेक)
मैं मँदभागँण करम अभागिण, कीरत कैसे गाऊँ ए माय ।। १
बिरह-पिंजर की बाड़ सखी री, उठ कर जी हुलसाऊँ ए माय ।। २
मन कूँ मार सजूँ सतगुरु सूँ, दुरमत दूर गमाऊँ ए माय ।। ३

५३३–(क) (२) (पुजारी नाथूना. पु. से)
५३४– (१ उ.)
नोट—पाठ भिन्न-भिन्न होने से पूरा पद लिखा जाना है—
"रसियो राम रिझाऊँ ए माइ, राम नाम मेरे मन बसियो । (टे०)
बिरहै पीड़ की बात सखी री, कासूँ कहूं समझाइ ।। १
तन करि ताल'र मन करि मिरदँग, सुणत हि सुरति जगाऊँ ए माइ ।। २
सील सिंगार साज तन ऊपर, प्रभु के सनमुख जाऊँ ए माइ ।। ३
लोक लाज कुल संक निवारी, राम (जो) मिल्याँ सुख पाऊँ ए माइ ।। ४
मीरां के प्रभु तुमरे मिलन कूं, चरण कमल बलि जाऊँ ए माइ ।। ५
(क. ब. ९)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डाको नाम सुरत की डोरी, कडयाँ प्रेम चढ़ाऊँ ए माय ।। ५
ज्ञान को ढोल बन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ ए माय ।। ५
तन करूँ ताल मन करूँ मोचँग, सोती सुरत जगाऊँ ए माय ।। ६
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तो अमरापुर जाऊँ ए माय ।। ७
मो अबला पर किरपा कीज्यो, गुण गोबिंद का गाऊँ ए माय ।। ८

○

पद–५३५ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चेतावणी)

राम नाम रस पीजे मनुआ, राम नाम रस पीजे । (टेक)
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजे ।। १
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित्त से बहाय दीजे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ताहि के रँग में भीजे ।। ३

○

पद–५३६ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(विनय)

राम म्हारी बाहड़ली जो गहो । (टेक)
भवसागर की तीषण धारा, तुम ही लेर निभहो ।। १
मोमैं औगुण घणां छै साँवरा, तुम हो सब ही सहो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बिरद की लाज गहो ।। ३

○

५३५–(२ म) (मीरांबाई के भ. नं. ३३)
५३६–(२ म) (मी. ली. प. दूधू ३)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५३७ : राग–भीम पलासी : ताल–तिताला

(विरह)

राम मिलण के काज सखी, मेरे आरति उर जागी री । (टेक)
तलफत तलफत कल न परत है, विरह-बाण उर लागी री ।
निस दिन पंथ निहारू पीव को, पलक न पल भरि लागी री ।। १
पीव पीव मैं रटू रात-दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री ।
विरह-भवंग मेरो डसो है कलेजो, लहरि हलाहल जागी री ।। २
मेरी आरति मेटि गुसाँई, आइ मिलौ मोहि सागी री ।
मीरां ब्याकुल अति अकुलाणी, पिया की उमंग अति लागी री ।। ३

○

पद–५३८ : राग–जोगिया-आसावरी : ताल–तिताला

(विरह)

राम मिलण रो घणों उमावो, नित उठ जोऊ बाटड़ियाँ ।
दरसण बिन मोहि पल न सुहावै, कल न पड़त है आँखड़ियाँ ।। (टेक)
तलफ तलफ के बहु दिन बीते, पड़ी विरह की फाँसड़ियाँ ।
अब तो बेगि दया कर साहिब, मैं हूं तेरी दासड़ियाँ ।। १
नैण दुखी दरशण को तरसै, नांभि न बैठे साँसड़ियां ।
रात दिवस यह आरत मेरे, कब हरि राखै पासड़ियाँ ।। २
लगी लगन छूटण की नाँही, अब क्यों कीजे आटड़ियाँ ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, पूरो मन की आसड़ियाँ ।। ३

○

५३७–(१ उ)
५३८–(१ उ)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५३९ : राग–सारंग घूमर : ताल–कहरवा

(उपदेश, चेतावणी)

राम रतन धन पायो मैया, मैं तो राम रतन धन पायो । (टेक)
खरचे ना घू [खू]टे, वाकूँ चोर न लूटे, दिन दिन होत सवायो ।। १
नीर न डूबै वाकूं, अग्नि न जाले, धरनी धरचो न समायो ।। २
नाँव को नाँव भजन की बतियाँ, भवसागर से तारचो ।। ३
मीरां प्रभु गिरधर के सरनें, चरण-कमल चित लायो ।। ४

○

पद–५४० : राग–बिहाग : ताल–कहरवा

(चरित)

राम-रँग लाग्यो, म्हारा मन को धोखो भाग्यो जी । (टेक)
पीपा(के) लागि सुदामा(कें) लाग्यो, कञ्चन महल बणागो जी ।। १
ध्रुव के लागि प्रहलाद के लाग्यो, नरसी के कारज सारचो जी ।। २
साँचो रङ्ग नामदेव के लाग्यो, छिन में छाँन छवागो जी ।। ३
मुलक भुखारा का बादशाह के लाग्यो, राज मुलक को त्याग्यो जी ।। ४
गोपीचंद भरथरी के लाग्यो, तन में खाक रमागो जी ।। ५
सांचो रँग मीरां[1] के लाग्यो, ज्योति में ज्योति समागो जी ।। ६

○

५३९–(१ उ) (वं. पु. पृ. ३०)
५४०–(क. सं) (२८) (पुजा. नाथू. पु. से)
1 आत्मश्लाघा के कारण मीरांजी का नहीं जँचता ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५४१ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(रहस्य)

राम-सनेही साँवरियो म्हारी नगरी में उतरचौ आइ । (टेक)
प्रांण जाय पणि प्रीत न छांडू रहौं चरण लपटाय ।। १
तीन लोक झोली मैं डारै धरती कौ कीयौ निपांन ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी रहौ चरणं लिपटाय ।। ३

○

पद–५४२ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(उपदेश)

रामा रामा कहिये रे गोबिन्द गोबिन्द कहिये रे । (टेक)
कंकर हीरा एक सारसा, हीरा किस कूँ कहिये रे ।
हीरापण तो जद ही जांणू, महँगा मोल बिकइये रे ।। १
कोयल कागा एक सरीसा, कोयल किसको कहिये रे ।
कोयलपण तो जब ही जाणू, मीठा बचन सुणइये रे ।। २
हंसा बुगला एक सरीखा, हंसा किसकूं कहिये रे ।
हंसापण तो जद ही जाणू, चुग चुग मोती खइये रे ।। ३
जगत भगत के आसरे है, भगत किसकूं कहिये रे ।
भगतपणों तो जब ही जाणू, बोल सभी का सहिये रे ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणाँ चित दइये रे ।
द्वारिका के ठाकुर के सरणे में, जा कर रहिये रे ।। ५

○

५४१–(३ क) (राम स. गु. पृ. २८२)
५४२–(२ क)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५४३ : राग–गिरनारी-सोरठ : ताल–रूपक

(विनय-प्रार्थना)

राय श्री रणछोड़, दीजे द्वारका को बास । (टेक)
सँख चक्र गदा पद्म दरसे, मिटे जग की त्रास ।। १
सकल तीरथ गोमती के, रहत नित्त निवास ।। २
संख झालर झाँझ बाजे, सदा सुख की रास ।। ३
तज्यो देस'रु वेस पतिग्रह, तज्यो रानां-राज ।। ४
दासी मीरां सरन आवत, तुम्हें अब सब लाज ।। ५

○

पद–५४४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

रावलो बिड़द मोहि रूड़ो लागे, पीडित पराये प्राण । (टेक)
सगो सनेही मेरो और न कोई, बैरी सकल जहान ।। १
ग्राह गह्यो गजराज उबारयो, बूड न दियो छै जान ।। २
मीरां दासी अरज करत है, नहिं जी सहारो आन ।। ३

○

पद–५४५ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी-कहरवा

(विरह)

री मेरे पार निकस गया, सतगुरु मारया तीर । (टेक)
विरह-भाल लागी उर अंतरि, ब्याकुल भया सरीर ।। १
इत उत चित चलै नहिं कब हूं, डारी प्रेम-जँजीर ।। २
कै जाणै मेरो प्रीतम प्यारो, और न जाणै पीर ।। ३

५४३–(१ उ.) (स. मा. मी. ली. २८)
५४४–(१ उ.)
५४५–(१ उ)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहा करूँ मेरो बस नहिं सजनी, नैन झरत दोउ नीर ।। ४
मीरां कहे प्रभु तुम मिलियाँ बिनि, प्राण धरत नहिं धीर ।। ५

○

पद–५४६ : राग–भोपाली : ताल–धीमा
(विरद-विनय)

रुकमणा री लाज राषो, राषोला म्हाराजि ।
आजि, रुकमण की लाज राषौ । (टेक)
माता कै मैं घणीं पियारी, नाहीं दोस पिता को ।। १
रुकमइयौ सिसपाल बुलायौ, नहिं मुष देखूं वाको ।। २
थांका बिड़द कूं लोग हँसैगो, जिव जावैगो म्हाँको ।। ३
मेरा स्याम कूँ कृष्ण बतावै, नारद मुनि यों भाषो ।। ४
मीरां कहै यूं रुकमणि कहत है, ऊंच नीच मति राषो ।। ५

○

पद–५४७ : राग–मारू : ताल–तिताला
(प्रेम-प्रवाह)

रूप देख अटकी, तेरो रूप देख अटकी । (टेक)
देह तैं विदेह भई ढुरि परि सिर मटकी ।। १
मात, पिता, भ्रात, बन्धु सब ही मिलि हट की । २
हिरदा थैं टरत नाँहि मूरति नागरनट की[1] ।। ३
प्रगट भयौ पूरन नेह लोक जानें भटकी ।। ४
मीरां प्रभु गिरधर विन कौन लहै घट की ।। ५

○

५४६– (३ क.) (राम स. गु. पृ. ३२२)
५४७–(उ.) (प्राचीन गु. ह. लि: सं. १७४३) में से ।
1 पा०—'सूरति वा नट की' ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५४८ : राग–सोरठ : ताल–तिताला
(विरह)

रे पपैह्या प्यारे कब को बैर चितार्यो (टेक)
मैं सूती छी अपने भवन में पिय पिय करत पुकारयौ ।। १
दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवड़ै करवत सारयौ ।। २
आइ बैठ्यो वृक्ष की डारी, बोल बोल कइ सारयौ ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणां चित धारयौ ।। ४

○

पद–५४६ : राग–चैती गोरी वा सोरठ : ताल–दादरा
(प्रेम-विनय)

रे साँवलिया म्हारे आज रँगीली गणगोर छे जी । (टेक)
काली पीली बादली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छे जी ।। १
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोर छे जी ।। २
आप रँगीला, सेज रँगीली और रँगीलो सारो साथ छे जी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरनाँ में म्हारो जोर छे जी ।। ४

○

पद–५५० : राग–भैरवी : ताल–धीमा
(विनय)

लटपटी पेचा बांधी राज ।
सास बुरी घर ननद हटीली ।
तुम जे आगे कियो काज ।। लटपटी० ।
निस दिन मोहे कल न परत है ।
बंसी ने सारो काज ।। लटपटी० ।

५४८–(१ उ.) (ब. पु. पृ. १६)
५४९–(२ म.)
५५०–(म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरां के प्रभु गिरिधरनागर ।
चरण कमल सिरताज ।। लटपटी० ।

○

पद–५५१ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(चरित)

लाग्यो थारो नैणाँ रो सलूणों रंग लाग्यो, लाग्यो महाराज । (टेक)
एक रंग लाग्यो नारदमुनि जिनके, असली बैरागी बाज्यो रे ।। १
एक रंग लाग्यो भरतरी राजा के, शहर उजीणी त्याग्यो रे ।। २
एक रंग लाग्यो मेड़तणी राँणी के, देस मेवाड़ो त्याग्यो रे ।। ३
मीरां[1] के प्रभु गिरधरनागर, डर असुरन को भाग्यो रे ।। ४

○

पद–५५२ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(विरह)

लाग रही औसेर कान्ह तोरी, लाग रही औसेर । (टेक)
दरसण दीजे किरपा कीजे, कहाँ लगाई (ऐती) बेर ।। १
दिन नहिं चैंन, रैन नहिं निद्रा, बिरह बिथा लई घेर ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुनजो म्हारी टेर ।। ३

○

पद–५५३ : राग–सोरठा : ताल–कहरवा
(अनन्य प्रेम)

लागी मोहि राम खुमारी हो । (टेक)

५५१–(क. स.) (१४) (पुजा. नाथू. पु. से)
1 आत्मश्लाघा के कारण मीराँजी का ज्ञात नहीं होता है ।
५५२–(उ.)
(या०—ना० दा० जी के पदसार संग्रह की ह० लि० प्रति से ।)
५५३–(२ म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रिमझिम बरसै मेहड़ा, भीजै तन सारी हो ।
चहुँ दिस चमकै दामणी, गरजै घन भारी हो ।। १
सतगुर भेद बताइया, खोली भरम किवारी हो ।
सब घट दीसै आतमा, सब ही सूं न्यारी हो ।। २
दीपक जोऊं ज्ञान का, चढ़ ज्ञान-अटारी हो ।
मीरां दासी राम की, इमरत बलिहारी हो ।। ३

○

पद—५५४ : राग—देस : ताल—कहरवा

(विरह)

लागी सोही जाणै कठण लगन दी पीर । (टेक)
विपद पड़्यां कोई निकटि न आवै, सुख में सब को सीर ।। १
बाहरि घाव कछू नहिं दीसै, रोम-रोम दी पीर ।। २
जन मीरां गिरधर के ऊपर, सदकै करूँ सरीर ।। ३

○

पद—५५५ : राग—कालँगड़ा वा जँगला वा काफी : ताल—कहरवा

(विरह)

लिख भेजूँ री पाती, मेरे प्रीतम प्यारे राम कूँ । (टेक)
स्याम संदेसो कछू न दीनों, जानि बूझि गुझि बाती ।। १
डगर बुहारूँ पंथ सुधारूँ[1], जोइ जोइ[2] अँखियाँ राती ।। २
रात द्योस मोहि कल न परत है, हियो फटत मेरी छाती ।। ३
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरब जनम के साथी ।। ४

○

५५४—(१ उ.)
५५५—(१ उ.) (क. ब. १६)
1 पा०—'निहारूँ' ।
2 पा०—रोइ-रोइ ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५५६ : राग–सिन्ध भैरवी : ताल–कहरवा

(उपदेश)

लेताँ-लेताँ राम नाम रे, लोकड़ियाँ तो लाजे मरे छे। (टेक)
हरि-मंदिर जाताँ पावलिया रे दूखे, फिर आवें सारो गाम रे ।। १
झगड़ो थाय त्याँ दौड़ी ने जाय रे, मूकी ने घर का काम रे ।। २
भाँड भवैया गनिका नृत्य करताँ, वेसी रहे चारे जाम रे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित हाम रे ।। ४

○

पद–५५७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला

(बाल-लीला)

लेने तुरी[1] लकड़ी रे, लेने तुरी कामली,
गायो तो चराववा नहिं जाऊं मावड़ली[2] । (टेक)
माखन तो बलभद्र ने खायो, हम ने पायो खाटी हो रे छाशड़ली[3] ।। १
वृन्दावन ने मारग जातां, पाऊं में बुचे[4] झीणी कांकड़ली ।। २
मीरांबाई के प्रभु गिरधर ना गुण, चरणकमल चित राखड़ली ।। ३

○

पद–५५८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

लेह लागी मने तारी अल्याजी, लेह लागी मने तारी । (टेक)
काम काज मूक्यू ने धामज मूक्यू, मन माँ चाहूँ छूँ मोरा री ।। १
खभे छे कामली ने हात माँ छे बाँसली, गोकुल माँ गायो चारी ।। २
सोळ सहस्त्र गोपियों ने तमे वरिया, तोय तमे बाल ब्रह्मचारी ।। ३
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ४

५५६–(३ क.)
५५७–(काव्य दो. भा. ७ पृ. ७२३)
1 पा०--तेरी । 2 माता । 3 छाछ । 4 चुभना ।
५५८–(३ क.) (काव्य-दोहन गु.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद—५५९ : राग—कामोद : ताल—कहरवा
(प्रेम)

वारियाँ वे लाल वारियाँ । (टेक)
तुसा आमना फेरा पामना कुञ्ज हमारियाँ ।। १
कोन सखी के तुम रँगराते, हमसे अधिक पियारियाँ ।। २
ऊँची अटारियां ते लाल किंवारियां तक, रहियाँ बाट तिहारियाँ ।। ३
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, या छबि पर बलिहारियाँ ।

○

पद—५६० : राग—पीलू बरखा : ताल—कहरवा
(प्रेम)

वारी वारी हो राम हूँ वारी, तुम आज्यो गली हमारी । (टेक)
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, जोऊँ बाट तुमारी ।। १
कूँण सखी सूँ तुम रँग-राते, हमसूँ अधिक पियारी ।। २
किरपा कर मोहि दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी ।। ३
तुम सरणागत परम दयाला, भव जल तार मुरारी ।। ४
मीरां दासी तुम चरणन की, बार बार बलिहारी ।। ५

○

पद—५६१ : राग—होरी-काफी : ताल—कहरवा
(लीला)

वाह वाह रे मोहन प्यारे कहां चले जादू करि कें । (टेक)
रूप सरूप सलूनी सी डारी मेरो मन लीनूं हर कें ।
मोर मुकट सिर छत्र बिराजै नख पर गिरवर धर कें ।। १

५५९—(२ म.) (बृ. रा. र. पृ. ६५)
५६०—(१ उ.)
५६१—(३ क.) (राम स. पृ. ३४८)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दमन कियो नाग काली को आप घुसे मध सर कैं ।
फण-फण निरत करत यदुनन्दन अभै कियो षगवर कैं ।। २
सब ब्रज लोग छांडि निज घर कूं जाइ बसे तर गिर कैं ।
सात दिवस लग सूँड धार जल इन्द्र परचौ पग डर कैं ।। ३
कातिगमास वाल सब मिल कै नांचें जल मैं तिर कैं ।
चीर चोर पुनि बगल डार कैं जाय चढ़े छल करि कैं ।। ४
बृन्दावन की कुंजगलिन मैं रास रच्यो छल बल कैं ।
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी पानैं पड़ी गिरधर कैं ।। ५

○

पद–५६२ : राग–भैरव : ताल–कहरवा
(लीला)

वहियां जो गही रे मेरी सुध न रही रे,
काना वहियां जो गही रे ।
जगमग ज्योत जडाव को गहनो,
गज मोतियन की सर लटकी रही रे ।। काना०
मैं दधि बेचन जाती गोकुल में,
पकडी री पाल व मेरो जलको मही रे ।। काना०
जाई पुकारूं कंस के आगे रे,
तेरी नगरी में मेरो बसबो नही रे ।। काना०
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
झगडत झगडत सारी रैन गई रे ।। काना०

○

पद–५६३ : राग–भैरवी : ताल–तिताला
(विरह)

विरहनी वावरी-सी भई । (टेक)

५६२–(म.)
५६३–(१ उ.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊंची चढ़-चढ़ अपने भवन मैं टेरत हाय दई ।। १
ले अँचरा मुख अँसुवन पूँछत उघरे गात सही ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर बिछुरत कछु नाँ कही ।। ३

○

पद–५६४ : राग–देश : ताल–कहरवा

(विरह)

वै न मिले जिनकी हम दासी । (टेक)
पात पात वृन्दावन ढूंढ्यौ ढूंढि फिरी सगरी मैं कासी ।। १
कासी कौ लोग बड़ो बिसवासी मुख मैं राम बगल मैं फांसी ।। २
आधी कासी मैं बाँमण बणियाँ आधी कासी बसे सन्यासी ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी हरिचरणां की रहाँ मैं दासी ।। ४

○

पद–५६५ : राग–विहाग : ताल–दीपचंदी

(विरह)

श्याम बजावत बीणाँ, री आली । (टेर)
आठ मास कात्रिक लों न्हाई दान पुन्य बहु कीनां ।
ऐ रे दई तेरो कहा बिगड़चो, छोटो कंत मोहे दीना ।। १
करके सिंगार पलंग पर बैठी, रोम रोम रस भीना ।
चोली के मेरे बंद तरक गये, श्याम भये परवीना ।। २
अब तो आन पड़ी फंदे बिच, लोक लाज तज दोना ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणन चित लीना ।। ३

○

५६४–(क ३) (रामस. गु. पृ. १६०)
५६५–(क) (या०----सं. रा. क. से)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५६६ : राग–भूपाली : ताल–तिताला

(विरह)

श्याम बताव रे मुरली वाला । (टेर)
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, भाल तिलक गले मोहनमाला ।। १
एक बन ढूंढ सब बन ढूंढे, कहीं न पायो नंदलाला ।। २
जोगन होऊंगी बैरागन होऊंगी, गले बीच बांधूंगी मृगछाला ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, माँग लियो पिया प्रेम की माला ।। ४

○

पद–५६७ : राग–देस : ताल–तिताला

(उपालंभ)

श्याम बंसी वाला कनैया, मैं नाँ बोलूं तुमसे रे । (टेर)
घर मेरा दूरा, गगरी मेरी भारी, पतली कमर लचकाय रे ।। १
सास ननँद की लाज से मरत हूं, हमसे करत बरजोरी रे ।। २
मीरां दासी तुमसे झगरी, चरण कमल की उपासी रे ।। ३

○

पद–५६८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

श्याम म्हांनै चाकर राखो जी, गिरधारीलाल चाकर राखो जी । (टेक)
चाकर रहसूं बाग लगासूं, नित उठ दरशण पासूं ।
बृन्दावन की कुन्ज गलिन में, गोविन्द का गुण गासूं ।। १
चाकरी में दरशण पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव भगति में जागीरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी ।। २

५६६–(म.)
५६७–(का. उ०/२/३३८)
५६८–(१ उ०)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोर मुकट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला ।
बृन्दावन में धेनु चरावै, मोहन मुरली वाला ।। ३
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूं बारी ।
साँवरिया के दरशन पाऊँ, पहिर कुसूँमल सारी ।। ४
जोगी आया जोग करन कूँ, तप करने सन्यासी ।
हरी भजन को साधू आये, बृन्दावन के बासी ।। ५
मीरां के प्रभु गहिर गँभीरा, हृदै रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दर्शन दीज्यो, प्रेम-नदी के तीरा ।। ६

○

पद–५६६ : राग भैरवी : ताल–तिताला
(प्रेमलीला)

श्याम सुंदर मुरली वाला, कोई देखो रे भैया । (टेर)
जमना के तीराँ तीराँ धेनु चरावत, दधि घट चोर चुरैयाँ ।। १
बृन्दावन की कुंज गलिन में, हमको देखत भुकैयाँ ।। २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, पकड़त मोरी बहियाँ ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलि जैयाँ ।। ४

○

पद–५७० : राग–मालकोस : ताल–तिताला
(प्रेम)

श्री गिरिधर आगे नाचूँगी । (टेक)
नाँचि नाँचि पिय रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ।। १
प्रेमप्रीति के बाँधि घूंघरू, सुरत कछनी काछूँगी ।। २
लोकलाज कुल की मरजादा, या में एक न राखूँगी ।। ३
पिय के पलँगा जा पौढूँगी, मीरां हरि-रँग राचूँगी ।। ४

५६९–(सा०) (का. । उ०२।३५४)
५७०–(१ उ)

T CC-0. RORI, Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५७१ : राग–झँझोटी गारा : ताल–कहरवा
(तुलसीदासजी को पत्र । आत्म-व्यथा-कथा)

श्री तुलसी सब गुण निधान दुख हरन गुसांई ।
बारहि बार प्रणाम करू अब हरो सोक-समुदाई । (टेक)
घर के स्वजन हमारे जेते सबन उपाध बढ़ाई ।
साधु संग अरु भजन करत मोहे देत कलेस महाई ।। १
बालपने से मीरां कीनी गिरधरलाल मिताई ।
सो तो अब छूटत नहिं क्योहूं लगी लगन बरियाई ।। २
मेरे मात पिता के सम हो हरिभक्तन सुखदाई ।
हमको कहा उचित करबो है सो लिखियो समझाई ।। ३

○

पद–५७२ : राग–जौनपुरी टोडी : ताल–धीमा तिताला
(स्वरूप-वर्णन-दर्शनाभिलाषा)

श्री द्वारका में राज करे जी रणछोड़ (टेर)
लाल पाग केसरिया जामा, टेढी धरत मरोर ।। १
बारे (बारे) कोस की* लगत है, तू मन डारे फोर ।
बारे (बारे) कोस की खाड़ी पड़त है, मल्लाह[1] बड़ा है कठोर ।। ३
मंदिर मंदिर झालर बाजै, घंटन[2] की घनघोर ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दरसण द्यो चितचोर ।। ५

○

५७१–(३ क) (स. मा. मी. ली. २१)
५७२–(या०—प्रति सं० ३८६। पद ४८।)
1. पा०—'काबा' । 2. पा०—'संखन' ।
नोट–इस पद का अन्य पाठ भी सुना है परन्तु पूर्ण स्मरण नहीं । [ह्.ना.]
* यहां 'झाड़ी' शब्द का भी अन्य अतिरिक्त पाठ है ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५७३ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(विरह विनय)

शरणागत की लाज तुमकूं, शरणागत की लाज। (टेर)
नाना पात में चीर मिलाये, पांचाली के काज। तुम०
प्रतिज्ञा छांडी भीष्म के आगे, चक्र धरे यदुराज। तुम०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दीनबंधु महाराज। तुम०

○

पद–५७४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

शाम रे की दृष्ट मानूं प्रेम की कटारी थे। (टेक)
लगत बेहाल भई, गोरस की शुध न रही।
तनहू थे व्यापो काम, मनू मतवारी थे।। १
चकोर चाहत चंद, दीपक जले पतंग।
जल बिन मीन मरे, अेसी प्रीत चारी थे।। २
सखी मिल दोउ चार, मन थे करचो बेचार।
मैं तो वाकूं जान्यों नाहि, कुंज को बिहारी थे।। ३
तूं मोहो सूं जाना शाम, मेरे तो तुहारो ध्यान।
अशरणशरण प्रभु, मीरां दास तुहारी थे।। ४

○

पद–५७५ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

शिवशंकर मोपे कृपा कीज्यो, मैं आधीन तुमारा। (टेक)
बांई भुजा ऋधिसिधि को बासो, दहनी भुजा गंगधारा।। १

५७३–(उ)
५७४–(काव्यदो० भा० ७ पृ. ७१९)
५७५–(क–सं.) (१७ पुजा. नाथू पु. से.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सेवा कर भागीरथ ल्यायो, कुल अपने कूँ त्यारा ।। २
शिवजी थे काशी के बासी, गले रुण्डन की माला ।। ३
बाहन थारे भिषम नाँदियो, गौराँ के भरतारा ।। ४
आक धतूरा को भोग लगत है, बिष का करो अहारा ।। ५
केहरि को बाघम्बर सोहे, सरपन के सिणगारा ।। ६
गहरी नदियाँ अथाह जलपानी, भवसागर की धारा ।। ७
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मेरो करो निस्तारा ।। ८*

○

पद–५७६ : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेमोपालंभ)

स्याम को सँदेसो आयो पतियाँ लिखाय माय । (टेक)
पतियाँ अनूप आई, छतियाँ लगाय लीनी ।
अंचल की दे दे ओट, ऊधो पै बँचाई है ।। १
बालों की जटा बनाऊँ, अंग तो बिभूत लाऊँ ।
फाड़ूँ चीर पहरूँ कंथा, जोगण वण जाऊँगी ।। २
इन्द्र के नगारे बाजे, बादर की फोज आई ।
तोपखाना, पेंसखाना, उतरा आय बाग में ।। ३
मथुरा उजाड़ कीन्हीं, गोकुल बसाय लीन्हीं ।
कुबजा सूं बाँध्यो हेत, मीरां गाय सुनाई है ।। ४

○

पद–५७७ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

स्याम तेरी आरति लागी हो ।
गुरु परतापे पाइया, तन दुरमति भागी हो । (टेक)

---

* वर्णनशैली और विषय को देखते यह 'मीरांजी का नहीं लगता है। टेर में लिंगप्रयोग के कारण किसी पुरुष कवि का हो सकता है।

५७६–(३ क)

५७७–(१ उ)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

या तन को दियना करूँ, मनसा करों बाती हो ।
तेल भरावों प्रेम का, बारों दिनराती हो ।।
पाटी पारों ज्ञान की, मति माँग सँवारों हो ।
तेरे कारन साँवरे, धन जोबन वारों हो ।। २
यह सेजिया बहु रंग की, बहु फूल बिछाया हो ।
पंथ मैं जोहों स्याम का, अजहूँ नाहिं आये हो ।। ३
सावन भादों ऊमड़ो, बरषा-ऋतु आई हो ।
भोंह घटा घन घेरि के, नैनन झरु लाई हो ।। ४
मात पिता तुमको दियो, तुम ही भल जानों हो ।
तुम तजि और भरतार को, मन में नहिं आनों हो ।। ५
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो, पूरनं पद दीजे हो ।
मीरां ब्याकुल बिरहनी, अपनी करि लीजे हो ।। ६

○

पद–५७८ : राग–सिंदूरा : ताल–धमार
(प्रेमोपालम्भ)

स्याम मोसूं ऐंडो डोले हो । (टेक)
औरन सूं खेलत धमार, म्हांसूं मुखहूँ न बोले हो ।। १
म्हारी गलियाँ ना फिरे, वाके आँगण डोले हो ।। २
म्हारी अँगुली ना छुवे, वाकी बहियाँ मोरे हो ।। ३
म्हारे अँचरा ना छुवे, वाको घूँघट खोले हो ।। ४
मीरां के प्रभु साँवरो, रँग रसिया डोले हो ।। ५

○

पद–५७९ : राग–गारा : ताल–कहरवा
(विनय)

स्वामी सब संसार के, साँचे श्री भगवान । (टेक)

५७९–(२ म)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्थावर जंगम पावक पाणी, धरती बीच समान ।
सब में महिमा तेरी देखी, कुदरत के कुरबान ।। १
सूदामा के दारिद खोये, बारे की[1] पहिचान ।
दो मुट्ठी तंदुल की चाबी, दीन्हो द्रव्य महान ।। २
भारत में अर्जुन के आगे, आप भये रथवान ।
उनने अपने कुल को देखा, छुट गये तीर कमान ।। ३
ना कोई मारे, ना कोई मरता, तेरा यह अज्ञान ।
चेतन जीव तो अजर अमर है, यह गीता को ज्ञान ।। ४
मुझ पर तो प्रभु किरपा कीजे, बंदी अपनी जान ।
मीराँ गिरधर सरण तिहारी, लगे चरण में ध्यान ।। ५

○

पद–५८० : राग–मांड : ताल–कहरवा

(विरह)

स्यामसुन्दर पर वार, जिवड़ा में वार डारूँगी । स्याम० (टेक)
तेरे कारण जोग धारणा, लोकलाज कुल डार ।
तुम देख्याँ विन कल न पड़त है, नैन चलत दोउ वार । स्याम० ।। १
कहा करूँ कित जाऊँ सजनी, कठिन विरह की धार ।
मीरां कहै प्रभु कब रे मिलोगे, तुम चरणाँ आधार । स्याम० ।। २

○

पद–५८१ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(उलहना)

सखी अपणां स्यांम खोटा, दोस नहीं कुबज्या नैं । (टेक)
आपन हाथ नहीं लिखि भेजै, क्या कागद का टोटा ।। १

५७९–1 पा०—पांडे की ।
५८०–(२ म)
५८१–(२ म) (राम स. गु. पृ. ३२३)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खारी वेल कैं कड़ा फल लागा, कहा छोटा कहा मोटा ।। २
कुबज्या दासी कंसराय की, वै नंदजी का धोटा ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, हरि चरणां का वोटा ।। ४

○

पद–५८२ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

सखी तैंने नैना गमाय दिया रोय । (टेक)
वालापन की चटक चुँदरिया, दिन दिन मैली होय ।। १
वालपने लड़किन सँग खेली, रंग रूप दियो खोय ।। २
वाही सोच मीराँ भई दिवानी, दरद न जानै कोय ।। ३
लेनहार लेने कूं आये, ले चल, ले चल, होय ।। ४
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, वैद साँवरिया होय ।। ५

○

पद–५८३ : राग–झँझोटी : ताल–तिताला

(प्रेम)

सखी नन्द को गुमानी मेरे मन बस्यो । (टेक)
गह द्रुम-डार कदम की ठाडो, मृदु मुसकाय मेरी ओर हस्यो ।। १
पीताम्बर की कछनी काछै, रतन-जटित माथै मुकट कस्यो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निरख बदन मोरे हिरदै फस्यो ।। ३

○

पद–५८४ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम)

सखी मन स्याममूरत बसी । (टेक)
मुकट कुंडल करन बंसी मंद मुख पर हँसी ।। १

५८२–(२ म)
५८३–(१ उ) (प्रहला. भ. पा ३)
५८४–(१ उ) (भ. प्रहलादजी का पा. ४)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बावरी कोउ कहै मोकों कोई कहै कुल-नसी ।। २
हस्ती की असवारी पाछै लाख कुतिया भुसी ।। ३
तज्यो घूंघट, लई गाती, संत देख्यां खुसी ।। ४
सील चोला पहर गल में भक्त मारग घुसी ।। ५
ओस पानी नाहिं पीयो छाँह बादर किसी ।। ६
दासि मीरां लाल गिरधर प्रेम-फंदे फसी ।। ७

○

पद–५८५ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

सखी मेरो कानूड़ो कलेजे-कोर । (टेक)
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल की झकझोर ।। १
बृन्दावन की कुंजगलिन में, नाचत नन्दकिशोर ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कँवल चितचोर ।। ३

○

पद–५८६ : राग–विहाग : ताल–रूपक

(विरह)

सखी मोहे लाज बैरन भई । (टेक)
चलत गुपाल लाल पिय के संग क्यों ना गई ।। १
चलन चाहत गोकुल ही ते रथ सजायो नई ।। २
विरह व्याकुल होय सजनी हाथ मल मल[1] रही ।। ३
कठिन छाती श्याम बिछुरत बिदर क्यों ना गई ।। ४
लेन अब संदेस पिय को काहे पठऊं दई[2] ।। ५

५८५–(१ उ)
५८६–(१ उ) (स. भा. मीं. ली. २७)
1 पा०––"रुकमिनी संग जाइबे को हाथ मीजत रही" (क. १९ । ६)
2 पा० "तुरत लिख संदेस पिय को काहि पठऊं गई ।"

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कूबरी संग प्रीत कीनी मोहे माला दई ।। ६
दासि मीरां लाल गिरधर प्रान दछना दई ।। ७

○

पद–५८७ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

सखी री में तो गिरधर के रंग राती । (टेक)
पचरँग मेरा चोला रँगा दे, मैं झुरमुट खेलन जाती ।। १
झुरमुट में मेरा साँई मिलेगा, धोल अडंबर पाती ।। २
चंदा जायगा, सूरज जायगा, जायगा धरण अकासी ।। ३
पवन पानी दोनों ही जायँगे, अटल रहे अविनासी ।। ४
सुरत निरत का दिवला सँजो ले, मनसा की करि बाती ।। ५
प्रेम हरी का तेल बना ले, जगा करे दिन राती ।। ६
जिनके पिय परदेश बसत हैं, लिखि लिखि भेजें पाती ।। ७
मेरे पिया मो माहिं बसत हैं, कहूं न आती जाती ।। ८
पीहर बसूं न सास घर, सतगुरु शब्द सँगाती ।। ९
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरां हरि रँग राती ।। १०

○

पद–५८८ : राग–बिहाग : ताल–रूपक

(विरह)

सखी री लाज बैरन भई । (टेक)
श्रीलाल गोपाल के सँग, काहे नाहिं गई ।। १
कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई ।। २

५८७–(ऊ)
नोट—पदों में बहुत अंतर रहने से तीनों न्यारे २ पाठ दिये हैं—
1 "मैं गिरधर रँग राती सैयाँ" । ह.ना.
2 "रमैया मैं तो थारे रँग राती" । ह.ना.
५८८–(ऊ)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रथ चढ़ाय गोपाल लै गयो, हात मींजत रही ।। ३
कठिन छाती स्याम बिछुरत, बिरह में तन तई ।। ४
दासि मीरां लाल गिरधर, बिखर क्यों ना गई ।। ५

○

पद–५८६ : राग–विहाग : ताल–कहरवा
(विरह)

सखी री मेरी नींद नसानी हो । (टेक)
पिया को पंथ निहारतें, सब रैन बिहानी हो ।। १
सखियन मिल के सीख दई, मन एक न मानी हो ।। २
विन देखै कल ना पड़ै, जिय ऐसी ठानी हो ।। ३
अंग क्षीण व्याकुल भई, मुख पिय पिय वानी हो ।। ४
अंतर वेदन विरह की, वह पीय[1] न जानी हो ।। ५
ज्यों चातक घन को रटै, महरा[2] जिमि पानी हो ।। ६
मीरां व्याकुल रहिनी, सुध बुध विसरानी हो ।। ७

○

पद–५९० : राग–शंकरा भरण वा सोरठ : ताल–धीमा
(विरह)

सजन घर आवो जी मीठा बोलां । (टेक)
बिन देखे मोहे कल न पड़त है, कर धर रही कपोलां[1] ।। १

५८९–(१ उ)
1 पा०—पीर ।
2 पा०—मछली बिन पानी हो ।

५९०–(ऊ)
1 पा०—यहां बंगाली पुस्तक में ये तीन अंतरे हैं—
"कब की ठाडी पंथ निहारूं..........
"तन मन वार.... ....
"आतुर बहुत विलंब नहीं.... ......

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आवो निसंक संक नहिं कीजे, हिल मिल के रंग घोलां ।। २
तेरे कारन सब रँग तजिया, काजल तिलक तमोलां ।। ३
मीरां दासी जनम जनम की, दिल की घुंडी खोलां[2] ।। ४

○

पद–५९१ : राग–केदारा : ताल–तिताला

(विनय)

सजन सुध ज्यों जानों त्यों लीज्यो । (टेक)
हूं तो दासी जनम जनम की, कृपा रावरी कीज्यो ।। १
ऊठत बैठत जागत सोवत, कब हूं याद करीज्यो ।। २
आवत जावत जीमत पीवत, सुपने सुध धरीज्यो ।। ३
रात दिवस प्रभु ध्यान तिहारो, आप ही दरसण दीज्यो ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो ।। ५

○

पद–५९२ : राग-केदारा : ताल-तिताला

(विनय)

सजन सुध ज्यों जानो त्यों लीजे । (टेक)
तुम बिन मेरे और न कोई, कृपा रावरी कीजे ।। १
द्योस न भूख रैन नहिं निद्रा, यह तन पल पल छीजे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, (अब) मिल बिछुरन नहिं कीजे ।। ३

○

५९०–2 पा०—"मीरां तो गिरधर बिन देख्यां छिन मांसां छिन तोलां" ।
(ह. ना. की निजी. में)

५९१–(ऊ)
५९२–(ऊ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५९३ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह)

सजन वेगा घर आइए हो ।
आदि अंत के मित हो हमकूं सुष लहिए हो । (टेक)
हरि बिन सूरति कहां धरूं निस मारग जोऊं हो ।
तेरे कारण सांइयाँ भरि नींद न सोंऊं हो ।। १
अबिनासी आया सुणूं जब नोंति छिपाऊं[1] हो ।
साहिब सूं मन मांहिलो दुख टेरि सुणाऊं हो ।। २
वा बिरियाँ कब होयगी कोइ कहै सनेसा हो ।
मीरां के या बात का मन घणाँ अंदेसा हो ।। ३

○

पद–५९४ : राग–देस : ताल–कहरवा

(प्रेम)

सतगुर म्हारा प्रीत निभाज्यो जी । (टेर)
थे छो म्हारा गुण रा सागर, ओगण म्हारे मति जाज्यो जी ।। १
लोक न धीजै (म्हारो) मन न पतीजै, मुखड़ा रा सबद सुणाज्यो जी ।। २
मैं तो दासी जनम जनम की, (म्हारे) आँगणि रमता आज्यो जी ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, बेड़ो पार लगाज्यो जी ।। ४

○

पद–५९५ : राग–परज : ताल–कहरवा

(प्रेम)

सहेलियाँ साजन घर आया हो । (टेक)

५९३– (२म.) (रामस. गु. पृ. १९१)
1. पा०---जिमाऊं ।
५९४–(१उ.)
५९५–(२म.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बहोत दिनां की जोवती, विरहणि पिव पाया हो ।। १
रतन करूँ नेवछावरी, ले आरति साजूं हो ।। २
पिया का दिया सँनेसड़ा, ताहि बहोत निवाजूं हो ।। ३
पाँच सखी इकठी भई, मिलि मंगल गावै हों ।। ४
पिय की रली वधावणाँ, आणँद अंगि न मावै हो ।। ५
हरिसागर सूँ नेहरो, नैणाँ बँध्या सनेह हो ।। ६
मीरां सखी के आँगणैं, दूधाँ बूठा मेह हो ।। ७

○

पद–५९६ : राग–विहाग : ताल–कहरवा

(उलहना)

सहेल्यो उद्धौजी आया हे ।
आया पठाया स्याम का, मेरै मन नहिं भाया हे । (टेक)
एक निमिष कै कारणै, षटमास लगाया हे ।
पहली प्रीत करी हमसूं, पीछे पछिताया हे ।। १
जमुना जल में न्हावताँ, सखि चीर चुराया हे ।
कुबज्या दासी कंस की, जिणी स्यांम भुराया हे ।। २
मुरली तो मोहण लई, जिणि स्यांम रिझाया हे ।
देखो सखी सहेलियो, नैणाँ कर ल्याया हे ।। ३
सुख दुख अपणां करम का, गोबिंद बर पाया हे ।
दोस कुणी कौं दीजिये, मीराँ गुन गाया हे ।। ४

○

पद–५९७ : राग–सोरठ : ताल–चौपचँवी

(विनय)

सतगुर म्हारा चतर सुजाण, रतन का हौ पारषी ।
दीन्हां दीन्हां रामजी बताइ, संगति साधां सारषी । (टेक)

५९६–(२म.) (रामस. गु.)
५९७–(रामस. गु.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लागौ लागौ बिषियां रो पांन, देही छै काचा चाम की ।
वोषदि है हरिनांव, लगाऊं प्रभू नाम की ।। १
सदा सुहागणि नारि, डगर सिर क्यूं षड़ी ?
कै थारो पीव परदेस, कै घर सासू लड़ी ।। २
नहीं म्हारो पीव परदेस, नैं घर सासू लड़ी ।
चल्यो जा रे मूरष गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी ।। ३
सरवरिया री ऊंची नीची पाल क मुषड़ो जोवती ।
हरि बिन सूनी म्हारी सेज नैंण भर रोवती ।। ४
उड़ि उड़ि म्हारा बन का रे काग, स्यांम थारी पाषड़ी ।
रांमजी मिलन कब होय, फरूकै म्हारी आंषड़ी ।। ५
उड़ि उड़ि म्हारा ऊं सरवरिया रा हंस, सुरंग थारी पांषड़ी ।
सोनें मँढाऊं थारी चूँच, रूपा की दोइ आंषडी ।। ६
त्यारघा त्यारघा संत अनेक, बिड़द लीयां छाप की ।
बाँह गह्यां की लाज, मीरां छै प्रभू आप की ।। ७

○

पद–५९८ : राग–सोरठ : ताल–तिताला
(चरित और दृढ़ता)

सांध आया वो राणा म्हे सुण्यां, श्रवणां सुणी जी अवाज ।
म्हारो मन लाग्यौ बैराग सूं, रमस्यां साधां री साथि । (टेक)
साध संगति राणी छोडि द्यौ, बैठो राणां रै पास ।
साध हमारै सिर धणी, साधू माय'र बाप ।। १
इक कुल लाजै राणी आपणौ, दूजौ राय राठोड़ ।
तीजो लाजै राणी मेड़तो, चौथो गढ़ चीतोड़ ।। २
इक कुल राणा त्यारूं आपणौं, दूजो राइ राठोड़ ।
तीजो त्यारूं राणा मेड़तो, चौथो गढ़ चीतोड़ ।। ३
बागां तो बोली कोइली, गिर पर बोल्या जी मोर ।
मीरां नै सतगुरु मिल्या, नागर नंदकिसोर ।। ४

५९८– (म) (रामस. गु. पृ. ३५७)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–५९९ : राग–चैती गोरी वा सिंधु : ताल–दादरा

(आत्मेतिहास)

साधाँ रो संग निवारो राई, भाभीजी गोरल पूजो जी राज। (टेर)
सइयाँ पूजे गोरने, थे पूजो गनगोर।
मनवांछित फल पावस्यौ, जै तूठै गनगोर ।। १
नैं पूजूं गनगोर ने, नहिं पूजूं आनदेव।
बालसनेही सांवरो, जाको थे नहिं जानो भेव ।। २
सेवा सालगराम की, साध संत रो काम।
थे बेटी राठोड़ की, थानै राज दियो भगवान ।।
राज करै ज्याँनै करन द्यो, मैं सन्तन की दास।
भगति कराँ भगवान की, म्हारै राम मिलन की आस ।। ४
लाजै पीहर सासरो, लाजै मा मोसार।
नितरा आवै बोलमा, थानै बुरो कहै संसार ।। ५
चोरी न करूं कुमारगी, नहीं कुमाऊं पाप।
पुन के मारग चालताँ, म्हांसूं कांई हठ लाग्या छो आप ।। ६
कदि ठाकर परचो दियो, कदि मानी परतीति।
कुल को नांतो तोड़ियौ, भाभीजी नहीं छै राजां की रीति ।। ७
नहीं जाऊं पीहर सासरै, नहीं पिया के पास।
मीरां सरणैं राम के, म्हांनै गुर मिलिया हरिदास ।। ८

○

पद–६०० : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

साधू म्हारै आइया हेली वे गिरधरीजी रा प्यारा। (टेक)
चरण धोय चरणामृत लेस्यां (हे) कल-मल मेटनहारा ।। १
प्रांण ते अति प्रिय लागै (हे) कबहुं न करस्यां न्यारा ।। २
प्रभु कृपा कीनी अति (मो) पर सुधरचा जन्म हमारा ।। ३

५९९– (क ब.)
६००– (म)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६०१ : राग–आसावरी जोगिया : ताल–दीपचंदी

(विरह)

साधो मैं बैरागण हर की ।
भूषण वस्तर सब ही त्यागे खानपान बिसरानूं ।
ये ब्रजबासी कहत बावरी, मैं दासी गिरधर की ।। १
ऊधोजी तुम जाओ द्वारका, बिपती कहो गोपीन की ।
जैसे जल बिन मीन जो तड़पै, सो गति भई सखियन की ।। २
पात पात बृंदाबन ढूंढ फिरी व्रज घर की ।
मीरां के प्रभू गिरधरनागर मैं दासी गिरधर की ।। ३

○

पद–६०२ : राग–मल्हार : ताल–कहरवा

(विरह)

सावण दे रह्यो जोरा रे, घर आवोजी स्याम मोरा रे (टेक)
उमड़ घुमड़ चहुं दिस से आया, गरजत है घनघोरा रे ।। १
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोरा रे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ज्यो वारूं सो ही थोरा रे ।। ३

○

६०१– (या०—सं. रा. क. से)

नोट–इस पद के ३रे अंतरे में यह अंश अधिक था और बेमेल था—
'आप तो जाय द्वारका छाये पीर मोटी बिरहन की'—सो निकाल दिया गया। पहिले और तीसरे अंतरे में 'मैं दासी गिरधर की' पदांश की द्विरावृत्ति भी चिंत्य है । ह.ना.

६०२–(ऊ.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६०३ : राग–शंकरा : ताल–दीपचंदी
(प्रेमलीला)

साँचो प्रीति[1] ही को नातो । (टेर)
कै जाने बृषभाननंदिनी, कै(मदन)मोहन रँगरातो ।। १
यहै सृंखला अति बलवंति, बंध्यो प्रेम गज मातो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुंजनि महल बसातो ।। ३

○

पद–६०४ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी
(प्रेम)

साँवराजी हो, चूड़ें रंग लाग रह्यो छे, लाग रह्यो छै व्रजराज । (टेर)
रंग चूड़ो रंग चूनड़ी जी काँई रंगीलो साज रंग बृंदावन कुंजलता जी ।
काँई सहस गोप्यां रा सिरताज ।। १
रंग छे थारी बाँसरली जी काँई रंग छे सब्रही समाज ।
मीरां गिरधर रंग रंगी छे बाँह गहे की लाज ।। २

○

६०३–(उ.)
(या० ना. दा. जी के पद प्रसंग माला से).
नोट–याज्ञिकजी का नोट है कि 'यह पद गाते २ नारायणदास नटवाने, झांकिया सराय में, प्रेमावेश में देह त्यागी थी । (उक्त प. प्र. माला में) —ह. ना.
1. पा०—'प्रेम' ।
६०४–(उ. सं.)
(या०—सं रा. क. से.)
नोट–याज्ञिकजी ने इस पद के साथ नोट देकर लिखा है कि किसी अज्ञात कवि ने दो चरण इसमें बढ़ाये थे जिनको कृष्णानन्द व्यासदेव ने मिला दिये थे सो ये हैं—
'थारी २ नैननडी मन रंजन खंजन मीन मृग मोह्या छे ।
मनमथ गंजन भंजन दुखड़ो मुखड़ो मनमोहन सोह्या जोया छे ।'
नोट–स्यात् व्रजनिधि अथवा उनके सहयोगी अन्य कवि का हो ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६०५ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह)

साँवरा ठाडी रहूं घर जाऊँ रे । (टेक)
कब की खड़ी मैं तोरे द्वार पर, खड़ी खड़ी कुमलाऊँ रे ।। १
भाल तिलक तुलसी की माला, मैं तो जपती आऊँ रे ।। २
पाँव घूघरा रिमझिम बाजे, नाँचत गाती आऊँ रे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, गुण गोबिन्द का गाऊँ रे ।। ४

○

पद–६०६ : राग–काफी : ताल–दीचंपदी

(विरह)

साँवरा बिन नींद न आवै, न आवे री, मेरो जीवड़ो अति अकुलावे (टेक) ।
स्याम बिना मेरा जग में अँधेरो, दीपक दाय न आवे ।
स्याम बिन मेरी सेज अलूंणी, जागत रैंन डरावे ।।
दृगन झर ल्यावे री, ल्यावे ।। १
बिरह की मारी सब जग हेरूँ, जे कोई स्याम मिलावें ।
बिरह नाग मेरी काया डसत है, लहर लहर जिया जावे ।।
जड़ी घस ल्यावे री, ल्यावे ।। २
सुंण सुंण री मेरी बगड़ पडोसँण, जे कोई स्याम मिलावे ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मोहन मोहन आवे ।।
कदे घर आवे री, आवे ।। ३

○

पद–६०७ : राग–झँझोटी : ताल–धीमा

(दर्शन, उत्सुकता)

साँवरा (सजनी) सूँ मिलना जरूर । (टेक)

६०५–(म) (१६) (पुजा. नाथू. पु. से)
६०६–(उ) (१८) (पुजा. नाथू. पु. से)
६०७–(म) (३) (नाथू. पु. से)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गहरी नँदिया नाव पुरानी, खेवटिया है दूर ।। १
इत मथुरा उत गोकुलनगरी, जमुना बहै भरपूर ।। २
काहे करूं कित जाऊं सजनी, रही बसूर बसूर ।। ३
जमना के नीराँ तीराँ बंसी बजावे, मोरमुकुट छविपूर ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निसदिन रहूंगी हजूर ।। ५

○

पद—६०८ । राग—सोरठ : ताल कहरवा

(विनय)

साँवरिया म्हारी प्रीतड़ली तो न्हिमाज्यो । (टेक)
प्रीत करो तो स्वामी ऐसी कीज्यो, अधबिच मत छिटकाज्यो ।
तुम तो हो स्वामी गुण रा सागर, म्हारा ओगण चित मत ल्याज्यो ।। १
काया गढ़ घेरा ज्यो पड़्या छै, ऊपर आप रखाज्यो ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणाँ चित्त रखाज्यो ।। २

○

पद—६०९ : राग—सोरठ : ताल—कहरबा

(विनय)

साँवरिया मोरे नैना आगे रहिज्यो जी । (टेक)
म्हांने भूल मत जाज्यो जी, मोहन लागी लगन निभाज्यो जी ।। १
राणाँजी भेज्यो विष रो पियालो, सो अम्रत कर पीज्यो जी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुड़ण मत कीज्यो जी ।। ३

○

६०८—(ऊ)
६०९—(२ म) (मीरांबाई के भजन नं० २३)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६१० : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

साँवरियो म्हांनै भाँग पिलाई, मेरी अँखियाँ में लाली छाई ।
काहे री कूँडी (राधे) काहे रा घोटा, काहे री सुवाफी बणाई । (टेक)
तन कर कूँडी, प्यारे मन कर घोटा, सुरतो री सुवाफी बणाई,
कदम नीचे छाँण पिवाई ।। १
पांचाँ गुवाल मिल घोटन बैठै, श्रीगंगा जल झारी भर ल्याई ।
प्रेम करि (राधेजी को) अछक चखाई ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, प्रेम की रीत निभाई
चरण मांहि मनड़ो लगाई ।। ३

○

पद–६११ : राग–जैजेवंती : ताल–कहरवा

(प्रेमानंद)

साँवरे की दृष्टि मानों प्रेम की कटारी है । (टेर)
लागत बिहाल भई, गोरस की सुधि गई
मनहू में व्याप्यो प्रेम भई मतवारी है ।। १
चंद तो चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहै
जल बिना मरै मीन ऐसी प्रीति प्यारी है ।। २
सखी मिलि दोइ चारि सुनो री सयानी नारि
उनको हौं नीके जानौं कुंज को बिहारी है ।। ३
मोर को मुकट माथे छवि गिरधारी है ।
माधुरी मूरति पर मीरां बलिहारी है ।। ४

○

६१०–(क ३)
६११–(उ सं.) (ब्रजनिधि ग्रन्थावली पृ. २३०)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६१२ : राग–देश : ताल–दादरा

(विरह)

साँवरे दी भालन माये सानू प्रेम दी कटारियाँ । (टेक)
सखी पूछे दोऊ चारे व्याकुल क्यो भैया नारे ।
रँग के रँगीले मोसे दृग भर मारियाँ ।। १
व्याकुल बेहाल भैया सुध-बुध भूल गैया ।
अजहू न आये श्याम कुञ्जबिहारियाँ ।। २
यमुना की घाटी बाटी असाँ तेरी चाल पछाती ।
बसियाँ बजावी कान्हा भैया मतवारियाँ ।। ३
मीरांबाई प्रेम पाया गिरधरलाल ध्याया ।
तू तो मेरो प्रभुजी प्यारा दासी हों तिहारियाँ ।। ४

○

पद–६१३ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

साँवरे रँग राची, राणाँजी हूँ तो ।
बाँध घूघरा प्रेम का, हूँ हरि आगे नाची । (टेक)
इक निरखत है इक परखत है, एक करत मोरी हाँसी ।
और लोग म्हारा कांई करसी हूँ हरिजी की दासी ।। १
राणों विष रो प्यालो भेज्यो, हूँ नहिं हिम्मत काची ।
मीरां चरणाँ लाग रही छै, या तो न्हिमसी साँची ।। २

○

पद–६१४ : राग–माढ : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

साँवरो बसे छै पैलो तीर, आछयो म्हारो धीरो रे भारूडो घीर । (टेक)

६१२–(क) (बृ. रा. र. पृ. ११९)
६१३–(२ म)
६१४–(क.) (२४) (पुजा. नाथू. पु. से.)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गहरी नदियाँ नाव पुरानी, खेवटियो बेपीर ।। १
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कानाँ कुंडल सिर चीर ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आखिर जात अहीर ।। ३

○

पद–६१५ : राग–काफी, होरी : ताल–धमार, दीपचंदी
(लीला)

साँवरो होरी खेलन आयो, आयो । (टेक)
नंदगाँव से संग सखा ले, बरसाने में ध्यायो ।
इतसे निकसी कुंवरि राधिका, सखियन साज बनायो ।।
मानो सखी, मन भावन आयो ।। १
ताल पखावज मृदँग बाजे, मेघन ज्यूं घररायो ।
दादुर मोर पपैया बोले, मोरन डौर लगायो ।।
सखी जाने सावन आयो ।। २
उड़त गुलाल अरुण भये अम्बर, अबीरन घटा घन छायो ।
दामिनि ज्यूं दमके सब गोपी, पिचकारिन भर ल्यायो ।।
केशर को कीच मचायो ।। ३
ब्रजमंडल में फाग रच्यो है, सखियन मोद बढ़ायो ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, केसर रँग करायो ।।
सखी मन आनँद छायो ।। ४

○

पद–६१६ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा
(आत्मेतिहास)

सीसोद्या राणां प्यालो म्हाँने क्यूं रे पठायो । (टेक)
भली बुरी तो मैं नहिं कीन्हीं, क्यूं है रिसायो ।
थाँने म्हाँने देह दिवी है, ज्याँ रो हरिगुण गायो ।। १

६१५–(उ) (१९) (पुजा. नाथू. पु. से)
६१६–(उ. ,,)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कनक कटोरे ले विष घोल्यो, दयाराम पंडो लायो ।
ऊठी उठी तो मैं नहिं देख्यो, कर चरणामृत पायो ।। २
आज काल की मैं नहिं राणाँ, जद यह ब्रह्मंड छायो ।
मेड़तिया घर जन्म लियो है, मीरां नाम कहायो ।। ३
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, खंभ फाड़ व्रेगो धायो ।
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, जन को बिड़द बढ़ायो ।। ४

○

पद–६१७ : राग–काफी : ताल–अद्धा

(प्रेम)

सीसोद्यो रूठयो तो म्हारो काईं कर लेसी,
म्हे तो गुण गोविंद का गास्यां, हो माई । (टेक)
राणाँजी रूठ्यो तो वाँरो देस रखासी,
हरिजी रूठ्याँ किठे जास्यां, हो माई ।। १
लोक लाज की तो काण न मानां,
निरभै निसांण घुरास्यां, हो माई ।। २
राम नाम की झयाझ चलास्यां,
भवसागर तिर जास्यां, हो माई ।। ३
मीरां शरण साँवले गिरधर की ।
चरण कमल लपटास्याँ, हो माई ।। ४

○

पद–६१८ : राग–तिलंग : ताल–धीमा

(विनय)

सुणजो जी थे भाभी मीरां, थाँ पै राणाँजी कोप कियो छै जी । (टेक)
भाभी थारै मारण कारण, प्यालो हाथ लियो छै जी ।। १

६१७–(उ. १)
देखो—राणाँजी म्हे तो गोविन्द का गुण गास्याँ ।
६१८–(३ म) (दीना. म. मी. प. २२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उठ उठ भाजै रोस रो माँतो, हाथाँ खड्ग लियो छै जी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, इमरत पान कियो छै जी ।। ३

○

पद–६१९ : राग–जोगिया : ताल–कहरवा

(चरित)

सुण लीज्यो बिनती मोरी, मैं शरण गही प्रभु तोरी । (टेक)
तुम(तो) पतित अनेक उधारे, भवसागर से तारे[1] ।। १
मैं सब का तो नाम न जानूं, कोई कोई नाम[2] उचारे ।। २
अंबरीष सुदामा नामा, तुम पहुंचाये निज धामा ।। ३
ध्रुव जो पांच वर्ष के बालक, तुम दरश दिये घनश्यामा ।। ४
धना भक्त का खेत जमाया, कबिरा (का) बैल चराया ।। ५
शबरी का झूठा फल खाया, तुम काज किये मन भाया ।। ६
सदना औ सेना नाई को, तुम लीन्हा अपनाई ।। ७
करमा की खिचड़ी खाई तुम, गणिका पार लगाई ।। ८
मीरां प्रभु तुमरे रँगराती, या जानत सब दुनियाई ।। ९

○

पद–६२० : राग–आसावरी वा भैरवी : ताल–दीपचंदी वा कहरवा

(उलहना)

सुण लीजे हे जसमत अम्मा ।
अम्मा ए म्हारा प्याराजी ने घणी ए खम्मा ।। (टेर)
आप न आये द्वारिका छाये लिख लिख भेजै म्हाँने दम्मा ।। १
हमें न बुलावै पतियाँ न भेजै कब लग राखाँ म्हे गम्मा ।। २
मीठा बोला छाती छोला, साँच नहीं छे वाँ में जम्मा ।। ३

६१९–(म.)
1. पा० तारयो । 2. पा०—भक्त बखानीं ।
६२०–(उ.) (निज संग्रह से ।)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चुण चुण कलियां सेज बिछाई कुवज्या के संग रम्मा ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधर नागर बावाँ जी पग ने नम्मा ।। ५

○

पद–६२१ : राग–पीलू : ताल–धीमा
(प्रेमप्रभाव)

सुनिनी अमानी अँखियाँ निमाँनी । (टेर)
मन मोहन दे रूप लुभानी साढी गल नैंकहू न माँनी ।। १
लोकाँ दे डर छपि के छिपावाँ, भरि भरि आवत पाँनी ।। २
मीरां प्रभु गिरधर गल साढी, ढँकी छिपी सब जाँनी ।। ३

○

पद–६२२ : राग–विहाग, सोरठ, मल्हार : ताल–धीमा
(प्रेम)

सुनी मैं हरि आवन की आवाज । (टेक)
महल चढ़ी जोऊं मोरी सजनी, कब आवै महाराज ।। १
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोइल मधुरै साज ।। २
उमग्यो इन्द्र चहूं दिस बरसै, दामिन छोड़ी लाज ।। ३
धरतीं रूप नवा नवा धरिया, इन्द्र मिलन के काज ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, वेग मिलो महाराज ।। ५

○

६२१–(या० –ह. लि. पदमुक्तावली से)
नोट—यही एक पद पंजाबी भाषा का इस संग्रह में मिला है। नहीं कहा जा सकता कि मीराँजी का यह पद इस भाषा में कैसे बना। (सं०)
६२२–(१ उ) (बं. पु. पृ. २२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६२३ : राग–बागेश्वरी : ताल–तिताला

(प्रेम)

सुमन आयो बदरा, शाम बिना । सुमन०
सोवत सपन में देखत शाम को ।
भरायो नयन निकस गयो कजरा ।।
मथुरा नगर की चतुरा गौलन ।
शाम को हार हमको गजरा ।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर ।
समय गयो पीछे मिट गये ऊगरा ।।

○

पद–६२४ : राग–मांड : ताल–दीपचँदी दादरा

(चेतावनी)

सूरत दीनानाथ से लगी,
तू तो समझ सुहागण सुरता नार । (टेक)
लगनी लहँगो पहर सुहागण, बीती जाय बहार ।
धन जोबन है पावणा री, मिलै न दूजी बार ।। १
राम नाम को चुड़लो पहिरो, प्रेम को सुरमो सार ।
नक बेसर हरि नाम की, उतर चलो नी परले पार ।। २
ऐसे बर को क्या बरूँ, जो जन्मे और मर जाय ।
बर बरिये एक साँवरो री, (मेरो) चुड़लो अमर हो जाय ।। ३
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो री, हरि ठग ले गयो मोय ।
लख चोरासी मोरचा री, छिन में गेरचा (छै) बिगोय ।। ४
सुरत चली जहाँ मैं चली री, कृष्ण नाम झनकार ।
अविनाशी की पोल पर जी, मीराँ करे छै पुकार ।। ५

○

६२३–(म) ।
६२४–(१उ) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६२५ : राग–बिलावल : ताल कहरवा

(प्रेम)

सेजड़ली'र सुधार गिरधर ग्राँवणां ये ।
बाईजी सेजड़ली'र सुधार ।। (टेक)
ग्राँवण री बिरियां भई हे, बाई, महलि ढोल्यो ढाल ।। १
ग्रतर सुगंध मिलायके री, बाई, घिव रो दिवलो जाल ।। २
जा ये जुही ग्रौर मोगरो चंपा कलियाँ सुधार ।। ३
पलकाँ सैं कराँ पाँवडा, अंचरा सैं मग झार ।। ४
गिरधर म्हारो परम सनेही, मीरां उनकी नार ।। ५

○

पद–६२६ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(राँणा-सम्वाद)

सो मीराँ रँग लाग्यौ राम हरी । (टेक)
कंठी तिलक दोवड़ो माला, सीलवरत सिणगारो ।
ग्रौर सिंगार सोहै नहिं राणाँजी, यो गुर ग्यान हमारो ।। १
भलि कोइ निन्दो भलि कोइ बिन्दो गुण गोबिंदजी का गास्यां
जिण मारग मेरा संत पधारचा, जीं [उण] मारग म्हे जास्यां ।। २
भजन करस्याँ सती न होस्याँ, मन मोह्यो घण नामी ।
जेठ बहू को नांतो नहीं हो, थे सेवक म्हे स्वामी ।। ३
राज न करस्याँ जीव न सतास्याँ, काँई करैलो म्हारो कोई ।
हस्ती चढ़ म्हे खर नहिं चढ़स्याँ, ऐ तो बात न होई ।। ४
ना कोई मेरै मात पिता है, नाँ कोई बन्धू भाई ।
थे थाँकै म्हे म्हाँकै राणाँजी, यूं गावै छै मीराँ बाई ।। ५

○

६२५–(१उ) (दीना. मं. मी. प. २७)
६२६–(२म) (क. ब. १२)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६२७ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

सोवत ही पलका में मैं तो, पलक लगी पल में पिउ आये । (टेक)
मैं जु उठी प्रभु आदर दैन कूं, जाग परी पिउ ढूंढ न पाये ।। १
और सखी पिउ सोइ गमाये, मैं जु सखी पिउ जागि गमाये ।। २
आज की बात कहा कहौं सजनी, सुपना में हरि लेत बुलाये ।। ३
वस्तु एक जब प्रेम की पकरी, आज भये सखि मन के भाये ।। ४
वो माहरो सुने अरु गुनि है, बाजे अधिक बजाये ।। ५
मीरां कहे सत्त करि मानो, भक्ति मुक्ति फल पाये ।। ६

○

पद–६२८ : राग पीलू : ताल–दीपचंदी

(विरद विनय)

हमने सुनी छै हरि अधम-उधारण ।
अधम उधारण सब जग-तारण । (टेक)
गज की अरजि गरजि उठि ध्यायो, संकट पड़्यो तब कष्ट निवारण ।। १
द्रुपदसुता को चीर बढ़ायो, दूसासन को मान-मद-मारण ।। २
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, हिरणाकुस नख उदर विदारण ।। ३
ऋषि पत्नी पर किरपा कीन्हीं, विप्र सुदामा की विपति विदारण ।। ४
मीराँ के प्रभु मो बंदी परि, एती वेरि भई किण कारण ? ५

○

पद–६२९ : राग–पहाड़ी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हमरी प्रणाम श्री वांकेविहारी को । (टेक)

६२७–(ऊ) ।
६२८–(१उ) ।
६२९–(उ) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोरमुकट माथे तिलक बिराजै, कुण्डल अलकां कारी को ।। १
अधर मधुर धर वंसी बजावै, रीझ रिझावे राधा प्यारी को ।। २
यह छबि देखि मगन भई मीरां, मोहन गिरवरधारी को ।। ३

○

पद–६३० : राग–झंझोटी ताल–तिताला

(प्रेम)

हमरे रौरे लागिल कैसे छूटै । (टेक)
जैसे हीरा हनत निहाई, तैसे हम रौरे बिन आई ।। १
जैसे सोना मिलत सोहागा, तैसे हम रौरे दिल लागा ।। २
जैसे कमलनाल बिच पानी, तैसे हम रौरे मन भानी ।। ३
जैसे चंद्रहिं मिलन चकोरा, तैसे हम रौरे दिल जोरा ।। ४
जैसे मीरां पति गिरधारी, तैसे मिलि रहु कुञ्जबिहारी ।। ५

○

पद–६३१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हमारे मन राधा स्याम बसी । (टेक)
कोई कहे मीरां भई बावरी, कोइ कहे कुल नसी ।। १
खोल के घूंघट पार के गाती, हरि ढिग नाचत गसी ।। २
बृन्दांबन की कुंजगलिन में, भाल तिलक उर लसी ।। ३
विष को प्यालो राणाजी ने भेज्यो, पीवत मीरां हँसी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भक्ति मार्ग में फँसी ।। ५

○

६३०–(क)
६३१–(२म) (मीरां. जीव. का. प्र. जी. पृ. ९)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६३२ : राग–भोपाली : ताल–तिताला

(चेतावनी)

हरि को भजन नित करिए भोरी । (टेक)
देख पराई सुख संपति कूं काहे झरकर मरिये री भोरी ।। १
नदिया गहरों नाव पुरानी समझ समझ पग धरिये री भोरी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर चरनकँवल चित धरिये री भोरी ।। ३

○

पद–६३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

हरिजी सों मिलना कैसे होय ?
पांच पहर धंदा में बीते, तीन पहर गये सोय ।।
बालपनो तों खेल गमायो, तरुणपणो नारी संग सोय । हरिजी०
वृद्ध भये चिंता बहु बाढी, गये जनम सब खोय ।।
आगे पीछे नाहन चेत्यो, माया मोह में गयो विलोय ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, होनी होय सो होय ।। हरिजी०

○

पद–६३४ : राग–तिलंग : ताल–धीमा तिताला

(विनय, उलहना)

हरि तुम काहे को प्रीत लगाई ?
प्रीत लगाई पर दुख दीनो कैसी लाज न आई ।। हरि तुम०
गोकुल छांडि मथुरा को जाओ वा में कौन बडाई ? हरि तुम०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर तुमको नंद दुहाई ।। हरि तुम०

○

६३२–सं. (२म) (मा. हरिनारायणजी की पु. ह.)
६३३–(म)
६३४–(उ)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६३५ : राग–गिरनारी सोरठ : ताल–दीपचंदी

(प्रार्थना)

हरि तुम हरो जन की पीर । (टेक)
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर ।। १
भक्त कारण रूप नरहरि, धरचो आप सरीर ।। २
हिरनकश्यप मार लीनो, धारचो नाहिन धीर ।। ३
बूडते गज ग्राह मारचो, कियो बाहर नीर ।। ४
दासि मीरां लाल गिरधर, दुःख जहां तहां पीर ।। ५

○

पद–६३६ राग–देश : ताल–रूपक

(विरह)

हरि बिन कूंण गती मेरी ? (टेक)
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये, मैं रावरी चेरी ।। १
आदि अंत निज नांव तेरो, हीया में फेरी ।। २
बेरि-बेरि पुकारि कहूं, प्रभु आरति है तेरी ।। ३
यौ संसार विकार सागर, बीच में घेरी ।। ४
नाव फाटी प्रभू पालि बांध्यो, बूडत है बेरी ।। ५
बिरहणि पिव की बाट जोवै, राखि ल्यौ नेरी ।। ६
दासि मीरां लाल गिरधर, सरणि हूं तेरी ।। ७

○

पद–६३७ : राग–बिलावल : ताल–रूपक

(विरह)

हरि बिनु क्यों जीऊं री माय । (टेक)

६३५–(१उ) (म. मा. मी. ली. २९)
६३६–(२म)
६३७–वि.भू.पु.

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हरि कारन बौरी भई, जस काठ हि घुन खाय ।। १
औषध मूल न संचरै, मोहिं लागो बौराय ।। २
कमठ दादुर बसत जल महँ, जल हि ते उपजाय ।। ३
हरी ढूंढन गई बन बन, कहुँ मुरलि धुन पाय ।। ४
मीरां के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ।। ५

○

पद–६३८ : राग–सोरठ : ताल–तिताला वा कहरवा

(विनय)

हरि मेरे जीवन प्राण-अधार । (टेक)
और आसिरो नाहिन तुम बिन, तीनूं लोक मँझार ।। १
आप बिना मोहि कछु न सुहावै, निरख्यौ सब संसार ।। २
मीरां कहै मैं दासी रावरी, दीज्यौ मती बिसार ।। ३

○

पद–६३९ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(विनय)

हरि मेरे नयनन में रहियो ।
रात दिवस आगे आगे डोलो, घड़ि पल अलग मत रहियो ।। हरि०
कोई को प्यारे लड़का लड़की, कोई को प्यारे व्हेन और भैय्या ।
कोई को प्यारी अजब सुन्दरी, हमरे प्यारो नन्दलालाजी को छोरैयो ।। हरि०
कोई को बल है मात-पिता को, कोई को बल कुटंब की सेवयो ।
कोईक कहे में आप बलियो, हमारे बल है राजा रामैयो ।। हरि०
कोई के होसी कोपीन धारण की ल्यो, कोई कपडा पहेरी बेडेयो ।
कोई होसिक धन मालन को, हमरो होसी हरि चरण को छैयो ।। हरि०
कोई पढत चतुर भयो, कांके राज रंग की गवैयो ।
मीरां के प्रभु तुम्हरे मिलन को, प्रेम सहित कृष्ण कृष्ण कहियो ।। हरि०

६३८–(१उ) ।
६३९–(क) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६४० : राग–जङ्गला-जोगिया ग्रासावरी : ताल–दीपचंदी वा कहरवा

(चेतावनी)

हरि से गरब किया सोई हारा ।। (टेक)
गरव किया रतनागर सागर, जल खारा कर डारा ।
गरव किया लंकापति रावण, टूक टूक कर डारा ।। १
गरव कियां चकवे चकवी ने, रैन बिछोहा डारा ।
गरव किया वन की चिरमी ने, मुख कारा कर डारा ।। २
इन्दर कोप किया वृज ऊपर, नख पर गिरवर धारा ।
मीरां कें प्रभु गिरधर नागर, जीवन-प्राण हमारा ।। ३

○

पद–६४१ : राग–वहार : ताल–तिताला

(प्रार्थना)

हरि सों विनती करों कर जोरी । (टेक)
वरबस रचल धमारी हम घर मा सू पिता मारे गारी ।। १
निपट ग्रलप बुधि दिन गति थोरी, प्रेम मगन रस ले बल भारी[1] ।। २
मोरां के प्रभु सरण तिहारी, ग्रवचक ग्राय मिलहु[2] गिरधारी ।। ३

○

पद–६४२ : राग–भैरव सिन्ध : ताल–दादरा

(लीला)

हाँ रे कोई माधव ल्यो माधव ल्यो, वेचती व्रजनारी रे । हाँ रे० ।। (टेक)
माधव ने मटुकी माँ घाली, गोपी लटके लटके चाली रे ।। १
हां रे गोपी घेलूं शूं बोलती जाय, कान मटुकि माँ नव समाये रे ।। २

६४०–(१ उ) (फु. प.)
६४१–(का०।उ०।३१०)
(क०) । पाठ शोधनीय है । सं० ।
पा०—1. बरजोरी 2. मिल (३ म) ।
६४२–(३ क) (का. दो. गु)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नव मानों तो जुग्रो उतारी, माँही जुए तो कुन्जविहारी रे ।। ३
बृन्दाबन माँ जाता धारी, वालो गौ चारे छे गिरधारी रे ।। ४
गोपी चाली बृन्दावन माटे, सौ व्रज नी गोपियो साथे रे ।। ५
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, जे ना चरण-कमल सुख-सागर रे ।। ६

○

पद–६४३
(प्रेम)

हाँ रे चालो डाकोर माँ जाइ वसिये,
हाँ रे मने लेहे* लगाडी रँग रसिये रे । (टेर)
हाँ रे प्रभात ना पहोर माँ नोबत वाजै,
हाँ रे ग्रमे दरसन करवा जइये रे ।। १
हाँ रे ग्रटपटी[1] पाघ केसरियो वाघो, हाँ रे कानें कुंडल सोइये रे ।। २
हाँ रे पीलो पीतांवर जरकसी जामो, हाँ रे मोतिन माला थी मोहिये रे ।। ३
हाँ रे चंद्रवदन ग्रणियारी ग्राँखाँ, हाँ रे मुखडो सुंदर सोहिये रे ।। ४
हाँ रे रुमझुम रुमझुम नूपुर बाजै, हाँ रे मारो मन मोह्यो मोरलियो रे ।। ५
हाँ रे मीराँवाई कहै प्रभु गिरधरनागर, हाँ रे अंगो अंग जई मलिये रे ।। ६

○

पद–६४४ : राग–पहाडी : ताल–कहरवा
(प्रेम)

हाँ रे सखी देख्यो री नन्द किशोर ।
मोर मुकुट मकराकृति कुन्डल, पीतांबर झनक हरोल० हाँ रे ।
ग्वाल-वाल सब संग में लीनो, गोवर्धन की ग्रोर० हाँ रे ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि भये माखनचोर० हाँ रे ।

○

६४३–(या०—का० दो० से) ।
*लेह-प्रेम—पा० 1. 'लटपटी'
६४४–(म) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६४५ : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

हे ओ सहिया ! हरि मन काठ कियो । (टेर)
आवन कह गयो, अजहूं न आयो, करि करि वचन गयो ।। १
खानपान सुधबुध सब बिसरा, कैसे करन जियो ।। २
वचन तुम्हारे तुम ही बिसारो, मन मेरो हर लियो ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, तुम बिन फटत हियो ।। ४

○

पद–६४६ : राग–बहार : ताल–तिताला

(विरह)

हे मेरो मन मोहना, आयो नहीं सखी री । (टेक)
कै कहुँ काज किया संतन का, कै कहुँ गैल भुलावना ।। १
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, लाग्यो है विरह सँतावना ।। २
मीरां दासी दरसण प्यासी, हरि चरणां चित लावना ।। ३

○

पद–६४७ : राग–झंझोटी : ताल–तिताला

(चरित)

हे री माँ नंद को गुमानी म्हारे मनड़े बस्यो । (टेर)
गहे द्रुम-डार कदम की ठाड़ो मृदु मुसक्याय म्हारी ओर हँस्यो ।। १
पीतांबर कटि काछनी काछे, रतन जटित सिर मुकुट कस्यो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, निरख बदन म्हारो मनड़ो फस्यो ।। ३

○

६४५–(२ उ) ।
६४६–(२म) ।
६४७–(या०—सं० रा० क. से) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६४८ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह-वेदना)

हे री मैं तो दरद दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय ।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय ।
गगन मँडल पे सेज पिया की, किस विध मिलणा होय ।।
हे री मैं तो दरद०
घायल की गत घायल जाने, के जिन घायल होय ।
जौहर की गत जौहरी जाने, के जिन जौहर होय ।।
हे री मैं तो दरद०
दरद की मारी बन बन ढूंढूं, वैद मिल्यो नहि कोय ।
मीरां के प्रभु पीर मिटेगी, वैद साँवलिया होय ।
हे री मैं तो दरद०

○

पद–६४९ : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(प्रेम)

हेली म्हाँसूं हरि बिन रह्यो न जाय । (टेक)
सासु लड़ै मोरी ननद खिजावै, राणा रह्यो रिसाय ।। १
पहरो भी राख्यो चोकी बिठाइयो, ताला दियो जुड़ाय ।। २
पूर्वजन्म की प्रीति पुरानी, सो क्यों छोड़ी जाय ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, और नं आवै म्हारी दाय ।। ४

○

६४८–(पु०) (यह पद निज संग्रह में है) ।
६४९–(१क) (बं. पु. पृ. ४५) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६५० : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(चेतावनी)

हेली सुरत सोहागिन नार, सूरत मेरी राम से लगी । (टेक)
लगनी लहँगां पहिर सोहागिन, बीती जाय बहार ।
धन जोबन दिन चार का हे, जात न लागे बार ।। १
झुठे वर को क्या बरूँजी, अधबिच में तज जाय ।
वर तो बराँला रामजी म्हे, म्हारो चुड़लो अमर हो जाय ।। २
राम नाम को चूड़लो हो, निरगुन सुरमो सार ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणां बलिहार ।। ३

○

पद–६५१ : राग–पहाड़ी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हो कानाँ किन गूँथी जुलफाँ कारियाँ । (टेक)
सुधर कला-प्रवीन हाथन सूं, जसुमतिजू ने सँवारिया ।। १
जो तुम आओ मेरी बाखरियाँ, जुरि राखूँ चन्दन किंवारियाँ ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, इन जुलफन पर वारियाँ ।। ३

○

पद–६५२ : राग–बडहंस : ताल–कहरवा

(उल्हना)

हो गये श्याम दूज के चन्दा । (टेक)
मधुबन जाय भये मधुबनियाँ, हम पर डारो प्रेम को फंदा । १
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, अब तो प्रेम परचो कछु मन्दा ।। २

○

६५०–(२म) ।
६५१–(३म) ।
६५२–३(म) (बृ. रा. र. १४९) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६५३ : राग–खम्माच : ताल–तिताला वा कहरवा

(विनय)

हो जी म्हाराज छोड़ मत जाज्यो । (टेक)
मैं अबला बल नाहिं गुसाईं, तुमहि मेरे सिरताज ।। १
मैं गुण हीन गुण नाहिं गुसाईं, तुम समरथ महाराज ।। २
रावली होइ के किण रे जाऊँ, तुम हो हिवड़ा रो साज ।। ३
मीरां के प्रभु और न कोई, राखो अब के लाज ।। ४

○

पद–६५४ : राग–बिहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह-विनय)

हो जी हरि कित गये नेह लगाय । (टेक)
नेह लगाय मेरो मन हर लीयो, रस भर टेरि सुनाय ।
मेरे मन में ऐसी आवे, मरूं जहर बिष खाय ।। १
छाँडि गयो बिसवास घात करि, नेह केरी नाव चढ़ाय ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, रहे मधुपुरी छाय ।। २

○

पद–६५५ : राग–माड : ताल–कहरवा

(चरित)

हो जी हो सीसोद्या राजा, मनड़ो बैरागी धन रो क्या करूं । (टेक)
जहर का प्याला राणाँजी भेज्या, कोई द्यो मीरां के हाथ ।। १
कर चरणामृत मीरां पी गई, कोई आप जानो रघुनाथ ।। २
सांप टिपारा राणाँजो भेज्या, कोई द्यो ने मीरां ने जाय ।। ३
कर खँगवालो पहरियो, कोई आप जानो दीनानाथ ।। ४

६५३–(२म) ।
६५४–(मी. प्र. बि. कु. मु.-पृ. ११२) ।
६५५–(३ क) (का. ह. नं. १) ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणांजी दासी भेजिया, कोई जावो ने मीरां पास ।। ५
मर गया होय तो जलाय दीज्यो, नातर नदी में बहाय ।। ६

○

पद–६५६ : राग–खम्माच : ताल–दादरा

(विनय)

होता जाजो राज हमारे महलों, होता जाजो राज । (टेक)
मैं औगनी मेरा साहिब सगुना, संत सँवारें काज ।। १
मीरां के प्रभु मँदिर पधारो, करके केसरियाँ साज ।। २

○

पद–६५७ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(होरी)

होरी खेलत है गिरधारी ।
मुरली चंग बजत डफ न्यारौ, सँग जुवती ब्रजनारी ।। (टेक)
चन्दन केसर छिरकत मोहन, अपने हात विहारी ।
भरि भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी ।। १
छैल छबीले नवल कान्ह सँग, स्यामा प्रान-पियारी ।
गावत चारु धमार राग तहँ, दै दै कल (कर) कर तारी ।। २
फाग जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ्यौ रस ब्रज भारी ।
मीरां के प्रभु गिरिधर मिलिया, मोहनलाल बिहारी ।। ३

○

६५६–(३क)
६५७–(२म)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६५८

(होरी-लीला)

होरी खेलन को आये राधे प्यारी, हाथ लिये पिचकारी । (टेर)
कितने बरस के कुंवर कन्हैया, कितने बरस की राधा प्यारी ।। १
सात बरस के कुंवर कन्हैया, बारा बरस की राधा प्यारी ।। २
उँगली पकड़ मेरा पहुँचा भी पकड़्या, बैयां पकडि झकझोरी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, तुम जीते हम हारी ।। ४

○

पद–६५९ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(होरी)

होरी खेलन चलो बृजनारी, नन्द-पौर ठाढे हैं मुरारी (टेक)
राधा चन्दभागा चन्द्रावली, भामा ललित सुशीले ।
शुभसूचक सुवर्ण-घट सिर धरि, अम्ब बोर जब ही ले ।। १
नई २ चीर कुसूमी सारी, भूषण बहु बिधि सजिये ।
नागर केलि करव मोहन सँग, नवल कान्ह प्रिय भजिये ।। २
चोवा चन्दन बुक्का बदन पै, उड़त गुलाल अबीर ।
खेलत फाग भाग बड़ गोपी, छिरकत श्याम शरीर ।। ३
चँग मृदंग ढोल डफ, महबर बेण रसाल ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, रसिकराय द्विजपाल ।। ४

○

६५८–(म.) (का०उ०२।३६५)
६५९–(२म) (मीरां बा. भज. पृ. १८ प्रकीर्णक)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६६० : राग–काफी : ताल–सिन्दूरा
(विरह, होली)

होली पिया बिन मोहि न भावै, घर आँगन न सुहावै । (टेक)
दीपक जोय कहा करूं हेली, पिय परदेश रहावै ।
सूनी सेज जहर जूं लागै, सुसक सुसक जिया जावै ।
नींद नैन नहिं आवै ।। १
कब की ठाडी मैं मग जोऊँ, निसदिन विरह सतावै ।
कहा करूं कुछ कहत न आवै, हिवडो अति अकुलावै ।
पिय कब दरस दिखावै ।। २
ऐसा है कोई परम सनेही, तुरत सनेसा लावै ।
वा बिरियाँ कब होसी मोकूँ, हँस कर निकट बुलावै,
मीरां मिल होली गावै ।। ३

○

पद–६६१ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी
(चेतावनी)

होली खेल मना रे, फागुन के दिन चार रे । (टेक)
बिन करताल पखावज बाजै, अनहद की झनकार रे ।। १
बिन सुर राग छतीसूं गावै, रोम रोम रंग सार रे ।। २
शील संतोष की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे ।। ३
उड़त गुलाल लाल भये बद्दल, बरषत रंग अपार रे ।। ४
घट के सब पट घो(खो)ल[1] दिये हैं, लोक लाज सब डार रे ।। ५
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण-कमल बलिहार रे ।।

○

६६०–(१ उ) (बं. पु. पृ. १७)
६६१–(१उ)
१. पा०—घोल लियो हूं ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद–६६२ : राग–सिन्दूरा : ताल–धमार व दीपचंदी
(विरह)

होली पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी, मेरी प्यारी। (टेक)
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी बिरहन बन बन डोलै, तज दई पीव पियारी।
भई हूँ या दुख कारी ।। १
देस बिदेस सँदेस न पहुँचै, होय अँदेसा भारी।
गिणतां गिणतां घस गईं रेखा, आंगरियां की सारी।
अजहूँ नहिं आये मुरारी ।। २
बाजत झांझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी[1]।
आई बसंत कंत घर नाहीं, तन मन जर भई छारी।
स्याम मन कहा ये बिचारी ।। ३
अब तो म्हैर करो मुझ ऊपर, चित्त दे सुणो हमारी[2]।
मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की मैं थारी।
लगी दरसन की तारी ।। ४

○

६६२–(वि. भू. सं.)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक – जितेन्द्रकुमार जैन
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १२०

मीराँ-बृहत्पदावली - द्वितीय भाग

संशोधित मूल्य रु.......
राज्याज्ञा सं. 6 (6) क.सं. 13
दिनांक 3-12-97 के अनुसार
प्रभारी अधिकारी
रा० प्रा० वि० प्र० भरतपुर

• सम्पादक •

कल्याणसिंह शेखावत, एम. ए. पी-एच. डी.

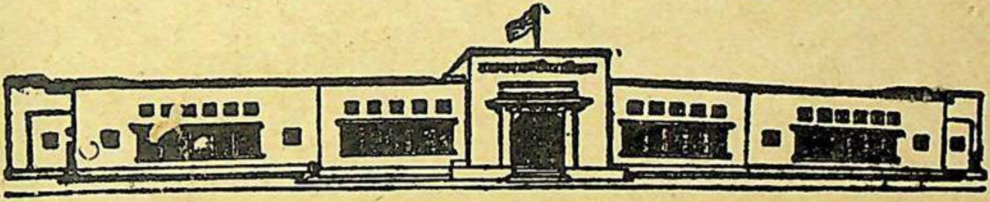

• प्रकाशक •

राजस्थान–राज्य–संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

• • •

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

1975

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक—जितेन्द्रकुमार जैन

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १२०

मीराँ - बृहत्पदावली—द्वितीय भाग

• सम्पादक •

कल्याणसिंह शेखावत, एम. ए. पी-एच. डी.

व्याख्याता—हिन्दी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय

• प्रकाशक •

राजस्थान – राज्य – संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

• • •

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

प्रथमावृत्ति १००० | 1975 | मूल्य रु. ८.५०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विषयानुक्रम

प्रबन्ध सम्पादकीय —

पृष्ठाङ्क

१.	सम्पादकीय भूमिका— (मीराँबाई के पदों में जोगी, मीराँबाई के पदों में साधु, मीराँ शब्द की व्युत्पत्ति, पाठालोचन की दृष्टि से)	१–६२
२.	प्रस्तावना (समीक्षात्मक अध्ययन सहित) डॉ० सत्येन्द्र	६३–८७
३.	मीराँ-बृहत्पदावली (मीराँ के अप्रकाशित पद)	१–१०४
४.	परिशिष्ट–1 (राग-रागिनी पद-सग्रह)	१०५–१२२
५.	परिशिष्ट–2 (मीराँ के प्रकाशित पदों से भावसाम्य रखने वाले अप्रकाशित पद)	१२३–१४७
६.	परिशिष्ट–3 (मीराँ के वे पद जिनकी प्रथम दो या तीन पंक्तियाँ ही पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती है, शेष पद नहीं)	१४८–१७६
७.	परिशिष्ट–4 (मीराँ के वे पद जिनकी अधिकांश पंक्तियाँ पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती है, केवल एक या दो पंक्तियाँ नहीं मिलती)	१७७–२२७
८.	परिशिष्ट–5 (पूर्व प्रस्तुत मूल पदों के पाठान्तर)	२२७–२३२
९.	परिशिष्ट–6 (पदों के आधार पर मीराँ की आत्मकथा का अन्वेषण)	२३३–२४८
१०.	पदानुक्रमणिका	२४९–२६१
११.	शुद्धिपत्र	२६२–२६६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान–राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

• प्रबन्ध सम्पादक •

जितेन्द्रकुमार जैन

ग्रन्थाङ्क १२०

मीराँ - बृहत्पदावली–द्वितीय भाग

• प्रकाशक •

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९७५

• मुद्रक •

सज्जन प्रिंटिङ्ग प्रेस, सरस्वती प्रिन्टर्स, शारदा प्रिन्टर्स एवं साधना प्रेस, जोधपुर

वि. सं. २०३२ ⑨ शकाब्द १८९७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रबन्धसम्पादकीय

मीराँ-बृहत्पदावली का यह दूसरा भाग पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रथम भाग सन् १९६८ में प्रतिष्ठान द्वारा ही प्रकाशित किया गया है जिसका सम्पादन सन्तसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ने किया था। बड़े हर्ष का विषय है कि डॉ॰ कल्याणसिंह शेखावत ने मीराँ-साहित्य की इस खोजबीन को जारी रखा और बड़े परिश्रम और उत्साह से मीराँ के अनेक पदों का संकलन किया।

डॉ॰ शेखावत ने अपने सम्पादकीय वक्तव्य में मीराँ के पदों को लेकर प्रचलित अनेक उलझनों का सूक्ष्म विवेचन किया है। डॉ॰ सत्येन्द्र ने अपनी समीक्षात्मक प्रस्तावना में शेखावतजी के इस परिश्रम का यथोचित मूल्याङ्कन किया है।

मीराँ–शोधसाहित्य में यह ग्रन्थ विशेष उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

जेष्ठ कृ. ३, सं. २०३२
[28 मई, 1975]

जितेन्द्रकुमार जैन
निदेशक

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सम्पादकीय

'मीरां वृहत्पदावली, द्वितीय भाग विद्वतत्समाज के समक्ष प्रस्तुत है। प्रस्तुत संग्रह में मैंने राजस्थान की विभिन्न संस्थाओ में संगृहीत हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त मीरांबाई के कुछ महत्वपूर्ण पद (भजन अथवा हरजस) संकलित किए हैं। इस संग्रह का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है —

कुल पद संख्या – ३७२
सर्वथा अप्रकाशित पद – २१६
राग-रागिनी वाले पद – ५०
पूर्व प्रकाशित पदों से भाव-साम्य रखने वाले पद – ४८
पूर्व प्रकाशित पदों से अंशतः साम्य रखने वाले पद – ४८
परिशिष्ट - अप्रकाशित मूल पदों के १० पाठान्तर—

यह पदावली दो मुख्य विभागों में विभक्त कर दी गई है। सर्व प्रथम है मूलपाठ, जिसमें मीरांबाई के अधुनावधि अप्रकाशित पद रखे गए हैं तथा राग-रागिनियों वाले ५० पद इसके साथ ही सम्मिलित किए गए हैं।

द्वितीय खण्ड में मीरां के ऐसे पदों को संकलित किया गया है जो पूर्व प्रकाशित पदों के साथ केवल अंशतः साम्य रखते हैं। इसमें सर्वप्रथम भाव-साम्य वाले पद हैं, तत्पश्चात् पूर्व प्रकाशित पदों से अंशतः साम्य रखने वाले पद लिए गए हैं।

अन्त में परिशिष्ट रखा गया है जिसमें मूलपाठ के पाठान्तर तथा टिप्पणियों सहित, शब्दार्थ प्रस्तुत किए गए हैं।

ग्रन्थप्राप्ति-स्रोत—

अत्र मैं प्रस्तुत पदावली के प्राप्ति-स्रोतों तथा हस्तलिखित ग्रंथों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करना चाहूँगा। इस पदावली के सभी हस्तलिखित ग्रन्थों के प्राप्ति स्रोत मुख्य रूप से दो हैं —

१. राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं के संग्रह
२. वैयक्तिक रूप से संगृहीत संग्रह

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं में भी राजकीय साहित्यिक सस्थाएं तथा गैर सरकारी संस्थाएं, ये दो उपविभाग किए जा सकते हैं ।

सरकारो संस्थाएं—

राजस्थान की राजकीय संस्थाओं में, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर और उसकी जयपुर, बीकानेर आदि स्थानों की शाखाएं हैं । राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर तथा उसकी दोनों शाखाओं (जयपुर और बीकानेर) के हस्तलिखित ग्रंथों से प्रस्तुत पदावली में अनेक पद लिए गए हैं ।

गैर सरकारी संस्थाएं—

इन सस्थाओं में निम्नलिखित संस्थाएं हैं जिनके हस्तलिखित ग्रन्थों से, इस पदावली के अनेक पद, संगृहीत किए गए हैं —

१. राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर ।
२. अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, लालगढ़ पेलैस, बीकानेर ।
३. भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर ।
४. संत साहित्य संगम, बीकानेर ।

व्यक्तिगत रूप से प्राप्त—

श्री प्रतापसिंह जी द्वारा पिलानी से प्राप्त हरजस भी प्रस्तुत पदावली में प्रस्तुत किए गए हैं ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, से प्राप्त सामग्री—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में हस्तलिखित ग्रन्थों का एक बृहत् संग्रह है । यहां संत-साहित्य की बहुत महत्वपूर्ण सामग्री है । इस प्रतिष्ठान के ५७ हस्तलिखित ग्रन्थों में मीरां-विषयक सामग्री उपलब्ध हुई । प्रतिष्ठान के कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जैसे ग्रंथांक-संख्या ५२ (इन्द्रगढ़ पोथीखाना), १८८२, १८६०, ३२५७, ३४०८ ६२५७, १०८४० १०८५१, १०८६२, १०८६४, २५३४४; ३७६४४, आदि । मैंने प्रतिष्ठान के जिन हस्तलिखित ग्रन्थों से सामग्री संकलित की है, उनके ग्रन्थांक निम्नलिखित हैं-

३४६२२, ३७६४३, १२५७७, २५३४४, १०४५७, १८८२, १८६०, ३६१५२, ११०७७, ५२ (इन्द्रगढ़ पोथीखाना), १०८५१, ३७६४४, ६२५६, ७३, ३२२७४, १०८५७, १०८४७, २८३८०, २८१८७, ३४७५६, ३७०३१, ३२८४, १०८६४,

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१०८६२, १०८४६, ३७६४०, ३०६०२, ३१८२४, ३१०५४, ३१०५२, ३००२६, १५८२०, २०७७८, २०७६८, १२४२०, १२४२६, १२५८६, ५२३, ५५३, १५८०, ३४६६, ३२४, २८७, २६७ आदि ।

प्रतिष्ठान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थ रागरागिनी-पद-संग्रह हैं। यह ग्रन्थ सचित्र है और इसके पद महत्वपूर्ण हैं। इस ग्रन्थ की ग्रन्थांक-संख्या २५५३६ है। इसी ग्रन्थ से मैंने रागरागनियों वाले ५० पद प्रस्तुत पदावली में सकलित किए हैं।

उपरोक्त हस्तलिखित ग्रन्थों का पूरा ब्यौरा नीचे दिया जाता है।

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	विवरण	भाषा	लिपि-समय	विशेष
१.	५२	भजनसंग्रह- (मीरां, चंद्रसखी आदि के)	हिन्दी,राज०	२०वीं सदी	इंद्रगढ पोथी खाने से प्राप्त पत्र सं० १-५०
२.	१८८२	मीरां	ब्रज., हिन्दी, गुज०	१६वीं सदी ,, ,,	
३.	१८६०	,,	ब्रज,हिन्दी,राज. ,,	,,	
४.	३४०८	पद-संग्रह (मीरां, कबीर आदि)	,,	१८६०	पत्र सं० २०
५.	६२५६	पद-संग्रह (काव्य)	राजस्थानी	१८वीं ,,	पत्र सं० ११२
६.	१०८४७	मीरां के पद, गोरल ६,३०,२७) आदि	,,	१६०६ वि०सं०	
७.	१०८४६ (२६, ४१)	पद आदि	,,	१६३१ तथा १६१६	पत्र सं० ८, ६ तथा ३१
८.	१०८५१	हरजस	,,	१६०२	पत्र सं० ६,१४,४४
९.	१०८६२	पद(मीरां कबीर आदि)	,,	१८६८	पत्र सं० २-३३
१०.	१०८६४	भजन होरी	,,	१८६७	पत्र सं० ४५०
११.	१२५७७	पद आदि (मीरां कबीर)	हिन्दी राज०	१८वीं	पत्र सं० ११४-१८६
१२.	२५३४४	पद-संग्रह (,, ,,)	हिन्दी, राज.	१८६६ वि०सं०	पत्र सं० १

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३	२५५३६	राग पद संग्रह(मीरां आदि)राजस्थानी १६ वीं			
१४	२८१८७	,, ,, (,, ,,सूर)	हिन्दी	१६वीं	पत्र सं. १
१५.	२८३८०	,, ,, (मीरां,गंगादास)राजस्थानी		,,	
१६.	३१०७७	राग पद संग्रह(मीरां-आनंदघन)	,,	१८३६	पत्र सं० १२४
१७.	३२५७४	हरजस (मीरां)	,,	१६वीं	पत्र सं० ४१
१८.	३४७५६	कविता संग्रह(काव्य)	हिन्दी	१६वी	
१९.	३४६२२	हरजस (मीरां आदि)	×	×	
२०.	३६१५०	पद संग्रह(मीरां आदि)	,,	,,	
२१.	३७०३१	पद रागरागनी(,, ,,)	हिन्दी, राज.	१६वी	४१ से २४३ तक
२२.	३७६४४	पद संग्रह (,, ,,)	राजस्थानी	१६वी	पत्र सं. १०३

–आदि आदि

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जयपुर—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर की जयपुर शाखा के ३ हस्तलिखित ग्रन्थों से मैंने, मीरां के ३५ पद संकलित किए हैं। यहां के एक हस्तलिखित ग्रन्थ के साथ दो नवीन कागजों पर मीरां का बारहमासी वर्णन आदि भी दिया गया है। इस शाखा के कुछ पद अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इन हस्तलिखित ग्रन्थों का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत है —

ग्रंथाङ्क	पद-संख्या	कर्ता	विवरण	लिपि-समय
८	१२	मीरां	स्फुट पद	वि० सं० १८८६
२७	२	,,	स्फुट पद सग्रह	१६वी अदी
७३	३	,,	,, ,, ,,	१६५१ वि. सं.
७३	१७	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,

उपरोक्त हस्तलिखित ग्रन्थों के साथ ही ग्रन्थांक १३८ वाला एक गुटका भी यहां उपलब्ध है, जिसमें मीरां रचित बारहमासी (विरह की) दी गई है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान बीकानेर—

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर की दूसरी शाखा बीकानेर में है। इसमें २० हजार के लगभग हस्तलिखित ग्रन्थ हैं किन्तु अधिकांश संस्कृत अथवा

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जैन साहित्य से सम्बन्धित हैं। मैंने इस संस्थान के अनेक ग्रन्थों का निरीक्षण किया – जिनमें से १० हस्तलिखित ग्रंथ, मेरे लिए महत्वपूर्ण थे। इन १० ग्रन्थों में से केवल एक हस्तलिखित ग्रन्थ (ग्रन्थांक १०४५७) में 'मीरां पद संग्रह' का उपलब्ध हुआ, जिसमें से केवल ८ पद ग्रहण किए गए।

ये सभी पद अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मैंने जिन हस्तलिखित ग्रथों को इस हेतु देखा, उनकी संख्या निम्नलिखित है – २८६६, पद संग्रह, ६६७६, होरी संग्रह, १०२६६, पदादिसंग्रह. १००५७, पद संग्रह. ५७६६, पद सवैया आदि, ७४५५,८६१४ कबीर आदि के पद, ८६२३ संतों की पदावली आदि।

राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के पश्चात्, राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण गैर सरकारी साहित्यिक संस्थान है, जिसमें १२ हजार के लगभग ग्रंथों का संग्रह है। इनमें से अधिकांश ग्रंथ राजस्थानी भाषा के हैं। इस संस्थान में ग्रन्थों के साथ-साथ कुछ महत्वपूर्ण प्राचीन चित्र भी हैं, जिनमें मीरां का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण चित्र भी है।

इस संस्थान से भी मीरां के अनेक पदों का संकलन किया गया है। इस संस्थान के १८५ ग्रन्थों का अवलोकन मैंने किया जिनमें से कुल ४२ हस्तलिखित ग्रन्थों से मीरां के पदों का संकलन किया गया। मैंने संस्थान के जितने ग्रन्थों से सामग्री ली उनके ग्रन्थांक निम्नलिखित हैं।

१०६, १३०, १३१, १४५, १८८, २०६, २८८ २८६, ५६४, ६१७, १०५७, १०६७, १६७६, २८८४, २८६७, ४६७०, ४६७६. ४८५४, ६२३६, ६६६५, ६८४६, ७१४२, ७१४३, ७१७३, ७१७५, ७१८७, ७१८६, ७१६१, ७१६७, ७१६६, ७५७३, ७६३६, ७६६४, ७६६५ ८२५४, ८२६०, ८२६१, ८३६६, आदि।

इस तरह उपरोक्त ४२ हस्तलिखित ग्रंथो से मीरां के कुल पद संकलित किए गए, जिनमें अधिकांश चूंकि पूर्व प्रकाशित संग्रहों से पूर्णतया मिलते थे अतः इस संग्रह में स्थान न पा सके।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उपरोक्त कुछ हस्तलिखित ग्रंथों का पूर्ण ब्यौरा—

क्रम सं०	ग्रथ का नाम	कर्ता	विषय	भाषा	लिपि सं०	पत्र सं०	माप विशेष
१६६७	मीरां पद संग्रह	—	भक्ति	राज०	१७ वी.	४	१२"×६"
२८८४	मीरां के पद	—	संतसाहित्य	"	—	२८	६ २/३"×४ १/२"
२८६७	मीरां के पद (स्फुट सग्रह)	—	प्रार्थना भजन	राज. संस्कृ०	—	६४	३ १/२"×२ ३/४"
४६७०	मीरां-पद	मीरां	काव्य	राज०	१८२६	२	७"×६.५"
४८५४	मीरां के हरजस	,,	भजन	"	-	४	५"×४.८"
६२६६	सत पदावली संग्रह	-	संतसाहित्य	ब्रज. राज.	—	२१०	८"×५'
६६६५	मीरां के पद	,,	कृष्णभक्ति	राज०	—	१	५.५"×३ ८"
६८४६	मीरां के पद	मीरां बाई	भक्ति पद	,,	१६ वीं	५	११.७"×५"
७१४२	मीरां आदि संतो के स्फुटपद	—	सत्संग	,,	—	१०	२५"×१२.५"
७१७३	,, ,, ,,	—	,,	,,	—	८१	,, ,,
७१७५-३	स्फुट पद (मीरां कबीर आदि)		,,	,,	१६२८	६	१७ ५"×११.३"
७१८७-६	,, ,, (मीरां-संतदास आदि)		हरजस	,,	१८३४	३	१८.५"×११.३"
७१८६	,, ,, (मीरां, सूर आदि)		संत साहित्य	,.	—	४२	१७ ५"×१२ ५"

आदि ।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, लालगढ़ पेलैस. बीकानेर—

बीकानेर के लालगढ़ पेलैस स्थित, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था है। जहां राजस्थानी साहित्य, संस्कृत साहित्य, ज्योतिष तथा इतिहास आयुर्वेद आदि के अत्यंत महत्वपूर्ण-हस्तलिखित ग्रंथ सुरक्षित हैं । मुझे मीरां के पदों वाले भी कुछ महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ यहां देखने को मिले। इस संस्थान के कुल ८ हस्तलिखित ग्रंथों से मैंने कुल ११७ मीरां के पद संगृहीत किए, जिनमें कुछ पद अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहां से प्राप्त सभी पदों की अपनी-विशेषता है।

यहां के जिन हस्तलिखित ग्रंथों से मैंने सामग्री ली है उनके ग्रंथाङ्क निम्न हैं—
११२. ११३. १७०. १७२. १७७. १६०, २०६, २२३. आदि।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

यहां से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों का पूरा ब्यौरा निम्न प्रकार है—

हिन्दी ग्रंथों की सूची—

अनुक्रमाङ्क	संकलित पद सं०	विशेषांक	पत्रसंख्या	विवरण	संवत् आदि
१७०	(४८)	१७०	१८	मीरां आदि	फुटकर कवित्त
१७२	(६ पद)	१७२	(३-३२)	,,	सं० १६४६
१७७	(२ पद)	१७७	४६	,,	,,
१६०	(११ पद)	१६०	१३ (३-१५)	,,	,,
२०६	(५ पद)	२०६	२२६	,,	,,
२२३	(२ पद)	२२३	८६	,,	,,
राजस्थानी ग्रंथों की सूची—					
१२	(१७ पद)	११२	६२	हरजस(मीरां के पद)	सं० १६४७
१३	(३६ पद)	११३	२५०	(,, ,, ,,)	सं० १६६१

कुल पद (इस पदावली हेतु) १२७

भारतीय विद्यामंदिर, बीकानेर—

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के संग्रह में भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथ हैं इनमें से एक हस्तलिखित ग्रंथ जिसका ग्रंथाङ्क दिया हुआ नहीं था, बहुत महत्वपूर्ण है। इस ग्रंथ से मैंने ४३ पद संकलित किए। इनमें से २१ पद पूर्व प्रकाशित पदों से कुछ साम्य रखने वाले थे शेष सभी नवीन कहे जा सकते हैं। इस का लिपि समय दिया हुआ नहीं हैं। किन्तु १८ वीं शताब्दी का यह गुटका लगता हैं और कोई मीरां-सम्बन्धी हस्तलिखित ग्रंथ यहां देखने में नहीं आया।

संत साहित्य संगम, बीकानेर—

रामस्नेही सम्प्रदाय द्वारा व्यवस्थित किया जाने वाला यह साहित्य संगम, अभी अपनी शैशवावस्था में है। यहां अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जिनमें संत साहित्य से सम्बंधित सामग्री भरी पड़ी है। इस संस्थान द्वारा अनेक हस्तलिखित ग्रंथों को संगृहीत तो किया गया है किन्तु अभी तक उनके ग्रंथाङ्क नहीं लग सके हैं तथा उनकी सूची भी बननी शेष है। इस संस्था के पीछे रामस्नेही संत श्री भगवद्दासजी शास्त्री

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

की लगन,बुद्धि और उत्साह है, जिससे आशा की जा सकती है कि यह संगम निकट भविष्य में ही सत साहित्य को बहुत कुछ दे सकेगा ।

इस संस्थान के कुछ हस्तलिखित ग्रंथों से (जिनके ग्रंथाङ्क लगे हुए न होने के कारण नहीं दिये जा सके हैं । मैंने ३६ पद संकलित किए । यहां से प्राप्त अनेक पद महत्वपूर्ण हैं ।

सम्पादन–व्यवस्था–

प्रस्तुत पदावली को मैंने व्यवस्थित तथा विज्ञानसम्मत बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। पदावली के समस्त पदों को अकारादि--क्रम से व्यवस्थित कर, पाठकों के समक्ष रखा है। संयुक्ताक्षरों से प्रारम्भ होने वाले पदों को अक्षर-विशेष के अन्त में स्थान दिया है ।

मैंने अपनी ओर से इस पदावली में अत्यन्त अल्प संशोधन, परिवर्तन अथवा संवर्द्धन किया है। मेरी यह मान्यता रही है कि प्रस्तुत पदों को अपनी समस्त कमियों के साथ मूल रूप में ही विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत कर दिया जाय तथा अपनी ओर से किंचित् मात्र भी अनावश्यक संशोधन मूलपाठ में न किया जाय किन्तु पदों की मात्रापूर्ति अथवा लय को ठीक करने अथवा लिपिकार के दोषों को दूर करने के लिए अनुस्वार और ह्रस्व–दीर्घ–सम्बन्धी कुछ सुधार अवश्य करने पड़े हैं । साथ ही सम्पादक के कर्तव्य–निर्वाह--हेतु तथा इस पदावली को केवल संकलन-मात्र बनने से बचाने के लिए भी जो परिवर्तन आवश्यक समझे गए, मुझे करने पड़े हैं। इनके अतिरिक्त मैंने और कोई विशेष हेरफेर प्रस्तुत पदों में नहीं किया है ।

जिन पदों के साथ रागरागिनियां दी हुई थीं उन्हें उसी रूप में पाठकों के समक्ष रख दिया है और जिन पदों में रागरागनियों का अभाव था उन्हें भी उसी रूप में रखा गया है जिससे कि उनके स्वरूप में कोई आरोपण दिखाई न दे। किन्तु इस मान्यता के निर्वाह में उस समय अवश्य विघ्न पड़ा है जबकि राग-रागिनियों के पद इस पदावली में सम्मिलित किए गए ।

मीरां के रागरागिनियों से युक्त ५० पद मुझे राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के हस्तलिखित ग्रन्थ (ग्रन्थांक २५५३६) से प्राप्त हुए थे। नमें से कुछ पदों की तो रागरागनियां दी हुई हैं और शेष में केवल राग......

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लिख कर छोड़ दिया गया है। यहां मैंने यह प्रयास अवश्य किया है कि इन सभी पदों की रागरागिनियां लगवा दी जायें किन्तु ऐसा करते समय भी पदों की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को अक्षुण्ण बनाये रखने का पूर्ण प्रयास किया गया है। रागरागनी वाले पद जो कि * से चिह्नित है, में रागरागनियां सम्पादक नें श्री बद्रीदासजी पुरोहित (गुणियां) से लगवाई हैं।

पाद-टिप्पणी (फुटनोट)-व्यवस्था-

प्रस्तुत पदावली के मूलपाठ को अधिक उपयोगी बनाने की दृष्टि से मैंने इस संग्रह में 'फुटनोट' की व्यवस्था रखी है। प्रत्येक पद के नीचे सम्पादक-पाठ, शुद्ध पाठ, शब्दार्थ और किन्हीं किन्हीं पदों के साथ (जहां आवश्यक समझा गया है) टिप्पणियां भी दे दी गई हैं, किन्तु व्यवस्था की दृष्टि से प्रत्येक पद के नीचे केवल सम्पादक-पाठ ही दिया गया है। शेष शुद्ध पाठ, शब्दार्थ और टिप्पणियां परिशिष्ट में रखी गई हैं। इसके साथ ही प्रत्येक पद के नीचे ग्रन्थांक और कहीं-कहीं पत्रांक तक भी दे दिये हैं।

सम्पादकीय पाठ रखने का कारण मेरी भाषागत मान्यता ही है। मीरां के पदों की मूल भाषा तत्कालीन राजस्थानी है तथा अन्य भाषाओं में जो मीरांबाई के पद मिलते हैं वे सभी राजस्थानी भाषा के मूल पदों के रूपांतर, पाठांतर अथवा प्रतिलिपि हैं। अतः राजस्थानी भाषा के मूल शब्द ही इन पदों की आत्मा है। इस कारण इन पदों में जहां-जहां मुझे लगा कि राजस्थानी शब्द मूल रूप में नहीं हैं (विकृत अथवा रूपांतरित हैं),मैंने उसे सम्पादक-पाठ में शुद्ध राजस्थानी शब्द में परिवर्तित कर दिया है। जैसे ल को ळ में, चरन को चरण में आदि-आदि। साथ ही जहां जिस भाषा-विशेष का शब्द विकृत मिला, उसे भी उस भाषा-विशेष के मूल शब्द में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया है। सम्पादकीय पाठ के द्वारा शब्दों के विकृत स्वरूप को सुधारने का प्रयास भी किया गया है।

इन पदों के संकलनार्थ मैंने जोधपुर, बीकानेर तथा जयपुर के कुल २३६ हस्तलिखित ग्रन्थों को देखा। इन स्थानों की अनेक सरकारी और गैर सरकारी (साहित्यिक संस्थाओं)के समस्त हस्तलिखित ग्रन्थों में से कुल हस्तलिखित ग्रन्थ ऐसे थे जिनसे मुझे मीरां के पद (भजन अथवा हरजस)-विषयक सामग्री प्राप्त हुई।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वैसे तो सभी संस्थाओं के पास अपने हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचिपत्र (सूची रजिस्टर) थे, कुछ संस्थाओं की तो ग्रन्थ-सूचियां प्रकाशित भी हो चुकी हैं (जैसे अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर तथा राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर आदि) किन्तु सन्त-साहित्य मंडल, बीकानेर के ग्रन्थों की न तो सूचियां ही उपलब्ध हुईं और न सूची रजिस्टर ही। अतः संत-साहित्य-मंडल, बीकानेर से प्राप्त समस्त पदों के ग्रन्थांक नहीं दिये जा सके हैं। मैंने समस्त पदों के ग्रन्थांक, उस संस्था-विशेष की 'सूची के रजिस्टर' के अनुसार ही दिये हैं।

इन सभी स्थानों के हस्तलिखित ग्रन्थों में प्राप्त कुल हस्तलिखित ग्रन्थों से मैंने कुल ११६ पद(भजन अथवा हरजस)संकलित किए। इन समस्त पदों को, उस ग्रन्थ विशेष के पूर्ण विवरण-सहित मैंने बड़ी सावधानी से अलग लिपिबद्ध कर लिया। इस तरह अलग-अलग स्थानों की, भिन्न-भिन्न संस्थाओं के भिन्न-भिन्न हस्तलिखित ग्रन्थों के पदों का संकलन किया गया। जब सभी स्थानों के हस्तलिखित ग्रन्थों से मीरां के सम्पूर्ण पदों को लिपिबद्ध कर लिया, तब सभी पदों की संस्थान-विशेष के आधार पर अकारादिक्रम से सूचियां तैयार कीं। फिर एक स्थान-विशेष की, समस्त संस्थाओं की सूचियों से, एक (स्थान-विशेष की)पूर्ण सूची तैयार की। इस तरह जोधपुर, बीकानेर तथा जयपुर, इन तीन स्थानों की तीन सूचियां बनीं। पुनः इन तीन सूचियों के आधार पर, एक मुख्य सूची तैयार की। ये सभी सूचियां अकारादि-क्रम से तैयार की गई थीं। इस प्रकार जोधपुर, बीकानेर और जयपुर के हस्तलिखित ग्रन्थों से प्राप्त, मीरां के सभी पदों की अकारादि-क्रम से, एक सूची बन गई, जो मुख्य सूची थी।

तत्पश्चात् अद्यावधि प्रकाशित मीरां के सभी संग्रहों की अकारादि-क्रम से सूचियां बनाईं। इनमें से कुछ संकलित ग्रन्थों की तो अकारादिक्रम की सूचियां,संग्रह विशेष में ही उपलब्ध हो गईं तथा शेष संग्रहों की सूचियों को तैयार किया गया। जब पूर्व प्रकाशित मीरां के सभी संग्रहों की सभी सूचियां बन गईं तब स्फुट रूप से, पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य पुस्तकों में प्रकाशित मीरां के समस्त पदों की अकारादि क्रम से सूचियां तैयार कीं। इस तरह मीरां के अब तक प्रकाशित सम्पूर्ण पदों की अकारादि-क्रम से समस्त सूचियां तैयार कर ली गईं

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जब मीरां के पूर्व प्रकाशित चियां बन गईं तब इन्हें हस्तलिखित ग्रंथों की मुख्य सूची से मिलाया गया। जो पद पूर्व प्रकाशित पदों से मिलते गए, उन्हें अलग छांट लिया गया और न मिलने वाले पदों को अलग। पुनः पूर्व प्रकाशित ग्रन्थों की सूचियों से न मिलने वाले हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची के पदों को, पूर्व प्रकाशित संग्रह-सूचियों से मिलाया गया जिससे कि भूलवश बचे हुए पद भी पुनः छांटे जा सके। इस बार भी जो पद नहीं मिले उन्हें अन्तिम बार पुन: इन सूचियों से मिलाया। इस बार पूर्व प्रकाशित संग्रहों की सूचियों से न मिलने वाले पदों को, उन ग्रंथों के सम्पूर्ण पदों से मिलाया गया। तत्पश्चात् इन पदों को प्रस्तुत पदावली के मूलपाठ में अप्रकाशित पदों के रूप में प्रस्तुत कया गया।

मीरांबाई के अद्यावधि ५१ से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट रूप से प्रकाशित मीरां के पदों की संख्या भी कम नहीं है। अतः इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यह कार्य कितना श्रमसाध्य था।

पदों को इस प्रकार छांटते समय मैंने अनुभव किया कि कुछ पदों की प्रथम पंक्तियों का थोड़ा रूप-परिवर्तन होते ही प्रथम पंक्ति के अकारादिक्रम में अन्तर आ जाता है। चूंकि प्रथम पंक्ति के प्रथम अक्षर से ही अकारादिक्रम की सूचियां तैयार की जाती हैं, अतः इस थोड़े से रूप-परिवर्तन के कारण उस पंक्ति का क्रम बदल जाता है और पद का अकारादिक्रम बिगड़ जाता है, जिससे अभीष्ट पद उस स्थान पर प्राप्त नहीं होता, जहां उसे हस्तलिखित ग्रन्थों की अकारादिक्रम की सूचियों के अनुसार होना चाहिये। इस तरह एक वर्ण अथवा अक्षर का अन्तर पड़ते ही पूरे पद को खोजना कठिन हो जाता है। इसके लिए एक ही पद की प्रथम पंक्ति में प्राप्त सभी शब्दों को, पद की प्रथम पंक्ति का, प्रथम अक्षर मान कर, पद की खोज की गई। इस तरह चार-चार, पांच-पांच शब्दों को प्रथम पंक्ति का प्रथम अक्षर मान कर खोज करनी पड़ी। इस कार्य में श्रम और समय दोनों ही अधिक लगे।

इतना करने के पश्चात् मीरां के हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त, पदों की एक ऐसी सूची बन सकी, जिसे सम्प्रति अप्रकाशित पदों की पूर्ण सूची कहा जा सकता है। यद्यपि मैं ऐसा कोई दावा तो नहीं कर सकता कि पूर्वप्रकाशित मीरां

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

का कोई भी पद इस पदावली के मूलपाठ में न आया होगा, किन्तु मैंने अपनी ओर से पूर्ण सतर्कता बरती है कि अनावश्यक रूप से पदों की आवृत्ति न हो।

रागरागिनियों के प्रस्तुतीकरण के समय भी पूरी सावधानी बरती गई है कि अनावश्यक पदों की पुनरावृत्ति न हो, किन्तु ऐसे पदों को प्रस्तुत करते समय जो कि राग-रागिनियों की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण ज्ञात हुए, इस नियम में ढ़ील भी दी गई है।

मूलपाठ के पश्चात् दिये गए पदों को, पूर्वप्रकाशित मुख्य ग्रंथों के पदों से मिला कर यह बताने का प्रयास भी किया गया है कि किस पद का कितना अंश पूर्वप्रकाशित, किस संग्रह के किस पद से, किस पृष्ठ पर, कितना मिलता है और कितना नहीं।

मूल पाठ-

मीरां के पद मुख्य रूप से दो परम्पराओं में प्राप्त होते हैं-
प्रथम है (१) मौखिक अथवा लौकिक परम्परा और
द्वितीय है-(२) लिखित परम्परा।

प्रस्तुत संग्रह में मीरां के लिखित परम्परा से प्राप्त पदों को ही स्थान दिया गया है। इस पदावलीका प्रस्तुतीकरण मैंने अपने कुछ सिद्धांतों के आधार पर ‍ है।

पदों की मौखिक अथवा लौकिक परम्परा से लिखित-परम्परा कहीं अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक होती है। इसी कारण मैंने मुख्यतः हस्तलिखित ग्रंथ से प्राप्त मीरां बाई के पदों को ही इस पदावली में स्थान दिया है। हां, पिलानी से प्राप्त मीरां के केवल- ६. हरजसों जो कि लौकिक अथवा मौखिक परम्परा के हैं, इस संग्रह में अवश्य स्थान पा गए हैं। इन हरजसों को प्रस्तुत पदावली में स्थान देने का कारण, इन हरजसों को ‍छ ऐसी विशेषताएँ हैं जो कि प्रायः लिखित परम्परा के पदों या हरजसों में प्राप्त होती हैं।

मुख्य रूप से मैंने राजस्थानी भाषा, विशेष कर मारवाड़ी में प्राप्त पदों (भजनों, हरजसों.) को ही इस संग्रह में स्थान दिया है। मीरां के पदों के अधुनावधि जितने भी संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उनमें से अधिकांश में मीरां की भाषा और

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्थान-विषयक चर्चा अवश्य हुई, है सका पूर्णतया निर्वाह उन संकलनों में नहीं हो पाया है। मीरां की अपनी भाषा राजस्थानी थी और उसमें भी मारवाड़ और मेड़ता की तत्कालीन लोक-प्रचलित भाषा होने के नाते अपना विशेष महत्व रखती है। यही भाषा मीरां की अपनी भाषा है अर्थात् राजस्थानी भाषा की मारवाड़ी (विशेष रूप से मेड़ता क्षेत्रकी)बोली ही और उस पर कुछ मेड़ता की बोली के प्रभाव से युक्त भाषा ही मीरां की भाषा कही जा सकती है। यद्यपि उसमें ब्रज और गुजराती का भी प्रभाव द्रष्टव्य है। अतः मेरी दृष्टि में मीरां के वे ही पद अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक होने चाहिएँ जो राजस्थानी में हैं।

मीरांबाई के उन्हीं पदों को मैं प्रामाणिकता अथवा विश्वसनीयता के अधिक समीप समझता हूँ जो मीरांबाई के जीवन से सम्बन्धित स्थानों में प्राप्त हैं। राजस्थान मीरां की जन्मस्थली है और उसमें भी मेड़ता और जोधपुर का विशेष महत्व है। राजस्थान में मेड़ता और जोधपुर के साथ बीकानेर, चित्तौड़, उदयपुर और जयपुर, मीरां के पदों के प्राप्ति-स्थानों में अपना विशेष महत्व रखते हैं। इसी कारण मैंने यह निश्चय किया था कि सम्पूर्ण राजस्थान के हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त मीरां के सभी पदों का संकलन-सम्पादन किया जाय। इसी निश्चय के परिणामस्वरूप प्रस्तुत पदों का संकलन-सम्पादन हुआ है। अब तक राजस्थान के (मीरां से सबंधित स्थानों की प्राथमिकता के आधार पर) प्रमुख शहरों तथा जोधपुर बीकानेर, तथा जयपुर के हस्तलिखित ग्रंथों से मीरां के पदों को संकलित कर लिया गया है, किन्तु इनमें भी 'पोथीखाना' जयपुर और 'पुस्तक प्रकाश' जोधपुर की सामग्री सम्मिलित नहीं हो सकी है। इस सामग्री की पूर्ण प्राप्ति होते ही उसे भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की पूर्ण चेष्टा की जायेगी। इसके साथ ही उदयपुर, चित्तौड़, धोली बावड़ी और अलवर-भरतपुर की सामग्री का भी सकलन किया जा रहा है, जिससे कि सम्पूर्ण राजस्थान की मीरां-विषयक (हस्तलिखित ग्रंथों में प्राप्त) सामग्री विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत की जा सके।

तत्पश्चात् राजस्थान के उपरोक्त स्थानों से ही, मीरां की मौखिक परम्परा अथवा लौकिक परम्परा से प्राप्त सामग्री को प्रस्तुत करने की योजना है; जिससे कि सम्पूर्ण राजस्थान की, मीरां-विषयक सम्पूर्ण (लिखित तथा मौखिक दोनों प्रकार की) सामग्री पाठकों के समक्ष आ सके।

इस तरह समस्त राजस्थान की मीरां विषयक सामग्री सामने आने

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पर, मीरां की पूर्ण 'प्रामाणिक पदावली' के प्रस्तुतीकरण का प्रयास किया जायेगा।

मीरां के पदों के संकलन का कार्य तभी पूर्ण कहा कहा जा सकेगा जब कि, भारत के अन्य राज्यों से प्राप्त मीरां के लिखित तथा मौखिक परम्परा के पदों के साथ ही, विदेशों में उपलब्ध, मीरां के लिखित परम्परा के पदों को भी प्रकाशित किया जाय। लेखक इस सामग्री को भी जुटाने में प्रयत्नशील है। संभव है, इस कार्य में कुछ समय और लग जाय, किन्तु इस सामग्री को प्रकाशित करने के लिए, लेखक पूर्ण प्रयास करेगा। इतना होने पर ही मीरांबाई की पूर्ण पदावली कों प्रस्तुतीकर क।जायेगा।

लेखक इस बात के लिए भी प्रयत्नशील है कि मीरां के सम्प्रति प्रकाशित सभी सग्रहों की एक पूर्ण सूची तैयार की जाय जो मीरां के अब तक प्रकाशित पद का 'कैटलाग' साबित हो सके।

किसी स्थान-विशेष से सम्बंधित मीरां के पदों को छांटते समय मैंने यह पाया कि ऐसे अनेक हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो लिखे तो किसी दूसरे स्थान पर गए हैं, किन्तु अभी सुरक्षित किसी अन्य स्थान पर हैं। इस तरह वे मूल स्थान से अन्यत्र चले गए हैं, किन्तु इस स्थानान्तरण से उनमें कोई अंतर नहीं आया है। इसीलिए यद्यपि मेड़ता से प्राप्त किसी हस्तलिखित ग्रंथ से प्रस्तुत पदावली का कोई पद नहीं लिया गया है, किन्तु जोधपुर और बीकानेर से प्राप्त अनेक हस्तलिखित ग्रंथों के मेड़ता में लिखित होने का उल्लेख है. अतः उन्हें मेड़ता से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों में माना गया है।

मीरांबाई के पदों में एक भाव-साम्य मिलता है। इस आधार को ध्यान में रख कर भी, प्रस्तुत पदावली का सकलन हुआ है। एकसा भावसाम्य रखने वाले पदों को यहां विशेष महत्त्व दिया गया है। जहाँ पदों के भावों में गितरोध लगा, उसे प्रक्षिप्त अंश समझ कर, अलग छांटने का प्रेयास भी किया गया है। इस भावसाम्य पर विचार करते समय,मीरां के पदों में कृष्ण के प्रति पाये जाने वाले माधुर्यभाव, वंसी और राधा के प्रति पाये जाने वाले-सौतिया-भाव, साधु के प्रति भक्तिभाव, उद्धव के प्रति सम्मानभाव आदि पर भी विचार किया गया है। यद्यपि भाव-विशेपता वाले पदों को एक स्थान पर रखने का भी विचार था किन्तु अकारादिक्रम अपनाने के कारण ऐसा नहीं किया जा सका।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरां का जीवनवृत्त और काव्य, दोनों ही जब अद्यावधि विवादास्पद हैं, तब हस्तलिखित ग्रंथों में प्राप्त मीरां के–पदों से वर्णित स्थानों और घटनाओं का एक विशेष महत्त्व है। चूंकि ऐसे पदों के आधार पर मीरां के जीवनवृत्त और काव्य पर प्रकाश डाला जाना चाहिए जिनका कि इतिहास अनुमोदत कर देता है, अतः इस विशेषता को भी ध्यान में रख कर इस पदावली को संकलित किया गया है।

मीरां मूलरूप में भक्त थी। अपने अलौकिक सांवरिया प्रियतम गिरधर नागर के प्रति उमड़ती अनुभूति को, मीरां ने जिन शब्दों में अभिव्यक्ति दी है, उनमें गेयता की प्रधानता होनी चाहिए। यद्यपि इस पदावली के सभी पद लिखित पर–म्परा के हैं, किन्तु गेयता इनमें अक्षुण्ण है। इन पदों की गेयता मौखिक अथवा लौकिक परम्परा से प्राप्त पदों से भी अधिक सुरक्षित है। इतने प्राचीन और सर्वथा नवीन-पदों के लिपिबद्ध स्वरूप को भी जब राग-रागिनी के अनुसार गाया जाता है, तो वे अपनी गेयता में पूर्ण उतरते हैं। यह इन पदों की सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रस्तुत मीरां-बृहत्पदावली भाग २ को हिन्दी–साहित्य को प्रस्तुत करने में अनेक विद्वानों के आलेखों ने मुझे प्रेरणा दी है।[१] साथ ही हिन्दी-जगत में

---

१. (क) "सम्पादन कार्य इतना सरल नहीं। उच्चतम कोटि की ईमानदारी इसकी पहली शर्त है। यह माना कि प्राचीन प्रतियों में विशेषकर जब छपाई का साधन नहीं था, ग्रंथ हस्तलिखित रूपो में ही प्राप्त होते थे, अक्षर सर्वथा सुन्दर और स्पष्ट नहीं मिलते, फिर सम्पादक यदि शुद्धाशुद्ध के अपने निजी ज्ञान का सहारा न ले तो क्या करे? किन्तु इस ओर भी श्रेयस्कर नीति यह होगी कि सम्पादक को जो पाठ जिस रूप में मिले हों, मूल आवृत्ति में उन्हें वह ज्यों का त्यों रख दे और अपने सुझावों को टिप्पणी के रूप में दे दे। इसका फल यह होगा कि आगे काम करने वालों को सच्चा प्रकाश मिलेगा और शुद्धाशुद्ध के निर्णय में वह नवप्राप्त सामग्री का अधिक विवेकपूर्ण उपयोग कर सकेगा। अपने पूर्व के सम्पादकों द्वारा दी गई टिप्पणियों का भी वह सच्चा समादर कर सकेगा और जहां तक सम्भव होगा उससे पथ-प्रदर्शन भी प्राप्त करेगा।"

–ललितप्रसाद सुकुल-मीरा स्मृति ग्रंथ-पृ० (न)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हस्तलिखित ग्रंथों के आधार पर तैयार की गई मीरां पदावली के अभाव के विभिन्न संकेतों ने मुझे इस कार्य की ओर प्रेरित किया।[1] प्रस्तुत पदावली को पाठकों के समक्ष रखते समय मैंने अनेक विद्वानों की आशाओं और आकांक्षाओं का भी पूर्ण ध्यान रखा है।

(ख) "अभी तक पद-संग्रह की हस्तलिखित प्रतियों को खोज कर उनमें कौन से पद किस संवत् की लिखी हुई प्रति में मिलते हैं व उसका पाठ क्या है, इस तरह का वैज्ञानिक अनुसंधान और संपादन नहीं हुआ है। इधर-उधर से जिसको जितने पद मिले संग्रह करके छपवा दिये और अपनी मति के अनुसार उन पदों का पाठ दे दिया।"--हिन्दुस्तानी (त्रैमासिक) भाग १९ अंक ४ अक्टू-दिस. १९५८ पृ. ६८.

१. (क) "भारत की भक्त कवयित्रियों में मीराँबाई की सर्वाधिक प्रसिद्धि है। उनके पदों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं पर उनके संग्रह एवं सम्पादन का आधार क्या है, यह सम्पादकों और प्रकाशकों ने अपने ग्रंथों में स्पष्ट नहीं किया है। अधिकांश पद-संग्रह लोक-मुख पर प्रचलित भजनों का है पर कहां से और किन व्यक्तियों से ये संगृहीत किए गए और इनके गाने वालों की उम्र क्या रही है, इत्यादि बातों पर प्रभाव नहीं डाला। हस्तलिखित प्रतियों से भी जिन पदों का संग्रह किया गया हैं वे प्रतियां भी कब की, किससे लिखी हुई और कौन से ग्रंथालय की है। इसका स्पष्टीकरण भी प्राय: नहीं किया गया है। राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश से ही मीरां के पद-संग्रह अधिक निकले हैं पर उन पर की प्रामाणिकता के विषय में निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता। यह तो सभी जानते हैं कि मीरां के नाम से प्राप्त व प्रचलित प्रत्येक पद सभी मीरां के रचित नहीं हैं पर उनमें बहुत से पद अन्य कवियों ने मीरां के नाम से बना कर प्रसिद्ध कर दिये हैं। मीरां ने कितने व कौन से पद बनाये यह नहीं कहा जा सकता। अब आवश्यकता है मीरां के पदों के वैज्ञानिक सम्पादन की।"

अगरचन्द नाहटा-शोध पत्रिका, वर्ष १६, अंक ३-४, जुलाई-अक्टूबर १९६५।

(ख) "वस्तुतः मीरां के प्रामाणिक पदों के आधार पर ही तथ्यातथ्य का निर्धारण किया जा सकता है। अत: पाठालोचन की अभिनव पद्धति पर मीरां के प्रामाणिक पदों का सम्पादन एवं प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है।"

—डॉ० कन्हैयालाल सहल-मरुभारती अक्टूबर १९६४।

(ग) "मीरां के पदों के सम्पादन की आवश्यकता है। पदों का वैज्ञानिक वर्गीकरण भी नहीं है।"

—डॉ० रामकुमार वर्मा-हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ५८८।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीराँबाई के पदों में 'जोगी'

मीराँवाई ने अपने अनेक पदों में 'जोगी' शब्द का उल्लेख किया है। इस कारण यह शब्द (जोगी) मीराँबाई के साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। कुछ विद्वानों ने जोगी शब्द से युक्त सभी पदों को अप्रामाणिक मानने का सुझाव दिया है। यद्यपि मीरां के सभी पदों की प्रामाणिकता का निर्णय करना अत्यन्त कठिन है, किन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि 'जोगी' शब्द से युक्त सभी पद अप्रामाणिक अथवा प्रक्षिप्त नहीं हैं। साथ ही यह भी कटु-सत्य है कि इस शब्द वाले सभी पद पूर्णतया प्रामाणिक भी नहीं कहे जा सकते। अतः प्रथम आवश्यकता तो यही है कि मीराँ के सभी प्रामाणिक पदों के प्रस्तुतीकरण का प्रयास किया जाय और तत्पश्चात् मीराँ सम्बन्धी कोई निर्णय (मीराँ के पदों के आधार पर) लिया जाय।

इस दृष्टि से लिखित परम्परा से प्राप्त पद ही अधिक विश्वसनीय तथा प्रामाणिक कहे जा सकते हैं।

अद्यावधि अनेक विद्वानों ने अनेक दृष्टियों से 'जोगी' शब्द पर विचार किया है। उनमें से कुछ विचारणीय हैं, कुछ त्याज्य हैं और कुछ उपहासास्पद

विभिन्न मत

एक विद्वान् का कहना है कि मीराँ जिस जोगी का अपने पदों में बार-बार उल्लेख करती है, जिसके पहनाव आदि का पूरा ब्यौरा देती है और जिसे अपना पति या प्रेमी मानती है तथा जिसके लिए वह रोती है, तड़पती है, वह कोई लौकिक जोगी ही हो सकता है। जब वह जोगी मीराँ से दूर चला जाता है तब वह उसके विरह में प्रमादावस्था को प्राप्त हो जाती है। उपर्युक्त बातों की पुष्टि हेतु, वे मीराँ के निम्नलिखित पद प्रस्तुत करते हैं :—

१– जोगिया की सूरत मन में बसी
२– म्हारे घर रमतो ही आई रे तू जोगिया
३– जोगिया से प्रीत कियां दुख होई
४– जोगियां री प्रीतड़ी है दुखड़ा रो मूल
५– राजेश्वर जोगी अब तेरी मौनज खोल

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६– मल्यो जटाधारी, जोगेश्वर बाबो
७– जोगिया जी निसिदिन जोऊं बाट
८– जावा दे रे जावा दे जोगी किसका मीत
९– जोगी मत जा मत जा पांव परूं मैं तेरी चेरी हो
१०– जोगियां ने कहियो रे आदेस
११– जोगिया जी छाइ रह्या परदेस

आदि आदि ।

उपर्युक्त विचारों से मेल खाने वाले कुछ विचार डा० सावित्री सिन्हा ने भी अपनी पुस्तक में व्यक्त किये हैं।[1] डा० कृष्णलाल मीराँ के जोगी पर नाथ-पंथी जोगी का प्रभाव देखते हैं।[2] श्रीमती पद्मावती शबनम भी कुछ इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुँची हैं।[3] प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव भी कुछ ऐसा ही कहना चाहते हैं।[4] प्रो० अंचल के विचार भी इन सबसे मिलते हुए ही कहे जा सकते

---

१. "मीराँ के आराध्य का दूसरा निर्गुण पंथी रूप पूर्णतया लौकिक है । जिस जोगी के प्रेम में वह व्याकुल है वह एक साधारण जोगी है, जो उसके मन में प्रेम की अग्नि लगा कर चला गया है ।" आगे वे पुनः लिखती हैं– "मीराँ के नैसर्गिक व्यक्तित्व के साथ भौतिक भावना के सम्बन्ध स्थापन से यद्यपि हमारी निष्ठा तथा विश्वास पर गहरा आघात लगता है, पर उनकी अनुभूतियों के आलम्बन जोगी के रूप की स्पष्ट लौकिकता के प्रति निरपेक्षता, सत्य की उपेक्षा होगी ।"

—मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियां, पृ० १२६-१२७ ।

२. "मीराँ के योगी-रूप आराध्य पर स्पष्टतः नाथ सम्प्रदाय के योगियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है ।"

—मीराँबाई, पृ० १२९ ।

३. "मीराँ ने अपने आराध्य को बार-बार जोगी नाम से ही सम्बोधित किया है । मीराँ के जोगी की वेशभूषा भी नाथ परम्परानुसार ही है । पदाभिव्यक्तियों के आधार पर यह सुस्पष्ट हो उठता है कि मीराँ के ये आराध्य नाथ परम्परानुसार वेशभूषा से विभूषित नाथ-परम्परानुकूल जोगी-कर्म में रत हैं ।"

—मीराँ : एक अध्ययन, पृ० ११५-११६ ।

४. "इस गीत में भी स्पष्ट ही जोगी के प्रति प्रेम निवेदित किया गया है । यह गुरु से अनुरोध कभी नहीं हो सकता । यह तो प्रेमिका का प्रेमी से अनुरोध है ।"

—मीराँ दर्शन, पृ० १०८ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हैं।[१] डा० हीरालाल माहेश्वरी का स्वर भी इन्हीं स्वरों से समानता रखने वाला है।[२] एक विदेशी लेखक सर जार्ज मैकमन ने मीराँ को एक वेश्या बताया है।[३]

मैकमन के अभिमत को एक भारतीय विद्वान् ने आक्षेप की चरम सीमा माना है[४], परन्तु यदि देखा जाय तो उपर्युक्त विद्वानों के विचार भी मीराँ नाम पर कुछ कम आक्षेप नहीं हैं।

उपर्युक्त मतों की आलोचना

मेरे (मीराँ के योगी के विषय में) विचार उपर्युक्त सभी विद्वानों से भिन्न हैं। मेरे शोध के आधार पर मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मीराँ का किसी भी लौकिक जोगी से प्रेम-सम्बन्ध असंभव है। मीराँ का प्रणय निवेदन किसी लौकिक जोगी के लिए न होकर अलौकिक गिरिवरधारी 'जोगेश्वर' यदुवंशी महाराज कृष्ण के लिए ही है। मेरी यह स्पष्ट और निश्चित मान्यता है कि मीराँ का जोगी और कोई नहीं बल्कि स्वयं योगीराज कृष्ण ही हैं। मीराँ ने उन्हें ही अपना सर्वस्व माना था। इन्हीं अजर अमर अलौकिक 'जोगीराज' के लिए ही उसने अपने लौकिक पति मेवाड़ाधिराजकुमार भोजराज (सांगावत) तक को विस्मृत कर दिया। यह महान् त्याग, एक साधारण लौकिक जोगी के लिए करना न कभी मीराँ को अभीष्ट था और न ही उसके उपर्युक्त पदों अथवा मीराँ के अन्य पदों से यह भाव ही निकलता है।

---

१. "मीराँ की वेदना के पीछे एक कुचले हुए स्वप्न की, एक प्रेमदग्ध हृदय की विकलता है। उस वेदना में पार्थिव यथार्थ है।" —मीरां स्मृति ग्रन्थ, पृ० १२७।

२. "उपर्युक्त पदों से स्पष्ट है कि मीरां की प्रेम-साधना में किसी न किसी जोगी का सहयोग अवश्य रहा था, और संभवतः यह जोगी तथा वह 'गुरु ज्ञानी' एक ही है जिसकी सूरत को देख कर मीराँ मुग्ध हो गई थी (मिलता जाज्यो रे गुरु ज्ञानी)।" —राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० ३२६।

३. "उस शताब्दी में राजपुताना में मीराँबाई हुई, जो कामलिप्सा तथा शक्ति की वैष्णव उपासिका थी, संसार के आनंदमय प्रेमी गोपीनाथ कृष्ण की कीर्ति की उत्साहपूर्वक् गायिका थी तथा लिंग-योनि के रहस्य की उपदेशिका थी। वे वेश्याओं की गुणग्राहिका समझी जाती थी जो प्रायः यही नाम धारण करती हैं। इस नाम को गाँधीगृह में प्रवेश करने पर मिल स्लेड् को धारण करने की आज्ञा नही दी जानी चाहिए थी।" —सर जार्ज मैकमन, दी अंडर वर्ल्ड ऑफ इंडिया

४. डा० हीरालाल माहेश्वरी, 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पृ० ३२८.

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हमें मीराँ पर कोई भी निर्णय, उस युग और उसकी परिस्थितियों तथा संभावनाओं के संदर्भ में ही करना चाहिए।

मीराँ के युग और परिस्थितियों के सन्दर्भ में–

मीराँ के युग की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति के सन्दर्भ में विचार करने से भी यही ज्ञात होता है कि उस परम्परा-पालन के युग में, मीराँ का लौकिक जोगी से प्रणय सम्बन्ध नहीं हो सकता। मीराँ का युग, धर्म, श्रद्धा, नैतिकता, सदाचार और सतियों का युग है। वह आन, मान और मर्यादा हेतु, पतंगे की तरह मर मिटने वाले अनोखे वीरों का युग है। फिर, मीराँ तो अपनी आन, मान और मर्यादा के धनी, दो राजकुलों (मेवाड़ और मेड़ता) से संबंधित है। मेवाड़ और मेड़ता, दोनों अपनी वीरता, आन-बान, चरित्र, सच्चाई, धर्म-सम्मत आचरण, (सदाचार) और नैतिकता के लिए भारतीय इतिहास में विख्यात है। जहां, यहां के रणबाँकुरे वीरों ने अपनी आन-बान की रक्षा के लिए कभी प्राणों का मोह नहीं किया, वहां क्षत्रिय-लाज रखने के लिए यहां की स्त्रियों ने कम जौहर नहीं किए हैं। हमें इन सभी परिस्थितियों के सन्दर्भ में विचार कर, मीरां पर कोई निर्णय लेना चाहिए। यह नहीं हो सकता कि उस युग की, उस कुल की, उन परिस्थितियों की मीराँ, किसी लौकिक जोगी से प्रणय करे और 'सरेआम' उस प्रणय की अभिव्यक्ति करती फिरे। मीराँ स्वयं ने कभी ऐसी दूषित कल्पना तक नहीं की थी, यह सच है, किन्तु यदि स्वयं मीराँ भी ऐसा करना चाहती तो भी वह कभी संभव नहीं होता। मेड़तिया वीरों की धमनियों का रक्त इतना शिथिल नहीं हो गया था कि वे उस तथा-कथित अथवा आरोपित जोगी से मीराँ को स्वतंत्रतापूर्वक् प्रणय करने देते, जबकि इतिहास इस बात का साक्षी है कि मीराँ के प्रति मेड़ता के राजवंश ने सदा आदर ही दिखाया था।

प्रत्येक वस्तु को विपरीत ढंग से सोचना और प्रस्तुत करना सदैव प्रगतिशील चिन्तन नहीं कहा जा सकता। किसी भी तथ्य के सत्यान्वेषण में न भावुकता से अभीष्ट सिद्धि मिलती है और न मनमानी शाब्दिक ऊहापोह से ही प्रयोजन सिद्ध होता है। ऐसी विवादग्रस्त स्थिति में तो अन्तर्बाह्य प्रमाण ही साक्ष्य माने जा सकते हैं।

वर्त्तमान् युग के मानदण्डों से मीराँबाई का मूल्यांकन करने से मीराँ के साथ न्याय नहीं होगा। यह ठीक है कि आज के समाज में प्रणय-लीला एक

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साधारण सी वात हो गई है और वैवाहिक जीवन की पवित्रता में लोगों को अश्रद्धा होने लगी है, परन्तु मीराँ के युग और तत्कालीन समाज में ऐसी खुली 'प्रगतिशीलता' के दर्शन नहीं होते।

विद्वानों की भूल

वस्तुतः मीराँ के पद स्वयं इस वात के प्रमाण हैं कि मीराँ का वह जोगी कौन था। विभिन्न विद्वानों ने उस जोगी को मीराँ का लौकिक प्रेमी सिद्ध करने के लिये, जिन पदों का आश्रय लिया है, यहां पर उन्हीं की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है। उन पदों से स्पष्ट है कि मीराँ का जोगी और कोई नहीं स्वयं 'गिरधर नागर' है और मीराँ उसी की एक गोपिका है।

राजेश्वर जोगी अब तेरी मौनज खोल ॥ ० ॥
पूरब जनम की तेरी मैं गोपिका।
वीच मांहि पड़ गई झोल ॥ १ ॥
सहस्र गोप्यां संग रमता जी मोहन।
कईं मैं बजाऊं अब ढोल ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर।
पूरब जनम का कौल ॥ ३ ॥

उपर्युक्त पद में स्वयं कृष्ण ही 'राजेश्वर जोगी' हैं। उन्हीं अजर अमर योगेश्वर की मीराँ 'जनम-जनम की गोपिका' है, जिसके 'बीच मांहि........झोल' पड़ गया है। वे 'मोहन' श्रीकृष्ण ही हैं जो 'सहस्र गोप्यां संग' रमते हैं। वे 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' क्या कोई लौकिक जोगी हो सकते हैं जिनका मीराँ से 'पूरब जनम का कौल' है?

इसी प्रकार मीराँ अपने अलौकिक 'जोगीया' से कहती है—

जोगिया तें जुगत न जाणी हो।
मैं तो आसिक तोरड़ी तोने दया न आणी हो ॥ ० ॥
पतित पावन तो विड़द है (याही) बेद बखानी हो।
मीरां कूं द्यो दरस प्रभुजी अब सुख-दानी हो ॥ ५ ॥

प्रस्तुत पद में भी इस लौकिक जगत् की 'जुगत' न जानने वाला 'जोगिया' भी अलौकिक प्रभु कृष्ण के अतिरिक्त और कौन हो सकता है? मीराँ 'उसी' अलौकिक जोगिया की 'आसिक' (आशिक़) है, जिसका 'पतित-पावन बिड़द है' जिसे

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

'वेद' तक ने बखाना है। मीराँ उसी प्रियतम कृष्ण से 'दरस' देने के लिए कहती हैं, जो स्वयं 'सुखदायी' है।

जाबा दे री जाबा दे जोगी किसका मीत ॥ ० ॥
....
मैं जाणूं या पार निभेगी, छांडि चले अधबीच ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर स्याम मनोहर, प्रेम पियारा मीत ॥ ४ ॥

यह 'जोगी' भी वही ब्रह्म का प्रतिनिधि श्री गिरधर गोपाल है, जो 'किसका मीत' हो सकता है? मीराँ को पूर्वजन्म के 'कौल' के कारण, यह विश्वास हो चला था कि यह जोगी उसे भवसागर पार ले चलेगा और इस तरह यह प्रणय 'निभ' जायगा, किन्तु वह तो 'छांडि चले अधत्रीच'। जोगी के रूप में, 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' ही हैं जिन्हें वह 'स्याम, प्रेम पियारा मीत' सम्बोधित कर, स्मरण करती है। कोई लौकिक जोगी 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर, स्याम मनोहर तथा प्रेम पियारा मीत' कैसे हो सकता है? गिरिवरधारी प्रभु के रूप तो श्रीकृष्ण ही अब तक प्रसिद्ध हैं।

जोगीया ने कहीज्यो जी आदेस ॥ ० ॥
जोगीयो चतुर सुजाण सजनी, ध्यावे संकर सेस ॥ १ ॥
....
दासी मीरां राम भजिकै, तन मन कीन्हों पेस ॥ ५ ॥

प्रस्तुत पद के द्वारा मीराँ ने अपने जोगी को और स्पष्ट कर दिया है। जिस 'जोगिया' से मीराँ 'आदेस' कहने की बात कह रही है वह कोई साधारण जोगी नहीं है। वह तो 'चतुर सुजाण' है जिसका ध्यान ब्रह्मा 'संकर' (शङ्कर) और 'सेस' (शेष) भी करते हैं। मीराँ उसी 'चतुर सुजाण' जोगीया की दासी है और उसी को मीराँ ने 'तन मन' 'पेस' (पेश=अर्पित) कर दिया है।

जोगीया जी छाइ रह्यया परदेस ॥ ० ॥
जबका विछड़या फेर न मिलिया, बहोरि न दियो संदेस ॥ १ ॥
....
मीरां के प्रभु राम मिलण कूं, जीवनि जनम अनेक ॥ ४ ॥

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

'परदेस' में बस जाने वाले जोगी भी मीराँ के प्रभु गिरधर नागर ही हैं। वह जोगी कृष्ण ही है जो ब्रह्म के रूप में आत्मारूपी मीराँ से एक बार बिछड़ने पर 'फेरि न मिलिया' और 'बहोरि न दियो संदेस'। वह जोगी और कोई नहीं 'मीरां के प्रभु' ही हैं जिनसे 'मिलण कूं, जीवनि जनम अनेक' अर्थात् अनेक जन्म धारण करने को भी मीराँ प्रस्तुत है। 'परदेस' से तात्पर्य यहां किसी लौकिक भूखण्ड से नहीं है, अपितु वह तो एक दिव्यलोक है, जिसका उल्लेख कबीर, चैतन्य-महाप्रभु, रैदास, दादू आदि अन्य संतों (भक्तों) ने अपनी रचनाओं में किया है। उसी 'परदेस' के वासी सांवरिया जोगी को इस लोक में आने के लिए अनुनय विनय करती हुई मीराँ कहती है—

जोगीया जी आवो ने या देस।
नैणज देखूं नाथ मेरो, ध्याइ करूं आदेस ॥ ० ॥
....
रावल् कुण विलमाइ राखो, बिरहनि है वेहाल ॥ १ ॥
वीछड्यां कोई भौ भयो (जोगी) ऐ दिन अहला जाय ॥
एक वेर देह फेरी नगर हमारे आइ ॥ २ ॥
....
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यौ हरि आइ ॥ ३ ॥

उसी अलौकिक तथा 'परदेस' वासी जोगिया नाथ से 'ध्याइ' कर मीराँ 'आदेस' करना चाहती है, उस 'रावल् जोगी' को किसी ने 'बिलमाइ' लिया है, जिसके कारण यह मीराँ 'बिरहनि है बेहाल'। उस जोगी से 'बीछड़यां कोई भौ भयो' है तथा यह जीवन रूपी 'दिन अहला जाय'। अतः हे जोगेश्वर जोगी 'एक वेर देह फेरी नगर हमारे आइ'। मीराँ का वह जोगी 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी' से भिन्न नहीं है, इसीलिए वह उस जोगीया हरि से कहती है—'दरसण द्यौ हरि आइ'।

जोगिया मेरे तेरी मनसा वाचा करमणा प्रभु, पूरबौ मेरी ॥ ० ॥
मैं पतिवरता पीव की मोल लयी चेरी।
तुम बिना कोऊ दूजो देवा सुपनै नाहि हेरी ॥ १ ॥
....
एक बिरियां मेरे नागर प्रभु दे जावो फेरि।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी राखो चरण नेरी ॥ ३ ॥

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उल्लिखित पद के द्वारा मीराँ यह और बता देना चाहती है कि उसके 'जोगिया' और 'प्रभु' में कोई अंतर नहीं है। तभी तो वह एक ही पंक्ति में इन दोनों शब्दों के द्वारा अपने स्याम को सम्बोधित करती है। 'जोगिया मेरे' तथा इसी पंक्ति में 'प्रभु पूरवौ मेरी' से यह स्पष्ट है। मीराँ कहती है कि उसने अपने इस 'जोगिया - सांवरिया - देव' के अतिरिक्त किसी 'दूजो देवा' को स्वप्न में भी नहीं देखा है (सुपने नाहि हेरी)। इसीलिये तो वह 'पतिवरता' है। अतः उसका निवेदन है कि 'जोगिया'– प्रभु 'एक विरियां मेरे नागर (नगर) देजावो फेरी'। मीराँ अपने 'अविनासी' जोगीया 'प्रभु' से विनीत स्वर में वार-वार कहना चाहती है कि 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी राखो चरण नेरी'। यह 'अविनासीप्रभु' भी वही अलौकिक जोगी, श्रीकृष्ण है। उस 'जोगिया' की प्रतीक्षा करती-करती, मीराँ जैसे अधीर हो उठी है तभी तो पुनः कहती है—

जोगिया रे तू कवहु मिलेगा मोकूं आय ॥ ० ॥
तेरे कारण जोग लिया है, घर-घर अलख जगाय ॥ १ ॥
....
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, मिलकर तपत बुझाय ॥ ३ ॥

पूर्व जन्म के आश्वासन के वाद भी जव वह अलौकिक 'जोगीया' नहीं आया, तव अविश्वास होने लगा और उपालम्भ भरे करुण स्वर में मीराँ कह उठी 'जोगिया रे तू कवहु मिलेगा मोकूं आय'। उस जोगिया कृष्ण से मिलने के लिए वैष्णव-भक्त स्वयं जोगिन बन गई है। मीराँ स्पष्ट कर देना चाहती है कि चूंकि तू जोगीया बन गया है अतः मैंने भी 'तेरे कारण जोग लिया है' और घर-घर अलख 'जगाई' है। इसलिए हे जोगीया बने हुए 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी, मिलकर तपत बुझाय'। यदि श्रीकृष्ण जोगेश्वर रूप में न आते, तो संभव है मीराँ भी 'जोगिन' होकर योग साधना नहीं करती। 'जोगी' और 'जोगनियां' शव्द उन दिनों लोक प्रचलित भी थे तथा लोक में भी इन शव्दों का प्रयोग होता था। तत्कालीन लोककथाओं में ऐसे शव्द मिलते हैं।

माई म्हाने रमइयो दे गयो भेष ॥ ० ॥
हम जानै हरि परम सनेही पूरव जनम को लेष ॥ १ ॥
अंग भभूत गले मृगछाला घर-घर जगत अलेष ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु हरि अविनासी सांई मिलण की टेक ॥ ३ ॥

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीराँ स्वयं स्वीकार करती है कि 'माई म्हाने रमइयो दे गयो भेष'। अर्थात् मीराँ का 'जोगिया' भेष उसी के प्रभु का दिया हुआ है। साथ ही वह यह भी कह देती है कि 'उसी परम सनेही' 'हरि' ने 'अंग भभूत गले मृगछाला' धारण कर 'घर घर....अलख' जपना प्रारम्भ कर दिया है। इस कारण मीराँ को पुनः कहना पड़ा 'मीराँ के प्रभु हरि अविनासी' हे 'सांई' आप से ही 'मिलण की टेक' है। मीराँ की प्रतीक्षा पूर्ण हुई। उसकी साधना सफल हुई। मीराँ के 'जोगिया-प्रीतम=स्याम' स्वयं मिलने आये। इस हर्षातिरेक से मीराँ गा उठी—

आंण मिल्यो अनुरागी, जोगियो आंण मिल्यो अनुरागी ॥ ० ॥
सांसो सोच अंग नहि अबतो। तिस्ना दुवध्या त्यागी ॥ १ ॥
मोर-मुकुट पीताम्बर सौहै। स्याम बरण बड़भागी ॥ २ ॥
जनम-जनम को साहिब मेरो। वाही सों लौ लागी ॥ ३ ॥
अपणां पिया सग हिल-मिल खेलूं। अधर सुधारस पागी ॥ ४ ॥
मीरां गिरधर के मन मांनी। अब मैं भई सुभागी ॥ ५ ॥

उस 'अनुरागी जोगिया' के 'आंण' मिलते ही मीराँ ने 'तिस्ना दुवध्या त्यागी'। मीराँ ने अपने 'सांवलिया जोगी' की वस्त्र-सज्जा, आभूषण आदि देकर भी यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके जोगी, जगत्-विख्यात मोर-मुकुटधारी स्वयं स्याम ही हैं दूसरा कोई नहीं। मीराँ ने प्रस्तुत पद से यह भी स्पष्ट कर दिया है कि उसका 'साहिब' भी वही कृष्ण है, जो कभी जोगीया के रूप में उसके द्वारा स्मरण किया जाता है। यह अनुरागी जोगिया वही है जिसके 'मोर मुकुट पीताम्बर सौहै' तथा जो 'स्याम बरण बड़भागी' है जो 'जनम-जनम को साहिब (है) मेरो' वस्तुतः 'वाही सों लौ लागी'। उसी अनुरागी जोगिया गिरधर नागर के साथ मीराँ की अभिलाषा है – 'अपणां पिया संग हिल-मिल खेलूं' इतना ही नहीं वह 'अधर सुधारस पागी' होने की भी महती इच्छा रखती है। मीराँ की यह अभिलाषा किसी लौकिक जोगी के लिए किसी तरह संभव नहीं है। इसे ही स्पष्ट करने के लिए संभवतः अन्तिम पंक्ति मीराँ को कहनी पड़ी 'मीरां गिरधर के मन मांनी' और इसी कारण वह कहती है – 'अब मैं भई सुभागी'। लगता है जैसे मीराँ को चरम लक्ष्य की प्राप्ति हो गई है। किन्तु मीराँ यह नहीं समझ सकी कि उसका यह 'रावलिया जोगी' आया किधर से। तभी तो वह पूछ वैठी –

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कणी दशा में रावल आविया रावलिया जोगी ।
कणी दशा में रावल जासी नाव लियां तर जासी ।
भजन करयां मौज पासी । म्हेजी म्हे देखिया अविनासी ।। ० ।।

यहां भी वह अलौकिक जोगी ही है जिसे वह 'रावल' अथवा 'रावलिया जोगी' के रूप में याद करती है। यह वही अलौकिक जोगी है जिसका 'नाव लियां (मीराँ) तर जासी' और इसे देख कर मीराँ कहती है– 'म्हे देखिया अविनासी'। लौकिक जोगी न तो 'रावल' हो सकता और न ही 'रावलिया जोगी'। कोई भी लौकिक जोगी ऐसा नहीं हो सकता जिसका नाम लेते ही भवसागर पार किया जा सकता है। लौकिक जोगी अविनासी भी नहीं हो सकता। यदि लौकिक योगी होता तो उसके आगमन की दिशा को जानना भी असंभव नही था; परन्तु जो हमारे भीतर विराजमान रहता है उसका जब साक्षात्कार हो जावे, तो निस्संदेह यह कहना पड़ता है कि 'यह कहाँ से आ गया।'

इस विषय में एक बात और है कि ब्रह्म का साक्षात्कार मानव के लिये स्थायी नहीं हो सकता। अतः जब साधक भक्त की आंतरिक दृष्टि से वह (ब्रह्म) हट जाता है तो वह व्याकुल हो उठता है। सूर की गोपिकाओं की शैली में तब वह उपालम्भ देने लगता है। यह कैसी आँख-मिचौनी ? कैसा इधर-उधर डोलना ? इसी भावना से प्रेरित होकर मीराँ पाती है कि 'रावलिया जोगी' उसके पास आ तो गया, किन्तु मौन धारण किए रहा। अतः मीराँ को कहना पड़ा—

धूतारा जोगी एकर सूं हंसि बोल ।। ० ।।
जगत बदीत करी मनमोहन, कहा वजावत ढोल ।
अंग भभूति गले मृगछाला, तू जन गूंढ़िया खोल ।। १ ।।
सदन सरोज वदन की सोभा, ऊभी जोऊं कपोल ।
सेली नाद बभूत न बटवो, अजूं मुनी मुख खोल ।। २ ।।
चढ़ती बैस नैण अणियाले, तूं घरि-घरि मत डोल ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, चेरी भई विन मोल ।। ३ ।।

प्रस्तुत पद से मीराँ ने जैसे अपने 'जोगीया' की सारी 'गूंढ़िया' (रहस्य) खोल दी है। यह 'धूतारा जोगी' सिवा 'मनमोहन' के और कोई नहीं है जिसके बारे में मीराँ ढ़ोल वजाकर कुछ नहीं कहना चाहती, क्योंकि वह समझती है जैसे सारे जगत को यह रहस्य ज्ञात है किन्तु पुनः जब उसे संशय होने लगता है तब

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वह कह उठती है– 'अंग भभूति गले मृगछाला', यह क्या रहस्य है– 'तू जन गूंढ़िया खोल'। एक ओर 'सदन सरोज वदन की शोभा' लक्षित है तो दूसरी ओर 'सेली नाद बभूत न बटवो'। यह रहस्य कुछ मति भ्रमित कर सकता है, अतः हे जोगी 'अजूं मुनी मुख खोल' और सारा रहस्य बतला दे। हे जोगी तेरी 'चढती बैस' है 'नैण अणियाले' हैं। अतः 'तू घर-घर मत डोल'। तूं ही तो 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी' है जिसकी मीराँ 'चेरी भई बिन मोल'।

इतने पर भीं वह 'जोगी मनमोहन' नहीं बोला, तब मीराँ को पुनः उसी स्वर में निवेदन करना पड़ा –

धुतारा जोगी एक बेरीया मुख बोल रे ।। ० ।।
कानन कुंडल गल विच सेली अब तेरी मुन खोल रे ।। १ ।।
रास रच्यो बंसीवट जमुना ता दिन कीनो कोल रे ।। २ ।।
पूरब जनम की मैं हूं गोपिका अब बिच पड़ गयो झोल रे ।। ३ ।।
जगत वदित तुम करो मोहन अब्र क्यों बजाऊं ढोल रे ।। ४ ।।
तेरे कारन सब जग त्यागो अब मोहे कर सों लोल रे ।। ५ ।।
'मीरां' के प्रभु गिरधर नागर चेरी भई बिन मोल रे ।। ६ ।।

इस पद के द्वारा मीराँ स्वयं जैसे इस जोगीया का भेद खोल दे रही है। कृष्ण ने जोगी-रूप तो धारण किया किन्तु, उनके स्वयं के वस्त्राभूषण और मुख-छवि तथा बदन भव्यता जोगी-रूप के अनुकूल पूर्णतया परिवर्तित नहीं हुई है। यह रहस्य केवल मीराँ ही जानती है। अतः इस रूप को देखते ही वह कह उठी है– 'कानन कुंडल और गल विच सेली'? कुछ उचित नहीं बन पड़ा, अतः 'अब तेरी मुन खोल रे' तेरा रहस्य मैंने समझ लिया है। तूं वही तो है जिसने 'रास रच्यो बंसी तट जमुना' और तूंने 'ता दिन कीनों कोल रे'। तूं संभवतः यह सोचे कि इसे यह रहस्य कैसे ज्ञात हुआ तो अब तुझे स्मरण करा दूं– 'पूरब जनम की मैं हूं गोपिका' जिसके साथ हे जोगीया तूने 'कोल' किया था। यह तो न जाने कैसे 'अब बिच पड़ गयो झोल रे'। 'तेरे कारन' ही मैंने 'सब जग त्यागो' अतः अब मोहे 'कर सों लोल रे'। मीराँ ने अपने प्रभु को जैसे जोगीया वेश में भी तुरंत पहचान लिया है तभी तो वह कहती है– 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर चेरी भई बिन मोल रे।'

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उपर्युक्त सभी पदों को देखने से ज्ञात होता है कि स्वयं श्रीकृष्ण ही इन पदों के 'जोगीया जोगी' हैं। उन्हीं 'राजेश्वर' अथवा 'रावलिया जोगी' से मीराँ ने 'जनम-जनम की प्रीत' लगाई है। उन्हीं 'गिरधर नागर चतुर सुजान' की वह 'पूरव जनम की गोपिका' है और वे कृष्ण ही हैं जो सहस्र गोपियों के संग 'रमते' हैं। उन्होंने ही जमुना किनारे रास रचाया था। उन्हीं श्रीकृष्ण से मीराँ का जनम-जनम का कौल है, जो अब जोगी बने हुए हैं। कृष्ण का ही 'पतित पावन बिड़द' है, जिसका वेद ने बखान किया है। वे ही प्रभु 'गिरधर नागर' मीराँ के 'स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत' हैं।

वह जोगी कोई लौकिक जोगी नहीं है और वह हो भी नहीं सकता। श्रीकृष्ण का जो रूप, सौन्दर्य, वस्त्र-परिधान और आभूषण-सज्जा भागवत, पुराणादि ग्रन्थों में वर्णित है उसी का प्रस्तुत पदों में पुनराख्यान है।[1]

---

१. **नाना युगों में भगवान श्रीकृष्ण का रूप-सौन्दर्य एवं वस्त्र-सज्जा**

<u>सत्युग में–</u>

कृते शुल्कश्चतुर्बाहुर्जटिलो वल्कलाम्बरः।
कृष्णाजिनोपवीताक्षान् बिभ्रद्दण्डकमण्डलू ॥ २१ ॥

(सत्युग में भगवान के श्रीविग्रह का रंग होता है श्वेत। उनके चार भुजाएं और शिर पर जटा होती है तथा वे वल्कल का ही वस्त्र पहनते हैं। काले मृग का चर्म, यज्ञोपवीत, रुद्राक्ष की माला, दण्ड और कमण्डलु धारण करते हैं।) पृ० ७३४

हंसः सुपर्णो वैकुण्ठो धर्मो योगेश्वरोऽमलः।
ईश्वरः पुरुषोऽव्यक्तः परमात्मेति गीयते ॥ २३ ॥

(सत्युग के मनुष्य) (वे लोग हंस, सुपर्ण, बैकुण्ठ, धर्म, योगेश्वर, अमल, ईश्वर, पुरुष, अव्यक्त और परमात्मा आदि नामों के द्वारा भगवान की गुण-लीला आदि का गान करते हैं।) पृ० ७३४

<u>द्वापर में–</u>

द्वापरे भगवाञ्छ्यामः पीतवासा निजायुधः।
श्रीवत्सादिभिरङ्कैश्च लक्षणैरुपलक्षितः ॥ २७ ॥

(राजन्! द्वापर में भगवान के श्रीविग्रह का रंग होता है सांवला। वे पीताम्बर तथा शंख-चक्र, गदा आदि, अपने आयुध धारण करते हैं। वक्षःस्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह, भृगुलता, कौस्तुभमणि आदि लक्षणों से वे पहचाने जाते हैं।)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वैष्णव सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण के जिस विरद का गान पुराणादि नाना ग्रन्थों में हुआ है वही 'बीड़द' इस जोगी के हैं।[1] वे 'चतुर सुजांण' श्रीकृष्ण हैं लौकिक जोगी नहीं जिनका 'ब्रह्मा' और 'सेस' ध्यान करते हैं। मीराँ के पदों का जोगी' वह प्रभु अविनासी है जिससे 'दरसण' देने के लिए, मीराँ अनुनय-विनय करती है। उसी 'सांवरिया अथवा सांवलिया' जोगी के लिए मीराँ जोग लेकर 'जोगनिया' बनने को तत्पर है, जिसके सिर पर 'मोर-मुकुट' है, तन पर 'पीताम्वर' शोभित है और जो स्वयं स्याम वर्ण है। वह महायोगी है, वह

तं तदा पुरुषं मर्त्या महाराजोपलक्षणम्।
यजन्ति वेदतन्त्राभ्यां परं जिज्ञासवो नृप ॥ २८ ॥

(राजन्! उस समय जिज्ञासु मनुष्य महाराजाओं के चिह्न, छत्र, चंवर आदि से युक्त परम-पुरुष भगवान की वैदिक और तांत्रिक विधि से आराधना करते हैं।)–पृ० ७३४।

<u>कलियुग में–</u>

(१) तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥ २ ॥

(पृ० ३१९ अ० ३२)

(ठीक उसी समम उनके बीचो बीच भगवान श्रीकृष्ण प्रकट हो गए। उनका मुख कमल मंद मंद मुस्कान से खिला हुआ था। गले में वनमाला थी, पीताम्बर धारण किये हुए थे। उनका यह रूप क्या था, सबके मनको मथ डालने वाले कामदेव के मन को भी मथने वाला था।

(२) तं विलोक्यागतं प्रेष्ठं प्रीत्युत्फुल्लदृशोऽबलाः।
उत्तस्थुर्युगपत् सर्वास्तन्व्यः प्राणमिवागतम् ॥ ३ ॥

पृ० ३१९ अ० ३२।

(कोटि कोटि कामों से भी सुन्दर परम मनोहर श्याम सुन्दर को आया देख गोपियों के नेत्र प्रेम और आनन्द से खिल उठे।)

(३) उपगीयमानौ ललितं स्त्रीजनैर्बद्धसौहृदैः।
स्वलंकृतानुलिप्ताङ्गौ स्रग्विणौ विरजोऽम्बरौ ॥ २१ ॥

(भगवान श्रीकृष्ण निर्मल पीताम्बर और बलरामजी नीलाम्बर धारण किये हुए थे। दोनों के गले में फूलों के सुन्दर सुन्दर हार लटक रहे थे तथा शरीर में अंगराग, सुगन्धित चंदन लगा हुआ था और सुन्दर सुन्दर आभूषण पहने हुए थे।)

(४) संत चित्रमबलाः शृणुतेदं
हारहास उरसि स्थिरविद्युत्।
नन्दसूनुरयमार्तजनाना
नर्मदो यर्हि कूजितवेणुः ॥ ४ ॥

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बड़भागी है। वही मीराँ का 'जनम जनम' का 'साहिब' है। उसी से मीराँ की 'लौ लागी' है। वह जोगी कृष्ण ही है जो 'जमना' तट पर रास रचाता है। उसी से मीराँ ने 'कौल' किया है। उसी ने मीराँ को 'पूरब जनम' में पुर्नमिलन का वचन दिया था, मीराँ ही 'पूरब जनम की गोपिका' है।

---

(५) बर्हिणस्तबक धातु पलाशै-
बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः।
कर्हिचित सबल आलि स गोपै-
र्गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥ ६ ॥

(६) अनुचरैः समनुर्वणितवीर्य
आदिपुरूष इवाचलभूतिः।
वनचरो गिरि तटेषु चरन्ती
वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि ॥ ८ ॥ पृ० ३४५

(७) दर्शनीय तिलको वनमाला-
द्विव्यगन्ध तुलसीमधुमत्तैः।
अलिकुलैरलघुगीमभीष्ट-
माद्रियन् यहि सन्धितवेणुः ॥ १० ॥ पृ० ३४५

(८ गोपगोधनवृतो यमुनायाम्।
नंदसुनुरनघै तव वत्सो
नर्मदः प्राणयिनां विजहार ॥ २० ॥ पृ० ३४८

(९) पीतनीलाम्बरधरौ शरदम्बुरुहेक्षणौ ॥ २८ ॥ पृ० ३६४

(१०) किशोरौ श्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौ बृहद्‌भुजौ।
सुमुखौ सुन्दर वरौ बालद्विरद विक्रमौ ॥ २३ ॥ पृ० ३६४

(११) उदारचिरक्रीडौ स्रग्विणो वनमालिनौ ॥

(१२) नाहं तवाङ्घ्रिकमलं क्षणाधमपि केशव ॥

(१३) नौमीऽय तेऽभ्रवपुषे तडिम्बराय
गुञ्जावतंस परि पिच्छलसन्मुखाय।
वन्यस्त्रजे कवलनेत्र विषाणवेणु
लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ॥ ११ ॥ पृ० २१४, अ० १४

(१४) यथा त्वामारविन्दा क्ष यादृशं वा भदात्मकम् – (कमलनयन श्याम सुन्दर)
पृ० ७६६, अ० १४

श्रीमद्‌भागवत में कृष्ण महात्म्य

२. (क) तीर्थास्पदं शिवविरिश्चिनुतं शरणम्।
(वे तीर्यों को भी तीर्थ बनाने वाले स्वयं परम तीर्थ स्वरूप हैं, शिव, ब्रह्मा आदि बड़े बड़े देवता उन्हें नमस्कार करते हैं............) पृ० ७३६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुछ अन्य अन्तःसाक्ष्य

उपरोक्त सभी उदाहरण उन पदों के हैं, जिन्हें उन विद्वानों ने प्रस्तुत किया है जो मीराँ के जोगी को लौकिक जोगी मानते हैं। अब कुछ वे पद प्रस्तुत हैं, जिन्हें मैं उदाहरणार्थ पाठकों के समक्ष रखना चाहता हूँ।

अपने श्याम के प्रिय सखा, उद्धव को सम्बोधित कर मीराँ कह रही है –

उधव जी म्हानै ले चालो स्याम रारे देस ।। टेर ।।
कबकी छोड़ी मथुरा नगरी छोड़ दियो नंदजी को देस ।। १ ।।
कर में कमंडल और मृगछाला करसूं मैं आदेस आदेस ।। २ ।।
कंथा सिवाडु गल-बिच डारू करु भगवां भेस ।। ३ ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर मौ मन बडौ अंदेस ।। ४ ।।

मीराँ अपने 'जोगी' के साथ साथ अपने 'जोगनिया' बनने के रहस्य को भी खोल देती है। उधवजी के साथ अपने 'स्याम रारे देस' जाने के लिये वह 'कर में कमंडल और मृगछाला' पहनकर 'आदेस आदेस' करने के लिए तथा 'कंथा सिवा कर गल बिच डार कर' भगवा भेस धारण करने के लिए भी तैयार है क्योंकि उसके 'मन बडौ अंदेस' है। यह सब कुछ वह केवल अपने 'गिरधर' नागर को प्राप्त करने, उनके 'देस' जाने के लिए ही कर रही है किसी लौकिक जोगी के लिए नहीं।

अपने स्याम के विरह में व्याकुल हुई मीराँ पुनः कहती है–

(ख) त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सित राजलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ अभिवचसा यदगादरण्यम्।
माघामृग दयितये प्सितमन्वद्यावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। ३४ ।।

(भगवन्! आपके चरण कमलों को महिमा कौन करे? रामावतार में अपने पिता दशरथजी के वचनों से देवताओं के लिए भी वांछनीय और दुस्त्यज राज्यलक्ष्मी को छोड़ कर आपके चरण कमल वन वन घूमते फिरे। सचमुच आप धर्मनिष्ठता की सीमा हैं। और महापुरुष! अपनी प्रेयसी सीताजी के चाहने पर जानबूझ कर आपके चरण कमल मायामृग के पीछे दौड़ते रहे। सचमुच आप प्रेम की सीमा हैं। प्रभो! मैं आपके उन्हीं चरणारविंदों की वंदना करता हूं।) पृ० ७३७, अ० ५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कदि रे मिलैगो आई रमयौ म्हांन कदि (रे) मिलैगो आई ।

....

ज्या मिलयां आनंद घणां होई बीछरिया बैराग ।।

....

न जानु कदि हरि आईसी म्हारै ओगणगारी रो नाह ।। ७ ।।

मीराँ ने अपने स्याम, रमैया और 'जोगिया' में कभी अन्तर नहीं किया तभी तो वह कभी कहती है— "जोगिया रे तू कबहू मिलैगो मोकूं आय ।। ० ।।" और कभी 'कदि रे मिलैगो आई रमयौ म्हांन कदि मिलैगो आई' । उसके लिए 'रमयौ' और 'जोगिया' दोनों एक ही हैं 'ज्यां मिलया आनंद घणां होई बीछरिया वैराग' । मीराँ समझती हैं मुझ में कोई गुण नहीं देख कर ही संभवत: मेरे स्याम मेरे पास नहीं आना चाहते । तभी तो वह कहती हैं— 'न जानु कदि हरि आवसी म्हारै ओगणगारी रो नाह ।'

कांई रे कारण अण बोला नाथ मासे मुखड़े ।।
क्यु नहीं बोले नाथ मारो ।। टेर ।।

पेली प्रीत करी हरी हमसे प्रेम प्रीत को जोलो नाथ ।। १ ।।

....

मैं छु बेटी राजा राव री कुंवज्या बराबर कंई तोलो ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हीरदा री गुंडी कीउं नी खोलो ।। ४ ।।

मीराँ के पदों के 'अणबोला नाथ' भी वे स्याम, गिरधर नागर ही हैं जो योगेश्वर बने हुए हैं । इसीलिये एक पद में मीराँ कहती है 'धूतारा जोगी एक बेरीया मुख बोल रे' तो दूसरे पद में 'कांई रे कारण अण बोला नाथ मासे, मुखड़े क्यु नहीं बोले नाथ मारो' । यही तो वह रहस्य है, जिसे वह पाठक को बार-बार समझाना चाहती है । यदि पाठक अब भी भ्रमित है तो वह पुनः कहती है— यह वही नाथ है जिसने 'पेली प्रीत करी' किन्तु नाथ बनकर नहीं बल्कि ('हरी हमसे') हरि के रूप में । अर्थात् नाथ, हरि, रमयौ, जोगी-जोगिया, स्याम, गिरधरनागर आदि सभी शब्द मीराँ ने अपने एक ही प्रियतमं श्रीकृष्ण के लिये प्रयुक्त किये हैं । शब्द और सम्बोधन बदल जाते हैं किन्तु भावानुभूति और भावाभिव्यक्ति में कोई अन्तर नहीं आता, यही कारण है कि मीराँ ने यह सब कुछ अपने 'प्रिय' स्याम के लिए ही कहा है । पुनः देखिए—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

"काऊ विध मिल जा रे गिरधारी ।। टेर ।।"

....

"बनरावन में धेनु चरावै श्रोढ कामलीया कारी ।।"

"काऊ देख्या री घनस्यामा । स्याम हमारे रामा ।।"

इन पदों से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि मीराँ के गिरधारी' घनस्यामा श्रौर स्यामा तथा रामा' सभी एक हैं। तभी तो एक पद में उसका कहना है–'काऊ विध मिल जा रे गिरधारी' श्रौर दूसरे पद में–'काऊ देख्या री घनस्यामा, स्याम हमारे रामा ।।' मीराँ के स्याम ही मीराँ के राम हैं। वे ही 'वनरावन में धेनु चरावै श्रोढ़ कामरिया कारी ।'

जोगिया जाय बस्यो परदेस ।

....

मीराँ प्रभु गिरधर के कारनै । पहरया भगवां भेस ।। ५ ।।

ये 'जोगिया' श्रौर 'गिरधर' एक ही तो हैं। इसी कारण जोगिया के परदेस बसने पर मीराँ ने 'पहरया भगवां भेस'। किन्तु इतना ही नहीं वह श्रोर स्पष्ट कर देती है– 'मीराँ ने प्रभु गिरधर के कारन पहर्या भगवां भेस' (श्रर्थात् जोगिया श्रौर गिरधर, नाम दो हैं किन्तु व्यक्ति एक ही है श्रौर वे हैं श्रलौकिक 'जोगेश्वर' कृष्ण। वे श्रब बीती वातें भूल गए हैं। पूर्व दिनों की स्मृति कराते हुए मीराँ पुनः कहती है–

"जोगियो मेरी न जाणीं पीर ।
श्रव तो जाय बदेस बैठा । काऊ की सुध न सरीर ।।टेर।।
याद न श्रावै वृज के मांही । खेलत जमुना तीर ।।
ग्वालन को दूध खोस खाते । खौसि पीवत खीर ।। १ ।।
बन बन डोलत चाव पांवतै । पीवत जमुना नीर ।।
वृज बनिता संगी करै विलास । मन में होत श्रधीर ।। २ ।।
सो दिन लाला भूलि गयो हो । भूप भये बड भीर ।।
मीरां के प्रभु गिरधरा ! तुम श्राखर जात श्रहीर ।। ३ ।।"

जिस जोगी ने मीराँ की 'न जांणी पीर' श्रौर 'श्रब तो जाय बदेस बैठा', वह नन्द दुलारा गोपाल ही तो है। वह 'जोगियो' कृष्ण ही है जो 'वृज के मांही

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खेलत जमुना तीर और जो 'ग्वालन को दध खोस खाते, खोसि पीवत नीर।।' जिनके 'बन वन डोलत चाव पांवतै' और जो 'पीवत जमुनां नीर'। वह 'वृज वनिता संगी करै बिलास, मन में होत अधीर'। इसी 'जोगिया कृष्ण' से मीराँ उपालम्भ भरे स्वर में पूछ बैठी– 'सौ दिन लाला भूलि गयो हो। भूप भये वडभोर'। वे ही 'मीराँ के प्रभु गिरधर नागर' हैं, जिनके प्रति व्यंगभरी चुटकी लेती हुई मीराँ कहती है— 'तुम बीते दिन और उन दिनों की मेरी प्रीत क्यों ना भूल जाओ— आखर जात अहीर'।

जोगिया ने कहज्यो रे आदेस।
जोगियो चतुर सुजांन सजनी। ध्यावे ब्रह्मा सेस।। टेक।।
करो कृपा प्रतिपाल हम सूं। राखो अपने देस।।
....
आपने पतित अनेक त्यारे। मेरा तोहि अनेस।।
अब तो जोगी मेरे मांहि। रह्यो नहीं कछु लेस।।
मैं मुरख तुम चतुर रावल। कहा करौं उपदेस।। ४।।
दरद दिवांनी भई वावरी। डोली देस वदेस।।
दासी मीरां गिरधर ढुंढत। पलटे काला केस।। ५।।

यह वही अलौकिक 'जोगिया' है, जो 'चतुर सुजान' है और जिसे 'ब्रह्मा सेस' ध्यान करते हैं, वह 'प्रतिपाल' भी है, जिसका अपना 'देस' है। (यह 'देस' भी वही परदेस ही है जिसका उल्लेख पहले भी कुछ पदों में हुआ है) वह 'चतुर सुजांन' जोगिया पतित उद्धारक है वही गिरधारी है उसने 'आगे भी पतित अनेक त्यारे' हैं। उसी से मीराँ बड़ी दीनता भरे स्वर में विनती करती है– 'मैं मुरख तुम चतुर रावल' 'कहा करो उपदेस'। 'अब तो जोगी मेरे मांहि' 'रह्यो नहीं कछु लेस'। उस जोगिया गिरधर के स्नेह में वह इतनी व्याकुल हो गई कि 'दरद दिवांनी भई वावरी, डोली देस वदेस'। उस गिरधर की दासी मीराँ के, गिरधर को 'ढूंढत पलटे काला केस'।

मीराँ के जोगी और काना में भी कोई अंतर नहीं है, दोनों एक ही हैं। देखिए—

तू मत जा रे काना पाईयां परौं चिरी तेरी अरे।। टेक।।
चंदन काटौं चिता वणावौं अपने हाथ जला जा रे।। १।।
जल वल भई भसम की ढेरी अंग बभूत लगाय जा रे।। २।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आसरणमार मंडी में वैठी घर घर अलख जगाय जा रे ।। ३ ।।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर जोत में जोत मिलाय जा रे ।। ४ ।।

मीराँ जो कुछ प्रस्तुत पद में 'काँना' को सम्बोधित कर रही है वही एक अन्य पद में 'जोगी' को सम्बोधित करके कहती है– 'जोगी मत जा मत जा पांऊ परौं मैं तेरे'। इससे भी यही ज्ञात होता है कि मीराँ के 'कांना' (कान्हा) ही 'जोगी' अथवा 'जोगिया' है। कृष्ण बिना वह जीवित रहना नहीं चाहती। वह तो 'चंदन काटौ चिता बणावैं' कह कर 'जोत में जीत मिलाय' आने के लिए उस 'कांना जोगी' से कह रही है, जो उस 'मीराँ के प्रभु गिरधर नागर हैं।'

अब अन्तिम पद में मीराँ ने जैसे उस जोगी का सारा रहस्य अथवा भेद खोल के रख दिया है–

जाय पधारे गढ लोक ब्रंदावन हर सखी रास रचाय रहे ।। टेक ।।
गोपी रूप धरो **ज्योगेसुर** नरसी सखा बनाय लिज्ये ।। १ ।।
देख विहार निहार स्याम को सब सखियन संग नाच किये ।। २ ।।
गावत है अति मंद मंद नुपर ताल बजाय रहे ।। ३ ।।
तव बोले **गोपेसुर** नायक भगत अनोखा काहा आप रहे ।। ४ ।।
कहे मीराँ यन भाग हमारो प्रभु चरनन पै ध्यान घरो ।। ५ ।।

हमारे पुराण भागवतादि धार्मिक ग्रंथों में श्रीकृष्ण के दो रूपों 'जोगेसुर' (योगेश्वर)तथा 'गोपेसुर'(गोपेश्वर) रूप का वर्णन हुआ है।[1] कृष्ण के उन दोनों ही

---

१. श्रीमद्भागवत में श्री कृष्ण का योगेश्वर रूप–

(क) हंसः सुपर्णो बैकुण्ठो धर्मो योगेश्वरोऽमलः ।
ईश्वरः पुरुषोऽव्यक्तः परमात्मेति गीयते ।। २३ ।। पृ० ७३४

(ख) देवदेवेश योगेश पुण्य श्रवणकीर्तन ।
(योगेश्वर ! आप देवाधिदेवों के भी अधीश्वर हैं। आपकी लीलाओं के श्रवण-कीर्तन से जी पवित्र हो जाते हैं।)

(ग) इतीदृशेन भावेन कृष्णे योगेश्वरेश्वरे ।। २३ ।। पृ० ६६८

(घ) कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वभावन।
(सच्चिदानन्द स्वरूप श्री कृष्ण ! तुम महायोगी हो, विश्व आत्मा हो और तुम सारे विश्व के जन्मदाता हो।) पृ० ४३२

(ङ) नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ।
योगेश्वराय योगाय त्वामहं शरणता ।। १३ ।। पृ० ४३३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रूपों का परिचय कराती हुई मीराँ कहती है– 'गोपी रूप धरो ज्योगेसुर नरसी सखा बनाय लिय' तथा 'तब बोले गोपेसुर (गोपेश्वर) नायक भगत अनोखा कहा आप रहे'। अतः मीराँ के पदों के 'जोगिया जोगी' यही 'ज्योगेसुर' (जोगेश्वर= योगेश्वर) कृष्ण हैं।

(च) रासोत्सवः सम्प्रवृतो गोपीमण्डितः।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासां मध्ये द्वयोर्द्वयो ॥ पृ० ३२३, अ० ३३

(छ) प्रपन्नोऽपि महायोगिन् महापुरुष सत्यते।
(भक्तवत्सल ! महायोगेश्वर महा पुरुषोत्तम।) पृ० ३४१, अ० ३४

(ज) वयं त्विह महायोगिन् भ्रमन्तः कर्मवर्त्मसु।
(महायोगेश्वर ! हम लोग तो कर्म मार्ग में ही भटक रहे हैं) पृ० ७४६,अ० ७

(झ) योगेश योगविन्यास योगात्मन् योग सम्भव।
(भगवन् ! आप ही समस्त योगियों की गुप्त पूंजी योगों के कारण और योगेश्वर हैं। आप ही समस्त योगों के आधार उनके कारण और स्वरूप भी हैं।) पृ० ७४८, अ० ७

(ट) कृष्ण कृष्णा प्रमेयात्मन योगेश जगदीश्वर।
वासुदेवाखिलावास सात्वत्तां प्रवर प्रभो ॥ ११ ॥ पृ० ३५६, अ० ३७
(सच्चिदानन्दस्वरूप श्री कृष्ण ! आपका स्वरूप मन और वाणी का विरोध नहीं है। आप योगेश्वर हैं। सारे जगत का नियन्त्रण आपही करते हैं। आप भक्तों के एक मात्र वाछनीय यदुवंश शिरोमणि और हमारे स्वामी हैं।)

(ठ) कृष्ण कृष्ण महायोगिंस्त्वमाद्यः पुरुषः पर :
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं रूपं ते ब्राह्मणा विदुः ॥ २९ ॥
(सच्चिदानन्द स्वरूप ! सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाले परम योगेश्वर श्री कृष्ण। प्रकृति से अतीत स्वयं पुरुषोत्तम हैं।) पृ० १८८

(ड) योगेश्वरोतीर्भवतस्त्रिलोक्याम (आप योगेश्वर हैं आदि)

२. श्रीकृष्ण का गोपेश्वर रूप (श्रीमद्भागवत में)—

(क) स्वयमात्माऽऽत्मगोवत्सान् प्रतिवार्यात्मवत्सपैः।
क्रीडन्नात्मविहारैश्च सर्वात्मा प्राविशद् व्रजम् ॥ २० ॥
(सर्वात्मा भगवान् स्वयं ही बछड़े बन गये और स्वयं ही ग्वाल बाल। अपने आत्म स्वरूप बछड़ों को अपने आत्म स्वरूप ग्वाल-बालों के द्वारा घेर कर अपने ही साथ अनेकों प्रकार के खेल खेलते हुए उन्होंने ब्रज में प्रवेश किया।)
—पृ० २०७, अ० १३

(ख) तावत् सर्वे वत्सपालाः पश्चतोऽजस्य तत्क्षणात्।
व्यदृश्चन्त घनश्यामाः पीतकौशेयवाससः ॥ ४६ ॥ (पृ० २११, अ० १३)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीराँ के उल्लिखित पदों में भी उसके 'जोगी' और प्रियतम 'कृष्ण, गिरधर नागर, राम, श्री पत, श्री भगवान्, हरि, गोपाल, साहिब, स्याम, घनस्याम, हरी, ज्योगेसुर, गोपेसुर आदि सभी अभिन्न हैं। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि मीराँ का 'जोगी' कोई लौकिक जोगी नहीं है। वह तो आध्यात्मिक अलौकिक पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्ण ही हैं। हाँ, कुछ पद ऐसे अवश्य हैं[1] जिनसे किसी लौकिक जोगी का भ्रम होता है, किन्तु वे भी वस्तुतः श्रीकृष्ण की ओर ही स्पष्ट संकेत करते हैं।

---

१. (क) जोगिया ने कहियो रे अदेस।
आऊंगी मैं नाहिं रहूं रे कर जटाधारी भेस ॥ ० ॥
चीर को फाड़ कंथा पहिरूं लेऊंगी उपदेस।
गिनते गिनते घिस गई रे मेरी उंगलियाँ की रेख ॥ १ ॥
मुद्रा माला भेख लूं रे, खप्पर लेऊं हाथ।
जोगि होय जग ढूंढ सूं रे, सांवलिया के साथ ॥ २ ॥
मीराँ व्याकुल विरहिनी, कोई आन मिलावे मोय ॥ ३ ॥

—मीराँ सुधा सिन्धु, पृ० ९२८, प० सं० १७

(ख) तेरो भरम नहिं पायो रे जोगी ॥ ० ॥
आसन मांडि गुफा में बैठी, ध्यान हरी को लगायो ॥ १ ॥
गल बिच सेली हाथ हाजरियो, अंग भभूति रमायो ॥ २ ॥
मीराँ के प्रभु हरि अविनांसी भाग लिख्यो सोही पायो ॥ ३ ॥

—मीराँ सुधा सिन्धु, पृ० ९२४, पद सं० १

(ग) जोगिया जी निसिदिन जोऊं बाट।
पांव न चालै पंथ दुहेलो, आडा ओघट घाट ॥ ० ॥
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाई।
मैं भोली भोलापन कीन्हो, राख्यौ नाहीं बिलमाई ॥ १ ॥
जोगिया कूं जोवत बोहो दिन बीता, अजहुं आयो नाहिं।
बिरह बूझावण अन्तरि आवो, तपत लगी तन माहिं ॥ २ ॥
कै तो जोगी जग में नहीं, कैर, बिसारी मोइ।
कांइ करूं कित जाऊं री सजनी नैण गुमांयो रोइ ॥ ३ ॥
आरति तेरी अंतरि मेरे आवो अपनी जाणि।
मीरां व्याकुल हिरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणि ॥ ४ ॥

—मीरां सुधा-सिंधु, पद सं० ६, पृ० ९२५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उपरोक्त पदों पर गहनता से विचार करने पर कुछ नवीन तथ्य प्रकाश्य होते हैं। मीराँ अपने 'स्याम रा रे देस' जाना चाहती है और इसीलिए वह उधव से कहती है– 'उधवजी म्हानें ले चालो स्यामरा रे देस'। उधवजी जिस 'स्थामरा' के 'देस' मीराँ को ले जायेंगे, वह तो 'जगनायक श्रीकृष्ण' का ही देश हो सकता है, किसी लौकिक जोगी का नहीं। उस अपने स्याम से मिलने के लिए, मीराँ कर में कमंडल और मृगछाला धारण कर 'आदेस आदेस' का शब्द उच्चारण को भी तैयार है। वह तो 'कंथा सिलाकर' गले में धारण करने और 'भगवा भेस' ग्रहण करने को भी तत्पर हो जाती है। अपने 'जनम जनम के सांवरिया गिरधर' से मिलने को वह इतनी आतुर है कि 'जोगनियां' वन जाने तक को वह सहर्ष तैयार हो जाती है। मीराँ की इतनी मिलन-आतुरता केवल अपने स्याम, अपने कृष्ण के लिए ही है, किसी लौकिक जोगी के लिए नहीं। यदि कोई मीराँ के पदों में 'कमंडल, 'मृगछाला', 'आदेस-आदेस' 'कंथा' और 'भगवा-भेस', आदि शब्द देखकर, उसे किसी लौकिक जोगी की जोगनिया मानने की दुष्कल्पना करे तो, यह उसकी जड़ता, कैतवता और मनचलापन ही कहा जायेगा।

सच्चाई यह है कि मीराँ को अपने अलौकिक आध्यात्मिक योगेश्वर श्रीकृष्ण के प्रणय-निवेदन में लौकिक संकेतों, मापदण्डों और शब्दों का सहारा लेना पड़ा। इसके अतिरिक्त प्रणयानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए, मीराँ के पास और कोई साधन नहीं था। इसी कारण साधारण पाठक को लगता है जैसे मीराँ का प्रिय और प्रणय, आध्यात्मिक और अलौकिक न होकर लौकिक है। यह कठिनाई, केवल मीराँबाई के साथ ही नहीं वल्कि, प्रत्येक संत, भक्त तथा साधु के साथ है। अनेक संतों (भक्तों तथा साधुओं) को अपने अलौकिक प्रेम को लौकिक शव्दों, उपमानों अथवा साधनों के माध्यम से अभिव्यक्ति देनी पड़ी है। चूंकि सार्थक और लौकिक उपमा का ही लोक में अधिक प्रचार और

(घ) कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत ॥ ० ॥
आसण मांड अडिग होय बैठा, याही भजन श्री रीत ॥ १ ॥
मैं तो जाणूं जोगी संग चलेगा, छांड गया अधबीच ॥ २ ॥
आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत ॥ ३ ॥
मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, चरणन आवे चीत ॥ ४ ॥

—मीरां सुधा-सिंधु, पद सं० ७, पृ० ९२५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अधिक महत्व होता है, अतः कबीर ने भी यही कहा– 'मैं राम की बहुरिया'। इसी प्रकार बंगाल में चैतन्य महाप्रभु ने भी स्त्री-भाव से कृष्ण की उपासना की है। कुछ थोड़े से शब्दों के शाब्दिक अर्थों के आधार पर ही हमें इन विख्यात भक्तों को समझने में भूल कर, इनमें स्त्रीत्व का आरोपण नहीं कर देना चाहिये और न ही इनके प्रेम को लौकिक घोषित करने के लिए साधन ही जुटाने चाहिये। यह सब तो केवल एक लौकिक भक्त का, अपने अलौकिक ईश्वर के प्रति लौकिक शब्दों में भक्ति निवेदन ही है। इसी प्रकार लौकिक मीराँ ने भी अपने अलौकिक 'योगेश्वर गिरधर नागर' से लौकिक शब्दों अथवा उपमानों में प्रणय निवेदन किया है। अतः इन पदों के केवल कुछ शब्द महत्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि सम्पूर्ण पद का सम्पूर्ण भाव ही महत्वपूर्ण है।

'नाथ', 'जोगी', 'अलख', 'कमण्डल' आदि शब्दों से वैष्णव कृष्ण का भाव कम तथा नाथपंथी किसी 'जोगी' या 'नाथ' का भाव अधिक प्रबल दृष्टिगत होता है तथा नाथपंथी 'नाथ' अथवा 'जोगी' का चित्रण ही अधिक स्पष्ट भी होता है किन्तु इन शब्दों के माध्यम से भी मीराँ अपने उपास्यदेव वैष्णव प्रभु 'गिरधर नागर' श्रीकृष्ण का ही ध्यान करती है। अतः हमें गहन अनुभूति के अभिव्यक्ति माध्यम को महत्व न देकर मीराँ की मूल अवस्था अभिव्यक्त आग्रह तथा मूल भाव को महत्व देना चाहिए।

डॉ० सत्येन्द्र के शब्दों में– 'मीराँ ने इस हठयोग का कहीं-कहीं उल्लेख किया है। इस हठयोग की शब्दावली का चमत्कार तो मीराँ में देखने को मिलता है। पर मीराँ का स्पन्दन उसके साथ नहीं है?[1]

इसी तरह मीराँ का वैराग्य भी उसी अलौकिक 'गिरधर नागर' के लिए ही है, जो मीराँ जैसी 'ओगणगारी रो नाह' है।

मीराँ के पदों में प्रयुक्त 'नाथ' शब्द भी उन्हीं 'स्याम' श्रीकृष्ण के लिए है। भक्ति के आवेश में अनुभूति को अभिव्यक्ति देने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग मीराँ ने किया हैं, हमें केवल उन्हीं पर न अटक कर, पद के सम्पूर्ण मूल भाव को समझने का प्रयास करना चाहिए। मीराँ का 'अणबोला नाथ' कोई लौकिक नाथ या जोगी नहीं है, वे तो जगतनाथ, जगन्नाथ ही हैं अर्थात् श्रीकृष्ण हैं।

---

१. कला कल्पना और जीवन, पृ १६७।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

'नाथ', 'जोगी' आदि शब्द उन दिनों, राजस्थान में अत्यधिक प्रचलित थे, इसी कारण इनका प्रयोग राजस्थान के तत्कालीन प्रायः सभी सन्तों के साहित्य में हुआ है। वस्तुतः ये शब्द लाक्षणिक हैं और नाम प्रतीकात्मक हैं। एक दो पंक्तियाँ अथवा शब्दों को अलग कर, अर्थ का अनर्थ करने की प्रवृत्ति बहुत घातक है। हमें पूरे पद का अध्ययन कर, उसके भाव को सामने रख कर कोई निर्णय करना चाहिए। उपरोक्त पद (सं० ३) को पूरा देखने से ज्ञात होता है कि मीराँ अपने स्याम से कह रही है कि– 'मुझे कुबज्या के बरावर मत तोलौ'। इसी पंक्ति में सम्पूर्ण पद का सम्पूर्ण भाव छिपा हैं। मीराँ का यह 'अणबोला नाथ' वही स्याम हैं जो कुबज्या से भी प्रेम करता है। 'कुब्जा' से प्रेम करने वाला नाथ तो वही एक 'जगनाथ'(श्रीकृष्ण) ही, अब तक प्रसिद्ध हैं, किसो लौकिक नाथ के वारे में ऐसा सुना नहीं हैं।

मीराँ के पदों में 'ओढ कामरीया कारी' आदि शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। क्या इन शब्दों के आधार पर यह कह दिया जाय कि मुस्लिम धर्म के 'काली कमली वाले बाबा' से मीराँ का प्रेम सम्बन्ध था? केवल शब्दों के आधार पर तो यह ठीक भी लगता है किन्तु पद के सम्पूर्ण भाव और शब्दों को देखने से ज्ञात यही होता है कि वे कृष्ण ही हैं जो 'काली कमलिया ओढ़े, वृन्दावन में गाय चरा रहे हैं।'

इसी प्रकार मीराँ की पीर न जानने वाले, उस जोगिया का 'पतित पावन विरद' कहा गया है, जिसका वेदों और पुराणों ने वखान किया हैं। मीराँ उसी 'सुख की खानी' गिरधर से 'दरसण' देने के लिये प्रार्थना करती हैं। विचार करने की आवश्यकता है कि जिस 'जोगीया' का पतित पावन 'विरद' है, वेदों और पुराणों ने, जिसका वखान किया है और जो सभी सुखों की खान है, वह गिरधर क्या लौकिक जोगी हो सकता हैं? नहीं। वस्तुतः वह श्रीकृष्ण के अतिरिक्त कोई दूसरा जोगी हो ही नहीं सकता।

---

१. इसी प्रकार मीरां के कुछ पदों में है– 'तिलक छापा रुड़ा सोहै वे अमरापुर वाला ।।४।। अमरापुर में सासरो रे पीहर संता पास'। प्रस्तुत पदावली में—पृ० ७५, पद सं० १५५ इस अमरापुर के आधार पर क्या यह कहा जाय कि मीरां सिन्धी जाति के धर्म में प्रचलित अमरापुर से प्रभावित थी?

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है। वह इस लौकिक नगर का नहीं है तभी तो मीराँ उस अलौकिक को अपने लौकिक नगर में बुलाना चाहती है।

जिस जोगीया को मीराँ बार-बार अपने समीप बुलाना चाहती है, वह मन, वचन और कर्म से 'आश' पूर्ण करने वाला है, उसी पति की वह 'पतिव्रता' है। किन्तु वह जोगी कोई साधारण लौकिक जोगी न होकर 'देव' है और उस 'देवा' के अतिरिक्त मीराँ स्वप्न में किसी और को नहीं देखना चाहती। उसी सर्व-व्यापक जोगी से, वह एक बार अपने नगर की ओर आने की विनती करती है।

इस उद्‌भावना (लौकिक जोगी) के मूल में, हमारी विकृत मनोवृत्ति और फ्रायड का आधुनिक प्रभाव ही कुछ हद तक, कहे जा सकते हैं। आज के युग के मानदण्डों, परिस्थितियों तथा उदाहरणों को सामने रख कर, हम (मीराँ पर) अपने निर्णय घोषित करना चाहते हैं, बस यही सत्य दृष्टिकोण में बाधक है। आज के युग का चित्र मीराँ के युग से ठीक विपरीत है। आज के नैतिक मूल्य सदाचार, धार्मिकता, मर्यादा, आनमान, सतित्व आदि सभी बदल गए हैं। वासना प्रधान युग में वासना रहित कल्पना तो, कम हो सकती है किन्तु वासना-रहित युग की महान धार्मिक विभूतियों तक को इस तरह वासना में लपेटा जायेगा, इसकी आशा नहीं थी। किन्तु लगता है जैसे हर असंभव को, संभव कर दिखाने के प्रयास में, संभवतः यह भी संभव हो गया है।

इसी विषय पर विचार करने का एक और पहलू भी है और वह है, जोगीमगरा गांव के संबंध को लेकर। थोड़ी देर के लिए यदि यह मान भी लिया जाय कि मीराँ का कोई लौकक जोगी रहा भी होगा और उसका जोगीमगरा से कोई संबंध भी रहा होगा, तब भी यह कल्पना साकार नहीं होती। जोगीमगरा मेड़ता के पास एक गांव अवश्य है, जिसके नाम से मेड़ता जंकशन से जोधपुर की ओर आने वाली रेल्वे लाइन पर, मेड़ता जंकशन के बाद पहला, स्टेशन भी बना हुआ है, किन्तु आज का जोगीमगरा, केवल एक-दो जोगियों की मण्डी के अरिरिक्त और कुछ नहीं था। 'मारवाड़ रा परगना री विगत'[1] में नेणसी ने इस जोगीमगरे का कहीं उल्लेख तक नहीं किया है, न ही

१. 'मारवाड़ रा परगना री विगत' —सम्पा० नारायणसिंह भाटी प्रभाषक-प्राच्यविद्या प्रतिक

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अन्यत्र प्राप्त किसी प्राचीन सामग्री से इस बात की पुष्टि होती है कि जोगीमगरा मीराँ के युग में भी था। अतः इस कल्पना का मूल आधार ही असत्य है। पुनः न तो जोगीमगरे में कभी जमुना बहती थी, न व्रन्दावन वहां है, न समीप गोकल और न ही मथुरा नगरी है। न उस जोगी ने वहां कभी रास रचाई है, न कुबज्या संग नेह बढ़ाया है और न ही मीराँ से उसका पूर्व जन्म का कोई संबंध ही सिद्ध होता है। न तो उस जोगी को 'ब्रह्मा' और 'सेस' ध्याते हैं, न उसका 'बिड़द' वेदों ने गाया है, न उसने पतित अनेक उबारें हैं न प्रहलाद की 'प्रतिज्ञा' राखी है और न ही गिरवर धारण किया है। ऊपर वर्णित सभी वर्णनों की मीराँ के पदों में पुनरावर्ती हुई है। तो क्या ऐसे सभी पदों को प्रक्षिप्त मान लें ? किन्तु इतने पर भी बात नहीं बनेगी क्योंकि जोगी शब्द से युक्त सभी पदों में ऐसे वर्णन मिलते हैं। अतः फिर तो यही कहा जा सकता है कि 'जोगी' और 'नाथ' शब्द ही प्रामाणिक है, शेष सब शब्द यहां तक कि पद भी अप्रामाणिक है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीराँ के पदों में 'साधु'

मीराँबाई एक महान् भक्त आत्मा है। भक्ति उनके जीवन का मूलमंत्र है, 'सत्संग' और 'हरिकथा' उनके प्राणों की धड़कन है, तीर्थ यात्राएं उनके मन:शान्ति का आवश्यक तत्व है और साधु से बढ़कर पुनीत कर्त्तव्य उन्हें कोई और दिखाई नहीं देता। किन्तु, मीराँ के जोगी और साधु में अन्तर है। 'जोगी' शब्द केवल योगीराज श्रीकृष्ण के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। किन्तु, 'साधु' शब्द का प्रयोग श्रीकृष्ण के लिए न होकर लौकिक साधुओं अथवा संतों-भक्तों के लिए हुआ है। हमें मीराँ के पदों के आधार पर कोई निर्णय देने से पूर्व इस बात को भी दृष्टि में रखना चाहिए। इस पर थोड़ा प्रकाश डालने का प्रयास, श्री शंभूसिंह मनोहर ने, 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका'[1] में लिखे अपने निबन्ध में अवश्य किया है, किन्तु श्री मनोहर, जोगी और साधु को एक ही समझ रहे हैं, इस कारण वे दोनों में अन्तर कर, पाठकों को संतुष्ट नहीं कर सके हैं।

मीराँ का साधुओं अथवा संतों के प्रति बड़ा आदर-भाव रहा है, उनका वह बड़ा सम्मान करती रही है। 'संत समागम' और 'हरिकथा' मीराँ को अत्यधिक प्रिय रहे हैं तथा ये दोनों (उनके अन्तिम समय तक) मीराँ को प्राप्त भी होते रहे हैं। यहाँ भी मीराँ, अपने युग के राजस्थान की धार्मिक परिस्थितियों और परम्पराओं के अनुरूप ही व्यवहार करती है। उस युग में साधु और संत के प्रति, यही आदर-भाव और सम्मान, सम्पूर्ण राजस्थान में व्याप्त था। प्रसिद्धि प्राप्त साधुओं अथवा संतों को, उन दिनों राज-परिवार में भी आमन्त्रित किया जाता था, किन्तु उनके लिए मेहलों में अलग व्यवस्था होती थी। राज-महलों में भी उन सम्मानित साधुओं अथवा संतों के भजन. हरजस, कीर्तन अथवा उपदेशादि होते थे। स्त्री और पुरुष दोनों ही, बड़ी श्रद्धा से उन्हें सुना करते थे। महाराणा सांगा रायमलोत की झाली रानी के बुलाने पर रैदास का चित्तौड़ आगमन, इसी बात की ओर संकेत एवम् पुष्टि करता है।

संत समाज की आवभगत एवम् उनकी सेवा, आज भी राजपूत समाज तथा राज-परिवारों में है। विवेकानन्द जी को अमेरिका के लिए प्रेरित कर,

---

१ नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग २६।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उनकी पूर्ण व्यवस्था करने वाले खेतड़ी के राजा अजीतसिंह और दयानन्द सरस्वती को राजस्थान में आमन्त्रित करने वाले महाराणा सज्जनसिंह एवम् राजाधिराज नाहरसिंह शाहपुरा ही थे। यहां तक कि पण्डित मदनमोहन जी मालवीय को हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए पूर्ण आर्थिक अनुदान देने वाले भी, राजस्थानी शासक ही थे।

मीराँ के पदों में संतों के प्रति श्रद्धा की भावना व्यक्त मिलती है। वह संत से अनुनय विनय करता हुई कहती है—

संता काले रीज्यौ मारो ईतरो जोर। आज बसो मारे घर ।।टेर।।

छिन घड़ी पल आप पधारिया संता। चरण पवीत कीनी मारी भोम ।।१।।

अचलो बिछाय करू प्रनाम। सीस निवाऊं मारा दोनु कर जोर ।।२।।

मारा क्रम कठन होय लागा। आप पधारो जरां निरमल होई ।।३।।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर। सांईया साधुड़ा रो हिरदो बड़ौ कठोर ।।४।।

श्रद्धा और भक्ति अपने चरण सोपान पर है। जिस मर्यादा और शालीनता से संत से विनीत आग्रह हुआ है, उसकी अन्यत्र उपलब्धि दुर्लभ है। एक-एक शब्द में संत के प्रति आदर-भाव भरा पड़ा है। संतों को कल रखना है, और उसके लिए अनुनय विनय के अतिरिक्त, एक श्रद्धालु भक्त, और क्या कर सकता है ? भक्त की भी तो अपनी मर्यादा की सीमाएँ है, जिन्हें वह लांघना नहीं चाहता। इसीलिए बस केवल इतना शब्द संकेत ही है— 'संता काले रीज्यौ, मारो ईतरो जोर'। इस अनुरोध के पश्चात् भी संत कल तक रुकना नहीं चाहते तो इसका अभिप्राय यह नहीं कि वह उनके आगमन की महती कृपा को विस्मृत कर दे। वह कहती है— "छिन घड़ी पल आप पधारया संता। चरण पवीत कीनी मारी भोम ।।" सतां के इस आगमन पर, श्रद्धा और भक्ति से वह इतनी नम गई है कि "अचलो बिछाय करू प्रनाम। सीस निवाऊं मारा दोनु कर जोड़ ।।" मीराँ ने अपनी स्थिति के लिए, एक वैष्णव भक्त की तरह पूर्व जन्म अथवा इस जन्म के कर्मों को ही, कारण माना है— "मारा क्रम कठन होय लागा।" और कर्मों के संकट विमोचन का अमोघ अस्त्र है— "आप पधारो जारां निरमल होई ।।"

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कितना पावन अनुनय है। इसी तरह पुनः द्रष्टव्य है—

धनि आजि की घरी हो। साद संत में परी ।।टेर ।।
श्रीमद्भागोत श्रवण सुणी। रसना रटत हरी ।।१।।

मीराँ के संत-समागम से चाहे मेवाड़ राजवंश का अपमान होता हो किन्तु मीराँ के लिए वह पल, धन्य है जब वह 'साद संत में परी।' 'साद संग' से मीराँ ने 'श्रीमद्भागोत श्रवण सुणो।' और 'रसना रटत हरी ।।' जो मीराँ हरीमय हो गई है, उसके जीवन का एक-एक पल, एक-एक घड़ी तभी सार्थक है जब वह संत-समागम में व्यतीत हो। तथा दोनों की तभी सार्थकता है जबकि वे 'श्रीमद्भागोत' आदि हरि कथा सुने, रसना की तभी महता है, जब वह 'रटत हरी'। मीराँ संत-समागम हेतु जाने का अपना कारण भी स्पष्ट कर देती है—

सहेल्या मारी राम ला(भ)व म्हे जा(स्यां)सा ।।टेर।।

राम सभा में सतगरु राजा चरणा में सीस नवासां ।।१।।

सतगुरू ग्यान कृपा कर देवे सो हरदे घर लासां ।।२।।

राम सभा में अमरत वाणी सुण सुण (भो) बोत सुख पासां ।।३।।

भेरूं भोपा देवड़ीया जी संक्या न सासां ।।४।।

मीराँ के प्रभु गिरधरनागर चरण कमल चित लासां ।।४।।

'राम लाभ' प्राप्त करने के लिए 'राजसभा' में मीराँ जाना जाहती है। चूंकि रामसभा में 'सतगरू' ही 'राजा' है, अतः भक्त प्रजा होने के नाते 'चरणा में सीस नवासां'। इस पर जो 'सतगुरू ग्यान कृपा कर देवे, सो हिरदे पर लासां।' 'रामसभा' में अमरत वाणी' की वर्षा होगी जिसे 'सुण सुण बोत सुख पासां।' मीराँ का मन अपने ही 'प्रभु गिरधरनागर' के 'चरण कमल' में लगा हुआ है अतः वह स्पष्ट कहती है 'भेरूं भोपा देवड़ीया' आदि की 'संक्या न ल्यासां'।

संतों और साधुओं तथा सतसंग के प्रति मीरां की अनन्य श्रद्धा इतनी सबल है कि वह उसका विश्लेषण करने में भी पूर्ण सक्षम है। सतगुरू को वह जन्म सुधारक के रूप में स्मरण करती हैं—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आजि म्हारे पांवणीया वैरागी जी।
जनम सुधारण सतगुरू आया जी ।।टेक।।
प्रीती करैन राम पद रज लेस्सुं ।
म्हारो सीस चरणां सर देस्युं जी ।।१।।
चरण धोई चरणामत लेस्युं ।
म्हारा पाप बिले होइ जासी जी ।।२।।
कर जोड्यां अरज करूं छूं ।
म्हारो जनम सुधारौ सतगुरू स्वामी जी ।।३।।

सत–(सत्य) परामर्श दाता = सद्गुरू । इसी व्याख्या के अन्तर्गत मीराँ ने अपने गुरू को लिया है। इस सद्परामर्श के लिए किसी गुरू विशेष से मीराँ बंधी नहीं। वैराग्यधारी 'पांवणीयां' ही मीराँ के 'जनम सुधारण सतगुरू' बन गए हैं। प्रत्येक सत (सच्चा) संत के चरणों में सीस देने को मीराँ प्रस्तुत है। वह सत-संत, सत-साधु और सत्-गुरू के 'चरणां धोय चरणामत' लेने को तत्पर है। मीराँ की दृढ़ धारणा है कि 'इससे 'म्हारा पाप बिले होइ जासी जी'। कितनी गहरी आस्था हैं, कितना दृढ़ आत्म-विश्वास है और कितनी मर्यादा पूर्ण भक्ति है। देख कर आश्चर्य होता है।

'साधां' के आगमन का समाचार सुनते ही भक्त आत्मा, उनके दर्शनार्थं उनकी अमरतवाणी के श्रवणार्थ, अधीर हो उठती है—

रमता लाधा कांकरा सेंवा सालगराम ।
यो मन लागो हर नांव सूं रमसां साधां री साथ ।।
साध पधारयां म्हे सुण्या कानां सुणी आवाज ।
सरवर साधां रे वेसणों दूध पखालूं पांय ।।

मीराँ का साधुओं से सम्बन्ध बचपन से रहा है। ज्यों-ज्यों अवस्था बढ़ती गई, संत-समागम और साधु सेवा की प्रवृति भी बढ़ती गई और दृढ़ भी होती गई। जब वह कोमल 'मन लागौ हर नांव सूं' तब तो यह और भी निश्चित हो गया कि 'रमसां साधां री साथ।' 'साध' आगमनं की आवाज कानों में पड़ते ही मन हर्षित हो गया, अधीरता बढ़ गई ओर साधु सेवा अपने पावनतम स्वरूप मे प्रकट हुई— 'दूध पखालूं पांव।'

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हिन्दी जगत के जाग्रत पाठक, भक्त के द्वारा साधु के, सतगुरू के, चरण प्रक्षालन के नाना साधनों से परिचित होगें किन्तु दूध से साधु के पैर धोने की मीराँ की अपनी देन है। अब तक इस कार्य हेतु जल का ही अधिक महत्व रहा है चाहे वह सोने और चांदी के कटोरों में भर कर रखा गया हो और चाहे नैन-कटोरों से प्रवाहित हुआ हो, था नीर ही। किन्तु, मीराँ की श्रद्धा इन सबसे दो कदम आगे ही है।

कुछ विद्वानों का विचार है कि मीराँ के पदों का जोगी और साधु अथवा संत एक ही है और उससे उसका लौकिक सम्बन्ध हो सकता है किन्तु इस धारणा से सहमत नहीं हुआ जा सकता। जिन साधुओं अथवा संतों के प्रति मीराँ का इतना आदर, श्रद्धा और पुनीत भाव है, जिनके आगमन पर वह अपने को धन्य मानती है, जिनके पदार्पण की रज-राशि से अपनी 'भोम' को पुनीत हुई मानती है, जिन्हें वह अंचल बिछाकर सादर प्रणाम करती है, कर-बद्ध हो नमन करती है, ऐसे श्रद्धेयों से प्रेमालाप अथवा प्रणय-क्रीड़ा की कल्पना तो क्या, विचार भी असंभव है।

सर्व प्रथम और दृढ़ सत्य तो यही है कि साधुओं, संतों अथवा लौकिक जोगी के साथ मीराँ प्रेम प्रसंग कर ही नहीं सकती, किन्तु यदि कोई यह दुष्कल्पना करे भी, तो उसे इतना और विचार करना चाहिए कि क्या इस अधार्मिक, युग-विपरीत गृहित कृत्य के लिए सतियों, साध्वियों का तब का समाज मीराँ को आदर दे सकता था? क्या मीराँ के पदों को गा गा कर, उसके प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित कर सकता था? मीराँ के प्रति उतना आदर, श्रद्धा और स्नेह हो सकता था, जितना कि आज है? और मान लीजिए कि हो जाता, तो भी क्या ४०० वर्षों तक, वह सम्मान, श्रद्धा और स्नेह अक्षुण्ण रह सकता था? नहीं, कभी नहीं, क्योंकि भक्ति में वासना को कतई
है किन्तु लौकिक प्रेम में वासना सर्वोपरी रहती है। अतः दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर है।

मीराँ लोक कण्ठों पर अपनी अलौकिक भक्ति के कारण ही आज सदियों से विराजमान है। इस अपूर्व जन-श्रद्धा को प्राप्त करने के लिए मीराँ ने महान् त्याग और तपस्या का जीवन बिताया है और अपने 'स्व' को सर्वथा त्याग कर प्रकृति के पत्ते-पत्ते में 'साहब' का प्रतिबिम्ब देखा है—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

"डाल पात के हाथ ना लाऊं ना कोई बिरछ सताऊं।
पान पान में सायब देखुं झुक करि सीस निवाऊं।
मेरा राम ने रिझाऊं अेजी मैं तो गुण गोबिन का गाऊं॥"

ऐसी आध्यात्मिक भूमि पर प्रतिष्ठित भक्ति-भावना के साथ, हमारे विद्वानों द्वारा कल्पित मीराँ का लौकिक प्रेम नितान्त भ्रामक और असंगत तो है ही, साथ ही उसे किसी भी आधार पर औचित्य एवं शालीनता की सीमा में भी नहींलाया जा सकता।

मीराँ शब्द की व्युत्पत्ति—

मध्ययुगीन महान् भक्त कवयित्री राजरानी मीराँबाई, भारतीय साहित्य, संस्कृति और भक्ति को, मरुभूमि (राजस्थान) की एक अनुपम भेंट है। शुष्क धरित्री में भक्ति-रस की एक नवीन धारा प्रवाहित कर मीराँ ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया। तलवारों की खनखनाहट, युद्धघोषों के तुमुलनाद तथा सुरा और सुन्दरी से भरपूर वातावरण में मीराँ का भक्तिरस से ओत:प्रोत, जगदीश्वर के प्रति प्रणय-निवेदन और सर्वस्व-समर्पण की तीव्र अभिलाषा, राजस्थान के लिए गौरव और गर्व की वस्तु बन गई है।

मीराँबाई एक ओर अत्यन्त प्रसिद्धि-प्राप्त भक्तमति नारी है, तो दूसरी ओर हिन्दी जगत्, भक्ति-साहित्य और इतिहास में एक अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, यही स्वरूप अब तक मीराँबाई का रहा है। इसका मुख्य कारण भारतीय इतिहास का मीराँ के बारे में मौन रहना ही है। यह वास्तव में अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि मेड़ता, मेवाड़ और मारवाड़ जैसे विख्यात राजकुलों से सम्बन्धित इस विख्यात भक्त-नारी का कहीं प्रामाणिक उल्लेख तक नहीं है। इसी कारण जीवनवृत और काव्य दोनों ही अत्यन्त संदेहात्मक और विवादात्मक बन गए हैं। यहां तक कि मीराँ के नाम पर भी संशय और विवाद खड़े हो गए, प्रामाणिक आधार के अभाव में, बेसिर-पैर की कल्पनाएं उठ खड़ी हुई। ऐसी ही कल्पनाओं और संभावनाओं के सहारे मीराँ नाम की उत्पति को लेकर, हिन्दी साहित्य में एक ज्वार उठ खड़ा हुआ।

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि 'मीराँ नाम नहीं, उपनाम अथवा उपाधि

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है ।[1] कुछेक विद्वानों का विचार है कि 'मीराँ' नाम तो माना जा सकता है. किन्तु यह शब्द शुद्ध रूप में भारतीय नहीं, अपितु अरबी-फारसी का शब्द है ।[2] कुछ विद्वानों ने इस शब्द को भारतीय सिद्ध करने के लिए भी तर्क सम्मत तथ्य प्रस्तुत किए हैं ।[3]

मीराँ शब्द को विदेशी सिद्ध करने के लिए, मीराँ के जन्म सम्बन्धी किंवदतियों का जन्म हुआ, जो कालान्तर में ऐतिहासिक सत्य के रूप में मानी जाने लगी। कुछ विद्वज्जनों ने मीराँ का सम्बन्ध अजमेर के मीर साहब से जोड़ा ।[4] इस प्रकार हिन्दू धर्म में आस्था रखने वालों ने मीराँ के नाम सम्बन्धी कुछ ऐसी ही कल्पनाएं कीं। इस तरह अनेक मत रखने वालों ने, अपनी मान्यता अथवा धारणा हेतु अनेक प्रमाण भी जुटाए। विचार-शृङ्खला

---

१. स्व० डा० पिताम्बरदत्त बड़थ्वाल, सरस्वती, भाग ४०, अंक ३, मीराँ-बाई नाम ।

२. (क) स्व० पुरोहित हरिनारायण जी, संतवाणी पत्रिका, वर्ष १ अंक ११ पृ० २४ तथा मीराँ बृहत्पदावली प्रथम भाग, पृ० २ ।
   (ख) स्व० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, सरस्वती, भाग ४० अंक ३ मीराँबाई नाम ।
   (ग) श्री शंभुप्रसाद बहुगुणा, मीरा स्मृति ग्रंथ, पृ० ५२-५३ ।
   (घ) परशुराम चतुर्वेदी, मीराँबाई की पदावली, पृ० २४२-२४३ ।
   (ङ) श्री विश्वेवर नाथ रेऊ, संतवाणी पत्रिका, अंक ११ वर्ष १ पृ० २४ ।

३. (क) पं० के० का० शास्त्री, कवि चरित भाग १ तथा मीराँबाई नाम, बुद्धिप्रकाश अक्टू० दि० १९३९, पृ० ४२० ।
   (ख) श्री ललिता प्रसाद सुकुल, मीरा स्मृति ग्रंथ पृ० ।
   (ग) श्री नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थानी साहित्य, उदयपुर वर्ष १ अंक २ ।
   (घ) श्री ब्रजरत्नदास, मीराँ माधुरी, पृ० ११४-११५ ।
   (ङ) श्री महावीरसिंह गहलोत, मीराँ, जीवनी और काव्य, पृ० १७ ।
   (च) दलाल जेठालाल वाडीलाल, मीराँ स्मृति ग्रंथ, पृ० ११५ ।
   (छ) डॉ० मंजुलाल मजूमदार, संस्कृत भविष्य महापुराण, प्रतिसंग, अध्याय २२, श्लोक४१-४२ ।
   (ज) डॉ० गोकुलभाई पटेल, स्वर भार अने व्यापार पृ० २१६ ।
   (झ) डॉ० भगवानदास तिवारी, मीरा नाम : एक समस्या ? सम्मेलन पत्रिका, भाग ५०, सं० २-३ चैत्र भाद्रपद शक १८८९ ।

४. स्व० पु० ह० ना० पुरोहित— मीराँ बृहत्पदावली, प्रथम भाग पृ० २ (भूमिका)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीराँ शब्द की शुद्धि-अशुद्धि तक भी पहुँची। अल्प मत इस बात के पक्ष में था कि 'मीरा' शब्द शुद्ध है।[1] अनेक विद्वान् 'मीरां' शब्द मानते हैं[2] और ऐसे भी हैं जिनके अनुसार 'मीराँ' शब्द ही शुद्ध है।[3] उपरोक्त विभिन्न मान्यताओं के कारण मीराँ शब्द का प्रयोग भी तीन प्रकार (मीरा, मीरां, मीराँ) से होने लगा। इस तरह केवल 'मीराँ' शब्द को लेकर ही बहुत विचार-विमर्श हुआ। केवल मीराँ शब्द के लिए ही अनेक निबन्ध लिखे गए। इस प्रकार मीराँबाई के नाम को लेकर विद्वानों में तीन श्रेणियां बन गईं। इनमें से दो श्रेणियां ही मुख्य

---

१. (क) डॉ० सत्येन्द्र।
(ख) डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल (स्व०), (ग) नरोत्तमदास जी स्वामी, मीराँ मंदाकिनी।
(घ) डॉ० सावित्री सिन्हा, मध्यकालीन हिन्दी कवियित्रियां पृ० १०५-१५८।
(ङ) भुवनेश्वर मिश्र माधव, मीराँ की प्रेम साधना।
(च) मीरा स्मृति ग्रंथ-— बंगीय हिन्दी परिषद् कलकत्ता।

२. (क) हरिसिद्ध भाई द्विवेटिया, मीराँबाई ना भजनो :
(ख) मुंशी देवीप्रसाद, मीराँबाई का जीवन चरित्र।
(ग) तनसुखराम मनसुखराम त्रिपाठी, बृहतकाव्य दोहन पृ० ७।
(घ) प्रो० मुरलीधर श्री वास्तव, मीराँ की प्रेम साधना।
(ङ) इच्छाराम सूर्यराम देसाई, वृहत्काव्य दोहन पृ० ७।
(च) डॉ० भगवानदीन तिवारी— मीराँ नाम ? एक ससस्या ? सम्मेलन पत्रिका, भाग ५० संख्या २-३ चेत्र भाद्रपद शक १८८६।

३. (क) डॉ० मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी भाषा और साहित्य।
(ख) डॉ० श्री कृष्णलाल मीराँबाई।
(ग) श्री परशुराम चतुर्वेदी, मीराँबाई की पदावली, पृ० २४२।
(घ) डॉ० हीरालाल माहेश्वरी, राजस्थानी साहित्य पृ० २६५।
(ङ) श्री ब्रजरत्नदास, मीराँ माधुरी।
(च) श्री स्वामी आनन्द स्वरूप जी, मीराँ सुधा सिन्धु।
(छ) श्री महावीरसिंह गहलोत, मीराँ, जीवनी और काव्य
(ज) श्रीमती पद्मावती शवनम, मीराँ वृहत पद संग्रह तथा मीरां एक अध्ययन।
(झ) श्री रामचन्द्र नारायण ठाकुर, मीराँ प्रेम दिवानी।
(ट) पं० रामलोचन शर्मा कण्टक— मीराँ की प्रेम वाणी।
(ठ) श्रीमती विष्णुकुमारी मंजु— मीराँ पदावली।
(ड) श्री ज्ञानचन्द्र जैन— मीराँ और उनकी प्रेम वाणी।
(ढ) श्री कार्तिकप्रसाद खत्री— मीराँ बाई का जीवन चरित्र

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कही जा सकती हैं—

१. मीराँ शब्द को विदेशी शब्द मानने वाले

२. मीराँ शब्द को भारतीय मानने वाले

इसी तरह—

१. मीराँ शब्द को नाम मानने वाले

२. मीराँ शब्द को उपाधि मानने वाले

सर्व प्रथम स्व० डा० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल ने मीराँ नाम के प्रश्न को उठाया। उनके अनुसर यह फारसी के 'मीर' शब्द से बना है तथा किसी संत (विशेष कर मुसलमान संत) द्वारा दिया गया उपनाम है। आपने कबीरदास जी के चार दोहों [1] में आए हुए मीरां शब्द का अर्थ परमात्मा अथवा ईश्वर से तथा वाई का 'अर्थ' पत्नी से लगा कर, मीराँवाई का अर्थ निकाला— 'ईश्वर की पत्नी'।

---

१. (अ) कबीर चाल्या जाइ था, आगै मिल्या खुदाइ।
मीरां मुझसौं यौ कह्या, किनि फुरमाई गाइ।।
(आ) हज काबै हूवै हूवै गया, केती बार कबीर।
मीराँ मुझमें क्या ख़ता, मुखाँ न बोलै पीर।।
(इ) सुर नर मुनिजन, पीर, अवलिया, मीरां पैदा कीन्हा रे।
कोटिक भय कहालूं वरनूं, सबनि बयाना दीन्हा रे।।
(ई) कहुँ कबीर न दर करेजे मीरां, राम नाम लगि उतरे तीरा।

डॉ० भगवानदास तिवारी की मान्यता है— 'हिन्दी साहित्य के इतिहास में सबसे पहले कबीर की तीन साखियों में मीरां शब्द का उल्लेख पाया जाता है—
चोहरे च्यंतामणि चढ़ी, हाड़ी भारत हाथि।
मींरां मुझसूं मिहिर करि, इव मिलौं न काहू साथि।।१।।
कबीर चाल्या जाइ था, आगें मिल्या खुदाइ।
मीरां मुझ सौं यौं कह्या, किनि फुरमाई गाइ।।२।
हज काबै हूवै हूवै गया, केती बार कबीर।
मीरां मुझ में क्या खता, मुखां न बोलै पीर।।३।।
—मीरां नाम : एक समस्या ? सम्मेलन पत्रिका पृ० १८७, भाग ५० सं० २-३ चेत्र भाद्रपद शक १८८६।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इसी आधार पर डा० बड़थ्वाल ने मीराँ को निराकारवाद की पोषिका सिद्ध करने का प्रयास किया। उनके विचार से मीराँ ईश्वरवादी शब्द का पर्याय तथा संतों द्वारा दिया गया उपनाम था। इसी धारणा को लेकर, उन्होंने मीराँबाई का अर्थ ईश्वर की पत्नी लगाया और मीराँ को कबीर तथा रैदास से प्रभावित माना।

श्री विश्वेवर नाथ रेऊ ने भी डा० बड़थ्वाल के स्वर में स्वर मिला कर कहा कि मीराँ शब्द संस्कृत का नहीं है।[१]

गुजराती साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान श्री केशवराम काशीराम शास्त्री ने भी इस (मीराँ) शब्द पर विचार किया और इसके मूल रूप' की संस्कृत के मिहिर' शब्द से संभावना व्यक्त की।[२]

राजस्थानी साहित्य के विद्वान श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने प्राकृत तथा अपभ्रंश के व्याकरण के आधार पर, मीराँ का मूल रूप बीरां' माना।

मीराँबाई पर कार्य करते हुए, जीवन के अनेक वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् स्व० हरिनारायण जी पुरोहित इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अजमेर शरीफ के सिद्ध मीराशाह की मनौती से उत्पन्न होने के कारण, उनका नाम

---

१. प्रसिद्ध इतिहासवेता श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ का लिखना है कि— "नागौर में मुसलमानों का अड्डा होने व मेड़ते के, उसके निकट रहने से, अथवा अन्य कारणों से उनका प्रभाव राजपूतों पर पड़ा होगा। मीरां शब्द फारसी में मीर का बहुवचन हैं और शहजादों के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

—संतवाणी-पत्रिका, अंक ११, पृ० २४, वर्ष १।

२. के० का० शास्त्री के अनुसार— मिहिर— सूर्य से मिहिरा, मिइरा और फिर मिरा बना। मीरां शब्द का स्त्रीवाची 'आं' नामों के साथ गुजरात में अत्यधिक प्रचलित है। रूपां, धनां, तेजां, शोभां, लीतां, जीपां आदि ऐसे ही शब्द हैं। इसी प्रसंग में वे आगे लिखते हैं— देशी मिरिया झोंपड़ी नाम के लिये प्रयुक्त हुआ होगा। देशी मइहर गांव का अगुआ मइहर, मीअर, मीरा मीरां-गांव के अगुआ राजा की पुत्री मीरा हुई—

—मीरांबाई नाम - बुद्धिप्रकाश - अक्ट० दिस० १६३६, पृ० ४२०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीराँ रखा गया।[1]

श्री ललिता प्रसाद सुकुल ने 'मीराँ' की उत्पति के लिए मेड़ता (शहर) शब्द की व्याख्या को महत्व देते हुए मीर से जलाशय का अर्थ ग्रहण किया और इसी जलाशय के प्रतीक के रूप में, (मीराँ के दादा) राव दूदा जी द्वारा अपनी पौत्री का मीरा नाम रखना सिद्ध किया है।[2]

श्री ब्रजरत्नदास मीर या मीरा शब्द को संस्कृत का मानते हैं और इसकी व्युत्पति मि+हरा=मीरा बतलाते हैं।[3]

श्री परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार 'मीराँ' शब्द का मूल रूप 'मीर' ही है।

---

१. अरबी भाषा के अदारी केवल रूप का बना। अम्र से फईल के वजन पर अमीर बना। अमीर का संकुचित रूप मीर हुआ मीर का बहुवचन और प्रतिष्ठा द्योतक मीरां शब्द बना।

—पु० ह० ना० (स्व०)

२. मीर+ता=मीरता। मीर शब्द का अर्थ संस्कृते कोष के अनुसार जलराशि, समुद्र, किसी पर्वत का कोई भाग, सीमा और पेय विशेष और एकाक्षर कोष के अनुसार का शब्द लक्ष्मी शब्द का वाचक है।

—ललिताप्रसाद सुकुल

३. "फारसी के कोषों में मीर शब्द अमीर का मुखफ्फफ अर्थात छोटा रूप लिया गया है और अधीर का अर्थ सदौर है। मीर का बहुवचन मीरान् या मीरां होता है। इससे अनेक शब्द बनते हैं, जैसे— मीरक=छोटा मीर, मीरजाद या मीरजा=मीर का वंशज, मीर मजलिस = सभापति आखोर = अस्तवल का दरोगा आदि। मुसलमानों में यह प्रमुख संपदों का अल्ल भी होता है। मुगल दरबार से भीर मीरान् मीरां का सरदार पदवी दी जाती थी और सम्मान के लिये एक मनुष्य को 'मीरान् जी' कह कर सम्बोधित किया जाता था।'

—मीरां माधुरी (भूमिका) पृ० ११२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्री शंभुप्रसाद बहुगुणा की सूचना के अनुसार मीर शब्द अरबी फारसी का भी है।[1]

डा० गोकुल भाई पटेल ने गाथा सप्तमी का आधार लेकर मदिरा से महरा और मइरा से मीरा शब्द की उत्पति मानी है।[2]

डॉ० भगवानदास तिवारी के अनुसार, "जहां तक मीरा शब्द की व्युत्पति का सम्बन्ध है, मीराँ शब्द संस्कृत के मीर शब्द से उद्धृत माना जा सकता है और उसमें मीराँ+अ=मोराँ नाम बन सकता है, किन्तु राजस्थान के क्षत्रिय कुल में प्रयुक्त मीराँ शब्द फारसी के मीर शब्द से व्युत्पन्न नहीं माना जा सकता।"[3]

दलाल जेठालाल वाडीलाल के अनुसार, मीराँ जन्म के समय, एक अलौकिक प्रकाश बिम्ब दिखाई पड़ा था, इसी कारण पुत्री का नाम मही+हरा=अर्थात् मीरा रखा गया।[4]

---

१. 'मइहर शब्द का अर्थ मिहिर, मेहर, दयावाला, दयालु भी पदवि है किन्तु वह जन्मभूमि, पीहर, पितृगृह का द्योतक है। उदाहरणार्थ— बाबूस मीरा मइहर छूटी जाय। मातृगृह=माइहर, महिअर, महिअर फ्रान्सीसी भाषा में मिलने वाला समुद्रवाची मेरला मेरमेडिट्रान्ने भूमध्य सागर शब्द इसी अर्थ में संस्कृत शब्द महापर्व विद्यमान है, जिसका रूप गुजराती भाषा के कवि भालण (संवत् १४६०-१५७०) की कादम्बरी में मिलता है— मिहरामण अति कोडी।........मुझे दिखाई देता है कि मीरां शब्द के नामार्थ में मिहिर सूर्य से अधिक ठीक है। सूर्योदय के पर्वत को बागबिल में मेरा से कहा गया है। यही हमारा सुमेरु है। मिहिर कुल नाम भी है और सूर्य वंश का द्योतक भी सूर्यकुल से मीरां का लम्बन्ध था ही।

—मीरा स्मृति ग्रंथ, पृ० ५३-५४

२. स्वर भार अने व्यापार पृ० २१६

३. सम्मेलन पत्रिका, पृ० १६२-१६३ (भाग ५०, सं० २-३, चेत्र भाद्रपद शक १८८६)।

४. 'प्रेम लक्षणा भक्ति थी वंश कीधां करतार।
थनधन मीरांबाई ने गिरधारी शूं प्यार।।'

मीरां के जन्म के समय अलौकिक प्रकाश का बिम्ब दिखलाई पड़ा था, जिससे कुमारी का नाम महो+इरा अर्थात मीरा रखा गया। मही का अर्थ पृथ्वी और इरा का अर्थ तेज या प्रकाश हुआ। मीरां ने पृथ्वी पर निर्दोष प्रेम-भक्ति का प्रकाथ फैलाया और अपने पिता रत्नसिंह से प्रगट होने के कारण रत्न के प्रकाश के समान वह उज्जवल तथा निर्मल थी।'

—मीरां माधुरी पृ० ११६ (भूमिका)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुछ विद्वानों ने मीराँ शब्द को अंग्रेजी कोषों में ढूंढने का प्रयास भी किया है।[1]

इस तरह मीराँ नाम को लेकर पर्याप्त विचार किया गया है, किन्तु दृष्टिकोणों को छोड़, अधिकांश में भारतीय दृष्टि का अभाव ही है। 'मीर' शब्द के कारण अधिकाँश विद्वानों की दृष्टि अरबी और फारसी भाषाओं पर लगी रही। कुछ विद्वानों ने अवश्य ही भारतीय दृष्टिकोण से इस शब्द पर विचार किया। कुछ विद्वानों ने इस नाम को लेकर नवीन कल्पनाएं भी कीं। इस तरह यह शब्द विवादास्पद बनता गया।

मीराँबाई द्वारा अपने प्रति अथवा किसी समसामयिक भक्त अथवा साहित्यकार द्वारा मीराँ के प्रति पूर्ण और प्रामाणिक उल्लेख न करने के कारण भी यह नाम (मीराँ) एक समस्या बन गया।

लेखक की मान्यता—

वस्तुतः मीराँ शब्द पूर्ण भारतीय शब्द है, जिसकी व्युत्पति संस्कृत भाषा से हुई है। यह शब्द भारतीय संस्कृति और वाङ्गमय में इतना प्रसिद्ध और घुला-मिला है कि आज हम इसे चाह कर भी भारतीय संस्कृति और और वाङ्गमय से अलग नहीं कर सकते। मीराँ शब्द संस्कृत का है जिसका तात्पर्य है— लक्ष्मी। लक्ष्मी के रूप में यह शब्द भारत में अत्यन्त प्रचलित रहा है तथा आज भी है किन्तु मीराँ के रूप में नया लग रहा है।

प्रस्तुत है मीराँ शब्द की व्युत्पति प्रक्रिया—

मीर— पुं० (मिन्वति प्रक्षिपन्ति नद्या जलान्यत्रेति)

मिज्+"अुसि चिमित्रा दीर्घश्श्च।" उण ०२।

---

१. अंग्रेजी के कोषों को देखने से ज्ञात होता है कि एंग्लो-सेक्शन शब्द मेअर (एम०, ई०, आर० ई०) का अर्थ झील या ताल है। जर्मन तथा डच भाषाओं के 'मेर' (एम० ई० ई० आर०), लेटिन के मेअर तथा फ्रेंच के 'मेर' (एम० ई० आर०) या मेअर समानार्थी है। इन सबका अर्थ समुद्र है। इन कोषों में यह टिप्पणी भी है कि यह शब्द संस्कृत मरु (रेगिस्तान) या म्रि (मरना) शब्दों से व्युत्पन्न है और इसी से मेराइन (समुद्री) तथा माशे (दलदल) शब्द बने हैं।"

श्री ब्रजरत्नदास, मीरां माधुरी पृ० ११३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२५।इति क्रन् दीर्घत्वश्च । समुद्रः । इत्युणादि कोषः ।

पर्ब्बतैक देशः । सीमा । पानीयम् । इति संक्षिप्रसारोणादिवृतिः ।।

मित्र् धातु, उणादि प्रत्यय 'र' मिय के उकार को दीर्घ मीर कर देता है । शब्द कल्पद्रुम में इसके समुद्र, पर्वत का एक भाग, सीमा, जल आदि अर्थ दिये हैं ।

मीर शब्द मित्र् धातु से बना है । इणादि प्रत्यय 'र' लगा है । 'र' प्रत्यय के जुड़ने से (लगने से) 'मि' धातु दीर्घ हो गई, जिसका अर्थ हुआ— जहां नदियां अपना जल डालती हैं, वह मीर है । इसके दूसरे अर्थ, पर्वत का एक भाग, सीमा और जल भी दिये गए हैं ।

मीर से उत्पन्न होने वाले को 'मीरज' कहेंगे । इसमें मीर+अन् धातु में 'ड' प्रत्यय है और यह 'ड' प्रत्यय सप्तमी उप-पद रहने पर लगता है अर्थात् मीरे जायते इति 'मीरज' (समुद्र में उत्पन्न होने वाला) । इसका स्त्रीलिंग शब्द 'मीरजा' होगा और इसके अकार का लोप हो जाने पर मीरा शब्द बनेगा । इस प्रकार मीरा का अर्थ होगा— समुद्र से उत्पन्न होने वाली अर्थात् लक्ष्मी ।

इस प्रकार के लोप होने का संस्कृत में एक सूत्र दिया गया है— "क ग च ज त द पयवाम प्रायोलोपाः ।" इस सूत्र के आधार पर 'मीरज' से जकार का लोप होते ही 'मीरज' 'मीर' बन गया तथा 'मीरज के स्त्रीलिंग 'मीरजा' से अकार लोप होते ही मीरा बन गया ।

इस तरह मीराँ शब्द शुद्ध संस्कृत का है । संस्कृत का यही शब्द 'मीरा' राजस्थानी में 'मीरां' अथवा मीराँ बन गया । संस्कृत के अनुसार 'मीरा' (अनुस्वार रहित) शब्द ही शुद्ध कहा जायेगा, किन्तु हिन्दी तथा राजस्थानी भाषाओं में 'मीराँ' अथवा 'मीरां' शुद्ध माना जायेगा । राजस्थानी भाषा के अधिकांश विद्वान 'मीराँ' को ही शुद्ध मानते हैं ।[1]

यह कहना सत्य नहीं है कि मीराँ शब्द भारतीय न होकर विदेशी है और यह फारसी अथवा अरबी से आया है और न ही 'मीर साहब' की मनौती वाली किंवदन्ती ही सत्य है । यह कहना भी उचित नहीं है कि मीराँ उपनाम अथवा उपाधि थी । मेड़ता के जलाशय की कल्पना भी सुन्दर ही कही जा सकती है, सत्य नहीं ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठालोचन की दृष्टि से–

प्रस्तुत पदावली को पाठालोचन के सिद्धान्तों के आधार पर सम्पादित करने का प्रयास किया गया है। पाठालोचन का सम्बंध इसी प्रकार के सम्पादन[1] से अधिक होने के कारण, मैंने पाठालोचन के सिद्धान्तों को आधार बनाया है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर कवि के मूलपाठ का अनुसन्धान ही सामान्यतः पाठालोचन कहा जाता है।[2] पाठालोचक के समक्ष एक ही कवि के काव्य की अनेक प्रतियाँ होती हैं, जिनमें से कुछ विभिन्न स्थानों, समय तथा ग्रन्थों में होती हैं, तो कुछ एक ही स्थान, समय एवं ग्रन्थ से। पाठालोचक इन ग्रन्थों के माध्यम से कवि के मूलपाठ तक पहुँचने का प्रयास करता है और इसके लिए उसे मूलपाठ अनुसंधान सम्बंधी सिद्धान्तों तथा मूलपाठ अनुसंधान सम्बंधी सिद्धान्तों तथा मूलपाठ अनुसंधान सम्बंधी प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ता है। यद्यपि यह सत्य है कि प्रत्येक विषय, कवि अथवा काव्यकृति (हस्तलिखित ग्रन्थों सहित) के मूलपाठ तक पहुँचने के लिए अध्ययनकर्ता को अन्ततः अपनी बुद्धि एवं विवेक से ही कार्य करना होता है[3] क्योंकि प्रत्येक ग्रन्थ की पाठ-समस्याएं भिन्न-भिन्न होती हैं, किन्तु कुछ सामान्य सिद्धान्त अवश्य हैं जिन्हें सभी ग्रन्थों के पाठालोचन में लागू किया जा सकता है। मैंने अपने सम्पादन में इन्हीं सामान्य सिद्धान्तों का उपयोग किया है।

पाठालोचन के सामान्य सिद्धान्त

पाठचयन का एक सामान्य सिद्धान्त यह है कि सभी प्रतियों में समानरूप से प्राप्त होने वाला पाठ किसी समान उद्गम की ओर संकेत करता है। संभव है वह समान उद्गम रचयिता का स्वहस्तलेख ही हो।[4]

---

१ पाठालोचन-सिद्धान्त और प्रक्रिया-डॉ० मिथिलेश कान्ति एवं डॉ० विमलेश कान्ति, पृ० १

२ पाठालोचन सिद्धान्त और प्रक्रिया-डॉ०मिथिलेश कान्ति एवं डॉ०विमलेश कान्ति,पृ० ६

३ Postgate; Encyclopeadia Britanica, (Texual criticism)

४ Hall, Companion to classical taxts.

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

—पाठालोचक अपने कार्य को सुचारुरूप से सम्पन्न करने के लिए अनुपलब्ध प्रतियों का भी अनुमान करके चलता है।

—पाठालोचक यह मान कर चलता है कि जो भी रचना प्रतिलिपि के रूप में होती हुई आज हमें प्राप्त होगी उसमें अवश्यमेव अशुद्धियां आ जाएंगी और यह प्रतिलिपि मूल से जितनी दूर होगी उतनी ही उसमें अधिक अशुद्धियां भी होंगी।

—पाठालोचन का यह सामान्य सिद्धान्त बन गया है कि जितना ही कठिनतर, अप्रचलित तथा संक्षिप्त पाठ मिले उसे उतना ही प्राचीन तथा प्रामाणिक माना जाना चाहिए।

—पाठचयन करते समय हम एक निर्धारित विधि से क्रमशः प्राप्त पाठ से अप्राप्त पाठ की ओर बढ़ते हैं और इसी क्रम से हम धीरे-धीरे रचयिता के मूलपाठ तक पहुँचते हैं।

—उन समस्त पाठों को विकृत-पाठ की संज्ञा दी जायगी, जिनके मूल लेखक द्वारा लिखे होने की किसी प्रकार की कल्पना नहीं की जा सकती और जो लेखक की भाषा - शैली और विचारधारा के पूर्णतया विपरीत पड़ते हैं।

पाठालोचक का उद्देश्य–

पाठालोचक का उद्देश्य प्राचीनतम पाठ प्रस्तुत करना नहीं, वरन् कविकृत पाठ प्रस्तुत करना है और कविकृत पाठ प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक है कि वह कवि की भाषा-शैली, उसकी विचारधारा आदि का सम्यक् अध्ययन करे, यह देखे कि जो पाठ हमें मिल रहा है वह लेखककृत हो भी सकता है कि नहीं; कहीं कोई पाठ की विचारधारा का विरोध तो नहीं कर रहा है, और वह प्रक्षिप्त तो नहीं है, कहीं अनावश्यक पुनरावृति तो नहीं हो रही है, और कहीं बीच में लेखक द्वारा अपनाई गई छंद, गति आदि की अवहेलना तो नहीं होती है।

—पाठालोचन का उद्देश्य किसी रचना के मूलपाठ का पुनर्निर्माण करना होता है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

एक पाठालोचक की तरह मेरा भी एक मात्र ध्येय यही रहा है कि मैं मीराँबाई की मूल रचना को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकूँ। मेरा यह भी उद्देश्य रहा है कि मीराँ के मूल पदों का अनुसंधान कर, उन्हें अधिक से अधिक सुन्दर और मीराँबाई द्वारा अभीष्ट रूप में प्रस्तुत कर सकूँ। इस उद्देश्य की पूर्ति-हेतु मैंने एक ओर केवल लिखित परम्परा से प्राप्त मीराँ के पदों को संगृहीत किया तो दूसरी ओर प्राचीनतम हस्तलिखित ग्रन्थों में प्राप्त पदों से कविकृत पाठ को प्राप्त करने के लिए, प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के सभी पदों का संकलन किया। संकलित पदों के माध्यम से कवि के मूल पाठ तक पहुंचने के लिए पाठालोचन के सिद्धान्तों का सहारा लिया। यद्यपि पाठालोचन का आधार वह समस्त सामग्री मानी जाती है जिसमें कविकृत पाठ मिलने की संभावना रहती है अर्थात् लिखित एवं मौखिक दोनों परम्पराओं से प्राप्त सामग्री होती है। किन्तु, मैंने इस सम्पादन कार्य तक केवल हस्तलिखित-परम्परा से प्राप्त सामग्री को ही आधार बनाया है।

इसी प्रकार पाठालोचन का प्रमुख सिद्धान्त है कि प्राप्त अनेक हस्तलिखित प्रतियों से किसी एक को आदर्श प्रति के रूप में स्वीकार कर, कवि के मूल पाठ तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है, किन्तु चूंकि मीराँबाई के समस्त पदों का संकलन कार्य अभी सम्पूर्ण नहीं हुआ है तथा मेरे पास मीराँ वृहत्पदावली के अगले भाग की सामग्री एवं योजना है अतः अद्यावधि प्राप्त किसी हस्तलिखित प्रति को आदर्श प्रति मान कर, पाठ-अनुसंधान की प्रक्रिया इस पुस्तक में नहीं रखी गई है।

इसके साथ ही चूंकि पाठालोचन-पद्धति का उद्भव एवं विकास योरोप में प्राचीन ग्रन्थों के सम्पादन से हुआ है और मेरी दृष्टि में पाठालोचन के उन सभी सिद्धान्तों को भारतीय ग्रंथों पर पूर्णतया लागू नहीं किया जा सकता। अतः मैंने बहुत सावधानी से पाठाचोलन के सिद्धान्तों का वहीं आधार बनाया है जहां इनकी आवश्यकता समझी गई है।

पाठालोचन की शास्त्रीय तथा वर्तमान में मान्य विधि के अनुसार मैंने भी अपने इस अनुसंधान को निम्नलिखित चार भागों में बांटा है—

१. पद-संग्रह और वंश-वृक्ष निर्माण (Heuristics)
२. पाठनिर्माण Recensio

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३. पाठसुधार Emendatio

४. पाठविवेचन Higher criticism

सर्व प्रथम मैंने प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त मीराँबाई के सभी पदों का संग्रह किया। तत्पश्चात् अब तक प्रकाशित मीराँ के पदों का संकलन किया। सामग्री-संग्रह के पश्चात् उसकी अंतरंग एवं बहिरंग परीक्षा की और सामग्री की प्रामाणिकता तथा प्राचीनता के आधार पर उसका अपेक्षित महत्त्व स्थिर किया। अंत में प्रतियों के पाठों का मिलान कर, प्रतियों के मुख्य तथा गौण सम्बंधों को निश्चित किया।

पाठालोचन के प्रमुख सिद्धान्त के अनुसार मैंने विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त मीराँ के पदों के पाठों में (प्राचोनतम पाठ के इतिहास में पैठ कर तथा कवि-पाठ का अनुमान लगा कर) उन पदों को अधिकाधिक सुन्दर एवं प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करने की दृष्टि से आवश्यक सुधार किए हैं।

मैंने मीराँबाई के पदों के मूल स्रोतों का अध्ययन करते हुए Higher Criticism को भी अपने सम्पादन का आधार बनाया है। मीराँ की भाषा, विचारधारा तथा पदों एवं इतर ग्रंथों में प्राप्त विचार शृंखला को सम्पादन में विशेष स्थान दिया है, किन्तु यह क्रम अभी पूर्ण नहीं हुआ है।

प्रस्तुत सम्पादन में सम्पादक का ध्येय यही रहा है कि मीराँबाई के पदों के मूल पाठ का अनुसंधान किया जा सके न कि प्राचीनतम पाठ का। अतः सम्पादक को अन्त:साक्ष्य[1] तथा बाह्यसाक्ष्य[2] को महत्त्व देना पड़ा है। मीरां की

---

१. Internal Probability-अन्तःसाक्ष्य वह साक्ष्य है जो पाठ-विज्ञानी को लेखक की कृति के अध्ययन से प्राप्त होता है। पाठालोचन-सिद्धान्त और प्रक्रिया-डॉ० मिथिलेश कान्ति एव डॉ० विमलेश कान्ति पृ० ५०

२. Documental Probability-

"किसी भी पाठ-सामग्री के सम्बन्ध में यह देखना कि उसके लिपिकाल, लिपि-प्रयोजन आदि के सम्बंध में उसमें जो कुछ कहा या लिखा हुआ है, वह कहां तक विश्वसनीय है, अथवा यदि उसमें इस प्रकार का उल्लेख नहीं है, फिर भी इन विषयों पर उसके सम्बंध में कोई प्रसिद्धि रही है, तो वह कहां तक मान्य है यह प्रति की बहिरंग परीक्षा कहलाती है।"

डॉ० [illegible] गुप्त: अनुसंधान की प्रक्रिया (पाठानुसंधान) पृ० १२३

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

समस्त विशेषताओं का ध्यान रखते हुए उसके प्रयोग एवं सन्दर्भों को भी जानना पड़ा। इस भाग में मैंने केवल संक्षिप्त संशोधन ही किए हैं।

—प्रस्तुत मीराँबृहत्पदावली भाग २ विद्वत्समाज को भेंट करने में जिन सज्जनों की प्रेरणा, सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ है उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। इस कार्य के सम्पूर्ण होने में हितैषियों की प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा सहयोग एवं गुरुजनों की शुभाशीष व शुभकामना सदा साथ रही है। यदि इन महानुभावों का सहयोग न मिल पाता तो संभव है, यह अनुष्ठान पूर्ण ही न होता।

सर्व प्रथम मैं श्रद्धेय डॉ० सत्येन्द्र (भू० पू० विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं वर्तमान निदेशक, राज० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर के प्रति नतमस्तक हूं, जिन्होंने इस पुनीत कार्य की ओर मुझे प्रेरित किया और अन्त तक पूर्ण निर्देशन तथा प्रोत्साहन देते रहे। इस प्रकाशन के समाचार मात्र से जो हर्ष डॉ. साहब को हुआ, वह इस बात का परिचायक है कि आपको इस कार्य से संतोष अवश्य हुआ। आपकी सद्प्रेरणा, सद्परामर्श एवं सुयोग्य मार्गदर्शन न होता तो संभव है यह कार्य न हो पोता। इसके साथ ही मेरे अनुरोध पर आपने अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी इस पुस्तक की महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना (समीक्षात्मक अध्ययन सहित) लिख कर मुझे प्रोत्साहित किया है, इसके लिए मैं विनम्र शब्दों में आपका आभार प्रकट् करता हूं।

मैं आदरणीय डॉ. फतेहसिंहजी (भू पू. निदेशक प्राच्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) का किन शब्दों में आभार प्रदर्शन करूँ। आप मेरे श्रद्धाकेन्द्र हैं। आपने ही इस ग्रन्थ का, हिन्दी-जगत् के लिए महत्त्व समझ कर, इसे प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित करने का निर्णय लिया। आप जैसे मनीषी के सत्संग से जो ज्ञान और निर्देश प्राप्त हुआ, उसके लिए मैं आपका ऋणी हूं।

इसी प्रकार सम्मानीय डॉ. दशरथजी शर्मा भू. पू. इतिहास विभागाध्यक्ष जो.वि. वि. एवं वर्तमान—(निदेशक, राजस्थान प्राच्च विद्याप्रतिष्ठान, जोधपुर) का कृतज्ञ हूं कि आपने मेरे शोध-कार्य के प्रति आशा और विश्वास रख कर मुझे सदा प्रोत्साहित किया। आपने ही मुझे राजस्थान इतिहास कांग्रेस के प्रथम (जोधपुर) अधिवेशन में 'मीराँबाई के जीवनवृत पर पुनर्विचार'-निबन्ध लिखने तथा निबन्धपाठ करने को प्रेरित किया था। आपने ही मुझे यह सिखाया कि सत्य का अन्वेषण बड़ी ईमानदारी से होना चाहिए। सच तो यह है कि आप ही मेरे नवजीवन के निर्माता हैं। ऐसे तपस्वी साधक को मैं नमन करता हूं।

मैं विशेष रूप से (राव साहब मसूदा) श्री नारायणसिंह तथा डॉ० करणीसिंहजी (भू० पू० महाराजा बीकानेर) का उनकी मीरांभक्ति एवं राज–

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्थानी भाषा प्रेम के साथ-साथ मेरे प्रति स्नेह सहयोग एवं आशीर्वाद के प्रति आभार स्वीकार करता हूं।

डॉ. नारायणसिंह भाटी (निदेशक, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी जोधपुर) ने प्रारम्भ से ही मेरे इस कार्य में विशेष रुचि लेकर सहयोग एवं सुझाव दिए। आपने राजस्थानी शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थों को देखने उनकी प्रतिलिपि करने की जो सुविधा दी तथा संस्थान स्थित दुलर्भ एव मूल्य-वान मीराँबाई के हस्तचित्र की 'फोटोकॉपी' करने की अनुमति प्रदान की, वह आपके अपनेपन एव विद्यानुराग का परिचायक है। अपने ही बड़े परिश्रम एव लगन से लगभग १५,००० ग्रन्थों एवं सैकड़ों मूल्यवान हस्तचित्रों को संगृहीत कर इस शोधसंस्थान का स्थायी महत्व स्थापित कर दिया है।

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के सहयोग को विस्मृत कर देना, वास्तविकता छिपाना होगा। राजस्थानी भाषा और साहित्य के इस प्रसिद्ध विद्वान् ने जिस आत्मीयता, परिश्रम एवं लगन से इस काय में आद्योपांत सहायता की, उसे शब्दों में व्यक्त करना, इस मौनसाधक की भावनाओं को ठेस पहुंचाना होगा, अतः हृदय से अनुगृहीत हूँ।

राजस्थान प्राच्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के सर्व श्री पुरुषोतमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी तथा विशेष रूप से श्री गिरधरवल्लभ दाधीच से प्राप्त सहयोग को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

इसी प्रकार राज० प्रा० विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, जयपुर तथा बीकानेर शाखाओं, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी. बीकानेर, संत साहित्य संगम, बीकानेर आदि संस्थाओं के प्रबन्धकों, संचालकों एवं कर्मचारियों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

मेरे स्वजनों में श्रद्धेय मामा-ले० कर्नल धोंकलसिंहजी एवं उनके अनुज कमान्डेन्ट श्री सवाईसिंह मेरे अग्रज श्री सायरसिंह तथा पितृ तुल्य श्वसुर श्री ओंकारसिंहजी आइ० ए० एस० का मुझे इस योग्य बनाने में बहुत योग रहा है अतः उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रदर्शित करता हूं।

मेरा प्रथम प्रयत्न विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत है। अनेक अभावों एवं त्रुटियों का रहना संभव है। अतः समस्त भूलों तथा त्रुटियों के लिए मैं क्षमा-प्रार्थी हूं। मेरे इस तुच्छ प्रयास से हिन्दी साहित्य-भण्डार की श्रीवृद्धि हो सकी, तो मैं अपने कार्य को सफल समझूंगा।

कल्याणसिंह शेखावत
जोधपुर, १९७२ सम्पादक

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रस्तावना

(समीक्षात्मक अध्ययन सहित)

ले० सत्येन्द्र

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के प्रकाशन में 'मीराँबाई बृहत्पदावली' में मीराँ के पदों के संग्रह का यह दूसरा खंड एक विचित्र संयोग का परिणाम है, क्योंकि डॉ० कल्याणसिंह शेखावत को राजस्थान विश्वविद्यालय से मीराँबाई पर पी-एच० डी० हेतु अनुसंधान करने के लिए विषय दिया गया था, उसके लिए इन्होंने जो कार्य करना आरंभ किया तो संयोग से इनको ऐसे पद मिलते चले गये जो अब तक प्रकाश में नहीं आये थे। किन्तु, इस संयोग के पीछे कई कारण भी विद्यमान थे; जिनसे यह संयोग सिद्ध हुआ।

सबसे बड़ा कारण तो यह था कि डॉ० कल्याणसिंह शेखावत का मीराँबाई की वंश-परंपरा से संबंध बैठता है। तभी जब जयपुर में "मीराँबाई शोध संस्थान' या परिषद् की स्थापना का विचार उठा तो इन्होंने बड़ी कर्मठता दिखायी थी। मसूदा के राव साहब श्री नारायणसिंहजी को भी इन्होंने प्रवृत कराया। एक बड़ा आयोजन करने का भी निर्णय उस समय लिया गया था। ये उस समय ही हिन्दी एम० ए० की उपाधि प्राप्त करके किसी विषय पर अनुसंधान के लिए व्यग्र थे। 'मीराँबाई' पर अनुसंधान करने की बात तभी उठी।

प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को मीराँबाई प्रिय है। ब्रजवासी को तो और भी अधिक प्रिय है। पर मीराँबाई अपने क्षेत्रों की सीमाओं को बहुत पहले ही लाँघ चुकी हैं। वे राजस्थान की थीं, वे हिन्दी की थीं-पर वे गुजरात की भी थीं। इन तीनों क्षेत्रों से उनका निजी संपर्क रहा था। राजस्थान में पैदा हुईं, यहीं के एक घराने में विवाहित होकर गयीं-पर राजघराना छोड़कर जब कृष्णयोगिनी मीराँ साधु-संतों में विचरण करने लगीं तो वे वृन्दावन भी गयीं, और गुजरात भी गयीं। इस कारण राजस्थान, उत्तर प्रदेश और गुजरात उन्हें अपना मानते हैं। और यह

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विषय अब भी विवादास्पद ही है कि उन्होंने अपने पद राजस्थानी में लिखे, व्रज में लिखे या गुजराती में लिखे। किन्तु, बंगाल से ऐसा संबंध न होने पर भी मीराँ बंगाल में भी अत्यन्त प्रिय है। मैं जिन दिनों कलकत्ते में कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष था तो ऐसी कई देवियों से परिचय हुआ जो मीराँ के गीत बड़ी भक्ति से गाती थीं; पर वहीं भारतीय संस्कृति के निष्णात विद्वान डाँ० कालीदास नाग से यह भी विदित हुआ कि बंगाल में एक ऐसी भी देवी है जो मीराँ का अवतार ही मानी जाती है। उन्होंने कहीं मीराँ के गीत पढ़े-सीखे नहीं नहीं पर मीराँ के गीत उनके कण्ठ से बिना प्रयास उद्‌गरित होते हैं। स्पष्ट है कि मीरां तो लोक कवयित्री हो गयी हैं, और भारत के घर-घर में संतों की वाणी के साथ-साथ पहुंच गयी हैं।

मेरे कलकत्ते में पहुचने से पूर्व मीरां को लेकर कलकत्ते में एक आंदोलन-सा हो चुका था। बात यह थी कि प्रो. ललिताप्रसाद सुकुल (अब स्वर्गीय) ने 'मीरां स्मृति ग्रंथ' में मीरां के पदों का संग्रह प्रकाशित किया। डाकोर वाली प्रति को उन्होंने प्रमाण माना और डाकोर प्रति की भाषा को ही मीराँ के पदों की भाषा। अब इस पर वावैला मचा। इस बावैले ने मीरां के पदों की भाषा की समस्या और उनके प्रामाणिक पदों की समस्या को उभार दिया। हिन्दी-जगत् में इस सबंध में उस समय बहुत चर्चा हुई।

इससे मीरां के पदों के संबंध में ही प्रश्न नहीं खड़ा हुआ, सभी संतों के संबंध में ही उठ खड़ा हुआ। मेरे मन में यह विचार उठा कि इन संतों में से प्रमुख की प्रामाणिक रचना और प्रामाणिक पाठ अर्थात् प्रामाणिक भाषा-रूप का निर्धारण शोध-प्रयत्नों से किया जाना चाहिये। तभी एक शोध-छात्र को 'कबीर की भाषा के प्रामाणिक रूप पर अनुसंधान का कार्य मैंने सौंपा। मैं दो वर्ष बाद आगरा आ गया, तब क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ में मैंने मीराँ के समस्त उपलब्ध पदों के स्रोतों पर कार्य कराने के लिए एक विषय डॉ० विमला गोड़ को दिया। मेरा अभिप्राय यह था कि एक बार मीरां के समस्त पद एक संग्रह में प्रस्तुत कर दिये जायँ, उनके विषयों के अनुसार वर्ग कर दिये जायँ, उनके स्रोतों का अनुसंधान हो ले-तो आगे भाषा विषयक अनुसंधान की एक सोढ़ी प्रस्तुत हो जायगी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बड़े परिश्रम से उस समय के समस्त उपलब्ध पदों का संग्रह विमला ने किया और आवश्यक अनुसंधान किया, पी–एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। पर आगे का काम कौन करे ? कैसे हो ? यह प्रश्न मन में था ही, तभी राजस्थान विश्वविद्यालय ने मुझे बुला लिया और शेखावत को मैंने मीरां का आगे का काम सौंपना चाहा।

अस्तु, शेखावत मीराँ के अनुसंधान में लगे. और नये से नये पद जो अब तक कहीं प्रकाशित नहीं थे, एक प्रकार से पूर्णतः अज्ञात थे, या भिन्न रूप में ज्ञात थे, इन्हें मिलने लगे। इनकी संख्या इतनी अधिक हो गयी कि प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान ने 'मीराँ वृहत्पदावली' को दूसरे भाग के रूप में प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया।

प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान स्व. हरिनारायण पुरोहित जैसे प्रतिष्ठित विद्वान द्वारा सगृहीत मीरां के पदों का एक संग्रह पहले छाप चुका था। इसका नाम रखा था 'मीरां वृहत्पदावली प्रथम भाग।' पुरोहित जी की अनुसंधान - निष्ठा और विद्वता को कौन नहीं जानता ? उन्होंने अपना संग्रह भी बड़े परिश्रम से तैयार किया था, संभवतः उन पदों में से भी कुछ का उससे पूर्व प्रकाशन नहीं हुआ था। यह संग्रह भी एक महान् देन के रूप में सामने आया।[२] इस समय तक १९४४ ई० तक तथा इसके बाद अब तक कितने ही मीराँ के पदों के संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।[३] यह स्वाभाविक ही था कि इस समय (१९७०-७२) लोग यह सोचने लगे हों कि अब और पद मीराँ के नहीं मिलने।

पर डा० शेखावत ने अपने परिश्रम और अनुसंधान–कौशल से इतने नये पद मीराँ के उद्घाटित कर दिये कि उनका भी एक दूसरा भाग बनाकर प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान इस ग्रंथ में प्रकाशित कर रहा है।

जहाँ तक मै समझता हूं मीराँ के पदों की यहीं इति नहीं हो सकती। अनेकों हस्तलेख अभी ऐसे होंगे जिन तक संकलनकर्ता अभी पहुँच नहीं पाये। वस्तुतः मीराँ के पदों के संकलन का कार्य एक महान् कार्य है, और कोई ऐसा संस्थान खड़ा होना चाहिये जो अखिल भारतीय स्तर पर कार्य कर सके।[४]

हस्तलेखों से भी महत्त्वपूर्ण है लोक कण्ठों पर विराजे हुए मीराँ के गीत। मीराँ के ऐसे समस्त गीतों के संकलित हो चुकने पर ही मीराँ की काव्य-संपत्ति

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

और भाव–सम्पति की नाप–जोख हो सकती है और उनकी प्रामाणिकता की यथार्थ कसौटी निर्धारित की जा सकती है।

इस दिशा में डॉ० शेखावत का यह कार्य अभिनंदनीय है। ऐसा कई कारणों से है। पहले तो यह इसीलिए अभिनन्दनीय है कि इतने अछूते पद इस संकलन में हमें मिलते हैं। अभी तक कितने ही संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें कुछ वृहद् संग्रह भी हैं। कुछ में यह दावा भी है कि उन्होंने समस्त उपलब्ध पद तथा नये पद भी दिये हैं। इसके उपरान्त भी इतने अछूते पद डॉ० शेखावत ने यहाँ देकर अभिनन्दनीय कार्य किया है। पर यह भी ध्यान देने योग्य है कि उनका शोध-क्षेत्र केवल राजस्थान ही रहा है यह डॉ० शेखावत के इस विवरण से सिद्ध है कि "इस पदावलो के सभी हस्तलिखित ग्रंथों के प्राप्ति - स्रोत मुख्य रूप से दो हैं। (१) राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं के संग्रह (२) वैयक्तिक रूप से संगृहीत संग्रह।" ये सभी राजस्थान के ही हैं।

दूसरी बात जो हमें आकर्षित करती है, वह उस स्थापना का परिणाम है, जो सम्पादक ने की है। संपादक ने कहा है कि मीरांबाई के पदों की भाषा वही होगी जो उनकी जन्मभूमि मेड़ता में बोली जाती है। संपादक ने पदों की भाषा का रूप 'सम्पादक–पाठ' में वैसा हो रखने का प्रयत्न किया है। मेरी जानकारी में मीरांबाई के पदों के संग्रहकर्ताओं में से किसी का मेड़ता से उतना घनिष्ट सम्बन्ध नहीं रहा जितना इस संग्रह के सम्पादक का रहा है। और अपन शोध के लिए उसने मेड़ता-क्षेत्र का विशेष अनुसंधान भो किया है। इस प्रकार मीरां की जन्म भूमि की भाषा की रंगत वह ग्रहण कर सके हैं. और उसी रंगत में ये पद उन्होंने दिये हैं। यह प्रश्न विवादास्पद हो सकता है कि मीरां के पदों की भाषा मेड़ती वोली की रंगतवाली थी, और यह बात भी सब को मान्य नहीं हो सकेगी, कि मीरां के पदों में जो विशिष्ट रंगत मिलती है वह मेड़ती है, या ये मीरां के पदों को मेड़ती रंगत में प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं। क्योंकि मीरांकालीन मेड़ती राजस्थानी. मीरां की भाषा हो सकती है। पर यह निर्विवादा है कि इस दृष्टि से पदों को प्रस्तुत करने का यह पहला और अभिनंदनीय प्रयास है। प्रयास से मेड़नी की रंगत का रूप इसमें है, जिससे मीरां के पदों का स्वाद कुछ और ही हो गया है। मेड़ती रंगत समझने के लिए यह संग्रह अध्येता के लिए अनिवार्य रहेगा। इस विधि से हम केवल मीरां के पदों के अर्थ में ही

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नहीं किसी सीमा तक उसकी निजी भाषा के रूप में भी दर्शन कर सकेंगे, क्योंकि मीरांकालीन भाषा ही तो आज की मेड़ता में ढली है। मीरां की भाषा से संवन्धित विवाद की नींव बहुत गहरी है, वह ऊपरी तर्कों और युक्तियों से नहीं सुलझाया जा सकता। हाँ, हम लोग अपना-अपना आग्रह प्रकट् करते है। यह आग्रह समस्या को और उलझाता है। पर यह भी सत्य है कि इस प्रकार सभी आग्रह और दुराग्रह उभरकर ऊपर आ जायं तो फिर यथार्थ की खोज का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है। जो मीरां की भाषा मात्र राजस्थानी मानते हैं, उनके ही तर्क के अनुकूल यह मान्यता अधिक बलवती होनी चाहिये कि मीराँ की भाषा मेड़ती थी। जहाँ तक मेरा संवंध है, मेरा निजी मत तो यह है कि कवयित्री मीरां को व्रजभाषा का ज्ञान था। जो लोग यह कहते हैं कि वे वृन्दावन नहीं गयी थीं, तो यह उस कथन का ही खंडन है जो यह कहते हैं कि वे वृन्दावन गयीं थीं। उनकी वृन्दावन-यात्रा से उनके व्रजभाषा - ज्ञान का संबंध जोड़ने वाले तर्क का भी यह खडन हो सकता है। पर व्रजभाषा के ज्ञान के लिए 'व्रजवास' आवश्यक नहीं था, आवश्यक नहीं रहा है। आचार्य भिखारीदास ने जब यह लिखा था कि 'व्रजभाषा हेतु ब्रज बास ही न अनुमानों'-तब उन्होंने एक ऐतिहासिक सत्य तथा तथ्य का ही उल्लेख किया था। राजस्थान और राजस्थान से बाहर के कितने ऐसे कवियों के नाम गिनाये जा सकते हैं, जो कभी ब्रज में नहीं रहे। राजस्थान में व्रजभाषा अपनी भाषा के रूप में प्रचलित थी। राजस्थान में ब्रज-भाषा भारत में अंग्रेजों की तरह विदेशी नहीं थी। फिर भक्ति के क्षेत्र में तो और भी अधिक उदारता थी। कुछ यह परंपरा भी दिखायी पड़ती है कि कृष्ण-काव्य व्रजभाषा में और राम-काव्य अवधी–उन्मुख भाषा में रचा जाय। मीरां भक्त थीं, कृष्ण भक्त थीं, अतः व्रज भाषा में उनके लिए भक्तिगान कोई समस्या नहीं हो सकती थी। फिर वे राजघराने की थी और वे मेवाड़ के महाराणाओं के यहां रहीं। राजघरानों में व्रज का विशेष महत्व था। भक्तों और साधुओं की मंडली जिनसे मीरां घिरी रहती थीं, मीरां को मात्र मेड़ता या मेवाड़ी सीमाओं में ही बांधकर नहीं देखा जा सकता। मीरां की भाषा के सबंध में निराग्रह होकर और दुराग्रह छोड़कर विचार करना होगा और हमें इस प्रकार विचार करने के लिए अभी और सामग्री एकत्र करनी होगी, मीरां के पदों की भी और इतिहास की भी, साहित्य के इतिहास की भी। डॉ० शेखावत का यह प्रयत्न इसलिए अभिनंदनीय है कि उन्होंने जितने भी पद उन्हें अभी तक मिल

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सके हैं, आगे की शोध के लिए तथा मीरां के भक्तों के लिए भी और मीरां के पदों के प्रेमियों के लिए भी, इस संग्रह में दे दिये हैं।

पद्मावती शबनम ने 'मीरां - बृहत्पदसंग्रह' में भाषा–चर्चा, स्थान–भेद इतिहास, भाव-भेद, संप्रदाय भेद आदि के आधार पर की है जिसे यहाँ उद्धृत कर देना समीचीन होगा :—

'राजस्थान में ही मीरां ने जन्म लिया और राजस्थान में ही उनका अधिकांश जीवन व्यतीत हुआ। अतः अधिकांश पदों का शुद्ध राजस्थानी भाषा में पाया जाना ही युक्ति-संगत है। फिर भी पुरानी राजस्थानी और आधुनिक राजस्थानी में प्राप्त पदों की भाषा की शुद्धता पुरानी राजस्थानी के माप पर ही निर्धारित की जा सकती है। ऐसा एक प्रयास मैं कर भी रही हू और आशा रखती हूं कि शीघ्र ही हिन्दी-साहित्य की यह छोटी सी सेवा भी कर सकूंगी।'

इसके बाद वे पद आते हैं जो मिश्रित भाषाओं के अन्तर्गत रखे गए हैं। इनमें से कुछ की भाषा प्रधानतः राजस्थानी होते हुए भी ब्रजभाषा से प्रभावित है। तो अन्य कुछ की भाषा प्रधानतः ब्रजभाषा होते हुए भी राजस्थानी से प्रभावित है। साधु–समागम के कारण भी भाषा का यह सम्मिश्रण सम्भव हो सकता है। अद्यावधि मीरां का ब्रज-क्षेत्र में गमन और निवास भी मान्य है।

तथाकथित मीरां के पदों की एक बड़ी संख्या ब्रज–भाषा में भी प्राप्त है। इनमें से कुछ की भाषा विशुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है। ऐसे कुछ पद साहित्यिक सौन्दर्य का सृजन करने में सूरदास के पदों से भी होड़ लेते हैं। अद्यावधि प्राप्त सामग्री के आधार पर मीरां की वृन्दावन–यात्रा और निवास बहुमान्य होते हुए भी सुनिश्चित इतिहास नहीं अपितु एक अत्यन्त विवादग्रस्त विषय है। इन पदों की साहित्यिकता भी इनकी प्रामाणिकता के विरुद्ध ही गवाही देती है। मीरां को शास्त्रीय अध्ययन का सुअवसर प्राप्त हुआ हो, ऐसा भी कोई निश्चित इंगित प्राप्त सामग्री में नहीं मिलता। प्राप्त पद कवि की रचना न होकर एक स्वतः सिद्ध भक्त के भावातिरेक के सत्यतम चित्र हैं अतः शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा में प्राप्त पदों की प्रामाणिकता विशेष सन्दिग्ध हो जाती है।

गुजरात में भी मीरां के अन्तिम काल में मीरां का द्वारिका गमन और निवास इतिहास सिद्ध है। अद्यावधि मान्य इतिहास, प्राप्त जनश्रुतियों और पदाभिव्यक्तियों से भी उपर्युक्त कथन का समर्थन होता है।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अत्युक्ति न होगी यदि कहा जाय कि प्राप्त सम्पूर्ण सामग्री में यही एक ऐसा पहलू है जो सर्व-सम्मति से सुनिश्चित है। क्रमशः विकसित होते हुए जीवन व अन्य बहुत ही हल्की भावनाओं का चित्रण बहुत सहज नहीं प्रतीत होता। चितौड़ के सम्पूर्ण राज-वैभव व तद्जनित सुख-सुविधा को 'तजि बटुक की नाई' अपने आराध्य के शरण में द्वारिका आ जाने पर मीरां जैसी भक्तिमती नारी की रचना में विराग और नैराश्य की भावनाओं का मिलना ही अधिक सहज है। अस्तु, गुजराती में पद-रचना असम्भव या असंगत नहीं प्रतीत होती तथापि अभिव्यक्ति के आधार पर प्राप्त पदों की प्रामाणिकता में सन्देह ही उत्पन्न होता है।

कुछ गुजराती में प्राप्त पदों में 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' 'मीरां के प्रभु गिरधर ना गुण' में भी परिवर्तित हो गया है—बहुत सम्भव है कि गेय-परम्परा ही इसका कारण हो, अस्तु, ऐसे पदों की प्रामाणिकता और भी संदिग्ध है।

भोजपुरी, अवधी, बिहारी आदि विभिन्न बोलियों में भी कुछ पद प्राप्त होते हैं। राजस्थान, ब्रज और द्वारिका से बाहर भी कभी मीरां ने प्रयाण किया हो ऐसा आभास कोई नहीं मिलता। साधु-समागम के कारण पड़े प्रभाव के कारण भी ऐसे इक्के-दुक्के पदों की रचना सम्भव नहीं। अतः इन पदों को निश्चित रूपेण प्रक्षिप्त कहा जा सकता है।

खड़ी बोली में प्राप्त कुछ पद भी भाषा की आधुनिकता के आधार पर निश्चित रूपेण प्रक्षिप्त ही कहे जा सकते हैं।

प्रस्तुत संग्रह में बहुत से पदों पर एक ऐसा ★ चिह्न लगा दिया गया है। भाषा और भाव के आधार पर प्रक्षिप्त प्रतीत होने वाले पदों पर ही यह चिह्न लगाया गया है। जैसाकि ऊपर कहा गया है, बहुत सम्भव कि शेष पदों में से भी अधिकांश प्रक्षिप्त ही हों, परन्तु उनको प्रक्षिप्त या प्रामाणिक कहने का कोई सुनिश्चित सूत्र अद्यावधि उपलब्ध नहीं। बहुत सम्भव है कि प्राप्त सामग्री के गहरे अध्ययन के बाद शेष पदों पर भी निश्चयपूर्वक विचार किया जा सके। किसी ऐसे ही प्रामाणिक संग्रह के आधार पर ही मीरां के जीवन-वृत्त को सुनिश्चित् इतिहास का रूप दिया जा सकता है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

किन्तु, भाषा पर यह विचार शबनम जी के अपने 'वृहत्पद संग्रह' के पदों के आधार पर है, अत: इन नये पदों और अनुसंधान में आगे मिलने वाले पदों, सभी को लेकर विचार करना होगा, अन्यथा विचार का आधार अधूरा रहने के कारण निष्कर्ष भी सदोष रहेगा। फलतः डॉ० शेखावत जैसे अन्य प्रयत्न अपेक्षित हैं।

तीसरे महत्त्व की बात स्वयं सिद्ध है कि जब अछूते पद मिलेंगे तो कवयित्री की भाव - सम्पत्ति को समृद्ध करने वाली अछूती भावराशि भी मिलेगी। इस प्रकार मीरां के अब तक उपलब्ध समग्र सामग्री रूप में निश्चय ही एक संवर्धन होगा। कवि की रचना के परिणाम को भी महत्त्व तो है ही, पर उस परिमाण के साथ उसी अनुपात में भाव संवर्द्धन और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। शेखावत को २१६ पद ऐसे मिले हैं जो अन्यत्र प्रकाश में नहीं आ पाये। राजस्थान के ही ग्रंथागारों में इतने नये पदों की प्राप्ति स्वयं में ही महत्त्वपूर्ण बात है।

संपादन प्रणाली :

डॉ० शेखावत ने संपादन–प्रणाली के लिए प्रो० ललिताप्रसाद सुकुल से प्रेरणा ग्रहण की है। प्रो० सुकुल ने मीरां स्मृति ग्रंथ में पृ० (न)पर यह सुझाव दिया था कि सम्पादन में 'मूल' को ज्यों का त्यों. ऊपर दिया जाय और संपादक अपने सुझाव पाद टिप्पणी में दें। इन्होंने भी पदों का जो रूप हस्तलिखित ग्रंथों में मिला है, वह मूल पाठ के रूप में दिया है। केवल कुछ ऐसे संशोधन ही किये, हैं, जिनसे पद को पढने में कठिनाई न पड़े - अर्थात् 'लघु - दीर्घ' मात्राओं में त्रुटियों को ठीक किया है, और अन्य वर्तनी दोष भी दूर कर दिये हैं। अत: बहुत कम संशोधन किये हैं और अपने सुझाव पाद टिप्पणी में दिये हैं। इन संशोधनों के सुझावों का आधार वह आदर्श है, जिसका पहले उल्लेख किया जा चुका है कि मीरां की भाषा राजस्थानी है।

यद्यपि इसे वैज्ञानिक पाठ नहीं माना जा सकता, क्योंकि वैज्ञानिक पाठालोचन एक जटिल प्रक्रिया है, और विशेष वैज्ञानिक - दक्षता व अध्यवसाय की इसमें अपेक्षा रहती है। इस प्रक्रिया से सम्पादित पाठ की प्रामाणिकता भी स्थापित होती है। साथ ही भाषा का रूप भी प्रामाणिक स्तर पर स्थापित हो जाता है। किन्तु, इसके लिए यह अपेक्षित है कि किसी भी पद के जितने भी पाठ मिलें वे सभी सम्पादक के पास हों। किन्तु,इस समय जो स्थिति है, उससे विदित

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

होता है कि अब तक के इतने प्रयत्नों के बाद भी अभी सभी पद संकलित नहीं हो पाये हैं। लिखित में भी अभी बहुत खोज शेष है और मुखस्थ या कंठस्थ पदों को संकलित करना भी कितना आवश्यक है। केवल कुछ ही ऐसे पद-८-१० ही अभी सामने आते हैं। यह जब तक नहीं होता अर्थात् यथासंभव समस्त पद प्रकाश में नहीं आते, तब तक वैज्ञानिक पाठशोधन की बात नहीं की जा सकती। वस्तुत: वैज्ञानिक पाठ शोधन के लिए यह आवश्यक है, हमें पहले मीराँ के पदों के वे रूप, जैसे ग्रंथों में मिले हैं, या कण्ठ से मिले हैं, यथावत् प्रकाशित रूप में उपलब्ध हों।

इसके लिए हमें उसी प्रणालो का उपयोग करना होगा जिसका उपयोग डॉ॰ शेखावत ने किया है। इसे आरंभिक वैज्ञानिक संपादन कह सकते हैं। इसमें संदेह नहीं कि डॉ॰ शेखावत ने यह कार्य सावधानी से संपन्न किया है। इस दृष्टि से भी इस संकलन को महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

अनुसंधान की दृष्टि से इनमें एक और वैशिष्टय है। संपादक ने प्रत्येक पद का स्रोत भी पाद टिप्पणी में दे दिया है। कहीं-कहीं ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या दे दी है। यदि इसमें संग्रहों का लिपि - काल भी दे दिया गया होता तो इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता। किन्तु, इस कमी की पूर्ति उन्होंने भूमिका में पृष्ठ ३ पर स्रोतों का पूरा विवरण देकर कर दिया है। इससे इसकी उपादेयता और भी बढ़ गयी है।

डॉ॰ शेखावत ने इस संपादन-कार्य में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरणा देने वाले कुछ विद्वानों के उद्धरण पृ॰ १५-१६ पर पाद-टिप्पणी में दिये हैं। उन सभी विद्वानों ने मीरांबाई के पदों के प्रामाणिक पाठ की आवश्यकता पर बल दिया है। प्रेरणाप्रद उद्धरणों से संकेत मिलता है कि डॉ॰ शेखावत की दृष्टि भी प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने की रही होगी, तभी उक्त उद्धरण उन्हें इस कार्य में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दे सके। यह दृष्टि सचमुच श्लाघनीय थी, पर जैसा हम ऊपर कह चुके हैं कि प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने की प्रक्रिया बहुत जटिल है, और उसे आज वैज्ञानिक स्तर पर पहुँचा दिया गया है। डॉ॰ शेखावत का यह कार्य 'प्राथमिक वैज्ञानिक' सोपान प्रस्तुत करता है। जैसा उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है, कि अभी वे कई महत्वपूर्ण पुस्तकालयों से सामग्री नहीं ले पाये हैं। यह आवश्यक है कि राजस्थान में जितने भी संस्थागत तथा निजी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुस्तकालय हैं, उन सबसे सामग्री लेकर राजस्थान के क्षेत्र में प्राप्य मीरां के पदों का एक पूर्ण संग्रह प्रस्तुत कर लिया जाय। राजस्थान से ही एक दूसरा संग्रह मौखिक या लोक-परंपरा में जीवित मीरां के पदों का प्रस्तुत किया जाय। वैज्ञानिक दृष्टि से इस लोक-संकलन में यह आवश्यक होगा कि प्रत्येक पद के क्षेत्रीय रूप भी उसमें हुए परिवर्तनों के साथ दिये जायं। ऐसे ही संग्रह उत्तर-प्रदेश, गुजरात, बंगाल, महाराष्ट्र तथा अन्य प्रदेशों से कराये जाय। इन सबके आधार पर पाठालोचन के लिए सामग्री प्रस्तुत की जाय। ऐसे पाठालोचन के लिए स्रोत सामग्री भी अपेक्षित होगी। उसे हम माइक्रोफिल्म आदि यांत्रिक साधनों से अपने मीरां संग्रह में ला सकते हैं।

डॉ॰ शेखावत की इस संग्रह में मुख्य दृष्टि यह रही है कि ऐसे पद ही प्रकाशित कराये जायँ जो अछूते हैं, अभी तक मीरां के सग्रहों में प्रकाशित नहीं हो पाये हैं। जैसा हम ऊपर लिख आये हैं, यह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। पद-पाठालोचन के लिए तो जानी-अनजानी समस्त सामग्री अपेक्षित होगी, और उसे हम अब भी उन स्रोतों से पा सकते हैं, जिनका उल्लेख डॉ॰ शेखावत ने भूमिका में कर दिया है। तात्पर्य यही है कि श्री शेखावत के इस शोध-प्रयत्न से प्रामाणिक पाठ तक पहुँचने के लिए एक अच्छा सोपान मिल गया है।

प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने के लिए या तो 'मीरां शोध संस्थान' स्थापित होना चाहिये, जिसमें मीरां विषयक एक संग्रहालय या म्यूजियम भी हो। यह संस्थान समस्त सामग्री एकत्र करे और प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत कराये। या फिर प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान ही इस महत्कार्य के लिए आगे आये। वह अपने प्रतिष्ठान में एक मीरां शोध अभिकरण स्थापित करे, मीरां विषयक समस्त सामग्री एकत्र कराये, मूल रूप में, या माइक्रोफिल्म, फोटो स्टेट, या फोटो प्रतियों के रूप में और शोधार्थी एवं विद्वानों की एक मंडली को प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने का कार्य सौंपे। आजकल प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ॰ दशरथ शर्मा सूझ-बूझ वाले व्यक्ति हैं और विद्वता में भी अद्वितीय हैं। वे चाहें तो प्रतिष्ठान से यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करा सकते हैं। 'मीरां अभिकरण' प्रतिष्ठान को उनकी स्थायी देन होगी, और सामान्यजन, शोधार्थी तथा विद्वानों को समान रूप से हितकारी होगी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भूमिका लिखते हुए, कुछ च्युत होकर, मैंने ऊपर कुछ सुझाव दिये हैं क्योंकि मीरां का महत्व सामान्यजन, शोधार्थी और विद्वान सभी के लिए है। मीरां का काव्य सार्वजनीन हित का कार्य है। आधुनिक युग में विदेशों में जो अध्यात्मकेन्द्रित सांस्कृतिक विद्रोह या क्रान्ति दिखायी पड़ रही है, उसका मानव के अस्तित्व के अतल तल से घनिष्ठ संबंध है। मीरां उस तल में लहराते अध्यात्म सागर को भाव तरंगों की गायिका है। यही कारण है कि सहज, सरल भाषा में निबद्ध लोक मानस की भूमि पर गेय पद सभी के मर्म को छूते और प्रभावित करते हैं। शब्दों का ऊबड़-खाबड़ रूप, काव्य-तत्वों की स्थूलता, भाषा का प्रकार-कोई भी मीरां की हृदयस्पर्शिता में बाधक नहीं होता। उसी अंतरंगी अध्यात्म के रंग के कारण मीरां के पद 'कथ्य' से चमत्कारिक तादात्म्य करा देते हैं, तभी उनमें नव-नव स्फूर्तिदायक ताजगी मिलती है और लगता है कि संभवतः इन्हीं बातों के कारण इतने विशाल साहित्य में उनसे तुलनीय पद नहीं मिलते।

'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरौ न कोई' यह चरण कितना सामान्य, सरल और निष्प्रपंच है। पर, क्या इसमें कुछ ऐसा नहीं है कि पढ़ते ही और सुनते ही पाठक और श्रोता का, मानवीय अस्तित्व के सहज अध्यात्म से तादात्म्य न हो जाता हो और ढूंढने पर भी किसी कवि में हमें ऐसा पद नहीं मिलता। वस्तुतः मीरां के पदों में 'आस्वाद' नहीं है, टोना है; और यह टोना भी गजब का है। साहित्य में टोने की बात करना अब से कुछ वर्ष पूर्व उपहास्यास्पद माना जा सकता था। पर,आज जब पाश्चात्य विद्वानों ने इसे मान्यता दे दी है और टोने की चर्चा में वे लगे हुए हैं, तो हम भी उसका उल्लेख तो कर ही सकते हैं। भारत में तो 'अक्षर' को अक्षर-ब्रह्म और शब्द को 'शब्द ब्रह्म' मानकर बहुत पहले ही भाषा को टोने का आधार मान लिया था 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' में भी इसी टोने की ओर संकेत है। शब्द तो शब्द है,टोने का माध्यम, और अर्थ वस्तु है। जब हम 'घोड़ा' कहते हैं तो अर्थ में 'घोड़ा' नाम की वस्तु अभिप्रेत होती है, और दोनों में, शब्द और अर्थ में, इस प्रकार अभेद होता है।

पाश्चात्य विद्वानों में कॉलरिज को पहला व्यक्ति बताया जाता है जिसमें 'शब्द और अर्थ' के अभेद के लिए छटपटाहट थी, वह शब्द से अर्थ या, वस्तु का तादात्म्य पाना चाहता था। उसने विलियम गोडविन को २२ सितंबर, १८०० के पत्र में लिखा था—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

"I wish you to write a book on the power of the words........is thinking impossible without arbitrary 'signs'. And how far is the word 'Arbitrary' a misnomer ? Are not words, etc. parts and germinations of the plant ? And what is the law of their growth ? In something of this sort I would endeavour to destroy the old antithesis of Words and Things; elevating, as it were, Words into Things and living things too".

इसका संदर्भ प्रस्तुत करते हुए इस पर जो पाद टिप्पणी दी गयी है वह भी द्रष्टव्य है :

1. Unpublished letters of S. T. Coleridge, ed. E. L. Griggs (London, 1932), I 155-6. A few years later Lord Byron voiced much the same aspiration in his Childe Harold.

I do believe
Though I have found them not,
That there may be
Words which are things.

Canto III, Stanza C XIV.

और इस 'शब्द तथा वस्तु (अर्थ)के अद्वय का चिंतन बढ़ते-बढ़ते वह स्थिति आयी कि प्रतीकवाद (Symbolism) के पोषकों के विविध पक्षों को लेकर जब अनिश्चय का वातावरण बना तो एक परिभाषा यह दी गयी—

'Whether a real school of Symbolism ever existed, remains a problem of speculation........Each poet developed and represented a single aspect of an aesthetic doctrine that was perhaps too vast for one historical group to incorporate ....But more than on any other article of belief the sym-bolists united with Mallarme in his statements about poetic language. The theory of the suggestiveness of words comes from a belief that a primitive language, half-forgotten, half-living exists in eachman. It is language possessing extraordinary affinities with music and dreams (Mallarme, p 64).

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आदिम भाषा आज भी मनुष्य में है, इसीलिए कविता में ऐसी शब्दावली आ जाती है जो अधभूले से, अधजीवा - से होती है। मनुष्य में इस आदिम भाषा के अवशेष के अभिव्यक्त हो पड़ने से आधुनिक काल में 'मिथ' के अस्तित्व को प्रोत्साहन मिला तथा मनुष्य टोने तक पहुँचा गया।

इस टोने के संबंध में ईट्स (Yeats) ने अपने मैजिक (Magic) नामक निबंध में लिखा कि वह उन तीनों सिद्धान्तों में विश्वास करता है, जो किसी भी जादुई आभास या करतब में आधार रूप में मिलते हैं। ईट्स के शब्दों में वे हैं :—

(1) That the borders of our minds are ever shifting, and that many minds can flow into one another, as it were, and create or reveal a single mind, a single energy.

(ii) That the borders of our memories are as shifting, and that our memories are a part of one great memory, the memory of Nature herself.

(iii) That this great mind and great memory can be evoked by symbols.

Literary Criticism : A short History में विम्सेटट तथा ब्रुक्स ने ईट्स के इन सिद्धान्तों का पृ० ५६८-५६९ पर उल्लेख करते हुए पाद टिप्पणी में बताया है कि Great Mind तथा Great Memory में जुंग (Jung) के Collective unconscious (सामूहिक अवचेतन) की छाया दिखायी पड़ती है, जिसके साथ जुंग के आर्कीटाइपों (मूलस्थापितों) का भी संबंध है।

इस प्रकार पाश्चात्य आलोचना-क्षेत्र में शब्द और अर्थ के अर्थात् शब्द और वस्तु के अद्वय सम्बन्ध के चिंतन से शब्द प्रतीक (Symbol) के सहारे टोने को मान्यता मिली। अतः हम आज कह सकते हैं कि मीरां के काव्य में टोना (Magic) है। यही कारण है कि श्रोता और पाठक मीरां की शब्दावली से मंत्रविद्ध हो जाता है; किन्तु इस मंत्रविद्धता का मूल वह आदिम भाषा की छाप नहीं जिसमें शब्द अधभूले और अधजीवा-से होते

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हैं और कवि की अभिव्यक्ति को रहस्याभिमंडित कर देते हैं। जब मीरां कहती है कि—

'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरौ न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरौ पति सोई॥'

तो इसमें महामानस (Great Mind) तथा महास्मृति (Great Memory) तो है, और प्रतीक भी है–

मोरमुकुट वाले गिरिधर गोपाल पर भारतीय मानस के लिए मोर मुकुट धारी गिरिधर गोपाल इतना प्रकट है कि उसकी रहस्यमय पक्षता का अर्थ रहते हुए भी नहीं रहता–पर मीरां का टोना मंत्रविद्ध अवश्य कर लेता है। वस्तुतः यह टोना ही है जो मीरां के काव्य में है। एक विद्वान ने बताया है कि "काव्य, धर्म तथा टोने का मूल एक ही है।[५] आगे इनका कथन है कि "मेरा अभिप्राय यह है कि प्राचीनतम काव्य का उदय मंत्रों से हुआ, सशक्त तथा स्तवनीय शब्दों तथा छन्दता से हुआ, जिनके द्वारा मनुष्य अपने स्रष्टा से साक्षात्कार कर सकता था और साथ ही समस्त सृजित पदार्थों के सारतत्व से भी संपर्कित हो सकता था................"[६]

मीरां के पद इसीलिए टोना हैं कि वे सशक्त और स्तवनीय (evocative) शब्दों में रचे गये हैं,और उनसे हमें अपने स्रष्टा का, अपने पति का 'गिरधर नागर' का साक्षात्कार होता है। किन्तु, शब्दों की सशक्तता की परीक्षा क्या उस समय तक संभव है, जब तक कि पदों की शब्दावली, उनकी पद-योजना और अर्थाभिव्यक्ति-गतशीलता को उपलब्ध करने का कोई साधन न हो। छन्दता (Rhythm) पर तो हमने अभी विचार आरंभ ही किया है, किन्तु, जब तक कि मीरां की समस्त संपदा सुलभ न हो तब तक छन्दता का रहस्योद्घाटन भी असंभव ही रहेगा क्योंकि मूलतः छन्द और लय का जो रूप काव्य में ढलता होता है वह धरा के छन्द - लय का बीज-मन्त्र होता है।[७] और आगे कासल्स के "एनसाइक्लोपीडिया आफ लिटरेचर" में पोइट्री शीर्षक निबंध में लिखा है कि

'चीन की पवित्र धार्मिक पुस्तकों में यथा लि कि XVII, II (अनुवाद जेम्स लेग्गे) हमें यह पढ़ने को मिलता है कि 'प्राचीन राजा........ संगीत) को जीवन उत्पादक ऊर्जा के संमंजन में ले आये थे–संगीत और काव्य के अभिप्राय तब एक ही थे।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डॉ० हैरीसन उस श्लोक (hymn) के संबंध में, जिसमें से उक्त उद्धरण दिया गया है, कहते हैं कि "वह देवता जिसकी अभ्यर्थना की जा रही है उपस्थित नहीं है.......उसे आने का आदेश दिया जा रहा है और स्पष्टतः उसका आना.... उसका अस्तित्व भी, उस अनुष्ठान पर निर्भर है जिसके द्वारा वह अभ्यर्थित किया गया है।" अर्थात्, उसका आना और उसका अस्तित्व शब्दों के जादू और छन्दता के जादू पर निर्भर करतो है।[८]

मीरां के काव्य का भी मूलाधार शब्द और छन्द का टोना है, तभी तो कृष्ण, मोर-मुकुटधारी गिरधरगोपाल से उनका साक्षात्कार होता है। पर, मीरां के शब्दों और छन्दता की ऊर्जा और शक्ति का अभी अनुसंधान कहाँ हुआ है ? और हो कहाँ सकता है, जब तक कि ऐसे-ऐसे संग्रहों के प्रकाशन से मीरां के पदों की समग्र सामग्रो अध्ययनार्थ उपलब्ध न हो जाय।

भारत में तो वेद-पूर्वी युग से लेकर मध्ययुग के छोर तक और आधुनिक युग के एक अन्तरंग स्तर पर भी कविता और मंत्र इस टोने के कारण ही धार्मिक भूमि पर मान्य स्वीकृत हुए। समस्त काव्य में स्रष्टा के साक्षात्कार की आस्था अडिग भाव से विद्यमान है। मीरां में यही परंपरा एक वैशिष्ट्य के साथ मिलती है। किन्तु,मीरां का यह वैशिष्ट्य भी समझने के लिए संपूर्ण सामग्रो अपेक्षित है। मैंने बार-बार यहाँ इसी बात को दुहराया है कि मीरां के समस्त पदों का संग्रह प्रकाश में लाना अत्यन्त आवश्यक है और इस दिशा में डॉ० शेखावत का यह प्रयत्न श्लाघ्य है। इससे मीरां के समस्त पद तो सामने नहीं आते, पर अब तक जो सामने नहीं आ सके थे उनमें से कुछ तो अधिक ही अब इस रूप में उपलब्ध हैं। इस प्रकार मोरां के काव्य की आत्मा तक पहुँचने के लिए कुछ और चरण हमें प्राप्त हो गये हैं। वस्तुतः मीरां के पदों और उनकी भाषा का यह पक्ष अनुसंधान की दृष्टि से अछूता है, महत्वपूर्ण भी है। सरल और सहज शब्दावली में, वह चाहे राजस्थानी रूप में हो, ब्रज-रूप में या गुजराती रुप में तीनों में,समान भाव से मंत्रविद्ध करने की शक्ति है। यहाँ शब्द-शक्तियों से किसी चमत्कारक अर्थ पर पहुँचने की स्थिति भी नहीं है।

मीरां के काव्य के समस्त स्वरूप को यथार्थतः हृदयंगम करने के लिए आवश्यक है कि शीघ्रातिशीघ्र अधिकाधिक पद संकलित कर लिये जायँ और तब शब्द और अर्थ दोनों के शील को समझने का प्रयत्न किया जाय। मीरां भक्त

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

थी–इसमें कोई संदेह नहीं, पर भक्त तो और इतने कवि और महाकवि रहे हैं, पर उनमें मीरां-सा वैशिष्ट्य कहाँ हैं ? मीरां में रस–परिपारक की प्रवृत्ति कहाँ है ? 'कवित्व' तत्व भी तो नहीं है किन्तु शब्दार्थ का शील कुछ अद्भुत है यथा—

म्हानें चाकर राखो जी
चाकर रहस्यू बाग लगास्यू

यहाँ कुछ विद्वानों के उद्धरण देना समीचीन होगा। इनसे इस समस्या का रूप कुछ और अधिक समझ में आ सकेगा।

प्रो० शंभुसिंह मनोहर ने 'मीरां पदावली' में पृ० ५३ पर लिखा है कि "मीरां की प्रेमानुभूति तो सर्वथा अनिर्वच है, जैसा कि देवर्षि नारद ने कहा भी है—

'अनिर्वचनीयं प्रेम स्वरुपं ॥५१॥ मूकास्वादनवत् ॥५२॥ शब्दों में न उसके प्रेमोन्माद को व्यक्त करने की शक्ति है, न उसके विरह की थाह लेने को सामर्थ्य।'

आगे पृष्ठ ५५–५६ पर वे लिखते हैं :—

"मीरां सचमुच प्रेमोन्मादिनी थी। कृष्ण के दिव्य और अलौकिक प्रेमोन्माद में डूबी हुई। उस प्रेमोन्मादिनी का वह कैसा अपूर्व प्रेमोन्माद था कि श्याम के ध्यान में तन्मय होने पर वह अपनी सुध–बुध खो बैठती थी। अपने सर्वान्तःकरण से प्रियतम के चरणों में समर्पित हुई मीरां तब हर्ष - विभोर ह नाच उठती थी—

पग घुंघरू बाँध मीरां नाची रे।
मैं तो मेरे नारायण की हो गई आपहि दासी रे,
लोग कहें मीरां भई बावरी न्यात कहें कुलनासी रे।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर सहज मिलो अविनासी रे।

उक्त नृत्य की एक - एक ताल पर शत - शत कैवल्य न्यौछावर होते थे। नूपुरों की एक-एक झंकार पर भक्ति की अनन्त सम्पदाएँ चरणों में लोटती थीं, उस प्रेमदीवानी के मृत्युञ्जयी अधरों के स्पर्श से जीवन का गरल भी अमृत बन गया था। भगवती पार्वती की भांति उस प्रेमोन्मादिनी का वह प्रणय-लास्य भी कुछ ऐसा ही अपूर्व था।"

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

फिर ७८ - ७९ पृष्ठों पर यह कथन द्रष्टव्य है :—

"मीरां के काव्य में हमारी इसी लोकपरक सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष है जो समस्त प्रतिक्रियावादी मान्यताओं एवं वर्ग-भेद-जन्य दुराग्रहों का प्रतिकार करती हुई जाति तथा जगजीवन के साथ एक रूप हो गई है—

"सासू अमारी सुषमणारे, सासरो प्रेम सन्तोष ।
जेठ जग–जीवन जगत माँ, म्हारो नावलियो निर्दोष ।।"

प्रो० देशराजसिंह भाटी की पुस्तक "मीराँबाई और उनकी पदावली" के निम्नलिखित उद्धरण भी द्रष्टव्य हैं :—

"मीराँ की प्रेम–साधना में शास्त्रीय परिभाषाओं के अनुसार स्वरूप और वर्ग तो मिलते ही हैं, साथ ही इसमें हृदय की जो सहज मंजुल-धारा अजस्र प्रवाह से प्रवाहित है, वह मीरां काव्य की अपनी निजी विशेषता है। इस प्रसंग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के ये शब्द उल्लेखनीय हैं :

"कबीर ने भी 'राम की बहुरिया' बनकर अपने प्रेमभाव की व्यंजना की है, पर 'माधुर्य भाव' की जैसी व्यजंना स्त्री-भक्तों द्वारा हुई है, वैसी पुरुष–भक्तों द्वारा न हुई है, न हो सकती है। पुरुषों के मुख से वह अभिनय के रूप में प्रतीत होती है। उसमें वैसा स्वाभाविक भोलापन, वैसी मार्मिकता और कोमलता आ नहीं सकती। पति-प्रेम के रूप में ढले हुए भक्तिरस ने मीराँ की संगीत–धारा में जो दिव्य माधुर्य घोला है, वह भावुक हृदयों को और कहीं शायद ही मिलें।" [९]

"निष्कर्षत:कहा जा सकता है कि मीरां की वेदनानुभूति अत्यन्त उदात्त, परिष्कृत और भावमयी है। प्रो० रामेश्वरप्रसाद शुक्ल के शब्दों में—

"....................मीरां की वेदना में एक शोधक प्रभाव (Purifying effect) है। उसके गीतों को पढ़कर, सुनकर हम भीतर-भीतर एक आन्तरिक ठहराव, एक जीवन स्थिरता और प्रवृत्ति का मांगलीकरण अनुभव करते हैं। प्रेम की यातना हृदय को द्रष्टा और स्रष्टा दोनों बना देती हैं। श्रीमती ब्राउनिंग के शब्दों में We learn in suffering what we teach in songs. [१०]

"अन्ततः कहा जा सकता है कि मीरां की रसयोजना बहुत ही सफल और मार्मिक है। यद्यपि मीरां का ध्यान इस योजना की ओर बिल्कुल नहीं था, तथापि यह सत्य है कि महती भावनाएं स्वतः योजनाबद्ध होती हैं। इसीलिए

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरां की रस-योजना में, जहाँ एक ओर हृदय की सच्ची तथा यथार्थ अनुभूतियाँ मिलती हैं,वहाँ दूसरी ओर यह काव्य-शास्त्र के निष्कर्ष पर भी खरी उतरती है।'

'इस प्रसंग में प्रो० रामेश्वरप्रसाद शुक्ल के ये शब्द उल्लेखनीय हैं'–

"मीरां की वेदना युग-युग से प्रियतम से बिछड़ी हुई प्रीतिदग्ध-प्रणयानुकूल आत्मा की वेदना है। वह अपने को आराध्य की जन्म-जन्म की दासी समझती है और सर्वस्व-समर्पण, जो प्रेम का प्राण है, उसके गीत–गीत में मन के सम्पूर्ण आवेग के साथ उच्छ्वसित हुआ है। प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक क्षण उसके सामने प्रिय का रूप मंडराया करता है। इष्टदेव के दर्शन की ऐसी तीव्र लालसा, मिलन की ऐसी परिपूर्ण तृष्णा, कामना की ऐसी अविनाशी आग, कम से कम हिन्दी के अन्य किसी कवि में नहीं पाई जाती।"

"डॉ० रामधारीसिंह दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' (पृ० ४३४-४३५) में लिखा है, 'प्रेम-पीर' की यही नयी भंगिमा हम मीरांबाई में भी देखते हैं। अवश्य ही, दर्द की यह नयी अदा, विरह-वेदना का यह नया रूप उन्हें कबीर की ही परम्परा से मिला होगा। किन्तु, दूर पर. कबीर और मीरां को इन बेचैनियों के पीछे कहीं–न–कहीं. फारस के सूफियों की वेदना का हाथ था, इस अनुमान का खंडन नहीं किया जा सकता।

है री, में तो दरद की मारी दीवानी रे,
मेरा दरद न जाने कोय।

अथवा

काढ़ि करेजो मैं धरूँ रे, कागा, तू ले जाइ।
ज्याँ देसाँ मेरा पिउ बसे रे, वे देखें, तू खाइ॥

अथवा

घायल ज्यूँ घूमूँ सदा री, म्हारी व्यथा न बूझै कोइ।

"इन पंक्तियों में विरह का जो रूप है, उसकी परम्परा न तो मेघदूत में मिलेगी, न माघ, श्री हर्ष और भवभूति में। यहाँ तक कि विरह की इस वेदना का आभास हाल और गोवर्धनाचार्य की सप्त-शतियों में भी नहीं हैं। सम्भव है, दर्द की यह तर्ज लोक गीतों से उठकर साहित्य के धरातल पर पहुंची हो, किन्तु, तब भी यह विदेशियों के ही साथ इस देश में पहुँची होगी।"

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इन सभी उद्धरणों में मीरां के काव्य के transcendental प्रकृति का पता चलता है। उनकी उस मनोभूमि का भी ज्ञान होता है, जिस पर वे सामान्य मानस से सामूहिक मानस (Collective unconscious) अथवा ईट्स के महामानस और महा स्मृति के क्षेत्र में सीमा रहित विचरण करती हैं।

किन्तु, इन सबके मर्म को समझने के लिए शब्द और अर्थ के शील को भली प्रकार समझना होगा।

पाश्चात्य कवि बायरन (Byron) ने लिखा कि–

'मैं विश्वास करता हूँ कि ऐसे शब्द हैं जो वस्तु हैं—यद्यपि मेरा इनसे अभी साक्षात्कार नहीं हुआ है।' पर जब मीरां के पदों को पढ़ते हैं तो लगता है कि उन्हें 'शब्द' गिरधर नागर के साथ साक्षात् गिरधर नागर मिल रहे हैं 'मेरे तो गिरधर गोपाल जाके सिर मोर मुकुट' जैसे इन शब्दों के साथ शब्दगत वस्तु का साक्षात्कार हो रहा है। वही टोना है। मीरां के पद मंत्र हैं। मीरां के लिए भी ये मंत्र थे, और पाठकों के लिए भी सदा-सर्वदा के लिए ये मंत्र रहेंगे। उनमें शब्द - शक्ति, रस तथा अन्य साहित्यिक अध्ययन आरोपित ही रहेंगे।

किन्तु, यह तो बहुत स्थूल निरूपण है। मीरां के शब्द+अर्थ के शील को जानने और उसे विश्लेषण पूर्वक हृदयंगम करने के लिए समस्त पदों का संग्रह पहली आवश्यकता होगी। उस दिशा में यह भी एक श्लाध्य प्रयत्न है। मुझे विश्वास है कि इस प्रयत्न का स्वागत होगा।

पाद टिप्पणियां—

(१) इन्होंने इसका ब्यौरा यों दिया है : कुल पद संख्या—३७२
अप्रकाशित पद—२१६
राग रागिनी वाले पद —५०
पूर्व प्रकाशित पदों से भाव साम्य रखने वाले पद—४८
पूर्व प्रकाशित पदों से अंशतः साम्य रखने वाले पद—४८
परिशिष्ट—अप्रकाशित मूल पदों के १० पाठान्तर

(२) अपने संग्रह के संबंध में स्वयं पुरोहित जी ने बताया है कि मैंने परिश्रम और खोज के साथ ही (संग्रह) किया है। '(क) मेड़ते जाकर

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सामग्री एकत्र की (ख) बड़ी रूपाहेली के स्व० ठाकुरसाहब चतुर सिंहजी से (ग) वदनोराधीश गोपाल सिंहजी से, ये दोनों ठाकुरसाहब भी मीरांबाई के मेड़तिया कुल के वंशज थे। (घ) मेड़ता के अन्य लोगों से (ङ) कलकत्ते वाले बाबू अनाथदास से (च) मीरांबाई संबंधी बहुत से लिखित तथा मुद्रित पुस्तकों से सामग्री ली है।'

पुरोहितजी ने पदों के नीचे उनके स्रोत का उल्लेख संकेताक्षरों में किया है, पर उन संकेताक्षरों से क्या अभिप्राय है इसका पता नहीं चलता। क्योंकि पुस्तक में भी इनकी कुंजी नहीं दी। यहां हम संकेताक्षरों में ही उनके स्रोतों का उल्लेख किये देते हैं, जो इस प्रकार है—

१. सं० या—सं० रा० के से।
२. वृ० रा० र० पृ०।
३. आ० सा० भा०।
४. मी० ली० दी० ना० पत्र।
५. मी० ली० स० मा०।
६. सूर्य नारायणजी दाधीच।
७, पु० ना० वा०।
८. वं० पु० (बंगाली पुस्तक)
९. दीना० मं० मी० प०।
१०. मी० प० जमा० राम०।
११. प्रभु नारायणजी का गुटका।
१२. मीरां पदावली वि० कु०।
१३. क० व०।
१४. राम स० गु० (राम स्नेही गुटका)
१५, भजन मंजरी।
१६. का० गु०।
१७. मीराँ की प्रेमवाणी।
१८. स० मा० मी० ली० (सरस माधुरी मीराँ)
१९. मी० ली० प० दूधू।
२०. आ० भ०।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२१. गोपीराम ब्रजवासी से प्राप्त ।
२२. हरि नारायणजी की पु० ह० ।
२३. का० दो० (काव्य दोहन गुटका)
२४. मंजु पदावली ।
२५. नवनिधि कुँवर बाईजी से प्राप्त ।
२६. वृ० भ० र० (भजन रत्नावली)
२७. का० ह० नं० १ ।
२८. भजन सं० भा० ।
२९. हस्तलिखित पद मुक्तावला ।
३०. मीरां वा० ज० च० ।
३१. ब्रजनिधि ग्रन्थावली ।
३२. मीराँबाई के भजन ।
३३. रास पद संग्रह ।
३४. मीराँबाई का जीवन चरित्र (मु० देवीप्रसाद) ।
३५ मीराँ मंदाकिनी ।
३६. पु० नाथू नारायणजी की पुस्तक ।
३७. मीराँबाई–हिन्दी पुस्तकालय,मथुरा ।
३८. भक्त-चरितावली ।
३९. प्रहला० भ० पा० ।
४०. नारायणदास नटवाने (ना० दा० जी० पद संग्रह)
४१. मीराँ जी० का० प्र० जी० ।
४२. वि० भू० पु० ।

इससे प्रकट होता है कि पुरोहितजी ने ४२ स्रोतों से यह सामग्री छाँट कर इस संग्रह में रखी । यह भी स्पष्ट है इन बयालीस स्रोतों से, उनमें उपलब्ध मीराँ के सभी पद उन्होंने नहीं लिए । किसी कसौटी के ग्राधार पर ही ये पद छाँटे गये हैं—वह कसौटी ऐसी रही होगी जिसके ग्राधार पर वे यह कह सकें कि ये मीराँबाई के ही पद हैं ग्रौर प्रामाणिक हैं । डॉ० फतहसिंह ने प्रकाशकीय में सूचित किया है कि—"भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण बहुरा के कथनानुसार पुरोहितजी ने पदों की प्रामाणिकता के लिए कोई कसौटी भी निर्धारित की थी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जो उनके सुपुत्र श्री रामगोपालजी पुरोहित ने स्वर्गीय पिता द्वारा संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों तथा मीराँ से सम्बन्धित सभी सामग्री के साथ हमारे प्रतिष्ठान को भेंट कर दी थी। खेद है कि अब कसौटी हमें उपलब्ध नहीं है।"

खेद है वह कसौटी नहीं रहो,पर पुरोहितजी के द्वारा प्रसारित ये प्रामाणिक पद इस संग्रह में उपलब्ध हैं। इसलिए यह प्रथम भाग भी बहुत महत्वपूर्ण देन हैं।

(३) प्रो० शम्भुसिंह मनोहर ने निम्नलिखित मीराँ के पद - संग्रहों का उल्लेख किया है, अपनी मीराँ पदावली में:—

१. मीराँबाई और उनकी पदावली—देशराजसिंह भाटी।
२. मीराँ स्मृति ग्रन्थ- -बंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता।
३. मीराँ मन्दाकिनी - नरोत्तम स्वामी।
४. मीराँ माधुरी— ब्रजरत्नदास।
५. मीराँ, जीवनी और काव्य- -महावीरसिंह गहलोत।
६. मीराँ, सहजो और दयाबाई--वियोगी हरि।
७. मीराँ पदावली--विष्णुकुमारी मंजु।
८. मीराँ पदावली· —परशुराम चतुर्वेदी।
९. मीराँ वृहत् पद संग्रह—पद्मावती शबनम।
१०. मीराँ बाई—डॉ० श्रीकृष्णलाल।
११ मीराँ और उनकी प्रेमवाणी—ज्ञानचन्द्र जैन।
१२. मीराँ सुधा-सिन्धु—स्वामी आनन्द स्वरूप।
१३. मीराँबाई नी भजनो (गुज०) हरसिद्धभाई जभाई दिवेटिया।
१४. वृहत् काव्य दोहन (गुज०) (भाग १, , ५, ६, ७)।
१५. मीराँबाई का काव्य—मुरलीधर श्रीवास्तव

इस सूची में प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित मीराँ वृहत्पदावली भाग १ का उल्लेख नहीं। तब तक इसका प्रकाशन नहीं हुआ था।

जिन प्रकाशित संग्रहों का उल्लेख ऊपर हुआ है उनके अतिरिक्त भी अन्य संग्रह हो सकते हैं, जिनका उल्लेख न हो पाया हो। इन पदावलियों पर प्रो० शंभुसिंह मनोहर ने अपना अभिमत यों दिया है:

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

"इस संबंध में, जैसा कि डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने लिखा है–'पदावलियों के सम्पादकों में केवल तीन विद्वानों ने हस्तलिखित प्रतियों के आधार की बातें कहीं हैं। ये हैं श्री नरोत्तमदास स्वामी, श्री उदयसिंह भटनागर तथा श्री ललिता–प्रसाद सुकुल। (डॉ० हीरालाल माहेश्वरी - राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० ३२२.) इनमें से डॉ० हीरालाल माहेश्वरी तथा उनसे सहमत होते हुए प्रो० शम्भुसिंह मनोहर, आचार्य नरोत्तम स्वामी के संग्रह को अधिक प्रामाणिक मानते हैं, क्योंकि उनका पाठ किसी प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ के आधार पर संपादित हुआ है। डॉ० माहेश्वरी ने प्रो० सुकुल के पाठ की सतर्क, सोदाहरण किन्तु कटु आलोचना की है।

ऊपर जिन १५ संग्रहों का नाम दिया गया है, उनमें तीन दृष्टियाँ मिलती हैं : (अ) एक है-छात्रोपयोगी या पाठ्यक्रम में रखवाये जाने की दृष्टि से तैयार किये गये संग्रह (आ) भक्तों के उपयोग के लिए प्रस्तुत किये गये संग्रह, तथा (इ) मीरां पर शोध की दृष्टि से संग्रह।

(४) उत्तर प्रदेश में फतहपुर की यात्रा पर मैं हस्तलेखों की खोज में गया था। वहाँ जिला नियोजन अधिकारी थे कैप्टेन शूरवीर सिंह जिन्हें साहित्य और शोध में बहुत रुचि थी। उन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर अपने वाहन में ही मुझे कई स्थानों की यात्रा करायी थी। इनमें एक स्थान था 'शिवराजपुर'। यहाँ एक सज्जन के पास मीरां के पदों के संग्रह का एक हस्तलिखित ग्रंथ बहुत पुराना बताया जाता था। कैप्टेन साहब ने बताया कि इस संग्रह में मीरां के सर्वाधिक पद हैं। जब हम गये तो उस घर में ताला पड़ा हुआ था। अतः ग्रंथ के दर्शन नहीं कर पाये। मैं समझता हूँ कि यह संग्रह और इसी प्रकार के अन्य बहुत से संग्रह अब भी अछूते हैं। शिवराजपुर में मीरां की बहुत प्रतिष्ठा है। यहाँ एक भव्य मंदिर में 'गिरधर गोपाल' की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा है। यह कहा जाता है कि यात्रा करते हुए मीरां यहाँ आयी थीं, और ये 'गिरधर गोपाल' यहीं स्थापित होने के लिए मचल उठे। तो मीरां जी ने उन्हें यहीं पधरा दिया।

मीरां की कई मूर्तियों का विवरण स्व० पुरोहित जी ने 'मीरांवृहत्पद संग्रह'–भाग–१ की भूमिका में दिया है। किन्तु, इस मूर्ति का कहीं कोई उल्लेख नहीं। यह स्वयं में अनुसंधान का एक विषय है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पर, इस विवरण से यह बात प्रकट होती है, 'मीरां' पर शोध के लिए अभी कितने ही क्षेत्र अछूते पड़े हैं।

(५) The root of poetry, religion and magic were the same. (P. 423)

(६) I mean that the earliest poetry arose from incantation, from the use of powerful and evocative words and rhythms, by means of which man could come into communication with his creator and with the essence of all created things........(P. 423)

(७) Man believed that by the use of certain rhythms he might obtain a power over rhythms of the earth the budding, growing and reproduction. (P. 423)

(८) In the sacred books of China, for instance in the Li. Ki, XVII, ii (tr. James Legge), we read that 'the ancient Kings........brought (music) into harmony with the energy that produces life'. The purposes of music and of poetry were then one.

Dr. Harrison says of the hymn from which the above quotation is taken, 'The God invoked is not present............ He is bidden to come and apparently his coming........his very existence, depends on the ritual that invokes him'. In other, words, his coming and his existence depend on the magic of words and the magic of rhythms.

(5 - 8 from Cassell's Encyclopaedia of Literature Vol I. pp. 423 - 424)

(९) मीरां की प्रेम-साधना - प्रस्तावना पृ० २

(१०) मीरां स्मृति ग्रंथ पृ० १३७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

—संदर्भ ग्रंथ—

१. Literary Criticism : A short history—William K. Wimsatt, & Cleanth Brooks.
२. Cassell's, Encyclopaedia of Literature (Vol I).
३. मीरां वृहत्पदावली (प्रथम भाग)—सं. स्व. पुरोहित हरिनारायणजी
४. मीरां पदावली—प्रो. शभुसिंह मनोहर
५. मीरां वृहत् पद संग्रह—पद्मावती शबनम
६. मीरांबाई और उनकी पदावली—देशराजसिंह भाटी
७. राजस्थानी भाषा और साहित्य—डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
८. संस्कृति के चार अध्याय—डॉ० रामधारीसिंह 'दिनकर'
९. मीरां की प्रेम साधना—भुवनेश्वर मिश्र 'माधव'
१०. मीरां स्मृति ग्रंथ—बंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता

सत्येन्द्र
निदेशक
राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
जयपुर—४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरां-बृहत्पदावली

द्वितीय भाग

१

अपना प्रभूजी की वाट री ॥
मैं कुंए न भेजूं ॥
नैंनन की मुसलात[1] ॥
आपन जाय दुवारका में छाये ॥
झूंठी लख[2] दे पातरी ॥
मोर मुकट पीतामर[3] सोहै ॥
सोधै[4] भीनी गात री ॥
वृंदावन की कुंज गली में ॥
दरसन[5] भई सुनाथ री ॥
मीरा[6] के प्रभू गिरधर नागर ॥
आनि मिले सुप्रभात री ॥ १ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२, पत्राङ्क-१७२

सं० पाठ १- १. कुसलात । २. लिख । ३. पीताम्बर । ४. सोंधं । ५. दरसण । ६. मीरां ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२

अपराधी तैं रांम न जान्यो रे
हारा सौं तन छाडि[1] कै रस सौं विश्व छान्यौ रे ॥ १ ॥
जठरागिनि तै काढ़ि[2] के बाहर ले आन्यो रे
उहां तै आयौ कौल कर इहां विशरान्यौ[3] रे ॥ २ ॥
मात पिता सुध[4] बंधवा[5] इन सौं मन भान्यौ रे
मीरां प्रभु[6] गिरधर विना कोउ लष[8] सयान्यो रे ॥ ३ ॥

३

अब मारा[1] गोकल[2] का विहारी[3] जीस्या[4] ॥ ठाकुर ना जांणू कद आसी ॥ टेर ॥
प्रभू जी छोड्या पीयर ओर सासरो ॥ जाय वसाई कासी ॥
मेवाडा[5] को मुख नही देखु[6] ॥ हरी दरसण की प्यासी ॥ १ ॥
अटकी नाव सममद[7] बीच[8] बेडा[9] ॥ प्रभूजी पार लगासी ॥
मीरां को तो कछू नहीं बीगडो[10] ॥ बीडज[11] रावलो[12] जासी ॥ २ ॥
प्याला मे वीष[13] गोल[14] दीया[15] है ॥ पीया है नीज दासी[16] ॥
कर चरणामत पी गई मीरां ॥ हो गई चंद्रकला-सी[17] ॥ ३ ॥
सब संतन ने देखत मीरां ॥ हरी को नाम समासी ॥
मीरां के प्रभू अवीनासी[18] ॥ राणा जी पीसतासी[19] ॥ ४ ॥

---

१. संत साहित्य संगम बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से।
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से उद्धंत।

सं० पाठ २- १. छांडि । २. काढ़ि । ३. विसरान्यौ । ४. सुत । ५. बांधव । ६. प्रभू । ७. गिरधर । ८. लख ।
" " ३- १. म्हारा । २. गोकळ, गोकुल । ३. बिहारी । ४. जिस्या । ५. मेवाड़ा । ६. देखूं । ७. संमंद, समद । ८. विच । ९. बेड़ा । १०. बिगड्यो । ११. बिड़द । १२. रावळो । १३. बिख । १४. घोळ । १५ दिया । १६. निजदासी । १७. चंद्रकळासी । १८. अबिनासी । १९. पिछतासी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४

अब तो बुढ़ापो आयो ये ।। टेर ।।
बालपणु[1] हंस खेल गमायो मात पिता भुलरायो ऐ ।। १ ।।
भरतौ जोबन माही[2] काम कमायो रे लालैच[3] मैं[4] लपटायो ऐ ।। २ ।।
बीरध भयो जदि चेत्या[5] व्यापी रे सीस धूजरण ने थायो ऐ ।। ३ ।।
बेटा तो बहू थांरी कांण नै माने रे डोला सूं ठुकरायो ऐ ।। ४ ।।
मीरा[6] कहै[7] प्रभु[8] गीरधर[9] नागर गोमद[10] कबुऐ[11] न गायो ऐ ।। ५ ।।

५

अब मोसूं बोलौ म्हारा सैंन ।।
तुम बोल्या[1] विनि जीवड़ो दुखत होइ ।।
सुख नाहीं[2] म्हांरै चैन ।। टेक ।।
काजर झरि झरि बदन बिगरि गयौ ।।
चखरातर झरि नैंन ।।
ऊभी ठाडी[3] अरज करत हूं ।।
अरज करत भई रैंनि[4] ।।
सुकल रैंनि मैं[5] सेझ संवारी ।।
कब र पधारौ[6] सुख दैंन ।।
मीरां के प्रभू मोहन पधारे ।।
अंग मिलासे[7] दोऊ नैंन ।। १ ।।

---

१. संत सा० सं० बीकानेर के ह० लि० ग्र० से ।
२. भार० वि० मं० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से ।

सं० पाठ ४- १. बालपणों । २. मांही । ३. लालच । ४. में । ५. चिंता, चेतना ।
६. मीरां । ७. कहे । ८. प्रभू । ९. गिरधर । १०. गोविंद । ११. कबहूं ।
,, ,, ५- १. बोल्यां । २. नांही । ३. ठाढ़ी । ४. रैन । ५. में
६. पधारो । ७. विलासे ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६

राग लबायची

अब माने[१] गुढ़एा दे मोरी माय ।
भव भव मे मै[२] गऊ चराई
थाके[३] लाका[४] पाय[५] ॥ १ ॥
प्रात समै मैं कर कलेवो
चारएा जासु[६] गाय ॥ २ ॥
मीरा[७] के प्रभु[८] गिरधर नागर
लीयो है उर लपटाय ॥ ३ ॥

७

अरी हों तो याही उमाहै[१] लागि रही री ।
कव्रऊन[२] पिय मो सौं[३] प्रेम जनायौ[४] ।
कबहून[५] हसि[६] मोरी बहियां गही री ।
अब कैसें जीवन बनें मोरी आली ।
कबहून पिय मो सौं जीय की कही री ।
मीरां के प्रभु[७] गिरधर नागर ।
कोन[८] चूक मोहि मांहि लही री ॥ १ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।
२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुरके ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्रांक-६३

सं० पाठ ६- १. म्हांनें । २. मैं । ३. थांकै । ४. लागां, लागूं । ५. पांय ।
६. जास्यूं । ७. मीरां । ८. प्रभू ।
" " ७- १. उमाहो । २. कबहूंन । ३. सौं । ४. जणायो । ५. कबहूंन । ६. हंसि ।
७. प्रभू । ८. कोन, कवण ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८

अरियां[1] नि मांनी सुनि नि अंमा।
मनमोहन दे रूप लुभानी।
साढ़ी गल नेक नाहीं मांनी।
लोकां डर छपक छिपांवा।
भरि भरि आवत पानी।
लाली लखि लखि लूकां लावै।
तकि तकि दै हमुंनै[2] ताना।
मैं भी जीती लाज न कीती।
ओर न दिल बिचि आंनी।
मीरां प्रभु[3] गिरधर गल साढ़ी।
ढ़पी छपी सब जांनी ॥ १ ॥

९

अरी आली तूं उठी लालन कै
अंग संग बिछुरी[1] मांग अलकै
छुटी कांनन कौ कुटिल बिराजत
मुकट मणिल सकल बन उलटी
छवि सों मुक्तमाल लर[2] तूटी[3]
आप रंगीली सारी कुचन मै[4] अतिभारी
अैसी बनी मांनौं[5] बीरवहोटी
मीरा[6] प्रभु[7] पैं अनत तैं सतिमांनी
कांमत पती बिरहा लूटी

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क ३३
२. राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क-८२

सं० पाठ ८- १. अंखिया। २. दे हमुंनै। ३. प्रभू।
,, ,, ९- १. बिछुड़ी। २. लड़। ३. टूटी। ४. मैं। ५. मांनो। ६. मीरां। ७. प्रभू।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१०

अलबता मे[1] कंही नार वरो छु[2] जी ब्रजराज बड़ी सु[3]
कबकी नार वडो[4] सू जो धीनानात[5] वडी सु
सब गोपीअह्न[6] सु लाला हस[7] हस बोलोह[8]
मे[9] कई[10] नार वरी[11] छु[12] जी धीनानात वडी छु ।। १ ।।
सब गोपीअया[13] मोतीअन की माला मैं तो हीर कणोरी जी
वाजराज[14] वडी सु कवकी नार बडी सु जी
धीनानात वडी सु जी ।। २ ।।
सब गोपचा[15] तो लाला चपला[16] री कलिअचा[17]
हम तो फूल गुलाबी जी वरजराज वडी सु
धीनानात बडी सु जी ।। ३ ।।
मारो[18] तो घेणो[19] सगलो[20] जागी गोधन जासी प्यारो
वरजराज बडी सू जी कवको नार वड़ी सु जी
धीनानात बडी सू जी ।। ४ ।।
मीराबाई[21] के प्रभु[22] गरधर[23] नागर हरी चरण चत[24] लगोजी
व्रजराज वडी सु कवकी नार बडी सु जी
धीनानात वडी सु जी ।। ५ ।।

११

असल फकीरी रुडी[1] है थारी[2] वैरागी[3] रामां ।। टेक ।।
भिज्ञा[4] घाल्यां लेवो नांही टुकडा[5] मैं[6] सवुरी[7] हो ।। १ ।।
आसण मार इकत छेय वैठा[8] छाड[9] दई दलगीरी हो ।। २ ।।
मीरां के प्रभु[10] गिरधर नागर जोग जुगत सब जांणी हो ।। ३ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०–३४६२२, पत्रांक–१०-११
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४३, पत्रांक–३३

सं० पाठ १०- १. मैं । २. बड़ी छूं । ३. सूं । ४. (क) बड़ी (ख) खड़ी । ५. दीनानाथ । ६. गोप्यां । ७. हंस । ८. बोलो । ९. मैं । १०. कहीं । ११. (क) बुरी (ख) बड़ी । १२. छूं । १३. गोप्यां । १४. ब्रजराज । १५. गोप्यां । १६. चंचला । १७. कळियां । १८. म्हारो । १९. गेहणे । २०. सगळो । २१. मीरांबाई । २२. प्रभू । २३. गिरधर । २४. चित ।

,, ,, ११- १. रूड़ी । २. थांरी । ३. भिक्षा । ५. टुकड़ा । ५. में । ६. सबुरी । ७. छे ८. वैठा । ९. छोड़े । १० प्रभू ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२

अहोर को प्यारो प्यारो री माई सावरो[1] ।
मैं दधि बेचन जात वृंदावन[2] ।। छीन लयो दधि सावरो[3] री ।
येक[4] नाचत येक मृदंग[5] वजावत[6] ।। येक गावत दे दे तारी रे ।।
वृंदावन की कुंज गलींन[7] मैं[8] ।। सेस गोपी यक-कांन कानो री ।।
वृंदावन मैं[9] रास रच्यौ है ।। नरत करै गिरधर धारो री ।।
मोरा[10] के प्रभु[11] गिरधारी नागर ।। हरि चरना[12] चित मेरो मेरो री माई ।। १ ।।

१३

अहो मेरे प्रीतम नाहै के तुम भले आव नही ।।
अहो तेरी सुरति[1] की वलिजाउ[2] के दरस दीखावना हो ।।
आयो है सावन[3] मास कै[4] मोर मलारिया हो ।
अहो लाल चात्रग टेर सुनाहै[5] वरसे लाईया हो रे ।।
चात्रग जीहा जाय मेरा साईया[6] ।।
अहो लाल कागद लिखी भेजो पीया रे पीव न हो ।।
निस दिन रहत हो[7] कुसाल सदा सुख जीवना ।।
अहो लाल जैन[8] मीरा[9] वलजाहू[10] येता हठ कु[11] कीया हो ।। १ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६०, पत्राङ्क-४३
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६०, पत्राङ्क-१७३

सं० पाठ १२- १. सांवरो । २. व्रदांवन । ३. सांवरो । ४. एक । ५. म्रदंग । ६. बजावत । ७. गलिन । ८. मे । ९. में । १०. मीरां । ११. प्रभू । १२. चरणा ।

,, ,, १३- १. सुरत । २. बलिजाऊं । ३. सांवण । ४. के । ५. सुनाए । ६. सांईया । ७. ही ८. जन । ९. मीरां । १०. बलिजाऊं । ११. क्यूं ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४

अहो प्यारे बांसुरी नेक सुनाई हौ।
बृंदावन की कुंज में[1] नेक देखि दिखाई।
आव हौ[2] हम बिरहनि[3] ब्याकुल[4] भई।
हमरी बेद न जाय हौ।
या बेदन कौ[5] बैद बांसुरी।
गिरधर लाल वजाय हौ।
जा पर कृपा[6] करौ[7] नंदन।
ताकै सदाइ सहाय हौ।
मोहन मूरति नवल किशोरी।
दासी मीरां बलि जाय हौ॥ १ ॥

१५

आज रंगीली रेण प्रीतम पांवणा हो राज ॥ टेर ॥
तन सनगारु[1] सेज सवारु[2] ॥ अंजन सारु[3] धन वारु[4] ।
स्याम सुंदर तन धारु[5] ॥ लेसूं भावना माराज[6] ॥ १ ॥
फले मनोहर[7] मन मन फूले ॥ सदा सुवाग पटल तुख डुले ॥
सब दुख भूले ॥ फूले[8] करसु[9] वदावना[10] हो राज ॥ २ ॥
सुंणे[11] सखीरी[12] भाग हमारो ॥ वर पायो ब्रजराज दुलारो ॥
नख पर गीखर[13] धारे ॥ वंसी वजावणा ॥ ३ ॥
जनम जनम की पीड[14] मोटाड़ी[15] ॥ अपनी कर लीनी चरनाही ॥
मीरा[16] हरी मन भाइी ॥ मगल[17] गावना[18] हो राज ॥ ४ ॥

---

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क ११-१२
२. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ १४- १. में । २. हो । ३. बिरहणी । ४. व्याकुळ । ५. को । ६. कृपा ७. करो ।
" " १५- १. सिणगारुं । २. संवारु । ३. सारुं । ४. वारुं । ५. धारुं । ६. महाराज ।
७. मनोरथ । ८. फूले । ९. करसुं । १०. बधावना । ११. सखीरी ।
१२. सुंणे । १३. गिरवर । १४. पीड़ । १५. मिटाड़ी । १६. मीरां ।
१७. मंगल । १८. गांवणा ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६

ग्राज तो माई सांवरा ने वंसरी[1] वजाई[2] है ॥ टेर ॥
सुरण मुरली की तांना ॥ सुनी ग्रांका[3] सुटीधांना ॥
सुरण कर व्रज बधु ॥ वन ही कु[4] धाई हे ॥ १ ॥
सुरण मुरली की तांना ॥ वसवा[5] न पोवे धांना ॥
मीन मृग धरे न धीरा ॥ ग्रास चलाई है ॥ २ ॥
सुरणत उडगरण—पती पवन की मग—गती[6] ॥
जन मीरां जादुपाती[7] ॥ जे जे वंसी गाई है ॥ ३ ॥

१७

ग्राज तो पेच पाग के नोके
मोहन कोंन[1] वनाय दये है ।
ग्रैंडी वैंडी चाल कहां सीखे हो
प्यारे राते नेंनन[2] ये ।
उरन को चंहन वन्यों छतीयन पर
ता संग खेल भये हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर बैठौ जु[3]
वौटौ[4] लछन वे न गये हैं ॥ १ ॥

प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६९, पत्राङ्क-१६५
राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क-५२

पाठ १६-१. बसरी, बांसुरी । २. बजाई । ३. ग्राका । ४. कूं । ५. बसवा ।
६. गति । ७. यदुपति ।
" १७-१. कौंन, कवण । २. नैंनन । ३. जी । ४. बैठो ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४

अहो प्यारे बांसुरी नेक सुनाई हो।
बृंदावन की कुंज में[1] नेक देखि दिखाई।
आव हौ[2] हम विरहनि[3] व्याकुल[4] भई।
हमरी बेद न जाय हो।
या बेदन कौं[5] बैद बांसुरी।
गिरधर लाल वजाय हौ।
जा पर कृपा[6] करौं[7] नंदन।
ताकै सदाइ सहाय हौ।
मोहन मूरति नवल किशोरी।
दासी मीरां बलि जाय हौ॥ १॥

१५

आज रंगीली रेण प्रीतम पांवणा हो राज॥ टेर॥
तन सनगारु[1] सेज सवारु[2]॥ अंजन सारु[3] धन वारु[4]।
स्याम सुंदर तन धारु[5]॥ लेसूं भावना माराज[6]॥ १॥
फले मनोहर[7] मन मन फूले॥ सदा सुवाग पटल तुख डुले॥
सब दुख भूले॥ फूले[8] करसु[9] वदावना[10] हो राज॥ २॥
सुणे[11] सखीरी[12] भाग हमारो॥ वर पायो व्रजराज दुलारो॥
नख पर गीखर[13] धारे॥ वंसी वजावणा॥ ३॥
जनम जनम की पीड[14] मोटाई[15]॥ अपनी कर लीनी चरनाही॥
मीरा[16] हरी मन भाइ॥ मगल[17] गावना[18] हो राज॥ ४॥

---

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क ११-१२
२. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

सं० पाठ १४- १. में। २. हो। ३. बिरहणी। ४. व्याकुळ। ५. को। ६. कृपा ७. करो।
,, ,, १५- १. सिणगारुं। २. संवारु। ३. सारुं। ४. वारुं। ५. धारुं। ६. महाराज। ७. मनोरथ। ८. फूले। ९. करसुं। १०. बधावना। ११. सखीरी। १२. सुंणे। १३. गिरवर। १४. पीड़। १५. मिटाइी। १६. मीरां। १७. मंगल। १८. गांवणा।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६

आज तो माई सांवरा ने वंसरी[1] वजाई[2] है ॥ टेर ॥
सुण मुरली की तांना ॥ सुनी आंका[3] सुटीधांना ॥
सुण कर व्रज वधु ॥ वन ही कु[4] धाई हे ॥ १ ॥
सुण मुरली की तांना ॥ वसवा[5] न पोवे धांना ॥
मीन मृग धरे न धीरा ॥ आस चलाई है ॥ २ ॥
सुणत उडगण—पती पवन की मग—गती[6] ॥
जन मीरां जादुपाती[7] ॥ जे जे वंसी गाई है ॥ ३ ॥

१७

आज तो पेच पाग के नोके
मोहन कोंन[1] बनाय दये है ।
ऐंडी बैंडी चाल कहां सीखे हो
प्यारे राते नेंनन[2] ये ।
उरन को चंहन वन्यों छतीयन पर
ता संग खेल भये हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर बैठौ जु[3]
बौटौ[4] लछन वे न गये हैं ॥ १ ॥

---

१. प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६८, पत्राङ्क-१६५
२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क-५२

पा० पाठ १६-१. बसरी, बांसुरी । २. बजाई । ३. आका । ४. कूं । ५. बसवा ।
६. गति । ७. यदुपति ।
„ १७-१. कौन, कवण । २. नेंनन । ३. जी । ४. बैठो ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१८

आजि तो सखी री मेरे उधो[1] आये पांहूणां ॥ टेक ॥
घस—घस चंदण अंग लिपटावौ स्याम
अजहू[2] न, आए स्यांम तपति बुझावणां ॥ १ ॥
मुथरा मैं कंस मारौ[3] लंकापति आप गारयौ[4]
सोई रुप[5] वलि छल्यौ भेख धरयौ[6] वांवना[7] ॥ २ ॥
द्रोपता को लाज काज छारिका[8] सो[9] ध्याऐ हे नाथ
मीरां तौ तिहारी दासी प्रभू बेगि आवणां ॥ ३ ॥

१९

आजि म्हारैं पांवणीया बैरागी जी ॥ जनम सुधारण सतगुर आयाजो ॥टेक॥
आजि सखि म्हांनें सुपनौ री आयौ ॥ संत बधाई कोई ल्याया जी ॥१॥
ऊंचो चढ़ि हूं[1] जोवण लागी ॥ म्हारा सतगुर निजर पधायाजी[2] ॥२॥
प्रेम के धोरैं उतरत देख्या ॥ आण पिया राजन आया जी ॥३॥
भगवांसा कपड़ा कर में डोरी ॥ दरसण की बिलहारी[3] जी ॥४॥
भाव भगति सूं करुं रसाई[4] ॥ प्रीति की भारी भर ल्याऊं जी ॥५॥
आजि सखी हूं तौ हरख फिरुं छूं ॥ सतगुर कांई म्हानै वगसै जी ॥६॥
सील संतोष क्रिपा करि दींन्हा ॥ मो उर आनंद कीन्हा जी ॥७॥
पण परसाधी[5] म्हांनें सतगुर जी दीन्ही ॥ मो उपरि किरपा कीन्ही जी ॥८॥
प्रीति करै न राम पद रज लेस्युं ॥ म्हारो सीस चरण सर देस्युं जी ॥९॥
चरण धोइ चरणामत लेस्युं[6] ॥ म्हारा पाप विलै[7] होइजासी जी ॥१०॥
कर जोड्या रामजी अरज करुं छुं[8] ॥ म्हारौ जनम सुधारौ सतगुर स्वामीजी ॥११॥
मीरां कहै प्रभु हरि अविनासी ॥ जनम जनम की मैं दासी जी ॥१२॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी· जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९१, पत्रांक-३' ७
२. भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से ।

सं० पाठ १८-१. ऊधो । २. अजहूंन । ३. मार्‍यो । ४. गार्‍यौ । ५. रूप । ६. धारयौ ।
७. बांवना । ८. द्वारिका । ९. सो ही ।
" " १९-१. हूँ । २. परा आया जी । ३. बलिहारी । ४. रसोई । ५. परसादी
६. चरणामृत लेस्यूं । ७. विलय । ८. करूं छूं ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२०

आली री गुन समंगल वलमां ।
मोहन विचित्र मन मूरति आए ।
मेरे ग्रह है क्रपाल[1] ।।
जबतैं लालन मेरे आंवन कीनौंरी ।
तब हौं भारी लीनी भुज अंकमाल ।
पलकैं[2] पांवड़े करो ।।
सुभ घरी महूरत जबतैं आंवन कीनौ ।
निस भरे सरव मधि ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर ।
परयेमे[3] रस के सीले[4] लाल ।। १ ।।

२१

आवण वारा म्हारे कूंण हे जी ।। म्हारी आंषडली[1] हौरा ऐ फरुकं ।।
आवण हारा मांहार[2] सतगुरु ।। मांहारी[3] आंषडली फरुकै ।। टेक ।।
आन साषी[4] सपनौ भईयो[5] रे ।। म्हारे आंगण आंवौ मौरचो ।।
हरी जी रौ[6] आवण मैं सूणीयौ रे हैली ।। म्हांरे हरदऊग दोड़ीयौ ।। १ ।।
वटा[7] उण देसरा रे ।। कहीजे संदेसौ जाई ।।
तुम विना व्यांकुल मैं भई रे ।। वार वार सुद लीज्यौ यौ ।। २ ।।
मीरां कहै सुणौ केसवा ।। तूम[8] विनां कहौ कहां कीजै ।।
पल-पल नेण हौ जपूं ।। म्हांरौ[9] हरी[10] विनां जीवड़ौ[11] सीज ।। ३ ।।

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७, पत्रांक-६४-६५

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १२५७७, पत्रांक-१७२

सं० पाठ २०-१. कृपाल । २. पलक । ३. परेम, प्रेम । ४. रसीले ।

„ „ २१-१. आखड़ली । २. म्हारे । ३. म्हारी । ४. सखी । ५. भयो । ६. रो । ७. बराऊड़ा, बटाऊड़ा । ८. तुम । ९. म्हांरो । १०. हरि । ११. जिवड़ो ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२२

आव री आयो सजनी खेलो होरो ये ॥
चोवा चंदन बुक वंदन अवीर भरे—भरि जोरीया[१] ॥
खेल मच्यौ रस रेलि—पेलि को नवल किसोर किसोरिया[२] ॥ टेक ॥
तुम सावरे[३] हम गोरीया तो कला हमारी करहै देहे रंग चोहोरीया[४] ॥
मोरा[५] कै प्रभु गिरधर नागर चरण–कवल[६] लपटानी ॥ वातु ॥

२३

आवन कीह[१] हरि कह जो गया ॥
कब आवैगी वैरण परसूं ॥ टेर ॥
चित चावै उड़ जाय मिलूं ॥
उड़ीयो[२] नार जाय विना परसूं ॥ १ ॥
आवो मेरे . सांवरा आवो मेरे ज्यांनी ॥
ताहि कूं लगाऊं अपना गलासूं ॥ २ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर ॥
कवही मिलै मोहन हमसूं ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६०, पत्रांक-७१-७२

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से।

सं० पाठ २२-१. जोरी, जोरियां। २. किसोरी। ३. सांवरे। ४. चहोरी, चहोरियां।
५. मीरां। ६. कमल।

„ „ २३-१. की। २. उडियो।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२४

अेजो लाला चरण कमल वीलीअयारी[1] ।
झट मील लो: सपूरण ।
डफ बाजे कुटील कनरीअया[2] को ।
डफ बाजे हो जी लाला ।
गीत नाचत हे बीनमाली[3] ।
ज्या जावे ज्या रत्र[4] में भीजोवे ।
अेजी लाला करत जोवनी अयारी[5] जोवी ।
डफ बाजे कुटल कनईअया को ।
मीरा[6] के प्रबु[7] बेग पधारो ।
अेजी लाला चरणा[8] में चत[9] धारलीअयो[10] ।
डफ बाजे कुटल कनईअया को ।

२५

ऐ मा[1] हेला देति[2] लाजु[3] झला[4] दियो न जाय ॥
तन याकै[5] बसरी[6] किंनि[7] छ बसरीया[8] ॥
तन मन हमारो येजि[9] लीवो छ चुराया[10] ॥१॥
हे मा हेला देती लाजूं झालो दियो न जाय ॥
वरज रहि वरजो नंहि मानै ॥२॥
नंद रा[11] गुमानि[12] हासें[13] चलो[14] गयो छै रूठाय ॥
मीरा[15] के प्रभु गीरधर[16] नागर सावली[17] सुरत म्हारे हीये म[18] समाय ॥३॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४६२२, पत्रांक २७
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २५३४४, पत्रांक-७५

सं० पाठ २४-१. बलिहारी । २. कनैया, कन्हैया । ३. वनमली । ४. इत्र । ५. जोवनियारी
६. मीरां ७. प्रभु । ८. चरणां । ९. चित । १०. धारलीयो ।
" " २५-१. मां । २. देती । ३. लाजूं । ४. झाला, झालो । ५. याकै । ६. वश री ।
७. कीनी । ८. बंसरिया । ९. ऐजी । १०. चुराय । ११. रो ।
१२. गुमांनी । १३. हांसे । १४. चल्यो । १५. मीरां । १६. गिरधर ।
१७. सांवळी । १८. मा, में ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२६

ऐक[1] दिन क्रिसन[2] मेरै[3] कहै[4] गये ग्रावणां
बाचा तो कुंबाचा[5] भई ।। पकडुगी[6] दावणां ।।
ग्रजहूं न ग्राये मेरै ।। बंसी के बजावणां ।। १ ।।
बल[7] कुँ[8] छलनि[9] चले ।। भेख धरे वांवना ।।
मैथरा[10] म[11] कंस पछाड़े ।। लंकापति रांवणा ।। २ ।।
प्रैह्लाद[12] की प्रतंज्ञा[13] राखी ।। बसदेव[14] के बंध छुडाए ।।
द्रोपदा की लाज्या[15] राखी ।। चीर कुं वधावणां ।। ३ ।।
पीया कौ ग्रनेसौ[16] भारी ।। कैसैं कहूं[17] री प्यारो ।।
मीरा[18] के प्रभू ग्रधर[19] नागर ।। तेरो जस गावणां ।। ४ ।।

२७

उवव जी म्हानै[1] लै[2] चालौ[3] स्यामरा[4] रै देस ।। टेर ।।
कवकी छौडी मथुरा नगरी छोड दीयौ[5] नंद जी को देस ।। १ ।।
करमै[6] कमंडल ग्रोर मृग-छाला करसूं[7] मैं ग्रादेस ग्रादेस ।। २ ।।
कंथा सिवाडुं[8] गल विच डारुं करुं भगवां भेस ।। ३ ।।
मीरा[9] कहै प्रभु गिरधर नागर मौ मन वडौ ग्रंदेश ।। ४ ।।

---

१. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के हु० लि० ग्र० सं० ७६६५, पत्रांक-१८
२. ग्रनूप सं० ला० लालगढ़ के हु० लि० ग्र० सं० ११२ से ।

सं० पाठ २६-१. एक । २. कृष्ण । ३. मेरे । ४. कह । ५. कुबाचा । ६. पकड़ूंगी । ७. बलि । ८. कूं । ९. छलने । १०. मथुरा । ११. में । १२. प्रह्लाद १३. प्रतिज्ञा । १४. वसुदेव । १५. लज्जा । १६. अंदेसो । १७. कहूं । १८. मीरां । १९. गिरिधर ।

,, ,, २७-१. म्हांने । २. ले । ३. चालो । ४. सांवरा । ५. दियौ । ६. कर में । ७. करस्यूं । ८. सिवाडूं, सिलाऊं । ९. मीरां ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२८

उधो[1] बेगा जाज्यो राज ।।
कहैज्यौ[2] सांवरीया नं मारै[3] ।। म्हला[4] आज्यौ राज ।। टेर ।।
बोहोत[5] दिन बीतां म्हारी सुध न लई ।। नैना नीद[6] तो गई ।।
चांनणी सी रात म्हारै ।। बैरण भई ।। १ ।।
सावणीये री रात बागां कोयलीया[7] बोलै ।।
मारी छली[8] क्यूं छौलै ।। पपी रे[9] पपीईया[10] मारी
अंत क्यूं तोलै ।। २ ।।
मीरां तो बीनां[11] कल नां पडै ।। यौ दुख क्यूं न हेरे[12] ।।
छतीयां तपै नेणां नीर तौ[13] भरै[14] ।। ३ ।।

२९

उधोजि[1] नैण रहे जड[2] लाय
नदीया[3] वइजात[4] दीन - राती[5] ।
मुतलब के गरजु हो उधो
सांम[6] संगाति ।। अकडी० ।।
उधोजि कुवज्या सै नैह लगाय
हमकु[7] लिखी है जोग दिवाति ।
मुतलव के गरजु हो उधो० ।।
उधोजि कब लग करु पुकार
मैं तो कुरल्या–जु[8] कुरलाति[9] ।
उधोजि मीरांवाइ वल[10] जाय
हू[11] तो चरण—कमल रग—राति[12]

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० १७० से।
२. राज० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से।

सं० पाठ २८-१. ऊधो। २. कहज्यो। ३. म्हारे। ४. महलां। ५. बहुत। ६. नींद। ७. कोयलियां। ८. छाती। ९. पापी रे। १०. पपीहा। ११. विन, विना। १२. हरे। १३. तो। १४. भरे।

" " २९-१. ऊधोजी। २. झड़। ३. नदिया। ४. बहो जात। ५. दिन-राती। ६. स्याम। ७. कूं। ८. कुरज्यां ज्यूं। ९. कुरळाती। १०. हूँ। ११. बलि। १२. रंग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३०

ऊदा जो हरी बना रीग्रोअ ने जाग्रे[1] सांवरिया ने के दीजो समझाओ[2] ।
बसीवारा[3] ने के[4] दीजो समझाग्रे ।
गंगा जमना त्यौं[5] वरई । ऊदा जी कुल नार ईक मलाग्रे ।
साकरी ग्रमाने[6] के दीजो समझाग्रे ।
अनखाती राद[7] प्य की[8] जी । ऊदा जी गोपया[9] रई[10] मुरलाई[11] ।
सावरीअयाने[12] के दीजो समझाई ।
आंगलीग्रभारी[13] मुंदड़ी जी । जदा[14] जी रलकी[15] आवे मेरी बाग्रे[16] ।
सांवरीग्रयाने के दीजो समुझांग्रे ।
ग्रोइ जल जमना रो जुलवौजी[17] । ऊदा जी अमारे[18] कदम की छाग्रे ।
सांवरीअयाने के दीजो समझाग्रे ।
वनरावन[19] की कुज[20] में जी । सव गोप्या को संजोग ।
सावरिया ने के दीजो समझाग्रे ।
मीरां हरके[21] लाडली जी । ऊदा जी प्यारे सुण जो सरजणहार ।
गोबीदा[22] ने के[23] दीजो समझाग्रे ।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४६२२, पत्राङ्क-३२

सं० पाठ ३०-१. ऊधोजी हरि विन रह्यो न जाय । २. समझाय । ३. बंसीवाळा । ४. कह । ५. ज्यों । ६. सांवरिया नें । ७. राधा । ८. प्यारी । ९. गोप्या । १०. रही ११. मुरझाई, कुरळाई । १२. सावरिया ने । १३. आंगलिया री । १४. ऊदो । १५. रळकी । १६. बाएं । १७. झूलवौजी । १८. यारे । १९. वृन्दावान । २०. कुंज । २१. हरि की । २२. गोविंदा । २३. कह ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३१

उविरी[1] होरी हो रही । तु[2] अब क्या सोवै री[3] ।। टेक ।।
रैनै[4] गई तो जान दे सजनी । दीनै[5] मती षोवे[6] री ।। १ ।।
यो संसार नाव कौ मेलो यामैं तेरा[7] को री ।। २ ।।
मातं[8] पीता[9] सुत कूटमं[10]–कबीलो । यातं[11] तेरा–मो है री ।। ३ ।।
मीरा[12] के प्रभू हरि अंबनासी[13] यो नातो दीन[14] दो है री ।। ४ ।।

३२

राग मारु

कदि र मिलैगो आई रमयौ[1] महांन[2] कदि मिलैगो आई ।।
ज्यांरी ओल[3]री आवै बारुवार[4] ।। टेक ।।
बुझो[5] रुड़ा जोईसी[6] हो ।। रुड़ौ लगन विधचारि[7] ।।
कहै गोव्यंदा[8] कव आयसी[9] ।। म्हारै आगणिजै[10] पाऊं[11] धारि ।। १ ।।
पंछी बुभु[12] पल गिणौ ।। उभी मारिग[13] जोई ।।
कोई बतावै हरि नै आवतो ।। माहारौ[14] हीयौ उरे रौ होई ।। २ ।।
उठत बैठत निरपता[15] हौ ।। नैन रह्या रत—वाहि[16] ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० (इन्द्र) ५२, पत्राङ्क–२७
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२, पत्राङ्क–५२

सं० पाठ ३१–१. उठो री । २. तूं । ३. सोवे री । ४. रैन । ५. दिन । ६. खोवे । ७. तेरो । ८. मात । ९. पिता । १०. कुटुम्ब । ११. यातें । १२. मीरां । १३. अविनाशी । १४. दिन ।

" " ३२–१. रमैयो । २. म्हांने ३. ओळूं । ४. बारम्बार । ५. बूझो । ६. जोशी । ७. विचार । ८. गोविंदो । ९. आसी । १०. आंगणिये । ११. (क) पांव (ख) पांऊ । १२. बूझूं । १३. मारग । १४. म्हारो । १५. निरखतां । १६. बाही ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हरिजी रो मारिग हेरतां ॥ म्हांने रैन गई तिन[17] जाय ॥ ३ ॥
अण मिलया औलु[18] घणी हो ॥ मो मनि वारौ-वार ॥
उर्भलि फुटज्या कारज्यौ[19] ॥ म्हांनें नैन षाडि[20] धार ॥ ४ ॥
ज्या[21] मिलयां आनंद घणा हौई बीछरिया[22] बैराग ॥
हरिजी रौ मारिग हेरिता[23] ॥ म्हे तौ षडिच[24] उडाऊं काग ॥ ५ ॥
अहि औंसर आयें न हौ ॥ गयौ संदेसौ षुटि[25] ॥
हीयौ पुरांणी नाव ज्यौं ॥ म्हांरौ गयो विचासु[26] टुटि ॥ ६ ॥
हाथणि देसी बोलीभो[27] हौ ॥ दाड्या उपरि दाह ॥
न जानु[28] कब हरि आईसी[29] ॥ म्हारै औगणगारी रो नाह ॥ ७ ॥
क्रपा[30] करि आवो हरी हौ ॥ जन अपणां कै भाय ॥
लावैं तौ आचलि लेस्या[31] वारणां ॥ ज्याकी[32] जन मीरा[33] बलि जाय ॥

३३

काई[1] रे कारण अण-बोला नाथ मासे[2] मुषडे[3] ॥
क्यु[4] नही बोलो नाथ मारो[5] ॥ टेर ॥
पेली प्रीत करी हरी हमसे प्रेम–प्रीत को जोलो (ड़ो) नाथ ॥ १ ॥
रेसम गाला गाडी गुल[6] रई ॥ कांई रे मोस[7] कर बोलो[8] ॥ २ ॥
मे छु[9] बेटी राजा भीवंरो कुबज्या बराबर कंई तोलो ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गोरधर[10] नागर ॥ हीरदा री गुडी[11] कोउंनी[12] पोलो ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

---

१७. दिन । १८. ओळूं । १९. काळजो । २०. खांडी । २१. ज्यां ।
२२. बीछड़ियां । २३. हेरतां । २४. खड़ी । २५. छूट ।
२६. बीच सूं टूट । २७. ओळमों । २८. जानूं । २९. आसी ।
३०. कृपा । ३१. लेस्यां । ३२. ज्यांकी । ३३. मीरां ।

सं० पाठ ३३-१. कांई । २. म्हांसे । ३. मुखड़े । ४. क्यूं । ५. म्हारा, म्हांसों । ६. गांठी घुळ ।
७. मिस । ८. खोलो । ९. छूं । १०. गिरिधर । १४. घुंडी । १२. क्यों नी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३४

कांई हट(ठ) जागो रे मोहरण दांणी ॥ टेर ॥
मैं दुध बेचरण जात विनावन[1] । लुटट[2] नार वीडांणी[3] ॥ १ ॥
व्रंदाविन की कुज[4]-गलरण[5] मे । मैं सेरी[6] चाल पिचांणी[7] ॥ २ ॥
वंसी वजावत ठाडो वाट में ॥ किस विध जाउ[8] जमना पांणी ॥ ३ ॥
मिरां[9] कै प्रभू गीरधर[10] नागर ॥ चरण-कमल लपटांणी ॥ ४ ॥

३५

काऊ विध मिलजा रे गिरधारी ॥ टेर ॥
गौकल[1] ढुंढ[2] वनावन[3] ढूंढी ढूंढी मथुरा सारी ॥ १ ॥
बनरावन मैं धेनु चरावैं ओढ कामरोया कारी ॥ २ ॥
मोर मुकट पीतांवर सोहै वंसी की छबि न्यारी ॥ ३ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल बलिहारी ॥ ४ ॥

३६

कांऊ देख्या री घनस्यामा ॥ स्याम हमारे रामां ॥ टेक ॥
वरसांणै सु[1] छली[2] गुवालरणी ॥ नंद गांव कुं जाणां ॥
अदवस[3] मोहन वंसी वजाई ॥ हरे हमारे प्राणां ॥ १ ॥
मोरमुगट पीतांवर सोवं ॥ कुंडल झलकै कांना ॥
सांवरी सुरत पर तिलक वीराजै ॥ जीणसु[4] लग्या मेरा ध्यानां ॥ २ ॥
सीव-सनकादीक[5] अरु वृमादीक[6] गावत वेद पुराणां ॥
मीरां कै प्रभु गीर[7][धर] नागर ॥ विज[8] तज अ[न]त न जाणां ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९, पत्राङ्क-११
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०–६२९९, पत्रांक–१४७

सं० पाठ ३४-१. वृन्दावन । २. लूटत । ३. विडांणी । ४. कुंज । ५. गलिन । ५. तेरी ।
७. पिछांणी । ८. जाऊं । ९. मीरां । १०. गिरिधर ।
,, ,, ३५-१. गोकुल । २. ढूंढ । ३. वृन्दावन ।
,, ,, ३६-१. सूं । २. चली । ३. अधबिच । ४. जिणसूं । ५. शिव सनकादिक ।
६ ब्रह्मादिक । ७. गिरिधर । ८. व्रज ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३७

कांनो कुबज्या[1] रे सिपलायो[2] मांसु[3] रुठै रुठै छेजी रुठै छै ॥
हीवडै हाथ न लाय सावरा[4] हूलडी-जीउ[5] रंहै कानो ॥ टेर ॥
आप करी कुवज्या पटराणी मासु[6] फीरै छै अफुटै[7] छै ॥ कानो० ॥
मिरा[8] कहै प्रभु गिरधर नागर लागि लगन माहरि[9] तुरं[10] छै ॥ काना० ॥

३८

राग नटवा

काहू न सुख लियो रे पीत्त[1] कर काहू न सुख ली लीयौ[2] ॥ टेर ॥
मृगलै प्रीत करी से नादन[3] सै सुनमुख[4] वांण सहो रे ॥ १ ॥
छात्रक[5] पीत[6] करी बुदन[7] सै पीउ–पीउ रटत रहौ रे ॥ २ ॥
अलसुत[8] पीत करी ‑जलसुत सै संकट वोत[9] सयो रे ॥ ३ ॥
पतंग प्रीत करी दीपक सै वल–जल भसम हूऔ[10] ॥ ४ ॥
ग्योप्यो[11] प्रीत करी माधव सै जावत कसु[12] न कयो ॥ ५ ॥
मिरां[13] कै प्रभु गीरधर[14] नागर तलफ–तलफ यु[15] गयो ॥ ६ ॥

३९

कीन[1] मारी पीचकारी[2] रे गुंगट[3] की लपट मै ॥ टेक ॥
ऐक[4] भरी लाला दुजी[5] भराउ[6] ॥ तीजी भरो दडगारी रे ॥ १ ॥
अंग की अंगीया[7] सगली भीज गई ॥ लाल सूनडीया[8] न्यारी रे ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभू गीरधर[9] नागर ॥ फुगवा दो भर डोरी रे ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के हृ० लि० ग्रं० सं० १०४५७ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० ६२६६, पत्रांक–२
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० ६२६६, पत्राङ्क-१०६

सं० पाठ ३७-१. कुब्जा । २. सिख० । ३. म्हांसूं । ४. सांवरा । ५.हूलडी-जेउ(पक्षी-विशेष) होलंडी । ६. म्हासूं । ७. अफूठं । ८. मीरां । ९. म्हांरी । १० तूटै ।
३८-१. प्रीत । २. लियो । ३. नाद । ४. सन्मुख । ५. चातक । ६. प्रीति । ७. वूंदन । ८. अलिसुत । ९. भोत, बहुत । १०. भयो,रे । ११. गोप्यां । १२. कछु । १३. मीरां । १४. गिरिधर । १५. यूं, जीव ।
„ „ ३९- १. किण, कुण । २. पिचकारी । ३. घूंघट । ४. एक । ५. दूजी । ६. भराऊं । ७. अंगियां । ८. चुनरिया । १२. गिरिधर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४०

खमाच--होरी

कुण षेले थासे[1] होरी रे संग लगोई[2] आत्रे ।। टेर ।।
भरं पीचकारी[3] मेराम[4] मुष[5] पर डारी भीज गई तन सारी रे ।। १ ।।
मोर मुगट सीर[6] छत्र वीराजे[7] कुडल[8] की छीव[9] न्यारी रे ।। २ ।।
वीनरावीन[10] री कुंज-गली मैं सेस गोप्यां गीरधारी[11] रे ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गीरधर[12] नागर फगवा दोभर गोरी रे ।। ४ ।।

४१

कुवज्या[1] वे दिन क्यों न चितारै, कु० ।।
वनरावन[2] मै व्य[3] पग तल काडिया । चुग-चुग वानत[4] मारा ।
के(कं)सराय घर हूति जि वेरी । वारति वगड सकारा ।
हे कुवज्या वे दिन कु न[5] चितारा[6] ।। १ ।।
हाथ कटोरो वनरण[7] कै र मुठीयो । वसता गयो रे जमारो ।
अव मैलन की भइ पटरांणि । मोह्यो[8] स्याम हमारे(रो) ।
हे कुवज्या वे दिन कु न चितारै ।। २ ।।
आपरा वाया आपे इ लुणसि । क्या विधनां का(को) सारो ।
मिरां कहै[प्रभू] गीरधर[9] नागर । तिन[10] काल उजियारो ।
ए कुवज्या वे दिन कु न चितारो ।। ३ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से ।

सं० पाठ ४०-१. थां से । २. निगोड़ी, ले गोपी । ३. पिचकारी । ४. मेरा । ५. मुख । ६. शिर । ७. बिराजे । ८. कुंडळ । ९. छवि । १०. वृन्दावन ११. गिरिधारी । १२. गिरिवर ।

" " ४१-१. कुब्जा । २. वृन्दावन । ३. वे । ४. छानत । ५. क्यों न । ६. चितारे । ७. चन्दन । ८. मोह्यो । ९. गिरिघर १०. तीन ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४२

कुबज्या व दीन क्यु न चीतारो।
कंसराय घर चेरी होती वगर भुबारतो सारो ।। १ ।।
बन-बन लकरी वा वन माही सीर धर लाती भारो ।।
हात कचोलो चंदन मुश्रो[1] सघेता[2] गयो जमारो ।। २ ।।
वरसत श्रंग क्रहन[3] प्यारे कु हो गयो रूप अपारो ।।
मीरा के प्रभु गीरधर नागर बस कीयो बंसीवारो ।। ३ ।।

४३

कैसै खेलुं[1] मैं होरी सहेली ।। पीय तज गयो रे अकेली ।। टेर ।।
माणक मोती सब ही साच्चा[2] गल मै पैरी सेली
भोजन भवन नीका नही लागै।। पीया कारण भई गैली
मुजै[3] दूरो क्यूं मेली ।। १ ।।
अब तुम प्रीत और से जोड़ी। हम सै करी क्यूं पेली
बोहो दिन वीता अजऊ[4] नंही आए ।। लग रही ताला-बैली रे
कणै वलमायो[5] हेली ।। २ ।।
स्यांम विनां जीवड़ो मुरझावै। जैसे जल विन बैली[6] ।।
मीरां कहे प्रभु दरसन दीजो जन्म-जन्म की चेरी
दरसन विन खरी[7] रे दुहेली ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० १६० से।

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५, पत्राङ्क-४५

सं० पाठ ४२—१. मुठियो। २. घिसतां। ३. कृष्ण।
" " ४३-१. खेलूं। २. सांचा। ३. मुझे। ४. अजहूं। ५. किण बिलमायो। ६. बेली, वल्ली। ७. खड़ी, घणी।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४४

कैसे लगाई जुग प्रीति मेरा दिल हरि वस्त[1] है ॥ टेर ॥
या तन का[2] नोछावर करौंगी[3] सीस करौं बकसीस ॥ १ ॥
मैं जानो प्रभु ले निवहोगे छाडि चले अध-वीच ॥ २ ॥
जाका दिल स्यावित्ति[4] सांई सूं सोई अवलिया[5] पीर ॥ ३ ॥
पहली तौ हर[6] प्रीति लगाई अब कीन्ही विपरीति ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर क्या कपटी सौ प्रीति ॥ ५ ॥

४५

राग मारु

कोई हरिलौ हो हरीलौ हो वोलै । सरि[1] परि[2] हो मटकीया डोलौं(लै) ॥
दय[3] को नांव[4] विसर गई गुवालनि । कोई स्यांम मनौहर हर ल्यौ हरी० ॥टेक॥
क्रस्नरुप[5] गुवालन धरो । कछु और ही धरै वोलै ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[6] नागरि[7] । कोई मौलि[8] लीयौ[9] बीन[10] मौलै ॥१॥

४६

कोई राम पिया घर लावै रे ॥
तलफत प्रांण दुखी अति मेरौ ॥ जरती[1] अगन बुझावौ(वै) रे ॥ टेर ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० सं० ७५७३, पत्राङ्क-१
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३१०७७, पत्रांक-३६
३. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ।

सं० पाठ ४४-१. बसत । २. को । ३. करूंगी । ४. सावति । ५. औलिया । ६. हरि ।
,, ,, ४५-१. शिर । २. पर, पड़ी । ३. दई, दही । ४. नाम ५. कृष्णरूप ।
६. गिरिधर । ७. नागर । ८. मोल । ९. लियो । १०. बिन ।
,, ,, ४६-१. जलती ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है कोई मित हमारौ ग्रैसौ । जाय संदेसौ सुणावै रे ॥
व्रँह[2]-ग्रगन ग्रति(भई) ग्रातुर । जागत रैण बितावै रे ॥ १ ॥
तलफ-तलफ तन तालाबेली । सास[3] कलप-सम जावै रै ॥
नीर विना मंछी[4] किम जीवै । बिछडीया[5] मर जावै रै ॥ २ ॥
ग्रब तौ किरपा कर ग्रावौ मनमोहन । दरस वेग दिखावो रै ॥
जन मीरां व्रेहन[6] ग्रति व्याकुल । मरतक[7] ग्रान जिवावौ रै ॥ ३ ॥

४७

गहरा करी स्याम ग्रमल–पाणी ॥ टेर ॥
चलो स्याम बरसांणे चालो ॥ तेरा भाग में रची सो हम जांणी ॥ १ ॥
तो हो करा होरी को रसीयो[1] ॥ मे[2] सब वणसा ग्रगवाणी ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी[3] ग्रवीनासी[4] ॥ वीरषभाण[5] घर मझमानी[6] ॥ ३ ॥

४८

गीरधर[1] संग न टारो हो रांणां जी माहरो[2] गीरधर संग न टारो ॥ टेर ॥
नांमदेव की छांनि छवाई ॥ हस्ती संग उवारो ॥
जन कबीर कैं वालद[3] ल्यायो । ग्राप भयो वणजारो ॥ १ ॥

---

१. ग्रनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।
२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९०, पत्राङ्क-६०-६१

---

२. विरह । ३. सांस । ४. मच्छी । ५. बीछड़ियां ६. विरहिणी । ७. मृतक को ।
„ „ ४७-१. रसियो । २. म्हें । ३. हरि । ४. ग्रविनाशी । ५, वृषभानु । ६. मिजमानी ।
„ „ ४८-१. १. गिरधर । २. मूखो । ३. बळध, बैल ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जन प्रह्लाद की प्रतंग्या राषी[४]। नृसिंघ[५] रुप ज धारो ॥
षंभ फरि[६] करि प्रगट भयो। हरणाकुस नषन बडारो[७] ॥ २ ॥
जग सव भूठो पति है। रांणेजी कौ न विचार[८] ॥
तूं तो म्हारो भूठो पति है। सांचो मुरलीवारो ॥ ३ ॥
रांण जो प्यालो विष रो भेज्यो। दे मीरां नै मारो ॥
अैसे तो वा लेवैगे (गी) नांही। चरनामृत धामं[९] डारो ॥ ४ ॥
जनम–जनम को पति परमेसुर। जांमै[१०] रच्यौ है जग सारो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर॥ जीवन प्रान हमारो ॥ ५ ॥

४६

गोबंद[१] स[२] अटकी हे र (री) मन गोवीद स अटको री ॥
अेर[३] आली म[४] सावरा[५] क[६] वसी परी सजनी लोग कहे भटकी ॥
वन[७] ही गोपाल लाल बीन सजनी को जान[८] घटकी ॥
अेरी अति करन ककनी[९] उपर सजनी ई (री) दामन सी दमकी ॥
अंग–अंग आभुसण[१०] राज (जे) बनमाला छीटकी[११] ॥
धकती[१२] भयो[१३] दोउ द्रीग[१४] मेरे दे[१५] छीव[१६] नटकी ॥
मीरा के प्रभु संग रमुगी[१७] कुंज–कुंज भटकी ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० २०६ से।

---

४. राखी। ५. नरसिंह। ६. फाड़। ७. बिडारो। ८. क्यों न विचारो।
९. आ, या में। १०. ज्या ने।

सं० पाठ ४६-१. गोविंद। २. से। ३. अे री। ४. मैं। ५. सांवरा। ६ कै।
७. बिन। ८. जानै। ९. किंकिणी। १०. आभूषण। ११. छिटकी।
१२. थकित। १३. भये। १४. दोऊ दृग। १५. देख। १६. छवि।
१९. रमूंगी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

५०

गोवींद को सरनु[1] ।।
क्या दुक[2] धन माल की लाहे[3] हम ही कहा करनु[4] ।।
सावरी सुरति चीतवन[5] में धरनु ।। (गोविंद को सरनूं)
मीरां के प्रभु गीरधर नागर ।। बेर बेर बरनु[6] । (गोविन्द को सरनूं)

५१

चंद लग्यो दुष[2] दैण ।। टेर ।।
माई रो मौनै चंद लग्यो दुष देण ।। टेर ।।
कांहा[1] वे मोहन कहां वे वतियां, कांहां वा सुष की रेण ।। १ ।।
तारा गिन-गिन रैई[2] मेरी आली, टपकण लागै नैन ।। २ ।।
मीरां कैहै[3] परभु[4] गीरधर नागर, दुष-भंजण सुष-दैंण ।। ३ ।।

५२

छित्र[1] लालन मोहि[2] भावै वारी[3] चितवन चित ललचावै ।। टेक ।।
सुंदर वदन कंवल-दल-लोचन मधर-मधर[4] मुसकावै ।। १ ।।
मोर-मुकुट पीतावर[5] सोहै चंदन षोर[6] बनावै ।। २ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर जो सेवै सोई पावै ।। ३ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७७ से।
२. संत साहित्य मंडल बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४४, पत्रांक-३०

सं० पाठ ५०-१. सरणूं । २. कहूँ, करूं ३. किला है, ४. करणूं । ५. चितवन । ६. बरणूं ।
„ „ ५१-१. कहां । २. रही । ३. कहे । ४. प्रभु ।
„ „ ५२-१. छबि । २. मोही, मो हिय । ३. वांरी । ४. मधुर-मधुर । ५. पीतांबर । ६. खोर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

५३

जब छल ठग गया दील[1] प्रामा[2] ॥
तब रया हा नही कछु नेमा ॥ टेर ॥
नहीं कछु पाना[3] न कछु पीना हो गया ठंडा हेमा ॥ १ ॥
छकीया डोले मुप से न बोले प्रीत लगी गनसांमा[4] ॥ २ ॥
प्रतपकी[5] रीत बफुल[6] फकीरी हुआ जगत बेकामा ॥ ३ ॥
तक (ख) त हजारा मुलक बजारा त्याग दीया[7] धन-धामा ॥ ४ ॥
मीराबाई[8] भणे भवसागर वे मस्त कीया जग नामा ॥ ५ ॥

५४

फाग

जमना की (के) नीकट[1] वजाई बंसी ॥ टेर ॥
जीव जंत जल थल के मोहे ओर[2] मोहे वन के तपसी ॥ १ ॥
सुर नर मुनी[3] मोह लीऐ[4] हो षुल ग[ये] ताल हसे[5] तपसी ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी[6] अवीनासी[7] चरण-कंवल मे प्राण वसी[8] ॥ ३ ॥

५५

जमुना कै तट हरि संग षेलै गोपी ॥
मोहन लाल गोवरधन धारचो ताक नष पर ओपी हो ॥ टेक ॥
सजल जलद-तन घन पीतांवर कर मुष मुरली धारी हो ॥
वैन सैन दे कंवर लाडलै ललना सव हंकारी हो ॥ १ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के हृ० लि० ग्रं० सं० १७० से ।
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के हृ० लि० ग्रं० सं० १७० से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० ३७६४४, पत्रांक-६६

सं० पाठ ५३-१. दिल । २. एमा प्रेमा । ३. खाना । ४. घनश्यामा । ५. प्रीति की । ५. विकल । ७. दियम ।
" " ५४-१. निकट । २. अरु । ३. मुनिजन । ४. लिये । ५. खुल गए ताल हंसे । ६. हरि । ७. अविनाशी । ८. बशी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सज सिणगार चली वृज[१]-वनिता नष सिष उपर[२] ठांनी हो ॥
लोक वेर अरु धरम सहत यहि वदत न काहू की कांनी हो ॥ २ ॥
कर कठ-ताल[३] ताल कै उपर सवहि एक रस वाजै हो ॥
महुर[४] चंग उपंग डां(वां)सुरी मेघ-झड़ी ज्यौ गाजै हो ॥ ३ ॥
नयन वयन[५] वसन एक रस कंठ भुजा पद ग्रीवा हो ॥
मध नायक गोपाल विराजै सुंदरता की सींवा हो ॥ ४ ॥
वल है बल के वीर त्रिभंगी गोपिन के सुषदाई हो ॥
मिट गई विथा[६] सकल तन मन की हरि हंस कंठ लगाई हो ॥ ५ ॥
माधव नारि नारि माधव कौं चरचत चोवा चंदन हो ॥
असो षेल मच्यो अवनी पर नंद-नंदन लग वंदन हो ॥ ६ ॥
कहन केल-कोतुहल[७] माधो मधरी सी वानी गावै हो ॥
पूरण चंद सरद की रजनी चेतन उच उपजावै हो ॥ ७ ॥
सिव सनकादिक अरु व्रह्मादिक सवहि पोहोप-घन[८] वरसै हो ॥
भूर भाग गोकल-वनता[९] मीरां प्रभु-पद परसै हो ॥ ८ ॥

५६

ज[य] ज[य] हो जगदीस तुमारी ॥ टेक ॥
सुर नर मुनि ज्यांको ध्यान धरत है गावत चारु[१] सीस तुमारी ॥ १ ॥
सेस महेस पुराण वषाण[२] सव के हो तुम सीस हमारी ॥ २ ॥
मीरा नरसी कह य कह्यो ह[३] धरचो सींगासन[४] सीस तुमारी ॥ ३ ॥

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० १०५७, पत्रांक-२

सं० पाठ ५५-१. व्रज। २. ऊपर। ३. करताल। ४. मधुर। ५. वचन। ६. व्यथा। ७. केलि-कौतूहल। ८. पुष्प-घन। ९. वनिता के।
,, ,, ५६-१. च्यारूं। २. बखाणै। ३. कह्यो है। ४. सिंहासन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

५७

जाणीयै जांणीयौ जांणीयै हो हरि ॥
हेत हियानौ जाणीयै ॥ टेर ॥
हमै छा तुमारा तुम छो हमारा जा विच अंतर नथि आणीये ॥ १ ॥
हम छै अबला तुम छै बलवंता छैल छबिला[1] माथै ताणीये ॥ २ ॥
दूरा न जावजो वेगलाज थावजौ[2] अरज हमारी मांनीये ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर आसा लगी छै थारा नामनी [ए] ॥ ४ ॥

५८

राग जजवन्ति ॥

जाय पधारे गउ-लोक व्रंद्रावन हर सखी रास रचाय रहे ॥ टेर ॥
गोपी रूप धरो ज्योगेसुर नरसी सषा वनाय लिअ (ए) ॥ १ ॥
देष बिहार निहारं स्यम क[1] सब सषीयन संग नाच कीये ॥ २ ॥
गावत ह (है) अति मंद-मंद सुर नुपर[2] ताल बजाय रहे ॥ ३ ॥
तब वोले गोपेसुर नायक भगत अनोषा काहा आय रये ॥ ४ ॥
कह (हे) मीरा धन भाग हमारो प्रभु-चरनन प(पै) ध्यन[3] धरो ॥ ५ ॥

५९

जीउं री[1] म[2] सांवलड़ा र[3] वण[4] ॥ टेक ॥
सूवणां[5] सूणत[6] सूद-बूद[7] विसरी विर[ह] विथा[8] भई अ(ए) न ॥१॥
घडी-घड़ी लहर जहर तन व्यापै घूम रही सारी रेण ॥ २ ॥
तम[9] विन मेर (रे) कल न पड़त ह[10] भर-भर लाउ[11] नण[12] ॥ ३ ॥
मिरां[13] के प्रभू गीरधर नाग [र] दूष[14] मेटण सुष-दैण ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० प्र० सं० १९० से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ५२,(इन्द्रगढ़ पोथीखाना) पत्राङ्क-१२२
३. संत साहित्य मंडल, बीकानेर के एक ह० लि० प्र० से ।

सं० पाठ ५७-१. छबीला । २, आवजो ।
,, ,, ५८-१. श्याम के । २. नूपुर । ३. ध्यान ।
,, ,, ५९-१. जीऊं री । २. मैं । ३. री । ४. बेण । ५. श्रवणां । ६. सुणत । ७. सुध-बुध । ८. व्यथा । ९. तुम । १०. है । ११. लाऊं । १२. नैण । १३. मीरां । १४. दुख ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६०

जैसा 'क़र किसाह ना[१]' होवै तो रषणा रांम हजुरी[२] ॥
वौदि[३] बजरिया षावण दीजो नहितरं दीजो क़ुरि[४] ॥
पांसा अमेत[५] कर कै मांनु मो–मौ घणी सबुरी[६] ॥ १ ॥
भारो लांसुं पुलौ[७] लासुं भेंस दुहा सुं भुरी[८] ॥
रांम रसौई कर जीमाउं जारी[९] लीया हंजूरी ॥ २ ॥
सीरष पथरणा सावदु डौलीयो[१०] नहि तर देजौ खजूरी ॥
काली कांवलीया ओडण[११] देजौ पलक न करसुं दूरी ॥ ३ ॥
चरण–कमल की सेवा दीजौ चरणामत[१२] की पा (प्या)सी ॥
ओ जस गावै मीरांवाई जन्म–जन्म की दासी ॥ ४ ॥

६१

जोगिया आव मैं नेरी[१] ।
मनसा बाचा करमणां प्रभू पुरवो आस (सा) मेरी ॥ टेर ॥
मैं पतिभरता पीव की हो, मोल लई चेरी ॥
तुम विना कोऊ दुजो[२] देवा सुपनै हूँ नां हेरी ॥ १ ॥
मात–पिता सुत बंधू दारा ये पांव मै वेरी ॥
तुम विनां कोउ नांही मेरो पुकार कहूँ टेरी ॥ २ ॥
एक बीरोयां[३] मेरै नंगर[४] दे जावो फेरी ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[५] मैं चरना सु नेरी ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से ।

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६० से ।

" " ६०-१. करम–साधना । २. हजूरी । ३. वोदी । ४. कूरी। ५. अमृत । ६. सबूरी । ७. पूळो । ८. भूरी । ९. झारी । १०. ढोलियो । ११. ओढ़ण । १२. चरणामृत ।

सं० पाठ ६१–१. तैरी । २. दूजो । ३. बिरियां तुम आकर । ४. नगर । ५. गिरिधर नागर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६२

राग सोरठि गिरना ॥

जोगियो चतर सूजांन सजनी गायो ब्रह्मा सेस ॥ टेर ॥
जोगिया ने कहियी रे आदेस ॥
कृपा करो प्रतपाल मुझि परि[1] राषौ अपणै देस ॥
आवूंगी[2] मै नां रहुँ म्हार (रे) बसां[3] प्रदेस ॥ १ ॥
परण[4] चोलो भस[5] कंथा जोग धरयो दरवेस ॥
तेर (रे) कारण [धारयो] जोया (गा) तज्यौ कुल प्रवैस ॥ २ ॥
आग (गे) पतत[6] अनेक [उ] त्तारे तोर(रे) मोहि अनेक ॥
ज्यंद[7] करौ कुरबान तुझपैं ओर न दूजी पेस ॥ ३ ॥
दरद दीवांनी भई वावरी डोल बंगालो देस ॥
दासी मीरा लाल ग्रधर[8] पलंटि काले केस ॥ ४ ॥

६३

जोगी मन मतवाला है कोई जोगी मन मतवाला ॥
लोग बसै ढेंकुडो[1] ॥
जोई साधरी[2] नंदा[3] करसी जासो हरदे रुरो[5] ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर घर वर पायो पुरो[6] ॥ १ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३९९,
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९०, पत्राङ्क–८२

सं० पाठ ६२-१. मुझ पर । २. अभागी । ३. बणी । ४. पर्ण पेरण । ५. भेष, भसमी ।
६. पतित । ७. जांन । ८. गिरधर ।
" " ६३-१. छे कूड़ो । २. साधु री । ३. निंदा । ४. हिरदै । ५. रुड़ो ।
६. पूरो ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६४

जो दुष थाथ सो थाज्यौ रै रूडा रामजी न[1] भजंतां ।। टेर ।।
पीउ जाय तो राषव[2] लीजो जीव जाय तो जायै रै ।। १ ।।
उचा[3] बाध[4] तल अगनी पू(प्र) जालौ मार समेला री षाज्यो[1] रे ।। २ ।।
लोक नीदै[5] तानै निदेन्वा[6] दीजौ राज डंडै तो डंडाज्यौ रे ।। ३ ।।
मीरा कैहै[7] दुष-कोट[8] सहीनै गुण गोविंदजी ना गाज्यौ रैं ।। ४ ।।

६५

भूठो वर कुंण परणायो[1] हे मां ।।
परणू तो मेरो मरम जाय कूड़ो वर कुंण परणायो हेमा ।।
लख चौरासी रो चूड़लो में पैरचो वारंवार ।।
ओ तो वर देही को संगाती मो वर सिरजणहार ।। भूठो वर० ।।
जामण मरण वरया वर[1] केता विखराता नर नार
मेरो मन लागो बाल मुकुंद सूं वर पायो किरतार ।। भूंठो वर० ।।
सात वरस री मैं श्रीरंग सेविया जद पायो सुख सुहाग[2] ।।
मीरा नैं [प्रभु] गिरधर मिल्या[3] भव-भा[4] रा भरतार ।। [भूंठो वर०]

---

१. संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० प्र० से ।

२. पिलानी से प्राप्त हरजस ।

सं पाठ ६४-१. ने । २. राखव । ३. ऊंचा । ४. बांध । ५. निंदे । ६. निंदवा ।
७. कहे । ८. कोटि ।

" " ६५-१. वरिया । २. सार । ३. मिलिया । ४. भव-भव ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६६

टलवता 'पांडरणो फुल'[१] गुलाबी रग[२] रादकी[३] ओडरण चीर जरी का ।
जगमग जोत वरणी रादे जी की कनांह[४] चदरमा[५] सो नीका ।
तीका[६] नेरण रादे जी का ज्याने मोश्रा[७] कंवर[४] नंदजी का ।
तीका नेरण रादे जी का ।। १ ।।
बींदी बाल[८] नेरण बीचे[९] कजला बेर जडाऊ[८] रा टीका ।
मोतीप्रेन[१०] मांग भरी रादे जी की करोड चदरमा सा नीका ।
तीका नेरण रादे जी का ज्याने मोज्या कवर नदजी का ।
तीका नेरण रादे जी का ।। २ ।।
मीरा बाई के प्रबु (भु) गरधर[११] नागर अत स्याम रादे जी का ।
तीका नेरण रादे जी का ।। ३ ।।

६७

राग ममती

टुक धीरों रैं[१] रे वंसीवाला तै मैरो मन मोयो ।। टेर ।।
नष-सष[२] गेरणौ[३] सरब सौना रो वीस-वीस मोती पोयो ।। १ ।।
तुम विन प्रभु मोह कल न परत है नेरण भरे-भर जोयो ।। २ ।।
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर तुम भर जोवन[५] बोयौ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४६२२ से । पत्राङ्क–१०

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, पत्रांक–२

सं० पाठ ६६-१. पांडुरो (पाउणो) फूल । २. रंग । ३. धाजी का । ४. कृष्ण है । ५. चन्द्रमा । ६. तीखा । ७. मोह्या । ८. माल । ९. बिच । १०. मोतियन । ११. गिरिधर ।
" " ६७-१. रह । २. नख-शिख । ३. गहणौं । ४. मोहे । ५. यौवन ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६८

तन मन ललचावै री आवै व्रजराज कवर ॥
कोटि कांम वारणै ज्जैव मोहना नाचाय्या[1] गावै री ॥ टेक ॥
दाहणै[2] क्र[3] कुसन गैंद बावै[4] हाथि[5] बंसी ॥ १ ॥
चलन रूप माधुरी गज मदन परेस सीव ॥ २ ॥
स्याम सुद्र[6] कवल–नैन अदबुद मुष चंदा ॥ ३ ॥
लोचन प्यासे चक्र तिनकुं मगन लटकी ॥ ४ ॥
मीरां प्रभु भगति–बुद[7] हिरदा मैं गटकी ॥ ५ ॥

६९

तम[1] भज्यां हो महाराज सर्व सुष ॥ टेर ॥
प्रहलाद की प्रतंग्या राषी घ्रूइ[2] अवचल राज ॥
भीवषण[3] को राज दीनो सारीया सव[4] काज ॥ १ ॥
कृष्ण सुदांमो वाल–सनेसी[5] पढते एकण साल ॥
कनक–मैहल[6] चिणाये छिन में जड़त हीरा लाल ॥ २ ॥
जद व्रज पर इंद्र- कोप्यो डरे गोपी गवाल[7] ॥
डावै नष पर धारो[8] गिरवर राष लीयो नंदलाल ॥ ३ ॥
आज व्रज मै आंद्र[9] वधाई घर–घर मंगलचार ॥
कहै मीरा भक्त [के] कारण कृष्ण लीयो अवतार ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ९१५९, पत्रांक-५२

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४२, पत्राङ्क-१०६

सं० पाठ ६८-१. नचाय। २. दाहिने, दांये। ३. कर। ४. बांये। ५. हाथ। ६. सुंदर। ७. भक्ति-बूंद।

„ „ ६९-१. तुम। २. ध्रुव को। ३. विभीषण। ४. सब। ५. सनेही। ६. महत्व। ७. ग्वाल। ८. धारयो। ९. आनंद।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

७०

तंतै[1] नावै[2] तीयांणो[3] वाणो[4] रामायो[5] हीवैंड़ो[6] रो हांरै[7] ।।
मुगतै[8] रो मार[9] सोहीयो ।। टेर ।।
मारै सीलै(ल)संतोकै(ष)चुदंडै[10] वाणे रमायो ही सालुड़ा री कोरै(र) ।। १ ।।
सहेल्यां हे घांणो[11] पेरियौ चीतै[12] चेतनै(न) चुडैलो[13] वांणो ।। २ ।।
रामायो हे चालैया[14] जी रै लुंबै—झुंबैं बाजुबांदै[15] वाणा ।।
रांमायो है बाजुवादै री लुंबै ।। ३ ।।
सहेल्यां हे मै तो कांरणी रो काजालै[16] सारियो सील फैला लाडे ।। ४ ।।
ईतोरी[17] गांणो जी पैहारै[18] नीकैली[19] चाली रामाया री सैजै ।। ५ ।।
वाई मीरां ने गरधारै[20] मील्या[21] पुरी–पुरी[22] य[23] मनैड़ा[24] री आस ।। ५ ।।

७१

"राग सोरठ होरी"

तुजे (तूने) कीण[1] होरी वेलाई[2] वावरी वण आई ।। टेर ।।
गुंगट[3] मे चकडोल करत है नेनन से चतराई ।।
सासू[4] पुछे[5] सुणे(न)री वारी ऐ[6] अंगीया[7] काह[8] छीटाई ।।
तुजे कीण होरी षेलाई ।। १ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ८३६६ से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ ७०–१. तन ने । २. भावे । ३. तियाणों, तिहांरो । ४. बानो । ५. रमैयो । ६. हियड़ं हिवड़े । ७. हार । ८. मुक्ती । ९. मारग । १०. चूनड़ी । ११. गहणो । १२. चित्त । १३. चूड़लो । १४. चालिया, चाल्या । १५. बाजूबंद । १६. काजल । १७. इतरो । १८. पहर । १९. निकली । २०. गिरिधर । २१ मिलिया । २२. पूरी–पूरी । २३. या । २४. मनड़ा ।

सं० पाठ ७१-१. किण, कुण । २. खेलाई । ३. घूंघट । ४. सासू । ५. पूछे । ६. बायड़ी, बहू री, बावरी । ७. अंगीया । ८. कहाँ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मे तो गई ती(थी)गुलाब के बाग में फुलन-डार[९] नमाई ॥
डाला टुट[१०] पड्या मेरी छतीयां[११] अंगीया रंग लपटाई ॥
तुजे कोण होरी षेलाई ॥ २ ॥
मे जल जमुना भरन जात ही[१२] बीच मीले[१३] जदुराई ॥
बेठ कदंम-तले वंसी बजाई मदुर-मदुर[१४] मुसकाई ॥
तुजे कीण होरी षेलाई ॥ ३ ॥
भर पीचकारी[१५] मेरा मुख पर डारी अंगीया रंग लपटाई ॥
तुजे कीण होरी षेलाई । ४ ॥
हात(थ) गेद गुलाल फेट मे, तो सुध नही मोय काई ॥
तुजे कीण होरो षेलाई ॥ ५ ॥
ईण व्रज माय धुम[१६] मचा हे सब मील[१७] गावत ध्याई[१८] ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर नंद को लाल अनाई[१९] ॥
तुजे कीण होरी षेलाई ॥ ६ ॥

७२

तुने नीका जानी हे वन की लकड़ी ॥
ते गिरधारी मोहीयो[१] तपस्या कुन[२] करी ॥ टेक ॥
थारो हो तो वृंदावन बास तु(तूं) वन.की लकड़ी ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६०, पत्राङ्क-६८

सं० पाठ ७१-६. फूलन-डार । १०. टूट । ११. छतियाँ । १२. रही । १३. मिले । १४. मधुर-मधुर । १५. पिचकारी । १६. धूम । १७. मिले । १८. धाई । १६. कन्हाई ।

सं० पाठ ७२-१. मोहियो । २. कौन ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तूनै गावै मीरा दास[3] मोहन अघर धरी ॥
गजराज गुमानए हे सावलीयारी.................... ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरए–कमल लपटाय(या)री ॥ ★

७३

तुम जाने दो जी कपटी से कुन बोले ॥ टेर ॥
मे जल जमुना जात भरन कु नीत उठ आडा डोले ॥ १ ॥
मे दद(धि) वेचन जाती वृद्रावीन[1] रूप देष रंग तोले ॥ २ ॥
प्रीत न करी अनीत करी है वांहे पकड़ गुंगठ[2] खोले ॥ ३ ॥
प्रीत की रीत तो कांहा[3] जांनो प्रभु चाम बराबर माखन तोले ॥ ४ ॥
मीरां कहे प्रभु गीरधर नागर कपट की गांठ न खोले ॥ ५ ॥

७४

तु[1] मति[2] जारै काना पाईयां[3] परौं चेरी तेरी अरे ॥ टेर ॥
चंदन–काटौ[4] चिता चिएावों अपने हाथ जलाय जा रे ॥ १ ॥
जल–वल भई भसम की ढेरी अंग वभूत[5] रमाय जा रे ॥ २ ॥
आसए मार मंढी मै वैठो घर–घर अलष जगाय जा रे ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[6] नागर जोत मै जोत मिलाय जा रे ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७९४४, पत्रांक-५७

सं० पाठ ७२-३. दासी । ★ इसी पुस्तक के पत्राङ्क १२६ पर इस पद की निम्न पंक्तियां ही प्राप्त हैं ।

तूने नीका जाणं(णांह (हे) वन की लकड़ी ।
गीरधारी भी दा(बाँ)हन प(पँ) सारी कुण [तपस्या] करी ॥
थारो हो तो विदरावन बास तू वन की लकड़ी ।
तू गावं मीरा दासी मोहन अधर धरी ॥

सं० पाठ ७३-१. वृन्दावन । २. घूंघट । ३. कहाँ, क्या ।
सं० पाठ ७४-१. तू । २. मत । ३. पैयां, पैरों । ४. काठ की, काष्ठ की । ५. विभूति, भभूत । ६. गिरिधर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

७५

तूं तौ वैरी चितार पपीया मोरे प्यारे ॥ टेर ॥
आई बैठो अंबला-केरी डारी पीव-पीव[1] सबद पुकारे ॥ १ ॥
आधी रात अचानक बौले व्रिहैबांन[2] सर मारे ॥ २ ॥
मैं तो सूती मद क(की) माती मेरे छाती जा-जा रे ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभू हर अविनासी मिलि करि कारज सारे ॥ ४ ॥

७६

तेर (रे) हरि आवगे(वेंगे) आजि खेलन फाग री ॥
सूगन संमुरत[1] मै सुन्यौ तेर(रे) आंगन बोल्या काग री ॥ टेक ॥
गुवाल-मडली सब चली आई जाहां व्रंदाबन बाग री ॥
ताल अ्रदंग डफ में सुंन्यौ री सखी क्या सोव(बे)उठि जाग री ॥ १ ॥
पांनी पांन वीछौना आदरा[2] उठी वाकै पगी[3] लाग री ॥
मीरां के प्रभु गीरधर नागर तेरौ परम सुहाग री ॥ २ ॥

७७

"राग बीलावल"

तेरो भुप नीको मेरो री प्यारी ॥
तन दरपन नीरषत[1] नंद-नंदन सषी कहो वृषभानु-दुलारी ॥
तुम कर पर गोवरधन धारो हम उर पै धार(रे) गीरधारी ॥
मीरा के प्रभु गीरधर नागर मैं वनसुं नैंही नैंक न नारी ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६१ से
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३१०७७।
३. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७७ से।

सं० पाठ ७५-१. पीउ-पीउ । २. विरहबाण ।
सं० पाठ ७६-१. सुमुहूर्त्त । २. आदर, चादर । ३. पग, पद ।
सं० पाठ ७-१. निरखत ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

७८

थान(ने) खडी पुकार(रे) थे सुणज्यो जादवरायै(य) ॥ टेक ॥
ग्रास–पास दोऊ दल भारी वीच मच्यौ घमसाण ॥
कत्तौ[1] मेरा ग्रंड उबारो नतर[2] तजूंगी प्रांन ॥ १ ॥
मेरे पुत्रन के पर पंख नाही लेर[3] ऊठ[4] ग्राकास ॥
वा भारक[5] म ग्रंक[6] पुकार (रे) किस विध वच चे) प्रान ॥ २ ॥
भीम गद(दा) ग्रहराक त लागी घंट पड्यो घरराय ॥
वा घंट(टा) म(में) ग्रंड बचाय(ये) ग्रसे[7] दीन–दयाल ॥ ३ ॥
मीरा कहे मीथुला यण बोसर राष लीये बृजराज ॥

७९

थानै म्हारी[1] पीड़ ने[2] ग्रावै हो ॥ टे० ॥
म्हांरा[3] मनै[4] मै थे ई वसो वाला थांनै कछु ग्रोर सुहाव(वै) हो ॥
पपीयो पीव–पीव रटे जलहर कौ नहीं भावे हो ॥
मोरां के प्रभु कबहुं कोरपा[5] करि स्वाति–बूंद वीरखाव[6] हो ॥

८०

थारा छा बीहारी माने भूलो छो गणा[1] ॥ टेर ॥
सरणागत छां चरण–कवल का वांही तो समालो[2] ग्राए ॥ १ ॥
भगत–वीछल[3] थारो वीरद कुवावे[4] ग्रोगण मारा चीत ना धरणा ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी ग्रविनासी चाकर छा जी राज पदमाजी[5] तणा ॥ ३ ॥

---

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०५७ से ।
२. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २८८४, से ।
३. ग्रनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ ७८–१. के तो, क्या तो । २. नहि तो । ३. ले कर । ४. उड़ूं, उड़ै । ५. भारत । ६. अंड (१) । ७. ऐसे ।
सं० पाठ ७९–१. म्हारी । २. न । ३. म्हारा । ४. मन । ५. कृपा । ६. वर्षावें ।
सं० पाठ ८०–१. घणां । २. सम्हालो । ३. भक्तवत्सल । ४. कहावें । ५. कदमां जी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८१

"राग कालगड़ो"

थारा मीठा बोलण रा मे लोभी ।। टेक ।।
मुरड़ भगी मुषड़[1] नही बोली मोनी कु[2]हुवा छो म्हान (ने जावा दो जी ।।
सरव गुण थारा वोगण[3] म्हारा वोगण म्हारा चत[4] न धरो जी ।।
मारा कैह[5] प्रभु गरधर[6] नागर दुख-काटण सुष दो जी ।। १ ।।

८२

"राग ऊजाज सोरठ"

थारै घाली[1] ताना दै छै म्हांनै लोक, रसिक विहारी जी राज थारै ।। टेर ।।
आप तौ जाय द्वारिका मैं धाऐ हम कू पढायो जोग ।।
कुब्ज्या दासी कंसराय की ताय कीयौ संजोग ।। १ ।।
प्र करी तौ ओर निभाईजौ मति हसाईजौ लोग ।।
अबके वेछरे[2] कब [हु] मिलोगे नदी-याव[3] संजोग ।। २ ।।
व्रहैव्यथा[4] की कहा कहू सजनी छाय रयौ तन-रोग ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर अब छै मिलन कौ जोग ।। ३ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के (इन्द्र) ह० लि० ग्र० सं० ५२, २ कृति पत्रांक-५७

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से ।

सं० पाठ ८१-१. मुखड़ूं, मुख से । २. क्युं, क्यों । ३. अवगुण । ४. चित्त । ५. कहै ।
६. गिरिधर ।

" " ८२-१. गाली । २. विछुड़े । ३. नदी-नाव । ४. विरहव्यथा ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८३

थु(तूं) तो मेरा राम मील्या दीलजानी, मेरे अगर मेरबानी ॥ टेर ॥
देस-देस ओर मुलक-मुलक मे, पाई नही तेरी नीसानी ॥ १ ॥
जग की आस-वास सब तज दी, लाव[1] होओ चाहे हानी ॥ २ ॥
चाऐ[2] मेर (रे) तारया जग मे, तेरी सुरत मन मानी ॥ ३ ॥
सुणोए[3] साम[4] काम जलदी कर, कहा पत्री लषु[5] छाने ॥ ४ ॥
बाई मीरा भणै सामसु मु[6] जाचक थु[7] दानी ॥ ५ ॥

८४

दरसण क्रपा करो तो पाऊं ॥
बंसि[1] ब्रंदावन-कुंज-कुटी मै पड्यो पड्यो जस गाऊं ॥
संतन की रज धर(रूं) सीस पै जा जमना मै नाहाउ[2] ॥
ज़ोन[3] हरीया[4] संसार सार मै फेर जनम नही पाउ(ऊं) ॥
मीरा के प्रभु गीरधर नागर नीत उठ मंगल गाउ(ऊं) ॥
दरसन क्रपा करो तो पाउं ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर, के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १६० से ।

सं० पाठ ८३ १. लाभ । २. चाहे । ३. सुनिये । ४. श्याम । ५. लिखं । ६. मैं ।
७. थूं, तूं ।

" " ८४-१. बसि । २. न्हाऊं । ३. जन । ४. हरि ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८५

दरसण दीजौ राज ।।
कड (र) जौड[1] अरज करें म्हारी बाहें गईया[2] की लाज ।। टेक ।।
लोक-लाज बिसार डारयौ छाडौ जग उपदेस ।।
ब्रहे-अगन[3] मैं प्राण दाजै[4] सूण लीजौ आदेस ।। १ ।।
पांच(चौं) मुदरा[5] भसम(मी) कंथा नष-सष[6] राष्या सांज ।।
जौगणी[7] होऐ[8] कर जग ढोढसूं[9], म्हारी घर-घर फैरी जै ।। २ ।।
दरद दीवांनी तन-जालण, मीलीया राम दयाल ।।
मीरां कै मनू(न) आनंद उपज्यौ रूम-रूम खुसीयाल ।। ३ ।।

८६

दावन[1] नां वीसमांणो हो सांम[2] राव रे ।।
तागो तुटो[3]तो फेर संध(धे)नही षल[4]टूटो कुमलाव(वे) रे ।।
तारो[5] रूठो सांमरो अस[6] लव-लऊ(?)जाय [वे रे] ।।
काल तन रो[7] पांणी न पीयो[8] काला लूंग न खाऊं ।।
काला कीसनजी री सेज नही जाऊं मैं काली पड जाऊं ।।
कड़व(वा) लीव[9] नीवोली मीठी सरवर मीठा पांणी ।।
काल(ली)कीसन जी रो(री) सेजां भल जोऊ ओड कमुंभल साडो ।।
मीरा कवे(है) परभु[10] गीरधर नागर तम जीते हम हारी ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७, पत्रांक–१७८
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३२५७४, पत्रांक-८

सं० पाठ ८५-१. जोड़ । २. गह्यां । ३. विरहाग्नि । ४. दाझै, दाहै । ५. मुद्रा । ६. शिख ।
७. योगिनी । ८. हो । ९. ढूंढस्यूं ।

" " ८६-१. दामन (?) । २. श्याम । ३. टूटो । ४. खाल । ५. थारो (?) ६. ऐसो ।
७. काले तन रो । ८. पीऊं । ९. नींब । १०. प्रभु ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८७

पद राग बहुंग

देखो हरि कहां गया नहडो[1] लगाय ।। टेर ।।
छोड चल्यौ बीसवासघाती[2] प्रेम की बात सुणाय ।। १ ।।
घायल कर निरमायल कीनी खबर न लीनी मेरी आय ।। २ ।।
ब्रह–समद[3] मैं छोड गये है नेह की न्याव[4] चलाय ।। ३ ।।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर रह्या छै माधोपुर[5] छाय ।। ४ ।।

८८

धर[1] न धरीज(जे) कंवार, भजिये तौ बात भली है ।। टेक ।।
मुथरा वास बहौत दिन कीनौ सूत्र[2] मारे के वार ।।
कालजन[3] चकंद[4] दिसिटि[5] जारी तो भुम कौ भारि मुतारि[6] ।। १ ।।
क्रमा[7] सौरी[8] पुल्ही बाई हरि भजि ऊतरी पार ।।
मीरा प्रभु गीरधर की दासी अबकै सरनै ऊवारि(र) ।। २ ।।

८९

न कस्यो ई कसोटी हौत है बारैह[1] बांनी ।।
सुपच[2] भगत प्रिविप्रसेवारौ[3] मं हरिदाथि[4] बिकानी ।। १ ।।
वीष[5] कौ प्यालो राणो दीयौ अपयो[6] मीरा जांणी ।।
मीरां के प्रभु न्याव निवेड़ौ ।। छाणे दूध र[7] पांणी ।। २ ।।

---

१. संत साहित्य मंडल बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से ।

सं० पाठ ८७-१. नेहड़ो । २. विश्वासघाती । ३. विरह समुद्र । ४. नाव । ५. मधुपुर, मथुरा ।
" " ८८-१. धीर, धैर्य । २. शत्रु । ३. कालयवन । ४. मुचकुन्द । ५. दृष्टि ।
६. उतार । ७. करमा । ८. शबरी ।
" " ८९-१. बारह । २. स्वपच । ३. थी विप्र सेवा रो ? । ४. हृदय से । ५. विष ।
६. आप्यो, अप यो । ७. अरु ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

९०

राग नट

नणदी हे मोहन मुंदरी ले गयो ॥
ले गयो बद्रीधाम रो र अरी[१] तोर ॥ टेक ॥
मोर–मुकट सीर[२] सोहै हरी पीतांबर की फेंट ॥
हुं[३] दध वेचण जात ही कुंज गली भई भेंट ॥ १ ॥
छगरी तें मुदरी भई ओर गले को हार ॥
गांव न वसीयो नंद के कहुँ न लगे पुकार ॥ २ ॥
ढुंढी[४] मुथरा नगरी ढूंढ्यो गोकल गाँव ॥
घोटक कहीये नंद को कांनकंवर वाको नाव ॥ ३ ॥
गरे(ले) दुपटा(ट्टा) डार के पायन परीये आय ॥
ज्युँ ज्युं हुँ नांही न कहु[५] हा हा षाय[६] ॥ ४ ॥
मुदरी के मस[७] मोहन ले गयो चत[८] चुराय ॥
मीरा के प्रभु ढुढत[९] फीरु[१०] जे कहुँ देह वताय ॥ ५ ॥

९१

नंद जी कै द्वार आग[१] माला मोरी ले गयो ॥ टेक ॥
माला तो मै फेरि मंगावूं द्रसनै[२] केसै[३] पांवूं ॥
असो[४] है विसवासघाती काया मोरी छो[५] गयो ॥ १ ॥
सषीयां क[६] संगि आवै राग तो छतीसूं गावै ॥
बंसरी बजाव वै कांनौ सैनां मांहि कहि(ह) गयौ ॥ २ ॥
सूंनि[७] हो ग्रधारी[८] लाला चलूंगी[९] तुम्हार रे लारं ॥
मीरां तो तुम्हारी दासी अब क्यूँ बिसारि(रो) है(रे) ॥ ३ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ७६६५ से ।

२. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८३९९, से ।

सं० पाठ ९०-१. रौके अरी । २. शिर । ३ हूँ । ४. ढूंढ़ी । ५. ज्यूं ज्यूं नांही न कहूँ ।
६. कुहाय (?) । ७. मिस । ८. चित्त । ९. ढूढत । १०. फिरूं ।

" ". ९१-१. आगे । २. दर्शन । ३. कैसे । ४. ऐसो । ५. छू । ६. सखियाँ के ।
७. सुन । ८. गिरिधारी । ९. चालूंगी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६२

नंद जी के राजकुँवार में(म्हे) तो होरी थांसु(मूं) खेलां राज ।। टेर ।।
फागण मास सवायो आयो मो सुगणी कै भाग ।।
चोवा चंदन और अरगजा चंदन चरचुं गात ।। १ ।।
आवौ री सषी खेल रच्यौ है सरसी सारा काज ।।
गह बांहीया[1] हम हरि-संग खेलां पुरण[2] परम सुहाग ।। २ ।।
फैंट[3] पकड़ हम पुगवा लेस्यां अब कत[4] जाओ भाग ।।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल अनुराग ।।

६३

नंद जी के लाला वंसी तुमारी सब जग मोहनि(नी) ।। टेर ।।
हरिया बांस की बांसुरीस रे निकसी परवत फोर ।।
पाड़ वेज मुष पै धारीस रे बाजै बोत कठोर ।। १ ।।
इद्रं घटा ले उतरयोस रे सुख मुरली की टेर ।।
वंसीवालो सांवरोस रे लई गवालन घेर ।। २ ।।
दधि सुत के नीचै वसैस रे मोती सुत[1] के वीच ।।
सो मांगत है राधिका स्याम देऊ द्रिग मोच ।। ३ ।।
नैनी[2] सै मोटि[3] करी से(स) रे काचौ दूध पिलाय ।।
ऐसौ जादू जांणतीस रे देती आग लगाय ।। ४ ।।
थूं माधव की वंसरीस रे मं माधव की नार ।।
एक धरां की लाडलीस रे अपनो विरद विचार ।। ५ ।।
मोहन बजावै वंसरीस रे जल जमना की तीर ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर पार करौ बलवीर ।। ६ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ।

सं० पाठ ६२-१. बहियां । २. पूरण ३. फेंट । ४. कित ।

" " ६३-१. सूत । २. नन्ही । ३. मोटी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६४

नहिं माई बदनूं[1] सारो ॥
प्राणपति को लहरि सजनो डसि गयो कारो ॥ टे० ॥
लोक कह(है) यांनैं रोग ब्याप्यो, तन सिझी[2] गयो सारो ॥
तनक याकू[3] बांण लागो, निकसि गयो पारो ॥ १ ॥
कहत ललना बैद ल्याऊं नंद को प्यारो ॥
उण आंयां थारो रोग जासी, मांनि[4] पनियागो ॥ २ ॥
मो चंदवा क[5] हाथि सो देत ह(है) झारो ॥
दासी मीरां लाल ग्रघर[6] विष कीयो न्यारो ॥ ३ ॥

६५

"राग सोरठ"

नही माहरे[1] सारो साम[2] नही माहरो (म्हारौ) सारो ॥
चार पोहोर चार जुग वीतै देषो (ख्यो) न सखी उणहारो ॥ १ ॥
माहानै[3] कुण[4] चीतारसी राणा रो नीत वारो ॥
माहाने तो वे ही चीतारसी प्रभु वीरज[5]-चंद गोकल वारो ॥ २ ॥
गोकल ने उधार के प्रभु द्यारका[6] मती पधारो ॥
अबके आवुं माहारा रंगीला प्रीतम जी आडो समंदर खारो । ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर मोहे [है]पतिहारो ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८३६६, से।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से

सं० पाठ ६४-१. बैद, वैद्य। २. सीज, सीझ। ३. यांके। ४. म्हांनै। ५. मौ चंदवा कै। ६. गिरिधर।

" " ६५-१. म्हांरो। २. श्याम। ३. म्हांनै। ४. कूंण। ५. व्रज। ६. द्वारिका।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

९६

राग भेरवो दोन उग

नाचत गनगवरी के नंदा ।।
सीर[1] तीलक[2] भाल अर चंदा नाचत गनगवरी के नंदा ।। टेर ।।
वागो वीस[3] के संग गुगरवा, मोतीयन–माल बेज़ंदा ।। १।।
ऐक दंत हु(हूँ) जो दयावंत हे(है) लडवा खात मुकंदा ।। २ ।।
रीदी[4] सीदी[5] के संग मे सोवे, भगतन के सीर[6] वीनंदा ।। ३ ।।
सृष्टी[7] सारी ध्यावे नर–नारी भाम होय वोहो[8] घनंदा ।। ४ ।।
मीरा के प्रभु भरात गरापत कु, काटो जग के फंदा ।। ५ ।।

९७

हरजस

नाचत हे गनपती[1] अनदीया[2] में नाचत है गनपती ।। टेर ।।
ताल पखावज ब्रमा[3] कु(को) दीना गुगरा[4] चलावे सुरसती ।। १ ।।
रेवा की दीरा[5] तीरा[6] सवजी[7] वीराजे संग चले मानधाता
बडा जाती ।। २ ।।
सीव की जठा(टा) मे गंगा वीराजे संग चले पारवती ।। ३ ।।
पांचु(चूं) षेडा[8] सीवजी वसाया भांग गोठें[9] पारवती ।। ४ ।।
वाई मीरा के प्रभु गीरधर नागर कंठ वीराजे सरसती ।। ५ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

सं० पाठ ९६-१. शीर्ष । २. तिलक । ३. विस । ४. घुंघरवा । ५. ऋद्धि । ६. सिद्धि ।
७. शिर । ८. सृष्टि । ९. बहु ।

,, ,, ९७-१. गणपति । २. श्री नदिया । ३. ब्रह्मां । ४. घुंघरा । ५. रेवा नदी रा
६. तीर । ७. शिवजी । ८. खेड़ा । ९. घोटे ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

९८

नात(थ) हर ना बोलो खरी, हरी हरी हरदा[1] के माहे दल खोलो खरी ॥
सतगुरु का दुजी संसार जगत तारे बारणे चोडी[2] मे कुल–मरजाद ॥
जाण न दी जी य्यारे कारणे र जन मीरा टोडारे वेस मोटी हुई ॥
मेरते आई गड[3] हो चीतोड़ सरव सालगराम के ॥
चीडी[4] गड़ चीतोड राणा जी रो राज है छोडी मुलक मे पाउ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर धणी हो धारण आपने ॥
जागो मारा जुगपती नात(थ) जलमनई की जीहे गावे ॥

९९

नाव किनारै लाव नावडीया[1] तेरी नाव किनारै लाव ॥ टेर ॥
गंगा जमना और सुरसत्ती जन[2] को ओही सुभाव ॥ १ ॥
ईत[3] गोकल ऐत[4] मुथरा नगरी मुधरी[5] सी बैण वजाव ॥ ना० ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभु गोरधर नागर हरी–चरणां चित लाव ॥ ना० ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४९२२ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९ से ।

सं० पाठ ९८–१. हिरदा, हृदय । २. छोड़ी । ३. गढ़ । ४. छोड़ ।

,, ,, ९९.१. नावड़िया, खेवैया । २. जिन । ३. इत । ४. उत । ५. मधुर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१००

नींदडीया[1] बैरणि होइ रही नीदडीयां ।। टेक ।।
कै कोई जागै जोगी–भोगी, कै चाकर कै चोर ।।
कै कोई जागै संत बबेकी[2], जाका धड़ परि सीस न होइ ।। १ ।।
वालपणौ हसि खेल गुमायौ, तरणपन[3] रही साइ[4] ।।
तीन अवस्था यूं ही गुमाई, मुकति कांहां सूँ होइ ।। २ ।।
नर–तन–रतन गुमाइ कैं मैं रही कसूंब रंग धोइ ।।
अब क्या मुख दिखलाऊं हरि सूं, बेठि[5] जोबन खोइ ।। ३ ।।
रोइ–रोइ नैंन गुमाइयां, मन पिछतावा होइ ।।
मीरां दासी गुन्हैगार है, माफ करौ सांई मोइ ।। ४ ।।

१०१

नोनड़ली[1] थांनै बेच द्यूं जे थारो गायक होय ।।
नींदड़ली बैरण बेच द्यूं ।। टेर ।।
पीसै सेर टकै पंसेरी रिपिया री मण दोय ।।
हेला दे–दे गायक तेडूं घालूं उधारी तोय ।।
वीच बजार विछायत[2] माडूं ऊंची खोलूं हाट ।।
दे दे झोला बधती तोलूं बधता राखू बाट ।।
सोवत सोवत सब दिन बीत्या दियो जमारो खोय ।।
निनरा[3] बैरण तां घर जावो राम भगत नां होय ।।
आयो साजन मुड़ गयो रे मैं बैरण रही सोय ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर राखी नैण समोय ।।

---

१. भा० वि० मंदिर बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं०.................

२. पिलानी से प्राप्त हरजसो से

सं० पाठ १००-१. नींदडिया । २. विवेकी । ३. तरुणपणं । ४. सोइ । ५. बैठी ।
,, ,, १०१-१. नींदड़ली । २. विसायत, विसारत । ३. निद्रा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१०२

नैण हमारे अजब कवोल[1] ॥
सायब कुं दिदारी[2] कटारि(री) मारि[3] पेम दी मारी ॥
सुली[4] उपर[5](रांमा) सेझ हमारो किस विध हुवैं जिहार[6] ॥ कटारी० ॥
मिरा[7] कहै प्रभु गिरधर नागर वात वाणि अत भारि(री) ॥ कटा० ॥

१०३

राग सौठं

नेद[1] जी का राजकुंवार, प्यारा मांनु[2] दरसण राजा दीजौ[3] ॥ टेक ॥
हूँ तौ थांरी दासी जनम-जनम की हमारी तुम कूं लाज ॥ १ ॥
विन देख्यां मोहि कल न पड़त है, तड़फ तड़फ जीव जाय ॥ २ ॥
मीरां कै ऊपर क्रपा[4] कीजौ, बांह-ग्रहां की लाज ॥ ३ ॥

१०४

पंचरंगी लहरयौ भीज(जै) छ मारो[1] पचरंगी लहरयौ ॥ टेक ॥
अमई[2] रगआयो[3] जो मईयान[4] आज ही पहरयौ ॥ १ ॥
काली पीली घटा उमग आई रंग चुव(वै) गहरो ॥ २ ॥
मीरा कह मीथुला यण वोसर चरनन को चहरो ॥ ३ ॥

---

१. राज० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९ से।

३. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०५७ से।

सं० पाठ १०२-१. कपोल । २. दीदार । ३. म्हारे । ४. शूली । ५. ऊपर ।
६. जुहारी, जीवारी । ७. मीरां ।

" " १०३-१. नंद । २. म्हांने । ३. दीजौ राज । ४. किरपा, कृपा ।

" " १०४-१. म्हारो । २. अम्बई । ३. रंगायो । ४. मैया ने, मैं याने ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१०५

पड़ गइ(ई) मांनें राम-भजन की बांण जी ।। ग्रा पड़० ।।
साध-संगत बीनो[1] बोहदीन[2] बीता हो, ग्राइ[3] पडी छै मोय हांण जी ।।पड०।।
देय फूक मै पाव धरूंगी पाणी पीउं(ऊं)गी मै छांण जी ।.पड०।।
घर धंधा मं मेरो मन नही लागै साधा मे बैठु(ठूं)गी ग्राण जी ।।पड०।।
मेरो तो मन हरसु जी लागे छांड डाली कुल की काण जी ।।पड०।।
पांव दीया चल सतसंग करलै हाथ दीया कर दान रे ।।पड०।।
नेण दीया साधु-दरसण करलै कान दियां सुण ग्यांन जी ।।पड०।।
मीरां कवै (है) प्रभु सतगुर सरणैं हरसु पडी छ(छै) पीछाण ग्रो ।।
पड़ गई मांन(नें) रांम-भजन री बांण जी० ।।

१०६

परम सुंदरी मृगा-नेणी राधे थै मोहन वस कीनौ हो ।। टे० ।।
मे दुध बेचन जात व्रंदावन गोरस को रस लीनो हो ।। १ ।।
कोप्यौ सुनो लुग[1] सोपारी[2] पानन मै कसु(छु) दीनो हो ।। २ ।।
मिरा[3] कँ प्रभु गीरधर[4] नागर चरण-कमल चीत[5] दीनो हो ।। ३ ।।

---

१. राज प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।

सं० पाठ १०५-१. विना । २. बहुत दिन । ३. ग्रा ही ।

" " १०६-१. लूंग, लोंग । २. सुपारी । ३. मीरां । ४. गिरिधर । ५. चित्त ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१०७

पल ही पल पुकार गरै[1] मेरे(रो) गात है ।।
दिवस न अनि[2] भावै नांही निद्रा राति(त) है ।। टेक।।
तुम मोहि मारि डारि प्रेम की कटारी सारि ।।
नैन बैन घाव मारि नैक न चलात है ।। १ ।।
छिनि–छिनि प्रीत लागी ब्रिह[3] की अगनि जागी ।।
अबै तन जत[4] मेरो कोइ न बुझात है ।। २ ।।
छडि[5] बिसार डारे मघ(ग) जोऊं नैन हारे ।।
अब कव मिलि(ल)न होई कोइ न बतात है ।। ३ ।।
अब हम नांही जीऊं विष पीऊं............ ।।
दास मीरां आव माधो धीर न धरात है ।। ४ ।।

१०८

पात–पात व्रदांवन ढूंढे ढूंढे मथुरा कासी ।।
देख्या स्यांम विलासी ।।
मोर–मुगट पीतांवर सोहै कुंडल की छिव अैसी ।।
आप ही जाय द्वारका छाये ले गए प्राण निकासी ।।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर तुम ठाकर हम दासी ।।

---

१. भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से ।

२. पिलानी से प्राप्त मीरां के हरजसों से ।

सं० पाठ १०७-१. गलै, करै । २. अन्न, अन्य । ३. विरह । ४. जलै, जात ।
५. छांडि, छोड़ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१०६

पिछलो वैर संभारचो रे पपीया पापी ।। टेक ।।
मैं सूती हूँ सुख कै भवन मै पीउ–पीउ कहत पुकारचो ।। १ ।।
दाधा ऊपर लूंण लगावै हिवडै करवत सारचो ।। २ ।।
उड–उड बठै कदम की डारी बोल–षोल[1] उर जारयो ।। ३ ।।
अति हठ सों तूं गैल परचो रे मैं तेरो वाप[2] न मारचो ।। ४ ।।
मीरां गिरधर आरत लागी चरन–कंवल चित धारचो ।। ५ ।।

११०

पीया घर वार मोर गानी ।।
भोतकाल[1] वीषोयन[2] संग खोयो अब तो नकल[3] जावांरै ।।
कुमती नार तेरे संग खोटी इन सब काज बीगारै ।।
सुमती के घर आवौ मेरे सायब तो सुख होय हमारे ।।
मीरां के प्रभु गीरधर[4] नागरं(र) व[ह] सब काज सवारै ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४४, पत्रांक-५३

२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० २०६ से ।

सं० पाठ १०६-१. बोल–बोल । २. बाप ।

„ „ ११०-१. भूतकाल । २. विषयन । ३. निकल । ४. गिरिधर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१११

पीया[1] जोगी भरथरी गुरु गोरख पाया ।।
धनि माता मैणावती सुत राज छुड़ाया ।।
अमल कीया[2] मावा हूवा[3] सुख रैणि बिहावौ(वै) ।।
अमल-नुकल हरे[4] पुरवै[5] जस मीरां जी गावै ।।

११२

पीया मे मैं तेरी दासी हो सनमुष होय सुष दीजे हो ।।
मैं आस-पीआसी[1] हो मेरा तो कछु बसि नही सब तेरे सार(रे) हो ।।
तेरी-तेरी सब ही कहै तुम मया विसार(रे) हो ।।
मेरे तो तुम आसा रांम जी तेरी आंन(नी) हो ।।
फीका लागो तुम वीनां[2] सब ज[न] मल[3] जांन(नी) हो ।।
आरतिवंत सुंदरी पीव-पीव पुकार(रे) हो ।।
अजऊ न[4] आये नाथ जी पछतावा मार[5] हो ।।
मात-पिता कुल छाडि कै तुम-सो ले साथि(थी) हो ।।
हो जने तो नर वाहीयो तेरै वाड़ै वांधी हो ।।
मुज(झ अवला मै चुक[6] का कऊ[7] गई न आये हो ।।
तेरै घर कै वारन[8] सब रैनि गुमाइ(ई)यो हो ।।
येक[9] सगा संसार मै नही ओर न थारा[10] हो ।।
मीरां प्रभु गीरधर वीनां सुष रैनि विहानी हो ।।

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २८९७, पत्रांक-१

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९०, पत्राङ्क-१४४-४५

सं० पाठ १११-१. पिया । २. किया । ३. हुआ । ४. हरि । ५. पूर वै ।

" " ११२-१. आशा-प्यासी । २. विन । ३. मिल जा । ४. अज हूं न । ५. म्हारे । ६. चूक । ७. कहूँ, कहीं । ८. वारणें, द्वार में । ९. एक । १०. थारी, प्यारी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

११३

प्रभुजी तुम दरसण विन दोरी ।।
मेरी लगन लगी है राम सूं और सकल सूं तोरी ।। टेक ।।
पीया मोनैं मनां विसारी श्रौगुण उर विच लीया ।।
साहिव मेरा सांच न मांनं ध्रिग हमारा जीया ।। १ ।।
पीया मोसूं मुख[से] न वोलै मैं कैसी विध जीऊं ।।
मैं तो प्राण तजत हूं अव ही भर वटकी[1] विष पीऊं ।। २ ।।
पीया मौ पर म्हैर[2] करीजै मौ अवला क्यूं मारो ।।
जे मौकूं जीवाई चाहौ तो चरण मेरै घर धारो ।। ३ ।।
चात्रग[3] छांय[4] लगी श्राकासां धरण पड्यौ नही पीवै ।।
मीरां व्याकुल भई व्रैहनी[5] रांम मिल्यां ही जीवै ।। ४ ।।

११४

राग साम कठाण

प्रान लागो हरीरवा मुकटवारे स(सैं) मेरो ।। टेक ।।
षेदो उन ना वरजो नही मानत सषो नागर नटवारे सैं ।।
मोर-मुकट उर माल वीराजत वंसीवीरे[1] पटवारे सैं ।।
मीरां कै प्रभु गरवर[2] नागर वावा नंदजी रा सुतवारे सै ।। ।।

११५

प्रा (श्रा)यजो मांरी[1] भीर सांवरा जी श्रायजो भीर ।। टेर ।।
सुवा[2] पडावता[3] ग्नका[4] तारी तारचो छै जी कालु(लो) कीर ।। १ ।।
वावा नंद-घर धेन चराई विछणं मैं पाई पीर ।। २ ।।
गोपि व्रज-मंडल मैं राच[5] रचाइयो[6] तट जमना की तीर ।। ३ ।।
मीरा कहै प्रभू ग्रिध्र[7] नागर मेटो नी तन की पीर ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४२ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के(इन्द्रगढ़ पोथीखाना) ह० लि० ग्रं० सं० ५२, पत्रांक-४०
३. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से ।

सं० पाठ ११३-१. बाटकी, प्याला २. महर । ३. चातक । ४. छांट । ५. विरहिणी ।
" " ११४-१. वंसी वारे । २. गिरिधर ।
" " ११५-१. म्हांरी । २. सूश्रा । ३. पढ़ावत । ४. गणिका । ५. रास । ६. रचायो ।
७. गिरिधर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

११६

फीर[1] गई रांम दुआई[2] रे लंका मै रांम दुआई रे ।। टेक ।।
कैहत[3] मदोवर[4] सुन पीया रांमण[5] ऐसी कुबद[6] चलाई रे ।। १ ।।
मिरां[7] कै प्रभु गीरधर नागर चरण-कमल लपटाई रे ।। २ ।।

११७

बलि जाऊं चरण(णां) की दासी ।। टेक ।।
यां ही मेरै गंगा यां ही मेरै जमना यांही है तीरथ कासी ।। १ ।।
हरिजी मेरा म्हैं मैं हरिजी की जगत करौ कि न(म) हासी ।। २ ।।
जैसै चंद चिकोर[1] निहारै जल विनि मीन पीयासी ।। ३ ।।
अंन न भावै नींद न आवै निस-दिन फिरत उदासी ।। ४ ।।
मीरां कै सिर उपरि[2] राजै ऐक[3] अंषड[4] अविनासी ।। ५ ।।

११८

वंसो थांरी वाजै जी जमुना री तीर ।।
मै जल जमुनां भरण जात हूँ भरण दे मोहि नीर ।। टेक ।।
यत(इत) गोकुल उत मथुरा नगरी वीच गह्यौ मेरो चीर ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर सुधि नहीं लेत सरीर ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से, पत्राङ्क-६
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८४७ से।
३. राज० शो० सं० चौपासनी बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० २८८४ से।

सं० पाठ ११६-१. फिर। २. दुहाई। ३. कहत। ४. मंदोदरी। ५. रावण। ६. कुबुद्धि, कुविधि। ७. मीरां।
" " ११७.१. चकोर। २. ऊपर। ३. एक। ४. अखंड।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

११९

वाईजी म्हारै सांवरियौ आ[1] तो देव बदला में दी(दि)यो ॥
म्हे सेयौ सिरजनहार[2] ॥ टेक ॥
कोई निंदो कोई व्यंदो[3] कोई कहौ लख च्यारि(री) ॥
सांवरियौ वर पायौ हि[4] म्हाँनै जगत हंसे हौ महारी[5] ॥
सजनी सब तजि जगत विकारी[6] ॥ १ ॥
पाटी पाड़ौं मांग संवारौं नौसत करुंली सिंगार(री) ॥
सांवरियौ चारी सेज सुरंगी म्हे देवूंली नैंना निहारी ॥ २ ॥
साध संगति कीन्ही धनि हौ तीरथ हीये है अधाय ॥
मीरां प्रभू गी(गि)रधर नी दासी चरण कंवल[7] चितलाई(य) ॥ ३ ॥

१२०

वांके छैल बीग्रारी[1] ॥
ली(लि)खत परवाती कीण्डे[2]जाग्रे[3] विलुव्याना[4] म्हे(मैं)हेला दे दे हारी ॥
हो जी खांड भात ग्रोर मेवा मिसरी तोरै कारण लाई जी ॥
उठौ सांवरा भौर भयो सासू छांने ग्राई जी ॥
कण्डे जाए विलुव्याना म्हें हेला दे दे हारी जी ॥
मेरो तो गागर बोत[5] रसीलो सबधात सोनारी जी ॥
नटनाग्रीग्रयान[6] लुट लडी से लोग हंसे दे ताली(री) जी ॥
कण्डे जाए विलुव्याना म्हे(मैं) हेला दे दे हारी जी ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से, पत्राङ्क-८४

सं० पाठ ११९-१. ओ । २. सिरजणहार । ३. बिंदो, वंदना करो । ४. है । ५. म्हारी । ६. विकार । ७. कमळ

" " १२०-१. बिहारी । २. कहां । ३. जाय । ४. बिलमाये । ५. भोत, बहुत । ६. नटनागरिया नै ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२०

कोई के ओढण पीत पीतामर[7] कोई के कामल[8] काली[9](री) जी ॥
मे(मै) तो ब्रकभाण की कंवरी राधका तुम औ नंददुलारी[10] जी ॥
कण्डे जाए विलुव्याना म्हें हेला दे दे हारी जी ॥
रेण अंदे(धे)री पंत[11] दोअ्रेणो सिर पर गागर भारी जी ॥
मीरां के प्रबु[12] गिरधर नागर चरण-कमल[13] बलिहारी जी ॥
कण्डे जाए बिलुव्याना म्हें हेला दे दे हारी जी ॥

१२१

राग पनघट

वारी[1] पनघटवा कैसे जाऊं ॥
घाट बाट मग घेरै ही ठाढो कहौ कैसै भर लाऊं ॥ १ ॥
कांकर मार गागर कूं फूरत[2] कहा[3] कह कर समझाऊं ॥ २ ॥
छिपकै निरख कर ताक लगावै तब काहा[4] भज जाऊं ॥ ३ ॥
अैसैं[4] तौ नित नांहि निभैगी जसोधा(दा) सै कह आऊं ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभू अत खुट पचरो चरन कंवल[5] चित लाऊं ॥ ५ ॥

१२२

वूझो-वूझो नै पिडंत जोसी, मोरा रांम मिलन[1] कब होसी ॥ टेर ॥
मेरी आंख फरुंकै वांई, मोहि साध मिलै कै सांई[2] ॥
मेरा पीव परदेसां छाया, काही[3] विरहन नै भरमाया ॥ १ ॥
मेरी रोय रोय अंखियां राती, मेरा तन दीपक मन बाती ॥
मेरा झुर-झुर पिजंर खीना, जैसै जल[4] विन तलफत मीना ॥ २ ॥
उड-उड रे कारे कागा, मेरा हरिजी नै घणां दिन लागा ॥
वाजीदौ ब्रैहै[5] विसूरै, मेरी आस गुंसाईयां पूरै ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४६२२ पत्रांक-३०
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २५३४४, पत्रांक-१०१
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१, पत्रांक-६

सं० पाठ १२०-७. पीताम्बर । ८. कामळ । ६. काळी । १०. दुलारे । ११. पंथ । १२. प्रभु । १३. कमळ ।
,, ,, १२१-१. बाईरी । २. फोरत । ३. का । ४. कहां । ५. कमळ ।
,, ,, १२२-१. मिलण । २. सांयां । ३. कांई । ४. जळ । ५. बिरह ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२३

भली भई मारी[1] मटकी फूटी दद(धि) वेचन सु(सू) छूटी रे ॥ १ ॥
व्रंदावन की कुंज गली में सिर से मटकी फूटी रे ॥
मैं बेटी व्रखभान राय की कौन कहे जा(जो) मोऐ जुडी[2] रे ॥ २ ॥
मैं दद(धि) वेचन जाती बींद्रावीन[3] वीच सांवरे लूटी रे ॥
रपट–जपट मारी[4] बईयां मरोरी लड़ मोतियन की टूटी रे ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरी(रि) चरना[5] की बूंटी रे ॥
हरी(रि) नाम ली(लि)या जिन षुव[6] काम की प्सी (प्यासी) ॥
ओर बात सब जु(झू)ठी रे ॥ ४ ॥

१२४

राग विलावल

भली तो निभाई बालापन[1] की रे उधो ॥
व्याकुल भई कल न परत है, सुध न रहत है तनकी ॥ रे ऊधो ॥ टेक ॥
आपन जाय द्वारका छाये, हमनें(सौं) कही वन–वन की ॥ १ ॥
सब सखियन मिल जोग गहीलो, भसम रमाओ मलयागिरी की ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर कोई न जांनें[2] मांरै[3] मन की ॥ ३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७९४४, पत्रांक-८

सं० पाठ १२३-१. म्हारी। २. झूठी रे। ३. बृंदावन। ४. म्हारी।
५. चरणां। ६. खूब।

„ „ १२४-१. बालपण २. जांणें। ३. म्हारै।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२५

भूल मती जाजो[1] जी मारा[2] राज ।। टेर ।।
मैं अबला बल नाई गुंसाई तुम मेरे सिरताज ।। १ ।।
मैं निरगुणी गुण ना(ई) गुंसाई तुम गुणवंता राज ।। २ ।।
मीरां के प्रभू कब रे मिलोगे सरणे मोई[3] नीवाज ।। ३ ।।

१२६

मगन रो रे[1] परभु के भजन से मगन रो रे ।।
का जांणै रांणों भगतां रो भाव दीनौ जे'(जह)र ईमरत हुय जाय ।। १ ।।
वटवा में घालो[2] राणों कालो[3] नाग हु(हो)य गई मूरत सालगरांम ।। २ ।।
भाडा-भडा[4] अमराव[5] खांन सुरत[6] मनारी गी(गि)रद उडियो गान[7] ।। ३ ।।
का[8] गये गोपी का गये गवाल[9] का गये भो(बी)ण बजावणहार ।। ४ ।।
मीरांबाई ने मीलिया घी(गि)रधर लाल तुम छुडाये[10] रांणा मेरो खाल ।। ५ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से । पत्रांक-११

सं० पाठ १२५-१. जाज्यो । २. म्हारा । ३. मोही ।
,, ,, १२६-१. रहो । २. घाल्यो । ३. काळो । ४. बडा (बड़ा) बडा ।
५. उमराव । ६. सुरताण । ७. चौगान । ८. कहां ।
९. गुवाळ । १०. छुडायो ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२७

मन की मन में रही रे मांहरे[1] हीरद(दै) करोत भई रे ॥
एक समै हर मेरे ग्रह[2] आया मै दध मथन रही रे ॥
मै मंदभागण माणस जान्यौ[3] जातन अठ गही रै ॥
इत गोकल उत मथुरा नगरी वैरन वीच भई रे ॥
मैं इत वो वुत ये री सखी री पर(पो)तम भेंट भई रे ॥
सोल-संस्त[4] गोपका छाकी (डी) कुबजा संग लई रे ॥
हमनै[5] (जोग), भोग कुबजा सूं, व्रीज मे न्याव नहीं रे ॥
आपनै जाय दुवारका छाये हमसूं कछू न कही रे ॥
मीरा के प्रभू गिरधर नागर गोप्यां डु(भु)र रहीं रे ॥

१२८

मन मांनै ज्यां[1] जावो छौ राज थांरो ॥ टेर ॥
भीलनी के बोर, सुदामा के तंदुल, रुच रुच भोग लगावो छौ ॥ १ ॥
दुरजोधन का मेवा त्यागया, साग विदुर घर पावो छौ ॥ २ ॥
राधा रुकमनी तजी[2] सतभामा कुबज्या के मन भावो छौ ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर बोल वचन निभावो छौ ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर, के हृ० लि० ग्र० सं० १७० से।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से

सं० पाठ १२७ १. म्हारै। २. घर। ३. जाण्यों। ४. सोळै सहस्र। ५. हमसूं।

„ „ १२८-१. जहां। २. तजि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२६

राग तोडो

मनमोहन ग्रावन की सुनकै भयो जो[१] परमानंद रै ॥ टेर ॥
श्रवण सुनत ही ग्रती[२] सुष पायो छूट गया दुख-दुंद रे ॥ १ ॥
सुए रे(रो) सखी ऐ(ए)क बात सैंयानी काहा जो कयौ[३] गोबंद[४] रे ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभू गिरधर नागर काट दी(दि)या जम-फंद रे ॥ ३ ॥

१३०

राग कालिंगड़ो

मनरो[१] वसे छै जांही जाज्यौ जी ।।
राधा रुकमनि ग्ररु सतभांमां कुवज्या के संग जाज्यौ ॥ १ ॥
कूड़ी प्रीति करी मनमोहन कूड़ी-कूड़ी सोगन खाज्यो ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु सब वृजनायक प्रांगणिये[२] फिरि ग्राज्यौ ॥ ३ ॥

---

१. ग्रनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७२ से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७५७३ से ।

सं० पाठ १२६-१. जी । २. ग्रति । ३. कयौ, कह्यौ । ४. गोविंद ।

,, ,, १३०-१. मनड़ो । २. ग्रांगणिये ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३१

राग सोरठ

मना रे गिरधर का गुन गाय ।।
मनसा वाचा करमना रे धणी सौं ध्यान लगाय ।। टेक ।।
कोल करी[1] ग्रभवास में रे सो तैं क्यौं विसराय ।।
पांणी सों पैदा की(कि)यो रे मिनखा देही[2] धराय ।। १ ।।
प्रभू सूं कोल विसार कै रे माया मोह लुभाय ।।
मात पिता सुत बंधु दारा बांधो(ध्यो) सहज सुभाय ।। २ ।।
जौबन तो जातौ रह्यौ रे अब यो बुढापो आय ।।
राम नाम सुमर्यो नहीं रे पाछै ही पिछताय ।। ३ ।।
मीरां यौ कर(रु)णां करी तब दया करी रघुराय ।।
घरि बैठां गी(गि)रधर मिल्या तातैं दुरि काहै कौ जाय ।। ४ ।।

१३२

राग बिहाग रौ

मंदिर पौढिये रघुराई ।। टेक ।।
कंचन कौ महल कंचन कौ ढुलिया(यो)[1]रेसम बान वजाई[1] ।। १ ।।
फूलन सेज फूलन के गिंदवा फूलन लूंब लगाई ।। २ ।।
चौवा चंदन अगर कुंम-कुंमा केसरि अंग लपट पठाई[2] ।। ३ ।।
सीतारांम दोउ(ऊ) संग पौढे बलि जाय मीरांबाई ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८२९० से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ९२५९ से । पत्राङ्क-६८

सं० पाठ १३१-१. कर्यो । २. देह ।

" " १३२-१. रेसम बाण बणाई । २. लपटाई ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३३

माई कब देखौं मोंहन मूरति लाला रिसाल को दरस ।।
अंखिया अरबरानी जिय में कछु ओर वां(ठा)नी ।।
अंसुवन जल इद्रं लाग्यौ बरसन ।।
निस-दिन मारग जोऊं कल नां परत मोकौं ।।
अजहूं न आए पी(पि)य लागे ने(नैं)नां तरसन ।।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर निरखत ही पग पर(स)न ।।

१३४

माई नंद के नंदन मेरो मन हरैया[1] ।।
चित में भई चटपटी भारी चेटक सौ जु करचौ ।।
तनक ही मांनक सुनी मुरली की तन मन में न हरचौ ।।
स्याम स्याम रसना रट लागो और सबे विसरचौ ।।
लोक लाज कुल कांनि विकाई गई([ग]र्व गुमान गरचौ ।।
फूली सी डाली डोलति गोकल में घेर घनो परचौ ।।
छिन मोहन मूरति देखे जो तन धीर धरचौ ।।
गिरिधर हाथ विकांनो मीरा प्रभू दाव परयौ सु परचौ ।। १ ।।

---

१ राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९० से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ९२५९ से । पत्रांक-९८

सं० पाठ १३४-१. हरचो ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३५

माई री लालन आवन कौ मैं आगम जान्या ॥
फरकत लागे री कुच भुज बांही, सुनि सखि एक बात पी(पि)य आवेंगे ॥ १ ॥
प्री(प्रि)या पात फूली आंगन मांही, अंखियां आगोंनी मिलि आई,॥
करवो कंगन देऊंगी, मोतियन की लार[1] दैऊंगी ॥ २ ॥
तिन मोरे पियहवू[2] की बतियां सुनाई, कब मिलि भेटौंगी ॥
मीरां के प्रभु कोटिकी[3] करि हौं बधाई ॥ ३ ॥

१३६

माणक मोती सब हम छाडै गल में पहरी सेली ॥
भोजन वसन नीको नहीं लागै पी(पि)या कारन भई गेली[1] ॥
मुजै(झे) दूरी क्यों मेली ॥ १ ।
अब तुम प्रीति ओर सूं जोड़ी हम सूं करि क्यूं पहलै(ली) ॥
वोहो दिना बीते अजहूं न आए लग रही तालाबेली ॥
किणौं[2] विलमाए[3] सहेली ॥ २ ॥
स्यांम विना जीवयौ(ड़ौ) मुरझैयौ जैसै जल विन वे(बे)ली ॥
मीरां के प्रभू दरसन दीजो जनम जनम की चेरी(ली) ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं०, १०६७ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७३ से ।

सं० पाठ १३५-१. लड़ (लर) । २. पिय हू । ३. कोटिक ।
" " १३६-१. गैं'(ह)ळी । २. किण । ३. बिळमाया ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३७

हरजस

मारी[१] गलीयां[२] आवरण हो पीयारा[३] ।।
गंगसम[४] मिजलस आवरण हो गंगसांम ।। टे० ।।
लग रईयां[५]फूलड़ा झुक रई कालीया[६]ऊंची हठाई[७] मांरा[८](रो)ग्राम ।।
सड़ी गलीअयां[९] आवरण हो गंगसांम ।।
पीछवाड़(ड़ै) आय हेलो दीजो ललना(ता)सखी मेरो[१०] नांम ।।
स्रोयरव(वै) सब बीरज को लोकओ आई हे छल–बल को कांम ।।
·········जावो नी(नि)रमोहीड़ा जांणी थांरी पीत ।।
इमरत छोड जहर कीउ[११] पीये तुम में आकांणा की पीत ।।
पीत लगी जब ओर रीत ही अब भई आन[१२] रीत ।।
········जासवो नी(नि)रमोहीड़ा जांणी थांरी प्रीत ।।
मीरां कै है परभु गी(गि)रधर नागर तुम मतलब का मीत ।।

१३८

मारो[१] लालजी छोगालो[२] रे ठाडो जमुना की तीर ।। टेर ।।
तूं जमना बड़भागणी नो(नि)रमल थारो नोर ।।
पणीयारया[३] पाणीभरे कांई ओडण चंगा चीर ।।
जी म्हानें पीयरीऐ[४] पीछावो[५] रे ।। १ ।।
जमुना तूं दूरी ग(घ)णी मासु[६] गयो ये न जाय ।।
कीजो[७] मारा[८] साम[९] ने मानें[१०] गोदचां कर ले जाय ।।
जी में पाली(ळो) कोस(बिध)चालू रे ।। २ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७४ से । पत्रांक-७

सं० पाठ १३७-१. म्हांरी । २. गळियां । ३. प्यारा । ४. गंगश्याम ।
५. रह्या । ६. कळियां । ७. हताई । ८. म्हांरो । ९. गळियां ।
१०. म्हांरो । ११. (क्यूं) पीऊं । १२. अन ।
„ „ १३८-१. म्हांरो । २. छोगाळो । ३. पिणयारचां । ४. पिहरिये ।
५. पौंचावो । ६. म्हांसूं । ७. कहिज्यो । ८. म्हांरा । ९. स्यांम ।
१०. म्हांनें ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तूं जमुना गेरी[११] ग(घ)णो मांसु उतरयो न जाय ॥
कीजो मारा स्यांम ने माने बेस्यां पकड़ ले जाय ॥
जी में झाला दे दे हारी रे ॥ ३ ॥
मे(मैं) तनें बरजु(जूं) सांवरा रे बरसाणे मत जा(य ॥
बरसाणां री गु(गू)जर्यां थांने राखेला बी बि)लमाय ॥
जी मे(मैं) बरजत हारी रे ॥ ४ ॥
मै बेटी वृखभाण की राधा मेरो नाम ॥
पकड़ मगाऊं क्रस्न को कोई छोटो सो नंदगाम ॥
जो माने दया तो तुमारी आवै रे ॥ ५ ॥
छोटो छोटो(मत) कर रादा(धा) मत कर छोटी बात ॥
छोटो दूज को चंद्रमा कई दुनीयां जोड़े हात ॥
जी दुनिया में दो दिन रेणां रे ॥ ६ ॥
अतलस को लैं(ह)गो बणास्यां रे चोली बूंटादार ॥
असी मोहर को तो तेवटो मारी नथड़ी भल(ळ)कादार ॥
जी मारे[१२] दांतन चूप दीरावो रे ॥ ७ ॥
तन चोखा मन लापसी ने(नैं)णां घी की धार ॥
दूजो हात(थ) परूसती कांई जीमों क्रस्न मुरार ॥
जी मनुहार कर कर हारी ॥ ८ ॥
बरसाणां रा बाग में रे पाकी छै बडवोर ॥
कीजो मारा स्याम ने कांई लावे लूबां तोड़ ॥
जी में तो उबी[१३] बाट उडीकूं रे ॥ ९ ॥
गोकल बाजा बाजिया रे बरसाणे सुणीं आवाज ॥
(मैं)में दद(धि) वेचन जावती कंई आगे खड़ा नंदलाल ॥
जी माने बंसी की टेर सुणाई रे ॥ १० ॥
हरिया कंद की चुंदड़ी रे बूंटी लाल गुलाल ॥
ओडण वाली[१४] रा(ध)दका कंई नीरको[१५] क्रस्न मुरार ॥
जी मैं सेंना में सम(झांवूं)जावु रे ॥ ११ ॥
विनरावीन[१६] री कुंजमे रे क्रस्न(ण) रचाया रास ॥
सब मुंनी जै जै करे कंई गावे मीरां दासि ॥
जी चरणां में चित लगाया रे ॥ १२ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के हू० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ १३८-११. गेहरी, गे'री । १२. म्हांरे । १३. ऊभी । १४. वाळी १५. निरखो ।
१६. बृदावन ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३९

पद

मिजाजीड़ा बंकै[1] नैंणां में जादू डारचा ।। टेक ।।
घायल की गत घायल जांणै क्या जांणै वेद विचारे ।। १ ।।
तुम तो किसन जनम के कपटी प्रीत करी पछताना[2] रे ।। २ ।।
मीरां कैं प्रभू गिरधर नागर तुम जीत्या हम हारचा(रे) ।। ३ ।।

१४०

मीरां नै जहर इंम्रत कर पीयौ, पीयौ-पीयौ धणीं कै भरोसै ।। टेक ।।
राणों जी कागद मौकल्या जी, द्यौ मेड़तणी नै जाइ ।।
साधां री संगति छोडिद्यौ, थांरां कुल[1] नै लांछण थाइ ।। १ ।।
काठन की माला[2] तजौजी, पहरो मोतीहार ।।
भगताई थे दूरि करोजी, सब ही राज तुम्हार ।। २ ।।
काठन की माला हीरां जड़ी जी, म्हांरा हीया सूँ लिपटाई ।।
जे थांरै मन भ्रान्ति वसै तौ, हमैं(म) बहन तुम भाई ।। ३ ।।
मीरांदासी राम की जी, निति प्रति रहै हजूरि ।।
हरिजन सूं सुनमुख सदाजी, दुसय्यां[3] सेती दूरि ।। ४ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५३ से ।

२. मा० वि० मंदिर बीकानेर के ह० लि० ग्र० से

सं० पाठ १३९-१. बांकै । २. पिछताणां ।

" " १४०-१. कुळ । २. माळा । ३. दुसटां ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४१

मुज प्रेम में हरि करोजी हरि आवनां हरि आवनां जी मन भावनां ।।टेक।।
मेरे द्रग तलफत[1] द्रग देखन कुं, गल[2] कर दरस दिखायना ।। १ ।।
लग-लगी सब कोई जाने, अब कहौ कैसे छिपावना ।। २ ।।
मीरा(रां) कै प्रभू गिरधर नागर, यो ओसर नहीं पावना ।। ३ ।।
हम कब होंवेंगे ब्रजवासी ।। ४ ।।

१४२

राग कीलन (कल्याण)

मुरली नै म्हांरो जीवैरो[1] मोह ली(लि)यौ ।।
वर(स)परी[2] वाजत है निस-दिन अधरन को रस (लि)लीयो ।।
मोर मुकट गल-माल विराजै कुंडल की छव न्यारी ।।
मीरा के प्रभु गी(गि)रधर नागर मन मोह(न) वनवारी[3] ।।

१४३

मेरो प्यारो नंदलाल वंसी बजायो(य) गयो बन में ।।
वंसी की धुन सुन(ण) मैं चली मोहे कछु न सुहाये ।।
वंसी बजाय गयो बन में ।।
विसरि है सुनु धुन तकी[1] तन मन मोहे मेरे प्रान ।।
वंसी बजाय गयो बन मैं ।।
वनहूँ के मिर्गा[2] मोहे चंदा मोहे आकास ।।
पानी तो पाथरा[3] हो गये जमना बाहि आसराल ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से । पत्रांक-२२

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २५३४४ से, पत्रांक-१५

सं० पाठ १४१-१. तड़फत । २. मिल ।
" " १४२-१. जीवड़ो । २. बंसरी । ३. बनवारी ।
" " १४३-१. सखी । २. मिरगा । ३. पाथर ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कनवा मिलन कूं मे(मैं) चली बिच पाह गई नांव ॥
मिरा[४] तो हरजी की लाडली दरसन दिजो नंदलाल ॥
बंसी बजाय गयो वन में ॥ १ ॥

१४४

मेरी आंखिन लगी आई लाज री, मेरौं मन लाग्यौ उनके मनसौं ॥ १ ॥
मन चात्रिग नैंना अति चंचल, ये दोउ(ऊं) कठिन इलाज री ॥ २ ॥
मन कहत नैंना अजहूं मिलि, बिछरन(त) ये ही जंजाल री ॥ ३ ॥
मीरा प्रभु गिरधर आय मिले, मोंहि जीवन सफल धन आज री ॥ ४ ॥

१४५

मेरी कांनां सुनिजो जी कर(रु)णां निधांन ॥ टेक ॥
रावलो विड़द मोहि रुड़ो सो लाग परत पराये प्रांन ॥ १ ॥
सगा सनेही मेरं और न कोई वैरो सकल जिहांन ॥ २ ॥
ग्राहा गह्यो गजराज उवारयौ बूडि न दीन्हौं[१] जांनि[२] ॥ ३ ॥
मीरांदासी अरज करत है नंही जी सहारो आंन ॥ ४ ॥

---

१. राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हु० लि० प्र० सं० २५३४४ से । पत्रांक-६२
२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० १०६७, से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७, से ।

सं० पाठ १४३-४. मीरां ।
" " १४५-१. दीन्ही । २. जांण ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४६

भुगत रौ ऐ गैहणौं पैरीयौ(पै'रियौ) ॥
पै'रियौ पैंरियौ ऐ सतगुर परताप ॥ टेक ॥
मांरै(म्हांरे) खिम्यांरी चूंदड़ बाण रही रांमइयौ ऐ सालूड़ारी कोर ॥१॥
मांरै(म्हांरे)करणी रौ काजल सारिचौ रांमइयौ ऐ मारै तिलक लिलाड़॥२॥
मांरै(म्हांरे) सील संतोख चूंप बणी मांरै(म्हांरे) नथ बेसर गुरग्यांन ॥३॥
मांरै(म्हांरे) तंत नांम तिमण्यौ रांमइयौ ऐ हिवड़ा रौ हार ॥४॥
मांरै(म्हांरे) चित चेतन चुड़लौ बण्यौ रांमइयौ ऐ चुड़ला री मजीठ ॥५॥
मांरै(म्हांरे) ग्यांन बाजूवंद बहुरंगा रांमइयौ ए बाजूबंध री लूंब ॥६॥
हूं तौ इतनौ जी पहिर नीसरी चाली चाली ऐ रांमइया री सेज ॥७॥
बाई मीरां नै गिरधर मिल्या पूरी-पूरीऐ मनड़ा री हूँस ॥८॥

१४७

मैरौ राम नैं रिझाऊं, अ्रेजी मैं तो गुण गोबिन्द का गाऊं ।
डालपात कै हाथ न लाऊं, ना कोई विरछ सताऊं ।
पान पोन में सायब देखूं, झुक झुक सीस निवाऊं ॥
अ्रेजी मैं तो गुण......... ॥टेक॥
गंगा जाऊं न जमना जाऊं, नां कोई तीरथ न्हाऊं ॥
अड़सव तीरथ भरया घट भीतर, ज्यांमें मलमल[1] न्हांऊं ॥ १ ।
साधू होऊं न जटा बधाऊं, नां कोई खाख रमाऊं ॥
ग्यांन कटारी कस कर बांधूं, सूरतां म्यांन चढाऊं ॥ २ ॥
पारबिरम पूरण पुरसोत्तम, व्यापक रूप लखाऊं ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आवागमण मिटाऊं ॥ ३ ॥

---

१. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ७१४३, से । पत्रांक-५३

२. पिलानी से प्राप्त हरजसो से

सं० पाठ १४७-१. मळमळ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४८

मैं तो छाडी छाडी कुलकी कांनि राणो मेरों कहा करसी ॥ टेक ॥
साधां रे संग जाय दवारका मे(मैं) तो भज्या श्रीरणछोर ॥ १ ॥
दौड़ि रे जास्यो[1] देउरै (देवरै) लेस्यों[2] महाप्रसाद ॥ २ ॥
प   त्रजावै घुंघरा हाथ मै लेस्यौं(स्यूं) ताल ॥ ३ ॥
गास्यों(स्यूं) गुंण गोपाल ॥
मीरां पोहर छाडो[3] मेरतो सासरियौ ची(चि)तोड़ ॥ ४ ॥

१४९

मैं वैरागणं रांम की थारै मारै(म्हांरे) कद कौ सनेह ॥
वी(बि)नपांणी बिन साबुनां रे सांवरा हू गई (होगई) धोय सफेद ॥ १ ॥
जोगण हुई[1] जंगल सब हेरु रचो) तेरा[2] न पाया[3] भेस(द) ॥
तेरी सूरत कै कारणैं सांवरा धरै (र) लिया भगवां भेस ॥ २ ॥
मोर मुगट पीतांबर सोहै घूंघर वाला[4] केस ॥
मीरा(रां) कहै प्रभु गिरधर नागर हूँण वडा सनेस ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६० से।

२. संत साहित्य मंडल बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त।

सं० पाठ १४८-१. जास्यूं, जास्यां। २. लेस्यां, लेस्यूं। ३. छोड्यौ।

„ „ १४९-१. होय। २. तेरो। ३. पायो। ४. वाळा।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१५०

मोरे[1] घर आज्यो राम पियारा ।। टेर ।।
मैं नुगणी में गुंण नहीं कोई मो मैं ओगंण सारा ।।
तन मन धन सब अरपण करसूं (स्यूं) भजन करूं(कस्यूं) मैं थांरा ।। १ ।।
बोहो[2] गुणवंता साहिब मेरा गुनां(न्हां) बकसज्यो सारा ।।
मीरां तो चरणन की दासी तुम बिना नैन दुख्यारा ।। २ ।।

१५१

मोवन[1] जावोला कठै सांवरिया जावो[ला]कठै अब रे'वौ अठै ।। टेर ।।
गोकल(ळ) वसवो[2] फीकोई लागे मथुरा में कई[3] लाडू बंटै ।। १ ।।
रादा (राधा) रुखमण और (अर) सतभामा कुबज्या-
कई[4] थारे लीनी पटे ।।
नितरौ(रा)ई आवौ नितरो(रा)ई जावो नित आयां थांरो मान घटे ।। २ ।।
नहीं आवौ तो थांने कूंण बुलावै आवौ तो थांने कूंण नटे ।।
बाई मीरा(मीरां) के प्रभु गिरधर नागर थांरो नाम लियां-
म्हांरो दुख कटे ।। ३ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ १५०-१. म्हारै । २. बहु, भो'त -

" " १५१-१. मोहन । २. बसबो । ३. कांई, कंई । ४. कंई ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१५२

मोहन रातड़ली का बसिया ।।
थांरा भंवर पटामें आवै वासड़ली रातढली[१] ।। टेर ।।
काई[२] तुमारो नाम कहीजे काई[३] तुमारी जातड़ली ।। १ ।।
भगतवछल मारौ(म्हांरो नाम कहीजे जादु[४] हमारी जा(बा)तड़ली ।। २ ।।
के सतभोमा[५] रे मेल[६] पधारै कै कुब्रज्या से क्रिवो वातड़ली ।। ३ ।।
वाई मीरां के प्रभु गिरधर नागर आए मिल्या परभातड़ली ।। ४ ।।

१५३

म्हानै जावोदो[१] वी(बि)हारी, मारै(म्हांरै) काम सै (छैजी)
इतनी अरज सुणो जी सांवरा था(थां) विचै मां(म्हां) विचै राम से(छै)जी ।।१।।
इत गोकल उथ(त) मथरा नगरी, जमना क(कि)नारै मेरो गांम(छैजी) ।।२।।
मोरे आ(आं)गण चंदन का वी(वि)रवा[२], सांवरी सषी(खी)मेरो नाम सै(छै)जी ।।३।।
मीरा(रां) कहै प्रभु गिरधर नागर, हर[३]–चरणां मेरो ध्यान सै छै)जी ।।४।।

---

१. अनूष सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ७६६४ से ।

सं० पाठ १५२-१. रातड़ली । २,३, कांई । ४. यादव, जादव । ५. सतभामा । ६. महल ।

" " १५३-१. जावादो । २. विरछा, वृक्ष । ३. हरि ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१५४

राग सोरठ

म्हांनै लाप(ख) लोग ह(हं)सि जाह्व्‌ दासी जगदीस तणी है ॥ टेक ॥
दासी सोई दासातउ जांणै मन में राखै भाव ॥
तन मन धन संतन कौ अरपे(पैं)ह हरि तजि अनत[1] न जाय ॥ १ ॥
व्रंदावन की कं(कुं)ज गलिन में नरतत 'ताथे इत्ता(ताय)[2] ॥
रुणक झुणक घुंघुरु अति घमकै मुरली रौ अधिक वना(वणा)व ॥ २ ॥
मन वचन क्रम करि गोबिंद भजिस्या(स्यां) म्हांरो यौ हो सुभाव ॥
मीरां प्रभु गिरधर नी दासो म्हांरो कांई करैलो रो रांणो राव ॥ ३ ॥

१५५

म्हारां पियरी(रि)यांरी वांतां सतगुरु कैता[1] जाजी[2] ॥ टेर ॥
सतगुरु आया सब रस लाया प्रेम पियाला पाया ॥
सतगुरु सा(सां)चा सूरमा म्हांनै सेजां राम मिलाया ॥ १ ॥
सासरी(रि)या मैं दुख्ख घंणो रे सासू नणद संतावै ॥
कैजो[3] म्हांरा वावा(वावा)जी(सा) नै वे(बे)गा लेवा(वा) आवै ॥ २ ॥
देवर-जेठ म्हांरो कुटंव कबोलौ नित उठ राड़ चलावै ॥
इण घर-धंधै री वातां मांने एक ही दाय न आवै ॥ ३ ॥
मारा[4] पिहरी[5] रो लोक भल(ले) रौ बांधै कंठी माला[6] ॥
तिलक छापा रुड़ा सा(सो)है वे अमरापुर वाला[7] ॥ ४ ॥
अमरापुर में सासरो रे पीहर संता पास ॥
भले (ळे) न इण जुग आवसां[8] गावे मीरा(रां)दासो ॥ ५ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२ से । पत्रांक-१३२
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से ।

सं० पाठ १५४-१. अन्यत्र । २-२. ता थेइ तथ्या ताय ।
„ „ १५५-१. कै'ता, कहता । २. जाजोजी, जाज्योजी । ३. कहिज्यो, कै'ज्यो ।
४. म्हांरा । ५. पिहरिया । ६. माळा । ७. वाळा । ८. आवस्यां ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१५६

म्हांरी लागी लगन मत तोड(ड़) सांवरा ॥
गांव(ठ) जु घुर(ळ) गई रेसम की ॥ टेक ॥
स्यांम सुं(सूं) प्रीति करी सजनी ज्यों जाणैं ज्यों जोड़ ॥ १ ॥
तुम वि(बि)न मो को कल(ळ) न परत है तो(तूं) मुख मति मोड़ ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर लीज्यो आप बहोड़ ॥ ३ ॥

१५७

म्हांरे हीरदे[1] ली(लि)ष्यो जो हरी(रि) नाम ॥
अब नहीं बीसरु(रूं) म्हांरी सेवामे(में) सतगरु राम ॥ टेर ॥
वी(वि)स का प्याला राणेराइ भेज्या दो(द्यो) मेड़तणी रे हाथ ॥[1]
करी चरणाम्रत पीई गई, थे जांणो रे रगुनाथ[2] ॥ १ ॥
जाई दासी म्हल में, जरे मीरां मुंई क(कै) नांही ॥
मुई वे[3] तो जाल[4] दो(द्यो) जी, ने तो नदी में दो(द्यो) जी बुहाई ॥ २ ॥
पावां वादया[5] मीरा(रां) गु(घूं)गरा जी, हाता(थां) लीनी ताल(ळ) ॥
मीरा(रां) महल में ऐकली जी, भजे राम-गोपाल(ळ) ॥ ३ ॥
रांणो मीरा(रां) परी(पर) कोपीयो जी, मारुं ऐ(ए)कण सेल ॥
लांछण लागे जीव कुं(कूं), पीहर दीजो(ज्यो) मेल ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ३७९४४, पत्रांक-४१

सं० पाठ १५७-१. हिरदे। २. रघुनाथ। ३. ह्वै। ४. बाळ। ५. बांध्या।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरा(रां) महल सु(सूं) उ(ऊ)तरी जी राणा(णौं) पकडयो(ड़्यो) हाथ ॥
हतलेवा[1] का सांईना मारे(म्हांरै) ओर न दूजी बात ॥ ५ ॥
रत(थ) बेल्या[2] सीणगारीया[3] उठां[4] कसी(सि)या भार ॥
डावो मेल्यो मेततों(मेड़तो) पहली पोक(ख)र जाई ॥ ६ ॥
सा(सां)ढीड़ा सा(सां)डीयो पीलाण जा रे मीरा(रां) पाची(छी) फेर ॥
कुल(ळ) की(री) तारण अस्तरी मुरड़ चली राठो(ठौ)ड़ ॥ ७ ॥
सांढीडा(ड़ा) सांड्यो फेर दे रे पर तन देसु(स्यूं) पांव ॥
ले जाती वैकुंठ में (रे) समज्या(झ्यौ)नहीं सीसोद ॥ ८ ॥
लाजै छै पीयर सासरो मीरा(रां) लाजे(जै) छै माय-मोसाल(ळ) ॥
लाजै दु(दू)दाजी रौ मेरतो[5] लाजै गढ ची(चि)तोड़ ॥ ९ ॥
तारु(रूं) पीयर सासरो जी तारु(रूं) माय-मोसाल(ळ) ॥
तारु(रूं) दु(दू)दाजी रौ मेरतो[5] तारु(रूं) गढ ची(चि)तोड़ ॥ १० ॥
लक्ष्मीनाथ के रै देवरे जी बैठौ सीसोदया[6] साथ ॥
मीरा(रां) नाचे ऐकली जी, छाडी कुल(ळ) की लाज ॥ ११ ॥
साध हमारा मे(मैं) साध की, हम हे(हैं) साधां आग(गै) ॥
साध हमारे में रम रै'या(रह्या) ज्यु(ज्यूँ) पथरी में आग ॥ १२ ॥
मीरा(रां) को पीयर मेड़तोजी सासरी(रि)यो ची(चि)तोड़ ॥
मीरा(रां) ने गी(गि)रधर जी मो(मि)ल्या नागर नंद-किसोर जी ॥ १३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

सं० पाठ १५७-१. हथळेवा। २. बळद्यां। ३. सिणगारिया। ४. ऊटां। ५. मेड़तो।
६. सिसोद्या

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१५८

म्हांरै मिंदरी(रि) ऐ(ए) पधारौ जोऊं थांरी बाट ।। टेक ।।
धरण गिगन विच झो(झ)री लागी ऊगंते परभात ।।
रसनां मेरी रांम रटत है सतगुर जी रै परताप ।। १ ।।
दोइ चोकी मैं(में) सहजै छेकी नाम कवल[1] कै घाट ।।
वंक–नाल पर मुरली बाजै सतगुर मांरचा था(सा)ट ।। २ ।।
काया–नगर मैं(में) रास रच्यौ, है सुरत सुहागण नार ।।
जनम–जनम का टोटा भाग्या गुरु(रू) मिलया[2] दातार ।। ३ ।।
इंगला पिंगला सुखमण नारी सहैज रच्यौ घरवास ।।
मीरां नै गुर(रु) गरवा मिलीया[3] जब पायौ विसवास ।। ४ ।।

१५९

म्हांरो वालो[1] विसां[2] विलंबि रह्यो ।।
मन का मोहन स्यांम जी जाइ विदेसां विलंवि(ब्रि)यो ।। टे० ।।
गगन भव(वं)ती कुंजरड़ी हे कुरजां अेक संदेसौ ले जाइ ।।
म्हांरा स्यांमजी सौं यौं जाइ कहियौ प्यारी विरहन पांन न खाइ ।। १ ।।
काढि कलेजा[3] भुं(भू) धरौं कै ऊवाकूं[4] ले जाइ ।।
जा दिस मेरा पीवजी वसत है वां देखत तूं पा(खा)इ ।। २ ।।
पल पोली[5] पल आंगणौ पल–पल ऊभी जा(जो)इ ।।
घायल जूं (ज्यूं)यूं मत फिरौ म्हांरो मरम न जांणौं कां(को)इ ।। ३ ।।
राम मिल्यां जीवौ(बो) खरो[6] नहींतर छुटै देह(इ) ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर तुम विन किसा सनेह(इ) ।। ४ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७, से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हं० लि० ग्रं० सं० २८१८७ से । पत्रांक–१

सं० पाठ १५८-१. कँवळ । २, ३. मिलिया ।
,, ,, १५९-१. वाल्हो । २. विदेसां । ३. कलेजो । ४. ऊभाकूं, ऊवांकूं
५. पोली की । ६. खरो ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६०

म्हे जास्यां सांवरीथा र(रं) साथ्य[1] वाइ[2] म्हांन(नै) जगत
हंसौ(हंसै) है ॥ टेक ॥
जगत हंसै हसि जांए दे री टहैल करां म्हे जाय ॥
माधुरी मु(मू)रति हिरदं वसै म्हां तो चित में रही है लुभाय ॥ १ ॥
लोग कढुबी (कुटंबी) निंदवै री प्रति[3] न घटाय[4] ॥
जब देखां तब ही सुख ऊपजै बिनि देख्यां जीव[ड़ो] जाय ॥ २ ॥
सास ननद दे ली[5] बोलीवो[6] म्हांनां(रा) मात–पिता पछताय ॥
मीरा(रां) प्रभु(भू) गिरधर नी दासी अब कैसे रेऊ वा(बा)रि ॥ ४ ॥

१६१

म्हे तो जास्या(यां) सांवरिया रि(री) लारि[1] ये मुध्रा रै लारि[1] बाई ॥टेक॥
जगत हस्त(हंसत) हंसै न ध्रौहै ॥ टहैल करै(इ) संग जाय(इ) ॥
माध(धु) री मु(मू)रति मन बसो ॥ महारै(म्हांरै) हिरदै ॥
रही है समाय(इ) ॥ १ ॥
पद नु (नूं) प्रकटि किंकनी हौ घुघरांन कौ भु(झं)णकार ॥
मीरा(रां) प्रभु(भू) जोन(नें) मोह लीनी कांई स दु(कहु) नंद–कंवार ॥२॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२, पत्रांक-१२६

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से । पत्रांक-८३

सं० पाठ १६०-१. साथै । २. बाई,माई । ३. प्रीत । ४. घट जाय । ५. देवैली । ६. ओलंभो ।

" " १६१-१. ल्यारी । २. अमीरी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६२

यनको साभ(ध,ज)न राखतां छै भगति में हांग ।।
देवर–जेठ म्हांरे कुबधि[1] नी(नि)त की राड़ै(ड़) पछाड़ ।।
घर -धंधा की बात कहत है म्हांरै दाय न आव(वै) ।। १ ।।
पीहरी(रि)या रो लोग भलेरो बांधै कंठी माला(ळा)[2] ।।
छापा तिलक मनोहर बांना काटै जम का जाला(ळा) ।। २ ।।
भोव–साग्र[3] म(में) सासरो पीहर साधा(धां) पास ।।
वहोड़[4] न अए जू(जु)ग आवस्यां यूं गावै मीरा(रां) दास(सी) ।। ३ ।।

१६३

ये आज आवेंगे मेरै लाल बोलत सुभ बांनी(णी) ।।
कुच भुज फर(रु)कत कंचुकी दरकत करकै करीया[1] कर सरकत ।।
होर छतियां ऊलसानीं दीपग(क) झरत जोति ।। १ ।।
जगमगांनी यांहू तें मैं जांनो अबै जुपांउ(ऊं)गी[2] ।। २ ।।
मीरां के प्रभु तन मन नोछावरि करौंगी ।। ३ ।।
पीउ(ऊं)गी वारि वारि पानी ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७, से ।

सं० पाठ १६२-१. कु.बुद्धि । २. माळ । ३. भोसागर । ४. बहुड़, बाहुड़, बहुरि ।
,, ,, १६३-१. करियाँ, कड़ियाँ । २. जलाऊंगी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६४

रघुबर मोंहि परना(णां)ई अमां मोरी ॥
सुन्दर सुघड़ सुजांन(ण) सांवरो जनम-जनम भरतार ॥ टे० ॥
मोर-मुकुट पीतांबर सौहै गल[1] मोती(ति)यन की माल[2] ॥ १ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर चरण-कंवल[3] चित लाई ॥ २ ।

१६५

रघुवर माधो री मु(मू)रत लीलवरन[1]घनस्यांम सीयावर माधो री मूरत ।टेक।
अरग कर तारत सवको दाता मन सारी पूरन(ण) कांम ॥ १ ॥
जनकसुता-वर लक्षमण राजीं(जि)द कीट-मुगट[2] अभैराम[3] ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर चरण कमल नी(नि)ज धाय ॥ ३ ॥

१६६

रमतां लाध्या कांकरा सेवा सालगराम[1] ॥
यो मन लागो[2] हर-नांव[3] सूं रमसां[4] साधां री साथ ॥
साध पधारचा म्हे सुण्यां कानां सुणीं आवाज ॥
सरवरों[5] साधां ने(नै) बैसणो दूध पखाळुं(ळूं) पांय ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २८८४ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।

३. पिलानी से प्राप्त मीरां के हरजसों से ।

सं० पाठ १६४-१. गळ । २. माळ । ३. कंवळ ।

सं० पाठ १६५-१. नीलबरण । २. किरिट-मुकुट । ३. अभिराम । ४. कमळ ।

,, ,, १६६-१. साळगराम । २. लाग्यो । ३. नाम । ४. रमस्यां । ५. सरवर, सरोवर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विसरा प्याला राणा जी मोकल्या[६] दीज्यौ मीरां रै हाथ ॥
कर चरणाम्रत पी गई भजु(जूं) रुगनाथ ॥
रांणें आघो होय नै जोइयो[७] मीरां मुई कै नांह ॥
पगां बजावे गू(घूं)घरा हाथां बजावै ताल(ळ) ॥
लाजै पीहर सासरो लाजै माय मोसाल(ळ) ॥
लाजै दु(दू)दाजी रौ बेसणौ दूजौ ची(चि)तौड़ी राव ॥
त्यारो पीहर सासरो तारचो[८] माय मोसाल(ळ) ॥
त्यारो दूदाजी रौ बैसणो दूजी चो(चि)तौड़ी राव ॥
म्रो मन लाग्यो हर नांव[९] सू(सूं) रमसां साधांरी साथ ॥
ओ मन लाग्यो गुर–ग्यांन सूं ॥

१६७

रसनां तूं राम वि(बि)ना मति बोल ॥ टेर ॥
ओर बोल्यां अपराध लगत है पड़त भजन मांहै झौल ॥ १ ॥
सुखरत सुमरण करलै री आंणीयै दोय वात अमोल ॥ २ ॥
जगत तंणी वातां सब झूंठी राम–नाम मुख बोल ॥ ३ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर की(कि)या छै गरभ म्हांहै[१] कोल ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से ।

सं० पाठ १६६-५. सरवर, सरोवर, संवरो । ६. मोकळ्या । ७. जोयो ।
८. त्यारों । ९. नाम ।
” ” १६७-१. मांई, मांही ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६८

राखो र(रा)म हजूरि(री) वाला हम में बडी सबु(बू)री ॥
अज्योध्यापुर[1] में चाव[2] न्पानै[3] तो राखो र(रा)म हजूरी ॥ टेक ॥
हे जी सेरहू(हूं) सेरी वजरी दीज्यो न(ना)तर दीज्यो कूरी ॥
प(पं)चाअम्रत[4] कर-कर मनु(मांनू) हमनें घडी(णी)[5] सबु(बू)री ॥ टेक ॥
हे जी वोढन[6]को कारी[7]कामरी[8]दीजे[9]न(ना)तर दीज्यो कु(कू)री कमल(ळी) ॥
मैरा जीव सों लागी धरत न मेळो(ले) दूरी ॥ टेक ॥
हे जी चारो ल्यासुं(सूं) पु(पू)लो[10] ल्यासुं(सूं) भैंस दुवासो[11] भूरी ॥
जीमन(ण) चु(जू)ठन(ण) करि-करि मेलु झारी ले'र हजु(जू)री ॥ टेक ॥
हे जी मु(मौ)र मुकट कांना कुंडल(ळ) सोहै और ब(बै)जंतीमाला ॥
आठ पहर दरवार खड़ी रहु(हूं) काटो जीव का जाला(ळा) ॥ टेक ।
मीरांबाई हरि गुन(ण) गावै चरन(ण) क(कं)वल(ळ) की दासी ॥
चरनणकंवळ की सेवा करसुं(सूं) चरनामति[12] की प्यासी ॥ टेक ॥

१६९

राज करे तेरो कानो वी(वि)रज को बि(ब)सवो छाड्यौ ॥ टेक ॥
अ(इ)त गोकुल अ(उ)त मथुरा नगरी वी(बि)चे[1] नंदजुको[2] ठाढ़ो ॥ १ ॥
वरज जसोदा अपना(णां) लाल कुँ(कूं) जी(जि)त देखूं ती(ति)त आडो ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर मदन मीत जूको गाढो ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ० सं० १८९० से । पत्रांक-८९-९०
२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० १६६७ से ।

सं० पाठ १६८-१. अयोध्यापुरी । २. च्यावो, चाव है । ३. म्हानै, न्याव । ४. पंचामृत ।
५. घणीं । ६. ओढण । ७. काळी । ८. कामळी, कामळिया । ९. दीज्यो ।
१०. पूळो । ११. दुवास्यूं । १२. चरणांमृत ।
,, , १६९-१. बीच । २. नंदजी को ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१७०

राधै(धे) ने बंसो चोरी ।।
नई(हीं) है सोना की रादे(वे) नहीं हे रुपा की ।।
हरी(रि)अया बांस री पोरी रादै(धे) नै बंसी चोरी ।।
काश्रेसे[1] गाहु[2] राधे काश्रसे बजाई (बजाऊं) ।।
कांईसे(काहेसे) लाग्र(ऊं)गह(ऊ) गेरी[3]रादे ने ब(बं)सो चोरी ।।
मुक(ख)से गावो काना[4] कर से वजाश्रो ।।
लकड़ी से लावो[5] धीन(धेनु) गेरी(घेरी) रादे नै बंसी चोरी ।।
मीरा(रां) के प्रबु(भु) गी(गि)रधर नागर प्रबु(भु) के चरण च(चि)तधारो ।।

१७१

राधे वासि[1] कीनो ह्रो स्यांम सुजांन(ण) ।।
धन जी रानी कुषि[2] तुमारी धन जी पो(पि)ता वृखभान(ण) ।। टेक।
सुनो रंगवेली राज गहेली कहाँ की(कि)या जी सागर रुप उजगार[3] ।।
श्रंखियां मं(में) जान[4] वी(वि)जांन ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर दीज्यौ जो भगत(ति) मोंहि दांन ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४६२२ पत्रांक-२८-२६
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से, पत्राङ्क-६१-६२

सं० पाठ १७०-१. काहे से। २. गाऊं। ३. घेरी। ४. कान्हा। ५. ल्यावो।
" " १७१-१. वसि, वश। २. कोखि, कूंख। ३. उजागर। ४. ज्यांन।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१७२

रामजी विना कूं(कुं)रण करे म्हांरी भीर ॥ टेक ॥
ऐ(ए)क समै गजराज उबारयौ काढ्या जहर[1] जंभीर ॥ १ ॥
ऐ(ए)क समै प्रहलाद उबारयौ धारियौ नृसिंघ-सरीर ॥ २ ॥
ऐ(ए)क समै द्रोपति-पत राखी खेंचत बाढ्यो चोर ॥ ३ ॥
रांका भी त्यारचा[2](रांमजी)बांकां भी त्यारचा-त्यारचा[3] है कालूकीर ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभू हरि अविनासी[4] वै सगहिव गहर गंभीर ॥ ५ ॥

१७३

रांम-दिवांनी(णी) हो गई में(मैं) तौ राम दिवांनी(णी) हो ॥
भांवै लोक हांसी करौ मेरे मनमांनी हो ॥ टेक ॥
लोक कुटंव प्रबार[1] तज्यौ लैहों चात्रग पांनी(णी) हो ॥
स्वांत-बूंद रघुनाथ जी तन सूं ललनी हो ॥ १ ॥
प्रेमसुधा-रस पीवतां नही मे(मैं) छूं अघांनी हो ॥
गावै मीरां व्याकुली[2] हरि हाथ बे(बि)कांनी(णी) हो ॥ २ ॥

---

१. भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६१ से

सं० पाठ १२७-१. जी हर । २. तारचा । ३. तारचा । ४. अविनासी ।

" " १७३-१. परिवार, परबार । व्याकुळ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१७४

राग खमायची

रांमजी मिलावै तौ फेर मिलैंगे मिल वि(त्रि)छड़ौ मत कोई हो ।।टेक।।
लगन लगी जब लाज कहां रही निंद्यां करौ सब कोई ।। १ ।।
प्रीत करी मैं सुख कै कारण प्रीत की(कि)या दुख होई ।। २ ।।
आपतौ जाय व(वि)देसे[1] वसे हो मिलण किसी विध होई ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हूँण मतै सो होई ।। ४ ।।

१७५

रायघाट सब ढूंढ[1] फिरि व्रंदावन[2] मेरो सांवरीये(रिया) ।। टेर ।
घर सें निकसत मोकुं(कूं)छींक भई है आगे बांन सुना(णां)वै कागरी(रि)या ।।१।।
............गोकल लैइया क्या डौलै ।। २ ।।
हलका[3] हुवै सो डिगमग डोलै पूरा भया जव क्या डोलै ।। ३ ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर [नागर] सायव[4] पाया तन औलै ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० ७१४३ से ।

२. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के हृ० लि० ग्र० सं० २०६से, ।

सं० पाठ १६८-१. बिदेस, विदेश ।

,, ,, १७५-१. ढुंढि । २. बीनरावन, वृन्दावन । ३. हळका । ४. साहिब

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१७६

रुत आयां बोले मोर हरी(रि) बिना जि(जी)व[1] दोरा ॥ टेर ॥
ऊमट[2] घुमड़ आई बदलियां[3] व(ब)रसत है चहुं ओरा ॥ १ ॥
दादर मोर पपैया बोलै कोकी(कि)ल है तन सोरा ॥ २ ॥
नंदि(दी) किनारे सारस बोले कहा जानू(णों) पिया मोरा ॥ ३ ॥
मि(मी)रां कै है[4] गिरधर नागर हरि मिल्यां जि(जी)व शो(सो)रा ॥ ४ ॥

१७७

सुं[1] बावा नंद–घर चेरी ॥ टेव ॥
टेल करसुं(सूं)[2] सेवा करसुं(सूं) हरि के चरणां नेड़ी ॥ १ ॥
टेल के म(मि)स दरसंण करसूं धिन जीवन मेरो(रो) ॥ २ ॥
एक व(ब)न ढूंढ सकल[3] वन ढुढे ढु(ढूं)ढी वृ(ब्र)ज सगरी ॥ ३ ॥
व(बं)सरी को सबद सुंण–सुंण भई मगन घणेरी ॥ ४ ॥
सासु(सू)नणद मांरी[4] देवर जेठांणी सबही मिल ज(झ)गड़ो(री) ॥ ५ ॥
माहरो[5] मन लागोरी[6] या सांवरी सुरत सुं(सूं)जख मारो सगरी ॥ ६ ॥
भली कहो कोई बुरी कहो मैं मा(मां)डली झोली(ळी) ॥ ७ ॥
दासी मीरां लाल गिरधर अजब बनो जोड़ी ॥ ८ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० प्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० १६६७ से ।

सं० पाठ १७६–१. जीवड़ा । २. उमड़ । ३. बदळिया । ४. कहै ।
" " १७७–१. रेस्यूं । २. करस्यूं । ३. सकळ । ४. म्हांरी । ५. म्हांरो ।
६. लाग्यो ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१७८

लखता पल[1]मारे[2] मेल[3] पदा(धा)रो जी पल मारचु(म्हारे) ॥
उगेणे[4] मारा[5] सासू जी वसत है आतु(थूं)णें गर[6] मारचोजी ॥
पल मारचुं मेल पधारो जी पल मारचुं ॥ १ ॥
ज जर बोल हाता(थां) में लीजो मुगट दुसाला सु(सूँ) ढाकोजो ॥
पल मारचुं मेल पदा(धा)रो जी पल मारचु ॥ २ ॥
मारा[7] तो घणौ[8] सगलोई[9] जासी गव–धन[10] जासी प्यारोजी ॥
पल मारचु मेल पदा(धा)रो जी पल मारचु ॥ ३ ॥
मीरांबाई के प्रबु(भु) गिरधर नागर हरी(रि) चरणां च(चि)त धारोजी ॥
पलमासु(सूं) पलमासु मेल पधारोजी पलमासु ॥ ४ ॥

१७९

लग कोपैं मोहै न्यारो ॥ टेर ॥
घायल की गत घायल जांणै क्या जांणै ब(वै)द बिचारो ॥ १ ॥
गला[1] म(में) ऐक घारो[2] लघु[3] मैं प्रेम मगन मतवारो ॥ २ ॥
तेर(रे)भांवै कारी कंवरी–वारौ[4] मैर[5] हे प्रांन(ण) कौ प्यारौ ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर पल पल प्राण अधारो(रो) ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४९२२ से। पत्राङ्क-१०
२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से।

सं० पाठ १७८-१. पैल, पहिले। २. म्हारे। ३. महल, म्हेल। ४. अगूंणै। ५. म्हांरा। ६. घर। ७. म्हांरो। ८. गे'णें, गेहणें। ९. सगळोई। १०. गो–धन।
,, ,, १७९-१. गली। २. ग्वाळो। ३. लागूं। ४. कमळी वाळो। ५. मेरे।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१८०

लागे सोई जांणे हेली मेरो मालक जांणें कठण लगन की प्रीत ।।टेर।।
में(मैं) जंगल की हीरणी री सजनी सतगुर(रु) मारया तीर ।। १ ।।
खेंच बांण सतगरु जी दीनो वोकुल[1] भयो सरीर ।। २ ।।
लागी जब जाण्यां नहीं सजनी अब दुख देन[2] सरीर ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु कब रे मी(मि)लोगे सुखी करोगे सरीर ।। ४ ।।

१८१

ले जा रे कागदवा नरसी जु(जी) क(कं) पास ।। टेक ।।
रांम-नांम कह दीजो रे सबन को और कहिज्यो साबास र(रे) ।। १ ।।
कागद को बिधि हय (हे) तुमारे तो आओ रथ साज रे ।। २ ।।
सनमथि[1] मील ही[2] इण बोसर कठन[3] रहन तुम लाज र(रे) ।। ३ ।।
बचन बिन[4] आनंद ड(गि)रधर के गाव मीरा(रां) दासी रे ।। ४ ।।

१८२

लेलो री भर लोचन लाहो ।। टेक ।।
चरत सखी एक श्रीरंगपुर की देत सीख फी(फि)र फी(फि)र सब काहू ।। १ ।।
असो सेट(ठ)कब ह[रि]पुर आवयांकी[1] कीवो[2] र[3] हरी(रि)-पुर आव(ऊ) ।। २ ।।
दुर्लभ दरस सेस सनकादिक जनम-जनम सखी सब पछिताऊ ।। ३ ।।
कोउ(ऊ) न हरक की(कि)या असुरन कू चार बरण नर-नार निबाहू ।। ४ ।।
मीरां कह(है) सो निरभ(भै)कर जानुं(नूं) जन नरख्यो नरसी को साहू ।। ५ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलेस, बीकानेर, के ह० लि० प्र० सं० १७० से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ५२,(इन्द्रगढ़ पोथीखाना) पत्रांक-१२३

३. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० १०५७ से पत्रांक–५

सं० पाठ १८०-१. व्याकुल । २. देत ।

„ „ १८१-१. सनमुख,सन्मति । २. मिलो(आयमिलो) । ३. कठिन, । ४. बिन, बिना ।

„ „ १८२-१. आव्याकी, आवे यांको । २. किधो, किनो, कैज्यो । ३. रे ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१८३

वन[1] आवै तो हरी(रि)-गुण गाय लै रे ॥
गोवीं(विं)द-गुण गाय लै रे ॥ टेर ॥
कहां रे भयो सपद ठाडे र(रे) जटा रे बधाई ॥
कहा भयौ हरी भभु(भू)त्त लगायं(ई) ॥ १ ॥
मीरां कैहै[2] प्रभु गी(गि)रधर नागर ॥
हरि-चरणां चौ(चि)त लाय ले रे ॥ २ ॥

१८४

वरस(सै) कु[1]नहीं पांणी हो गुमांनी मेहा ॥ टेर ॥
वरसत कु नहीं पांणी ॥ टे०
या वन सव(ब) रे सुकै[2] वनसपती कुमलांणी हो ॥ १ ।
दाद्दर मोर पपई(इ)या बोलै कोयल मुधरी सी बांणी हो ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर व्रज-वनता बिलवाणी[3] हो ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६, से ।

सं० पाठ १८३-१. बण, बनि । २. कहै ।

,, ,, १८४-१. १. क्यूं । २. सूखै । ३. बिलमांणी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१८५

राग सोरठ

वाजूवं(वं)ध तूट पड्यो हसत खेलत आधी रात ।। टेक ।
घर जायां मोरी सासु(सू) लडैगी देख अवीणो[1] हात(थ) ।।
कहो कौंन विध जाई(इ)ये सजनी चित आयो परभात ।। १ ।।
आज की रैंन चैंन सों वी(बी)ती सुंदर प्रीत्म(तम) साथ ।।
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर प्रेम-मगन भई गात ।। २ ।।

१८६

वा(वा)ट वैऊंता वि(वी)र वटाउड़ा वाला को'ऐ[1] रे दवारका नै जाये(य) ।।
गोपि(पी) संदेसो मोकळे रे वाला ओरे(र) जसोदा मायै(य) ।।
सांवरी(रि)आ नै कैजो[2] रे समजाऐ(झाय) ।। टेर ।।
खीर न पीये थांरा वाच(छ)ड़ा[3] रे वाला वन-वन डूंढी[4] थांरी गाऐ(य) ।। १ ।।
जल जमना रो-ऊमंग्यो नही रै वाला ।।
कुंजर-ई क(के)म तारचौ सांवरा कुबजा आवी थारी दाय ।। २ ।।
कौयल ज्यूं काली भई बागल ज्यु(ज्यूं) वरलाय माखी ज्यों(ज्यूं)
मल को भाय ।। ३ ।।
जब लग सांस सरोर मै(में) तब लग हरी(रि)गुण गाऐ(य) ।। ४ ।।
दासी मीरां लाल गिरधर दरसण दीज्यो आऐ(य) ।। ५ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४४ से । पत्रांक-८५
२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १४५, से ।

सं० पाठ १८५-१. आमीणों ।
" " १८६-१. कोई । २. कहज्यौ । ३. बछड़ा । ४. ढूंढी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१८७

वाता तो त्मारी[1] हो वारी[2] जी ग्रा(या)द रहेला ।। टेर ।।
जब ची(चि)त आवे सांवरी स(सू)रत को आडी ग्रवली बहेला ।। १ ।।
पु(पू)रब जनम री प्रीत सा सां)वरी(रि)या सोई बात बणेला ।। २ ।।
होणी होई सोई बिदना(विध) होली सोच करै सो ही गैला ।। ३ ।।
मीरा के प्रबु(भु) गी(गि)रधर नागर प्रीतड़ली दुख देला ।। ४ ।।

१८८

राग मारु

वावरी कीन्ही हो वंसी बावरी कीन्ही ।।
ग्रसन बसन ग्रहै[1] भु(भू)लै तन-गत हर लीन्ही ।। टेक ।।
ऋछु[2] को रंग-रांग राग-मत्र[3] होऐ देह दीनी ।। १ ।।
चात्रग ज्यु(ज्यूं) बूंद बवीसईसा[4] मे ग्राधीनी ।। २ ।।
कहा कहु(हूं) कछु कहेत न ग्रावै तन-गत[5] गई छीनी ।। ३ ।।
मीरा(रां) प्रभु(भू) नी(नि)रखत वहु भई लवलीनी ।। ४ ।।
हो वंसी वावरी कीन्ही(हो) ।। ५ ।।

---

१. ग्रनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७०, से ।
१. ग्रनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० २०६ से ।

सं० पाठ १८७-१. थांरी, तुम्हारी । २. बिहारी ।
,, ,, १८८-१. गृह । २. ऋषि, कछु । ३. रागमत्त, रागमंत्र । ४. विश्वास ।
६. तनगति ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१८६

व्रजहू की रज में(मै) तो भई कु(क्यूं)नी वीरा रे ॥ टेक ॥
पड़ो रहत गोकल की डगर में उड-उड लागु(गूं) मै सांम-सरीरा रे ॥ १ ॥
मोरे तो सी(सि)र पर प्रभु पांव धरत है सरवणं[1] सुणत वंसी वट वीरा रे ॥ ३ ॥
वाट-घाट व्रंद्रावन-कुंजन सीतल परसत पवन समे(मी)रा रे ॥ ४ ॥
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर होय गयो सब सुख मिट गई पीरा[2] रे ॥ ४ ॥

१९०

व्रंदावन नी(नि)ज धाम देख्यौ री मैं व्रंदावन नी(नि)ज धाम ॥टेर॥
श्री जमुना ज्याकै नी(नि)कट वैहत[1] है सब विध पु(पू)रण कांम ॥ १ ॥
श्री बलदेव माहावनौ[2] गोकल मथुरा जी विच रांम ॥ २ ॥
गोवरधन श्री मांणसी गंगा व(ब)रसाणै नंदगाम ॥ ३ ॥
कु(कुं)ज-कुंज में कथा व्रसत(बचत) है नी(नि)स-दिन आठुं जांम ॥ ४ ॥
मीरां कैहै प्रभु गो(गि)रधर नागर संतन कै वो(वि)च रांम ॥ ५ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९, से ।

सं० पाठ १८९-१. श्रवणं । २, पीड़ा ।

,, ,, १९०-१. वहत । २. महाबली, महावन ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६१

व्रंदावन मोहन दध लु(लू)टी ॥ टेर ॥
कहा तोरो हार कहा नख-बेसर कहा मोतीग्रन की लड़ टु(टू)टी ॥ १ ॥
गोकुल हार मथुरा नख-बेसर कुंज-गली में लड़ टूटी ॥ २ ॥
बरजो जसोदा मइया[1] तेरा लाल ने खाई मरुगा[2]वी(वि)स-गु(घूं)टी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु हरी अबीनासी[3] सव रस दे गुजरी छु(छू)टी ॥ ४ ॥

१६२

सतसंग स(सूं,से) किन(ण) टाली ये माई(य) ॥ टेक ॥
सतसंग विन दोहोरी[1] कदिय[2] न सहोरी[3] ॥
तलफ-तलफ जीव जाव(वैं) री माय ॥ १ ॥
जेठानी खोटी देवरा[नी] [खो]टी यो जीवन कस[4] होसी ये माय ॥ २ ॥
देवर खोटो सुसरो अपरादी[5] नणंदल कह छ[6] न्यारी हो जाये माय ॥ ३ ॥
पड़ौसणये[7] मिल लेऊं न(नि)त नेमि(मी) कस जीवन होसी ये माय ॥ ४ ॥
मीरां कह(हे) मी(मि)थुला इण वौसर[8] कवरी व्रहन[9] ॥
गाव(वैं)री मा[य] ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

१. रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से। पत्रांक-२-३

सं० पाठ १६१-१. मैया। २. मरुंगी। ३. अविनाशी।
,, ,, १६२-१. दोरी। २. कदी। ३. सोरी। ४. कैसे। ५. अपराधी। ६. कहे छै।
७. पडोसणियां। ८. अवसर। ९. विरहिण।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६३

राग सोरठ

सबसूं पतम[1] भज्यै गोपाल ॥
कोट-करम फं(जं)जाल जीव कै मीटे जम कै जाल ॥ टेर ॥
प्रहलाद की प्रतंग्या राखी ध्रूकुं[2] इवछ(च)ल[3] राज ॥
वभीषण कुं(कूं) लंक(का) दीनी सायर वांधी पाज ॥ १ ॥
क्रस्ण सुदामा बाल-लीला पढै ची(च)टसाल ॥
कंचन-महल वणाय दीना(नां) जडत हीरा लाल ॥ २ ॥
ई(इं)द्रदेव रिसाय वरषै डरै ब्री(व्रि)ज़ के बाल ॥
अ(आं)गली पर धार[4] गी(गि)रवर राख ली(लि)यौ नंदलाल ॥ ३ ॥
सकल व्रिज मैं(में) अणंद होत है घर-घर मंगलाचार ॥
दासी मीरां लाल गिरधर हर(री) लिया अवतार ॥ ४ ॥

१६४

सांकड़ी लौ[1] मै(में) हानैं(म्हांनैं) सतगुर(रु) मिलिया ॥
कींकर फिरूं रे अफूटी ॥ १ ॥
सासु(सू) बूरी है मारीं(म्हांरी) नणद हठीली बल मीरां कै प्रभु-
गिरधर नागर ॥ २ ॥
चरण-कंवल पर वारी जल भई रे अंगीठी । ३ ॥
साध संगत मैं(में) नित उठ जातां दुरजन लौकां दीठी ॥ ४ ॥
मे(मै) (म्हां)मांरी गिरधर न्याव नवेरो[2] और दुनी[3] सब झूठी ॥ ५ ॥
भावै कोई न(निं)दो भावै कोई वंदो चलसी चाल अफूटी(ठी) ॥ ६ ॥
मीरां केहै प्रभु गिरधर नागर चढगौ रंग मजीठी ॥ ७ ॥

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि प्र० सं० ७६३६ से ।
२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० १८७ से ।

सं० पाठ १६३-१. प्रथम २. ध्रुव कूं । ३, अविचल । ४. धारयो ।
" " १६४-१. गली । २. निबेड़ो । ३. दुनिया ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१९५

सांवरे तोय रंग भरूंगी ।। टे ।।
चौवा चंदन और अरगजा केसर घोर(ल) धरूंगी ।।
आवौगे विसवासी कुंजन देखत दाव फी(फि)रूंगी ।। १ ।।
ज़ौ तो मैं आंन जाय पकड़ूं ले पी(पि)चकारी जड़ु(ड़ूं)गी ।।
तुम सो(छो)री(रें) ढौटा नंद-मैंर[1] का काजल-रैख करूंगी ।। २ ।।
ब्रिंदावन की कुंज-गलन में तौ संग रास रमूंगी ।।
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर तौ सिर छत्र धरूंगी ।। ३ ।।

१९६

सांवरे मोय रंग भर डारि(री) देखै सव लोव(ग) खैलारी ।। टे० ।।
सेज[1] सभाव स(च)ली जल जमुना पै [हर] वसंती सारी ।।
आपई ठाढौ कदम की सई(छइ)यां हाथ लिवी पी(पि)चकारी ।।
सखी वांकै छ(स)नमुख मारी ।। १ ।।
अंगी(गि)या भीजोई मेरा लैंगा भीजोया और भीज(जो)ई दई सारी ।।
हेरी सखी घर काहा कहु(हूं)गी अैसोई ढोटौ[2] विहारी ।।
सखी वांकै सि(चि)त पर वारी ।। २ ।।
सो(चो)ली का रंग सवई उतर गया लैंगा होय गया भारी ।।
मैं पतली सी ली(लि)प[ट]जाय कमर में चंचल सासु(स) हमारी ।।
सखी मोकु(कूं) डर लागै भारी ।। ३ ।।
या व्रज को प्रभु लोक स(छ)वियौ[3] हंस-हंस दै मोये तारी ।।
मीरां कैं प्रभू गो(गि)रधर नागर चरण-कंमल वलिहारी ।।
सखी में तो सवसैं न्यारी ।। ४ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।

सं० पाठ १९५-१. नन्दमेहर ।
" " १९६-१. सहज । २. ढीठो । ३. छवैयौ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६७

सेटा(ठां)णी जी चाल्या वो(ओ)लूड़ी[1] लगाये ।। टेक ।।
क(कि)रपा मौ पर घर्णीं राखज्यो दरसण दोज्यो फेर आये ।। १ ।।
लक्ष्मी कह(है) सुनु(र्णों)पुर की नारी वो कंवरी कि[2] तुम माये ।। २ ।।
मीरा(रां) कह(है) मोथुला यण वोसर[3] लखमी लागत पाये ।। ३ ।।

१६८

सुषमण[1] मौं हर[2] विसरत नाय ।। टेर ।।
सरव सोना र(री) वणी रे दुवारका मुथरा की सब नाय ।। १ ।।
न(नि)रमल जल जमुनाजी कौ आचमन गै'री[3] कदम की छांप(य) ।। २ ।।
मैं दध वैचन जात विंद्रावन गौरस को रस नायं ।। ३ ।।
मीरां के प्रभू गी(गि)रधर नागर हरी(रि)-सरणा[4] चो(चि)त लाय ।। ४ ।।

१६६

हम ईसट[1] हमारो ध्यावैं ओर दाय नही आवं ।। टेर ।।
पी(पि)छली रात हात(थ)सेवा कर पोछे भोजन पावै ओर कहा नही जावै ।।१।।
भैंरू पीर मीर भेरंव[2] हम नहीं सीस नमावे ।। २ ।।
वाद-वी(बि)बाद आद[3] नही आवै दरद गम[4] कू खावे ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु भणे भवसागर रे'त[5] सदा नी(नि)रदावे ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से।
२. राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६ से।
३. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से।

सं० पाठ १६७-१. लूरी, लूंगी। २. की। ३. ओसर, अवसर।
" " १६८-१. मुख, मन, सुषुम्णा, रुक्मण। २. हरि। ३. गहरी। ४. चरणां।
" " १६६-१. इष्ट। २. भैरवी। ३. आदि, याद। ४. हम(?)। ५. रहत।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२००

हम करें कहन[1] की सेवा तब पावेगो नी(नि)ज भेवा ।। टेर ।।
काटसा[3]–नगर में त्यारी हे सगरो मींदर[4]–अंदर देवा ।। १ ।।
हरिजन–धारा[5] सु(सूं) अंग धोय डारा जाप साख[6] कर नेवा[7] ।। २
करणी की केसर चढ़े परमेसर प्रेम–पुसव मन–मेवा ।। ३ ।।
मेहर म(में) मुकट लुकट हात(थ) मैं जनान(ना) के गे'णां पेरवा ।। ४ ।।
मीरां भणै गढ भीतर रई सव विद[8] करता(ती) सेवा ।। ५ ।।

२०१

हमारै पै काहे कु(कूं) खोजो ब्रजनारी ।। टेक ।।
अपनो भाग सोच नही देखो क्रहन[1]–क्रपा कछु न्यारी ।। १ ।।
सब वेलन मै कड़ी[2] तूमड़ी ले कु(क्)]ड़े] म(में) डारी ।। २ ।।
आइ(ई) हात(थ) जंत्र तंत्री क(कै) बाजत राग सुढारी ।। ३ ।।
टेडो(ढो) अंग सीद्रोई[3] मेरो जान जात पाती कुल नारी ।। ४ ।।
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर हर अपने हात(थ) सुधारी ।। ५ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं १६० से ।

सं० पाठ २००–१. कान्ह, कवन । २. मेवा(?) । ३. काया । ४. मन्दिर । ५. हरि–जलधारा । ६. सांस, सहस्र । ७. नेमा । ८. बिध, विधि ।

,, ,, ४०१–१. कृष्ण, कान्ह । २. खड़ी । ३. सों द्रोही, सीधो ही । ४. सूं धारी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२०२

हमारौ फगवा दे गी(गि)रधारी ।। टेक ।।
गहै बनमाल जौह कर वाकी मांग(गै) राधा प्यारा ।। १ ।।
नीची डीठ[1] कीये[2] नहीं छुट(टि) हौ क्यौंहू[3] कुंज-बी(बि)हारी ।। २ ।।
कै तो देहु नाहै तो अबै हु(हू) नीकस अेब ताहारी[4] ।। ३ ।।
तनै नहीं राखा(ख)त मनोहर[5] रंग बड्यौ[6] अत(ति) भारी ।। ४ ।।
जान(जन) मीरा(रां) रसकी भगरन पैर नी(नि)रण[7] हौत बलहारी ।। ५ ।।

२०३

हरी-चरण[1] ची(चि)त लायो राजी म(मैं) तो हरी(रि)-चरणां चित लायो ।टेर।
राजपाट भूठी सव माया बो भूठो जग दिखलायो ।। १ ।।
सतगुर(रु) सांमी[2] अंतरजामी बो पूरब पुन(न्न) मिलायो ।। २ ।।
जनम-मरण का सांसा[3] मेट्या वो निरभै सबद सुणायो ।। ३ ।।
नंदलाल मथुरा-पुर-वासी वो रोम-रोम तन छायो ।। ४ ।।
मीरां कह(है)प्रभू गी(गि)रधर नागर चरणां में सीस नवायो ।। ५ ।।

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० १०६७ से । पत्रांक-५४

२. संत साहित्य संगम बीकानेर के ह० लि० प्र० से ।

सं० पाठ २०२-१. दीठ, दृष्टि । २. किये । ३. कबहूं । ४. तिहारी, ता.हारी ।
५. मान मनोहर(?) । ६. बढ्यौ, बह्यौ । ७. निरणं निर्णय, नीर-णहौत ।
" २०३-१. हरिचरणां । २. स्वामी । ३. संशय ।

CC-0. ORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२०४

हरि ब(बि)न चरना क(कि)त धरजौ [नित] उठ मारग जोउ(ऊं) हो ।।टेक।।
तोर(रै) कारण साईयां भर नींद न सोउ(ऊं) हो ।। १ ।।
हरि ब(बि)ना सूरत क(कि)त धरजौ मनसा न(नै) बेसारजौ[1] [हूं]हो ।।
न(नि)जर पड़ा त(तु)म उ(ऊ)परै मन-तन[2] वारजे[3] [ऊं] हो ।। २ ।।
अब(बि)न्यासी[4] आया सुन्या(सुणिया) मन-वन[5] धपाई [हूं हो] ।।
मीरां कै दिल माहिला [सारा] दुख [री] टेर सुणाउ(ऊं) हो ।। ३ ।।
वावरिया(यो)[6] कब [इहां] आवसा(सी) कोई कह(है) सनेसा हो ।।
मीरां कहै अ(अै)सी बात का प्रभू खरा अनेसा हो ।। ४ ।।

२०५

राग मलार

हरि सैं टेरि कही री द्रौपता ।।
तुंम जनि सौ हौ स्यांम सुँदर वरजे ती(ति)म जस हो(ही)[1] ।। टेक ।।
मै [रे] पति पंच पंचन-पति तुम हौ तंम पति काहा रही ।।
भीखम करण द्रौंण देखंतां दुसासन वां(बां)ह गही ।। १ ।।
सब ठाढै नृपजु(जू) कै आगे मिथ्या भाख सही ।।
अेसो कोई रे न दीसत तासुँ थासूं) कौहौ दटो[1] ।। २ ।।
जवर(वरे) सुनी जादूपति-नाथे(य)क कीन्ही साहाये सही ।।
मीरां दासी गी(गि)रधर की म्हमां[2] का पै जात कही ।। ३ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ३१०७७ से । पत्राङ्क-२६

सं० पाठ २०४-१. विसारजो । २. मन ते न(?) । ३. वारी जाऊं, वार जोऊं ।
४. अविनाशी । ५. मनवा ने । ६. सांवरियो ।

" " २०५-१. कौ हौ दई, कहै देही । २. महिमा ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२०६

हे जी नरसी जो मा(म्हां)रो लहरचो भीज(जै)छ(छै)जो राज ।। टेक ।।
लहरचौ भीज रंग चुत्र(चूवै) छ(छै) भीज(जै) मारो नोसर–हार ।। १ ।।
काली पीली घटा ऊमगे ग्राई वरसै मूसलधार ।। २ ।।
मीरा(रां) कह(है) मीथुल इण वोसर गावत ह(है) सब नार ।। ३ ।।

२०७

ह(हे)जी म्हारा नैना में सलूनो पानी अलक साम कत गम्रो(यो)री ।।
जादू कर क(के) ।। टेक ।।
पात–पात व्रंदावन ढूंडी(ढी) कुंज–कुंज सबर(रे) देक(खे) ।। १ ।।
मोर–मुकट पीतांव्र(वर) सोवं कानां कुंडल ग्रलक(कें) ।। २ ।।
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर चरन–कंवल च(चि)त ग्रटक(के) ।! ३ ।।

२०८

राग सोरठ

हे मां मुरली व(ब)जाय मेरो हीयो ला(लि)ए जाय ।।
विनि देखे मोहनी मूरति छिनि जी(जि)या ललचाय ।। टेक ।।
स्यांम व(ब)रन तन ऊपरि सजनी` पीत वसन फै(फ)हराय ।।
मीरां [कि] प्रभु गिरधर नंदलाल(ला) मेरै(रो) रु–रु' रह्यो है लुभाय ।। १ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०५७ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०(इंद्रगढ पोथीखाना)५२ से पत्राङ्क–२८

३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से । पत्रांक–१२६

सं० पाठ २०८–१. रूं–रूं, रोम–रोम ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२०९

हेरी मतवारो ठाढो मोरी वाट ।। टेक ।।
हैरी हाहा करत है तेरे पांय परत हों विनती करत मोपै ।। १ ।।
भईया साहाजा [दा ?] ग्रेसो री लंगर ठाढो कनैया ।। २ ।।
मारग रोकि मोपै ग्राढो[1] ठाढो री ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरि–चरना चित लाग्यो सुगर ।। ४ ।।

२१०

हेरी हेली मेरो मन चोरयो ग्राली नंद मेरी चितवन,
चित मो(मेरो) चोर ।।
हेली हूं ठाढी श्रीता[1] ऊपरे मेर(रे) नन[2] करि गयो घात ।। टेक ।।
हेली पंछी वारहै[3] सांवरौ मुधरो सी व(बैं)न वज(जाय) ।। १ ।।
'राये राये राची का'[4] मेर(रे) सरवनन[5] गयो सुनाग्रे ।।
हेली ग्रांन[6] संगि हो लो पैंए ताकौ कौन उपाऐ ।। २ ।।
प्रान वीन तन क्यौं रहा[7] सो तुमहि(ही) [दो] बताए ।।
मो गति भई जसै मीन मैं तो हु(हूं) जल वी(वि)न जीव(वै) ।। ३ ।।
हेली नंदलाल हतौ राधिका हु हती नंदलाल ।।
तौ वीरहनि दुख जानतौ वी(वि)रहनी येही हवाल ।। ४ ।।
हेली मोहन ग्रगमी डाहर मोहो रुमझुम सतकमार ।।
मीरा(रां) न(नै) गी(गि)रधर मी(मि)ल्या नेरी राखू(खो) भरतार ।। ५ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२ से पत्रांक-४३

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३१०७७ से, पत्रांक-७९

सं० पाठ २०९-१. ग्राडो ।
,, ,, २१०-१. सीना । २. तन, नैणां । ३. बारै, बाहिर । ४.'–'राधे राधे राधिका(?) ।
५. श्रवणन । ६. ग्रन्य । ७. कर रहसी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२११

हेली म्हांरे ग्रानंद मंगलचार ।। टेक ।।
करु सं(सिं)गार रहूं सेझ समांरी प्रसुं(भु) हरि भरतार ।। १ ।।
पंच सखी मिल मंगल गावै होइ रहै(ही) जै-जै-कार ।। २ ।।
तन-मन ग्राप ग्ररपूं स्याम कूं विलसुं(सूं)-सुख ग्रपार ।। ३ ।।
ग्रपने पी(पि)या गलि लागी रहूं ग्रब निरखो नेना निहार ।। ४ ।।
मीरां के प्रभु अब नां छाडूं राखौ ज्यूं गल-हार ।। ५ ।।

२१२

फाग लीखते

हो र(रु)त ग्राई फागरा ग(घि)रं ग्राई ।।
रसी(सि)आ र(रु)त आई कोग्रेल के[1] प्रबु[2] वेग पधारो ।।
ग्रे जी लाला चेरी के ग(घ)र तुम कई बसी(सि)य्या ।। टेर ।।
ल(लि)ख ल(लि)ख पती(ति)या उद(ध)व संग भेजी(जि)ग्रा ।।
हे जी लाला जादु(दू) कीदा (तुम) सासां बीचा बसी(सि)या ।। टेर ।।
मीरां के हर वेग पधारो हो जी लाला चरण कंवल-च(चि)त
धार ली(लि)या ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ८२६१ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४६२२ से । पत्रांक-३२

सं० पाठ २१२-१. कूके । २. ग्रब प्रभु ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२१३

होरी फागण का दिन में प्रीतम तज गऐ देस ।। टेर ।।
कहा करूं कित जाउ(ऊं) मौरि सजनी मो मन वड़ो रे अंदेस ।। १ ।।
दिन नहि भूख रैण नहि निद्रा सिर पर छूटे केस ।। २ ।।
तोरै तो कारण बन-बन ढुंढ्यौ कर जौगण को भेस ।। ३ ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर [नागर] तन-मन छूटे केस ।। ४ ।।

२१४

श्रीवदरिनाथ तुमारो दरसण भाग विना नही पावै ।। टेक ।।
सीकां उतरे भा झूला उतरे बकरा वालद लावै ।। १ ।।
मन भंग सीत भंग कर पार लग(गै)है पंचो(छी) सबद सुनावै ।। २ ।।
तपत-कुंड असनान करै तो प्रलै होय जावै ।। ३ ।।
मीरां कै प्रभु गिरिधर नागर हरख-निरख गुन गावै ।। ४ ।।

२१५

श्रीरंगजी की नार देखो थान(थांनै) सांवर(रो) सेठ बुलावै ।। टेक ।।
आज कीरन वसागां समदन हरद(दै) ग्यान विसेखो ।। १ ।।
कोकिल भास भर(रे) लखमीजी मधुर व(बै)न गवरी को ।। २ ।।
मीरां कह(है) मिथुलायन वोसर धन्य भाग कंवरी को ।। ३ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ, पेलैस, वीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, से।
३. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परिशिष्ट (१)

राग-रागिनी पद-संग्रह

१. राग मलार, ताल-त्रिताल

अजुह न लिदी साम मोरी खव्रीया[1], ब्रसरण[2] लागी बेरण बदलिया।
अजुह न लीदी पीया मोरी खव्रीया। टेक।
हे जावो री पतनीया मोरी खव्रीया, काहा बलमे पीया कोहण नग्रोया[3] ।अ०।
मेरे पीया प्रदेस गवन कीया, जोवत हु मे उनकी डग्रीया ।अ०।
ज्यो पीया आवेंगे आज का हाल में तो, मे रहुगी भुन पकड़ीया ।अ०।
मीरा के प्रबु (भू) ग्रध्र[4] नाग्र[5], हरके चर्ण[6] मेरो चत हु लग्रीया[7] ।अ०।।
[कृति पत्रांक २१]

२. राग देवीचंद ताल कहरवा

अब केसे नीकसन हो दईया, होलि खेले कनईया।
मेरो अब केसे नीकसन हो दईया, होलि खेले कनईया। टेक।
हे सासरे जाउ तो सासु लड़त हे, मे तो पीहर जाउ तो लड़े मेरी मईया।
हे अत डर उत डर भुल गई, में तो मोहन संग खेलु ता थईया। हो०।
हार डोर मेरो सगलो भीजीयो, ओर भीजाई पीलि पगड़ीया।
मे अपना प्रीतम कु केसे भीजोउ, ओड लिवी काली कमलिया। हो०।
वे ब्रंजवासि खेलण नीकसे, संग चली व्रज की सुखीया। हो०।
मिरा के प्रबु ग्रध्र नाग्र, चर्णजीव रहो नंद के छईया। हो०।
[कृति पत्रांक २६]

नोट—रागरागिनी पद संग्रह के प्रस्तुत समस्त पद राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के हस्तलिखित ग्रंथ संख्या २५५३९ से लिए गए है। चूंकि प्राप्ति स्थान और ग्रंथ संख्या इन रागरागिनी के समस्त पदों की एक ही है अतः प्रत्येक पद के साथ ग्रंथ संख्या, और प्राप्ति स्थान का उल्लेख (अलग से) नहीं किया गया है। अतः इन ५० पदों का प्राप्ति स्थान और ग्रंथ संख्या एक ही समझी जाए।

शुद्ध शब्द रूप—१. खबरियां। २. बरसण। ३. नगरिया। ४. गिरधर। ५. नागर। ६. चरण। ७. लगरिया (लग रहा)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३. राग केदारा ताल कहरवा

श्रया तो छब (नेरण) नरखो नागर नटकी । टेक ।
तो बन (बिन) मारे कल रण पडत हे, सावली सुरत (मारे) हरदे श्रटकी । या० ।
श्रत गोकल (उ)त मुथरा नगरी, अदबीचे (मारी)दद (की) गागर झपटी । या० ।
मोर मुगट मक्राकरत कुंडल (ळ), सोवा (भा) प्रीतांब्र[1] पटकी । या० ।
मीरा के प्रबु(भू) (गि) गरधर नागर, चरण कमल चतवन अटकी । या० ।

[कृति-पत्रांक. २३]

४. राग काफी ताल त्रताल

श्राज मारो लालजी गआसे रोसाश्रे रे । आ० । टेर ।
हे कुबज्या व्न[2] कोही मान न्हि[3] करे, उरण ही लिआ भ्रमाऐ (रे) । श्रा० ।
सुनि सुनि सेज्म्हे[4] श्रोजक उठु क्र[5] जगु, कुरण शु घालु गलबाश्र रे । श्रा० ।
धुप दीप ले क्रु[6] श्रारती, लल (ळ) लल (ळ) लागु हरें[7] पाश्रे (रे) । श्रा० ।
हात जोड़ करु बिणतो, छन्म्हे[8] लु (ल्यूं) मनाश्रे रे । श्रा० ।
मिरा के प्रभु गर्घ्र[9] नाग्र[10], राखो चर्ण कमल री छाश्रे रे । श्रा० ।

[कृति-पत्रांक. १७]

५. राग खमाच ताल तिंवरा

श्राज मारे मंद्र[11] मंगलाचार रे । आ० । टेक ।
राम लछम्रण मारे मद्र[12] पद्राया[13] । काई श्रे करु (रूं) मनवार रे ।।१।। श्रा० ।
हे धुप दीप ले क्रु[14] श्रारती । लल (लुळ) लागु हर रे पाश्रे रे ।।२।। श्रा० ।
मिरा के प्रभु गर्घ्र[15] नागर । हर चरण चत लाव रे ।।३।। श्रा० ।।

[कृति पत्रांक-१८]

६. राग काफी ताल त्रताल

कुण खेले थांसु होरो रे. रे संग लागोई श्रावे ।
न्ही[16] खेला थांसु होरी रे, रे संग लागोई श्रावे ।
हा जी लाल न्ही खेलुं थासु होरी । टेक ।
चुवा चुवा चंदन श्रगर श्ररगचो, केश्र[17] म गंमद घोरी रे । संग० ।

शुद्ध शब्द रुप– १. पीतांबर २. वन ३. नहीं ४. सेज म्हे ५. कर ६. करु ७. हर रे ८. छन (छिण) में ९. गिरधर १०. नागर ११. मींदर (मंदिर) १२. मंदिर १३. पधार्‌या १४. करु १५. गिरधर १६. नहीं १७. केसर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हा हा हो लाला मे तो न्हीं[1], खेला थांसु होरी रे। संग०।
भर पचकारी मारा मुख प्र[2] डारी, तो भीज गई रंग साड़ी रे। संग०।
लारै लागीई आवै, यांकै होरी न्ही रूण[3] जोरी रे। संग०।
अबके देवो जव मर्द वहुगी, तो अेसी मारु पचकारी रे। संग०।
मिरा के प्रभु ग्रर्ध नाग्र[4], तो चर्ण जी रहो या जो(ड़ो)री रे। संग०॥

[कृति पत्रांक ३०]

७. राग कुमायचो ताल त्रताल

ग्रधारी[5] पचकारी भर डारी हे माग्रे, उच कल डारी मारी आखन मे। टेक।
सेरी रे ज्योहे सुख्यामल, आवे नेकन न नीडाकन में। ग्र०।
चुवा चुवा चंदन ग्रग्र[6] ग्ररगचो, ग्रबि[7] गुलाल वांरी ग्राखन में। ग्र०।
हे मिरा के प्रबु(भु) ग्रध्र[8] नाग्र[9], रीज खीज वारी नाखन मे॥ ग्र०॥

[कृति पत्रांक-२६]

८. राग भेरवी ताल कहरवा

चली ग्राव रे गुवालण ददवाली, ददवाली रे गोरसवाली।
चली ग्राव रे गुवालण ददवाली।
श्र[10] प्र[11] माट ध्र्यों[12] हे म्ही[13] को, मगन मले ग्रधारी[14]।
लेंहेगो लाल कसुमल अंगीग्रा, ग्रोडण कु चंपला साडी। च०।
सीसफुल प्रभु स(सि)र बीराजे, गल कंच्न[15] की खगवाली। च०।
रण ज्ण[16] रण ज्ण नेव्र[17] वाजे, धन जोबन मतवाली। च०।
व्रखभाणजी की कुब्र[18] रादका, रुप जोव्न[19] (सां)चे ढाली। च०।
मीरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[20], च्रण कमल चतधारी। च०।
चली ग्राव रे गुवालण ददवाली, ददवाली रे गोरसवाली॥ ७॥

[कृति पत्रांक ३]

शुद्ध शब्द रुप– १. नहीं २. पर ३. रूप ४. गिरधर नागर ५. गिरधारी ६. अगर
७. अबीर ८. गिरधर ९. नागर १०. सिर ११. पर १२. धर्यो
१३. मही (दही) १४, गिरधारी १५, कंचन १६, रुणझुण १७. नेवर
१८. कुंवर(कुंवरी) १९. जोबन २०. गिरधर नागर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

९. राग असावरी ताल कहरवा

छेल छबिला छौगाला रे मन मान्याजी।
कांई गुण साग्र[1] गौबींद, मारे घर आज्यौ रे। रे मन मान्या जी। टेक।
पागडलि छौगो ब्ण्यौ[2] रे मन मान्याजी, कांई नरव्र्ण[3] त्रछा[4] नेण। मारे०।
मौर मुगट सौबा[5] ब्णि[6] रे मन मान्याजी, कांई कुंडल झलकै कान। मारे०।
काई हात हींराजड़ो मुंदड़ी रे मन मान्याजी, कांई ढल हल मौती कान।
। मारे०।
बागौ तौ सौवे केसरयां रे मन मान्याजी, कांई माथे पचर्ग[7] पाग।
। मारे०।
कांई हात(थ) ही(रा) जड्यौ सेलड़ो रे मन मान्याजी, कांई असल गेंडारी ढाल।
। मारे०।
कांई पांव पीताम्र[8] धोत्रती रे मन मान्याजो, कांई पाटु सुत्ण पांव।
। मारे०।
कांई पांव लाखीणी मोचड़ी रे मन मान्याजी, कांई जांजर रो झणकार।
। मारे०।
कडस (कंडेसूं) कटारो वाकडौ रे मन मान्याजी, कांई सोरटड़ी त्रवार[9]।
। मारे०।
सौवा तो असी[10] ब्णी[11] रे मन मान्याजी, कांई आबुखण[12] सौवै अंग।
। मारे०।
मीरा ने ग्रध्र[13] मल्या रे मन मान्याजी, कांई सहेस गोप्यां बीचे काहान।
। मारे०॥

[कृति पत्रांक-१६]

शुद्ध शब्द क्रम– १. सागर २. बणयो ३. न (नि)रखण ४. तिरछा ५. सौभा ६. बणी ७. पचरंच ८. पीताम्बर ९. तरवार १०. ऐसी र ११. बणी १२. आबुखण (आभूषण) १३. गिरधर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१०. राग देस ताल केहरवा

जतन क्रो[1] हे मारी हे, पीया व(बि)न सुनो मारो देस। टेक।
ग्रस्या हे कोग्रे पीया कु मलावे, तन मन धन क्रु[2] भेट। पीया०।
ग्रेबन ढुंढ्या सकल वन ढुंढ्या, क्र क्र[3] जोगीडा रो भेस। पीया०।
ग्राप जाग्रे दुवारका छाग्रे रह्या हे, पीजर व्हे गया केस। पीया०।
मीरा के प्रबु(भु) गरध्र[4] नागर, तज दीयो नग्र[5] नरेस। पीया० ॥

[कृति पत्रांक २४]

११. राग देस ताल कहरवा

ज जमना जी रे धोरे।
हु(हूं) तो विश्र[6] गई जी मारो, मोतीड़ा रो हार।
हे गढ सु(सूं) गुवालए उत्री[7], श्र[8] मही रो भार।
ग्राडो काहान जी फर रग्रा, मांगे छे म्ई[9] रो दाए। जी०।
न्दो[1] क्रोडे रुखड़ो, पाएि गुंदला (ळा) होऐ। जी०।
फूलि फूलि हूं फरु, गल फुलन की मांल।
फुलारां सेज वछाव्एा[10], फुल्या फरे जी नंदलाल। जी०।
रादे हंर की लाडली, नत उठ द्रस्एा[11] पाए।
मिरा तो थारी थकी, राखो च्रएा[12] लगाऐ।
जि ज्मना जी रे धोरे।
हु तो विश्र गई सु जी, मारौ मोतीड़ारो हार ॥ ४ ॥

[कृति पत्रांक २]

१२. राग ग्रासावरी ताल त्रताल

थे ग्राज्यो जी मारे रमके भुमके, डाव लग्यो हे ग्रबके। टेक।
तम तो मोहन विश्र गग्रेसो, कल ए पड़त हे ह्मको[15]। थे ग्राज्यो०।
मनड़ो मोहन मौहे लीयो से, ग्राखड्या[16] ठमके। थे ग्राज्यो०।

शुद्ध शब्द रुप– १. करो २. करु ३. कर कर ४. गिरधर ५. नगर ६. बीसर (भूल)
७. उतरी ८. सर(सिर) ६. मही(दही) १०. नदी ११. बिछावणा(बिस्तर)
१२. दरसण १३. चरण १४. बीसर(भूल) १५, हमको १६. ग्रांखडल्यां।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सासु न्णद[1] मारी गा चली हे, थे मत मन्मे[2] राखो डर्कें[3]। थे आज्यो०।
रमझम क्रता[4] पधारो साब्रीया[5], गुगर्न के घमके। थे आज्यो०।
मिरा के प्रभु गध्र[6] नाग्र[7], काना कुंडल(ळ) झलके। थे आज्यो०॥

[कृति पत्रांक १८]

१३. राग कुमायचि ताल त्रताल या कहरवा

घिरा झुलो रा, धीरा झुलो रा।
राज गुमानी, धिरा झुलो रा।
हे लाडी जी झुले थांरे कानी।
धिरा झुलो रा।
छोटी लाडी झुले थांरे कानी, प्यारी लाडी झुले थांरे कानी। टेक।
घन ग्रजत बिजलीग्रां चमके, झुम्र[8] ब्रसे[9] पांणी। धि०।
चुनड़ भीजे मारी रंग चुवे, रंग लागे छे: कानि कानि। धि०।
हे नजर नीहारो न्हेको[10], कत हो पेम की सानी। धि०।
हे झुलत झुलत सब सं[11] लीनो, मुज प्र[12] कीहे नसाणी। धि०।
मिरा के प्रबु(भु) ग्रधर[13] नाग्र[14], राखो राखो चरण सवानी। धि०॥

[कृति पत्रांक–१]

१४. राग सोरठ ताल कहरवा

नंद जी राम्म सुंजाण[15]।
नंद जी री दुवार थे तो माने, कामणी अछि अछि काही जाणो।
म्हांने कामणीया की, दासे कांई जाणों।
राजे माने काम्णीया की, दासे कांई जाण। टेक।
अर्ज काछा कछु न्सीर वावे, राज्रा[16] गला री रूडी आंण। न०।
घ्र[17] रो धंधो सब विश्र[18] गई सु(सूं), छोडी छे कुल(ळ) री कांण। न०।
नेण वाण तम निहारो, मारो छो भलका ताण। न०।
मिरा के प्रभु वे च्रंद्रासण दीजो, मत चुको अवसाण। न०॥

[कृति पत्रांक–४ (८)]

शुद्ध शब्द रुप– १. नणद २. मन में ३. डरके ४. करता ५. सांवरिया ६. गिरधर ७. नागर ८. झुरमुर(झिरमर) ९. बरसे १०. नेहको ११. रस १२. पर १३. गिरधर १४. नागर १५. राम र सुजाण १६. राज रा १७. घर १८. बिसर(भूल)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१५. राग सारंग ताल कहरवा

नर ब्रेद्रदी[1] हे वंसरी, बाजी जमना री तीर। बाजी जमना री तीर । टेक ।
आप ही गावै, आपी (ब)जावे, सुद नई रहेत[2] श्रीर[3]। न० ।
मोर मुगट श्र[4] छत्र बीराजे, हर न्णादी[5] को बीर। न०
ले मेरो चीर कदम चड बैठा, आखर जात अहीर। न० ।
मिरा के प्रभु ग्रध न ग्रि[6], श्र .... खो श्रीर। न० ॥

[कृति पत्रांक–६]

१६. राग आसावरी ताल कहरवा

पेम सवागरा मर्गा नेरणी रादे, तें गोवींद बस कीनो री। टेक।
गोरा गोरा मुख प्रे[7] तलक बीराजे, हांरे वारी बंद का मे कछु कीनो री । पे० ।
सीसफुल प्रेम टकी बीराजे, हां रे वारी गोरस मे कछु कीनो री।
हां रे वारी गोरस मे कछु कीनो री। पे०।
काथो जी चुनो लु (लूं) ग सुपारी, पानन मे कछु कीनो री।
हां रे वारी पानन मे कछु कीनो री। पे०।
मीरा के प्रबु(भ्रु) (गि) गरधर नागर, हरी चरण सुख लिनोरी।
हां रे वारी हरी चर्ण[8] सुख लिनोरी। पे० ॥

[कृति पत्रांक २२]

१७. राग जीझोटी ताल कहरवा

भला सावरीया हो, आछा सात्रया[9] हो प्रित (नि) नवाया ब्णेगे[10] (गी) । टेक ।
जे तुम हम कु गाली देओगे, तो हर्य[11] मे रख लेउंगी। सा० ।
ज्यो तम हम सु रुस रहोगे, तो राजी कौस बंद[12] होवैगे। सा० ।
राणीजी रुखम्णि[13] ओर सतभामा, कुबज्या छकीए कु जावोगे । भ० ।
मोर मुगट श्र[14] छत्र बिराजे, कुंडल की झलक बताश्रे जावोगे । भ० ।
मिरा के प्रभु गध्र[15] नाग्र[16], चर्ण[17] सु लपटावेगे। भ० ॥

[कृति पत्रांक–१७]

शुद्ध शब्द रूप– १. बेदर्दो २. रहत ३. शरीर ४. सर(सिर) ५. नणदी ६. गिरधर नागर
७. पर ८. चरणां ९. सांवरिया १०. बणेगी ११. हरदे में १२. बिद(विध)
१३. रुकमणि १४. सिर १५. गिरधर १६. नागर १७. चरण।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१८. राग काफी ताल दीपचंदी

मत डारौ पचकारी रे, हु (हूं) तो सगली भीज गई। टेक।
चुवा चुवा चंदन अबीर अरगंचो[1], केश्र[2] की छब न्यारी। हु०।
रादा(धा) मोहन जी होरी खेले तो, भं[3] पचकारण मा(रू)री। हु०।
अबके डारी जो तो डार डारी, प्ण[4] अबके डांरो तो दडगारी। हु०।
मिरा के प्रभु गध्रं नाग्र, जुगल केल प्र[5] वारी। हु०॥

[कृति पत्रांक ३१]

१९. राग कालिंगड़ा ताल कहरवा

मोहवत कामलिवाला सु(सूं) जोड़ी, मोहोवत कामलीवाला सु जोड़ी। टेक।
लोग कहे कालीकामली वालो, मारे तो लाख क्रोड़ी[7]। मों०।
उबो रहेत हे कदम की छइया, मारी बंईया[6] पकड़ झकझोरी रा। मो०।
मुथ्रा[8] सु(सूं) आई गुवालणी, गोकल सु(सूँ) आयो कान।
अदबीच अडबी रोडी रा। मो०।
मिरा के प्रभु गध्रं नाग्र, चर्णजी (व)[9] रओ[10] जोड़ी रा[11]। मो०॥

[कृति पत्रांक–८]

२०. राग परज ताल कहरवा

मलता जाज्यो रा (ज) गुमानी, थारी सावली सुर्त[12] देख लुबाणी।
मलता जाज्यो रा (ज) गुमानी। टेक।
गौकल मे आऐ मारौ घर बु (झ) लीज्यौ, बहोत क्रु[13] मजमानी॥ म०।
नंद म्हेर जी सु(सूं) दस ध्र आगे, रंगीलो पोल(ळ) न्ही छानी। म०।
तम तौ छौ न्दं[14] म्हेरजी के कव्र[15] कनईया[16], हु(हूं) बर्खभाण दुलारी। म०।
मिरा कै प्रवु(भु) (गि)गरधर नागर, थांरी मारी परीत[17] न्ही छे छानी। म०॥

[कृति पत्रांक–१८]

शुद्ध शब्द रूप– १. अरगचा २. केसर ३. भर ४. पण(किन्तु) ५. रे डारो ६. पर
७. करोड़ी ८. मथुरा ९. चिरंजीव १०. रहे ११. राज १२. सूरत
१३. करु १४. नंद १५. कंवर १६. कन्हैया १७. प्रीत।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२१. राग मांडताल कहरवा

मेरो मन मोग्रो(यो) सेजी, बेग्ग बजाय । टेक ।
सुणत काक ······ ड उठत हे, तलफ तलफ जीव जाअे(य) ।
दी(दि)न न्ही[1] चेन, रेण न्ही नीद्रा, निस······न कछु सुवाय । मे॰ ॥
तु(तूं) मेरो कयो मान सु (स) खिरी, व्रज नंद बेग बुलाय ।
मीरा के प्रभु (गि) गरध्र[2] नागर, राखो माने गल लपटाअे । मे॰ ॥

[कृति पत्रांक-१२]

२२. राग कुमावची ताल केहरवा (सारंग)

रसीग्रो राम रीजावां हे माग्रे, रांणो जी रुसे तो मारो कांई क्रसी[3] ।टेक।
राणो जी रुसै तो मारो काहे नही बीगड़ै, हे सांवरोजी रुस्यां मारे न्ही सरसि ।र०।
हे साध संगत की मे ग्रंध्यांधारी, साध बना मारे नही श्रसी[4] ।र०।
हे बडभागण मेरतणी, च्रण[5] कमल मीरा प्रसि[6] ।र०।

[कृति पत्रांक-५]

२३. राग बलावल ताल कहरवा या त्रताल

रस मे वस काय कु डारे सखि, रस मे वस काय कु डारे सुखि । टेर ।
हे दद म्हेथी[7] घ्रत काड लिओ हे, अब कोरी रह गई छाछ री । र० ।
दुद(ध) दई तो मारे घर व्होतोरो[8], बीन ग्राद्र[9] कीया प्रीत करसे । र० ।
मिरा के प्रवु(भु) ग्रध्र[10] नाग्र[11], खोल गु(घुं)गुट थासु ग्राप हसि । र० ॥२॥

[कृति पत्रांक-४]

२४. राग सारंग ताल कहरवा

रादे(धे) क्रसन रादे(धे) क्रसन, गोबींद गोपाल । टेक ।
मोर मुगट कट काछनी, रे गल मोतन की माल । रा० ।
जमना की नीरा धेन चरावै, वंसी बजावे नंदलाल । रा० ।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नागर, (राखो च्रणं[12] कमल री छाये) ।
भक्तन के प्रतिपाल । रा० ॥

[कृति पत्रांक-८]

शुद्ध शब्द रुप— १. नहीं २. गिरधर ३. करसी ४. सरसी ५. चरण ६. परसी ७. मथी ८. बहूतेरो ९. ग्रादर १०. गिरधर ११. नागर १२. चरण ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२५. राग सारंग ताल कहरवा

रे मानु द्रसे[1] बताज्यो जी, रे मानु द्रस बताओ जी। टेक।
जमना की नीरा तीरा धेन चरावे, बंसि को सवद सुरण (रणावै) जी। रे०।
माथे मुगट श्र[2] छत्र बिराजे, कंडल की लटक वताओ जी। रे०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नाग्र, हरी का च्रण सु(सूं) लपटाओ जा (जी)। रे०॥
[कृति पत्रांक-१७]

२६.

रे मे तो ब्रेहें[3] की दादी, प्ण[4] बादा न्ही कछु मो मे।
रे मे तो ब्रह की दादी। टेक।
कोट उपाओ कीयो मलवे को, प्ण काउग्रन लादी से री। रे०।
रवि च्द्रं[5] तम कलाअेस मेटो, मत दग दे ग्र ग्रादी। रे०।
मिरा के प्रभु कव्ही[6] मलोगे न्ण कंठण रेण रही हे आदी। रे०॥
[कृति पत्रांक-१७]

२७. राग मांड ताल दादरा

सांवरा जी ग्राज्यो जी माहरे देस।
बंसीवारा ग्राज्यो जी, माहरे देस। टेक।
साव्ण[7] ग्राव्ण[8] कृ[9] गया रे, वारी क्र[10] गग्रा कोल ग्रनेक।
हे गणता घसे गई जी मारी ई ई ई ई ई, ग्रागलीया री रेख। ब०।
सावली सुरत, वाली बेस। ब०।
प्र त क्री[11] सुख लेण कु रै वारी, ग्रब लागी दुख देण। ब०।
ग्रसी रे मे जाणती रे वारी, तो प्रीत न क्रती[12] लगार। ब०।
सामीने चोगती रे वारी, आव्ण न देती दुवार। ब०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नागर, राखो चर्णां[13] की लार। ब०॥
[कृति पत्रांक-९]

शुद्ध शब्द रुप– १. दरस २. सिर ३. विरह ४. पण ५. चंद्र ६. कब ही ७. सावण ८. ग्रावंण ९. कहें के १०. कर ११. करी १२. करती १३. चरणां।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२८. राग आसावरी ताल कहरवा

सीताराम समर्जुग[1] हसवा दै, सीताराम समर्जुग हसवा दे। टेक।
हसती की चाल चलो रे मन्मेरा, पिछे कुक्र[2] भुसवा दे। सि०।
राजा लड़े राज के खातर, भुप भडे ज्याने भडवा दे। सि०।
भेरु पु(पू)ज सीतला पुजे, उल्ज्म्र[3] ज्याने मर्वा[4] दे। सि०।
नंदयां कान सु रो न्ई दीजे, नें[5] पंडे ज्याने पडवा दे। सि०।
मिरां के प्रभु गरध्र नागर, हरी का च्रण चत क्रवा[6] दे। सि० ॥

[कृति पत्रांक–१६-१७]

२६.

सुंद्र[7] साम बिहारी। टेक।
आव्ण[8] आव्न क्र[9] गअे उदो, प्ण कतनीक दुर गोकल रे।
वां ले चल रे. उदो। सु०।
आव्न[10] के दन[11] वित गअे हे, प्ण लगी हे तपत मेरा तन मे (रे)। सु०।
काहा जी करु कीत जाउ मेरी सजनी, प्राण क्रत[12] तलफल रे। सु०।
सबई राणी सबई सीआनी, प्ण अत न्यामे[13] कुबज्या कुटमरे। सु०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नागर, हरी का चर्णां प्र[14] वलिहारी रे। सु० ॥

[कृति पत्रांक–१७]

३०.

सुख सागर में आग्रेक अे अे अे अे अे,
मत जाअे रे पीआसा हा हा हा। टेक।
ऐ नरमल नीर भरयो घट भीत्र[15] अ अ अ अ अ,
पी जाओ सास उसासा हा हा हा हा। म०।
जल वीचे कमल कमल बीचे कलीया,
जस प्र[16] भमर लोवाणा आ आ आ आ आ। म०।

शुद्ध शब्द रुप– १. समग्रयुग २. कुकर ३. उलझ मरे ४. मरवा दे ५. नर र ६. करवा
७. सुंदर ८. आवण ९. कर(कह) १०. दाधन (दग्ध होने के) ११. दिन
१२. करत १३. या में १४. पर १५. भीतर १६. पर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हाड चाहाम चतां[1] हरः लेई ई ई ई ई,
जस प्रे(पर) क्यु धब्रणा[2] श्रा श्रा श्रा श्रा श्रा । म०।
श्रब तु तूं) चेत चेतन नज प्राणी ई ई ई ई ई,
जम डारेगा गल पासा श्रा श्रा श्रा श्रा श्रा । म०।
मीरा के प्रभु ग्रध्र[3] नाग्र[4] श्र श्र श्र श्र श्र,
चरण कमल मेरा वासा श्रा श्रा श्रा श्रा श्रा । म० ॥

[कृति पत्रांक– ६]

३१. राग बलाबल ताल दीपचंदी

हे श्रावे छे रे, गोपाल रंगीलो । टेक।
हे ज्र[5] कर्स[6] पाग केश्रीया[7] वामो सोवत, तलक श्रदक छबीलो । श्रा०।
हे व्रद्राबन[8] की कुंज्र[9] मे मोहन मलिया, हस क्र[10] त्रचो[11] हे गुगट ढीलो । आ०।
मिरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[12], सहेस गोप्या रो हे यो, रसिक रसिलो । आ०।

[कृति पत्रांक–१८]

३२. राग सारंग ताल कहरवा

हे कठड थया हो माधव मुद्रा मे, हारे वारी कागद न्ही लख्यौ[13] कटकौ रे । टेक ।
गोकल म्हे[14] श्रव वात क्रत[15] हे, काकान व्र[16] कुवज्या संग श्रटको रे । क०।
रुप काली अंग कुवड़ी, हांरे वारी ताप्र[17] श्रजी[18] का लटक्यो रे । क०।
मोर मुगट श्र[19] छत्र वीराजे, कुँडल(ळ) की नाही झलको रे । क०।
व्रंद्रांवन[20] की कुज गलण मे, हारे यारी देखु हो, सांवरीया थारो लटको रे ।क०।
मिरा के प्रभु गरंध्र[21] नागर, नीच संगत संग कांई भटको रे । क०।

[कृति पत्रांक–७]

शुद्ध शब्द रुप– १. चिता (चित से) २. घबराना ३. गिरधर ४. नागर ५. जर(जरी)
६. कसर ७. केसरियां ८. वृंदावन ९. कुंजन १०. कर ११. कर्‌यो
१२. गिरधर नागर १३. लिख्यौं १४. में १५. करत १६. कान कंवर
१७. ता पर १८. सरीजी १९. सर(सिर) २०. वृंदावन २१. गिरधर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३३. राग आसावरी ताल कहरवा

हे कहेज्यो नींद न आवे, कहेज्यो जी नीद न आवे। टेक।
सेभड़लि सुरंगी वाला श्री[1] रेणो[2], दुजी नेण सतावे। क०।
कब्रे[3] होसी पापीया तुमारी रे मलण, रमक मोहन घरे आवे। क०।
मीरा के प्रभु गध्र[4] नागर्न[5], वीन बीगत उंपजावे। केहे०।
[कृति पत्रांक-७]

३४. राग मांड ताल दादरा

हे कुण ने सीखाया तुजे मीठा बोलणा,
रे कुण ने सिखाया तुजे मीठा बोलना। टेक।
हे ज्र[6] कसि(यो) फेटो केश्रयो[7] जामो, माथे मुगट सवर[8] क्रोडाना[9]। कु०।
हे हात चंढयो पग पालकी, चाले म्रोडना[10]। कु०।
मिरा के प्रबु ग्रध्र[11] नागर, चर्ण[12] कमल चत जोड़ना। कु०।
[कृति पत्रांक-६]

३५. राग मांड ताल दादरा

हे कुण ने सीखाया तुजे मोठा बोलना। कु०। टेक।
मोर मुगट श्र[13] छत्र बीराजे, कुंडल(ळ) झलके कपोलना। कु०।
हात चळ्यो पग पावड़ी, चाले मरोड़ना। कु०।
मीरा के प्रभु गध्र[14] नागर, माथै मुगट सवा क्रोडना[15]। कु०।
[कृति पत्रांक-१०]

३६. राग कालिंगड़ा ताल कहरवा

हे कुण माने थारी वातीया[16], कुण माने थारी बातीया।
जाओ झूठा बोला, कुण माने थारी वातीया। टेक।
हे कालकी वाता तो मारा आ .... हरदा मे खुचत हे,
क्रवत[17] व्हे[18] गई मारी छतीया। जा०।

शुद्ध शब्द रुप— १. भरी २. रेण(रात) ३. कब रे ४. गिरधर ५. नागरन ६. जरी
७. केसरियो ८. सवा र ६. करोड़ना १०. चढ्यो ११. मरोड़ना
१२. गिरधर नागर १३. चरण १४. सर(सिर) १५. गिरधर १६. करोड़ना
१७. बतियां १८. करवत १६. बेह।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हे भोर भयो जब आग्रे मेरे आंगणे, कठ रे गया सा सारी रातीया। जा०।
मों तन माला थे कठ दे मुला सो, हार रयो थारी छतीया। जा०।
चुवा चुबा चंन्ण[1] अगर अरगचो, सुदो लगायो थारी छतीया। जा०।
मोरा के प्रभु (गि)गरधर नागर, जनम जनम था दासीया। जा०।

[कृति पत्रांक–६]

३७. (गरवा)

हे केस करी अे रे केसे क्री[2] अे।
नर्मोईड़ा[3] सु(सूं) प्रीतड़ी केसी क्रीअे, झुठा बो बोला सु प्रीतडी।
केसे क्रिअे। टेक।
आप गोकल म्हे[4] छाम्रे रहे हो, हम रोम्रे रोम्रे अखीया निरभ्रोअें[5]। न०।
हे जाउंगी अटारी लेउंगी कटारी, जर्ये[6] रज व्रव सखाम्रे म्रीअे[7]। न०।
चुण चुण कलिम्रा मे सेज ब्णाउ[8], भ्म्र[9] पलंग प्रे[10] झुरमरोअे। न०।

[कृति पत्रांक–१६]

३८. राग भेरवी ताल कहरवा

हे खडी छु खडी छु खडी छु, कबकी द्रवार(द्वार) कडी छु। टेक।
सव सुखीया[11] सु (सूं) हस हस बोलो, मे[12] काई नार बुरी छु। क०।
सव सुखीया सु रास रमो छो, हम सु मुखडे न बोलो। क०।
सव सुखीया के मेहेल पधारो, हु[13] हरदा मे अडी छु[14]। क०।
सव सुखिया मोतन की माला, मे हीमो की कल्ली छु। क०।
सब सुखीया सोना को गेहेणो, मे(मैं) ही हीर कणी छु। क०।
मिरा प्रभु (गि) गरधर नागर, चरण कमल म्हे[15] जड़ी छु। क०।

[कृति पत्रांक–६]

शुद्ध शब्द रुप– १. चंदण २. करी ये ३. नरमोइड़ा (निरबोहिड़ा) ४. में ५. नीर भरिये
६. जाय रे ७. मरिये ८. बणाऊं ९. भ्रमर १०. परे(पर) ११. सखियां
१२. मैं १३. हूं (मैं) १४. छूं १५. में।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३६. राग बलावल ताल दीपचंदी

हे गई दध बेचरा आप बिकाणि, गई दद वेच्या[1] आप बिकाआणी[2] । टेक ।
मे दद बेच्या जाती व्रदावन[3], बीच मे मलिया[4] हे द(घ)णी । ग० ।
है आडो-आडो डोले औ रसीलो, बोलत अटपटी वाणि । ग० ।
दद मेरो खादो मटकीयो तोरी, मुख प्र[5] क्री[6] हे निसाणी । ग० ।
हे गुगट खोल्यो, लाज लीदी, ओर क्री[7] हे मन जाणी । ग० ।
मीरा सु गर्ध्र[8] मलीया, ज्यु दुद(घ) मे पाणी । ग० ।

[कृति पत्रांक–१८]

४०. राग भेरवी ताल त्रताल

हे चल्यो जा रे व्रजवासी, अप्णी[9] डगर्तूं[10] चल्यो जा व्रजवासी । टेक ।
मे दद वेचरा जाती व्रंदावन, अदबीचे प्राण डारी हे प्रेम की पासी । च० ।
तेरे तो खात्र[11] जोगरा होउंगी, क्रवत[12] लेउंगी मै कासी । च० ।
मिरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[13], चरण कमल रज की मे(मैं) दासी । च० ।

[कृति पत्रांक–८]

४१. राग पीलु ताल कहरवा

हे छेल छबीला थांने, चलवा न देसु (स्यूं) रामा । टेक ।
माता जसोदा थासु अरज क्रे[14] छे, कान क्रे[15] छे नुग्राई[16] मे वारी रामा ।छे०।
मोर मुगट श्र[17] छत्र बीराजे, कुंडल(ळ) की लटक बताओ ।
जी मे वारी रामा । छे० ।
जमना की नीरा सीरा[18] धेन चारावे, बंसी को सबद सुणांअे ।
जातु मेरे रामा । छे० ।
मिरा के प्रभु गरध्र[19] नागर, हरी के चर्णां[20] लपटाओ रहुंगो ।
तु मेरे रामा । छे० ।

[कृति पत्रांक–७]

शुद्ध शब्द रुप– १. बेचण २. बिकाणी ३. वनरावन (वृंदावन) ४. मिल्या ५. पर ६. (करी)की र, ७. करी ८. गिरधर ९. अपणी १०. डगर तूं ११. खातर १२. करवत १३. गिरधर नागर १४. करे १५. का करे १६. नुगराई १७. सर(सिर) १८. तीरां १९. गिरधर २०. चरणां ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४२. राग काफी ताल त्रताल

हो जी रंग भीनो होरी थांसु खेलुंगी । टेक ।
फागरा म्हे[1] पिया लाज काअे की, बुरी भली सु मे नाअे(ही) डरुंगी । हो० ।
कांन कुंवर भर मुठ चलावे, हुं तो गुगट का पट प्रे[2] झेलुंगी । हो० ।
कन (क) कटोरो केश्र[3] घोरी, हु तो रगीला प्रीतम प्रे[4] ढोलुंगी । हो० ।
गोकल याकु मे(मैं) जांरा न दूंगी, भं[5] पचकार (इ)रा पे(डा) लुंगी । हो० ।
मिरा के प्रबु (भू) ग्रध्र नाग्र[6], हु तो फगवा ले न छोडूंगी । हो० ।
[कृति पत्रांक–२६]

४३. राग पीलु ताल कहरवा

हु[7] तो वारी जाउअे भोरी(ली) नरादल, खेलरा होरी दे । टेक ।
कान कुवर मारे दुवारे ठाडे, भर्प[8]चकाररा ले । हु० ।
काउ की व्रजी[9] मे नाम्रे रहुंगी, फागरा को रस ले । हु० ।
मेरे पछवाड़े धुम मचो हे, हे मारो ही मन हे । हु० ।
मिरा के प्रबु (भू) ग्रघ्र नाग्र[10], हर के चररा चत रहे । हु० ।
[कृति पत्रांक–२६]

४४. राग खमाच ताल त्रताल

हु[11] तो सु(सूं)वाली कछु न्ही[12] जारां, मोसुं प्रीत लगाअे ग्रब काहां जासी रे ।टेक।
ग्रत गोकल ग्रत मुथ्रा[13] नग्रि[14], वीच मल्या ग्रबन्यासी रे । हु० ।
वंद्रावन्न[15] की कुज कल्रा[16] मे, सहेस गोपी न व्रजवासी रे । हु० ।
तेरे तो खात्र[17] जोगरा वेहुंगो, क्रवत[18] लेउंगी कासी रे । हु० ।
हु(हूं) व्रखभारा की कुवर लाडलि, मारो जोवन तो सु[19] जासी रे । हु० ।
मिरा के प्रबु(भू) ग्रध्र नाग्र[20], तुम करहु दासी रे । हु० ।
[कृति पत्रांक–२२]

शुद्ध शब्द रुप– १. में २. पर ३. केसर ४. परे(पर) ५. भर ६. गिरधर नागर ७. हूं(मैं) ८. भर ६. बरजी १०. गिरधर नागर ११. हूं(मैं) १२. नहीं १३. मुथरा १४. नगरी १५. वृंदावन १६. गल्रा १७. खातर १८. करवत १६. सो(सब) २०. गिरधर नागर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४५. राग धनाश्री ताल कहरवा

हे ब्रजवासी ब्रजवासे(सी) से ब्रजवासी ।
मोमु न्हेड़ो[1] लगाअ्रे, गअ्रौ रे ब्रजवासी । टेक ।
ब्रंद्राबन[2] म्हे[3] बंसि बजाई, लो गयो प्राण नीकासी । ब्र० ।
तेरे तो खात्र[4] प्रोन[5] तजुगी, क्रवत[6] लेउंगी कासी । ब्र० ।
मिरा के प्रभु गरधनग्रि[7], चर्ण[8] कमल की दासी । ब्र० ।

[कृति पत्रांक-५]

४६. राग आसावरी ताल कहरवा

हे लुटे छे रे लुटे छे छुटे ।
मही दद माख्ण[9], गुवाली मारो लुटे, कीई भीडे वारे दद मारो लुटे । टेक ।
हे रहो र गुवालण, ग्रब्र[10] नक्र[11], तु अ्रणई बाता सु न्ही[12] छुटे । म० ।
मे(मैं) दद बेचण जाती ब्रंदांबन[13], महीड़ो क्रो[14] छे मारो भुठे । म० ।
जाअे पुकारुगी कंसराअे कुं, पकड़ मगाउ थाने उठे । म० ।
छोडो रा लाल जी, हार हमारो, मोर तन की लड़ा टुटे । म० ।
छोडो रा लाल जी छे वडो हमारो, जर कसरो पलो टुटे । म० ।
छोडो रा लाल जी बईया हमारी, काचुरी कस टुटे । म० ।
मीरा के प्रबु (भू) (गि) गरधर नागर, लागी लगन नई टुटे । म० ।

[कृति पत्रांक-६]

४७. राग होरी ताल कहरवा

हो साम[15] मे(मैं) तो गई थो, हो प्रमेश्रवा[16] मे(मैं) होली खेलण गई थी । टेक ।
चुवा चुवा चन्ण[17] अगर्अ[18] रगयो, हो साम केश्र[19] कीच मचाई थी । हो० ।
अ्रत गोकल अत मुथ्रा[20] नग्री[21], तो बीच मे फाग मचाई थी । हो० ।
हमारी भीजोई श्र[22] की चुनड़ीया, तो अ्पणी[23] पाग बचाई थी । हो० ।
मिरा के प्रभु गर्ध्र[24] नाग्र[24], हो साम फगवा गोद भराई थी । हो० ।

[कृति पत्रांक-३१]

शुद्ध शब्द रूप— १. नेहड़ो २. वृंदावन ३. में ४. खातर ५. प्राण ६. करवत ७. गिरधर नागर ८. चरण ९. माखण १०. गरब(गर्ब) ११. न कर १२. नहीं १३. ब्रंदावन(वृंदावन) १४. करो १५. श्याम १६. परमेसरवा(परमेश्वर) १७. चंदण १८. अगर(अंगरे) १९. केसर २०. मुथरा २१. नगरी २२. सर(सिर) २३. अपणी २४. गिरधर नागर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४८. राग परज ताल कहरवा

हे हरो का मलरा, केसे होग्रे रे।
मे जाण्यो न्ही[1] रे, हा रे मे जाण्यो न्ही रे। हृ०। टेक।
मेरे आंगरा फर्गया[2] ललना, मे तो रही रे अबागरा[3] सोग्रे रे। मे०।
ज्यो प्रभु था आवता जाराती तो, देती दीवलो जोग्रे रे। मे०।
ज्यो मारा प्रबुजी ने आवता जाराती, तो जाजम देती बीछाग्रे रे। मे०।
ज्यो मारा प्रबुजी आवता जाराती, तो देतो ढोल्यो ढाल रे। मे०।
ज्यो मारा प्रभुजी ने आवता जाराती, तो देती मंद्र[4] खोल रे। मे०।
मिरा के प्रभु गध्र[5] नाग्र[5], राखो चरा[6] कमल री छाओ रे। मे०।

[कृति पत्रांक–१७]

४९. राग खमाज ताल त्रताल

हा हा रे गुगट को, हा हा रे गुगट को वारी रे।
गुगट को लटको भारी रे, गुगट को लटको। टेक।
हरी जरी की साड़ी सोवे, उप्र[7] कोर कीनारी रे। गु०।
हरी ज्री[8] की अंगीया सोवे, उप्र हार हजारी रे। गु०।
अंजन मंजन सवको संजन, राई लुरा उतारु रे। गु०।
मिरा के प्रभु ग्रध्र[9] नागर, हर चर्णा[10] चत अटक्यो रे। गु०।

[कृति पत्रांक–७]

५०.

हेली ज्यो घ्र[11] ग्रावे ग्रे ग्रे ग्रे ग्रे ग्रे साम साव्रो[12] मत दीज्यो रे गाली।
मारो बाल गोवींदो जारा के मत दीज्यो रे गाली। टेक।
मोर मुगट श्र[13] छत्र विराजै कुंडल(ळ) झलके भारी। म०।
व्रंदावन[14] की कुंज क(ग) लरा मे रास में[15] रादा प्यारी। म०।
मिरां के प्रभु ग्रध्र नाग्र[16] च्ररा[17] कमल वलीहारी। म०।

[कृति प्रत्रांक–१६]

शुद्ध शब्द रुप– १. नहीं २. फिर गया ३. अभागण ४. मिंदर(मंदिर) ५. गिरधर नागर ६. चरण ७. कोर ८. जरी ९. गिरधर १०. चरणां ११. घर १२. सामसांवरो(श्यामसांवरो) १३. सर(सिर) १४. वृंदावन १५. रमे १६. गिरधर नागर १७. चरण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरां के प्रकाशित पदों से भाव साम्य रखने वाले अप्रकाशित पद

परिशिष्ट (२)

१. आज मारे[1] आंगणी हरिजन आया रे। टेर।
दुधां दईयां सु (सूं)। पाव परवालुं[2] पग धोय पाथल पाया जी ॥ १ ॥
कु कु[3] केसर की गार घलाऊं[4] रे। मोतीयाँ चोक पुरावा जी ॥ २ ॥
वतीस भोजन तेतीस विध सैं। आपणैं हाथ जीमाया जी ॥ ३ ॥
फुलां रो मंगलो फुलां री सैज्या। उपर फुल बरसाया जी ॥ ४ ॥
मीरां कहै प्रभु (भू) गिरधर नागर। आनंद मंगल[5] गाया जी ॥ ५ ॥

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १४५]

सं० पाठ – १. म्हांरे २. परवाळूं ३. कुंम कुंम ४. घोळावुं ५. मंगळ

शब्दार्थ – परवालुं – धोवूं।

२. ओलगीया अब घर आई हो।
अंतर खोल कहूँ घट भीतर। सुंदर वदन दिखाई हो ॥ टेर ॥
नैनां (णां) नीर आभ ज्यूँ वरसै। विरखा इमट लगाई हो ॥
रुतवंति इक राम कंथ विन। वदन फिरत विलखाई हो ॥ १ ॥
च्यारु पोर च्यार जग[1] वीते। नैनां (णां) नीद[2] न आई हो ॥
पूरण ब्रह्म परम सुख दाता। थे म्हांरी भली निभाई हो ॥ २ ॥
निस दिन पंथ निहारत सजनी। इक पल जुग सम जाई हो ॥ ३ ॥
जन मीरां कूं मिल्यो है रमियौ। जनम जनम मित्राई हो ॥ ४ ॥

[अ० सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर ह० लि० ग्रं० सं० ११३]

सं० पाठ – १. जुग २ नींद

शब्दार्थ – मित्राई-मित्रता

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३. उधो प्यारे बह गई प्रेम कटारी ॥ टे० ॥
यो मन मंत[1] हसती ज्यों मात्तौ[2] आंकस दे हारी ॥ १ ॥
जाका पिय प्रदेस वसत है सो क्यूं जीवे वृज नारी ॥ २ ॥
जसे भभंग[3] तज गयो कंचरी सो गति भई है हमारी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु (भू) गिरधर नागर चरन (ण) कवल[4] बलिहारी ॥ ४ ॥

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ७५७३]

सं० पाठ – १. मस्त २. मैं तो ३. भुजंग ४. कंवळ, कमळ
शब्दार्थ – कंचरी-कंचुकी (कांचळी)

उधो विन कुण ल्यावै पाती ॥ टेक ॥
४. उधो जी आये कांई कांई ल्याये। हे उधो कहां छोडे संग साथी ॥ १ ॥
बाचत पाती भरि आई छाती। नैन (ण) रहे दोऊं राती ॥ २ ॥
हा (थ) त पांव मेरा असैं जलत है। जूं दीपग मैं बाती ॥ ३ ॥
सबै गोपीन[1] को त्यागन कीनौं। कूबंज्या संग रहे राती ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभू गी (गि) रधर नागर। मुनि संग रहे सा (थी) ती ॥ ५ ॥

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२५६ से]

स० पाठ – १. गोपीयन (ण)

५. ऐरी वोरी अपना स्यांम खोटा। अव दोस कहा[1] कुवजा को ॥ टेर ॥
कुवजा चेरी कंस राजा की। वै नंद जी का ढोटा ॥ १ ॥
आप तो जाय द्वारका छायै। मिलन(ण) का भया टोटा ॥ २ ॥
मिरां कै प्रभू गिरधर नागर। कुवजा बड़ीं हरि छोटा ॥ ३ ॥

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १४५—पत्रांक–५४]

सं० पाठ – १. कहां

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—

जीनका र दौस कुबज्या काये।
विरी अपना स्यांम खोटो। ग्रह अपनो ॥ टेर ॥
कुबज्या दासी कं चरण की। उवै नंद जी का ढौटा रे ॥ १ ॥
आप तो जाय दुवारका छाये। हमकूं दिया दसोटा रे ॥ २ ॥
कुबज्या लेअर सँग चढाये। रातु सरणप[1] लोटीया रे ॥ ३ ॥
ऐक अचुबौ[2] एसौ र सुणीयौ। कुबज्या बडी हर छोटा रे ॥ ४ ॥
आप न आवै(पस)तिया नै भेजीया। क्या या कागद का टोटा रे ॥ ५ ॥
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर (च)सरण। कमल(चि)सित ज्यो रे ॥ ६ ॥

[रा० शो० सं० चो० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६]

सं० पाठ–१. सरप(सर्प) २. अचम्बो(आश्चर्य)

६. कांई मिस आया जी राज अठै ॥ टेर ॥
राय आंगना[1] विचै उभा ही दीसो आगा जावोला कठै ॥ १ ॥
कुबजा नाचन(ण) चावै सो नाचो राज रो कांई जी ब(घ)टै ॥ २ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर तन मन हरि कै पटै ॥ ३ ॥

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ७६६४]

सं० पाठ – १. आंगण

७. कित गये नेहड़ो लगाय ॥ टेर ॥
जनम मरण को सांवरो संगाती तलफ तलफ जीव जाय ॥ १ ॥
नत[1] ऊठ दरसण करती साम[2] को हरि विन रही मुरजाय ॥ २ ॥
पेहली प्रीत करी हरी हमसुं अब दीनी छिटकाय ॥ ३ ॥
गोकल ढूंढ व्रंदावन ढूंढे ढुंढी बृज सारी राय ॥ ४ ॥
मो अवला की अरज सुणे ने दरसण दीजो आय ॥ ५ ॥
मीरां के प्रभु (गि) गीरधर नागर चरण कवल (ळ) चीत[3] लाय ॥ ६ ॥

राज० शो० प्रं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

सं० पाठ – १. नित २. स्याम ३. चित

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर —

क्यूं जी हरे (रि) की(कि) त गए नेहड़ो लगाय ॥ टेक ॥
बंसी बजाय मेरो मन हर लीनों रस भर तान सुनाय ॥ १ ॥
एक एक जीव मैं असी आवत है मरुंगी जहर वीस खाय।
हम कुं छांडी गयो बिसबासी नेह की नाव चढाय ॥ २ ॥
हम. कुलवंती सो तुम त्यागी रहै दासी कै जाय।
मीरा (रां) कहै प्रभु (गि) गोरधर नागर रहे हो मधुपुरी छाय ॥ ३ ॥

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १६६७]

८. कुण करै मांरी[1] भीर रांमजी विनां कुण करै मांरी भीर ॥ टेक ॥
एक समै प्रैहैलाद[2] उबार्‌यो धर नरसिंघ सरीर ॥ १ ॥
एक समै द्रोपदी पति[3] राखी खेंचत (बा)वाढ्यो चीर ॥ २ ॥
रांका भी तारया रांमजी वंका[4] भी तारया तारया है कालू कीर ॥ ३ ॥
मीरां कै प्रभू हर अवनासी साहिब गैहैर[5] गंभीर ॥ ४ ॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३।

सं० पाठ— १. म्हांरी २. प्रह्लाद ३. पत ४. बांका ५. गहर।

पाठान्तर—

कोण करे मारी भीड़ हरि विनां कौंन करै म्हारी भीर। टेक।
ऐक समैं गजराज उबारयौ काट्यौ है भ्रम जंजार। १।
ऐक समैं प्रैहलाद उबारयौ धाट्यौ है नरसंघ सरीर। २।
ऐक समैं द्रोपता की परण राखी खेंचत वधि गयौ चीर। ३।
मीरां के प्रभु (भू) ह (र) अविनासी तुम साहब गहर गंभीर। ४।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६१।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

९. गोविंद रे रंग राची रांणाजी मैं तो गोविंद रै रंग राची । टेर ।
सझ सिंगार बांध पग नूंपर[1] । लोक लाज तज नाची । १ ।
गई हो कुमति लही साधु की संगत । भगति रूप भई सांची । २ ।
गाय गाय हरि के गून[2] निसदिन । काल व्याल[3] सुं वांची । ३ ।
उन विन सब जग खारो लागै । और बात सब काची । ४ ।
मीरां गिरधर लाल प्रभु (भू) सूं । भगति रसीली जाची । ५ ।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २०९ ।

सं० पाठ— १. नुपुर २. गुण ३. काळ ब्याल ।

१०. राग कल्याण--

चरण रज मेमा[1] म्हम[2] जांनी[3] हो चरण रज मैमा हम जांनी (णी) । टेर ।
जीन[4] चरण नैन सं गंगा नीकसी भागीरथ भूपत आंणी । १ ।
जीन चरणन सै उधरै सुदामा विपत हरीसं पत्य आंणी । २ ।
जीन चरणन छै (सैं) अहैल्या उधरी गौतम रिख[5] की पटरांणी । ३ ।
जीन चरनन छै (सैं) कुबज्या उधरी सैस गोपीयां में ठकुरांणी । ४ ।
मीरां कै है प्रभु(भू) (गि)गीरधर नागर हर चरणां मै लपटानी(णी) । ५ ।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ ।

सं० पाठ-- १. महिमा २. म्हे, हम ३. जांणी ४. जिन, जिण ५. रिखी ।

पाठान्तर--

सोइ चरन(ण) बिरहमंड[1] भेजे नख सुरसरी झरन ।
सोइ चरन रज परसत वही तारि गौतम घरन ।
सो चरन बलिबंधि पवयो बिद्र रूप स धरन ।
दास मीरां लाल गिरधर अधम तारन तरन ।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ ।

सं० पाठ— १. ब्रह्माण्ड ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

११. छाड़ द्यौ गिरधारी वो मारग मांरौ[1] । टेर ।
हमारै[2] संग की दूरी गई छै । मो सिर गागरि भारी वो । १ ।
मोर मुकट पीतांबर सौहै कुँडल[3] की छिवि[4] न्यारी वो । २ ।
मीरां के प्रभु गिरधर नाग(र) चरण कंवल(ळ) वलिहारी । ३ ।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २८८४

सं० पाठ– १. म्हांरो २. म्हारे ३. कुंडळ ४. छवि ।

पाठान्तर–

छोड़ दौ गीरधारी हो मारग मारो । टेर ।
संग की च(स)हेली मारै दुर गहि है मं च(स)र गार[1] भारी । १ ।
मैं दध वे(च)सन जात विंद्रावन । विस(च)मलयो(गि)गीरधारी । २ ।
मौर मुगट सर च(छ)त्र विराजै । कुड(ळ) की सब न्यारी । ३ ।
तुम तौ नंदजी कै छैल स (छ) बीलै । मै व्रक भांन दुलारी । ४ ।
मीरां कै प्रभू (गि) गोरधर नागर । तुम जीते हम हारी । ५ ।

रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ ।

सं० पाठ– १. गागर २. छब, छवि ।

राग सोरठी

१२. जासां[1] जासां जि सावरिया थांरे वारने[2] हो ।
जवतैं परघट[3] भंये भात्र व्रज मै ।
अे जव से दुख गये सब व्रज के ।।
ये जसोधा(दा) भरम भुलानी ये जि भुले पालन(ण) हो ।।
जासां जासां जि सावरिया थांरे वारने हो ।।
मात पिता कि वंद छुटई वावा नंदराय कि धन[4] चराई ।।
कु(कू)द पड़े कालि दह में विसिये र कारने हो ।।
जासां जासां जि सावरिया थांरे वारने हो ।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आवा सुंरुंबध सुरु मारे केसई कंस पकड़ पछाड़े ।
जुमला-अरजन और पुतना तारने हो इंद्र कोउ चढो ।
या व्रज प कोइय न भु(भू)प छुटावन हारो ।
महर करो कान्हा ननक पर (गि) गीरवर धारन (णां) हो ।
जासां जासां जि सांवरीया थांरे वारने हो ॥
जबसे प्रीत तुम्हारी लगी जबसे लोक लाज सब कुल[5] की त्यारी हो ।
महर करो मीरा(रां) पर उभी बारने(ण) हो ॥

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० २५३४४ ।]

१३. जौगीया जी आज्यौ म्हांरे देस ॥
म्हे तो पल पल जोऊं थांरी वाट । जौगीयाजी आज्यौ मारे देस । टेक ।
आंवण आंवण कह गया वारा कर गया कौल अनेक ।
गणतां[1] गणतां गस गई रे वारी आंगलियां री रेख । १ ।
रादे(धे) जी पूजे अंबकौ रे वारो । भर मोतीड़ा रो थाल ।
वीनरावीन[2] पाई सासरो रे वारी । वर पायौ गौपाल । २ ।
ज्यौं मु[3] थांने ऐसा जांनती[4] वारो । आंगण वावु[5] खजुर ।
ऊची चढ कर जौवती रे वारी । नेड़ा व (सो) छौ हो कै दूर । ३ ।
पुरव जनम की परीतड़ी[6] हो रामां । मत दीजो च(छ)ट(का)ये ।
मीरां कहे प्रभु(भू) गिरधर नागर । (मि)मीलीया नंद के(कि)सोर । ४ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५८६ ।]

१४. जोसोड़ा रे जोसत[1] जोडी (ई) ले । कबरे मीले माने[2] राम । टेर ।
पाना जु[3] पीली(ळो) पड़ी रे । जेसे पीलो(ळो) पान । १ ।

---

१२. सं० पाठ– १. जास्यां २. बारणे ३. प्रगट ४. धेनु ५. कुळ ।

१३. सं० पाठ– १. गिणतां २. वृंदावन, विनराविन ३. मूं, मैं ४. जांणती ५. बावूं, बुहावूं ६. प्रीतड़ी ।

१४. सं० पाठ– १. ज्योतिष २. म्हांने ३. ज्यूं

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आप अखे(के)ला हो रया सजनी। मेरा ल(त)लफत प्रान(ण)। २।
मीरा(रां) के प्रभु कबरे (मि)मोलोगे। श्रीपति सरी(श्री) भगवान। ३। ❀

[अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के हृ० लि० ग्रं० स० १७०।]

राग सोरठ–

१५. जोगीये मेरी न जांणी पीर।
अब तो जाय बदेस बैठा। काऊ की सुध न सरीर। टेक।
याद न आवै ब्रज के मांही खेलत जमुना तीर।
ग्वालन[1] को दध खोस खाते। खोसि पीवत खीर। १।
वन वन डोलत चाव पांवते। पीवत जमुनां नीर।
ब्रज वनितां संगि करै बिलास। मन मैं होत अधीर। २।

❀ पाठान्तर–

जौसीड़ा रे जोतक जोय रें कवै मिलै श्री भगवांन। टेर।
थारो तो जोतक कूड़ा (ड़ो) नही रे कब घर आवै स्याम। १।
पिव कारण मै पीली(ळी) भई रे जैसे पीलो(ळो) पांन। २।
आप तो परसण होय रहे हो मेरो व्याकुल(ळ) प्रांन। ३।
मीरां के प्रभु (भू) गिरधर नागर श्रीपत श्री भगवान। ४।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० १४५।]

जोसीड़ा तू जोतिग जोय र सुण कद मिलसी भगवान। टेर।
(शेष पूर्ववत्) [पिलानी से प्राप्त हरजसों से]

राग काफी

जोसीड़ा तू जोतग जोये र सुण कब मि(ल)सी भगवान। टेर।
(शेष पूर्व) [राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० ७६६५।]

---

१५. सं० पाठ– १. ग्वालण।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सो दिन लाला भुलि गये हो। भूप भये बड़ भीर।
मारां के प्रभु(भू) गो(गि)रधर। तुम आखर जात अहीर। ३। ❀

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९०।]

१६. नीतरा आवें ओल(ळ)मा ॥ कांई भरम धरे संसार ॥ १४ ॥
कांई थारे लागे छे ॥
रांणेजी सांड्या भेजोया ॥ मीरां ने पाछी फेर ॥
कुल(ळ) की तारण असतरी ॥ झपट चली राठोड़ ॥ १५ ॥
कांई थारे लागे छे ॥
त्यारयो पीयर सासरो रे ॥ त्यारयो माय मोसाल ॥
मीरां सरणे रांम के ॥ झक मारो संसार ॥ १६ ॥
प्यारो माने लागे छे गोपाल ॥
नैनन बांन[1] परी हेली मारै[2] नैनन बान परी। टेर।
जीतू[3] देखु जीत मेरी जो आलो जीवन प्राण जारी। १।
माधो री मूरत मारै उर बीचैं अटकी हिरदा मैं आंन अरी। २।
कब की ठाडी पंथ निहारूं अपनै ही भवन खरी। ३।
मीरा(रां) गिरधर हाथ (वि)बीकानी लोक कहै वीगरी ड़ो)। ४।

[संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से।]

❀ पाठान्तर–
जोगोया तें मेरी पीरं न जाणी।
मैं तो आसिक बंदी तेंडी। नेक दया नहीं आंण। टेक।
तुम भी स्वारथ को सगो परमनाथ नहीं पहचांणी।
तेरै मेरै भयो विछोहा। कोई दांणां पांणी। १।
तुम विन मोहि कल न परत हैं। मीन विनां पांणी।
तुम विना हम कसे जीवैं। तरफ तरैं न विहाणी। २।
[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९०।]

---

१६. सं० पाठ– १. बांण २. म्हांरे ३. जित।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१७. नांम से अटकी । सौ मीरां हर[1] नांम से अटकी । टेर।
कोइ क(हे) मीरां भई बावरी । कोई कहे भटकी । १ ।
भर मटकी मकी[2]। या सरक ऊपर सौ मटकी पटकी । २ ।
मीरां कहे प्रभू गी(गि)रधर नागर । हर चरण[3] लपटी । ३ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७ । पत्रांक–१५८।]

१८. बुदन[1] भीजै मोरी साड़ी म कैसै आंउ[2] । टेर।
ऐक[2] गरजै दुजी पवन जकोलै[3] तीजो ललना दे गारी : १ ।
ऐक जोवन दू)दुजी मही की मटकी तीजो जमना जल[4](ळ) भारी । २ ।
मीरां कै प्रभु(भू) गी(गि)रधर नागर अवगत की गत न्यारी । ३ ।

[रा० शो० संस्थान चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ ।]

१९. ब्रहेंन[1] उभी पंथ सर । सांई अजहूं न आया हो । टेर।
सांवन(ण) भादव यो लसे । बृखा[2] रत[3] आई हो ।
उर घटा घनघोर हयौ । नेनां(णां) झर लाउं(इ) हो । १ ।
माई बाप तुम कूं दई । तुम ही भल जाने(नों) हो ।
तुम तजि आंन अतार कूं । हृदै नहीं आंनौ हो । २ ।
तुम हो संमर्थ पूरण । पूरा सुख दीजै हो।
मीरां हरि की ब्रहनी । अपनी करि लीजै हो । ३ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ८२९१ से ।]

२०. भगति दुहेली हो श्री जी राई ।
भगति दुहेली हां जी । मारी[1] रांम नाम ल्यौ[2] लागी राइ । टेर।
मीरां जनमी मेड़त । पावन किया राटोड़।

---

१७. सं० पाठ– १. हरि २. मटकी ३. चरणां ।
१८. सं० पाठ– १. बूंदन २. एक ३. झकोळै ४. जळ ।
१९. सं० पाठ– १. बिरहन, बिरहिण २. बिरखा ३. रुत ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आगला भव को भगति है । तुम मति जाणो ओर । १ ।
सीसोद्या को नसणौं । ही दुपति की धाम ।
सेवा सालिगरांम की । और नहीं कोई कांम । २ ।
ऐसी भगति कठण है । जैसी खाडा-धार[1] ।
जै साधू सुमरण करै । तो क्या जांण संसार । ३ ।
बैकुंठां को बैसनूं और छत्र की छाहां ।
गादी तकीया रेसमि । रांम विनां (बे)कांम । ४ ।
बीस रो प्यालौ मेलीयौ । दीज्यो मीरां हाथि ।
करि चरणांमत पो गई । थे जांणो रुवनाथ । ५ ।
बीसरो प्यालौ पीय कं । सूती खूंटी तांणि ।
स्याम सूलून[4] सांवरै । झटके जगाई मोहि आंणि । ६ ।
गरड[5] चढ्या र हरि आईया । पूरी मन की आस ।
रेम झेम[6] बाज घूघरा । मिंदरीया भयौ उजास । ७ ।
मीरां विरह मैं बावरी । माथै भगति कौ मोड़ ।
रंग राति मानी फीरै धनि मीरां राठोड़ । ८ । ※

[रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ˙० सं० ८ से ।]

※ पाठान्तर– राग राजवबोधी–

भगति दुहेली छै राणांजी ।। म्हांरी भगति दुहेली छै ।।
थे तौ समझि भजोजी भगवान ।। टेक ।।
भगति दुहेली राम की ।। जिसी पांडा की धार ।।
सिर साटे धारण करी । म्हांरौ कांई करै लौ संसार ।। १ ।।
दसोता को बेसणौं ।। हींदूपति को धांम ।।
सोडि पथरणां रे सभी ।। म्हार रामजी विनां वेकाम ।। २ ।।
सुष पालां कौ बैठवो ।। और छत्र की छांइ ।।
भगति विनां भगवांन की ।। म्हारै ऐ नही आवै दाइ ।। ३ ।।
साधू म्हारै कुटुंब कबीलो ।। ररकां र भरतार ।।
मीरां दासी रावली(ळी) ।। म्हारै नहीं छै लोकाचार ।। ४ ।।

[भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से ।]

---

२०. सं० पाठ– १. म्हारी २. लौ ३. खाण्डाधार ४. सलूणों ५. गरुड़ ६. रिमझिम ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२१. राग सोरठी–

मनमोहन सु[1] रुप लुभानी हो ।
मैंन[2]ढुरि गयो स्याम सुद्र(र) दिसि ज्यु सीलैता संघ समानी । १ ।
कोई भला कहो कोई बुरा कहो मैं सिरलीनी मांनी । २ ।
मीरां प्रभु(भू) गिरधर मीलिबे की जुगि जुगि चली कहानी । ३ ।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० २८८४ ।]

२२. माई मांनै[1] रांम मिलण कब होय । टेर ।
हर मांरै आंगण हुय गया सजनी । हूं रही अभागण सोय । १ ।
चुड़लौ नहि पैहैरू[2] सजनी चूक न राखौं । गैहैणौं मैं रालूली खोय । २ ।
पाटी न पाड़ूं सजनी मांग न सवांरूं । कजलौ(ळो) म डांरूंगी धोय । ३ ।
मीरां कै प्रभू हर अवनासी । संग चलूंगी रथ जोय । ४ । ॐ

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३ ।]

२३. जा दिन तैं तुम बिछुरे हो मेरै भई हांणी ।
तेरै कारन बन बन डोलूं । होये के प्रेम दे(द)वांनी(णी) । ३ ।
खांन पांन की सुधि न कोई काया कुमलांणी ।
अब कछु नही रह्यौ बाकी । पंड तजत प्रांणी । ४ ।
पितत पांवन विरद तेरौ । वेद पुरांण बखाणी ।
मीरां कौ अब दरसन(ण)दीजे । गी(गि)रधर सुख खांणी । ५ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६०]

ॐ पाठान्तर–

माई म्हांनै रांम मिलण कब होइ । टेक ।
हरि म्हांरै आंगणे हो गया सजनी । हूं रे अभागिण रही सोइ । १ ।
चुड़लो न पहरूं रांमजी चूंप न दिवाड़ु । गहणो मै रालू(ळू)ली खोई । २ ।
पटोया न पाड़ुं रांमजो मांग न सवांरूं । कजलो मैं रालू(ळू)गी धोई । ३ ।
मीरां के प्रभु हरि अवनासी संगि चलूंगी रथ जोई । ४ ।

[भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से ।]

---

२१. सं० पाठ– १. सूं २. मैंण, नैंण ।

२२. सं० पाठ– १. म्हांने २. पेहरूं ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२४. पद —

थांरी साध संगत परी छांडो रा। गणगोर जौ पुजौ रा। टेक।
और पुजै देवी देवता। थे पुजो गणगौर (रा)।
मन चिंत्या फल पावस्यौ। थे मति जाणो ओर रा। १।
नहीं पूजां देवी देवता। नही पूजां गणगौर (रा)।
मारा[1] प्रम[2] सनेही गोवींदो। थे मति जांणौ ओर रा। २।
सेवा सालगरांम[3] की। साध संगत रो काम (रा)।
थे सो[4] बेटी राठोड़ की। थे(थां)ने राज दीनौं भगवान(रा)।
राज करे ज्यांने करणे द्यौ। म्हं(मैं) संतन की दास (रा)।
चरण रेसा साध क। म्हांनै रांम मिलण की आस(रा)। ४।
लाजै पीयर सासरो। लाजै माय मोसाल (ळ) (रा)।
चौथौ लाजे मेड़तौ। थे(थां)नं कांई कहीसी[5] संसा(र) रा। ५।
नां हम कौई चौरी करां। नां हम कौई करां अकाज।
पुन रे मारग चालतां। म्हांने कौई[6] कहीसी संसार (रा)। ६।
क्यौं लाजै पीहर सासरो। क्यु(यूं)लाजे माय मुसाल(क)(रा)।
मीरां चरणौ[7] रांम के। म्हांने गुर(रु) मीलाया रेदास रा। ७। ※

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५८६।]

※ पाठान्तर–

गोरल–

भाभीजी गोरज पूजो राज॥ संतां रो संग निवारो राज॥ टेक॥
सईयां पूजै गवरजा॥ थे पण पूजौ गौर॥
मन वांछत फल पावस्यो॥ भाभी जो तूटै गिणगोर राज!। १॥
नंही पूजूं गिणगोर नैं॥ नहीं पूजूं आन देव॥
बाल सनेही गोविंदो॥ जांको थे नहीं जांणौ कहूं भेव राय॥ २॥
म्हे तो गिणगोर न पूजां राज॥ मोहन मित्र वीया रो छे॥
सेवा सालिगरांम की॥ साध संत रो कांम॥
थे बेटी राठोड़ की॥ थांनै राज दीयौ छे भगवान राय॥ ३॥
राज करै ज्यांनै करण दै॥ मैं संतन की दास॥
सेवा करसूं साध री॥ म्हानै रांम मिलण की आस राय॥ ४॥
लाजै पीहर सासरो॥ लाजै माय मोसाल॥
नितरा आवै ओल(ळ)मा॥ थांनै बुरा कहै संसार राय॥ ५॥

---

२४. सं० पाठ– १. म्हारो २. परम, प्रेम ३. साळगरांम ४. छो ५. कहसी ६. कांई ७. सरणैं।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चोरी करां न कुमारगी ।। नहीं कुमावां पाप ।।
कुल कौ तांतौ लागीयौ ।। म्हांसूं कांई हठ लागा छो आप राय ।। ६ ।।
कद ठाकुर परचौ दीयौ ।। कद मांनी परतीत ।।
कुल की कांण ज छोड़ दी ।। या नहीं छै राजा री रीत राय ।। ७ ।।
पीहर जांऊं न सासरै ।। नही जाऊं पीया रै पास ।।
मीरां सरणैं रांम कै ।। म्हांने गुरु मलीया छै हरिदास ।। ८ ।

[रा० प्र० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से ।]

थाने (थांने) रांणाजी पुचे (छे) वात ।। कांई थांरे लागे छे गोपाल ।। टेर ।।
कांइी थांरे लागे छे गोपाल ।।
जेमल के घर जनम लीयो हे ।। मीरां थांरो (म्हारो) नांव ।।
रमतो ने लादो कांकरो ।। सेवीया सालगराम ।। १ ।।
मीरां बेठी मेल मे ।। हांतां (थां) तो मरदंग ताल ।।
पावां बांधा गुगरा ।। कांई नाचे (नात्रां) दे दे वो ताल ।। २ ।।
वस रा प्याला राणैंजी मेल्या ।। दो मीरा के हात ।।
चरणांमत कर पी गया (गई) ।। रांषण वालो रांम ।। ३ ।।
सांप-टपारो रांणेजी मेल्या ।। दो मीरां के हात ।।
हंस हंस मीरा कंठ लगायो ।। यो तो मारे नवसर हार ।। ४ ।।
रांणेजी सनेसो भेजीयो रे ।। मीरां री खबर मंगाय ।
मुई मीरां ने घीस (सा) वज्यो ।। काला (ळा) वेल जुताय ।। ५ ।।
मीरां उतरे मेल सुँ रे ।। उगव स[ग?]लो भार ।।
यो ले (यो ल्यो) रांणां थांरा मेलड़ा ।। नीत री करे छे राड़ ।। ६ ।।
प्यारो माने लागे छे गोपाल ।। हे जी मारो जनम सुदारण सांवरीयो ।।
मांने त्यार (रे) गो गोपाल ।।
मे (थे, म्हे) मोटा कुल मां जनमीया ।। ऊंची थारी जात ।।
रांणां जी सरोषो वर पाया ।। थांरे तीन कुंट को राज ।।
कांई थारे लागे छे गोपाल ।। ७ ।।
जेसा पांणी उसका ।। जेसो यो संसार ।।
आवे झकोलो पवन को जात न लागे बार ।। ८ ।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्यारो मांने लागे छे ॥
"उना भोजन जीमलो ॥ पेरो दीषणी चीर ॥
सीसोद्या घर आवीया ॥ सगला मेला मे थांरो सीर ॥ ९ ॥
कांई थारे लागे छे ॥
उनाँ भोजन तज दीया मे ॥ तजीया दषणी चीर ॥
राणां सरीषा वर तज्या ॥ सगला (सारां(धां))मे मारो सीर ॥ १० ॥
प्यारो मांने लागे छे ॥
ठंडा टुकड़ा थे पीवो कांई ॥ पीवो षाटी छाछ ॥
भु सुवो भुषा मरो ॥ कठे मीले गोपाल ॥ ११ ॥
कांई थारे लागे छे ॥
मीठा लागे टुकड़ा कांई ॥ अम्रत लागे छाछ ॥
भु सुवां भुषां मरां ॥ माने काले मीले कीरतार ॥ १२ ॥
प्यारो मांने लागे छे ॥
मीरां उतरया [मिहल] सुं जी ॥ लीवी दुवारका री बाट ॥
समजायो समजे नही ॥ ले जाती वेकुंट ॥ १३ ॥
प्यारो मांने लागे छे ॥
लाजे पीयर सासरो ॥ लाजे माय मोसाल ॥

२६. मा(म्हा)रा मोर मुगट बंसीवाला[1] ने की(कि)ण राख्या वी(वि)लमाय ।
ऐ जी कीण राख्या छे छोपाय । टेर ।
तु(तूं) वडभागण राद(ध)का । कोण कीया छल-छंद ।
कर राख्या क्रस्न कु । भुज को वाजु(जू) बंद । १ ।
तु(तूं) वडभागण राद(ध)का । कोण तपस्या कीन ।
तीन लोक को नाथ है । सो तेरे आदी(धी)न । २ ।
मुरली(ळी)वाला मोवना । मुरली(ळी) नेक वजाय ।
ऐ मुरळी मेरे मन हर लीया । जर अंगना न सुहाय । ३ ।
अलक चांप चवर करे । अद(ध)र उसीसा लेत ।
कोण पुन की मुरलीया । अद(ध) को रस लेत । ४ ।
ददसुत के नीचे वसे । मोती सुत के बीच ।
सो मांगत व्रजनायका । साम[2] करो बगसीस । ५ ।

२६. सं० पाठ - १. बंसीवाळा २. स्यांम.

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लाला लेलो दो लख देऊँ । होरा लो दस बीस।
साम[२] हमारे ऐ कहे । कसे करु बगसीस। ६।
प्यारी भीजे प्रेम में । कर प्रीतम से प्यार।
सपने मोलीया सावरो । सखी ग्रांख खुली दुख भाग। ७।
वीहवोन (विरहणी) के व्रक्ष को । मरम न जांणे कोय।
डाला पात फल फु(फू)ल मे। रादे(धे)रादे(धे) हाय (८)
अरे कठीण अहीर के। नेक पीर पीछाण।
तो मुख दरसण कारणे । छड–दइ[३] कुल(ळ)–कांण। ९।
वीनराबिन[४] री कुंज गली(ळ) मे । बोलत दादु[र] मोर।
मीरा(रां) ने गी(गि)रधर मीलया[५] । नागर नंद-कीसोर। १०।

[अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७०]

२७. मीरांबाई रो पांवणीयो रुड़ो। टेक।
पावणीयो घर आवयो मीरा सज सोळे सीणगार।
सोळे सीणगारां री ओपमा मीरांबाई रो चुरलीयो लायो। १।
घर राकु[१] जीमण खीचरी मीरा(रां) पावणीया ने खीर।
सुचसु[२] जीमांऊ मारे रांमजी नु[३] जीण दीठा………… । २।
पावणीयो घर चालीया आ। मीरा(रां) चली रे भोलाऊ साथ।
मीरां को प्रभु गी(गि) रधर थे तोरो नही नेण हजुर। ३।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६६५ से]

२८. मेवाड़ौ रुठै तौ मारो[१] कांई कर देसी। गोमंद का गुण गास्यां। टेक।
गोमत[२] मात पिता गुर(रु) गोमंद-णो (गो) मद गाया री जास्यां ऐ। १।
रांणौजी रुठौ(ठै) तौ मांरो काई बिगड़ैलो। हर[३] रुठां मर जास्यां ऐ। २।
कुल[४] की लाज तीणां जूं तोड़ो । भगत-नीसांण बजास्यां ऐ। ३।
मीरां कहै प्रभू गी(गि)रधर नागर। हर रट हर मिल जास्यां ऐ। ४।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८५१ से]

---

२. स्यांम ३. छोड़ दी ४. विनरावन, वृंदावन ५. मिळया।
२७. सं० पाठ– १. रांढू २. रूचसूं ३. नूं।
शब्दार्थ– सीणगारा—शृंगार। ओपमा—उपमा। पांवणीया—अतिथि।
२८. स० पाठ– १. म्हांरो २. गोविंद ३. हरि ४. कुळ।
शब्दार्थ– तीणां जूं—तृण के समान।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राग सोरठ ।

२९. मैं तो लीयो है रामड़ीयौ[1] मोल ।
कोई कै[2] सूंगो कोई कै मुंगो मै तो लीयो तराजे[3] सुं तोल । टेक ।
श्रा भीरज[4] को सब लोक देखत है मं लीयो है भजंता[5] ढोल । १ ।
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर पल चारो बोल । २ । ❀

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६३९ से]

३०. मैं व्रेहन[1] बैठी जागु जगत सब सोवै री मा ऐ । टेर ।
ऐक जो व्रैहन अेसी देखी : असवन माला(ळा) पोवै । १ ।
तारा गिन(ण) गिन(ण) वीस वीविती : नैन[2] भरे भर जोवै । ३ ।
मीरां कैहै प्रभु वैग दरस दो तम मीलीया[3] सुख होवै । २ । ★

[अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७२ से]

❀ पाठान्तर– १.
माई मैं तो लीयो री गोविंदो मोल । टे० ।
कोई कहै सोंगो कोई कहे मूंगो । लीयो री तराजू तोल । १ ।
कोई कहैं छांनै कोई कहै छुपकै । लीयो री बजंता ढोल । २ ।
याकूं सब लोक जाणत है । लीयो अमोला मोल । ३ ।
मोरां के प्रभू हरि अविनासी । पूरब जनम को कोल । ४ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ० सं० ७३ से]

पाठांन्तर– २.
लियौ छै रामइयौ मोल । माई मैं तो लियौ छै रांमइयो मोल । टेक ।
नां कोई हलकौ नां कोई भारी । लीयो छै तराजू तोल । १ ।
नां कोई सूंघौ ना कोई मूंघौ । लीयौ सिर साट्टै मोल । २ ।
नां कोई छांनै नां कोई चोरी । लीयौ छै बजंतै ढोल । ३ ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर । पूरब जनम को कोल । ४ ।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३ से]

★ पाठान्तर–
मै व्रैहैन बैठी जागु जगत सव सोवै री माई । टेर ।
एक व्रिहैनी अैसी देखी आंसूवन माला पोवै री माई । १ ।
यु है तन मन मेरा पुरजा व्याकुल बदन जो रोवै री माई । २ ।
मीरां कै प्रभू हर अभनासी बहूर मरण नहीं होवै री माइ । ३ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से]

---

२९. सं० पांठ– १. रामइयो २. कहै ३. तराजू ४. ब्रिज, व्रज ५. बाजंता ।
३०. सं० पाठ– १. बिरहण, विरहिन २. नैण ३. मिळियां ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राग सांमेरी।

३१. मोहि रे मोहि रे मोहि रे सांवरे वाल-कानें हुं मोहि।
नंद-नंदन नटनागर मोहा[1] तन-मन सुप्यों[2] तोही रे। टेक।
मोर-मुगट पीतांबर राजे कुंडल[3] झलके[4] सोई रे।
मधुरि-मधुरि धुनि बेनु बजावे और न ऐसा कोई रे। १।
त्रंरूप[5] अनुप लाल गी(गि)रधर को तामे रहो मन मोही रे।
मीरां प्रभु गीरीधर कब मलहि तन-मन में सुध होही रे। २।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२८४ से]

३२. यो तो रंग धतां लग्यो हे माय। टेक।
भांग तभाखू छोंतरा सब कोई पीवै लाय।
रांणाजी भेज्यो विषरो प्यालो लीनो सीस चढाय। १।
चरणांम्रत कर पी गई मैं चढियौ मोदक माइ।
हरि-रस प्यालो जे पीवै री दुजो कछु न सुहाइ। २।
गुर(रु)-परताप साध-संग मिल कर मिलिया गिरधर आय।
महा हलाहल जहर की री व्यापो न तन मै लाय। ३।
लोक-लाज कुल[1] की सब त्यागी हरि भगतन कै माय।
जन मीरां मतवाली[2] कीनी लै पुन पाय। ४। ❀
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३७६४४-पत्रांक-३४]

❀ पाठान्तर–१
यो रंग धतां चढ्यौ छै ये माय
पिया पियाला निज नांव का। ओर न रंग सुहाय। टेर।
भांग तमांखू छौंतरा। सब कोई पीयै लाल।
प्रेम पियाला जे पियै। तिनका और हि ख्याल। १।

---

३१ सं० पाठ– १. मेरा, मोही २. सौप्यां, सूंप्या ३. कुंडळ ४. झळके ५. त्रिरूप ।
३२ सं० पाठ– १. कुळ २. मतवाळी ।
शब्दार्थ– पुन=पुण्य ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राग मारु ।

३३. रूप लोवानी[1] हो पोया तेरै रूप लोवानी हो।
निस नहीं आवै नींद री । दीन फीरहै[2] दिवांनी ।।
प्यास लगी तेर नांम की वीरहै[3] वोहरानी।
सुक-सुया-दी[4] तन पंच निहार तौ जीकै अंक न जानी हो।
यो ओसर यों ही गयो सुनि सखी ये सयानी हो।
आव हम पी सेज री मुज ओर न भाव (वै) हो।
प्रभु गिरधर बिनां तन ताप न. जाव (वै). हो ।। १ ।।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से]

राग किलाण ।

· रांम नामै मेरै धां[1] माने वासी ।
रासीयो[2] राम रिजाऊं हे माय ।
व्रहैंया जार की भलै साखी री । उठै जै जावै हुलसाहुं हे मायं ।
मानेकुं[4] मार सांबैद[5] सातेगुरै[6] का । दुरंमतै[7] दुरहांयहु ये माय ।
झांको नावै सूं रात का रंझोरी । कासण पै मैं चड हु हे मायै ।
गांनै को ढोलै वाणो आंभारि । मागा नैवाई घुणै गाहु ये माय ।
तानै कारतार मानै कार मारै द्द गें । सुंती सुरते जगाहुं हे मायैं ।
थे सो जी प्रभु घाणैनामी[8] । वीड़दै[9] कोसो हे गाहु ये मायै ।

गुर-परसाद साध की संगत । मिलिया हरजन पाया ।
जन मीरां भई मतवाली । कोई पुरबलै भाया । २ ।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से]

पाठान्तर-२-

यौ रंग धतां चढ्यौ हे माय ।
पीया पीयाला निज नांव का । और न रंग सुहाय । टेक ।
भांग तबाखूं छांतरा । सब कोई पीयै लाल ।
............................। मिलीया हरजन आय ।
जन मीरां भई मतवाली । कोई पुरबले भाग । २ ।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं०सं० १०८४७]

---

३३ सं० पाठ- १. लुभानी २. दिन फिरै ३. विरह ४. सुख-शय्या ही ।
३४ सं० पाठ- १. हृदां २. रसियो ३. विरह ४. मन कूं ५. सबद ६. सतगुरु
७. दुर्मति ८. घणनामी ९. वीड़द ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोहुं रै वालै आ क्रीपा कीजो। रांजै[10] चंरैण की पाहुं ये मायँ।
मं मंदवांगण[11] क्रम आबागंण[12]। कीरते[13] कीसै गुण गाहु ये मा।
मीरां कै प्रभु ग्रधे-नागैरे[14] वाने वाबाल[15] ला पैराहुं ये माय।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के हु० लि० ग्रं सं० ८३६८ से]

३५. ले चालो नी सांवरा रै देस उधो माह्ने[1]। टेक।
मोरमुकट सिर छत्र वोराजे गुघरवारे[2] केस। १।
सिव सनकादिक ओर ब्रह्मादिक पार न पायो सेस। २।
हार सिणगार सबै तज देउंगी करुंगी मै भगवा भेस। ३।
मीरां के प्रभु गीरधर नागर राधेजी वालक-वेस[3]। ४। ❀

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० १६६७से]

३६. वरत ऐकादसी करीय नणदल नावा[1] कुं चलोय (ये)। टेक।
भोग[2]-दांन व्रामणकु दीजै गउ-सेवा करीय (ये)। १।
गंगा जमुना और सुरसत्ती तरवेणी त्तरीये। २।
राधा रुखमण और सतभामां कुवज्या संग रहीऐ। ३।
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर हरि-चरणां सीत्त[3] रहीऐ[4]। ४।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से।]

❀ पाठान्तर–

राग सोरठ।

मानुहि(ही) ले चालो उधा सांवरारै देस। टेर।
गोकल चा(छा)डि मथुरा सो(छो)डी। चा(छा)डयो छै व्रज को देस। १।
उभी राधा अरज करै छै। गलै विच खुल रह्या केस। २।
तेरै तो खातर जोगण होउंगी। कसुंली मै भगवा-वेस। ३।
मीरां कैहै प्रभु गीरधर नागर हरजी सु अधक सनेच(स)। ४।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० ६२६६]

---

१०. रज ११. मंदभागण १२. अभागण १३. कीर्ति १४. गिरधर नागर १५. कांबल।
३५ सं० पाठ– १. म्हांनै २. अरु घुंघराले ३. भेस।
३६ सं० पाठ– १ म्हां'वा २. भोम, भूमि ३. चित, श्रित ४. रखीएं।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३७. बावरी[१] भई हरी कै संग न गई । टेर ।
एक दीन हर मोरै घरै आया मै दध मथत रही ।
मै अपराधण मांन ज कीनो चलतो भेट ज लही । बाव० । १ ।
इथ गोकल उथ मुथरा नगरी बीच मै वैरण भई । हम ।
इथ उत मं मथ हो सखी री मोवन सैन दई । बाव० । २ ।
आप तो जाय दुवारका मै छाए हमनै कछुव न कइ[२] ।
मीरां कै प्रभु गीरधर [नागर] गोपी व्याकल[३] थई
बावरी भई हरी के संग न गई । ३ ।
[रा० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १०४५७ से |

३८. विरज[१] कौ वसवो[२] री सा(छा)डो रै, राज करै तेरो कांन । टेर ।
वरज जसोदा अपनैं लाल कु(कूं)जव देखु जव आडो । १ ।
अत गोकल अत मथुरा विछै[३] नंदको[नंदन] ठाडो । २ ।
मीरां कहै प्रभू गीरधर नागर माहि मांगै मो पे गाडो । ३ ।
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ |

३९. वीनैराविन[१] मै को डैरा चाहै ।
रुखैमाणै पारैणं घांरे लासी ।। ❀
यो(ओ)लुडी लागायै किया सूंनै आवेन्यासी[२] ।
वीनांराविनै मे मागांलै[३] गारवै । १ ।
साईयां रुड़ै नायैकै आसो ।
पीतड़ीनां दै घाव में घूंमै पाडै ।।
ताहै मुंगरैवालो[४] वांसी वाजासो[५] ।
पीतैड़ि[६] लगायै है किसानांवा[७] । २ ।
मीरां कै प्रभु घ्यारैधारै-नांगांरै[८] ।
चशणै-कांवालै[९] की दासी ।।
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३६८ से |

---

३७ सं पाठ- १. बावरी २. कही ३. ब्याकुळ ।
३८ सं० पाठ- १, ब्रज २. वसबो ३. बिचं, बीच ।
३९ सं० पाठ-१. बिनराविन, वृंदावन २. अबिनासी ३. मंगळ ४. मुगटवाळो । ५.बजासी ६.प्रीतड़ी ७.किसनवा ८.गिरधर नागर ९.चरण कंवळ (कमळ)
❀ रुखमण [illegible]परण घर लासी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद-

४०. वीरो[१] मारो[२] भलांई आयो र।
हें जी मारा तन को दरद गमायो ॥ टेक ॥
सुर नर मुनि ज्याको ध्यान धरत ह सेस पार नही पायो ॥
सो दरसन(ण) सिव ब्रंह्मा दुरलभ सो मोय छनम[३] बतायो ॥ १ ॥
मात पिता अर कुटम कबीलो सबकी लज्या राषी ॥
मेरी मेरे पीता कि त्रीभवन पत[४] चल आयो ॥ २ ॥
नणदल जठानी बोल बोलै छी तीन को गरभ नवायो ॥
मोसाली सब नीचा किना हरद-सूख सब छायो ॥ ३ ॥
ज्सवंविध[५] साज ल्यायो माहेरो चुंदड़ घाट उठायो ॥
कवरी कलस[६] धरयौ सिर उपर वीर कलस वधायो ॥ ४ ॥
कवरी कलस दीयो नणदल न वीरो मीलवा आयो ॥
ज-जकार[७] होत सुरपुर म सषीयन मंगल गायो ॥
मीरा(रां) कहै कवरीयन वोर अैसो वीरो गायो ॥ ६ ॥
[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०५७, पत्रांक ४ से]

राग रेगटो।

४१. वांवरी[१] घर जाण दै मोय सांवराजी सै कांम है। टे०।
मोर मुगट सर धरै उं[२] सं(च)दन की खौं(खोर) हौ।
वांयां तो वाजुवंद जु करया उवाकै गल मोतीयन की माल[३] है। १।
वीद्रावन[४] मै रास रच्यो है सैस गोपी ऐक कांन है।
अौर कै आनंद है रादे को कोन हवाल है। २।
दासी मीरां लाल गी(गि)रधर अौर को नहीं कांम है।
सांवरी सुरत देख कै मैरौ तो मन अरांम है। ३।
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से]

---

४ सं० पाठ— १. वीरो २. म्हांरो ३. छिण में (क्षण में) ४. पथ ५. जिस विध
६. कळस ७. जै जै कार, जय जय कार।

४१ सं० पाठ—१. बावरी २. उर ३. माळ ४. वृंदावन, विनराव्रन।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४२. सजन घर वेला हो आज्यौ । टे० ।
बहुत दिनां की जोऊ छौ[1] वाटड़ी ।
घणां घणा सुख ल्याज्या(ज्यौ) । १ ।
औ विरियां कव होइगी कोई(कहे) संदेसा । २ ।
मीरां कै उस नाह का मन खरा अंदेसा । ३ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० २८३८० से]

३. सतगुरु वेगा आजोजी म्हारा जनम सुधारण राम ।
अवै मोहि मति छिटका जो जी[1] । टेर ।
जा दिन सै तुम बिछड्या रे दिन दिन दुक्ख अपार ।
रोय रोय नै मारी[2] अंखियां राति सुख नहि पायौ लगार । १ ।
झूठी माया याहां पडी रे उन मैं त(ते)रौ ध्यांन ।
हात जोडनै करु वीनती मोय तुमारो आन । २ ।
आकुल(ळ) व्याकुल(ळ)फिरु वदन की आवौ ब्रंहन[3] के भरतार ।
अबकै किरपा करो मनमोहन दो मोकूं, दीदार । ३ ।
आज मिलौ कै काल मिलौ रे तलफ तलफ तलसाय[4] ।
हिरदे हरि दरसण की लग रही गुरु विन भरम न जाय । ४ ।
ब्रह्म प्रसंगी सतगुरु म्हारा दूर करौ भ्रम-नास ।
दासी मीरां अरज करै है वे सतगुरु मै दास । ५ ।

[अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलेस, बीकानेर के हु० लि० ग्रं० सं० ११३ से]

४४. सांवरा सु[1] प्रीत लगाई री माई री सांवरा से प्रीत लगाई । टेव ।
जल डूबत गजराज उबारयो संतन के सुखदाई ।
ऐसा[1] सांम[2] कुं मै कबै नहो विसरु[3] राखु(खू), माहरा[4] हीरदा रे माही री । १-
शिव ब्रह्मा जाकुं रटत निरंतर सेस सहस्त(स्र) मुख गाई ।
च्यार वेद वाकुं नैत-नैत[5] कहै वाकों कोई पार न पाई । २ ।
नित नुव[6] दरसण करु री सांम को देख-देख सुख पाई ।

---

४२ सं० पाठ– १. छूं ।
४३ सं० पाठ–१. ज्यो जी । २. म्हांरी । ३. बिरहन । ४. तन जाय ।
४४ सं० पाठ–१. स० । २. स्यांम । ३. बीसरूं । ४. म्हारा । ५. नेति–नेति । ६. नव,नया ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सांवरी सुरत की लेत बलैयां नी(नि)त नी (नि)त होत भलाई। ३।
जनम मरण को भे" सब मिटीयो हरि-सरण मे आई।
मीरा(रां) के प्रभु गी(गि)रधर नागर हरख-हरख गुण गाई। ४।
[राज०शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से]

४५. सांवरे न जांणी म्हांरी पीर रे लाल। टेर।
रोइ-रोइ अंखीया लाल भई है।
अंसूड़ा सूं भीज्यौ म्हांरो चीर चीर झर रर रर। १।
हम जानै प्रभु की ठोड़ विलूंबे।
कैसे धरे मन धीर धीर धर रर रर। २।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर।
ताकर[1] मार्यो प्यारो तीर तीर रर रर। ३।
[पिलानी से प्राप्त हरजसों से]

४६. राग सोरठ।
सावलीयो[1] जोवा-सरको राधा नैणां भरि-भरि नैणां नरखो[2]। टेक।
सैस सखी मिली मंगल गावै कोटि सखो मन हरख्यो। टेक।
मोर-मुगट पीतांबर सोहै कुंडल की छवि नरखो। टेक।
संख चक्र गदा पदम वीराजै सुधामापुरी वरसो। टेक।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर वर पायो सरवर को। १।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से]

४७. राग मारु
सेझड़ली सरखी री सेझड़ली संवारी।
तेरै ग्रह[1] आवन[2] कह गये प्रभु मोहन नंद-कुमार। टेक।
जाई जुही चंपमाल पाडल फूल गुलाबी।
कुंदनि वरी केतको करना कि कलीयां[3] डारी। १।

---

७. भेद, भय।
४५ सं० पाठ–१. ताक'र, ताक कर।
४६ सं० पाठ–१. सांवलियो। २. निरखो।
४७ सं पाठ–१. गृह, घर। २. आंवण। ३. कळियां।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विविध भांति बौहो गीदवा करवीरी दे हो संवारि।
दासो मीरां लाल गिरधर तौसी नवी नीनारि। २।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं १८८२ से]

४८. राग बिहागरो।

सेझड़ी बनाय स्यांमां तेरे पोढै गिरधर आय। टेक।
केतकि चंपौ केवडौ अवर[1] सुगंधी जाय।
सौडि[2] सुपेदी गीदवौ पचरंग पिलंग बिछाय। १।
बिरहनि ऊभि मग जोवै हो प्यारे प्रीतम मिलीये आय।
जांन करौ तुझ वारनै हो जन मीरां बलि जाय। २।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से]

४९. होरि आई हो पीया मांरै[1] देस।

हो लख[2] भेजु(जूं)संदेसौ होरी आई हो बालम मा[रै] देस। टेक।
लख-लख पतीया पियाजो कूं भेजु(जूं) उधो जी गयो रे संनेस। १।
आवां जी पाका महुं झड लागा नीबुका(वा) पाका मांरै देस। २।
पीउ कै कारण मै जोगन[3] हुंगी करुं मै भगवा-वेस। ३।
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर राधाजी बालक वेस[4]। ४।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से।

---

४८ सं० पाठ–१. और, अर। २. सौंदी।

४९ सं० पाठ–१. म्हांरैं। २. लिख। ३. जोगण, जोगिन(ण)। ४. भेस।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरां के वे पद जिनकी प्रथम दो या तीन पंक्तियां ही पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती हैं शेष पद नहीं।

परिशिष्ट ३

१. अब हरि कहां गऐ नेहरौ[1] लगाय। टेर।
छोड़ चल्यौ विसवासीघाती प्रेम की वात सुणाय। १।
घायल कर निरमायल कीनी खवर न ली मोरि आय। २।
छोड़ चल्यौ है व्रहे[2]-समंद्र मै नेह की नाव लगाय। ३।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर रया[3] छौ अवधपुर छाय। ४।

[अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

२. अरी नंदनंदन सौं मेरौ[1] मन मान्यो कहा करैंगो कोई री। टेक।
हों तो चरन-कमल[2] लपटानी (णी), जो भावै सो होय री। १।
वे घर छाडि आवै घर मेरै पर घर लोग रिसांय री। २।
नंद-नंद सौं मै कबहूं न तोरौ[3] मैं मिलोंगी निसांन(ण), बजाय री। ३।
सासु(सू)लरै(ड़ै)मोरी ननं(ण)द रिसांनी हसत बटउवा[4] लोग री। ४।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर विधनां लिख्यौ संजोग री। ५।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ से]

३. आज सखी मेरै अणंद बधावो घर मे गी(गि)रधर लाधौ हो। टेक।
वन ढुढौ[1] वृंदावन ढुढो ढुंढ लीयो वृज बाधो है।
विच[2] ज(झ)रोखे जां(झां)खन(ण) लागी घर मे गी(गि)रधर ठाढो है। १।
दुद(ध) दई मोरे घरत घणो हे सों-सों[3] (सोर-सोर) दध खायो है।

---

१ सं० पाठ—१. नेहड़ो। २. बिरह। ३. रिया, रह्या।
२ स० पाठ—१. म्हांरो। २. चरण कंमळ। ३. तोडौं। ४. बटाऊ।
३ सं० पाठ—१. ढुंढयो। २. बीच। ३. चोर-चोर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कब कि ठाढो पंथ नीहारूं बांय पकड़ हर बावो है। २।
मों(मोर)-मुगट पीतांबर सोवै ओर रेसमी वागो है।
मोरां कै प्रभु गीरधर नागर: ब्रह्' बूज्यो रंग लागो है। ३।

[राज शो० सं० चोरासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से।]

४. आ वदनामो[1] लागै मीठी रांणा जी माहाने[2]।

आ विदनामी लागै मीठी। टेर।

साध-संगत मै(में) निसदिन जातां दुरजन(ण)-लोकां दीठी। १।
प्रेम-गल्यां[3] मैं(में)मोवण मिलग्या क्यूं कर फिरुं अफूटी। २।
सासू नणद मा(म्हां)री देरांणी जिठांणी बळ-जळ भई अंगीठी। ३।
थै तौ हौ सीसोद्या रांणा मैं हूं दूदाजी रो बेटी। ४।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर चढेगयौ[4] रंग मजीठी। ५। ❀

[राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से।]

५. ऐ री कुवजा नै जादु डारा जिन[1] मोहन लो(लि)या साम[2]हमारा। टेर।
निर्मल जल(ळ)जमना जी को छाड्यो जाय पिया जल खारा। १।
इति[3] गोकुल उत मथुरा नगरी वीच वहै जल-धारा। २।
जमना कै नीरां-तीरां धेन चरावै मोहन मुरली-वारा। ३

❀ पाठान्तर—

आई वदनामी मीठी राणा जी मा(म्हां)नै आई वदनामी मीठी।
सावरो गरी को मौहन मिल्यो क्यो करि फिरोली अफुठी।
रानां वात करै छी सावरीया सो लाग अभुठ भीठा।
मीरा(रां) के प्र(भू)भु गिरधर नागर हरदे वरछै अगीठी। १।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९० से]

पत्रांक— ८२–८३।

---

४. विरह।

४ सं० पाठ–१. वदनांमी। २. म्हांनै। ३. गळयां। ४. चढग्यो।
५ सं० पाठ–१. जिण। २. श्याम। ३. इत।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरां के वे पद जिनकी प्रथम दो या तीन पंक्तियां ही पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती हैं शेष पद नहीं ।

परिशिष्ट ३

१. अब हरि कहां गऐ नेहरौ[1] लगाय । टेर ।
छोड़ चल्यौ विसवासीघाती प्रेम की वात सुणाय । १ ।
घायल कर निरमायल कीनी खवर न ली मोरि आय । २ ।
छोड़ चल्यौ है ब्रहै[2]-समंद्र मै नेह की नाव लगाय । ३ ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर रया[3] छौ अवधपुर छाय । ४ ।
[अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

२. अरी नंदनंदन सौं मेरौ[1] मन मान्यो कहा करैगो कोई री । टेक ।
हों तो चरन-कमल[2] लपटानी(णी), जो भावें सो होय री । १ ।
वे घर छाडि आवैं घर मेरै पर घर लोग रिसांय री । २ ।
नंद-नंद सौं मै कवहूं न तोरौ[3] मैं मिलोंगी निसांन(ण), बजाय री । ३ ।
सासु(सू)लरै(ड़ै)मोरी ननं(ण)द रिसांनी हसत बटउवा[4] लोग री । ४ ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर विधनां लिख्यौ संजोग री । ५ ।
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ से]

३. आज सखी मेरै अणंद बधावो घर मे गी(गि)रधर लाधौ हो । टेक ।
वन ढुढौ[1] वृंदावन ढुढो ढुंढ लीयो वृज बाधो है ।
विच[2] ज(झ)रोखे जां(झां)खन(ण) लागी घर मे गी(गि)रधर ठाढो है । १ ।
दुद(ध) दई मोरे घरत घणो हे सौं-सौं[3] (सोर-सोर) दध खायो है ।

---

१ सं० पाठ—१. नेहड़ो । २. बिरह । ३. रिया, रह्या ।
२ सं० पाठ—१. म्हांरो । २. चरण कंमळ । ३. तोडों । ४. बटाऊ ।
३ सं० पाठ—१. ढुंढयो । २. बीच । ३. चोर-चोर ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कब कि ठाढी पंथ नीहारूं बांय पकड़ हर बावो है। २ ।
मों(मोर)-मुगट पीतांबर सोवै ओर रेसमी वागो है।
मोरां कै प्रभु गीरधर नागर: व्रह[१] बूज्यो रंग लागो है। ३ ।
[राज शो० सं० चोगासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से।]

४. ग्रा वदनामो[१] लागै मीठी रांणा जी माहाने[२]।
ग्रा विदनामी लागै मीठी। टेर।
साध-संगत मै(में) निसदिन जातां दुरजन(ण)-लोकां दीठी। १।
प्रेम-गल्यां[३] मै(में)मोवण मिलग्या क्यूं कर फिरु अफूटी। २।
सासू नणद मा(म्हां)री देरांणी जिठांणी बळ-जळ भई ग्रंगीठी। ३।
थै तो हो सीसोद्या रांणा मैं हूं दूदाजी रो बेटी। ४।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर चढेगयो[४] रंग मजीठी। ५। ❀
[राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से।]

५. ऐ री कुवजा नै जादु डारा जिन[१] मोहन ली(लि)या साम[२] हमारा। टेर।
निर्मल जल(ळ)जमना जी को छाड्यो जाय पिया जल खारा। १।
इति[३] गोकुल उत मथुरा नगरी वीच वहै जल-धारा। २।
जमना कै नीरां-तीरां धेन चरावै मोहन मुरली-वारा। ३

❀ पाठान्तर–
आई वदनामी मीठी राणा जी मा(म्हां)नै आई वदनामी मीठी।
सावरो गरी को मौहन मिल्यो क्यो करि फिरोलो अफुठी।
रानां वात करै छी सावरीया सो लाग अभुठ भीठा।
मीरा(रां) के प्र(भू)भु गिरधर नागर हरदे वरछै अगीठी। १।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से]
पत्रांक– ८२–८३।

---

४. विरह।
४ सं० पाठ–१. बदनांमी। २. म्हांनै। ३. गळयां। ४. चढग्यो।
५ सं० पाठ–१. जिण। २. स्याम। ३. इत।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोर-मुगट पीतांबर सोहै कानां कुंडल(ळ) छविवारा। ४।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर हम उनकी वै मा(म्हां)रा। ५। ❀
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से]

६. कत गम्रौ[1] सांवरौ जादु कर केसै। टेर।
वंसी वजाय हरचो मन मेरो। ल गम्रो[2] सत हर कै। १।
वृंदावन की कुंज गल(ली)[3]मै ल सप(ब)[4] गम्रो सत धरकै। २।
मीरां कै प्रभु कपटी देख कबऊ न मले[5] अग भरकै। ३।
[राज०शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से]

७. राग सोरठ देस।
कांई तेरे कुब्रज्यासे मन रादी(जो), हम से अनबोलन(णां) माराज[1]। टेर।
हम से कहे सी(सि)णगार उतारो द्रग अंजन कजरा धोय डारो।
सीर पे ती(ति)लक रमायो पहेरो चोलणा हो माराज। १।
हमरो कहे जेंर उस लागे उनके जांणे मदन-रस पागे।
हम से दु(दू)र-दुर भागे अ्रहंस बोलणा माराज। २।

❀ पाठान्तर—१.
कुवजां न जादुकारा जीन मोया स्याम हमारा टेर।
कुवज्या वैंरन कोस-वद(विध) जलमी मोया स्यांम हमारा। १।
अत गोकल अत मुथरा नगरी विस(च) वहै मज(झ)धारा। २।
आस-पास रतनागर सागर विच वैहै प(र)म धारा। ३।
सीतल जल जमुना जी कौ त्यागै जाय पिया जल खारो। ४।
काथा सौनो लुंग चौफा(सुपा)री पांनन मै कसु खारो। ५।
सीतल स(छं)या कदम की त्यागी धु(धू)प सैया ची(सि)र धारा। ६।
जमुना की नीरां-तिरां धेन चरावै मोहन वसीवारा रे। ७।
मौर-मुगट पितांवर सोवै कांना कुंडल धारा। ८।
मि(मी)रां कै प्रभु गोरधर नागर चरण-कमल सी(चि)त धारा। ९।
[राज शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से]

---

६ सं० पाठ—१. गयो। २. ले गयो। ३. गलिन। ४. ले सब। ५. मिले।
७ सं० पाठ—१. महाराज, मा'राज

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जमुना-कनारे बंसी बजावे वंसी में कछु अचरज गावै।
तरंसी तान सुणावे च(छ)तीयां चो(छो)लणा मारज। ३।
वंसी की धुन सुन मेरे मन भई व्रज की सखी(खो) सब देखन(ण) आई।
प्रेम उमंग मन भाई वन-वन डोलणां माराज। ४।
मीरां राग वळ-मळ गावै सो गत सुर नर नही मुन्की[१] पावे।
हीऐ हरकतृ(खत) ललचावे कर सु(सूं)दांवणा हो माराज। ५।
[अनूप सं० ला० लालगढ़, पेलैस, बीकानेर के ह० लि० प्रं० सं० १७० से]

८. काहे कूं देह धरी भजन बिन काहे कूं देह धरी। टेक।
गीता भागोत सुंनी नहीं श्रवनां(णां) तीरथ डग न भरी। १।
भूका(खा) वेर भोजन नहीं दीनौं रांमजी गुर-सेवा न करी। २।
मीरां के प्रभु हरि अबनासी संगत सूं सुधरो। ३।
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्रं० सं० ८२०१ से]

९. काहू कि(की) मैं व्रजी[१] नाय रहूं। टेर।
सखी सहेलीं सू न मोरी हेली नो किसी बात कहूं। १।
ओ मन लागो सायब-सेती सबका बोल सहूं। २।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर चरण लपट रहूं। ३।
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लिं० प्रं० सं० ७६६५ से]

१०. कैसे जीउं री माइ हरि बिनि कैसै जीउं री माई। टेक।
झडत दादर मोर जल-चर जल सै बीछेड़े[१] तलफ-तलफ मर जाइ। १।
पीया बीना पीलीभई कां घग्घण खाई ओखद मुलानी।
चंचंर बेद फिर फिर जाई।

---

२. मुनि की।
९ सं० पाठ—१. वरजी।
१० सं० पाठ—१. बिछुडे।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दासी हौए वंन-वंन फी(फि)रु बीथा तन छाई ।
दासी मीरां लाल गीरधर मील्या सुखदाई । ३ । ❀

११. गिरधारी म्हांसू प्रीत निभाजा(ज्यो) हौं । टेर ।
औ तौ जीव प्रभू औगुणगारौ औगुण दिसा मत जाज्यौ हो । १ ।
काया-नगर मैं में भोड़ पड़ेला जद म्हांरो(रे) उपर[दया]कराज्यो हो । २ ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर बांहि पकड़ ले जाजो(ज्यो) हौ । ३ । ★
[अनूप सं० ला० लालगढ पेलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से]

❀ पाठान्तर

कंसे[1] जोऊं माई मैं हरि विन कंसे जीऊं माई । टे० ।
कमठ दाद(र)[2] बसत जल मे जलहि उपजाई ।
छाडि जल सूं बीछड़ तलपि[3] मर जाई । १ ।
आंमे क[4] डाली सूवटौ बंठो सूवा रै उडि जाई ।
पिठि पाछैं जम खडा काठ घुंण खाई । २ ।
पांनां ज्यूं पीरी भई बिदन[5] तन-त[न]छाई ।
ओखद को लागै नहि बैद झखि जाये(ई) । ३ ।
पांच पंचा पाज बांटधी जोति द्रसाई ।
येक मै दुभेला रहता सो क्यूं बिछराई । ४ ।
दुरवल हूवै बन-बन फिरी हेला दे धाई ।
दासो मीरां लाल गिरधर मिले सुखदाई । ५ ।
[राज० शो० स० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३९९ से]

★ पाठान्तर

जी ग्रि(र)धारी म्हांरी प्रोति त्र(नि)भाज्यौ । टेक ।
य्यौ जीव छै प्रभू वोगुंण आऐ वोगुण[6] दिसा थे मैंति जाज्यौ । १ ।
काया–नग्र(गर) मं (में) भोड़ि पड़ैली जैदि[7] म्हारो ऊपर कराज्यौ । २ ।
मीरां के प्रभू ग्रि(गिर)धर नागर बांहै पकड़ि त्रि(नि)भाज्यौ[8] । ३ ।
[राज० शो० सं० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८६९९ से]

सं० पाठ–१. कंसे । २. दादुर । ३. तकफ, तड़फ । ४, आंम की ५. बेदन (वेदल
६. ओगण । ७. जदि । ८. निभाज्यो ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गिरधर लागे री नोकौ मोहन लागै री नोको । टे० ।
लटपटो पाग मोहन सिर सोहै सिर केसर को टीको ।
मैं मेरै दिन राचि[1] रह्यो रा राग सुण्यौं बंसो को । १ ।
चलो री सखो स्यांम कौ निरखाँ मुख देखां मेरा पिव कौ ।
नैंन(ण) सूं नैंन मिलाइ र(स)खी री भौ भागौ मेरा जीव कौ । २ ।
कड़वा तेल कहां ज पुरसौं किसन खवईया घी कौ ।
वृंदावन की कुंज गलिन[2] मैं मांगे दान मही को । ३ ।
माखन(ण) खाइ मटक(कि)यां पटकी ग्रौंर टंटोल्यो[3] छोकौ ।
मी(रां) रा के प्रभु(भू) गिरधर नागर दुख मेटो मेरा जीव कौ । ४ ।।
राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० सं० ७६३६ से

पद —

गी(गि)रधर कै मन भाई रांणांजी मैं तौ सांची रांम संगाई ।टेक।
जैमल कै घर औतार ली(लि)या हे । रांणां कू(कु ल व्याहाई ।
भोग रोग व्यापे मेरी सजनी । श्री भगिति[1] परगट होऐ आई । १ ।
पुरवे[2] जनम को मै थी गोपका । चुक पड़ी मु(झ)ज माई ।
जगत लेहेर ल व्यापी घट भीथर । दीदो ह(रि)री छटकाई । २ ।
लोक लाज कू(कु)ल की मरजादा । छोडो सकल बडाई ।
मेरो कह्यौ थै मानो रांणां जी । बरजै मी(रां)राबाई । ३ ।
जो तम हाथ हमारो पकड़ो । खवरदार मन माई ।
दे(स्यूं)सूं सराप साचे मन तौको । जल बल भसम होऐ जाई । ४ ।
जनम जनम को प्र(ति)थी[3] प्रेमेसर[4] । थारी नही (छूं) छु लुगाई ।
थारे म्हारे झूठो सनेहो रांणाजी । गावे मीरांबाई । ५ ।।
रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७

सं० पाठ—१. राजी । २. गळिण । ३. टंटोळ्यौ ।
सं० पाठ—१. भगति २. पुरब ३. पति ४. परमेसर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—
राग सोरठ।

राणां जो हूं तो गिरधर के मन भाई।
लोक लाज कुल'ळ) की मरजादा। छाड़ो सकल बड़ाई हो। टेक।
पुरब जनम की गोपिका हो। चूक परी[1] मो मांई।
जगत लहरि व्यापी घट भीतर। तब मोहि दई छटकाई हो। १।
जैमल के कुल जनम मेरतै। रांणां कौ ले व्याही।
भोग रोग होये लागा री सजनी। वा भक्ति प्रगट होय आई हो। २
मात पिता सुत कुटुंब (क)बीलो। या सब भूंठ सगाई।
परम सनेही गी(गि)रधर पीतम। वाही सुं सुरत लगाई हो। ३।
जो तुं हाथ हमारौ पकरौ[2] तो। खबरदार मन मांहो।
देऊं सराप सांचे मन तुमकौ। जरि भसमी होई जाइ हो। ४।
जनम जनम गी(गि)रधर की दासी। तुम रो नांहि लुगाई।
तेरै मेरै भूठो सनेहा। गावै मीरांबाई हो। ५॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९०ं से

गी(गि)रधर प्रीतम प्यारो रांणा जो। म्हांरो गी (गि)रधर प्रीतम प्यारो। टेक।
है घट माह[1] घट ही से दूरा। सबकौ सरजणहारो।
गौतम नारा[2] ह(रि)री ऐहेल्या[3]तारी। कीर कौटम[4] सब तोरा[5]। १।
गजराज पी(पि)यादा ध्याया। द्रौपता कौ चीर बधायौ।
प्रतग्यां प्रहलाद को राखी। हरीणांकुस और बीडारचौ। २।
नांमदेव की छान छवाई। प्र(भू)भु धना कौ खेत नीपायो।
दास कबीर के बाल(ळ)द लायौ। आप भयौ छै बणजारौ। ३।
ढोला बाजा सफल जुग लोग खारो। रांम नाम को टेक पकडी।
दुंनीया भक मारो। ४।
नाग व्यथ[6] और कंस पछाड्यो। नख पर गी(गि)रवर धारचौ।
मिरां कहै प्रभू गिरधर नागर। रांणे जि(जो) कूंण बिचारचौ। ५॥
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७ से।]

सं० पाठ—१ पड़ी। २ पकड़ो।

सं० पाठ– १. मांह, मांही। २. नारी। ३. अहिल्या। ४. कुटम्ब। ५. त्यारचौ। ६. नाथ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गा (गो)व्यंदा सूं प्रीति करत जबं ही क्यूं न हटकी।
अब तौ बात फैलि पड़ो जैसें बीज बटकी । टेक।
अबै चूको तौ गैर नांही । जैसै बीज बटकी । १।
घर घरी माफ घेरा होत । वांणी घट घट की।
सांवरौ तौ मेरा सीस परि । मैं लोक लाज पटकी । २।
जल मैं घुली गांठि परो रसनां गुन(ण) रटकी।
अबै छुड़ांऊ तौ छुटै नांही मैं कैहो बार झटको । ३।
मद के हसतो समा' फिरत प्रेम लटको।
मीरां के प्र(भू) भु गिरधर बिनां कोन जाने घटकी । ४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८ से।

* पाठान्तर– १ राग प्रजा।

गोव्यंदा सु(सूं) प्रीति करि । ते जबतै क्यौ नहो अटकी री।
अब तो वात फैल परि । जैसे बोज बटकी री । टेक।
प्रेम की घुरी गांठि दीनो । रसना रटेती।
अब तौ छुड़ाया छुटै नांहीं । अनेक बेर झुटकी री । १।
घरि घरि महि मथाना । बानी घट घट की।
सुनि सुनि सब सीस धारो । लोक लाज पटकी । २।
बोच कौ विचार नहीं । छप परी तटकी।
ज़ चुकै तौ ठौर नाही । जैसै कला नटकी । ३।
मद के गजराज जैसे । प्रेम मगन लटकी।
मीरां प्र(भू)मु भगति वुद । हिरदा में गटकी । ४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से ।

पाठान्तर–२ "राग मारू

तवहो क्यो न हटकी री गोबींदा सु प्रीत करत।
अब तो मन फैल परो जैसै बीरुघ बटकी ।।
घर घर घर घोलो मथानी बानी घट घट की।

सं० पाठ– १. समान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुनी सुनी हु सोस धरो लोक लाज पटकी री।।
बीच को बीचार नहो छाप परी ठेड कीरां।
जो चुकु तो खेर नही जैसै कला नटकी री॥
मद के गयेद जैसै मत पेमलट की रो।
मीरा प्रभु भक्ती बुद हीरदे अट्कीरो।।

अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० २२३ से।

गोविंद ना गुण गास्यां। रांणा जी मै तो गोविंद ना गुण गास्यां। टेर।
राणे जीं रूठे तो सांम[1] रखेला। गोविंद रूठा[2] कमलास्या[3]। १।
……………मंदिर जाऊं। हरि दरसन(ण)नित पास्यां। २।
साध सगत मां बैस(ठ)करी नै। लोक लाज गमास्यां। ३।
सतसंग रूपी नांव बंसा न। भवसार तिर जास्यां। ४।
विखना प्याल्या रांणौ जी भेज्या। इंम्रत कर गटकास्यां। ५।
मीरां कहै गिरधर नागर। निरभै नोबत वास्यां (बजास्यां)। ६॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं २०६ से।

पाठान्तर–१

गिरधर रा गुण गास्यां। रांणाजी मे(म्हे)तो। टेर।
साध संगत भगति हा(रि)री की। सहजे ही तर जांस्यां। १।
म्हारै छैं पण चरणांमत रो। नित उठ दरसन(ण)जास्यां। २।
कथा कीरतन चित कर सुणस्यां। महा प्रसादी पास्यां। ३।
सुण सुण वचन साधके मुख के। खांत करे करि गास्यां। ४।
नाम अमोलक ईम्रत रूपी सिर रै। साटे ल्यांस्यां। ५।
लोक कुटंव की लाज न मा(म्हां रै। अस्टक गोविंद गास्यां। ६।
प्रेम प्रतीत जमां निसवासर। बोहोर न भव जग आस्यां। ७।
थे हट मांड्यो स हम उपरि। विसरा प्याल्या पास्यां। ८।
जन(जण)मारगी(गि)ये संत पधारया। ऊन मारगीयै में(म्हे)तो जास्यां। ९
जन मीरां गिरधर जी रै चरणै। पीवत मन न डुलास्यां। १०॥

राज० शो० सं० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से।।

सं० पाठ– १. राज। २. रूठ्यां। ३. कुमळास्यां।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

❀ पाठान्तर–२

गोमंदा रा गुण गासां रा(णा)जी मे(म्है)तो गोम(द) ा रा गुण गासां। टेर।

राणु जी रुसला तो सैर राखवो ह(रि)री रूठा केम ला(जा)ऊं।१।

राम नाम की ज्ञा(झा ज(झ) चलाया वौ भ(व) वै सागर तो(ति)र जासां।२।

चरणामत कौ नेम हमारै वौ नो(नि)त उठ दरसण जासां।३।

वी(वि)सरा प्याला राणा जी भेजा वौ ईम्रत कर गट कासां।४।

यो संसार ही नाम जान कै वौ ताकौ संग छीटकासां।५।

मा(रां रा कै प्र(भू)भु गा(गि)रधर नागर चरण में चत जासां।६॥

संत साहित्य मंडल बीकानेर के लि० ग्रं० से।

❀ पाठान्तर–३

गोविंद का गुण गास्यां। टे०।

रांणौ जी रूसैला तो गांव रखैला। हरि रूटां कुमलास्यां।१।

राम नाम की जिहाज चलास्या। भो सा(ग)र तिर जास्यां।२।

चर्णामृत को नेम हमारै। नित उठि दरसन(ण)गास्यां।३।

विख रा प्याला राणौ भेज्या। इम्रत कर रि गटकास्या(स्यां)।४।

यौ संसार विनास जानि कै। ताको संग छिटकास्या (स्यां)।५।

लोक लाज कुल कांणि(णी)तजि कै। निरभै निसांण घुरास्या(स्यां)।६।

मीरां के प्रभू हरि अविनासी। चरन(ण)कमल वलि जास्या(स्यां)।७।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं ७३ से।

❀ पाठान्तर–४

राणा जी म्हे तो गोबिन का' गुण गास्यां। टेर।

चिरणामत को(रो)नेम हमारो नित की' मंदर जास्यां।१।

थे रूस्यां म्हारो कुछ न बीगड़ै हर रूस्यां मर जास्यां।२।

राणा जो म्हे तो गोविन रा। टेर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मैं दासी गिरधर चिरणां की तन मन सै लव लास्यां । ३ ।
मीरां कै प्र(भू)भु गिरधर नागर फेर जलम नहीं पास्यां । ४ ।
राणाजो म्हे तो गोबिन रा । टेर ॥

पिलानी से प्राप्त हरजसों से ।

पाठान्तर–५

राणा जो म्हे तो गोविंद रा गुण गासां । टेर ।
ओ संसार असार जांण कै ताकौ संग छिटकासां । १ ।
लोक लाज कुल कांण त्याग कै निरभै निसांण घुरांसां । २ ।
रांणौ जी रूठ तौ वारौ देस रखावसी हरि रूठां मर जासां । ३ ।
चरणामृत को नेम हमारे नित उठ दरसण जासां । ४ ।
विखरा प्याला रांणजा भेज्या इमरत कर गटकासां । ५ ।
मीरां कहै प्र(भू)भु गिरधर नागर चरण कमल चित लासां । ६ ॥

अनुप सं० ला० लालगढ पेलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ।

राग विलावल ।
डार गयो मोहन गल गा(फां)मी ।
पीत[1] कारकण[2] वन वन डो(लूं)लु ।

। डा ।

छो(छि)पे मुथरा के वासी । डार गयो मोहन गल पासी ।
वी(वि)रह की दाडी[3] जोगन हुवगी । प्रान तजु करवट लेवु(वूं)कासी ॥

। डा ।

मीरां क(के) परमु गी(गि)रधर नागर । तुम ठाकर हम तेरी दासी ।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७८ से ।

सं० पाठ–१. गोविन्द रा । २. रा ।

सं० पाठ १. प्रीत । २. कारण । ३. दासी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राग विहंग ।

जगत सारो सोवै रैं आली में(मैं) व(वि) रह्न जा(गू ँ)गु सारि रे(ण)न ।टेर।
रंग महल मैं(में)विरहन ठाडी । ग्रसुरन(ण)माला(ळा) पोवै रे । १ ।
यो तंन मेरे पुरजन पुरजानी । नत उठ श्याकुल(ळ)होवे रे । २ ।
मीरां के है प्र(भू)भु गी(गि)रधर नागर आवा(ग)घमण[1] न होवे रे । ३ ।।

राज शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्रं० सं० ६२२६ से ।

जैहर दी(दि)यो मैं जांनी(णी)हो जी रा(णां)नां ।
ग्रपना कुल (ळ)को संख्या मेटो मैं हो ग्रबला वोहोरानो[1] । टेक ।
कंचन काटि(टी)ग्रगन मैं डारचो । नीकस्यो बारापा(णो)नी हो ।
न्याव की(कि)यो मा(म्हा)रो परमेसुर छाणया दूधर पा(णी)नी । टेक ।
मा(म)रुधर मेवाड़ मेड़तो लेटू मा(म्हां)रा कुल(ळ)की कांनि हो ।
हाथल(ळ)तो राना(णां)जी सो जोरया गिरधर को पटरा(णी)नी हो । टेक ।
कोटक भूप वारो सांधो पर साभा(थां) हा(थ)त विकानी हो ।
मीरां के प्रभु(भू) गिरधर नागर चर(ण)न कव(ळ)न लपटानी हो ।। १ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्रं० सं० १८६० से पत्रांक--७६ ।

पाठान्तर--

जहैर दी(दि)यौ मैं जां(णी)नी । राणाजी जहर दीयौ मैं जां(णी)नी ।
ग्रपना कुल को पडा दी करि लं। मैं ग्रबला बौरानी । टेक ।
जैसे कंचन कम्योई कसोटी । होत है बारेंह्वानी ।
सुपच भगत प्रिबि प्रसेवा रो । मैं हरि हाथ बिकानी । १ ।
बीख को प्यालो राणे दी(दि)यो । ग्रचयो मी(रां)रा जांणी(नी) ।
मीरां के प्र(भू)भु न्याव निब्रेडयो । छाणो(ण्यो) दूध र पांणी । २ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ३६१५२ से पत्रांक--८६

सं० पाठ--१. ग्रावागमन, ग्रावागमण ।

सं० पाठ--१. बोरानी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणां जो जहर दो(दि)यौ मैं जांणी
आपणा कुल को कारण राख्यौ । हूं अबला बो ही राणी । टेक ।
कंचन लेर अंगनि मैं डारयौ । निकस्यौ बौरां बानी(णी) ।
मेरौ न्याव कीयौ परमेसर । छांर पौड धर पाणी । १ ।
राणै जी परधन पढाया । सुण ज्यौ जी तुम राणी ।
जो साधाँ को सग निवारौ । तौहि करूं पटराणी । २ ।
कोटिक भूप वांस संतन परि । जाकै हाथ बिकांणी ।
हथलेवो रांणा जी सू जोडयौ । गोंविद की पटराणी । ३ ।
मुरधर देस मेडतै मारूं । ज्यांरी मैं बेटी कहांणी ।
मोरां के पति राम गोसांई । चरण कमल लपटाणी । ४ ॥
भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० से

पाठान्तर–

रांणा जी जहर दीयौ म्हे जांणो ।
अपना कुल का पडदा करिल्यो: म्हे अबला बहौराणी । टेक ।
जव लग कंचन कसियो नांही: होत न बारा बानी
प्रभु मेरौ न्याव कीयौ है: छांण्यौ दूध र पांणी । १ ।
कोटिक भूप वारौं संतन परिः जिनके हाथ बिकानो ।
मीरां के प्र(भू)भु गिरधर नागर संतचरण लप(टां)ताणी । २ ॥
रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८ से

जाके प्रिय न राम वैदही ।
सो त्यागीयै कोटि वैरी सम जदपै(पी) परम सनेही । टेर ।
पिता तज्यो प्रहलाद वध वभीखन[1] भरथ तजीमहि ।
नाव विसर गई ग्वा(लि)नि हरि लेऊ हरि लेऊ बोलै । १ ।
पेम[2] बिवसि ग्वालनि भई कुछ ओर ही और बोलै ।
मीरां प्र(भू)भु गिरधर न मिलौंगी-भई दासी विन मोलै । २ ॥
संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० से ।

सं० पाट–१. विभीखण । २. प्रेम ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राग सोरठ

जोगीया रे आज्यो रे ईण देस ।।टेर।।
पैरण चो (ला) ला भसम कंथा । भेख धर्यौ वेस ।
सांई तेरे कारणै । में तो प्रिंड[1] कीयो परवेस ।१।।
कर उपाय पतराख मेरी । ले जावौ अपने देस ।
आउंगी मैं नाहि रहू रामजी वी (वि)ना परदेस ।२।।
आगै केता पतत उभारया । तेरौ काहा संदेस ।
जिद करूं कुरवांण तुज पर । धरूं न दूजी देह ।३।।
दरद दिवानी भई बावरी । डौली सांवरा रे देस ।
दासी मीरां भई पंडर । पलट्या काला केस ।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६१ से

सं० पाठ १. पिंड

पाठान्तर १ (राग सोरठ)

जोगीया आवौ नि आ देस ।
नैनज देखु नाथ मेरौ । ध्यांन करूं आदेस ।।टेर।।
आयौ सांवण मांस सजनी । भरे जल थल नाल ।
रावली (लि) या नै की (कि) ण विलमाय राख्यौ । व्रिहन भई वेहवाल।१।।
बोछड़ीयां कोई भो भयां रे जोगी । ऐ दिन अंहैला जाय ।२।।
वासु सुरत मांहारं मन वसी रे । वाली छी (छि) न भर रह्यो न जाय ।३।।
मीरां कं कोई नांहि दूजो । दरस दो हर आय ।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से

पाठान्तर २

जौगीया आवौजी ऊन देस ।
नजर पड़े जब नांथ मैरो । धाय करूं आदेस ।।टेक।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आया सावण मांस सजनी । भरीया जल थल नाल ।
रावलिया कीण (बि) लमाई राख्यौ । ब्रहेणी विहाल ।१।।
बिछड़ीया कौई दन भया । जौगण दन ऐला जाय ।
एक वरीया देहौ नीद्रया फैरी । नगर म्हारै आय ।२।।
वा मुरत मेर उर बसे । पल भर रह्यौ नाही जाय ।
दासी मीरां कै कौई नाही दूजौ । दरसण दो है (हे,) रि आई (य) ।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७ से पत्रांक १७७–७८

राग सोरठ

जोगिया जाये वस्यौ परदेस ।
जहां गयो फेरि आवै न जावै । कुंण जाय कहै संदेस ।।टेक।।
वेगमपुर जाकी गम नांही । कौंन करै परबेस ।
चलत चलत सुर नर मुनि थाके । थाके बिप्र नरेस ।१।।
देस वदेस संदेस न चहूंचै । जाणयौ न परै लवलेस ।
कहौ कौन ले जाव सनेसो गुर । भने[1] जाण्यौ परेम ।२।।
वहोत भांति मैं जतन कीनां । नां नां विधि के पेस ।
तातै मेरै मिलण कौ । मन मांहि रह्यौ अनेस ।३।।
वांको न आवंन मेरो न जावन । तो अब कहा करेस ।
या तन ऊपर भसम लगाऊं । मुंड मुंडाऊ केस ।।
मीरां प्रभु गी (गि) रधर कै कारन पहरया भगवां भेस ।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६० से

सं० पाठ १. जन

पाठान्तर १

जोगीयाजी छाइ रह्या परदेस ।।टेक।।
जब का बिछड्या फेरि नि (नीं) मिलीया । बोहोरि न दीया जी संदेस ।१।।
या तन ऊपरि भसम रमाऊं । खौर करूं सिर पेस ।२।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भगवां भेस करूं तुम कारणि। ढूंढत च्यार्‌यूं देस ।३।।
मीरां के प्रभू तुमारे मिलण मन। जीवण जनम अनेस ।४।।

राο प्राο विο प्रο जोधपुर के हο लिο ग्रंο सं० १०८४७ से

जोगीया दरसण दीज्यौ राज।
कर जोड्यां करणां करूं। मोहि बाहां गह्यां की लाज ।।टक।।
लोक - लाज त्रिसारि डार्‌यौ[1]। छोड्यौ जग - उपदेस ।१।।
पांच मुद्रा भाव कंथा। नक सक[2] राख्यौ साज।
जोगणि होइ [जुग] ढुंढस्यू। म्हारी घरि घरि फेरी आजि ।२।।
दरध (द)वांन तन जाण आपणूं। मिलीया दीनदयाल।
मीरां कै मनि आनंद भया। रुंम रुंम[3] खुसीयाल ।३।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के हο लिο ग्रन्थ-संग्रह से

संο पाठ–१. डारी। २. नखसिख। ३. रोम – रोम।

देसड़लो हो राणा रुडो थां (रो रा।
म (मैं) कवुन[1] 'रहोंजी। कदे न गुथाऊं सी (सि) र जूड़ो ।टेर।
पाटी नही पाडूं मांग सवारुं। कदे न परु[2] था (थां) रो चूड़ो ।१।।
मी(रां) रा के प्रभु गी [गिरधर] नागर वर पायौ छै पूरो ।२।।

अनूप संο लाο लालगढ पेलैस, बीकानेर के हο लिο ग्रंο सं० २०६ से

संο पाठ–१. कबहुं न। २. पेरूं।

दुखन(ण) लागै री नैन (ण) दरस बोना दुखण लागे री नैन ।।टेर।।
क (ल) ल न पड़त मोय। ऐक पग ठाडी भई छैमासी रैंण ।१।।
अह[1] अगन मेरै अंग लगी। बोलत मीठा बेण ।२।।
व्याकुल बिकल(ल)भई हरीं(रि)कारणौ। करवत वह गयो अेन ।३।।
मीरां कहे प्रभु कबही मिलोगे। दुख मेटण सुख देंण ।४।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रंथ संग्रह से

सं० पाठ-१. बिरह

पाठान्तर

दुखन लागै नैन दरस बि (नां) नी ।।टेर।।
जब के तुम बिछूरे मेरे प्रभूजी । कबहू न पायौ चैन ।१।।
ब्रिह बिथा कासु कहुं सजनी। करवत बै गई अ्रैन ।२।।
एक टक ठाडी पी(पि)या पंथ निहारूं । भई छमासो । रैनि ।३।।
मीरां के प्रभु हरि अबिबनासी । दुख मेटण सुख दैन ।।४।।

राज० शो० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से

न भावै थांरो देसड़लौ रूड़ौ ।।टेर।।
हर की भगत(ती) करै नहीं कोई । लोक बसै कूड़ो ।
दोय कुल (ल) त्याग भई मैं बोरी । नाखं[१] परो चूड़ौ ।१।।
मांग रु पाटी उतार धरु सब । काटुं सिर को जूड़ो ।
मीरां हटोली कहै संतन सूं । वर पायौ मैं पूरो ।।२।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से

सं० पाठ-१. नाख्यो ।

पाठान्तर १

न भावं थांरो देसड़लो रूड़ो ।
हर को भगत करै नहीं कोई । लोक वसै कूड़ो ।।टेक।।
दोय कुल त्याग भई मैं बोरी । न्हाख परो चूड़ो ।।१।।

CC-0 RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मांग रु पाटी उतार धरु गी । काटु सिर की जूड़ो ।२॥
मीरां हटली कहै संतन सू। वर पायी है पूरो ।३।।

राο प्राο विο प्रο जोधपुर के हο लिο प्रंο संο १०८५४ से

पाठान्तर २

न भावै थांरी देसड़लो रुड़ो ।।टेर।।
हर की भग [ती] करै नहि कोइ, लोक बसै कूड़ो।

राο प्राο विο प्रο जोधपुर के हο लिο प्रंο संο १०८६२ से

२२

नारी [ड़ी] हूं न जाणे, वेद भडो[1] ही अनारी है ।। टेर।।
पीर पीर[2] पात होसी[3], । पीलंग पर डारे है ।१।।
तुम घर जावो बेद, । रोग मोरो भारी है ।२॥
धुरका[4]मे (में)वेद भ (ब)से तम जावो जासू मेरी आ(या)री है।३।।
मी [रां] तो तीहारी दासी, सदा ही पिया री है ।४।।

राο शोο संο चोपासनी जोधपुर के हο लिο प्रंο संο ७६३६ से

संο पाठ—१. बड़ो २. पीली, पीली ३. जैसी ४ द्वारिका, द्वारका

२३

पाठान्तर १

नारी गजैजवंति
नारी ऊन जाणै बैद, निपट अनारी है ।।टेο।।
पीली पीली पांन जैसी, पिलंग पर डारी है।
[illegible] रोग भारी है ।१।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लगी है कलेजा मांही. मूरख टटोलै बांही ।
जबतै सिधारो रांम, बिरह - बांन मारी है ।२।।
बूंटी सब झूठी भई, कारी हू न लागै काई ।
द्वारका मै बसं वैद, तासूं मेरी यारी है ।३।।
मीरां कूं जिवाई चाहो, तुम घर आवो स्याम ।
रोग को कटईयौ मेरो, कुंज को बिहारी है ।।४।।

रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २८८४ से

२४

पाठान्तर २

नाड़ी हू न जांणै वैदो, निपट अनाड़ी है ।।टेर।।
पीरी पीरी पांन जैसी, पलग पर डारी है।
तुम घर जावो वैदो, मोह रोग भारी है।१।
करक कलेजै मांह, मुरख टंटोलै वांह।
रोग हू को भ्रम नांही, झूठा भ्रमधारी है।२।
बुंटी सब झूठी भई. कारी क्रम सारी है।
माधोवंन वसै वांसु, मोरी तारी है । ३ ।
रहत है उदास वास, जोवना की थोरी आस ।
प्रेम हूं के लागे वान, व्रह हूं की जारी है ।४।
मीरां कुं जीवाई चाहो [तो] मम घर सांम आवो ।
रोग को कटइयो मेरै, कुंज नो विहारी है ।५।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६६४ से

२५

पाठान्तर ३

राग जजवंती मांडी–
नाड़ी ही न जांनै वैदो । निपट अनाड़ि है ।।टेक।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पिरी पिरी पांन जैसि । पिलंग रि डारि है।
तुम घरि जावौ वेदां । मेर रोग भारि है।१।।
जड़ि बूंटि सवही भूंठी । ग्रोखदि सबहि खारि है।
उठि वैदा जावौ घरि । मोहि रोग भारी है।२।।
द्वारिका में बानब दो । जासू मोरी तारी है।
मीरां के प्रभू ग्रि (गिर) धर नागर । कारी करम सारी है ।।३।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ८३९९

२६

पाठान्तर ४

नाड़ऊ न जानै वैदा । निपट ग्रनाड़ी है ।।टेर।।
पीरी पीरी पान सी । पलंग प्र (पर) डारी हैं।
तुम घरे जावो वेद । मेरे रौग भारो है।१।
बूटी सब झूठी भई । कारीऊ न लागै काई।
द्वारका में बसवो दो। जासू मेरी हारी है।२।
चनन की खोर लीयें । ग्रौर बेंजिती हीयै।
मै तो त्मकुं ग्रैसै जांणै। तुम विन माली हौ।३।
मी (रां)रा कुं जीयाई चाहौ । मम घरि ग्रावौ साम।
रोग के कटईया मेरे । कुंज के बिहारी हौ ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ७६६५ से

२७

राग सोरठ :

पतीय्या[१] म (मैं) कस[२] लीखु (खूं), लीखीये न जाये ।।टेक।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साधां कै संग बंट बटवौ, लाज गमाई सारी ।
ऊठ सूवांरै निल-प्रित[3] जावो, ल्यावो फूल कूंगीरी ।३।।
वडा घरां का छोरु कू (वा) चावो[4], नाचो दे दे तारी ।
वर पायो हींदवाणी सूरज, अब कांई दिल में धारी ।४।।
तार्‍यो पिहर सासरो, तारी मायै मूसारी[5] ।
मीरां नै सतगुरुजी मिलीया, चरण कंव (ल्) ल बलिहारी ।५।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१९९ से

सं० पाठ–१. भाभी । २. सहेल्यां । ३. नितप्रति । ४. कुवावो । ५. मुसाल् ।

३३

बिड़द घटै कैसै माई हौ ।
सैन भगत को सांसो मेट्यौ । आप भयो हरि नाई हौ ।।टेक।।
भीलनी[1] का बेर सुदामा का तंदूल । द्रोपता रौ चीर वड हौ[2] ।
कमावाई रौ खीचड़ो आरौगौ (ग्यो) कबीर के वालदि[3] आई हौ ।१।
जुरजोधन का मेवा त्याग्या । साग विद्र[4] घरि पाई हौ ।
धनां भगत कौ खेत नवायो[5] । नांमदेव हरि छांनि छवाई हौ ।२।
ज्यां पह(र) सै रयां माटी तुलसी । ज्यांरी पुजा लाई हौ ।
मीरां के प्रभु गीरधर नागर । दार की सार दिखाई हौ ॥ ३ ॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१६२ से

सं० पाठ–१. भीलणीं । २. [illegible] । ३. [illegible] । ४. विदुर । ५. निपायो ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३४

राग खमायची।

मथरा जावो तो थांनै नंद की द (दु)वाई । टेर ।।
सब मिल गवाल् सबै मिल गोपि, में तो थांरे दरसण आई।।१।।
नैना री सोभा इधक विराजै मैं, तो थांरे लोचन लोभाई । २ ।।
सोले सहस गोपका त्यागी, कुबजा नैं कंठ लगाइ । ३ ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, कुब्रजा रीनै धीनै[1] है कमाइ ।। ४ ।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६४ से

सं पाठ– १. धिन, धन (धन्य)

३५

मर (मेरे) (रे) भाव (वै) परभुजी वीनां, सोही है उजाड़ ।। टेर ।।
सुखघ[1] (ग) यो सरवर उड़ गया, हंसला रही है नीमांणी नार । १ ।।
गज परभु कमनीसवासर कर, नही पासूं आहार । २ ।
ऐक सम (मै) मोतियां र (रे)मोल, ह (हं)सा चुगत जवांर । ३ ।
मीरां तो कव गीरधर नागर, हरी चरणा ची(चि)त लाव । ४ ।
मा (रै)र वीना मा माम्रो जी र, सोइ है उजाड़ ।। ५ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७४, पत्रांक-७-८ से

सं पाठ– १. सुक ।

पाठान्तर–१.

आज म्हारे भावै माधो विनां, वसत उजार ।। टेर ।।
ऐक समौ मोतियन के भरोसे, हंस चुगत जवार । १ ।।
सुक गये सरवर उड गये, हंस रहो नीवाणी नार । २ ।।
सरवर भरिया हसा जी आया, वैठा छै पांख पसार । ३ ।।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, अब कै पार उतार ।। ४ ।।

अनुप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि०ग्रं०सं० १०७ से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३६

मेरो मन राम ही राम टँवे [रटै] ॥ टेर ॥
राम नांम जपि लीजे रे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे । १ ॥
कनक कटोरे इम्रत भरियो । पीवत कू (कु ं)ण नटै रे । २ ॥
जैसे अवहूं ईसक लगी रस । मु (ह) व उलट लटै रे । ३ ॥
रांम नांम कैसे तजि देऊं । मैं लीयो है सीस सटै रे । ४ ॥
मीरां के प्रभू स (सु) ख के सागर । तन मन तापहि पटै रे ॥ ५ ॥

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रंथ से

३७

में तो रांमा दर [द] दीवानी । दरद न जांने(णे) कोई । टे० ।
अंतर गति नै लागी उदासी । किस विध रहणा होई । १ ॥
सूली उपर सेझ हमारी । किस बिंध रहणा होई । २ ॥
में तो तुम्हारी चेरी भई हूं । तुमै मति जानू दोइ । ३ ॥

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रंथ से

पाठान्तर–

म्हारो मन रामोई राम रटै ॥ टेर ॥
भाल तिलक गल तुल (ल)छा की मा ला)ला, फ(फे)रत कौन हटै । १ ॥
कनक कटोरा मैं इमरत भरियो, पीवत कौन नटै । २ ॥
जनम जनम का खत छै पुराणा, नाम लियां तै फटै । ३ ॥
जिम तिम करके राम सिमरलो, जाकूं वेद रटै । ४ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, लीयो छैं सीस सटै ॥ ५ ॥

अनूप सं० ला० लालगढ पेलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३८

मैं अमली हरि नांव की । मुझि बाइड़ि आवै ।
पी(पि)या पीयाला नांव का । कछु और न भावै ॥ टेर ॥
या तन की कूंडी करूं । मन पोमत भेऊं ।
ग्यान नलणीया हाथिथे ले । इम्रत रस पीऊं । १ ॥
पीया जोगी भरथरी । गुर गोरख पावै ।
धनि माता मैंणांवती । सुत पैं राज छुड़ावै । २ ॥
और अमल किस काम का । चढि उतारि जावैं ।
अमल करो इक नांव का अमरापुर पावै । ३ ॥
अमल का(कि)या मावा किया । सुखि रैंणी बिहावैं ।

३६

वीठल रह्यौ वसी म्हांरै मन, विठल रह्यौ वसी ॥ टेर ॥
व्रहैन[1] काली नाग ज्यौं रै, म्हांरै काजलडै रे डसी ॥ १ ॥
ओखदीया अलगा करो रे, म्हांनै छिम पावौ सोधसी ॥ २ ॥
भोजनीयां भावं नहीं रे, म्हांरै नैणां की नींद नसी ॥ ३ ॥
अै पैला दुरज (ण)न लोकडा, म्हांरी वात न जांने ईसी ॥ ४ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, कहौ गत की किसी ॥ ५ ॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८२ से

सं० पाठ—१. विरहण ।

४०

वे न मिलै उसकीं[1] मै दासी ॥ टेर ॥
गोकल् ढुंढ वनरावन[2] ढुंढ्यो, ढुंढै लई मथरा अरु कासी ॥ १॥
इण बीरजवा से प्रीत न करीये, डार गये गल् प्रेम की फासी ॥ २ ॥
इत गोकल (ल्) उत मथरा नगरी, बीच मिलै पूरण अबनासी ॥ ३ ॥
मी(रां)रा कैहै प्रभु गीरधर नागर, चरण कवल (ल्) चितहर की मै दासी ॥ ४ ॥

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से

सं० पाठ—१. जिणरी, जिणांरी । २. बिनरावन, बिंदरावन ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४१

वैद बन (ण) आवजौ[1]
जी म्हांरो व्याकुल (ल) भयो रे,सरीर, हकीम बण आवजौ ।।टेर।।
ओखद म्हांरै रांम नांम कौ, सोई हिरदै लिखावजौ ।
वेगाई वेग पधारो गिरधर, चरण खोल[2] रज पावजौ ।।१।।
मोर–मुकट सिर–छत्र विराजै, केसर तिलक वणावजो ।
संख चक्र गदा पदम विराजै, गरुड़ चढनै वेगा ध्यावजो ।।२।।
दरद दिवांनी कौ वैद रामैयौ, सूतोडी नै आंण जगावज्यो ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, हंस – हंस कंठ लगावज्यो ।।३।।

अनूप सं० ला० लालगढ़ पैलेस, बीकानेर के ह० लि० प्र० स० ११३ से

सं० पाठ—१. आवज्यो । २ खोल् ।

४२

सतसंग मैं परी[1] हो धिन–धिन आज नी घरी ।टेक।
श्रवण सुणत श्रीमत भागवंत, रसनां रटत हरी ।
सांवरी सूरत मोहनी मूरत, उर विच आन अरी ।।१।।
मोर–मुग (ट) त पीतांबर सोहै, कांना कुंडल जरी ।
वद्रावन की कूंज गलन मैं, मुरली की टेर करी ।।२।।
भली भई घर साँम पधारे, आज सुनाथ घरी ।
निरधन तै मैं भई धनवंती, ब्रह्मा ताप हरी ।।३।।
मन डूबौ लीला सागर मांही, एही थाट थरी ।
मीरां कह प्रभु गिरधर नागर सर(णै) नै आंन परी ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ७१४२ से

सं० पाठ––१. पड़ी ।

४३

सांवरे रंग राची रा(णां) ना जी, राम सो रंग राचो ।।१।।
देउ देव गारो मलु हरा दाम सुं,वा तो मो मन नहीं है काचो ।।२।।
देस वदेस[1] जुग[2] सोही जांनै (णैं), बांधि घुघरा नाची ।।३।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, हूं तो जनम-जनम की दासी ।।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० १८६० से

सं० पाठ––१. विदेस । २. जग ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राग सोरठ

४४

हरि विन क्यौं जीउ माई
उर कदा उरं कमठ, जलचर जलां उपजाई ।
मीन पलभर बीछरै, तौ (त) लफ मर जाई ।।१।।
वीस भक्ति प्रतपल कीन्हीं, जोति दरसाई ।
एकरण सेझ सदा रह्यो सो, क्यूं पीव विसराई ।।२।।
वप विरह कै वस परी, जैसे काउ धन खाई ।
अब की वेर न आवीया तैं, करक राह जाई ।।३।।
पी(पि) या विन पीरी[1] भई,जैसें विथा तन छाई ।
ओखद मोकुं नी लगै, लगा-वोराई ।।४।।
व्याकुल(ल़) अइ वन-वन फिरी, टेर सुनाई ।
दासी मीरां लाल गिरधर, मिले सुखदाई ।।५।।

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह०लि० ग्रं० से

सं० पाठ —१. पीली ।

पाठान्तर—१

हरि बिन क्यूं जीवूंइ् माई ।।टेक।।
पात जैसी भई पीरी, वेदन तन छाई ।
ओखद तौ अनेक दीनी, मोहि लगी नहीं कांई ।१।
सत्रक सीतलमीन दादरा, जल ही उपजाई ।
मीन जल सौं बिछटै तातै, तलफ मरजाई ।२।
जाग निस दिन सुमर पहैरे, अब सोइ मत जाई ।
पाच चोर महाबली, तौकौ हरैगा भाई ।३।
बिरह बैदन लाइगी तन सौ, जैसे काठ घोण खाई ।
बोखद तौ अनेक दीनी, मोह लगी बहेराई ।४।
बीस पछ प्रतपाल कीन्हीं,प्रभु जोगीया नु जोति दरसाई
दासी मीरां राम प्रभु, मिले सुखदाई ।।५।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—२

मैं हरि विन ना जियो[१] माई ।
पान तै पियरी भई, जैसे काठ घुंन (ण) खाई । टेर ।
ओखद मूल कछु नहि लागै, वैद फिर जाई ।१।।
मीन दादुर बसत जल (ल्) में, जलहि उपजाई ।२।।
एक दिन जल तें वीछुरे, हों तलफ मरि जाई ।३।।
तबक टूटे जंजीर छुटे, खंजर खा मरिजाई ।४।।
ज्ञान गासिन मा (रै) र सतगुर, पार व्है जाइ ।५।।
जंगल–जंगल हरि को मैं ढूंढो, प्रभु को चितलाइ ६।।
एक दिन जो हरि मिलि है, हों खटक मिटजाई ।७।।
सकल वृज की ललित सोभा, क्रस्हन[२] उर छाई ।८।।
दासी मीरां लाज गिरधर, मिले सुखदाई ।६।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४७५६ से

सं० पाठ—१. जिहों । २ कृष्ण, किसन ।

४५

देव गंधार—

हों तो गोविंद सों अटकी
थकत भए दोऊं द्रग मेरे, तकि सोभा नटकी री ।१।।
लोक–लाज कुल (ल्) कांनि[१] मेटी, सखी रहूं न घर अटकी री ।२।।
बिन गोपाल (ल्) लाल सुनि सजनी, को जानै घटकी री ।३।।
हों तो भई सांवरे के बसि, लोग कहै भटकी री ।४।।
मीरां प्रभु के संग फिरूंगी, कुंज–कुंज लटकी री ।५।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ से

सं० पाठ – १. कांण, काणि ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

[मीरां के वे पद जिनकी अधिकांश पंक्तियां पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती हैं,]
केवल एक या दो पंक्तियां नहीं मिलती ।

१

असो पीव जांण न दीजै हो, असो पीव जांण न दीजै हो । टेक ।
चंदण का लेसाय जु लपटाय रहीजे, हो लपटाय रहीजे । १ ।
जु केसर में हीगलु जैसे, राच रहीजे हो ।
पांच सात सखो मी (मि) लकै, रस पीयो हो ॥ २ ॥
साम[1] सलुणों सांवरो मुख, दीठ जीय हो ।
तुम ही पूरण साईयां पुरा, सुख दीजौ हो ॥ ३ ॥
तन मन जोबन वारके, नीब लाल कीजीये हो ।
मीरां व्याकुल (ल्) भई आपणों॰ कर लीजे हो ॥ ४ ॥

राज॰ शो॰ सं॰ चोपासनी, जोधपुर के॰ह॰लि॰ग्रं॰सं॰ ७६३९ से

सं॰ पाठ-१. स्यांम ।

टिप्पणी प्रस्तुत पद से साम्य रखने वाला पद मीरांसुधासिंधु, मीरांमाधुरी, मीरां-बृहत्पदावली भाग १ आदि में आया है किन्तु, उनसे प्रस्तुत पद की प्रथम दो पंक्तियों के अतिरिक्त पद नहीं मिलता । पाठान्तर में कुछ पदों की अधिकांश पंक्तियां मिलती हैं ।

(राग मारू)

पाठान्तर—१. असौ पीव जांन दीजै हौ ॥ टेक ॥
बलि री सखी मिलि राखिये, मुख निरखत जीजे हौ ॥ १ ॥
स्यांम सलौनौ सांवरौ, नैंना रस पीजै हौ ॥ २ ॥
मीरां बिरहनि व्याकुली [अपनी] करि लीजे हौ ॥ ३ ॥

रा॰ प्रा॰ वि॰ प्र॰ जोधपुर के ह॰ लि॰ ग्रं॰ सं॰ १८८२ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—२.

ग्रैसे जन जान न दीजै हो ।
ग्रावो मिलां सहेलड्यां । बांथा सुख लीजै हो ।। टे० ।।
नैन सलौने साइयां । देख्यां सू जीजै हो ।
तन धन जोवन वारकै । निछरावलि कीजै हो ।। १ ।।
ग्रपणी ग्रारत कारणे । वाकै पाई परीजै हो ।
चंदन के ए[क]रूंख ज्यौ । चरण लिपटीजै हो ।। २ ।।
हाथ जोड़ि विनती करुं । मेरी ग्ररज सुणीजं हो ।
मीरां व्याकुल वृहनी । वाकू दरसण दीजं हो ।। ३ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

पाठान्तर—३

ग्रैसे जन जांण न दीजे हो ।
ग्रावो मिलो सहेलड्यां । बातां सुष लीजे हो ।।टेक।।
नैन सलूंनै सांइयां । देव्यां सू जीजे हो ।
तन धन जोवन वारिकै । नछरावलि कीजं हो ।।१।।
ग्रारति ग्रापणी कारणें । वाकै पाई परीजे हो ।
चदण केरा रुंष ज्यूं । चरण लिपटी जे हो ।।२।।
हाथ जोरि विनती करुं । मेरी ग्ररज सुणी जे हो ।
मीरां व्याकुल ब्रिहनी । जाकूं दरसण दीजे हो ।।३।।

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह०लि० ग्रं० से

पाठान्तर –४

ग्रैसौ पीव जांन न दीजै हो ।।टेक।।
चलि री सषी मिलि राषिये, मुष निरषत जीजे हो ।।१।।
स्यांम सलौंनौं सांवरो, नैंना रस पीजै हौ ।।२।।
मीरां बिरहनि व्याकुली, ग्रपनी कर लीजै हो ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—५

इसो पीव जान न दीजै हो ।
स्यांम सलौना लौइइणां, मुष देख्यां जीजै हो ।।टेक।।
आवो सषी सहलड्यो, वाताँ सुष लीजे हो ॥१॥
आरति आपणी कारणे, वाकै पाई पड़ीजै हो ।
आत्माध्यांन लगाई कैं, वाकै चरणा चित दीजे हो ॥२॥
चंदन केस नाग ज्यूं लपटाई रहीजै हो ।
कर जोड़े बीनती करौं, मेरी अरज सुणी जै हो ।।३।।
मीरां व्याकुल बिरहनी, अपनि करि लीजै हो ।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २७ से

पाठान्तर ६

जानै न दीजै हो, असो ही प्रभु जान न दीजे हो ।
तन मन धन करु बारनै, हरदै धरि लीजे हो ॥
आवो सषी मुषी देषिये, नैना रस पीजे हो ।
जांही जांही वद रीझ है, सोही सोही वद कीजे हो ।
सुन्दर स्यांम सुहावणो, मुष देवै जीजे हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर सो तो वडो भागी हो ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९० से

पाठान्तर—७

जान न दीजे हो ईसो, पीय जान न दीजै हो ।
स्यांम सलौंनो सांवरो, मुष निरषत जीजे हो ।।टेक।।
चलो री सषी मिली देषीए, नैनां रस लीजे हो ।
आरति अपनी री सषी, वांकै पाय परीजे हो ।।१।।
तन मन धन वारि कैं, हीरदै धरि लीजे हो ।
जिही जीही विधि हरि मिलैं, सोई सो विधि कीजे हो ।।२।।
भलो कहो कोई बुरी कहो, दोस न दीजे हो ।
मीरां प्रभु गिरधर मिलै, मोहि अभै-पद दीजे हो ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२

एकरण सूं हंस बोल रे धूतारा जोगी ।।टेव।।
अंग भभूत व गले (लें) मृगछाला, कुंज कुंज हंस खोल रे ।।१।।
सेली सींगी भभूत को बटवो, अब तो मुनज खोल रे ।।२।।
जगत वदीत करी मन–मोहन, ओर कहा[1] वजावत ढोल रे ।।३।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोल रे ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

सं० पाठ—१. कईं ।

टिप्पणी-मीराँ माधुरी पृ० ६६ पद सं० २७५ तथा पृ० ४८-४६ पद स० १२५ पर प्रस्तुत पद से साम्य वाला पद है किन्तु, प्रथम पंक्ति साम्य तथा कुछ शब्द साम्य के, दोनों पदों में प्रर्याप्त अन्तर है ।

मीराँसुधासिन्धु–पृ० ६३० पद सं० २१–से प्रस्तुत पद में २ पंक्तियां कम है तथा क्रमान्तर से थोड़ा भेद है। मीराँ बृहत्पद–संग्रह पृ० २६८ पद सं० २४२-२४३, मीरां बृहत्पदावली–पृ० ११६ पद सं० २४१, मीरांसुधासिंधु से साम्य रखने वाला ही पद है। अन्य कई संग्रहों में मीराँसुधासिंधु से पूर्णतया मिलता हुआ पद ही दिखाया गया है।

पाठान्तर – १

हाँ रे जोगी एकर मुं मुख बोल ।।टेक।।
काजल रेख नैन अनीयाली, बूंद मनी द्रिग खोल ।।१।।
अंग बभूत गलै म्रिघछाला, घर घर भीख म[त]डोल ।।२।।
जगत बदीत कीनी प्यारे, कहा वजाऊं ढोल ।।३।।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोल ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३

उधौ लागी कटारी प्रेमनी, प्रेमनी प्रेमनी रे उधौ ला० ॥टेर॥
गोकल(ल़)सूं रै वालौ मु[थ]रा सिधायौ, बात पूछां छां कुसल(ल़) खेंमनी ॥१॥
मैं बल(ल़) जमनां कौ भरण जात ही, माथैं गागरीया हेमनी ॥२॥
मीरां के प्रभु हरि[१] अबनासी, सांवरी सुरत सुंदर स्यामनी ॥३॥

अनूप सं० ला० लालगढ, पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से

सं० पाठ--१. हर

टिप्पणी–मीरांसुधासिन्धु के पृ० २८२ - २८३ पद सं० २३ से अन्तिम दो पंक्तियां मिलती हैं। शेष नहीं।

मीरांमाधुरी-पृ० १४२ पद सं० ३९० प्रथम पंक्ति भेद के साथ २ द्वितीय पंक्ति नहीं मिलती, शेष मिलती है।

पाठान्तर—१

लागी कटागी प्रेमनी उद (ध) व जी, प्रेमनी प्रेमनी ॥टेर॥
गोकुल थी वालो मथुरा गया था, हूं वात पूछूं कुसल खेमनी ॥उधो०॥
जल जमना जल भरवा गया था, माथं गगरीया हेमनी ॥उधो०॥
मीरांबाई कहै प्रभु गिरधर नागर, सांवरी सुरत सुंदर समांनी ॥उधो०॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से

पाठान्तर—२. प्रेमनी प्रेमनी, प्रेमनी उधव जी लागी कटारी प्रेमनी ॥टेर॥
काचै धागै हरि सूं बंधाणा, ज्यूं, ताणे ज्यू तेमनी ॥१॥
जल जमना जी रो भरवानै गई थी, माथैं गागरिमा हेमनी ॥२॥
गोकल सूं तुम मथुरा पधारया, बात पूछू छूं कुसल खेमनी ॥३॥
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, आसा लगी छै थारा नामनी ॥४॥

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४

कज्यौ[1] रे आदेस जोगीया न, कज्यौ रे आदेस ।
आउंगी मै नाय रहूंगी, करु जटा धर भेस ।।टेर।।
कंथा पैरुं भस्म रमाऊं, लेऊ ओ उपदेस ।
गीणातां गीणातां घस गईजी, मा(म्हां)री आगलियां[2] री रेख ।।१।।
माला मुद्रा मेखला रे, जोगी सील खपर लीयो हाथ ।
जोगण होय नै सब जुग ढुंढ्यौ, इण रामईया रै साथ ।।२।।
प्राण हमारौ जहाँ बसे रें, जोगीया है खाली खोड़ ।
मात पिता परबार[3] सुं रै, जोगी रही रैं तीणां ज्युं तोड़ ।।३।।
पांच पचीस सुं बस कीया रे. जोगी पला ने पकड़ कोय ।
मीरां ब्याकुल (ल) ब्रहनी[4] रे, जोगी तुम मिलीयां सुख होय ।।४।।

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से *

सं० पाठ—१. केज्यो । २ आंगलियां । ३. परिवार, परवार : ४. बिरहनी ।
टिप्पणी–१. मीरां सुधासिंधु पृ० ६२६ पद सं० १८० पद की ५ पंक्तियां क्रमभेद से मिलती हैं शेष पद नहीं ।
टिप्पणी–२ *संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० संख्या उन ग्रंथों पर न होने के कारण नहीं दी गई है । अतः ऐसा (*) चिह्न इसी बात का प्रतीक माना जाय ।

५

करणां मा (स्यां) म मेरी ।
हूं तो होय रही चेरी तेरी, भूरु नित टेरी टेरी ।।टेर।।
दरसण कारण भई हू बावरी, ब्रहें[1] बीथा तन घेरी ।
....प्रीत पाछे प्रेरी प्रेरी ।।१।।
तेरे तो कारण जोगण हूं भई हूं, देउं नगर बीच फेरि ।
....कुंज सब हेरी हेरी ।।२।।
अब मैं प्रांण तजूंगी पीया बीना, गयो तन भसमै करोरी ।
..............................अजहूं नाथ नैं मिलैरी मिलैरी ।।३।।
जिन(ण) मिरां कुंगी रभर मिलीया, सुख उपज्यो दुख ग्योरी ।
....रहूं चरणां चेरी चेरी ।।४।।

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

सं० पाठ—१. बिरह ।

CC-0. RORI Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

टिप्पणी–मीराँमाधुरी–पृ० १८२ पद सं० ५०० से प्रस्तुत पद की ३–४ पंक्तियां मिलती हैं वे भी क्रमान्तर से शेष नहीं

मीराँसुधासिंधु–पृ० २०० पद सं० ११२ (बिरह) पद की ४ पंक्तियों का साम्य है। पद पूर्ण भिन्न है। पाठांतर कहीं २ अवश्य मिलते हैं।

होरी

पाठान्तर—१

कारण सुणि स्याम मेरी, मैं तो होय चेरी तेरी ।।टेक।।
दरसण कारण भई बावरी, ब्रिह बिथा तन घेरी ।
तेरै कारण जोगण होऊंगी, देऊंगी नगर बिच फेरी ।।
....कुंज सब हेरी हेरी ।।१।।
अंग भभूत गलै म्रिग छाला । यौ तन भस्म करुंगी !
अजहूं न मिल्या रांम अ(वि)बनासी,बन बन विचि फिरुंगी ।।
....रऊं निति टेरी टेरी ।।२।।
जन मीरां कूं गिरधर मिलीया, दुख मेट सुख मेरी ।
रुंम रुंम साता भई उरमैं, मिट गई फेरा फेरी ।।
....रहूं चर(ण) नन तर नेरी ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से

पाठान्तर—२

करण सुनि स्याम मेरी, हूं तो होइ रही तेरी चेरी ।।टेर।।
दरसन कारन भई बावरी, ब्रह विथा तन घेरी ।
तेरै कारण जोगन होउंगी, देउ नगर विच फेरि ।।
....कुंज वहेरी हेरी ।।१।।
अंग भभूत गलै अगछाला, यो तन भसम करोरी ।
अजहूं न मिलै राम अविनासी, वन वनि वीच फिरुंरी ।।
....रोऊ नित ढेरी ढेरी ।।२।।
जन मीरां ईं गिरधर मिलिया, दुष मेटन सुष देनी ।
रुंम रुंम साता भई उर मैं, मिटि गई के ए फेरी ।।
रहूं चरनन नित चेरी ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

टिप्पणी–मीराँ सुधासिंधु पृ० २०० पद सं० ११२ -पद पूर्णतया मिलता है।

पाठान्तर ३

करुणा सुण स्याम मोरी, मैं तो होय रही चेरि तौरि तौरि ॥टेर॥
दरसण कारण मई वावरी त्रं ह व्यथा तन घेरी ।
....प्रीत उर प्रेरी प्रेरी ॥१॥
तोरै तौ कारण जोगण होय रही, दई नार विध फेरी ।
....कुंज वहेरी हेरी ॥२॥
अब मैं प्रान तजूंगी पीया बिन, यौ तन भस्म करुंरी ।
....अजूंना मिल्यौ री मिल्यौरी ॥३॥
जन मीरां कूं गिरधर मिलीया,सुष उपज्यौ दुष गयौरी गयौ ॥४॥

अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

६

कौंई दिन याद करोगे, रमता राम अतीत ॥टेर॥
आसण मार गुफा विच बैठे, याही जोगीयन की रीत ॥१॥
जो लीनै झंडा नहीं संग चलैगा, छोड़ चल्यौ अध बीच ॥२॥
अगर चंदण की धूंणो धूकाई, दू' रंग मैलन कै बीच ॥३॥
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, जोगी किसका मित ॥४॥

अनूप सं० ला० लालगढ पैलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

सं० पाठ—१. दूयूं ।

टिप्पणी–मीरांसुधासिंधु–पृ० ६२५ पद सं० ७ से प्रस्तुत पद की तीन (प्रथम) पंक्तियां मिलती हैं, शेष दो नहीं । मीरां के पदों के अन्य अधिकांश संग्रहों में मीरांसुधासिंधु से पूर्ण समानता रखने वाला ही पद दिया गया है ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

७

घड़िय न आवड़ै रे वाला, तम दरसरण बिन मोय।
तम विन मेरे प्रांन(ण) पीयारे, जिवन कीस विघ होय। टेर॥
वेग पधारो वाला मां, ब्रंहृन[१] लो वतलाय ।
उर भूष न, लागं नीद न आवै, ब्रं सतावैं मोय ।
घायल ज्युं घुमत रहूं, दरद न जांणे कोय ॥१॥
दीन गमायो षाय कैं, रैण गमाइ सोय ।
प्राण गमाया भुरतां, नैंण गमाया रोय ।२॥
जेऊ असि जांणति, प्रीत कीया दुष होय ।
नगर ढंढोला पेरति, प्रीत करो मत कोय ।।३॥
पल–पल पांथ निहारति, बैंठ रहो मघ जोय ।
मिरां कहै प्रभु गीरधर नागर, रांम मिल्यां सुष होय ।।४॥

रा० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १०४५७ से

सं. पाठ—१. विरहण ।

(राग कालिगडौ)

पाठान्तर—

घडीय न आलगै वाला हो, तुंम दरसण बिना मौय ।
तुंम विना मेरै प्रांन पियारे, जीवण कैसे होय ॥टेर॥
दिवस न भूष, रैन नहि निद्रा, ब्रंह सतावै मोय ।
घायल ज्यूं घूंमूं सदा, दरद न जानै कोय ॥१॥
दिवस गमायो षाय कै रे, रैन गमाई सोय ।
प्रांण गमायो भूर कैं, मैं नैंन गमाऐ रोय ॥२॥
जे हूं असी जांनती रे, प्रीत कीया दुष होय ।
नगर ढंढोल्यो फेरती रे. प्रीत करो मत कोय ।।३॥
पल पल पथ निहारतां, दीठ रही मग जोय ।
मीरां कै है प्रभु गिरधर नागर, तुम मिलियां सुष होय ।।४॥

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८

जावा दो ये सईयां, जोगी किसका मीत ॥टेर॥
सदा उदासी मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत ॥१॥
बोलत बचन मधूरै से मीठै, जोरत[1] नांही प्रीत ॥२॥
म[2] जाण्यौ जोगी लेय निभेगो, छोड चले अध बीच ॥३॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, प्रेम पीयोला[3] मीत ॥४॥

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० प्रं० से

सं० पाठ—१. जोड़त । २. मैं । ३. पीयालो, प्यालो ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु–पृ० ९२८ (पद सं० १४) से प्रस्तुत पद की प्रथम तीन पंक्तियां पूर्णतया मिलती हैं, शेष दो नहीं ।

९

तुम बिनि रांम सुनै को मेरी ॥टेक॥
ऊभी खेवटंणी अरज करत है, मलवा नै नाव पछम कूं घेरी ॥१॥
नदियां गहरी नाव पुरांणी, अध पर नाव भंवर नैं घेरी ॥२॥
खेई है सोई पार करैगा, बूड़ जाइ तौ रही काहा[1] तेरी ॥३॥
मीरां कै प्रभू हरि अबनासी[2] दोऊं कुल(ल) त्याग सरण लई तेरी ।४॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्रं० सं० १०८४७ से

सं० पाठ –१. कहां । २. अविनासी ।

टिप्पणी मीरांसुधासिंधु–पृ० ४४ पद सं० ७३ से प्रस्तुत पद की आधी प्रथम, आधी चोथी पंक्ति के तथा कुछ शब्दान्तर के साथ पद समानता रखता है । यही पद मीरां वृहत्पदावली भाग १ (स्व. पु. ह. ना) में पृ० १९८ तथा मीरां बाईनां भजनो के पद सं० ४६ पर भी दिया गया है ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद सांईवानी ।

१०

द्रस्टी मांनु[1] प्रेमनि कटारी है ।।टेर।।
लागत बेहाल भई घर हूं की, सुध नांही, तन हूं मैं व्यापी पीड़ मतवारी है ।।१।।
खीमि ती दोय च्यारी वावरी भई है, सारी निस दिन व्रहलिया ग्रास की पुकारी है ।२।।
चाहत चकोर चंदा दिपग पतंग, जैसे जल विनै मरे मीन ग्रेसी प्रीत प्यारी है ।।३।।
विनां देख्यां कैसे जीवैं कल(ल्) न पड़त, हीयैं जोय वाकु ग्रैसी कहीयो मीरां तो तिहारी है ।।४।।

राज. शो. सं चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७६६४ से

सं. पाठ—१. मांनो

टिप्पणी—मीरां वृहत्पदावली-भाग १ (स्व. पु. ह. ना.) पृ० ३०८ पद सं० ६११ से प्रस्तुत पद की तीसरी पंक्ति नहीं मिलती तथा ग्रंतिम पंक्ति में ग्रंतर है। शेष पद मिलता है। यही पद मीरांमाधुरी के पृ० २२ पद सं० ५६ पर भी दिया गया है।

पाठान्तर—१.

सावरा की दिष्ट मानु, पेम की कटारी है ।।टेर।'
देषत ही बिहाल भई. सरीरा री सुध न रही ।
तन ही मैं प्रेम प्रगटौ, ;मनिह मितबाली हैं ।।१।।
सषी मिल दोय च्यारी, वावलो भई न्यारो है ।
मैं तो व्याकौल भई, जानौं कुंजि की बहारी हो ।।२।।
चंद कौं चकोर चाहैं, दीपक पतंग जालैं ।
जल विन मिन दुषी, ग्रैसो प्रीत प्यारी है ।।३।।
बीनती हमारी उधो, माधो लग पुहचाईवौ ।
माधो जी कुं ग्रैसे कहीवौ, मोरां तौ तुमारी हैं ।।४।।

राज. शो सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७६६५ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—२

सावरा को दिष्टि मानु, प्रेम की कटारी हैं ।।टेक।
दीषत ही बेहाल भई, सरीरा री सूधै नी रेही ।
तनही मां प्रेम प्रगटी, मनह मित बली है ।।१।।
सषी मिल दोय च्यारी, बावली भई न्यारी हैं ।
मां तौ व्याकुल भई, जानौं कुंजि की विहारो हैं ।।२।।
चंद्र को चकौर च्रहैं, दीपग पतंग जालै है ।
जल बिना मिन दुषिया, ग्रैसी प्रीत प्यारी है ।।३।।
बीनती हमारी उधो, माधो लग पहुचाईवो ।
माधो जी कुं ग्रैसे कहीवो,मीरां तो तुमारी है ।।४।।

संत साहित्य संग्रम, बाकानेर के ह० लि० प्रं० से

पाठान्तर—३

सावरे की द्रसट मानो, प्रेम की कटारी है, लागत बेहाल भई ।
गोरस की सुधी गई मनहूंन, व्यापो प्रेम भरे मतवारी माई ।।
चंद तो चकोर चाहै, दीपत पतंग जारै जल बिन मर मीन ।
ग्रैसी प्रीति प्यारी है, सषी मिले दोय च्यारि सुनोरी सयानी नारी ।।
ईनऊ न जानो नाही कुंज के बिहारी है,मोर तो मुकट माथ छवि गीरधारी है ।
सावरी सुरत परि माधकरी, मुरतपरि मीरां वलिहारी है ।।१।।

रा. प्रा. वि प्र. जोधपुर के ह. लि. प्रं. सं. १८८२ से

टिप्पणी—मीरां माधुरी–पृ० २२ पद सं० ५६ से पद पूर्णतया मिलता है ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—४

(राग जेजेवंती)

सांवरा की दीष्ट मानु प्रेमनी कटारो है ।।टे०।।
सषी मील दोय च्यार वावरी सी भई,
नारी मैं तो उवाकू नीको ज्यानो कुंज कै विहारी ।।१।।
लाग वीहा[ग] भई गोरस की सुध नाही तनकूं,
मैं वाप्यौ कांम मन मतवाली है ।।२।।
चंद चकोर नीरषे दिवक पतंग जल कै,
जल वीन मीन नल कै अैसी पीत प्यारी है,
अैसी तुम कहीयो उधो, मीरां तो तीहरी है ।।३।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ६२६६ से

पाठान्तर—५

सावरे की द्रसट मानो. प्रेम की कटारी है ।
लागत बेहाल भई, गोरस की सुधी गई ।।
मनहू न व्यापो प्रेम भर मतवारी है माई ।
चंद तो चकोर चाहै, दीपग पतंग जारै ।।
जल बिन मर मीन, अैसी प्रीति प्यारी है ।
सषी मिले दीय च्यारि, सुनोरी सयानी नारी ।।
ईनहून जानो नाही. कुंज को बिहारी है ।
मोर तो मुकट माथ, छवि गीरधारी है ।।
सावरी सरत परे माधकरी, मुरत परि मीरां बलिहारी है ।।१।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८६० से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

११

नातो हरि नाम को मोसूं, तनक न तोड़्यो [जाई] ।।टे०।।
पीया कीजि पीरी पड़ी रे, लोग कहे पिडरोग ।
छांनै लांघन मैं कीया री सजनी, राम मिलण कै जोग ।।१।।
खिण आंगणे खिण डागले (लै) रे वाला, खिण खिण ऊबी होइ ।
घायल ज्यूं घूमंत फिरूं रे, म्हारो मरम न जाणे कोई ।।२ ।
बावल वेद बुलाईया, म्हारी पकडी दिखाई बांह ।
मूरिख[1] बैद न जानई, म्हारे करक कलेजा मांहि ।।३।।
जा जा वैद घर आपणे रे, म्हारो तू नाम न लेह ।
मै तो दाधी व्रहकी रे, तू काई दासै (जै) देह ।।४।।
रे रे पापी पपीहा (ह्या) री रे, पीया को नाम न लेह ।
कोईक व्रहनि साम्हलै रे, तो पीव भरण जीव देहि ।।५।।
काढि कलेजा में धरू, इडि कै वां ले जाई ।
ज्यां देसां म्हारो पीव वसै, वै देखे तू खाई ।।६।।
पीव मिल्या जी ऊबरी रे, नातर तजूं हमारी देह ।
दासी मीरां रामराती हरि, विनि किसो सनेह ।।७।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

स. पाठ- -१ मूरख

टिप्पणी:--- मीरांसुधासिंधु - पृ. १८५ पद सं. ७२ से प्रस्तुत पद की आधी बाहरवीं तथा अन्तिम दो पंक्तियां नहीं मिलती - शेष पद मिलता है ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—

नातो नांव कौ मोसूं, तनक न तोड़्यौ जाइ ।।टेक।।
पाना ज्यूं पाली (ली) पड़ी रे, लोग कहे पींडरोग ।
छांनै लांघण मैं कीया सजनी, राम मिलण कै जोग ।।१।।
बाबल(ल) बैद बुलाइया रे,पकड़ि दिखाई म्हारी बांहि ।
मूरिख बैद मरम नहीं जांणै, करक कलजा मांहि ।।२।।
जाहो (ओ) बैद घरि आपणै रे, म्हारो नांव न लेह ।
म्हे तो दाधी बिरहकी तूं काहे कूं ओखदि देह ।।३।।
मांस गले - गलि छीजीया रे, कर करह्या गलि आहि ।
आंगलिया कौ मूंदडौ म्हारे, आंवण लागौ बांही ।।४।।
रहो रहो पापी पपइया रे, पीव कौ नांव न लेह ।
जे कोई बिरहनि साम्हलै तो, पीव कारणि जीव देह ।।५।।
खिण मिंदर खिण आंगणे रे, खिण खिण ठाढी होई ।
घायल ज्यूं घूमूं खरी, म्हारी बिथा न बूझै कोई ।।६।।

भारतीय बिद्या मंदिर बीकानेर के हं. लि. ग्रं. से

१२

नथ म्हारी दीजो जी व्रजवासी ।
मैं तौ चरण कमल (ल) की दासी ।।टेर।।
रास रमंता नथ म्हारी घ(ग)म गई, सब कूं ओलंबौ आसी ।
ग्वाल - बाल सारा मिल हेरौ, ग्वालन(ण) भई उदासी ।।१।।
व्रंना(दा)वन में रास रमोगे, रास रमण कुण आसी ।
मै तौ म्हारे पीहर जासां[१], बावल(ल) ओर घड़ासी ।।२।।
समदरीया मैं सीप नीपजं, उनका मोती पौवासी ।
गोकल(ल) मे इक सोनी वसत है. बाबल(ल) उनकूं बुलासी ।।३।।
यूं मत जाणौं नथ फबी. मोवत में वां दलाली मे जासी ।
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, चरण कवल की दासी ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ़ पेलेस, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं.११३ से

सं. पाठ—१ जास्यां

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

टिप्पणी–मीरांसुधासिंधु पृ. ६९३ पद सं. ३५१ से प्रस्तुत पद की द्वितीय पंक्ति तथा ६वीं आधी पंक्ति नहीं मिलती तथा शेष पद का क्रमान्तर-भेद भी है।

१३

नैनन[१] मैं नंदलाल बसो मेरे नैनन मं नंदलाल।
अधर सुधारस मुरली (ली) राजै उर, वैजंति माल (ल) ।।टेक।।
मोर-मुकट मकराकृति कुंडल(ल) अरुन(ण) तिलक दीयौ भाल(ल)।
मुभ्र ब(व्रि)न मोहन करत है,कीडा संग सखा ब्रजवाल ।।१।।
जमुना - तटि निकट वंसी बट, विहरत कुंज रसाल ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर भक्ति वछल प्रतिपाल ।।२।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ से

सं. पाठ - १. नेनण

टिप्पणी–मीरांसुधासिंधु पृ ८१३ पद सं १ से प्रस्तुत पद की प्रथम, द्वितीय और अन्तिम पंक्तियां मिलती हैं, शेष दो नहीं,किन्तु जो मिलती हैं उनमें भी क्रमान्तर है। मीरां माधुरी पृ. १६-१७ से इस पद की चार पंक्तियां मिलती हैं. शेष नहीं।

पाठान्तर—राग राम कली

नैंनन में नंदलाल बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
....
मधवन मोहन करत है क्रीड़ा सग सखा प्रजवाल ।।१।।
....

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह लि प्र. सं. १८८२ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४

पपइया रे पिव की बांणी¹ न बोल
सुण पावैली व्रंहनी² थांरी लै ला पांष मरोल³ ।।टेक।।
चांच काऊं थारी पपइया रे, ऊपर डालर लूंण ।
पीव हमारा मै पीया की रे, तूं पिव कैहै सो कूंण ।।१।।
थारा तौ सबद सुहावणा रे बाला ! जो पीव मेलौ आज ।।
चांच मढाऊं थारी सोवनी रे, तूं म्हांरं सिरताज ।।२।।
प्रीतम कूं पत्तीया लिषूं रे बाला ! कऊ वानूं ले जाय ।
जाय पीया जी नै युं कहौ जी, थांरी व्रंहन धांन न षाय ।।३।।
प्रीतम तम मत जांण ज्यौरे बाला ! तम बिछड्या मोहि चैन ।।
तन सुष जब हीया वसरे बाला ! देषूं भर भर नैंन ।।४।।
मीरां व्याकुल व्रंहनी रे बाला ! पिव पिव करत्त विलाप ।।
तम मिलीयां सुष पावसां, प्रभु अंतरजांमी आप ।।५।।

राज. शो सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं ७१४३ से

सं. पाठ—१. बांणी । २. विरहणी । ३. मरोड़ ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ० १६४ पद सं० ६६ (दसवीं और १२ वीं) दो पंक्तियों के अतिरिक्त पद पूरा मिलता है ।

पाठान्तर—१

पपीया रे पीव की वानी न बोलि ।
सुनि पावैगी व्रहनी रालैं ली पांष मरोड़ि ।।टे०।।
चांच कटांऊ पपीया रे, ऊपरि कालो रे लौंग ।
पीव हमारं मै पीव की रे, तूं पीव कहै सो कौंण ।।१।।
थारा सवद सुहावणा रे, जौ पीव मिलावै आज ।
चांच मंडाऊ थारी सोहनी, तुम्हारै सिर साजि ।।२।।
पीतम कूं पतियाँ लिषूं, कागा तू ले जाइ ।
पीतम कूं तू यौ जाइ कहियौ, थारी व्रहणी अंन न षाइ ।।३।।
तुम मति जानो प्रीतमा हो, तुम बिछड्या मोहि चेंन ।
मोहि चैन न जब होइगा, भारि भारि देषूं नैंन ।।४।।
मीरां दासी वारणे हो, पीव पीव करत विहाइ ।
वेगि मिला प्रभू अंतरजामी, तुम विन रह्यो न जाइ ।।५।।

रा. प्रा. वि. प्र. जयपुर के ह. लि. ग्रं.सं. ७३ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर – २

पपईया रे पीव की बांण न बोल ।
सुण पावेली ब्रंहनी रे थारी, लैला पांप मरोर ।।टेक।।
चांच कटाऊ थारी पपईया रे, लाऊं कालर लूंण ।
पीव म्हारा मैं पीव की रे, तूं पीव कहैस कूंण ।।१।।
थारा तौ सबद सुहावणा रें वाला ! जो पीव आवै आज ।
चांच मंढाऊं थारी सांवरी रे, तू म्हारे सिरताज ।।२।।
प्रीतम कूं पतीयां लिषूं रें, कागवा तूं ले जाय ।
जाय पीया जी नें यू. कैहै ज्यारे, थारी ब्रंहन धान न षाय ।।३।।
पीतम तुंम मत जान जो रे,तम बिछड्यां मोय चैन ।
तन सुष जब ही पावसूं, देषूं भर भर नैंन ।।४।।
मीरां व्याकुल ब्रंहैनी रे, पिव पिव करै रे विहाय ।।

रा. प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह लि. ग्रं. सं. १०८५२ से

पाठान्तर—३

पपईय रि पिव की बांण न बोल ।
सुण पावेला ब्रंहैनी, लैला पाँष मरोल ।।टेक।।
चांच कटाऊं थारी पपईया रे, लाऊं काल (ट)र लूंण ।
पीव हमारा मे पीया की रे, तू पिव बोलै कूंण ।।१।।
थारा तो सबद सूहावणा रे, जो पिव आवे आज ।
चांच मंडाऊ थारी सोनवो रे, तूं म्हारे सिरताज ।।२।।
पीतम कूं पत्तया लिषू रे, तूं ले जाय ।
जाय प्रभूजी नै यूं कहै ज्यौरे,थारी ब्रंहन धान न षाय ।।३।।
प्रीतम तम मत जांण जो रे. तम विछर्‍या मोहि चैंन ।
तन सुष जब ही पाव सूं र, देषूं भर भर नैंन ।।४।।
मीरां व्याकूल ब्रंहैनो, पिव पिव करे विहाय ।
तम घर आवौ राम पियार, तम विन रहीयो न जाय ।।५।।

राज. शो. सं. चौपासनी जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. ७१४२ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१५

पीया तेरे नांव लोभानी[१] हो ।
काऊ की मै बरजी नांहि रहूं ।।टेर।।
सखो सहेली सु(ण)न मेरी हेली, नीकी वात कहूं ।।१।।
सासू नणदल देराणी जेठानी, सबका वचन सहूं ।।२।।
तन धन सब अरप(ण)न ले करहूं, उलटौ पंथ गहूं ।।३।।
मीरां कहै प्रभु गोरधरनागर, सतगुर सरणै रहूं ।।४।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. १०८५१ से

सं. पाठ —१ लुभांनी ।

टिप्पणी:-मीरांसुधासिंधु पृ. ८६६ पद सं. १ से प्रस्तुत पद की प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता ।

पाठान्तर—१

पीया तोर नांई लूभानी हो ।
नावै लेवत तिरता सुण्यां, असे पवन और पांणी हो ।।टे०।।
सुकरत केई नां कीया, बहू करम कमानी हो ।
गनिका किर पठाव, तै बकूंट पठानी हो ।।१।।
पुत्र हेत पदई दई, जुग सार जांणि हो ।
अज्यामल-से उधारिया, जम-त्रास मिटाणी हो ।।२।।
अरध नाम कूंजर लियौ, गई ओधि बिलानो हो ।
चक्र ले हरि आइया, जिन किवि कुरबांणि हो ।।३।।
नावं महातम गुर दीयो, सोई वेद बखाणि हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, परतित बंधानी हो ।।४।।

राज. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह लि. ग्रं. सं ८३६६ से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—२

पीया तेरै नांव लुभांनी हो ॥
नांव लेत तिरता सून्या, जैसे पाहन पांनी हो ।।टेर।।
सूंकृत कबहूं नां कीयो, बहूं करम कमानी हो ।
गिनका सूवा पठावतां, वैकुंठ पठांनी हौ ।।१।।
अज्यामेल साउ धरे, जम-त्रास मिटानी हो ।
पुत्र हेत पदवी दिवी, जग सारै जांनी हो ।।२।।
अरध नांव कुंजर लीयौ, वाकी अवध घटानी हो ।
गुरुड़ छाड़ हरि ध्यावीया.पसूं-जूंन मिटानी हो ।।३।।
सोई नाम सतगुरु दिया, सोई वेद वषांनी हौ ।
मीरां दासी कारणे, अपनी कर जानी हौ ।।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि.ग्रं.सं ७१९१ से

पाठान्तर- -३

पीया तेरै नाम लोभानी हो ।।
नाम लेत तिरता सुण्या, जैसे पाहन पानी हो ।।टेक।।
सुकृत कोऊ नां कीयौ, बहू करम कमानी हो ।
गिनका सूवा पठावतां, बैकूट पठानी हो ।।१।।
अज्यामेल-से उधरे, जम-त्रास मिटांनी हो ।
पुत्र हेत पदवी दिवी, जग सारै जांनी हो ।।२।।
अरध नाम कूंजर लीयौ, वाकी अवध घटानी हो ।
गुरड छाड़ि हर ध्यावीया, पसू-जूंण मिटानी हो ।३।।
सोई नाम सतगुर दया, सोई वेद वषानी हो ।
मीरांदासी कारणे, अपनी कर जानी हो ।।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७१४३ से

CC-0. KURI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—४

नाम लभांनी हौ, साई तेरे नामि लुभांनी हौ ॥
नाव लेत तरते सुनै मै, पाहन पानी हौ ॥टेक॥
अरध नाव कुंजर लीयौ, वाकी अवधि बिहांनी हो ॥
अड़ छाड़ि हरि ध्याईये, पसु-जुनि मिटानी हौ ॥१॥
अजामैल ऊधारीय्यौ, जम - त्रास मिटानी हो ॥
पुत्र हेत पदई दई, सब कांहू न जानो हौ ॥२॥
सुकृत तो कछु नां कीयो, वौह क्रम कमानी हो ॥
गनिका कीर पढ़ावता, बैकुंठ पठानी हो ॥३॥
नाव महातम गुर कह्यौ, अर वेद बषानी हौ ॥
मीरां व्याकल ब्रहनी, अपनी करि जांनि हो ॥४॥

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं. ३६१५२ से

पाठान्तर—५

नाम लोभांनी हो, पीया तेरे नाम लोभानी हो ।
नाम लेत तरता सुनिया में तौ पथर पानी ॥टेक॥
सुकृत तो कछु नां कीया, बहू कर्म कमानी हो ॥
सूवा पढावत गनका तारी, बैंकूंठ वसानी हो ॥१॥
पतती अजामेल तारी औ, जंम-त्रास मिटानी हो ॥
पुत्र हेत पदवी दई, सव काहू तें जानी हो ॥२॥
अमीष प्रेहेलाद की, सुनी अकथ कहानी हो ।
द्रपदी चोर बधारीया, भया भूप वीसानी हो ॥३॥
अरथ नांम कूंजर तर्‌यौ, जब आई तुलांनी हौ ॥
चक्र ले हरि धाये हो, पसू - जोन मिटानी हो ॥४॥
नाम महेमा गुर कह्यौ, परतीत बंधानी हो ॥
मीरां प्रभू हरि मिलै, मेरी वेदनां जानी हो ॥५॥

राज. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. प्रं. सं. ८२९१ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर – ६

पीया तोरै नाम लुभानी रे।
नाम लेत तिरता सुण्या, जैसै पांहन पाणी रे ॥टेर॥
अरध नाम कुंजर रट्यौ, वाकी अवधि सिरानी रे।
गरुड छाड हरि आविया, पसू-जूण मिटाणी रे ॥१॥
सुकरत कछू नां कियौ, बहु करम कमाणी रे।
गिनका कीर पठावतां वैकुंठ पठाणी रे ॥२॥
अज्यमिल-से उधरे, जमत्रास मिटाणी रे।
पुत्र हेत पदवी लही, जग सारे ही जाणी ॥३॥
नाम म्हातम गुरां दीयौ, सो वेद वषाणी रे।
मीरां दासी राज री, अपनी कर जांणी रे ॥४॥

अनूप सं. ला. लालगढ़ बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं. ११३ से

पाठान्तर –७

पीया तेरै नांव लुभाणी हो।
नांव लेत तिरता सुण्या, जैसैं पाहण पांणी हो ॥टेक॥
सुक्रत कोई नां कीयौ, बोहो क्रम कुमांणी हो ॥
गिनका कीर पठावतां, बैंकूंट वसांणी हो ॥१॥
अरध नांव कूंजर लीयौ, वाकी अवधि घटांणी हो ॥
गरड छांड़ि हरि ध्याइया, पसू–जूंणि मिटाणी हो ॥२॥
अजामेल-से उधरे, जम-त्रास मिटाणी हो ॥
पुत्र हेति पदवी दइ, जग सारै जाणी हो ॥३॥
नांव म्हातम गुर दियौ, सौ ही वेद बषाणी हो ॥
मीरां दासी कारणे, अपणी करि जांणी हो ॥४॥

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह. लि. प्रं. से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६

हरजस। राग सोरठ

पीया वीनं[1] सूनों मोरो देस।
जा तन को रोहे मार स्या हें, कोई ग्रासै हे पीव मिलावैं ॥१॥
कोई छांनै मानैं करूं पेस तेरे कारणे, वन बन ढूंढ करूं जोगण को वेस॥२॥
जागैतै वाही तो ग्राना प्रीयौ, पाछै रैहुयेगा केसै ॥३॥
मीरां कै प्रभु ग्र(गिर)धर नागरं, तांजैं गाय नांवै नारेसंघ ॥४॥

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८३६६ से

सं. पाठ – १ बिन

टिप्पणी—मीरां सुधासिंधु पृ. १६५ पद सं. ६७ प्रस्तुत पद की प्रथम तथा ग्राधी द्वितीय पंक्ति मिलती है, शेष पद नहीं।

१७

राग मारू —
पीया मोहे ग्रारत तेरी हो।
तेरे कारण साइीयां ह्म करू सेझ संवेरी हो॥
ग्रायो सांवण भादवो, बरषा को ग्रागम हो।
भुट घटा मट हुयि रही, नैना झर लायो हो॥
नेनन(ण)ते झरवाझर बरषो येक धारा हो।
या तन भीज काव वो, तन ताप वुझावो हो॥
या तंन को दीवलो(लो) करूं मनछा की बाती हो।
तेरे कारण साऐया[1], जारू नेस[2] राती हो॥
पाटी पारी(डी) प्रम की, वह मांग सुवारू हो।
तेरे कारण साइीयां, जोबन तन गारूं हो॥
सेझडोया न वरगीया, वह फूल बेछावु हो।
रेण गेणु तारा गेणु, पीग्रा ग्रजहु न ग्राये हो॥
मात पिता तमकुं दइी तम ही भल जाणु हो।
तम वेण वोरन, साइीयां, हीरद नहीं ग्राणु हो॥
पुरण पुर पुरीणां, पुरो सुष दीजै हो।
मीरां प्रभु विरहणी, ग्रपणी करे लीजैं हो॥
पीया मोहे ग्रारत तेरी हो।

ग्रनूप सं ला लालगढ, बीकानेर के ह. लि. ग्रं सं २२३ से

सं० पाठ—१. साईयां । २. दिन, नित।

टिप्पणी – मीरांसुधासिंधु पृ. १६६ पद सं. १६ से पद की प्रथम तीन पंक्तियों तथा ग्रन्तिम पंक्ति के ग्रतिरिक्त पद नहीं मिलता।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—१

पीया मोय आरत तोरी रे ।
तोरि नै तोरा नाम री, मोय सांज संवेरी रे ॥टेर॥
आयौ सावण भादवौ, विरषा रितु आई रे ।
बीज भल - भल हो रही, नैण झर लाया रे ॥१॥
या तन कौ दिवलौ करू, मनसा की बाती रे ।
सैजडीयां बहु रंगीयां, चंगा फूल विछाया रे ।
रैण गई तारा गया, साई अजहू नी आया रे ॥२॥
पाटो पांडू प्रेमनी, बुध मांग संवारू रे ।
सांई तौरै कारणे, धन जोबन वारू रे ।
तुम प्रभू पूरण पूरणा पूरौ जस लीजै रे ।
मीरां दासो राज री, अपनी कर लीजे रे ॥३॥

अनूप सं. ला. बीकानेर के ह. लि. प्र. सं. ११३ से

पाठान्तर—२

पीया मोहि आरत तेरी हो ।
काहै कौ दिपक करू, काहे को बाती हो ॥टेक॥
या तन को दीपक करौं, मनसा की बाती हो ।
तेल धुवां वे प्रेम का, जारौ दिन राती हो ॥१॥
सेजरीया बऊ रंगीया, चुनि फूल बिछाये हो ।
मारग जोउ स्याम की, अबऊ नही आये हो ॥२॥
म वच क्रम तोमौं लगी, चाहौ सो कीजै हो ।
मीरांबाई बा(आ.प री, अपनी कर लीजै हो ।३॥

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह. लि. प्र. से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—३

पीया मोहि आरति तेरी हो ।
आरति तेरो तेरा नाम की, मोइ सांझ सवेरी हो ॥टे०॥
या तन को दिवलो करु, मनसा की बाती ।
तेल जालाऊं प्रेमको, बालूं दिन राती हो ॥१॥
पाटी पारु ग्यान की, बुधि माग सवारु हो ।
साइ तेरै कारणे, धन जोबन गारु हो ॥२॥
आयौ सावण भादवो, वरषा रुति आई हो ।
वीज झलामल होइ रही, नैणां झड़ लाई हो ॥३॥
सेजडल्यां वोहो रंगीया, चंगा फूल बिछाया हो ।
रेणि गई तारा गिनत, प्रभू अजहू न आया हो ॥४॥
थे छो पूरण ब्रह्मजी, पूरा सुष दीजो हो ।
मीरां व्याकुल ब्रहनो, अपनी कर लीजै हो ॥५॥

रा. प्रा. वि. प्र. जयपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७३ से

पाठान्तर—४ (राग मारु)

पिया मोह आरत तेरी हो,तेरी तेरा नाव की मोह सांझ सबेरी हो ॥टेर॥
नैन में झरना झरै, वरसै एक ही धारी हो ।
भीजत है तन कपवा,तन ताप निहारी हो ॥१॥
मांग संवारु ग्यांन की, वुध पाटी पारुं हो ।
सांई तेरे कारणे,धन जोवन वारूं हो ॥२॥
या तन का दिवला करूं,मनसा की बाती हो ।
लोही सिंचु तेल ज्युं,वारुं दिन राती हो ॥३॥
सेज सुंवारु सांईया, प्रेम फुल बिछाया हो ।
मारग जोऊं पीवका,अजहू नहीं आया हो ॥४॥
मेरा प्रीतम एक तुम, दुजा नांही जानुं हो ।
तुम विन ओर भरतार कुं,हृदै नहीं आंनु हो ॥५॥
तुम हो पुरण पुरण, पुरा सुष दीजै हो ।
मीरां वीरहन व्याकुली अपनी कर लीजै हो ॥६॥

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७६६४ से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—५

आरति तेरी हो पीया, मोहि आरति तोरी हो ।
आरति तोरी तौरै नांव की, भजूं सांज सैवैरी हो ।।टेक।।
या तन को दिवलो करुं, मनसा की बाती ।
तेल सींचावूं प्रेम को, जागियौ दिन राती हो ।।१।।
पाटि पाडु प्रेम की, वलि मांग संवारौ हो ।
थार कारन साईयां, धन जोबन वारों हो ।।२।।
आया सांवन भादवौ, व्रिषा रुति आई हो ।
बिरह जड़ लह्यौ प्रेम को, नेणां झड़ लाई हो ।।३।।
सेजड़ियां बहू रंगीयां, फूलां सेज विछाई हो ।
रैन गिई तारा गिण, हरि अजहूं न आया हो ।।४।।
थे छो पूरण पूरवा, पूरा सुष दीज्यौ हो ।
मीरां व्याकुल व्रहनि, अपनी करि लीज्यौ हो ।।५।।

राज. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८३९९ से

पाठान्तर—६

आरति तेरी हौ पिया, मोहि आरति तेरी हौ ।।
तेरीज तेरी नाव री, मोहि सांझ सवेरी ।।टेक।।
या तन कौ दीवलौ करौं, मनसा की बाती ।
तेलज पूरौ प्रेम रौ, जालौं दिन राती ।।१।।
पाटी पाडौं ग्यान की, वुधि मांग सवारौ हौ ।
तेरे कारण सांईयां, धन जोबन वारूं हौ ।।२।।
सेझड़ियां हू रंगियां, चगे फूल विछाये हो ।
बाटज म्हालूं सांझ की पीव अजहू न आये हो ।।३।।
आंवन आंवन कहि गयं, पीय अजहूं न आये हो ।
भौंह घटा घन उमड्या, नैणी झड़ लाये हो ।।४।।
तुम हो पूरण पूरणां, पूरा सुष दीजे हो ।
मीरां बिरहनि व्याकुली, वडभागी ती रीझै हो ।।५।।

रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर - ७

आरति तेरी हो पीया, मोहि आरत तेरी हो।
तेरी तेरा नाम की, मुज सांझ सवरी हो॥
नैनां का झरणा झरै, बरसै येक धारी हो।
भीजत है तन कांचुकी, तन ताप निवारी हो॥
मांग सवारो ग्यान की, बुद पाटी पाडी हो।
साई तेरे कारन, धन जोवन वारी हो॥
तेल जलावै प्रेम को, जालू दिन राती हो।
सेज सांवरी साईये, प्रेम फूल विछायो है॥
मारग जोउ पीव का, अद जह नहीं आये हो।
मेरा प्रीतम येक तु, दूजा नहीं जान हो॥
तुम विनि ओर भरतार को,हरदै नहीं आन हो।
तुम तो पुरन पुरना, पुरा सुष दीजे हो।
मीरां ब्रहैन लाडली, अपनो कर लीजै हो॥

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८६० से

१८

प्रीत निभाजौ[1] जी सांवरिया ।।टेर।।
थे छौ वाला सुखडै रा[2] सागर, ओगण दिस मत जाज्यो जी ।।१।।
मन नहि धीजै दिल न पतीजै, मुखड़ैरा वचन सुणाजौ जी ।।२।।
मैं छूं दासी जनम जनम की, रमता आंगण आजौ जी ।३।।
मो अबला(ला) पर किरपा कीजौ,दया कर दरस दिखाजौ जी ।।४।।
मौ नुगणी मैं(में) गुण कछु नांही,ओगण चित न लाजौ जी ।।५।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, बेडौ पार लगा जौ[3] जी ।।६।।

अनूप सं. ला लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं. ११३ से

सं. पाठ—१ निभाज्यो। २ सुखड़ेरा। ३. ज्यो।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ६२२-६२३ पद सं. १३६ से प्रस्तुत पद की प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—१. (राग कालगड़ो)

प्रित नीभाज्यो रि (री) सांवरी ।।टेर।।
लोक न धीजै मौरो मन न पतीजै, मुखडं रा वचन सुणज्यौ रे साजनीया ।१।
मैं हूं दासी जनम जनम की र, मता मोरै घर आज्यो जी ।२।
थे छो मौरे सुख रा सागर, औगण दीसा मत जाज्यो जी ।३।
मीरां कै है परभु गिरधर नागर, बैंड़ा पार लंघाज्यो जी ।४।

अनूप सं. ला. लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह. लि. ग्रं सं. १७२ से

१९

प्यालो कींउ रे पठायो राणाजी, प्यालो कीउरे पठाया ।।टेर ।
आज काल की नहीं रे मीरां, जब को भ्र(ब्र)मंड छायो ।
मेरतीया 'ग(घ)र जनम लीया हे, मीरां नाम केवाया ।१।
कनक कटौरे ले वीख गो(घोल्यो)ल्या दयाराम पांड्या लाया ।
आगो पाचो छो) क(छु)चु न जोयो, कर चरणाम्रत पाया ।२।
बुरी बात तो मैं नहीं कीदी, राणोजी कींउर रीसाया ।
तुमरी हमरी देह धरी हो, जांको हरीजस गायो ।३।
पेल्हाद की परतंग्या राखी खंब(भ) फाड़ हरी आया ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, छेलो हरजस गायो ।४।

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से

टिप्पणी— मीरांवृहत्पदावली (प्रथम भाग) पु०ह०ना०पृ० ३११ पद सं. ६१६ से इस पद की ७ और ८ दो पंक्तियां नहीं मिलती, शेष मिलती हैं ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—२

राणां जी मां(म्हां)नै प्यालो क्यूं रे पठायो । भयो नहीं थारो भायो ।।टेर।।
आज काल की नहीं है मीरां, जब ब्रंहैमंड रचायो ।१।।
मेड़तीया घर जन्म लियो है, मीरां नाम धरायो ।२।।
रतन कटोरा मै विष ले घोल्यो,दयाराम पांडेयो लायो ।३।।
आगो पाछो जोयो नांही, चरणाम्रत कर पायो ।४।।
बुरी वात तो हम नहीं कीनी, रांणो क्युं रै रीसायो ।५।।
प्रहलाद की प्रत्यंग्या राखो, खंभ फोड़ कढि आयो ।६।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, हरख हरिजस गायो ।७।।

रा० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २०६ से

२०

बोल सूवा राम राम बोलं तो वलि जाऊ रे ।
सार सोना की सल्या मंगाऊं, सूवा पींजरो वणाऊं रे ।
पींजरा री डोरी सुवा, हाथ सूं हलाऊं रे ।१।
कंचन कोटि महल सुवा, मालीया वणाऊं रे ।
मालीया मैं आई सुवा, मोतियां बंधाऊं रे ।२।
जावतरी केतकी तेरै, वाग मै लगाऊं रे ।
पला री डार सुवा, पींजरो बधाऊं रे ।३।
घृत घेवर सोलमा-लापसी * परसाऊं रे ।
आमला को रस सुवा, घोलि घोलि पाऊं रे ।४।
बैठक कै तो कारणै सूवा, चांनरमी बिछाऊं रे ।
पेम[१] कै प्रताप सुवा, झांझ बणवाऊं रे ।५।
केसर भरीयो वाटको, तेरै अंगि से लगाऊं रे ।
मीरां के प्रभू हरि अविनासी, सरणं आयां सुख पाऊं रे ।६।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

सं० पाठ—१. प्रेम

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

टिप्पणी— १. मीरांसुधासिंधु पृ० ७७० पद सं. ६१ से उक्त प्रस्तुत पद की ६ और ७वीं पंक्तियां नहीं मिलती। शेष मिलती हैं।

*टिप्पणी—२. सोलमा लापसी – मारवाड़ (राजस्थान) में गेहूँ के दलिये को घृत में भूंज कर लापसी नामक मिष्ठान (मांगलिक अवसरों पर) बनाया जाता है जिसमें एक मन के पीछे सोलह सेर घृत डाला जाता है। उसे 'सोलमा लापसी' कहते हैं।

२१

भाभी मीरां हो! सांधा को संग निवारि[1]।
थाहारी[2] लोक नंद्या करै, बाई उदा हो! लोकां नैं लौकां रो भाव ।।
म्हें म्हाकौ राम लड़ावस्यो, भाभी मीरां हो! लाजं सैंस मेवाड़।
लाजै कौंभाजी[3] रो बंसणौं,भाभी मीरां हो! लाजै नौकोटी मारवाड़।।
लाजी दूदाजी रो मेड़तो, भाभी मीरा हो! लाजै माइ मोसाल्।
लाजै है पीहर थारो सासरो,भाभी मीरां हो! थांपरि राणौं कोपीया ।।
बाटकड़ै विष घोलने, बाई उदा हो! थे दीज्यौ म्हारै हाथै।
म्हे अमरत करि आरोग्स्यां[4], बाई उदा हो! सांथरि सेज बिछाई ।।
नैणां मैं विष संचर्यो, बाई उदा हो! मंदर ऊवो छै उजास।
सही साधौ रौ तारण आवई,बाई उदा हो! दुज्या[5] पंथालौ हरे रा पाव ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० प्रं० सं० ८ से

सं० पाठ — १. निवारो। २ थांरी। ३. कुंभाजी। ४. अरोगस्यां। ५. दूद्यां।

टिप्पणी --मीरांसुधासिंधु पृ० १६४–१६५ पद सं.३४६ सुधासिंधु में बहुत बड़ा पद है, किन्तु प्रस्तुत पद आधा ही मिलता है।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२२

राग धनासरी ।

मीराँ रंग लागो हरी ।
सब रंग अटक पड़ी, मीरा (रां)रंग लागो हरी ।। टेर ।।
गी(गि)रधर गासां[१] सतीय न हूंसा, मन वसिया घणनामी ।
जेठ बहू रो नातो राणा जी, थे सेवग मे (मैं, म्हे) सां (स्या) मी ।।१।।
छापा तिलक मनोहर वनासां, सील संतोख सीणगारो ।
ओर कछु नहीं भावै हो राणांजी, ओ गुर गीयांन[२] हमारो ।।२।।
राज करतां नरग (क) पड़ता, जां जीव रवी सुत खाया ।
ओरी क रांना (णां) सतावां, काई करेलो मा [रो] कोई ।।३।।
गज कु ंतज के खर नहीं अठसूं[३], आ पीण बात न होई ।
कोई यांनै कहो कोई मंनै कहो, गुण गोवींदरा गासां ।।४।।
जी (जि)ण मारग मे (म्हां)रा साध पोहोता[४], जीण[५] मारग मे जासां ।
गिरधर धणी क कुब[जा] गी(गि)रधर, मात पिता सुत भाई ।
थे थर मे मांहो रांणाजी, गावं मीरांबाई ।।५।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७४ से

सं० पाठ—१. गास्यां । २. ग्यांन । ३. चढसूं, बैठसूं । ४. पधार्या । ५. उण ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु–पृ० ३६२ पद सं० ३८ से उपर्युक्त पद की पंचम, सप्तम तथा अष्टम पंक्तियों को छोड़, शेष पद मिलता है किन्तु, पंक्ति-क्रमान्तर-भेद अवश्य है ।

पाठान्तर–१

सो मीरा रंग लाग्यौ राम हरी ।।टे०।।
कंठी तिलक दोवड़ी माला[१], सोल वरत सिणगारो ।
ओर सिंगार सोकं नहीं राणाजी, यो गुर ग्यान हमारो ।।१।।
भलि कोई निंदो भलि कोई विंदो, गुं ण गोविंदजी का गास्यां ।
जिन मारग मेरा संत पधार्या, जी मारिग म्हे जास्यां ।।२।
भजन करस्यां सती न होस्या, मन मोह्यौ घणनामी ।
जेठ बहू कौ नातो नही हो, थे सेवक म्है स्वामो ।।३।।
राज न करस्यां जीव न सतास्या, कांई करैलौ म्हारो कोई ।
हसती चढि म्हे षर नही चढस्या, ऐ तो बात न होइ ।।४।।
ना कोई मेरैं मात पिता है, ना कोई बंधू भाई ।
थे थांकं म्हे म्हाकं राणाजी, यूं गावै छै मीराबाई ।।५।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

सं० पांठ—१. माला ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—२

राग धनाश्री ।

मीरां रंग लाग्यो हो नांव हरी, ओर रंग अटकि परि ।।टेक।।

गिरधर गास्यां सति न होस्यां, मन मोह्यौ घणनांमो ।

जेठ बहु कौ [नातो] नांही राणाजी, थे सेवग म्हे स्वामी ।।१।।

चोरी करां न जीव सतांवां, कोई करेगौ म्हाकौ कांई ।

गज सूं उतरि गधे न चढिवौ, या तो बात न होई ।।२।।

चूड़ौ तिलक दोवड़ी माला, सील वरत सिणगार ।

और वरत नहीं भावै मोहि राणांजी, यहूं गुर ग्यांन हमारा जी ।।३।।

भावै कोई निंदो भावै कोई बंदौ, म्हे तो गुण गोविंदजी रा गास्या ।

जीं मारगि वै संत गया छै, वीं मारगि म्हे जास्यां ।।४।।

राज करंता नरकि पडतां, भोगी जो रे लीयां ।

जोग करंता मुकति पऊंता, जोगी जुगि-जुगि जीया ।।५।।

गिरधर धनी धनी मेरै गिरधर, मात पिता सुत भाई ।

थे थांकै म्हे म्हांकै रांणाजी, यूं कहै मीरांबाई ।।६।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३ से

पाठान्तर ३

मीरां रंग लागौ राम हरी, और रंग अटक परी ।।टेक।।

कंठी तलक दोवड़ी माला, सील वरत सिणगारौ ।

और सिंगार न भावै हो राणाजी, यौ गुर ग्यान हमारौ ।।१।।

चौरी न करस्यां जीव न सताम्यां, कांई करैलौ म्हारो कोई ।

हसती चढ़ि म्हे षर नहि चढस्यां, या तौ बात न होई ।।२।।

राज करता नरक पडतां, भोगीया जमलीया ।

भगति करता मुकति पऊंता, जोगी जुग-जुग जीया ।।३।।

भावै कोई निंदो भावै कोई विंदो म्है गुण गोविंद का गास्यां ।

जी मारिग म्हारा सत पधारया, जी मारिग म्है जास्यां ।।४।।

राज न करस्यां सती न होम्यां, मन मोह्यो घणनामी ।

जेठ वहू को नातौ नही हो राणोजी, थे सेवग म्हे स्वामी ।।५।।

साध हमारौ गोतक डूवौ, नां कोई बहू भाई ।

थे थांकै म्है म्हाकैं हो राणाजी, यूं गावै मीरांबाई ।।६।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२३

सोरठ—

म्हांरी सुध जेरां जांणो त्यौं लीज्यौ जी ।
हौं तो थांरी दासी जनम जनम की, किरपा रावरो कीज्यौ ।।टे०।।
विश्व रो प्यालो रांणै भेज्या, ग्रमरत करि करि लीज्यौ ।।१ ।
भक्ति - वछल प्रभु बिड़द तुमारौ, भावै त्यौं कीज्यौ ।।२।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, मिलि बिछरन[1] मति दीज्यौ ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं०सं० २८३८० से

सं० पाठ — १. बिछड़न ।

टिप्पणी - मीरांसुधासिंधु पृ० ३२२ पद सं. ७ से इस पद की प्रथम तथा द्वितीय पंक्ति के कुछ साम्य के ग्रंतर से पद नहीं मिलता ।

२४

राग केदारौ—

रै मनि परसि हरि के चरन(ण) सुभग सीतल ।
कव(म)ल कोमिल, त्रिविधि ज्वाला हरन(ण) ।।टेक।।
ते चरन(ण) प्रहलाद परसे, इंद्र पाई[1] ध्रन(धरण) ।
ते चरन धु[2] ग्रटल कीहौ, राखि ग्रपनी श्रवन(ण) ।।१।।
ते चरन गयो लोक मांपे, ते चरन बले ध्रारन(ण) ।
ते चरन ब्रैहमंड छीन्यौ, सुरसरी नंख झरन(ण) ।।२।।
ते चरन ग्रधारि नख पंरि, इंद्र को बल हरन(ण) ।
तेई चरन काल के श्र[सर]परि, गोप - लीला करन(ण) ।।३।।
ते चरन गउ चारि बन मै, कुडीग्रा भरन(ण) ।
दास मीरा रां) लाल गो(गि)रधर, ग्रधम त्यारन तरन(ण) ।।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से

सं० पाठ — १. पदवी । २ ध्रु ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ० ७६५-७६६ पद सं. ४७ से प्रस्तुत पद की प्रथम चार पंक्तियां मिलती हैं, शेष में ग्रंतर है ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—१

(राग सोरठ)

मन सं पस[र] हर के चरण ।
सुभग सीतल कंवल कोमल, त्रिमंद जाला हरण ।।टेर।।
जै चरण प्रहलाद परसै, इंद्र - पदवी धरण ।
सोई चरण ध्रु अटल कीनौ, राख अपणी सरण ।।१।।
जै चरण वन गउ चराई, कुबडी अभरण ।
सोई चरण काली नाग नाथौ, गोप-लीला करण ।।२।।
जै चरण ब्रीहमंड भेद्यौ, नख सुरसुरी धरण ।
सोई चरण रज परस सील पर, तारै गौतम धरण ।।३।।
दास मीरां लाल गिरधर, अधम तारण तरण ।

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्रं० सं. ७६३६ से

२५

रामैया मैं तौ दरद दिवानी(णी),मेरा दरद न जांणै कोय ।।टेर।।
घायल की गत घायल जाणै, और न जाणै कौय ।१।
सूली ऊपर सैज हमारी सौवन(ण),किस विध होय ।२।
सुख संपत मै सव कोई अपना.विपत पर्यां नहिं कोय ।३।
सुख के सागर सदयण आगर, कृस्न गुण दोय ।४।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, वैद सावरी होय ।५।

अनुप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

टिप्पणी— मीरांसुधासिंधु पृ. ७७ पद सं. २०८ से उपर्युक्त पद की प्रथम तीन पंक्तियों के अतिरिक्त पद नहीं मिलता ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—१

हेली मैं तो दरद दिवानी, दरथ्र(द) न जाणैं मेरा कोई ।।टेर।।
सूली ऊपर सेज हमारो, सौवना किस विधि होई ।।१।।
घायल की गत घायल जांणैं, और न जाणै कोई ।।२।।
सुख संपत मैं सब कोई साथी, दुख बिपता नहीं कोई ।।३।।
मीरां कहै प्रभू हर अवनासी, दरसण दीज्यौ मोइ ।।४।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १०८४७ से

पाठान्तर—२.

हेली मै तो दरद दिवानी, दरद न जांणै कोय ।।टेक।।
सूली ऊपर सेझ हमारी, सोवण किस विध होय ।१।।
घायल की गत घायल जाणै, और न जांनै(णै) कोय ।२।।
सुख संपत मै सव कोई नेडा, विपत पड्यां नहिं कोय ।३।।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर, राम मिल्यां सुख मोय ।४।।

रा. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७१४५ से

पाठान्तर—३

हेली मैं तो दरद दिवानी, दरध न जाणै री कोइ ।।टेक।।
सूली ऊपर सेझ हमारी, किस बिधि सोणा होई ।१।।
मीराँ के प्रभू हरि अबिनासी, राम भज्यां सुष होई ।२।।

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह० लि०ग्रं० से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—४

हेली में तो दरध दिवांनी दरध, न जाणै कोय ।।टेर।।
सूली ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विध होय ।१।।
घायल की गत घायण जांणै, जे कोई घायल होय ।२।।
हीरां की पारष जुंहरी जांणै, और न जांणै कोय ।३।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, बैद सांवरो होय ।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ़, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं. ११२ से

पाठान्तर—५. (राग काफी)

हेरी मै तो दरद दीवानी, मेरा दरद नै जाणै कोय ।।टेर।।
सुली कै ऊपर सेज हमारो री,सुबणा कीसी बीध होय ।।१।।
गीगन मंडल मै सेज हरी की,कीस बीध मिलैणा होय ।।२।।
घायल की गत घायल जानै, जो तन पीड़ा जौ होय ।।३।।
जोहरी की गत ज्यूहरी जानै, सो जीन जुहैरी होय ।।४।।
दरद की मारी बन बन डोलु, बैद मिल्या नहीं कोय ।।५।।
मीरा कहै प्रभु गीरधर नागर, बैद सावलीयौ होय ।।६।।

संत साहित्य मडल, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. से

पाठान्तर—६

हेली मे तो दरद दीवानी, दरद न जाणे मेरा कोय ।।टेर।।
गायल की गत गायल जाणे, जे कोडी गायल होय ।।१।
सुष संपत में सव कोडी साती,वीपत पड्या नहीं कोय ।।२।
सुली उपर सेज हमारी, सुवणा कसी बीद होय ।।३।।
मीरा के प्रभु अहन वीयाकुल, वेद रमया होय ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं १७०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२६

रामईया बिना नींद न आवै।
नींद न आवै ब्रैह[1] संतावै, प्रेम की आंच डुरावै ढूरावै ।।टेर।।
पीया जोत विन मिंदर अंधारी, दीपक दाय न आवै।
पीया जी विनां मां(म्हां)रो सैज अलूंणो, जागत रैण बिहावै,
कबै घर आवै आवै ।।१।।
दादुर मोर पपैया बोलै, कोयल सव्द सुणावै।
घटाघौर ओलर हूय आई, दांमन दमक डरावै,
नैन(ण) भर लावै[2] लावै ।।२।।
कहा करु कित जाऊं मोरि सजनी, वेद न कोइ रै वतावै।
ब्रैह नाग मोरि काया डसी है, लहर लहर जीव जावै.
जड़ी घस लावै लावै ।।३।।
है कोई असी सखी रे सहेली, पियाजी कूं आंन मिलावै।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, मौ मन भावै कबै वतलावैं ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह. लि. प्र. सं. ११३ से

सं. पाठ — १. बिरह . २ ल्यावै।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ४५१ पद सं. ३५ से प्रस्तुत पद की तीसरी और छठी पंक्ति नहीं मिलती, शेष पद मिलता है।

पाठान्तर— १

रमईया बीना नींद न आवे, घर आगणे न सुहावे ।।टेर।।
पीया जी वीना मारे मीदर अंदेरो, दीपक दाय नी आवे।
पीया जी वीना मारी सेज अलुणी, तो जागत रेणी बीवहावे,
कबे घर आवे ही आवे ।।१।।
कहा करु कीत जाउ मेरी सजनी, वेदन कोइ न मीटावे।
ब्रीहनाग मेरी काया डसी हे, तो लहरी लहरी जीव जावे।
जड़ी गसी लावेई लावे ।।२।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दादर मोर पपैया बोले, कोयल सबद सुणावे ।
प्रेम घटा उमंग होय आई, तो दामण चमण चमक डरावे,
नेन जडी लावेई लावे ।।३।।
सुन री सषो री सहेली सजनी, पीयाजी कु आनी मिलावे ।
मीरा के प्रभु हरी अबीनासी, तो माधोजी मन भावे,
कवे हसी के बा(ब) तलावे ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ, बीकानेर के ह लि ग्रं. सं. १७० से

२७

लगन कौ नांव न लीजीये भोली(ली) लगन कौ ।।टेक।।
लगन लगी कौ पैंडोई न्यारो, पांव धरत तन छीजीये ।।१।।
जेहूं लगन लगाई हे चाह्वे, तो सीस की आस न कीजिये ।।२।।
लगनि लगी छे हे म्रग नाद सूं, सनमुख छांन सहीजीये ।।३।।
लगन लगाई पतंग दीपक सें, वारि फेरि तन दिजीये ।।४।।
लगन लगी जैसे जल मछीईन सें, बिछरत प्रांन(ण) दविजीये ।।५।।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चरन(ण) कवल[१] चित दीजिये।।६।।

राज शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८२९१ से

सं. पाठ — १. कमल, कंवल ।

टिप्पणी — मीरांसुधासिंधु पृ.७५७ पद सं. २३ से इस पद में दो पंक्तियां कम हैं । प्रस्तुत पद की प्रायः सभी पंक्तियां मिल तो जाती हैं, किन्तु पंक्ति-क्रमभेद है ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२८

लागत मोहन प्यारो राणा जी मां(म्हां)नै लागत मोहन प्यारो ।।टेर।।
जांकी कला मै हालत चालत, बोलत प्राण आधारो ।१।।
ताकी माया मै सब जग भूल्या, उपुर-स[1] है न्यारो ।२।।
तुम कहते अरधग्यां हमारी, हमसे लगायो कारो ।३।।
चवदे भवन मही व्यापक रहैं, तेसो बीज बर है हमारो ।४।।
तुम भी तो भूठे राणा हम भी तो भूठे, वो भूठो है राज पसारो ।५।
तोसे पुरस को सबद भूंठो राणा, फूटौ है हीयो तमारो[2] ।६।
सालु पीतांबर मोतीया की माला(ला), वो ले ले अंग माहि डारो ।७।
छापा तिलक तुलछी की माला, वो साध संगत निसतारो ।८।
जै जै दिन मैं तो हरि बीना खोया, वो डग मनुज अवतारो ।९।
मीरा(रां) कहै प्रभु गिरधर नागर, चरण कवल(ल) बलिहारी ।१०।

सत साहित्य संगम, बीकानेर के ह लि.ग्रं. से

सं. पाठ — १. ऊपर सूं । २. थांरो

टिप्पणी — मीरांसुधासिंधु पृ २८२-२८३ पद सं. ३६ से उपर्युक्त पद की चौथी तथा अंतिम पंक्ति पूरी तथा सातवीं पंक्ति आधी नहीं मिलती, शेष पद मिलता है ।

२९

लाज वैरन (ण) भई सखि मोहे ।
हाथ मां उसके ऐक तीर है, ओमैहु ततवीर है ।।
नहा सील तकदीर है ओमैहु, हय लाज बैरन भई ।
चलत गोपाल पिय के संग क्यौं नां गई ।।
कठिन क्रूर अक्रूर आये रथ चढाये नई ।
लै गए नंदलाल पिय को हाथ भीवत[1] रही ।
कठिन छाती स्याम बिछुरत विहर क्यौं ना गई ।
लिखी पाती स्यामजी को काह्या पठवो दई ।
कठिन छति स्यामजी की दया नेकू न भई ।
दास मीरां लाल गिरधर प्राण दक्षिणा[2] दई ।।१।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४७५६ से

सं० पाठ—१. भींचत । २. बखणां ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

टिप्पणी—मीरां माधुरी—पृ० २५-२६ पद सं० ६६ से उक्त प्रस्तुत पद की प्रथम तथा बीच की चौथी, पांचवीं, छठी, सातवीं पंक्तियां मिलती हैं, शेष नहीं।
मीरांसुधासिंधु—पृ० ५७८ पद सं० १० से प्रथम, पांचवीं, छटी, सातवीं,तथा आठवीं पंक्तियां मिलती है,शेष नहीं।

३०

बरसवोई कर रे मेहा म्हांरो, प्रितम वाला घर रे ।।टे०।।
मोटी मोटी बूंदन वरसन(ण) लागी, सूके सरवर भरे रे ।।१।।
वहोत दिनन सौं प्रीतम पायो,मोहि विछुरन[1] को डर रे ।।२।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, सावरीयो छै म्हांरो वर रे ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं ३७६४४ से

सं० पाठ— १. बिछड़न

टिप्पणी — मीरांसुधासिंधु—पृ० ४४१ पद सं० १ से प्रथम तीन पंक्तियां थोड़े शब्दान्तर से मिलती हैं, किन्तु अंतिम नहीं मिलतीं।

३१

वंसीवारा आजो मारं[1] देस।
थांरी अजब सुरत बाई भेस, वंसीवारा आजो मारे देस ।।टेव।।
आवन आवन केहे गये, कर गऐ कोल अनेक।
गीनता[2] गीनता घस गई, आगली(ली)या की रेष ।।१।।
या कपटी सूं प्रीत न करीयं काहा[3] जाने पर पीर।
हम छोडी नीज धाम मैं, आप उतर गये तीर ।।२।।
जेह ऐसो जानती, प्रोत कीये दुष होय ।
नगर दुहायी फेरती प्रभु, प्रीत करो मत कोय ।।३।।
हम गोकल तम मथरा का,अब कंसे मीलणो होय।
मीरा के प्रभु गीरधर नागर मील(मिल)(वि)वीछरो मत कोय ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६३९ से

सं० पाठ— १ म्हारे। २. गिणतां। ३. का।

टिप्पणी-मीरांसुधासिंधु-पृ० १९५ पद सं० ९९ वें पद की प्रथम चार पंक्तियां मिलती है, शेष नहीं।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—१

वंसीवाला आय जौ मांरै देस ।।टेर।।
थांरी सांवरी सुरत ह षवेस ।।टेर।।
आंवण आंवण कै गयौ जोगी, कर गयो कवल अनेक ।
गुणतां गुणतां घस गई मारै, आंगणलीया रि रेष ।।१।।
पगे षडाउ पैरलो जौगी, क्र(कर)लो भगमां वेस ।
डगर हमारै आवजौ, करजो आलेष आलेष ।।२।।
आंगण वाउ रे लेसी, लंवै पेड़ खजुर ।
जण चढ जौउं थारी वाटडी, नेंडा वसो कै दुर ।।३।।
राय आंगण कैसोक मै, राषु वाग लगाय ।
कलोअन कै मस आवजो रे जौगी, राषुली वलमाय ।।४।।
पांनन ज्यु पोलि परी, लौक कैहै पंड रोग ।
सांना लागण मे कीया. रांम मीलनवि जौग ।।५।।
पीत कीआ सुष उपजै वीचडिआं दुष होय ।
नगर ढंढौलो फेरति, पीत म करजौ कौय ।।६।।
पीर हमारौ मेड़तै जौगी, सासरीयौ चीतौड़ ।
मीरां नै गीरधर मल्यां, नागर नंद कीसौर ।।७।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से

पाठान्तर २

वंसिवाला आई जौ म्हारै देस, थांरी सावरी सुरत हरदे वसे ।।टेर।।
आवन आवन कह गयो हेली, कर गयौ कवल अनेक ।
गिनंता गिनंता घस गई हेली, आंगलीयां री रेक ।।१।।
कागद नहि स्याही नही हेली, कलम म्हारे लेस ।
पंछी कौ परवेस नही हेली, किण संग लिषू रे संदेस ।।२।।
इक वन ढूढ सकल वन ढूढ्यौ,ढूंढि फिरी सारो देस ।
तारै तौ कारण जोगण होसूं रे, करसूं भगवा भेस ।।३।।
मोर मुकट मकराक्रत कुंडल, गूघर वाला केस ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर,प्रीत कियां दुष देस ।।४।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy
अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

पाठान्तर—३

वंसीवारा आवज्यो मारे देस, थारी सावरी सुरत हृद वेस
[हरदे वसे] ॥टेर॥
आउं आउं कह गयो सांवरा, कर गयो कवल अनेक।
गीणते गीणता घस गई, मारी आगलीया की रेष ॥१॥
मै वरागण राम की, थारै मारं कदकौ कौ सनेह।
बीन पाणी बीन साबुना रे, सावरा हूगई धोर सपेद ॥२॥
जोगण हूई जंगल सब हेरु, तेरा न पाया भेस।
तेरी सुरत कै कारणं सावरा, धरं लीया भगवा भेस ॥३॥
मोर मुकट पीतांबर सोहै, घुघर वाला केस।
मीरा कह प्रभु गीरधर नागर, हूए बढा सनेस ॥४॥

संत साहित्य संगम, बीकानेर के हृ० लि० ग्रं० से

३२

सजन घर आव रै मीटा[१] बोला ॥टेर॥
थांरे तो कारण सब तज दीना, काजल(ल)तीलक तमोला(ला) ॥१॥
रषत रती बीन नांहो रहती, बीन मासै बीन तौला ॥२॥
बी (मी)रा के प्रभु गीरधर नागर, कर धर रही छ कपोला ॥३॥

अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के हृ० लि०ग्रं० सं० २०६ से

सं० पाठ—१. मीठा, मिठ।

पाठान्तर—१ (राग सोरठ)

सजन घरि आवोजी मीठा बोला।
या रुसन मैं का लगयो बोहो, अब तो मेटि अबाला ॥टेक॥
आरत बहोत बिलंब नहि करणां, आय्यां ही सुष होला।
तन मन प्रांन करों नोछावर, अव प्रभु कहा कहोला ॥१॥
आवो निसंक संक नहीं करणां, आयां ही होय रंगरोला।
तरै कारण सब कुछु त्याग्या, काजल तीलक तंबोला ॥२॥
बिन देष्यां व्याकुल भई सजनी, कर धर रहै कपोला।
मीरा तो गीरधर विना हो, षिण मासो षिण तोला ॥३॥

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० ८२६० से

टिप्पणी - मीरांमाधुरी-पृ० ८७ पद सं० २३७ की तीसरी से लेकर आठवीं पंक्ति क्रमभेद से मिलती है, शेष नहीं।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—२

साजन घर आवौजी मीठा बोला ।।टेक।।
आव निसंक संक मत मांनैं, छांदे देइ झकझोला ।।१।। : रामा :
तरे कारण सबही त्यागया, काजल तिलक तमोला ।।२।।
तन मन वार करु निछरावल, लीज्यो स्यांम मोहोला ।।३।।
तुम देष्यां बिन कल न पड़त, कर द(ध)रही जी कपोला ।।४।।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी,तौ आया होइगा मारा वाला ।।५।।

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९१

टिप्पणी–मीरांवृहत्पदावली–पृ० २६६ पद सं ५६० से दूसरी तीसरी तथा पांचवीं पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता । वे पंक्तियां भी क्रमभेद से हैं।

पाठान्तर—३

साजन धरि आवौ मीठा बोला ।।टेक।।
कबकी षड़ी षड़ी पंथ निहारुं, थां आयां होसी भला ।।१।।
आव निसंक संक मति मानैं, आया ही सुष ह्वैला ।।२।।
तन मन वारि करुं नवछावरि,दीज्यौ स्याम मोहोला ।३।।
आतरि बोहोत बिलम नहीं करनां, आया ही रंग रहला ।।४।।
तेरै कारणि सब सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला ।।५।।
तुम बिनि कल न परत है, कर धरि रही कपोला ।।६।।
मीरां के प्रभू हरि अविनासी, षिण मासा षिण तोला ।।७।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—४

साजन घर आवौ हो मीठा बोला ।
कबकी षड़ी मै पंथ निहारुं, थां आयां होसी भला ॥टेर॥
अव निसंष संक मत मांने, आयांई सुष रैहैला ।
तन मन वार करुं निछरावल, दीजौ सांम मोहोला ॥१॥
आव सलूना विलम न कीजै, थों आयांई रंग रहैला ।
तेरं कारण सब सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला ॥२॥
तुम देष्यां विन कल न परत है, कर धर रही कपौला ।
मीरां कै है प्रभू हर अभनासी, षिण के मासौ षिण तोला ॥३॥

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १०८५१ से

राग गलतांनी सोरठ —

पाठान्तर—५

साजन घरि आवो मीठा बोला ॥टेक॥
कबकी षड़ी षडी पंथ निहारुं, थां आयां होसी भला ॥१॥
आव् निसंक संक मति मांनै आयां ही सुष ह्वैला ॥२॥
तन मन वारि करुं नवछावरि, दोज्यौ स्यांम महोला ॥३॥
आतरि बहोत बिलम नही करनां, आयां ही रंग रहला ॥४॥
तेरै कारणि सब सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला । ५॥
तुम देष्यां बिन कल न परत है, कर धरी रही कपोला ॥६॥
मीरां कहै प्रभू हरि अबनासी, षिण मासा षिण तोला ॥७॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से

T　　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३३

राग लुर ।

संता काले रीज्यौ मा(म्हा)रो ईतरो जोर,आज बसो मा(म्हा)रे सेर मैं।।टेक।।
धिन घड़ी पल आप पधार्‌या सता,चरण पबीत कीनी मा(म्हां)री भोम ।१।
अचलो(लो़) बिछाय करुं प्रना(णा)म, सीस निवाऊं मा(म्हां)रा दोनूं कर जोर ।२।
मा(म्हां)रा क्रम कठन होय लागा, आप पधारो जांरां निरमल होई ।३।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, साईयां साधुड़ा रो हिरदो बड़ो कठोर ।४।

राज० शो० सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७६६५ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु–पृ० ७७६ पद सं.८० से इस पद की द्वितीय पंक्ति नहीं मिलती, शेष पद मिलता है ।

३४

राग सोरठ ।

संईयां अरज बंदी री सुणि[1] हो ।
मो निगुणी रा सगुणा साहिब, अवगुणगारो रा गुण हो ।।टेक।।
राणै जी पीयालौ बिख रौ भेज्यौ,मोहि भगति रो पण हो ।१।।
मोरां के प्रभू गिरधर नागर,म्हे कांई जांणा राणै जी कुण हो ।२।।

रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ से

सं. पाठ—१ सुण ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ३४१ पद सं. ६१ से इस पद की अंतिम पंक्ति के अर्द्ध-भाग को छोड़ कर सम्पूर्ण पद मिलता है, किन्तु मीरांसुधासिंधु में इस पद की ६ पंक्तियां है जबकि उक्त पद में ४ पंक्तियां ही हैं ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर — १

सांईयां अरज बंदी री सग्ग हो ।
मो निगुणी रा सुगणा साहिब, श्रोगणगारी रा गुण हो ।।टेक।।
हू ं तौ थांरो दासी जनम जनम री,तुम हौ हमारै वर हो ।
दीनदयाल करौ मो पर तुम, हौ गिरवरधर हो ।१।।
राणो जी प्यालौ विष नौं भेज्यौ, मोहि भगति नौ पण हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, कांई जांगु रांणों कुण हो ।२।।

सं त साहित्य सं गम बीकानेर के ह. लि ग्रं से

(राग गिरनारी सोरठि)

पाठान्तर — २

साईयां अरज बंदी की सुणि हो ।
मो निगुणी का सुगण साहिबा,श्रौगणगारी का गुण हो ।।टेक।।
हूँ द सी तेरी जनम जनम की, तुम हो हमारे बर हो ।
दोनदयाल कार मोपं, मेहौ सबही डर हो ।१।।
राणौ जी विसरो प्यालौ भरि भेजोयौ, म्हारै भगति रौ पण हो ।
जाकूं राखै रांम गुसांई, तौ मारणहारो कुण हो ।२।।
आन देव म्हारो दाइ न आवै, तुम सूं लागं म्हारो मन [हा] ।
जैसै चंद चकोर निहारै, यूं सुमरुं छिनि छिनि हो ।३।।
बेर बेर मोहि ब्रिह सतावै, ज्यूं काठे लागो घुण हो ।
मीरां नांव पीयालै छकी,कांई जांणू राणोजी कुंण हो ।४।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३५

साजन वेला(ला) घर आजो (ज्यौ) हौ ।
आदि अंत के मित्र हो, हम कूं मुख लाजौ हौ ।।टेर।।
हरि बनात चरना(णां) कल धरजौ, उठ मारग जोऊं हो ।
तोर (रे) कारण साईयां, भर नींद न सोऊं हो ।१।।
हरि बना सूरत कत धरजो, मनसा न बैसर जौ हो ।
नजर पड़ा तम उपरै, मन तन धन वारजौ हो ।२।।
अबन्यासी आया सुण्या, म नव न(नि)ध पाई ।
मीरा(रां) कै दिल माहिला, दुख टेर सुणाऊं हो ।३।।
वा बरीया कब होवसी, कोई कहे सनेसा हो ।
मीरा(रां) कहै अैसी बात का, प्रभू खरा अनेसा हो ।४।।

राज. शो सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं. ७६६५ से

पाठान्तर—१

सजन वेला घर आज्यौ हो ।
आदि अंत के मंत हो, हम कूं सुख लाज्यौ हो ।।टेक।।
निस दिन मोहि [क]ल ना पड़ै, नित मारग जोउ हो ।
साई तेरे कारणे, भारि नींद न सोऊं हो ।१।
अबनासी आया सुनों, जव नवनिधि पाऊं हो ।
साहिब सूं मन मांहिलो, दुख टेरि सुनांउं हो ।२।
बाबरीया कब आवसी, कोई कहत संदेसा हो ।
मीरां कहै इस बात का, मोहि खरा अंदेसा हो ।३।

राज शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं. ८२६१ से

टिप्पणी — मीरांसुधासिंधु–पृ. १६६ पद सं. २८ से उपर्युक्त पद की प्रथम चार तथा अंतिम दो पंक्तियां कुछ शब्दान्तर से मिलती है, शेष नहीं ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३

हरि न बूझि बात माई मेरी,हरि न बूझि बात ।
देह मांहीं प्रांण पापी, निकसि क्यूं नही जात ।।टे०।।
रैण दूंधारो[1] ब्रेहन[2] घेरी, तारां गिणतै[3] बिहाये ।
का कटारौं कंठै छेदौं, क मेरो विख खाये ।।१।।
मुखां न बोलै पल न खोल, सांझ अरु प्रभाति ।
अबोलण केई दिन बीते, काहि की कुसलात ।।२।।
सुपनै मैं द्रस पायो मैं, न जांणू जात ।
नैण उघड़े मिले नांही, करौंगी तन घात । ३।।
आवैणा कहै गया छा हरि, आवैण की बात ।
दास मीरां लाल गिरधर, बालक ज्यूं विललात ।।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी. जोधपुर के ह लि. ग्रं सं. ८२९९ से

सं. पाठ—१. अंधारी । २ बिरहण । ३ गिणत ।

पाठान्तर—१

स्यांम नै वूझी मोरी वात माई, मुनै स्यांम नै बुझी वात ।
आवण कहै गये आये नही, आवण ही की राति ।
रेण अधेरी बीजली चमकै, तौ तारा गीणत वैहाल माई ।१।।
मुख न वोलै यो या पाट न खोलै, दीपै सरसरी रात ।
अबलो दउ जात हेरी माई, काहे की कुसलात माई ।२।।
काढि कटारी कंठ पहरो, काहे मरु विख खाय ।
वैग मीरा(रां)बाई के ठाकर, राज मेल्या दुख जाय ।३।।
माई मुनै स्याम नु बुझी वात ।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह लि. ग्रं. सं. १८९० से

टिप्पणी–मीरांसुधासिंधु पृ १७९ पद सं.९० से प्रस्तुत पद की चौथी और आठवीं पंक्तियां नहीं मिलती । इसी तरह पाठान्तर की भी प्रथम पांच पंक्तियां मिलती हैं, शेष नहीं ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३७

राग विहंग—

हर विन पलक न लागै मेरी, सां(स्यां)म बिन पलक न जागै मेरी ।।टेर।।
हरि बिन मथुरा असि लगत है, चंद बिन रैण अंधेरो ।१।।
पात पात बिंद्राविन ढुंढ्यौ, कुंज किलण¹ सब हेरी ।२।।
दिन ही न भूख र(रैंण)हण नहीं नीद्रा,तलफ तलफ रही हेरी ।३।।
मिरा(रां) के प्रभु गिरधर नागर, अब क्यूं भई अवेरी ।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. १६६७ से

सं. पाठ — १. गलण ।

टिप्पणी मीरांसुधासिंधु–पृ.२०३ पद सं. १२२ से उपर्युक्त पद की प्रथम तीन पंक्तियां मिलता हैं, किन्तु उनमें भी शब्दान्तर है। शेष दो पंक्तियां नहीं मिलती।

३८

हरि मारै आवन की कोई कहियौ रे ।।टेर।।
आप न आवै पतियां न भेजै, वांण पड़ी ललचावण की ।१।।
अै दोय नैन क्यौ नहि मांनैं, नदीयां उलट गई सावन(ण) की ।।२।।
कहा करूं कित जाऊं मोरि सजनी,पांख नहीं उड जावन(ण)की ।।३।।
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, दासी भई तौरै पावन(ण)की ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं ११३ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. १७५–१७६ पद सं. ४७ से इस पद की प्रथम तथा अन्तिम पंक्ति पूर्णतया नहीं मिलती।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३९

हेली म्हांसू हरि बिन रह्यौ न जाई ।।टेक।।
चौकी तो राखो भावं पहरा भी राखौ, ताला कांन जुड़ाई ।।१।।
बावल रूसौ भावै मायड रूसौ, वीरो जी परौरी रिसाई ।।२।।
सुसरो भी रूसो भावे सासू भी रूसो, खावद खरोरी रिसाई ।।३।।
चहूदिसा री सजनी सनमुख जोउ, कब रे मिलौगा हरि आई ।।४।।
मीरां के प्रभु राम सनेही, और न आवे म्हारी दाई ।।५।।

रा. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं. ८२६१ से

टिप्पणी –मीरांसुधासिंधु पृ ३९४ पद सं ४३ से इस पद की अन्तिम पंक्ति पूरी तथा दूसरी पंक्ति आधी नहीं मिलती ।

पाठान्तर—१

हेलो मोपूं हरि विनि रह्यौ न जाइ ।।टेक।।
सासू लड़ो री सजनी नणद खिजो रो, पीव क्यूं न रहो रिसाइ ।।१।।
चौकी भो मेल्हौ सजनी पहरा भी राखौ,ताला(ला)क्यूं न जडाइ ।।२।।
पूरब जनम को प्रोति हमारी सजनी, सो क्यूं रहैरी लुकाइ ।।३।।
मीरां के तौ सजनी राम सनेही, और न आवे म्हारी दाइ ।।४।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह.लि. ग्रं. से

पाठान्तर—२

सजनी मोसू हर विन रह्यौ न जाय ।।टेक।।
सासू लडौरी सजनी नणद खिजोरी, पिव क्यूनी रहोरी आय । १।।
चौको भी मेलौ सजनो पौहोरौ भी राखौ, ताला क्यूंनी जड़ाय ।।२।।
पूरव जनम की प्रीत हमारी सजनी, कैसे रहूं री लुकाय ।।३।।
मीरां कै तो सजनी राम सनेही. और न आवैं मांरी दाय ।।४।।

राज शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७१४३ से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४०

राग देसी —

श्रीतुलसी सुख निधान दुख हरन(ण) गुसाई ।
बार बार प्रना(णा)म लीखूं, अब हरो सोक समुदाई ।।टेर।।
घर के स्वजन हमारे जेते, सबन उपाधि बढाई ।
साध सगत अरु भजन करत मोही, देत कलेस महाई ।१।
बालपनां(णां) ते मीरां कोनी, गिरधरलाल मीताई ।
सो तो अब छुटत नांहि, क्यूं हू[१] लगी लगन बरीयाई ।२।
मोर मात पिता के सम हो, हर भगतन सुखदाई ।
हमको काहा उचत करबो है.सो लीखीयौ समुदा[भा]ई ।३।
मीरा(रां) कहे प्रभु गिरधर नही छाडुं, प्राण क्यूनि जाई ।
एह पत्री मैं लीखो आप सूं, उतर लीखा गुसांई ।४।

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. से

स. पाठ—१. क्यूं हो ।

टिप्पणी – मीरांसुधासिंधु पृ. ९९० पद सं. १० से इस पद की अंतिम दो पंक्तियां नहीं मिलती । शेष पद मिलता है ।

पूर्व प्रस्तुत मूल पदों के पाठान्तर

परिशिष्ट–५

[पृष्ठ सं० २५ पद सं० ४६ का पाठान्तर]

पाठान्तर – १

अरो हू गोविंद सो अटकी, तकत भये दोउ द्रग मेरे ।।१।।
लख सोभा नटकी कर मुरली, कटि काछनी राजै दामन उत पटकी ।।२।।
विन गोपाल लाल सुन सजनी, को जा [नैं]न घटकी ।।३।।
हूं तो भटे सांवरे के वसि, लोग जाने भटकी ।।४।।
मीरा(रां) गिरधर रसिक लाल, संग कुंज लटकी ।।५।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. [illegible]

CC-0. BORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—

राग रामकली ।

गोबिंद सौं अटकी री हूं गोबिंद सौं अटकी ।
थकित भयौ दोउ द्रग मेरे, देखि छवी नटकी ।।टेक।।
हौं तो रंग सांवरे राची, लोग कहै भटकी ।।१।।
बिना गुपाल लाल बिन सजनी, को जाने घटकी ।।२।।
कर मुरली कंकन अति राजत दुति दांमनै फटकी ।।३।।
लोक लाज कुल कांनि बिसारे, अह नर हौं अटकी ।।४।।
मीरां प्रभु जो कै संगि रहूंगो, कुंज कुंज लटकी ।।५।।

रा. प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ पत्रांक–५२ से

पाठान्तर—३ (राग रामकली)

गोबिंद सौं अटकी री हूं गोबिंद सौं अटकी ।
....
अंग अंग आभूखन(ण) राजत बनमाला छुटकी ।।२।।

रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं.

[पृ० सं० १४, पद सं० २७ के पाठान्तर]

पाठान्तर—१

उधव म्हांनै ले चालो जी सांवैरा कै देस ।।टेक।।
कबहुं क छाडि मथरा नगरी, छाड्यौ नंदजी को देस । १।।
तुमरी कारणि जोगणि ऊंगी, करस्यां भगवां भेस ।।२।।
विभूति लगावूं गल ग्रगछाला जटा बधावूं लांबा केस ।।३।
मीरां के प्रभू ग्रि(गिर,धर नागर, मन मै(में) घणां अने(न्दे)स ।।४।।

राज. शो. सं. चोपासनी जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८३९९ से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाठान्तर—२

उधौ मांहा(म्हां) नै ले चालौ नी सांवरा रै देस ।।टेर।।
कबकी छोडी मथुरा नगरी, छोड्यो छोड्यो नंदजी रो देस ।।१।।
अंग व(भ)भूत गलै(लै) मृगछाला(ला),सिर पर लंबा केस ।।२।।
पगां खड़ाऊ वन विचरुं, करणै जौगिया कौ वेस ।।३।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, तन म तुंमारी पेस ।।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी,जोधपुर के ह. लि.ग्रं. सं. १४५ से

पाठान्तर—३

उधो म्हांनै ले चालौ नी सांवरा रै देस ।।टेर।।
तारै कारन(ण)वन वन डोलूं, कर जोगन(ण) को भेस ।।१।।
अवद वदीती अजूं न आए, पडर हुय गया केस ।।२।
है कोई असौ प्रभु कूं मिलावै, तन धन मन करुं पेस ।।३।।
मीरां कै है प्रभु गी(गि)रधर नागर, छोड्यो नार नरेस ।।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह लि. ग्रं सं १०८५१

[पृष्ठ संख्या ४३, पद संख्या ८७ का पाठान्तर]

राग सौरठ।

देखौ हरि कित गया नेहड़ौ लगाय ।।टेर।।
छोड़ चल्या विसवासघाती, प्रेम की वात सुनाय ।।१।।
घायल कर निरमायल कीनी, खबर न लीनी मेरी आय ।।२।।
वहै समद मै छोड़ चल्या है, नेह की नाव लगाय ।।३।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, रह्या छे माधोपुर छाय ।।४।।

रा. प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १०८५१ से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

[पृ. सं. ८७, पद सं. १७७ के पाठान्तर]

राग सोरठ ।

पाठान्तर—१

नंद घर चेरी मे रहूं बाबा, नंद घर चेरी ॥टेक॥
चरंण चेउ में करूं, वंदगो चरणन चेरी ।
टैल कै मिस दरसन(ण) पाऊं, मुगत होइ मेरी ।१॥
लौक लाज कौल(कुल)कांण तजकैं, मगन होइ टेरी ।
मोहनजी का बदन ऊपर, वार हू फेरी ।२॥
सासु नं[ण]द और देरांणी, झे(जे)ठाणी सब मिल झगड़ी ।
मेरो मन लागौ रमतां राम सूं,बाला झख मारो सगरी ।३॥
कोई भली कहो कोई बुरी कहो रे, बाला मै मांड लैंहू झोली ।
दासी मीरां लाल गिरधर, वण रहो जौ[ह]री ।४॥

रा. प्रा. वि प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १२५८६ से

पाठान्तर—२

नद घर चेरी रसू(स्यूं) बावा नंद घरि चेरी ॥टेक॥
मात जसोदा को गोवर थांडु, पीवगो मेरो कवर कन(न्है)यो ।१॥
गोदे(द) खीलाऊं पावन की चेरी, कोटक न दो कोई ।२॥
कवंदी कोई कवंदी सुरत हमें ही मोहनजी के वदन ऊपर वारी हो ।३॥
कोटे वुरा कहो कोटे भला कहो री, माड ल(ले)हों जोरी(झोली) ।४॥
दास मीरां लाल गी(गि)रधर, भली. पवनो जोरी ।५॥

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८६० से

पाठान्तर—३

हरि सू वावा नंद घर चेरी ॥टेक॥
सांवरी सुरत पर मेरो मन अट्यो, ओर कछु न सहाव री ।१।
कोट काम नोछावर करहूं, मंद मंद मुसकाव री ।२।
जमना की तीर कदम की छइया, मृडी मृडी बेन वजाव री ।३।
मोर मुकट पीतांवर सोहै, कुंडल झलकत आ[का]नरी री ।४।
मीरा(रां) के प्रभु गिरधरनागर, चरन(ण) कवल(ल) लपटावरी ।५।

रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

[पृ. सं. ६६, पद सं. १४१]

मुज(झ) प्रेम म(में) हरि करो जी।
हरि आवनां(णा) हरि आवना(णा) जी मन भावना ।।टेक।।
मेरे द्रग तलफत द्रग देखन कु, गल कर दरस दिखायना ।१।।
लगी लगी सब कोई जानैं, आव कहो कैसे छिपावना ।२।।
मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, यो औसर नहो पावना ।३।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं से

[पृ० सं० ६६, पद सं० १४३]

मेरो प्यारो ननलाल[1] मुरली बजाय गयो बन में।
अ जो बंसी की धुन सुन मै गई भूल, तन मन मोया मेरा प्राण ।१।।
अ जी बण का मिरगला मोय लिया, अ जी मोया सिंघ सियाल(ल) ।२।।
अ जो व्रज की गोपी मोह लइ, अ जी चंदा मोया अकास ।३।।
अ जी पाथर में पाणी बह गयो, जमना वही असराल ।४।।
अ जी मीरा(रां) ने दरसण दे गयो, अ जी वांका चिरण में ध्यान ।५।।

पिलानी से प्राप्त हरजसों से

सं. पाठ—१. नंदलाल

[पृ० सं० ७२, पद सं० १४८]

मैं तो छाडी छाडी कुल(ल़) की कांनी [राणोजी] मेरो कहा करसी ।१।
सादा(धां)रं संग जासां दवारका में,(म्हे)तो भजस्यां श्रीरणछोर(ड़)।२।
दोडि र(रै) जास्यां देऊरे, लेस्यो(लेस्यां) महा प्रसाद ।३।
पगां वजावै[स्यां] घुघरा, हाथ में लेस्यो(स्यां) ताल(ल़) ।४।
गास्यो (स्यां) गुन(ण) गोपाल ।
पीहर छाडो मेरतो, सासरायो चीतोर (ड़ ।५।
बीखरो प्यालो राणै जी भेजोयो, मैंतो इमंरत करि अरोग्यो ।६।
मीरां बाई ने गिरधर मिल्या, वह तो भगत वछिल प्रीत पाल(ल़) ।७।

रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह. लि. ग्रं. से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

[पृष्ठ संख्या ७६, पद संख्या १६० का रूपान्तर]

म्हे जास्यां[सा]वरीया र साथ वाई म्हान(नै) जगत हंसो है ।
जगत हसै हसि जाँणदे री टहैल करां जाय ।।टेक।।
माधुरी मुरति हिरदै वसी, म्हांने चित मं रही है लुभाय ।१।।
लोग कटुंबो निंदवे री, लगी प्रीत न घटाय ।२।।
जब देखां तव ही सुख उपजै, विनि देख्यां जीव जाय ।३।।
सास ननद देली वोलिबो; म्हांना[णां]मात पिता पिछताय ।४।
मीरा[रां] प्रभु गिरधर नी दासी, अबकै रऊं वारि ।।५।।

रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह. लि. ग्रं. से

[पृष्ठ संख्या ८४, पद संख्या १७१ का रूपान्तर/पाठान्तर]

राधे वसि कीनो हो स्यांम सुजांन ।
धन जी रानी कुखि तुमारी,धन जो पीता वृखभान[ण] ।।टेक।।
सुनो रंग वेली राज गेहली,कहा कीया जी पुन दान(ण)।।टेक।।
सोवा जी सागर रुप उजागर, अखीयां मैं जान विजांन ।।टेक।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,दीज्यो जी भगत मोहि दान ।।टंक।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८६० से

भाव वाले पदों का रूपान्तर/पाठान्तर [पृ० ६६, पद सं० २०२]

फगवा दै गिरधारी हमारो ।।टंक।।
गहवन मान भौंह करि बांकी, मांगत राधा प्यारी ।१।।
नीची द्रिस्ट किये छुटि हों,क्यों कहू कुंज बिहारी ।२।।
कै तो देऊ नांहि तो अब ही, निकसै अंड तिहारी ।३।।
मैं तन हाहा खात मनोहर, रंग चढयौं अति भारी ।४।।
जिन मीरां रस की झगरनि पर,निरखत होत बलिहारी ।५।।

रा. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं स. १०६७ से

★ ★ ★

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पदों के आधार पर मीरां की आत्मकथा का अन्वेषण

परिशिष्ट–६

मीरां का जीवनवृत्त और काव्य, सम्प्रति अत्यन्त विवादास्पद रहे हैं। इसका कारण मीरां के जीवनवृत्त सम्बन्धी प्रामाणिक उल्लेख का उपलब्ध न होना तो है ही साथ ही मीरां की प्रामाणिक पदावली अभाव में भी यह समस्या जटिल हुई है। मेरी यह धारणा है कि मीरां अपने पदों में आज भी सजीव है। मीरां लोकनिधि है अतः उनकी वास्तविक खोज भी लौकिक सामग्री में ही होनी चाहिए। लोकमान्यताओं, लोकवार्ताओं किंवदन्तियों तथा लोक-काव्य एवं मीरां के पदों में मीरां व्याप्त है। आवश्यकता इस बात की है कि उस सम्पूर्ण सामग्री का चयन कर, उसमें से प्रामाणिक सामग्री अलग की जाय तथा शेष भक्त-समाज के मनोरंजन के लिए छोड़ दी जाय। इसी दृष्टि को ध्यान में रख कर प्रस्तुत पदों को संकलित किया गया है। किसी भी साहित्यकार अथवा भक्त के जीवन पर प्रकाश डालने वाले दो ही प्रकार के तथ्य हो सकते हैं–एक आंतरिक और दूसरा बाह्य। मीरां के पदों के इस आंतरिक साक्ष्य से बहुत सी नई सामग्री उपलब्ध होती है। इन पदों को देखने से ज्ञात होता है कि मीरां के जीवन-वृत्त पर इनसे नवीन प्रकाश पड़ता है तथा कुछ ऐतिहासिक तथ्यों की पुष्टि होती है।

मीरां अपने आराध्यदेव श्रीगिरधर नागर के भक्ति–रस में रंगी, भाव-विभोर हो परिचयात्मक ढंग से गा उठी—

म्हारे हीरदे लीख्यो जी हरी नाम, अब नहीं बीसरुं।
म्हारी सेवा में सतगुरु राम ।।टेर।।
वीसका प्याला राणोराई भेज्या, दे मेड़तणी रे हाथ।
करी चरणाम्रत पी गई, थे जाणों रे रगुनाथ ॥१॥
जा य दासी म्हल में जोरे, मीरा मुई क नाही।
मुई वे तो जाल दो जी, न तो नदी में दो जी बुहाई ।।२।।
पावां बांद्या मीरां गुगरा जी, हाता लीनी ताल।
मीरां महल में ऐकलो जी, भजे राम गोपाल ।।३।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणो मीरा परी कोपीयो जी, मारु ऐकरण सेल।
लाछरण लागैं जीव कु, पीहर दीजो मेल ।।४।।
मीरां महल सु उतरी जी, राणा पकड़यो हात।
हतलेवा का साईना, मारे ओर न दूजी बात ।।५।।
रत बेल्या सीणगारिया, ऊंटा, कसीया भार।
डावो मेल्यो मेरतो जी, पहली पोकर जाई ।।६।।
सांडीड़ा साड्यो पोलाण, जा रे मीरां पाछी फैर।
कुल की तारण असतरी, मुरड़ चलां राठौड़ ।।७।।
सांडीड़ा साड्यो फैर दे रे, परत न देसु पाव।
ले जाती बैकुंट में, समज्या नही सीसोद ।।८।।
लाजै छे पीयर सासरो मीरां, लाजे छै माय मोसाल।
लाजै दूदा जो रौ मेरतो जी, लाजै गढ चीतौड़ ।।९।।
तारूं पीयर सासरौ जी, तारुं माय मौसाल।
तारुं दुदा जी रो मेरती जी, तारुं गढ़ चीतौड़ ।।१०।।
लक्षमीनाथ के देवरे जी, बैठो सीसोदया साथ।
मीरां नाचे एकली जी, छाडी कुल की लाज ।।११।।
साध हमारा मै साध की, हम हैं साधा आग।
साध हमारे में रम रया, ज्यु पथरी में आग ।।१२।।
मीरां को पीयर मेड़तो जी, सासरियो चीतौड़।
मीरां ने गीरधर जी मिल्या, नागर नंद किसोर जी ।।१३।।

इस पद से मीरां के जीवनवृत्त. भक्ति, उपास्यदेव तथा साधु-संतों के प्रति श्रद्धा और प्रेम का पूर्ण परिचय हमें मिलता है। उपर्युक्त पद की प्रथम दो पंक्तियाँ पूर्णरूपेण मीरां के भक्तिपूर्ण उद्‌गार ही हैं, किन्तु पद के अंत तक आते आते लगता है जैसे यह पद संवादपूर्ण बन गया है और इसमें प्रक्षिप्त अंश का समावेश हो गया है। इस कारण इसकी प्रामाणिकता संदिग्ध भी हो जाती है। किन्तु, इतना अवश्य समझा जा सकता है कि इस पद के निर्माणकाल तक, लोकमानस में मीरां का यही स्वरूप और परिचय था। इस पद के ग्रंथ का लिपिकाल विक्रमी संवत् १८६६ है अतः संवत् १८६६ तक का मीरां का यह परिचय सिद्ध होता है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उपर्युक्त पद से यह ज्ञात होता है कि मीरां के हृदय में हरि का नाम अंकित हो गया है। मीरां के ये हरि, उसके उपास्यदेव 'गिरधरनागर' अथवा 'गिरधर-गोपाल' श्रीकृष्ण ही हैं, किन्तु अपने आराध्य स्मरण में मीरां संकीर्ण नहीं है वह उन्हें हरि और राम दोनों ही रूपों में स्मरण करती है। यह हरि-स्मरण मीरां की आदर्श भक्ति का द्योतक है। साथ ही मीरां के 'सतगुरु' भी वे राम ही हैं अर्थात् हरि (विष्णु) के दूसरे अवतार। इससे यही ज्ञात होता है कि मीरां के उपास्यदेव अथवा आराध्यदेव ही गुरु थे। मीरां ने अलग से किसी लौकिक सत्-पुरुष को अपना गुरु नहीं बनाया। हरि के दो रूपों-राम और कृष्ण में मीरां ने कभी भेद नहीं समझा, इसी कारण ये दोनों शब्द मीरां के पदों में बार बार एक ही के पर्यायवाची शब्दों के रूप में आए हैं। यहां भी 'सतगुरुराम' कह कर मीरां अपने आराध्य की ओर ही संकेत करती है। अनेक नामों से भी वह अपने गिरधर को ही भजती है। श्रीमद्भागवत आदि पुराणों में श्रीकृष्ण ने स्वयं भक्ति को ऐसी स्थिति बताई है जब भक्त के प्रभु ही उसके गुरु होते हैं। यहां मीरां भी अपने सतगुरु का स्पष्ट उल्लेख करती है। इससे मीरां पर किसी गुरु का आरोपण असत्य ही ज्ञात होता है।

प्रस्तुत पद से ज्ञात होता है कि दूदा जी के मेड़ते और 'सिसोदियों' के गढ़ चितौड़ से मीरां का कोई सम्बन्ध है। चितौड़ के सिसोदिया राणाओं की वह 'कुल की तारण अस्तरी' है। 'राणा-राई' ने विषका प्याला भेजा था मीरां को मारने के लिए, क्योंकि मीरां ने लोकलाज छोड़ कर 'पाव गुगरा बांध' कर, हाथों में ताल लेकर, राम - गोपाल को भजा था। मीरां चितौड़ में 'मेडतणी' के नाम से प्रसिद्ध है,तभी तो उसे मेड़तणी के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मेड़ता मीरां का पीहर है और चितौड़ ससुराल है। मेवाड़ और मेडता के इन दोनों कुलों से मीरां सम्बन्धित है। मेड़ता, दूदाजी के मेडता के रूप में और चितौड़, 'सीसोदिया' राणाओं के गढ़ चितौड़ के रूप में प्रसिद्ध है। मीरां को उसकी साधु-संगति, लोकलाज छोड़, पग घुगरू बांध कर नाचने के कारण, मारने का प्रयास किया गया। मारने के इन प्रयासों में विष का प्याला भेजना और एक ही 'सेल' (अस्त्र विशेष) से मार डालने के प्रयत्न शामिल है। विष के प्रभाव से मीरां बच जाती है और 'रथ और बेल्यी' में बैठ कर तथा ऊंटों पर सामान बंधवा कर अपने पीहर (मेड़ता) की ओर चल देती है। इस समय मीरां सीधी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मेड़ता न जाकर, पहले प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर (पोकर) जाती है, इस कारण मेड़ता मीरां के बांई ओर रह गया है (डांवो मेल्यो मेरतो, पहली पोकर जाई)।

पद के इस संकेत से मीरां के पुष्कर की तीर्थ यात्रा की पुष्टि होती है। मीरां के चितौड़ त्याग करने पर 'ऊंट सवार' को मीरां को वापस लिवा लाने को भेजा जाता है, किन्तु मीरां स्पष्ट कह देती है कि वह पीछे पांव नहीं रखेगी। इस पर उस ऊंट-सवार ने उसे बहुत समझाया कि आपकी इन बातों से आपके पीहर और ससुराल दोनों अपमानित और लज्जित होते हैं। आपका पीहर दूदा जी का मेड़ता है और ससुराल गढ़ चितौड़ है।[१] मीरां का उत्तर है कि मैं पीहर और ससुराल दोनों को लज्जित करने के बजाय 'त्यार' दूंगी अर्थात् गौरव प्रदान करूंगी।

प्रस्तुत पद में तत्कालीन आवागमन के साधनों का अत्यंत सजीव वर्णन है। 'रथ और बैलों' के साथ ऊंट - सवार उन दिनों राज-परिवार की महिलाओं के, एक स्थान से दूसरे स्थान जाने पर, प्रयोग किए जाते थे। मीरां भी कभी अकेली नहीं गई, उसके साथ भी पांच दस आदमी अवश्य थे।

चितौड़गढ़ में महाराणा कुंभा का बनाया हुआ वराह का मंदिर है जिसे अब तक मीरां का मंदिर कहा जाता रहा है और उसी को आधार बना कर मीरां को कुंभा की पत्नी मानने का प्रयास भी हुआ है।[२] किन्तु मीरां के पदों से यह स्पष्ट है कि वह मंदिर लक्ष्मीनाथ के मदिर के रूप में, मीरां के समय प्रसिद्ध था। उसी लक्ष्मीनाथ के मंदिर (देवरे) में मीरां ने अपने प्रभु के भक्ति-गान गाये हैं।

मीराँ ने अपने पदों में स्पष्ट रूप से कुंभ स्याम के (कुंभ स्वामी) के देवरे (देवस्थान. मंदिर) का उल्लेख किया है। इसमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि चितौड़-स्थित यह मंदिर मीराँबाई का मंदिर नहीं है, यह कुंभस्वामी का मंदिर है जो वि० सं० १५०५ से पूर्व बन चुका था[३]। अर्थात् मीराँ के जन्म (वि०सं० १५५५) से कई वर्ष पूर्व।

हां, यह संभव है कि मीराँ इस मंदिर में बैठा करती हो। भजन-भाव, श्रवण, कीर्तन करती रही हो। क्योंकि यह इतिहास का सत्य है कि भक्त रैदास जब चितौड़ गए थे तब इसी कुंभस्वामी के मंदिर में झाली रानी ने उनके दर्शन

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

किए थे। इस सम्बंध के प्रमाण रूप में रैदासजी के पैरों के चिह्नों का चबूतरा इसी मंदिर के दालान में बना हुआ है।

मीरां के पदों को देखने से एक समस्या जटिल हो जाती है कि पदों में वर्णित यह राणा कौन है ? क्या यह 'राणा' मीरां के ससुर महाराणा सांगा हो सकते हैं ? अथवा कोई जेठ है अथवा देवर है अथवा मीरां के पति हैं ? ये राणा मीरां के पति नहीं हो सकते क्योंकि इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि—मीरां के बड़े पिता (बाबोसा) राव वीरमदे दूदावत ने वि० सं० १५७३ में मीरां का विवाह चित्तौड़ के महाराणा सांगा रायमलोत के ज्येष्ठ पुत्र युवराज भोजराज से किया था। विवाह बड़ी धूमधाम से किया गया था। महाराणा सांगा स्वयं अपने विक्रम हाथी के साथ मेड़ता गए थे। मीरां के विवाह–अवसर पर इतना बड़ा 'तोरण' बनाया गया था कि उस पर ३०० दीपक रखे जा सकते थे। मीरां का यह 'तोरण' कुछ वर्षों पूर्व तक मेड़ता के चारभूजा के मंदिर में सुरक्षित था।

विवाह के कुछ वर्ष पश्चात् ही युवराज भोजराज का देहांत हो गया था। अतः उन्हें 'राणा' शब्द से सम्बोधित नहीं किया जा सकता। मेवाड़ में 'राणा' केवल शासक के लिए हो प्रयुक्त होता है। भोजराज सांगावत कभी मेवाड़ के राणा नहीं रहे अतः यह 'राणा सम्बोधन युवराज भोजराज के लिए नहीं हो सकता।

---

३. "कुंभस्वामी और आदिवराह के दोनों विष्णुमंदिर चितौड़ में एक ही ऊंची कुर्सी पर पास पास बने हुए हैं। एक बहुत ही बड़ा और दूसरा छोटा है। बड़े मंदिर की प्राचीन मूर्ति मुगलों के आक्रमणों के समय तोड़ डाली गई, जिससे नई मूर्ति पीछे से स्थापित की गई है। इस मंदिर का भीतरी परिक्रमा के पिछले ताक में वराह की मूर्ति विद्यमान है। अब लोग इसी को कुंभस्वामी (कुंभस्याम) का मंदिर कहते हैं। लोगों में यह प्रसिद्धि हो गई कि बड़ा मंदिर महाराणा कुंभा ने और छोटा उसकी रानी मीरांबाई ने बनवाया था, इसी जनश्रुति के आधार पर कर्नल टॉड ने मीरांबाई को महाराणा कुंभा की रानी लिख दिया है, जो मानने के योग्य नहीं है। मीरांबाई महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज की पत्नी थी। उक्त बड़े मंदिर के सभा–मण्डल के ताकों में कुछ मूर्तियां स्थापित हैं जिनके आसनों पर वि० सं० १५०५ के कुंभकर्ण के लेख हैं, जिनसे पाया जाता है कि वह मंदिर उक्त संवत् में बना होगा। उदयपुर का इतिहास, ओझा—पृ० ६२२)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

यदि यह मीरां के ससुर, जेठ अथवा देवर के लिए है तब भी ठीक नहीं है क्योंकि वे मीरां के 'हृथलेवा के साईना' कैसे हो सकते हैं ? मीरां के 'हृथलेवा के माईना' तो भोजराज ही हो सकते हैं। यदि यह मान भी लिया जाय कि यह शब्द मीरां के ससुर अथवा जेठ के लिए है तो एक प्रश्न उठता है कि मर्यादा का पोषक मेवाड़ का महाराणा, अपनी पुत्रवधु का हाथ पकड़ने की भूल कैसे कर सकता है ?

अत: यही कहा जा सकता है कि या तो यह राणा शब्द दो भिन्न भिन्न व्यक्तियों के लिए है अथवा यह पंक्ति प्रक्षिप्त मानी जाय तो यह महाराणा विक्रमादित्य के लिए संभव हो सकता है। महाराणा विक्रमादित्य सांगावत, जो महाराणा रतनसी सांगावत के पश्चात् मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठे थे। एक तो वे ऐसी ही विकृत प्रकृति के राणा के रूप में इतिहास में प्रसिद्ध हैं दूसरे वे मीरां के देवर भी थे अत: उनके लिए मीरां का हाथ पकड़ना भी सभव हो सकता है। अन्यथा न तो महाराणा सांगा रायमलोत ही ऐसा कार्य कर सकते हैं जो स्वयं मीरां को पुत्रवधू बना कर लाए थे और न ही उनके बाद महाराणा बनने वाले रतनसी सांगावत ही। महाराणा रतनसी सांगावत न मेवाड़ पर बहुत ही अल्प समय (वि० सं० १५८४ से १५८८) तक शासन किया था और इस समय भी वे आंतरिक कलह में फँसे रहे और अंत में अपने मामा के साथ ही युद्ध करते हुए मारे गए। उन्हें न तो मीरां को सताने का अवसर मिला होगा और न ही वे महाराणा विक्रमादित्य जितने इतिहास में अपकीर्ति को प्राप्त हुए हैं। महाराणा रतनसी के बाद विक्रमादित्य राणा हुए और इनके बाद राजकुमार पृथ्वीराज रायमलोत का दासी पुत्र बणवीर महाराणा हुआ। बणवीर, दासीपुत्र कभी साहस नहीं कर सकता कि वह मीरां को सतावे ! बणवीर के पश्चात् उदसी [उदयसिंह] सांगावत मेवाड़ के महाराणा हुए। महाराणा उदैसी सांगावत मीरां के चचेरे भाई जैमल वीरमदेवोत का बहुत सम्मान करते थे तथा धार्मिक वृत्ति[४] के महाराणा थे अत: उनसे भी मीरां को सताने की आशा नहीं की जा सकती। इसके विपरीत उन्होंने तो महाराणा बनते ही मीरां को मेवाड़ लाने हेतु अपने आदमी द्वारिका भेजे थे।

इस शब्द पर (समय को ध्यान में रख कर) विचार करें तो भी ज्ञात होगा कि मीरां अन्तिम रूप से वि० सं० १५९० तक चितौड़ में रही थी, इसके पश्चात् वह मेड़ता लौट गई थी। इस बात की पुष्टि बाह्य और आंतरिक साक्ष्यों

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोनों से होती है। बाह्य साक्ष्य से ज्ञात होता है कि वि० सं० १५९१ में मेवाड़ का द्वितीय शाका (जौहर) हुआ था जबकि गुजरात के बहादुरशाह ने दूसरी बार चित्तौड़ पर आक्रमण किया था। इस समय हुए जौहर में हाडी कर्मावती के साथ चितौड़ दुर्ग की समस्त स्त्रियों ने अपने प्राण अग्नि को समर्पित किए थे। कहते हैं इस समय १३०० स्त्रियों ने इस 'शाके' में भाग लिया था। कोई भी स्त्री जीवित नहीं बची थी।[५] यदि मीरां इस समय चितौड में होती तो उसे भी जौहर करना होता। अतः इससे पूर्व ही मीरां ने चितौड़ त्याग कर दिया था और वह मेड़ता चली आई थी।

मीरां के पद भी इस बात के द्योतक हैं कि जबसे उसे सताना आरम्भ किया गया उसके बहुत थोड़े ही दिनों तक वह चितौड़ में रही। अपनी व्यथा अपने बड़े पिता तक वह भेजने लगी थी—

सासरीया में दुख्ख घणेरो, सासू नणद सतावै।
केजौ म्हारा बाबोसा ने, वेगा लेबा आवै॥

अपनी पुत्री के इस करुण आमंत्रण पर राव वीरमदे स्वयं चितौड़ गए थे। इसी समय उन्होंने महाराणा विक्रमादित्य को भी बहुत समझाया था, किन्तु उनकी बात न मानने पर वे मीरांबाई को लेकर मेड़ता चले आए और वि० सं० १५९१ में बहादुर शाह द्वारा आक्रमण करने पर भी वे चितौड़ नहीं गए। जब कि इससे पूर्व के सभी युद्धों में वे महाराणा की सहायतार्थ गए थे।[६]

राव वीरमदे दूदावत और उनके परिवार को, राणा परिवार द्वारा मीरां के साथ ऐसा व्यवहार करने पर अत्यन्त प्रायश्चित् हुआ था, जिसकी प्रतिध्वनि मीरां के इन पदों में मिलता है—

सास नणय दे लीवो लीवो म्हाना मात पिता पछताय।

मीरां को भी चितौड के इस व्यवहार से अत्यन्त दुख हुआ था तभी तो कहती है—

मारा पियरीया रो लोक भले रो बांधे कंठीमाला

चितौड़ में मीरां के साथ जो व्यवहार किया गया उसके कारण चितौड़ त्याग ने के अतिरिक्त उसके पास और कोई चारा नहीं था। मीरां ने इसे अपने पदों में भी स्थान दिया है—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गढ़ चितौड़ ना रेवां, नहीं रहण को जोग

मीरां किसी भी किम्मत पर चितौड़ रहना नहीं चाहती थी। अतः उसे चितौड़ तो छोड़ना था पर चितौड़ छोड़ने के पश्चात् वह कहां जाय यह उसके समक्ष प्रश्न था। इसके दो ही रास्ते हो सकते थे--

१. या तो वह अपने पीहर मेड़ता लौट जाय, अथवा
२. अपने प्रभु के लीला-स्थलों के दर्शनार्थ चल दे।

मीरां के प्राप्त पदों से दोनों ही ध्वनियां और स्पष्ट संकेत मिलते हैं, किन्तु पदों के आधार पर यह निर्णय करना कठिन है कि मीरां चितौड़ से सर्वप्रथम कहां गई—पीहर, पुष्कर, वृंदावन अथवा द्वारिका ?

मीरां का मेड़ता-गमन—

सबसे पहली संभावना यही है कि मीरां अपने बड़े पिता के पास मेड़ता ही लौट गई थी और मेड़ता जाते हुए पुष्कर - स्नान करती गई होगी। इस बात की पुष्टि मीरां के पदों और इतिहास से भी होती है।[७]

विभिन्न कष्टों से तंग आकर मीरां ने अपने बड़े पिता[८] को अपनी करुण कथा कहलवाई (जिन्हें राजस्थान में बाबोसा कहा जाता है क्षत्रिय-समाज में विशेषकर) तथा राजस्थान में लड़की का बाबोसा की लाड़ली होना अत्यधिक प्रसिद्ध है। प्रत्येक कन्या अपने दादा और बाबोसा की लाड़ली होती है। यह परम्परागत प्यार मीरां को भी प्राप्त हुआ था। उसने बाबोसा को बड़े करुण स्वर में कहला भेजा कि मुझे लेने शीघ्र आ जावें। इसी संदेश के मिलते ही राव वीरमदे दूदावत चितौड़ पहुंच गए और मीरां को मेड़ते ले आए। यह घटना वि० सं० १५८९ की है जबकि राव वीरमदे गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह के प्रथम चितौड़-आक्रमण के समय चितौड़ की रक्षार्थ गए थे।

मीरां वि० सं० १५९० तक मेड़ता में रही। मेड़ता मीरां को अत्यन्त प्रिय रहा है। उसके पदों में बार बार इस बात का उल्लेख मिलता है। मेड़ता के भक्ति पूर्ण वातावरण और सीधे साधे श्रद्धालु लोगों से मीरां को बड़ा स्नेह था। तभी वह बार बार कहती है—

१. म्हारा पियरीयारी बातां सतगुरु कैता जाज्यो
२. मारा पीयरीया री लोक भले री बांधे कंठीमाला

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मीरां के इन पदों से भी यही संकेत मिलता है कि चितौड़ की दुखी मीरां अपने प्रिय मेड़ते अवश्य गई थी। मीरां के पदों का यह उल्लेख कि--

'डावों मेल्यो मेरतो, पहली पोकर जाई'—भी मीरां की मेड़ता यात्रा की ही पुष्टि करता है। मेड़ता आने से पूर्व मीरां तीर्थ-स्थल पुष्करराज जाती है और तत्पश्चात् मेड़ता पहुंचती है, यही संकेत प्रस्तुत पद का है।

मीरां के मेड़ता अगमन के कुछ समय बाद ही मारवाड़ के स्वामी राव मालदे गांगावत ने मेड़ता पर आक्रमण कर दिया और राव वीरमदे दूदावत को मेड़ता छोड़ कर अजमेर जाना पड़ा।[८] अजमेर राव वीरमदे, सपरिवार गए थे अत: मीरां भी मेड़ता से उनके साथ अजमेर आ गई थी। राव वीरमदे दूदावत अजमेर एक वर्ष ही रह पाये थे कि राव मालदे ने अजमेर पर भी अधिकार कर लिया।[९] तब राव वीरमदे दूदावत नरणा और अमरसर की ओर चले गये।[१०] इसी समय मीरां वृंदावन की ओर गई होगी। मीरां के वृंदावन गमन की सूचना उसके पद देते हैं—

'रायघाट सब ढूंढ फिरि। वृदावन मेरो सांवरियो'

जब मीरां को यह अनुभव होने लगा कि उसका सांवरा वृंदावन में है तब वह घर से निकल पड़ी।

'घर से निकमी' (घर से निकलते ही) 'मौकुं छींक भई' अपशकुन हुआ किन्तु दूसरी और 'आगे वांन सुनावै कागरिया'। इस शुभ शकुन के मिलते ही मीरां वृंदावन को चल दी। जब वह वृदावन घूम चूकी तब उसने कहा—

वृंदावन नीजधाम। देख्यौ री मैं वृंदावन नीजधाम।
श्री जमुना ज्याके नीकट बैहत है सब विध पूरण काम।
श्री बलदेव माहावनौं गोकल मथुरा जो विच राम।
गोवरधन श्री माणसी गंगा वरसाणौ नद गाम।
कुंज कुंज मैं कथा वसत है, नीस दिन आठुं याम।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, संतन के वीच राम॥

इन पदों के सजीव वर्णनों से भी मीरां की वृंदावन यात्रा की पुष्टि होती है। साथ ही कुछ भक्तों ने भी मीरां की वृंदावन यात्रा की पुष्टि की है।[११] आधुनिक साहित्यकारों में से कुछ इस यात्रा को स्वीकार करते हैं।[१२]

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वृदावन की तीर्थयात्रा करने के पश्चात् मीरां द्वारिका लौट जाती है जहां अपने जीवन के अंतिम समय तक वह रहती है।[१३] मीरां का द्वारिका गमन वि० सं० १५९७ तक हो गया था। सभी इतिहासकार, साहित्यकार एवं धार्मिक व्यक्ति इस बात से पूर्णतया सहमत हैं कि मीरां अपने जीवन के अन्तिम दिनों में द्वारिका में थी और वहीं उसने इस लौकिक देह का त्याग किया था। मीरां के पदों से भी इस बात की पुष्टि होती है। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या मीरां चितौड़ से सीधी द्वारिका गई थी अथवा पुष्कर, मेड़ता और वृंदावन जाने के पश्चात्। मीरां के कुछ पद ऐसे उपलब्ध हैं जिनसे मीरां के चितौड़ से सीधे द्वारिका जाने के संकेत मिलते हैं—

१. गढ चितौड़ै ना रहां, नहीं रहण को जोग
बसस्यां रुड़ी द्वारिका : जांहां हरि भगतां राभोग ।।
२. सादां रै संग जाय दवारका में तो भेजस्यां श्रीरणछोर।
दोड़ि र जास्यां देउरे। लेस्यूं महाप्रसाद
३. मीरा उतरया मेल सूं जी। लीवी दवारका री बाट ।।

कुछ आधुनिक साहित्यकारों की भी यही धारणा बन गई है कि मीरां चितौड़ से सीधी द्वारिका गई थी। वृंदावन आदि स्थानों को वह नहीं गई।[१४] किन्तु अंतः और वाह्य साक्ष्यों से इस बात की पुष्टि होती है कि मीरां पुष्कर, मेड़ता और वृदावन के पश्चात् ही द्वारिका गई थी।

इतना होते हुए भी मीरां का एक पद ऐसा है जिससे मीरां की सभी तीर्थयात्राओं के प्रति संदेह किया जा सकता है—

मेरा राम ने रिझाऊं अजी मैं तो गुण गोविन का गाऊं।
डालपात के हाथ न लाऊं ना कोई विरछ सताऊं।
पान पान में सायब देखूं झुक करि सीस निवाऊं।
गंगा जाऊं न जमना जाऊं ना कोई तीरथ नाऊं।
....
अड़सट तीरथ भरया घट भीतर जामें मलमल न्हाऊं।
....

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साधू हौऊं ना जटा बधाऊं ना कोई राख रमाऊं ।

ग्यान कटारी कस कर बांधू सुरतां म्यांन चढाऊं ।

पार बिरम पूरण पुरसोतम व्यापक रूप लखाऊं ।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर आवागमण मिटाऊं ।

यह इतिहास सम्मत तथ्य है कि मीराबाई जोधपुर के संस्थापक राव जोधा जी रिडमलोत के पुत्र राव दूदा जी मेड़तिया के पुत्र रतनसी दूदावत की पुत्री थी। राव दूदा जी जोधावत ने ही अपने भाई वरसी जोधावत के साथ वि० सं० १५१८–१९ में मेड़ता में मेड़तिया शासन स्थापित किया था।[१५] अतः कालांतर में कई वर्षों तक मेड़ता दूदा जी के मेड़ता के नाम से जाना जाता रहा है। मेड़तिया राव दूदाजी के ५ पुत्र थेः—(१) राव वीरमदे, (२) रायमल, (३) रतनसी, (४) रायसल और ५) पीचाण जी।

इतिहास साक्षी है कि मेड़ताधीश राव दूदा जोधावत की वि० सं० १५७२ में मृत्यु हो जाने पर, उनके ज्येष्ठ पुत्र राव वीरमदे दूदावत मेड़ता के शासक हुए।[१६] राव दूदो जी जोधावत के पुत्र अर्थात् राव वीरमदे दूदावत के अनुज, रतनसी दूदावत की कन्या ही मीरांबाई थी। इस तरह मेड़ता के राव वीरमदे दूदावत मीरां के बड़े पिता हुए अर्थात् पिता के बड़े भाई। राजस्थान में पिता के वड़े भाई को 'वाबोसा' कहा जाता है।

इस बात की भी इतिहास पुष्ठि करता है कि मीरां के पिता रतनसी दूदावत, मेवाड़ के महाराणा सांगा और मुगल सम्राट बाबर के बीच हुए, इतिहास प्रसिद्ध खानवा के युद्ध में महाराणा की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए थे।[१७] खानव का यह युद्ध विक्रमी सम्वत् १५८४ में हुआ था।[१८] चूंकि मीरांबाई का विवाह वि० सं० १५७३ में हुआ अतः यह युद्ध मीरां के विवाह के ११ वर्ष बाद हुआ था। इस समय तक मीरां विधवा हो चुकी थी।

इतिहास इस बात को भी स्वीकार करता है कि मेड़ता के राव वीरमदे दूदावत को महाराणा सांगा रायमलोत की वहन ब्याही गई थी और इस तरह चितौड़ मेड़ता के स्वामी राव वीरमदे दूदावत की ससुराल थी और महाराणा सांगा रायमलोत उनके साले थे। इसी कारण उन्होंने महाराणा सांगा रायमलोत

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

की जीवनपर्यन्त, प्रत्येक युद्ध में सहायता की थी। यहां तक कि महाराणा के जीवन के उस अन्तिम युद्ध (खानवा) में भी मेड़तिया राव वीरमदे दूदावत ४००० सैना लेकर अपने दोनों छोटे भाईयों, रतनसी और रायमल के साथ महाराणा की सहायतार्थ गये थे जबकि महाराणा सांगा के जवांई (पुत्री के पति) मारवाड़ के स्वामी रावगांगा बाघावत उस युद्ध में नहीं थे। इसी युद्ध में राव वीरमदे दूदावत के दोनों भाई (रतनसी और रायमल) वीरगति को प्राप्त हुए थे।

इन्हीं राव वीरमदे दूदावत सहित पांचो भाईयों के बीच सबसे बड़ी कन्या मीरांबाई थी। अतः उन्हें बड़े लाड प्यार से पालापौषा गया था। मीरां का बचपन अपने यशस्वी दादा राव दूदा जोधावत की स्नेहमयी गोद में बीता था। अभावों से दूर राज वैभव और दुलार प्यार में पली मीरां, लौकिक दुर्भाग्य भी अपने साथ लाई थी। इस कारण मीरां को लौकिक सुख कभी प्राप्त नहीं हो सका। मीरां के जन्म के कुछ समय पश्चात् ही मीरां की माता का स्वर्गवास हो गया, जब वह विवाह के योग्य हुई तब अर्थात् वि० सं० १५७२ में उसके दादा राव दूदा जोधावत की मृत्यु हो गई। विवाह होने के कुछ वर्ष पश्चात् ही उसके पति इस संसार में नहीं रहे। उसके लौकिक पति उसके सभी सांसारिक आनन्दों की इतिश्री कर, उसे वैधव्य दे गए। मीरां अभी इस कष्ट को भूल भी न पाई होगी कि उसकी ससुराल के पितातुल्य ससुर महाराणा सांगा और मीरां के पिता और पिता के भाई (रायमल) की मृत्यु लीला ने मीरां को अत्यधिक दुखी कर दिया। इस प्रकार एक एक करके मीरां के सभी सहारे इस दुनियां से चले गए। केवल एक सहारा बचा और वह भी पीहर में, राव वीरमदे दूदावत का।

चितौड़ में महाराणा सांगा के समाप्त होते ही मीरांबाई के दुर्दिन प्रारम्भ हो गए। महाराणा सांगा की मृत्यु होते ही मीरां को अपमानित, प्रताड़ित कर कष्ट दिए जाने लगे जिसकी पराकाष्ठा महाराणा सांगा के द्वितीय उत्तराधिकारी उन्हीं के पुत्र महाराणा विक्रमादित्य सांगावत के शासन काल में हुई। अपने कुकर्मों के लिए इतिहास में कुख्यात महाराणा विक्रमादित्य ने अपनी भाभी को कष्ट देने में कोई कमी नहीं रखी, जिसकी लम्बी विथा मीरां के पदों में वर्णित है। यद्यपि इन पदों में कुछ अतिशयोक्ति, किंवदन्ती अथवा अप्रामाणिकता हो सकती है किन्तु सर्वथा मिथ्या संकेत, ये नहीं हो सकते। मीरां के पदों में पुनः पुनः उल्लेख है, मीरां को सताने, विष देने का—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१. वीसरा प्याला राणो राई भेज्या, दे मेड़तणी रे हाथ ।

२. मीरां ने जहर इंम्रत कर पीयौ

३. कनक कटौरे विष घोलियौ, दीयौ मीरां के हाथि

४. राव राना जहर दीन्या अधिक सौभा लसी

५. प्याला में वीष घोल दिया है, पीया है नीजदासी

६. कनक कटौरा में इमरत भर्‌यो, पीवत कौन नटै ।

७ कनक कटौरे लै विष घौल्यौ, दयाराम पांड्यो लायो ।

८. राणो मीरां पर कौपीयो जी, मारु एकण सेल

इसी प्रकार—

'राणा' के साथ-साथ श्वसुर - परिवार के अन्य लोगों ने भी मीरां को जी भर के सताया । इसीलिए मीरां को कहना पड़ा—

१. सासरिया मैं दुःख घणौं रौ सासू नणद सतावै

....

देवर जेठ म्हारो कुटब कबीलौ नितउठ राड़ चलावे

२. देवर जेठ म्हारै कुबुधि, नीत की राड़े पछाड़

३. सासु नणद मारी देवर जैठांणो सब ही मिल जगड़ी

४. सास बुरी है मारी नणद हठीली

उपर्युक्त सभी पदों में मीरां को जहर देनें तथा सताने को करुण व्यथा भरी है । राणा-मीरां संवाद, इनमें से कुछ पदों की विशेषता है । राणा को मीरां के प्रत्युत्तर सारगर्भित और विद्वतापूर्ण हैं । मीरां की दृढ़ भक्ति और दुष्टों से दूर रह कर 'हरिजन' के साथ हरि–स्मरण करने के संकेत इन पदों में मिलते हैं । 'कनक कटौरे विष घोलियो' से यही ज्ञात होता है कि मीरां जैसी राजवधू को विष देते समय भी उचित पात्र चूना गया था। इसका कारण एक तो यह हो सकता है कि मेवाड़ का राजमहल इतना सम्पन्न था कि हीन से हीन कार्य हेतु भी सोने के कटोरे ही प्रयुक्त होते थे अथवा मीरां राजवधू थी अतः उस हेतु चरणामृत के नाम से भेजा गया विष भी सोने के कटोरे में ही होना चाहिए अन्यथा संभव है प्रतिदिन के विपरीत पात्र में प्रभु का चरणामृत देख कर मीरां को कुछ संशय हो जाता । यदि यह पद प्रक्षिप्त भी माना जाय तब भी इतना तो निश्चित है कि लोक - धारणा यही थी कि चितौड़ की राजवधू को विष भी सोने के कटोरे में दिया गया था ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वि० सं० १५८८ से १५९१ तक का समय महाराणा विक्रमादित्य का ही है जब मीरां प्रतिदिन के कष्टों से दुखी होकर चितौड़-त्याग करती है। अतः कालक्रम से भी मीरां के पदों के निर्दयी और उसे सताने वाले राणा, विक्रमादित्य ही हैं। साथ ही इतिहास में इस बात का पर्याप्त उल्लेख है कि महाराणा विक्रमादित्य अपने बुर्जुग और चितौड़ के रक्षक सरदारों की हंसी उड़ाया करता था, उन्हें अपमानित करता और सताता था, जिसके कारण वे सभी चितौड़ छोड़ कर चले गए थे। इन सरदारों और सामंतों के चले जाने पर उसने ५०० पहलवान रख लिए। ऐसा व्यक्ति जो अपने दादा और पिता के समय के अनुभवी और चितौड़ के रक्षक सरदारों का अपमान कर, उन्हें चितौड़ छोड़ देने को विवश कर सकता है, उसके लिए भक्तमती नारी को सताना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अतः सभी दृष्टियों से यही ज्ञात होता है कि मीरां को सताने वाला, विष देने वाला राणा, विक्रमादित्य ही था।

मीरां को विष बड़े योजनाबद्ध तरीके से दिया गया था। इसका मार्मिक चित्रण मीरां ने अपने पदों में किया है—

कनक कटोरे विष घोलीयो, दीयो मीरां के हाथि
हरि चरणौदिक करि लीयौ, हरि जी भयो सुनाथि
सब मलि मतो उपाइयो, मीरां नै विषै द्यौ
कहयो सुख्यौ माने नहीं, नीच लग्यो हठ यौं
नगर वस बांमण बांणीयां, भीतर सुंदर पंवार
मुऊ मोड़े मुलक्या करे। समझे नहीं गंवार ।।

(सोने के कटोरे में विष घोला गया और उसे मीरां को भेजा गया। वे जानते थे कि सभव हे ऐसे मीरां इसे पान न करे। अतः इसे हरिचरणों का 'चरणामृत' कह कर भेजा गया। यह विष एकाएक नहीं भेजा गया। विष भेजने से पहले सबने बैठ कर विचार किया कि मीरां से छुटकारा पाने का एक ही तरीका है कि मीरां को विष दिया जाय। इस कार्य हेतु 'मुख्या' नाम के व्यक्ति को पकड़ा गया, किन्तु वह नीच भी हठ पूर्वक मना करता रहा। उसका संभवतः यह संकेत था कि नगर में (चितोड) ब्राह्मण और बनिये रहते हैं जो धार्मिक-प्रवृत्ति की जातियां हैं अतः मीरां को विष देने जैसा पाप कर्म चितौड़ में मैं नहीं कर सकता। वह गंवार मुंह मोड़े हुए मुस्कराता रहा, पर कुछ समझा नहीं।)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विष देने की इस घटना का उल्लेख मीरां ने अपने पदों में तो बार-बार किया ही है साथ ही अन्य भक्तों और साहित्यकारों ने भी इस घटना का और मीरां को सताने का उल्लेख किया है।[१९]

मीरां को विष देने के साथ-साथ लालच आदि भी दिए गए थे। इनका संकेत मीरां के पदों से मिलता है—

राणो जो कागद मोकल्या जी। द्यो मेड़तणी ने जाहे।
साधां री संगति छोडि द्यो। थांका कुल ने लाछ्रण थाह ॥
काठन की माला तजौ जी। पहरो मोतीहार।
भगताई थे दूर करो जी। सब ही राज तुमार ॥२॥

किन्तु, मीरां इस पर भी विचलित नहीं हुई। मीरां के कुछ पदों में मीरां को विष देने के साथ सर्प पिटारा आदि भेजने का उल्लेख मिलता है—

सर्प पीटारा राणा जी भेज्या। द्यौ मेड़तणी ने जाय ॥

नागरीदासजी ने मीरां को विष देने को घटना का सविस्तार उल्लेख किया है —

'मीराँबाई सौं राना बहौत दुख पाय रहै, राना के घर की रीत तें, इनके भिन्न रीत, यह भगवन्न सम्बन्धी सत्यसंग विसेस करे, देह-सम्बन्ध को नातो व्यौहार, कछु न मानै, राना बहुत समुझाय रहयौ, निदान एक विष को प्यालो उनकौ पठ्यो, कहयौ चरनामृत को नाम ले कै दीजियो, उनके प्रण है, चरनामृत के नाम तें पी जायेंगे, सो ऐसौ ही भयो, जानि बूझ पियो, राना तो इनके मरिवे की राह देखत रह्यो अरू यह झांझ मृदंग संग ले के परम रंग सौं एक नयों पद बनाय ठाकुर आगै गावत भये,यह पद बहुत प्रसिद्ध भयो, सौ वह यह पद—

रानै जू विष दोनौं हम जानो।
जान बूझि चरनामृत सुनि, पीयो नही बौरी भौरानी ॥
कंचन कसत कसौटी जैसै, तन रह्यो बारह बानी।
आपुन गिरधर न्याय कियौ, यह छान्यो दूध अरू पानो।
राना कौटक वारौ जिहि पर, हौं तिहि हाथ बिकानी।
मीरां प्रभु गिरधर नागर के, चरन कमल लपटानी।[२०]

पाद टिप्पणियां—

१ (क) जयमल वंश प्रकाश - गोपालसिंह मेड़तिया, पृ० ७०
(ख) उदयपुर राज्य का इतिहास-पहला भाग-गौरोशंकर हीराचंद ओझा पृ. ३५८
(ग) मारवाड का इतिहास—विश्वेश्वर नाथ रेऊ, पृ० ११८
(घ) मारवाड़ का मूल इतिहास-पं० रामकर्ण आसोपा, पृ० ११३
(ङ) पूर्व आधुनिक राजस्थान-डॉ० रघुवीरसिंह सीतामऊ,पृ० २३
(च) महाराना सांगा—हरबिलास शारदा,पृ० ९५
(छ) वीरविनोद-श्यामलदास, पृ० ३६२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२. (क) उदयपुर राज्य का इतिहास–ओझा, पृ० ६२२
(ख) एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज आफ राजस्थान–कर्नल टॉड, पृ० २३२
३. महाराणा कुम्भा—रामवल्लभ सोमानी, पृ० २८०
४. मुंहता नैणसी री ख्यात–सं० बदरीप्रसाद साकरिया, पृ० १११
५. नैणसी री ख्यात (प्रथम भाग) पृ० ५५
६. (क) गोपालसिंह मेड़तिया, वर्ष २ खण्ड २
(ख) डावों मेल्यो मेरतो, पहली पोकर जाई—
७. सुधा (लखनऊ) फाल्गुन वर्ष २ खण्ड २–लेखक–गोपालसिंह मेड़तिया
८. मारवाड़ रा परगना री विगत (नैणसी) भाग २ सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, पृ० ५२
९. (क) जयमल वंश प्रकाश–गोपालसिंह मेड़तिया पृ० १
(ख) मुंहता नैणसी री ख्यात भाग ३–पृ० ९८
१०. अमरसर के कछवाहे–देवीसिंह मड़वा, शोधपत्रिका, पौष वि.सं २००९ भाग ४ अंक २
११. (क) वृंदावन आई जीव गुसांई जू सों मिली झिली, तिया मुख देखिबे की पन लै छुटायो ।।
—प्रियादास जी की भक्तिरस बोधिनी टीका
(ख) जा ब्रज जीउ मिली पन हौं तिय, देष तनै सुण ताही छुड़ायौ
—राघवदास जी दादूपंथी
(ग) ता पीछै मीरांबाई गंगादिक तीरथ करिकै अरू श्री वृंदावन हू आये, तहां जीऊ गुसांई जू को प्रण स्त्री के न देखिवे को छुटाय–सबौं गुरु गोंविदवत सनमान सत्संग करि द्वारिका कौं लले (नागरी दास)
१२. डा० सत्येन्द्र, डा० कृष्णलाल आदि
१३. डा० प्रभात, मीरांबाई शोधप्रबन्ध
१४. डा० हीरालाल माहेश्वरी–राजस्थानी भाषा और साहित्य
१५. जयमल वंश प्रकाश—गोपालसिंह मेड़तिया, पृ० ७०
१६. उपर्युक्त, पृ० ७१–७२
१७. (क) मारवाड़ का मूल इतिहास–रामकरण आसोपा पृ० १२५-१२६
(ख) महाराणा सांगा–हरबिलास शारदा पृ० १४४
(ग) उदयपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गौ०ही० ओझा पृ०३७३-३७४
१८. उदयपुर राज्य का इतिहास, ओझा (पहली जिल्द), पृ० ३७४–७५
१९. (क) नाभादास की भक्तमाल
(ख) नरसी मेहता
(ग) नागरी दास, (घ) ध्रुवदास
२०. नागरी दास

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद्यानुक्रमणिका

पद-संकेत

पद-संकेत		प्रृष्ठ संख्या
१. अपना प्रभूजी की वाट रो । मैं कुण ने भेजूं ।।	....	१
२. अपराधी तैं राम न जान्यौ रे ।	....	२
३. अब मारा गोकल का विहारी जिस्या ।	....	२
४. अब तो बुढ़ापो आयो ये ।	....	३
५. अब मोसूं बोलो म्हारा सैन ।	....	३
६. अब माने गुढण दे मोरी माय ।	....	४
७. अरो हों तो याही उमाहै लागी रही री	....	४
८ अरिया नि मांनी सुनि नि अंमा	....	५
६ अरी आली तूं उठी लालन को	....	५
१०. अलबत्ता मैं कहीं नार बरो छुंजी व्रजराज	.	६
११. असल फकीरी रुड़ी है थारी वैरागी रामा	....	६
१२. अहीर को प्यारो प्यारो री माई सांवरो	....	७
१३. अहो मेरे प्रीतम नाहैं के तुम भले आव नहीं	....	७
१४. अहो प्यारे बांसुरी नेक सुनाई हौ	....	८
१५. आज रंगीली रेण प्रीतम पाँवणा हो राज	....	८
१६ आज तो माई सांवरा ने बसरी बजाई है	....	६
१७. आज तो पेच पाग के नीके	....	६
१८. आजि तो सखी री मेरे उधो आये पांहूणां	....	१०
१६. आजि म्हारैं पांवणीया वैरागीजी ।।	....	१०
२०. आली री गुन समंगल बलमां	....	११
२१. आवण वारा म्हांरे कुण हे जी	—	११
२२. आव री आयो सजनी खेलां होरो ये	....	१२
२३. आवन कीह हरि कह जो गया	....	१२
२४. अे जी लाला चरण कमल बलिहारी	....	१३
२५. ऐ मा हेला देती लाजूं झालो दियो न जाय	--	१३
२६. ऐ दिन क्रिसन मेरैं कहे गये आवणां	....	१४
२७ उधव जी म्हानै लै चालौ स्यामरा रे देस	....	१४
२८. उधो बेगा आज्यो राज ।	....	१५
२६. उधोजी नैण रहे झड़ लाय	---	१५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३०. उदोजी हरि बिना रियोइ न जाय १६
३१. उठरी होरी हो रही ; तु अब क्या सोवै री १७
३२. कदि र मिलैगो आई रमयौ म्हांनै कदि मिलैगो आई १७-१८
३३. कांई रे कारए अणबोला नाथ म्हांसे मुखड़े १८
३४. कांई हट जागो रे मोहण दाणी १६
३५. काऊ विध मिलजा रे गिरधारी १६
३६. काऊ देख्या री घनस्यामा । स्याम हमारे रामां १६
३७. कानो कुवज्या रे सिख लायो म्हांसूं रुठै छै जी २०
३८ काहू न सुख लियो रे प्रीत कर २०
३६. किन मारी पिचकारी रे घुंघट की लपट में २०
४०. कुण खेले थांसे होरी रे संग लगोई आवे २१
४१. कुवज्या वे दिन क्यों न चितारैं, ... २१
४२. कुबन्या व दीन क्युं न चितारो २२
४३. कैसे खेलु मैं होरी सहेली २२
४४. कैसे लगाई जुग प्रीति मेरा दिल हरि वसत है २३
४५. कोई हरिलौ हो हरीलौ हो बोले २३
४६. कोई राम पिया घर लावै रे २३-२४
४७ गहरा करी स्याम अमल पाणी २४
४८. गीरधर संग न टारो हो राजाजी २४-२५
४६. गोवींदासै अटकी हे र मन गोवींदा सै अटकी री २५
५०. गोवींद को सरनु २६
५१. चंद लग्यो दुख देण २६
५२. छिव लालन मोहि भावै वारी चितवन २६
५३. जब छल ठग गया दिल प्राण २७
५४. जमना के नीकट बजाई बसो २७
५५. जमुना कै तट हरि संग खेलै गोपी २७-२८
५६, जय जय ही जगदीश तुमारी २८
५७ जाणियौ जांणियौ जांणयौ हो हरि २६
५८. जाय पधारे गउ-लोक व्रंदावन हर २६
५६, जाउं री मैं सांवलड़ा रे देस ३०
६०. जैंसा कर किसाहैना होवै तो राखणो राम हजुरी ३०
६१. जोगिया आव मैं नेरी ३०
६२. जोगिया चतर सुजांन सजनी गायो ब्रह्मा सेस ३१
६३. जोगी मन मतवाला है कोई जोगी मन मतवाला ३१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६४. जो दुख थाय सो थाज्यौ रै रुड़ा रामजी न भजतां ३२
६५. झूठो वर कुंण परणायो हे मां ३२
६६. टलबता पींडणो फुल गुलाबी रग रादका ओडण चीर जारी का.... ३३
६७ टुक धीरा रै रे वंशीवाला तै मैरो मन मोयो ३३
६८. तन मन ललचावै री आवै ब्रजराज कंवर ३४
६९. तम भज्यां हो महाराज सर्व सुख ३४
७०. तंतै नांव तीयाणो वाणो रामयो हीवैड़ो हारै ३५
७१. तुजे कीण-होरी खेलाई वावरी वण आई ३५-३६
७२. तुने निका जानी हे वन की लाकड़ी ३६-३७
७३ तुम जाने दो जी कपटी से क़ुण बोले ३७
७४. तु मति जारै काना पाईयां परौं चेरी तेरी अरे ३७
७५. तूं तौ वैरी चितार पपीया मोरे प्यारे ३८
७६ तेर हरि आवेंगे आजि खेलन फागरी ३८
७७. तेरो मुख नीको मेरो री प्यारी ३८
७८. थानै खड़ी पुकारूं थे सुणज्यो जादवरायै (य) ३९
७९. थानै म्हारी पीड़ न आवै हो ३९
८०. थारा छां बीहारी माने भूलो छो घणा ३९
८१. थारा मीठा बोलण रा म्हे लोभी ४०
८२. थारै घाली ताना दे छै म्हानै लोक ४०
८३. थु (तूं) तो मेरा राम मिल्या दिलजानी ४१
८४ दरसण क्रपा करो तो पाऊं ४१
८५. दरसण दीजौ राज ४२
८६. दाव नां वीसमांणो हो सांम राव रे ४२
८७. देखो हरि कहां गया नेहड़ो लगाय ४३
८८. धोर न धरज (जे) कंवार, भजियै तौ बात भली है ४३
८९. न कस्यो ई कसोटी हौत है बारै ह बांनी ४३
९०. नणदी हे मोहन मुंदरी ले गयो ४४
९१. नद जी कैं द्वार आग (गे) माला मोरी ले गयो ४४
९२. नंद जी के राजकुंवार म्हे तो होरी थांसु खेलां राज ४५
९३ नंद जी के लाला वंसी तुमारी सब जग मोहनी ४५
९४. नहिं माई बदनू सारो ४६
९५. नहीं म्हारे सारो साम ४६
९६. नाचत गनगवरी के नंदा ४७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

९७. नाचत है गनपती श्रनदीया में नाचत है गनपती ४७
९८. नात (थ) हर ना बोलो खरी ४८
९९. नाव किनारैं लाव नावडीया तेरी ४८
१००. निंदिया बैरणि होई रही ४९
१०१. नीनड़ली थानै बेच दूयू जे थारो गाहक होय ४९
१०२. नैण हमारे अजब कलोल ५०
१०३. नदजी का राजकुंवार ५०
१०४. पंचरंगी लहरयौ भीज (जै) छ मागे ५०
१०५. पड़ गइ (ई) मांनै राम भजन की बांण जी ५१
१०६. परम सुंदरी मृगानैणी राधे थैं मोहन वस कीनौ हो ५१
१०७. पल ही पल पुकार करैं मेरे (रो) गात है ५२
१०८. पात पात व्रंदावन ढूंढ़ै ढूंढ़ै मथुरा कासी ५२
१०९. पिछलो वैर संभारयो रे पपीया पापो ५३
११०. पीया घर वार मोर गानी ५३
१११. पीया जोगी भरथरी गुरु गोरख पाया ५४
११२. पीया मैं तेरी दासी हो ५४
११३. प्रभुजी तुम दरसण विन दोरी ५५
११४. प्रान लागो हरीरवा मुकटवारे स (सै) मेरो ५५
११५. प्रा (आ) यजो मांरी भीर सांवरा जी ५५
११६. फी (फि) र गई रांम दुआई रे लंका में ५६
११७. बलि जाऊं चरण (णां) की दासी ५६
११८ बंसी थांरी बाजै जी जमना री तीर ५६
११९. बाईजी म्हारैं सांवरियौ श्रो तो देवबदला में द्दीयो ५७
१२० बांकै छैल बीआरी ५७-५८
१२१. बारी पनघटवा कैसे जाऊं ५८
१२२ बूझो-बूझो नै पिंडत जोसी ५८
१२३. भली भई मारी मटकी फूटी दद वेचन सूं छुटी रे ५९
१२४. भली तो निभाई बालापन की रे उधो ५९
१२५. भूल मती जाजो जी मारा राज ६०
१२६ मगन रो रे परभु के भजन से ६०
१२७. मन को मन में रही रे, मांहरे हीरदै करोत भईरे ६१
१२८. मन मांनै ज्यां जावो छौ राज थांरो ६१
१२९. मनमोहन आवन की सुनकै भयो जी परमानंद रे ६२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३०. मन रो बसे छै जांही जाज्यौ जी ६२
१३१. मना रे गिरधर का गुन गाय ६३
१३२. मंदिर पौढिये रघुराई ६३
१३३. माई कब देखूं मोहन मूरति लाला रिसाल को दरस ६४
१३४ माई नंद के नंदन मेरो मन हरैया ६४
१३५. माई री लालन आवन कौ मैं आगम जाण्यो ६५
१३६. माणक मोती सब हम छाड़े गल में पहरी सेली ६५
१३७. मारी गलीयां आवण हो पीयारा ६६
१३८ मारो लालजी छोगालो रे ठाडो जमुना की तीर ६६-६७
१३९. मिजाजीड़ा बांके नैणां मैं जादू डारया ६८
१४०. मीरां नै जहर इम्रत कर पीयौ ६८
१४१. मुज प्रेम में हरि करोजी हरि आवनां ६९
१४२. मुरली नै म्हांरो जीवैरो मोह ली (लि) यौ ६९
१४३. मेरो प्यारो नंदलाल बंसी बजायो (य) गयो बन में ६९-७०
१४४. मेरी आंखिन लगी आई लाज री ७०
१४५. मेरी कांना सुनिजो जी करणां निधान ७०
१४६. मुगत रौ ऐ गैहणौं पेरीयौ ७१
१४७. मेरा राम नैं रिझाऊं ७१
१४८ मैं तो छाडी छाडी कुल की कांनि ७२
१४९. मैं बैरागण राम की थारैं मारै (म्हांरे) कद कौ सनेह ७२
१५०. मोरे घर आज्यो राम पियारा ७३
१५१. मोहन जावोला कठै ७३
१५२ मोहन रातड़ली का बसिया ७४
१५३. म्हानै जावादो वी (वि) हारी और काम से (छै) ७४
१५४. म्हानै लाष (ख) लोग हसि या दासी जगदीश तणी है ७५
१५५. म्हांरा पियरीयारी वातां सतगुरु कैता जाजो ७५
१५६. म्हांरी लागी लगन मत तोड़ सांवरां ७६
१५७. म्हांरे हीरदे ली (लि) ख्यो जी हरि नाम ७६-७७
१५८. म्हारै मिदरीऐ पधारो जोऊं थारी वाट ७८
१५९. म्हांरो वालो विसां विलबि रह्यो ७८
१६० म्हे जास्यां सांवरिया रे साथ्य ७९
१६१. म्हे तो जास्यां सांवरियारि (री) लारि ७९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१६२. यनकौ साफ (ध,ज) न राखतां छै भगति में हाए ८०
१६३. ये आज आवैंगे मेरै लाल बोलत सुभ बांनी ८०
१६४. रघुबर मोंहि परना (णा)ई अमां मोरी ८१
१६५. रघुवर माधोरी मुरत ८१
१६६. रमतां लाध्या कांकरा सेवा सालगराम ८१-८२
१६७ रसना तू राम वि (बि) ना मति बोल ८२
१६८. राखो राम हजूरि ८३
१६९. राज करे तेरो कानो ८३
१७०. रादै (धे) ने वंसी चोरी ८४
१७१. राधे वसी कीनो हो धांम सुजांन (ण) ८४
१७२. रामजी बिना कुंण कं ै म्हारी भीर ८५
१७३. राम दिवानी हो गई मैं ८५
१६४. रामजी मिलावै तो फेर मिलैंगे ८६
१७५. रायघाट सब ढूंढ फिरि व्रदांवन मेरो सांवरीयो ८६
१७६. रुत आयां बोले मोर हरी विना जिव दोरा ८७
१७७. रेसुं बाबा नंद घर चेगी ८७
१७८ लखता पल म्हारे मेल पदा (धा) रो जी ८८
१७९. लग कौपैं मोहै न्यारो ८८
१८०. लागे सोई जांणे हेली मालक जांणे ८९
१८१. ले जा रे कागदवा नरसी जु (जी)क के)पास ८९
१८२. ले लो री भर लोचन लाहो ८९
१८३. वन आवें तो हरी गुण गा लै रे ९०
१८४. वरस(सं)कु नहीं पांणी हो गुमानी मेहा ९०
१८५. वाजूवं (बं) ध तूय पड्यो हसत खेलत आधी रात ९१
१८६. वा (बा) ट वैंऊंता वि (वी र वटाउड़ा ९१
१८७. वाता तां रमारी हो वारी जी आ (या) द रहेला ९२
१८८. बावरी कीन्ही हो बंसी वावरी कीन्ही ९२
१८९. व्रजहू की रज में (मैं) तो भई कु (क्यूं) नी वीरा रे ९३
१९०. व्रंदावन नी (नि) ज धाम देख्यो री मैं ९३
१९१. व्रंदावल मोहन दध लु (लू) टी ९४
१९२. सतसंग स (सू, से) किन (ण) टाली ये माई (य) ९४
१९३. सबसूं पतम भज्यै गोपाल ९५
१९४. सांकड़ी लौ मैं (में) हानैं (म्हांनै) सतगुर (रु) मिलिया ९५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१९५. सांवरे तोय रंग भरुंगी ९६
१९६ सांवरे मोय रंग भर डारि (री) ९६
१९७. सेटा (ठां) णी जी चाल्या वो (ओ) लूड़ी लगाये ९७
१९८ सुषमण मौं हर विसरत नाय ९७
१९९ हम ईसट हमारो ध्यावैं ओर दाय नहीं आवै ९७
२००. हम करें कहन की सेवा तव पावेगी नी (नि) ज मेवा ९८
२०१. हमारैं पै काहे कु (कूं) खीजो व्रजनारी ९८
२०२. हमारौ फगवा दे गी (गि) रधारी ९९
२०३. हरी चरण ची (चि) त लायौ राजी ९९
२०४. हरि व (बि) न चरना क (कि) त धरजौ १००
२०५. हरि सैं टेरि कही री द्रोपता १००
२०६. हे जी नरसी जी मा (म्हां) रो लहर्‌यो भीज (जै) छ (छैं) जी राज १०१
२०७. ह (हे) जी म्हारा नैंना में सलूनो पानी १०१
२०८. हे मां मुरली व (ब) जाय मेरो हीयो लिए जाय १०१
२०९. हेरी मतवारो ठाढो मोरी वाट १०२
२१०. वेरी हेली मेरो मन चोर्‌यो आली नंद १०२
२११. हेली म्हांरे आनंद मंगलाचार १०३
२१२. हो र (रु) त आई फागण ग (घि) र आई १०३
२१३. होरी फागण का दिन में प्रीतम तज गऐ देस १०४
२१४. श्री बदरिनाथ तुमारो दरसण भाग बिना नहीं पावै १०४
२१५. श्रीरंगजी की नार देखो थान (थांनै) सांवर (रो) सेठ बुलावै १०४

परिशिष्ट (१)

राग-रागिनी पद संग्रह-अनुक्रमणिका

१. अजुह न लिदी साम मोरी खब्रीया १०५
२. अब केसे नीकसन हो दईया १०५
३. अभी तो छब (नेणा) नरखो नागर नटकी १०६
४. आज मारो लालजी गआ से रीसाअें रे १०६
५. आज मारे मंद्र मंगलाचार रे १०६
६. कुण खेले आंसु होरी रे १०६-१०७
७. गुधारी पिचकारी भर डारी हे माअे १०७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८. चली आवरे ग्रुवालण दद वाली १०७
९. छेल छबिला छौगाला रे मन भाया जी १०९
१०. जतन को हे मारी हे १०९
११. ज जमना जी धोरे १०९-११०
१२. थे आज्यो जी मारे रमके झुमके ११०
१३. धोरा झुलो रा, धीरा झुलो रा ११०
१४. नंद जी राम्म र सुजाण ११०
१५. नर ब्रेद्रदी हे वंसरी, बाजी जमना री तीर १११
१६. पेम सवमण मर्गा नेणी रादे १११
१७. भला सावरीया हो आछा साव्रया हो १११
१८. मत डारौ पचकारी रे ११२
१९. मोहबत कमलीवाला सु (सूं) जोड़ी ११२
२०, मलता जा ज्यो रा (ज) गुमानी ११२
२१. मेरो मन मोओ (यो) से जी ब्रजराज ११३
२२. रसीओ राम रीजावां हे माअे ११३
२३. रस में बस कायकु डारि सखि ११३
२४. राद्दे (धे) कसन रादे (धे) कसन ११३
२५. रे मानु द्रसे बता ज्यो जी ११४
२६. रे मैं तो विरह की दादी ११४
२७. सांवरा जी आज्यो जी माहरे देस ११४
२८. सीताराम समजुंग हसवा दे ११५
२९. सुद्र साम विहारी ११५
३०. सुख नागर में आ अेक अे अे अे ११५-११६
३१. हे आवे छे रे, गोपाल रंगीलो ११६
३२. हे कठड थया हो माधव मुद्रा में ११६
३३. हे कहे ज्यो नींद न आवे ११७
३४. हे कुण ने सीखाया तुजे मीठा बोलणा ११७
३५. हे कुण ने सीखाया तुजे मीठा बोलना ११७
३६. हे कुण साथे मारी बँतीया ११७-११८
३७. हे केस करी अँ रे केसे क्री अे ११८
३८. हे खड़ी छू खड़ी छु ११९
३९, हैं गई दध वेचण आप बिकाणि ११९
४०. हे च ल्यो जा रे ब्रजवासी ११९
४१. हे छेल छबीला मांने ११९
४२. हो जी रंग भीनी होरी आंसूं खेलुंगी १२०
४३ हूँ तो वारी जाउ अे भोरी (ली) नणदल १२०
४४. हूं तो सु (सूं) वाली कछु न्हो जाणु १२०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४५. हे ब्रजवासी ब्रजवासे (सी) से ब्रजवासी ... १२१
४६. हे लुटे छे रे लुटे छे छुटे ... १२१
४७. हो साम में (मैं) तो गई थी ... १२१
४८. हे हरी का मलरा, केसे होम्रे रे ... १२२
४९. हा हा रे गुगट को, हा हा रे गुगट को वारी रे ... १२२
५०. हेली ज्यो घ्र आवे ग्रे ग्रे ग्रे ग्रे ग्रे ... १२२

परिशिष्ट (२)

मीराँ के प्रकाशित पदों से भाव साम्य रखने वाले अप्रकाशित पदों को अनुक्रमणिका

१. आज मारे आंगणा हरिजन आया रे ... १२३
२. ओलगीया अब घर आई हो — १२३
३. उधो जारे बह गई प्रेम कटारी ... १२४
४. उधो विन कुरा ल्यावं पाती ... १२४
५. ऐरी वीरी अपना स्यांम खोटा ... १२४
६. कांई मिस आया जी राज अठै ... १२५
७. कित गये नेहड़ो लगाय ... १२५
८. कुरा करं मांरी भीर राम जी बिना ... १२६
९. गोविंद रे रंग राची राणाजी ... १२७
१०. चरण रज मेमा म्हम जानी हो १२७
११. छाड़ द्यौ गिरधारी वो माररा ... १२८
१२. जामां जासां जि सावरिया थांरे कारने हो ... १२८
१३. जोगीया जी आज्यौ म्हांरे देस ... १२९
१४. जोसीड़ा रे जोसत जोई ले ... १२९-१३०
१५. जोगीये मेरी न जांणी पीर ... १३०
१६. नीतरा आवें ओल (ळ) मा ... १३१
१७. नाम से अटकी सो मीरां ... १३२
१८. बुंदन भीजै मोरी साड़ी म कंसे जाउ ... १३२
१९.. ब्रहेंन उभी पंथ स ... १३२
२०. भगति दुहेली हो श्रीजी राई १३२-१३३
२१. मनमोहन सु रूप लुभानी हो ... १३४
२२. माई मांनं रांम मिलरा कब होय ... १३४
२३. जा दिन तें तुम बिछुरे हो मेरै भई हांणी ... १३४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२४. थांरी साध संगत परी छांडो रा ... १३५
२५. थाने (थांने) राणाजी पुचे (छे) बात ... १३६
२६. मा (म्हा) रा मोर मुगट बंसीवाला ने की (कि) ण राख्या वी (वि) लमाय ... १३७
२७. मीरांबाई रो पांवणीयो रुड़ो — १३८
२८ मेवाड़ी रुठै तौ मारो कांई कर देसी ... १३८
२९. मैं तो लीयो है रामड़ोयौ मोल ... १३९
३०. मैं व्रेहन बैठी जांगु जगत सब सोवै री मां ऐ ... १३९
३१. मोहि रे मोहि रे मोहि रे सांवरे बालकानें हुं मोहि ... १४०
३२. यो तो रंग धतां लग्यो हे माय — १४०
३३. रूप लोवानी हो पीया तेरै रूप लोवानी हो ... १४१
३४. रांम नामै मेरै धां माने वासी — १४१
३५. ले चालो नी सांवरा रै देस उधो माहने ... १४२
३६. वरत ऐकादसी करीय नणदल ... १४२
६७. वावरी भई हरी कै संग न गई — १४३
३८. विरज कौ बसवो री सा (छा) डो रै ... १४३
३९. वीनैराविन मै को डेरा चाहै ... १४३
४०. वीरो मारो भलांई आयो र ... १४४
४१. वांवरी घर जाण दै मोय ... १४४
४२. सजन घर वेला ही आज्यौ ... १४५
४३. सतगुरु वेगा आज्यो जी ... १४५
४४. सांवरा सु प्रीत लगाई री माई री ... १४५
४५. सांवरै न जांणी म्हांरी पीर रे लाल ... १४६
४६. सावलीयो जोवा-सरको राधा नैणां ... १४६
४७. सेझड़ली सरखी री सेझड़ली संवारी ... १४६
४८. सेझड़ी बनाय स्यांमां तेरै पोढै गिरधर आय १४७
४९. होरी आई हौ पीया मांरै देस ... १४७

परिशिष्ट (३)

मीरां के वे पद जिनकी प्रथम दो या तीन पंक्तियाँ ही पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती है, शेष पद नहीं।

१. अब हरि कहां गऐ नेहरो लगाय ... १४८
२. अरी नंदनंदन सौं मेरो मन मान्यो ... १४८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३. आज सखी मेरै अणंद बधावो ... १४८-१४६
४. आ बदनामी लागै मोठी रांणाजी माहाने ... १४६
५. ऐ री कुबजा नै जादु डारा ... १४६-१५०
६. कत गओ सांवरो जादु कर केसैं ... १५०
७. कांई तेरे कुवज्या से मन रादी (जी) ... १५०
८. काहे कूं देहधारी भजन बिन ... १५१
६. काहू कि (की) मैं व्रजी नाय रहूं ... १५१
१०. कैसे जीउं री माइ हरि बिनि ... १५१
११. गिरधारी म्हांसू प्रीत निभाजा (ज्यो) हो ... १५२
१२. गिरधर लागै री नीको ... १५३
१३. राणां जी हूं तो गिरधर कं मन भाई ... १५४
१४. गिरधर प्रीतम प्यारो राणां जी ... १५४
१५. गा (गो) ब्यंदा सूं प्रीत करत जब ही क्यूं न हटकी ... १५५
१६. गोविंद ना गुण गास्यां ... १५६
१७. डार गयो मोहन गल पा (फां) सी ... १५८
१८. जगत सारो सोवै र आलो ... १५६
१६. जंहर दी (दि) यो मैं जांनी (णी) हो रानां (णां) ... १५६
२०. जाके प्रिय न राम वैदही ... १६०
२१. जोगीया रे आज्यो रे ईण देस . १६१
२२. जोगीया जाये वस्यो परदेस ... १६२
२३. जोगीया दरसण दीज्यो राज ... १६२
२४. देसड़लो हो राणा रुड़ो थां (रो) रा ... १६३
२५. दुखन (ण) लागै री नैन (ण) दरस बीना ... १६३
२६. न आवं थांरो देसड़लो रुड़ो ... १६४
२७. नारी (ड़ी) हूँ न जाणे, वेद भडो हो अनारी है ... १६५
२८. पतीय्या म (मैं) कस लीखु (खूं) लीखोये न जाये ... १६७
२६. बाबी मीरा (रां) मान लो थे म्हांरी ... १६६
३०. बिड़द घटै कैसे माई हो ... १७०
३१. मथरा जावो तो थांनै नंद की द (दु) वाई ... १७१
३२. मर (मेरे) भाव (वै) परभुजी वीना सो ही हं उजाड़ ... १७१
३३. मेरो मन राम ही राम टैवें (रटैं) ... १७२
३४. मैं तो रांमा (दर) द दीवानी ... १७२
३५. मैं अमलो हरि नांव की ... १७३
३६. वीठल रह्यो वसी म्हांरं मन ... १७३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३७. वे न मिलै उसकी मैं दासी ... १७३
३८. वैद वन (ण) आवजो ... १७४
३९. सतसंग में परी हो धिन-धिन आजनी घरी ... १७४
४०. सांवरे रंग राची राना (णां) जी ... १७४
४१. हरि बिन क्यौं जीउ माई ... १७५
४२. हों तो गोविंद सो अटकी ... १७६

परिशिष्ट–४

मीराँ के वे पद जिनकी अधिकांश पंक्तियां पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती है, केवल एक या दो पंक्तियां नहीं मिलती ।

१. असो पीव जांण न दीजै हो ... १७७
२. एकण सूं हंस बोल रे धूतारा जोगी ... १८०
३. उधौ लागी कटारी प्रेमनी ... १८१
४. कज्यौ रे आदेस जोगीया न ... १८२
५. करणां सा (स्यां) म मेरी ... १८२
६. कोई दिन याद करोगे, रमता राम अतीत ... १८४
७. घड़िय न आवड़ रे वाला, तम दरसण बिन मोय ... १८५
८. जावा दो ये सईयाँ, जोगी किसका मीत ... १८६
९. तुम बिनि रांम सुनै को मेरो ... १८६
१०. द्रस्टी मांनु प्रेमनि कटारी है ... १८७
११. नातो हरि नाम को मोसूं ... १९०
१२. नथ म्हारी दीजो जी व्रजवासी ... १९१
१३. नैनन में नदलाल बसो, मेरे नैनन मै नदलाल ... १९२
१४. पपइया रे पिव की बांण न बोल ... १९३
१५. पीया तेरे नांव लोभानो हो ... १९५
१६. पीया वीन सूनों मोरो देस ... १९९
१७. पीया मोहे आरत तेरी हो ... १९९
१८. प्रीत निभाजो जी सांवरिया ... २०३
१९. प्यालो कोउं रे पठायो राणाजी ... २०४
२०. बोल सूवा राम राम, बोले तो वलि जाऊ रे ... २०५
२१. भाभी मीरां हो सांधां को संग निवारि ... २०६
२२. मीरां रंग लागो हरी ... २०७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२३. म्हांरी सुध जेरां जांणो त्यौं लीज्यौ जी ... २०६
२४. रै मनि परसि हरि के चरन (ण) २०६
२५. रामैया मैं तो दरद दिवानी (ण) ... २१०
२६. रामईया बिना नींद न आवैं २१३
२७. लगन कौ नांव न लीजीये भोली (ळी) लगन कौ ... २१४
२८. लागत मोहन प्यारो राणा जी मां (म्हां) न ... २१५
२९. लाज वैरन (ण) भई सखि मोहे ... २१५
३०. बरसबोई कर रे मेहा म्हारो ... २१६
३१. वंसीवारा आजो मारे देस २१६
३२. म्जन घर आव रे मीठा बोला — २१८
३३. संता काले रीज्यौ मा (म्हा) रो ईतरो जोर ... २२१
३४. संईया अरज बंदी री सुणि हो ... २२१
३५. साजन वेला (ळा) घर आजौ (ज्यौ) हौ ... २२३
३६. हरि न बूझि बात माई मेरी ... २२४
३७. हर विन पलक न लागै मेरी ... २२५
३८. हरि मारै आवन की कोई कहियौ रे ... २२५
३९. हेली म्हांसू हरि विन रह्यौ न जाई ... २२६
४०. श्री तुलसी सुख-निधान दुख-हरन (ण) गुमाई ... २२७

परिशिष्ट—५

पूर्व प्रस्तुत मूल पदों के पाठान्तरों की अनुक्रमणिका

१. अरी हू गोविंद सो अटकी ... २२७
२. उधव म्हांनैं ले चालो जी सांवरा के देस ... २२८
३. देंखौ हरि कित गया नेहड़ौ लगाय ... २२९
४. मुज (भ) प्रेम म (में) हरि करो जी ... २३१
५. मेरो प्यारो ननलाल मुरली बजाय गयो बन में ... २३१
६. मैं तो छाड़ी छाड़ी कुल (ळ) की कांनो (राणेजी) मेरो कहा करसो ... २३१
७. म्हे जास्यां [सां] वरीया र साथ वाई म्हान (नं) जगत हंसौ है ... २३२
८. राधे वसि कीनो हो स्यांम सुजांन ... २३२
९. फगवा दे गिरधारी हमारौ ... २३२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शुद्धिपत्र

'भूमिका के अन्तर्गत'

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	अधुनावधि	अद्यावधि
१	२२	सभा	सभी
४	२२	उपरोक्त	उपर्युक्त
८	२	सत	संत
८	२२	रागरागनियों	रागरागिनियों
८	२५	रागिनडियों	रागिनियों
८	२८	नमें	इनमें
८	२८	रागनियां	रागिनियां
९	४	रागनी	रागिनी
९	४	रार्गनियां	रागिनियां
९	२६	कुल	कुछ
१०	१	सूचिपत्र	सूचीपत्र
१०	७	के	के' की आवश्यकता नहीं है
११	१	– –	पदों की
१२	६	– –	कुछ छूट
१२	१७	– –	किया है
१२	१९	वश्वसनीय	विश्वसनीय्
१२	२१	हरजसों	हरजस
१२	२३	छ	कुछ
१२	२६	अधुनात्रधि	अद्यावधि
१३	१७	तथा	यथा
१३	२२	सकलन	संकलन
१४	५	संमव	सम्भव
१४	७	कों	का
१४	८	क	किया
१४	२१	सकलन	संकलन
१४	२२	गितेरोध	गतिरोध
१४	२४	भावसम्य	भावसाम्य
१५	२	से	में
१५ (फुटनोट)	३	स्पष्ठ	स्पष्ट

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१६ (फुटनोट)	१७	के	के' की आवश्यकता नहीं
१६ (फुटनोट)	१२	प्रभाव	प्रकाश
१६ (फुटनोट)		उन पर की	उनकी
१६ (फुटनोट)		सभी	सभी शब्द की आवश्यकता नहीं
१८ (फुटनोट)	१०	मीर्राबाई	मीरांबाई
१९	१३	का	के
१९	१४	अजर अमर अलौकिक	अजर, अमर, अलौकिक
१९	६	र्लि	लिं
१९ (फुटनोट)	११	मिल	मिस
२१	६	।	?
२२	२४	जीवनि	जीवनी
२३	३	वह	वे
२४	२१	जोगेश्वर	'जोगेश्वर'
२९	१	जिस विरद	जिन विरदों
२९	२	वही	वे ही
३२	७	मिलया	मिलयां
३३	३	हमार	हमारे
३४	२४	को	'को' की आवश्यकता नहीं
३५	७	आने	जाने
३५ (फुटनोट)	६	जो	जीव
३६ (फुटनोट)	२५	बछड़ें	बछड़े
३७	४	हैं	है
३७	५	अध्यात्मिक अलौकिक	अध्यात्मिक, अलौकिक
		पूर्ण ब्रह्म	एवं पूर्ण ब्रह्म
३८	१९	मारां	मीरां
३८ (फुटनोट)	५	मोरां	मीरां
४१ (फुटनोट)	१	प्रभाषक	प्रकाशक
४१ ,,	,,	प्रतिक	प्रतिष्ठान, जोधपुर
४३	४	मारां	मीरां
४३	५	शद	शब्द
४४	९	ध्रिन	घिन
४४	१३	चरण	प्रथम
४४	१४	सत	संत

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
४४	२१	ख्रिन	गिन
४४	२२	सतां	संतों
४५	४	सत-समागम	सत-समागम
४५	१६	सा·ां	लासां
४६	१७	दर्शनाथं	दर्शनार्थ
४७	१४	कल्पना तो क्या, विचार भो असंभव हे	विचार तो क्या, कल्पना भी असंभव है।
४७	१८	गृहित	गृहीत
४७	२३	( )	स्थान नहीं
४८	२२	संदेहात्मक	संदेहास्पद
४८	२३	विवादात्मक	विवादास्पद
४९	६	किंवदतियों	किंवदतियों
४९ (फुटनोट)	८	श्री विश्वेवर	श्री विश्वेश्वर
५० (फुटनोट)	११	सूर्य राम	सूर्यराम
५० (फुटनोट)	१२	ससस्या	समस्या
५० (फुटनोट)	१६	चतुर्वेदी	चतुर्वेदी
५२	२६	श्री विश्वेवर	श्री विश्वेश्वर
५२ (फुटनोट)	१	इतिहासवेता	इतिहासवेत्ता
५२ (फुटनोट)	८	जीपां	पीपां
५३ (फुटनोट)	५	संस्कृते	संस्कृत
५३ (फुटनोट)	७	का	मार
५३	१२	अस्तवल	अस्तवल
५४ (फुटनोट)	१	पदवि	पदवी
५४ (फुटनोट)	८	बागबिल	बाइबिल
५४ (फुटनोट)	९	सूर्यवंण	सूर्यवश
५४ (फुटनोट)	१४	थनधन	धनधन
५४ (फुटनोट)	१७	अथं	अर्थ
५४ (फुटनोट)	१८	प्रकाथ	प्रकाश
५४ (फुटनोट)	१९	उज्जवल	उज्ज्वल
५५	१४	वाड्गमय	वाङ्मय
५५ (फुटनोट)	३	फर्च	फ्रेंच
५५ (फुटनोट)	५	(रेयिस्तान)	(रेगिस्तान)
५७	१०	तथा मूल पाठ अनुसंधान सम्बंधी सिद्धान्तों	(यह वाक्य दो बार छप गया है—होना एक ही बार चाहिए।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
५९	२४	का	को
६१	२२	निणय	निर्णय
६२	६	एव	एवम्
६२	८	,,	,,
६२	८	अपने	आपने
६२	८	एव	एवम्
६२	१०	भहत्व	महत्व
६२	१३	काय	कार्य
६२	१९	( )	की' शब्द होना चाहिए
६३	३	( )	मीराँबाई की बृहत्पदावली
६४	३	अत्यंत प्रिय है	अत्यंत लोकप्रिय है।

'मूल पदावली के अन्तर्गत'

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	कािढ	काढ
३	शीर्षक पंक्ति	माग	भाग
३	१८	ग्र०	ग्रंथ
३	१ (सम्पा० पाठ)	बालपणों	बाळपणों
४	१	खबायची	खमायची
५	शीर्षक पंक्ति	माग	भाग
६	२ (सम्पा० पाठ)	कहीं	कांई
६	४ (सम्पा० पाठ)	गेहणे	गे'णों
७	३ (सम्पा० पाठ)	सांईया	सांईयां
८	१५	फूले	फल
८	३ (सम्पा० पाठ)	बधावना	बधावणा
८	४ (सम्पा० पाठ)	सुंणे	सुण
८	५ (सम्पा० पाठ)	मंगल	मंगळ
९	१ (सम्पा० पाठ)	वसरी	वंसरी
११	२ (सम्पा० पाठ)	आखड़ली	आँखड़ली
१३	३ (सम्पा० पाठ)	याकै	जाकै
१३	५	हांसे	यां से, यहां से

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१६	२ (सम्पा० पाठ)	गोप्या	गोप्याँ
१६	३ (सम्पा० पाठ)	सावरिया ने	साँवरिया ने
१६	३ (सम्पा० पाठ)	आंगलिया री	आंगळियां री
१६	४ (सम्पा० पाठ)	यारे	हमारे
१७	१४	(इंद्र)	(इद्रगढ़-संग्रह)
१८	३ (सम्पा० पाठ)	जानूं	जाणूं
२०	२ (सम्पा० पाठ)	अफूठ	अपूठो
२१	१७	ग्र०	ग्रन्थ
२१	१८	ग्र०	ग्रन्थ
२२	१६	ग्र०	ग्रन्थ
२३	१ (सम्पा० पाठ)	सात्रति	साबत, सीधा
२४	१४	ग्र०	ग्रन्थ
२४	१ (सम्पा० पाठ)	मच्छी	मछलो
२४	१ (सम्पा० पाठ)	विरहिणी	बिरहणी
२४	३ (सम्पा० पाठ)	म्हें	म्हे
२४	५ (सम्दा० पाठ)	म्हखो	म्हारो
२५	२ (सम्पा० पाठ)	ज्याने	जिण
२६	१६	ग्र०	ग्रन्थ
२६	१ (सम्पा० पाठ)	किला है	सालसा है
२७	४ (सम्पा० पाठ)	बशी	बस्या
२८	१९	ग्र०	ग्रन्थ
२८	२१	ग्र०	ग्रन्थ
२९	१ (सम्पा० पाठ)	झत्रीलो	छबीलो
३१	१ (सम्पा० पाठ)	पर्ण पेरण	पँरण
३२	१४	ग्र०	ग्रन्थ

नोट— मुद्रण सम्बन्धी असावधानी के कारण अनेक स्थलों पर अनुस्वार का बिन्दु उभर नहीं पाया है, अतः विद्वान् पाठकों से अनुरोध है कि वे ऐसे शब्दों का शुद्ध रूप पढ़ने का अनुग्रह करें :

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy